
إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ - (القرآن)

“ निस्सन्देह यह क़ुर्आन उस रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करता है जो बिल्कुल सीधा है । ”

Dawatul Quran Vol. 3
in Hindi Language

दअवतुल क़ुर्आन

पवित्र क़ुर्आन का हिंदी अनुवाद और भाष्य

जिल्द (Vol. 3)

सूरह रूम से सूरह अन्-नास
(पारा 21 से 30)

□□□□

भाष्य :

शम्स पीरज़ादा (रह.)

○○○○

हिंदी अनुवाद :

मुहम्मद नसरुल्लाह (एम.ए.)

प्राकाशन :

इदारा दअवतुल क़ुर्आन

५९, मुहम्मद अली रोड, मुम्बई ४००००३

Idara Dawatul Quran

59, Muhammad Ali Road Mumbai 400003

Phone: 23465005

..... 3rd Edition, August. 2014

..... 1,000

Price Rs. 480/-

प्राक्कथन

शम्स पीरज़दा

(यह प्राक्कथन अस्ल उर्दू भाष्य पर लिखा गया था।)

प्राशंसा का पात्र अल्लाह ही है जिस के उदार अनुग्रह तथा खास फ़ज़ल से दअवतुल कुर्आन की पूर्ति हुई और अब हम इस की तीसरी और अन्तिम जिल्द पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्राप्त कर रहे हैं। तफ़सीर लिखने की शुरुआत सन १३९६ हिजरी तदनुसार सन १९७६ ई. में हुई थी और रमज़ान १४१४ हिजरी तदनुसार मार्च १९९४ ई. में पूरी हुई। अर्थात् कुर्आन समझने और समझाने की राह में निरंतर अठारह वर्ष के चिन्तन मनन का यह फल है। कुर्आन की एक एक आयत, इस का एक एक शब्द यहाँ तक कि इस के अक्षर भी यह भावाभिव्यक्ति करते प्रतीत हुए कि उन पर से सरसरी तौर से न गुजरा जाए बल्कि चिन्तन मनन का हक़ अदा करने का प्रयास भी किया जाए ताकि आयतों का सही अर्थ और सही व्याख्या हो। उन में निहित रहस्य उजागर हों और हम हिकमत एवं तत्वदर्शिता के मोती से अपने दामन को भर लें। इस तफ़सीर के चाहने वालों को निश्चय ही लम्बे समय तक इन्तिज़ार का कष्ट उठाना पड़ा किन्तु जिस तरह का काम था उस को देखते हुए इस काम में जो समय लगा उतना लगना आवश्यक था।

जिस समय इस तफ़सीर की शुरुआत हुई थी और इस के कुछ अंश प्रकाशित कर दिए गए थे उस समय हर तरफ़ से यह प्रश्न उठ रहा था कि उर्दू में जब कई तफ़सीरें मौजूद हैं तो फिर अब इस तफ़सीर की ज़रूरत क्यों पेश आ रही है? हमारे लिए उस समय लोगों को संतुष्ट करना मुश्किल था। फिर भी तफ़सीर की भूमिका में हम ने कुछ संकेत कर दिए थे और जैसे जैसे तफ़सीर के भाग प्रकाशित होते रहे अल्लाह के फ़ज़ल से उस के लाभ एवं महत्व का पहलू भी उजागर होता रहा और जब कि यह काम पूरा हो चुका है पाठकगण खुद व्यक्त कर सकते हैं कि यह काम किसी ज़रूरत के तहत अन्जाम पाया है या अकारण एवं अनावश्यक। हमें इस पर अब कुछ कहने के ज़रूरत बाकी नहीं रही।

इस तफ़सीर में हम ने निम्नलिखित बातों को विशेष रूप से सामने रखा।

एक यह कि जो बात भी लिखी जाए शोध की कसौटी पर

जाँच परख कर लिखी जाए। न तो किसी मसलक की पाबन्दी कुबूल की जाए और न इसे किसी विशेष जमाअत या किसी विशेष समूह और किसी मक्ताबा-ए-फ़िक्र की तर्जुमानी का साधन बनाया जाए।

दूसरे यह कि कुर्आन की व्याख्या में सुन्नत का जो स्थान है उस को सख़्ती के साथ मल्हूज़ रखा जाए। अतः जगह जगह सही हदीसों का अनुकरण प्रस्तुत किया गया है। अलबत्ता जो रिवायतें कुर्आन के बयान से टकराने वाली हैं या उस के अनुकूल नहीं हैं या जिन से नबी की मासूमियत पर उंगली उठने की आशंका है उन को तफ़सीर में शामिल करने से परहेज़ किया गया है और जहाँ ज़रूरत इस बात की हुई कि रिवायत पर समालोचनात्मक दृष्टि डाली जाए वहाँ यह भी किया गया है कि यद्यपि कि प्रमाण की दृष्टि से उन की गिनती सही हदीसों में क्यों न होती हो, क्यों कि रसूल का कोई इर्शाद कोई मत कुर्आन के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता। अरबी तफ़सीरों में जो अल्लम गल्लम रिवायतें अनुकरण हुई हैं वे कुर्आन समझने की राह में ज़बरदस्त रूकावट का कारण हैं।

तीसरे यह कि कुर्आन की असल दअवत को वर्तमान भौतिकवादी तथा ग़लत विचारधाराओं पर करारी चोट लगाते हुए स्पष्ट किया जाए ताकि मुसलमानों पर अल्लाह की हुज्जत पूरी तरह स्पष्ट हो जाए और ग़ैर मुस्लिम पर उस की हुज्जत कायम हो जाए।

चौथे यह कि दअवत का एप्रोच (Approach) ख़ालिस कुर्आनी और अम्बियाई हो अर्थात् सादा और स्वाभाविक होने के अलावा खुदा और आख़िरत से ग़ाफ़िल इन्सानों को जगाने और आख़िरत के आज़ाब से ख़बरदार करने वाला हो। कुर्आन में इस के अवतरण का सर्वप्रथम उद्देश्य ख़बरदार करना (इन्ज़ार) ही बयान हुआ है।

पाँचवे यह कि कुर्आन का अध्ययन करने वाले का ध्यान सब से पहले अपने नफ़्स अपने अन्तर्मन की ओर केन्द्रित हो जाए और वह कुर्आन के दर्पण में अपने चरित्र और आचरण को देख ले। अपने नफ़्स को पाक करने और अपना वैचारिक एवं

व्यवहारिक प्रशिक्षण सब से पहली ज़िम्मेदारी है जो कुर्आन अपने सम्बोधियों पर आयद करता है और इस बात के लिए आमादा करता है कि वह सब से पहले अपनी आखिरत की मुक्ति की चिन्ता करे। इस परीक्षा स्थल में मनुष्य को इसी लिए खड़ा किया गया है कि वह अपने अन्दर उन गुणों को पैदा करे और परवान चढ़ाए जो उसे जन्नत का हकदार बना दें। इस लिए अपनी निजी इस्लाह की तरफ से बेपरवाह हो कर समाज सुधार की बातें करना कुर्आन के मूल लक्ष्य को नज़रन्दाज़ करना है।

छठे यह कि मुसलमानों की वैचारिक एवं व्यवहारिक गुमराहियों पर चाहे वह बिदअतों तथा खुराफ़ात और क़ब्र परस्ती जैसी हों या भौतिकवादिता जैसी, उस पर सख़्त पकड़ की जाए ताकि तौहीद की धारणा निखर कर सामने आ जाए और फिर अपना सुधार कर लेने की तौफ़ीक़ हो।

सातवें यह कि ग़ैर मुस्लिमों पर कुर्आन की महानता और उस के अपने आप में मोज़्जा होने का पहलू स्पष्ट हो जाए क्यों कि कुर्आन ने अपने मोज़्जा होने के पहलू को बहुत बड़ी हुज्जत बताया है किन्तु अरबी न जानने वाले लोगों को इस का अन्दाज़ा उस की अंतर्आत्मा को अपील करने वाली बातों और बुद्धि की गिरहों को खोलने वाली नीतियों ही के द्वारा हो सकता है इस लिए इन बातों को स्पष्ट रूप से प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना आवश्यक है।

आठवें यह कि कुर्आन व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन के लिए जो रहनुमाई देता है और जिस तरह से इस्लामी समाज के विकास के लिए जीवन प्रणाली को स्थापित करना चाहता है वह इस तरह उभर कर सामने आ जाए कि दीन की सही और व्यापक धारणा मन में बैठ जाए और कुर्आन के इशारात से रौशनी हासिल करते हुए वर्तमान युग की समस्याओं में रहनुमाई का सामान हो।

नवें यह कि मानसिक परितोष से अधिक हार्दिक परितोष का सामान किया जाए। मात्र जानकारियों में वृद्धि चाहे वह विज्ञान से सम्बन्धित हों या इतिहास से, न तो कुर्आन का उद्देश्य है और न इस से दिलों में विनम्रता पैदा होती है जो नसीहत को स्वीकार करने का कारण बनती है। अतः वैज्ञानिक आविष्कारों को कुर्आन के बयान के पक्ष में प्रस्तुत तो ज़रूर किया जाए किन्तु विज्ञान को कुर्आन का विषय न बनाया जाए।

और दसवे यह कि कुर्आन की रुह (Spirit) को पूरी तरह सामने रखा जाए और तफ़सीरी बहसों में उसे गुम न होने दिया जाए।

इन उद्देश्यों में हमें कहाँ तक सफलता हुई है इस का

अन्दाज़ा तो पाठक ही कर सकते हैं किन्तु जिस हद तक भी सफलता हुई है वह अल्लाह की विशेष अनुकंपा ही का फल है वरना इस तुच्छ को अपने तुच्छ ज्ञान का पूरा एहसास है। सच्चाई यह है कि कुर्आन करीम के अनुवाद और तफ़सीर का काम अत्यंत दुष्कर और बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी की बात है। लेकिन जब मेरे मुख्तस साथियों ने जो इदारा दअवतुल कुर्आन के सदस्य हैं मुझ पर यह ज़िम्मेदारी डाली तो अल्लाह तआला ने अपने उदार अनुग्रह से अलंकृत किया और हदीस “हर व्यक्ति के लिए वह काम आसान कर दिया जाता है जिस के लिए वह पैदा कर दिया गया है” के अनुसार इस की तौफ़ीक़ हुई। यहाँ मैं यह भी बताता चलूँ कि मैं अपने छात्र काल से जब कि मैं मुंबई के अन्जुमन इस्लाम हाई स्कूल में शिक्षा ग्रहण कर रहा था तो मेरा प्रमुख विषय कुर्आन ही रहा और बाद में वर्षों तक कुर्आन का दर्स देने और इस का गहरा अध्ययन करने के अवसर प्राप्त होते रहे। अरबी भी मैं ने कुर्आन समझने ही के लिए सीखी और कुर्आन ही से सीखी। और यह अल्लाह की बहुत बड़ी रहमत है जिस से उस ने अलंकृत किया

الرَّحْمَنُ عَلَّمَ الْقُرْآنَ

अर्थ:- रहमान ने कुर्आन सिखाया

तफ़सीर दअवतुल कुर्आन का सर्वप्रथम उद्देश्य यही है कि कुर्आन की दअवत कुर्आन के ही द्वारा खुदा के बन्दों तक पहुँचाई जाए। ग़ैर मुस्लिमों में सत्य स्वीकार करने की भावना और मुसलमानों में कुर्आन समझने की भावना पैदा हो और वे अपने सुधार की ओर आकर्षित हो जाएँ किन्तु कोई तफ़सीर प्रभावकारी तभी हो सकती है जब कि सत्य स्वीकार करने के लिए दिल के दरवाज़े खुले हुए हों।

तेरे ज़मीर पे जब तक न हो नुज़ूले-किताब

गिरह कुशा है न राज़ी न साहबे कशशाफ़

अंत में दुआ है कि अल्लाह तआला लग़िज़ों, त्रुटियों को माफ़ फ़रमाए। कुर्आन की इस सेवा को स्वीकार करे और पढ़ने वालों को इस्लाह और हिदायत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

शम्स पीरज़ादा

इदारा दअवतुल कुर्आन

५९, मुहम्मद अली रोड, मुंबई ४००००३

२७ ज़ोक्रादा सन १४१४ हिजरी

तदनुसार ९ मई सन १९९४ ई.

D

सूची

सूरह नं.	नाम सूरह	पृष्ठ सं.
३०.	अर-रूम	१
३१.	लुकमान	२८
३२.	अस्सज्दा	४७
३३.	अल-अहज़ाब	५८
३४.	सबा	११३
३५.	फ़ातिर	१३८
३६.	यासीन	१६०
३७.	अस्साफ़फ़ात	१८७
३८.	सौद	२२४
३९.	अज़्ज़ुमर	२५२
४०.	अल-मोमिन	२८६
४१.	हामीम अस्सज्दा	३१४
४२.	अश-शूरा	३४३
४३.	अज़्-ज़ुख़रूफ़	३७३
४४.	अद्-दुख़ान	४०१
४५.	अल-जासिया	४१४
४६.	अल-अहक्राफ़	४२६
४७.	मुहम्मद	४४४
४८.	अल फ़त्ह	४६२
४९.	अल हुजुरात	४८६
५०.	क्राफ़	५०१
५१.	अज-जारियात	५१८
५२.	अत-तूर	५३६
५३.	अन-नज़्म	५४८
५४.	अल-कमर	५७०
५५.	अर-रहमान	५८६
५६.	अल-वाकिआ	६०४
५७.	अल-हदीद	६२०
५८.	अल-मुजादलह	६४२
५९.	अल-हश्र	६५६
६०.	अल्-मुमतहिनः	६७३
६१.	अस-सफ़	६८५
६२.	अल-जुमुआ	६९६
६३.	अल-मुनाफ़िकून	७०३
६४.	अत-तागाबुन	७११
६५.	अत-तलाक़	७१९
६६.	अत-तहरीम	७३४
६७.	अल-मुल्क	७४४
६८.	अल-क़लम	७५६
६९.	अल-हाक्क़ः	७७३
७०.	अल-मआरिज	७८२
७१.	नूह	७९२

E

सूरह नं.	नाम सूरह	पृष्ठ सं.
७२.	अल-जिन्न	८०१
७३.	अल-मुज्जम्मिल	८१२
७४.	अल-मुद्स्सिर	८२३
७५.	अल-क्रियामः	८३६
७६.	अल-इन्सान	८४८
७७.	अल-मुर्सलात	८५८
७८.	अन्-नबा	८७०
७९.	अन्-नाजिआत	८८३
८०.	अबस	८९४
८१.	अत-तक्वीर	९०२
८२.	अल-इन्फितार	९१२
८३.	अल-मुतफ्फिफ़ीन	९२०
८४.	अल-इन्शिकाक़	९३१
८५.	अल-बुरुज	९३८
८६.	अत-तारिक़	९४६
८७.	अल-आला	९५४
८८.	अल-गाशिया	९६३
८९.	अल-फ़ज्र	९६९
९०.	अल-बलद	९८०
९१.	अश-शाम्स	९८८
९२.	अल-लैल	९९६
९३.	अज़-ज़ुहा	१००४
९४.	अलम नशरह	१०१०
९५.	अत्-तीन	१०१६
९६.	अल-अलक़	१०२२
९७.	अल-क़द्र	१०३०
९८.	अल-बैय्यिनः	१०३७
९९.	अज़-ज़िलज़ाल	१०४३
१००.	अल-आदियात	१०४७
१०१.	अल-क्रारिअः	१०५१
१०२.	अत-तकासुर	१०५५
१०३.	अल-अस्र	१०५९
१०४.	अल-हुमजः	१०६३
१०५.	अल-फील	१०६७
१०६.	कुरैश	१०७३
१०७.	अल-माऊन	१०७७
१०८.	अल-क्रौसर	१०८२
१०९.	अल-काफ़िरून	१०८८
११०.	अन-नस्र	१०९३
१११.	अल-लहब	१०९७
११२.	अल-इख़्लास	११०१
११३.	अल-फलक़	११०७
११४.	अन-नास	१११४
	Index	१११९

तस्वीरें और नक्शे

	पृष्ठ सं.
१. रोम और फ़ारस	६
२. खंदक की जंग का मानचित्र	६७
३. सबा के बाँध (Dam)	१२८
४. सदे मारिब के पुरातत्व	१२९
५. मदीना और हुदैबिया के बीच मार्ग	४६५
६. खैबर का स्थान	४७७
७. क्रौमे हूद और क्रौमे समूद का ठिकाना	९६८
८. गारे हिरा	१०२३
९. हज़रत उस्मान रज़ि के समय के कुर्आन का चित्र	१०४२
१०. काबा पर अब्रहा द्वारा हमले की तैयारी	१०७२
११. बैतुल्लाह (अल्लाह का घर)	१०७३
१२. कुरैश और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नसब नामा	१०७६

३०. अर्-रूम

नाम : सूरह की शुरूआत ही रूम वासियों के बारे में एक भविष्यवाणी से हुई है। इस मुनासिबत से इस का नाम “अर्-रूम” है।

नाज़िल होने का समय : मक्की है और रूम (रोम) वालों के करीबी क्षेत्र में पराजित होने के बाद नाज़िल हुई। अर्थात् नुबुव्वत के सातवें वर्ष सन ६१६ ई. में।

केन्द्रीय विषय : आखिरत का विश्वास पैदा करना है। यह विश्वास इस दुनिया की असल हकीकत जानने से पैदा होता है तथा इस बात से भी कि अल्लाह का हर वादा पूरा हो कर रहता है।

कलाम की तरतीब : आयत १ से ७ में रूमियों के परास्त होने के बाद उन के विजयी होने की भविष्यवाणी की गई है। और इस मुनासिबत से कायनात के वास्तविक संचालनकर्ता अल्लाह और आखिरत की तरफ़ ध्यान को मोड़ा गया है।

आयत ८ से २७ में अल्लाह की उन निशानियों पर विचार

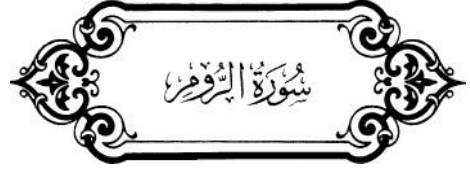
एवं चिंतन करने का न्योता दिया गया है जो धरती और आकाश में फैली हुई हैं और जो मरने के बाद पुनः उठाये जाने वाले दिन आखिरत का दृढ़ विश्वास जगाती हैं।

आयत २८ से ५४ में तौहीद (एकेश्वरवाद) के सत्य होने और शिर्क (बहुदेववाद) के असत्य होने पर तर्क प्रस्तुत किया गया है और यह स्पष्ट किया गया है कि एकेश्वरवादी जीवन प्रणाली (इस्लाम) ही प्राकृतिक धर्म एवं प्राकृतिक जीवन प्रणाली है। तथा इस जीवन प्रणाली को सत्य मानकर स्वीकार कर लेने वालों को अल्लाह के अनुपालन में लगे रहने और उस की अवज्ञा के कामों से बचने की हिदायत की गई है। और जो लोग इस प्रकार जीवन बिताएंगे उन्हें बेहतरीन अन्जाम की खुशखबरी सुनाई गई है।

आयत ५५ से ६० आखिर की आयतें हैं जिन में बातों का रुख फिर क्रियामत और आखिरत की तरफ़ मुड़ गया है।

३०. सूरह अर्-रूम

आयतें : ६०



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़ लाम मीम ¹

الْم ١

2. रूमी पराजित हो गए।²

غَلَبَتِ الرُّومُ ٢

3. करीब के इलाक़े में। और वे अपनी पराजय के बाद विजयी हो जाएंगे।³

فِي أَدْنَى الْأَرْضِ وَهُمْ مِّنْ بَعْدِ عَلَيْهِمْ سَيِّغْلِبُونَ ٣

4. कुछ वर्षों के अन्दर।⁴ अल्लाह ही का अधिकार है पहले भी और बाद में भी ⁵ और उस दिन ईमान वाले खुश होंगे।⁶

فِي بَضْعِ سِنِينَ ۚ لِلَّهِ الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ وَيَوْمَئِذٍ يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ ٤

5. अल्लाह की मदद से।⁷ वह जिसे चाहता है सहायता प्रदान करता है। वह प्रभुत्वाशाली है दयावान ।⁸

يَنْصُرِ اللَّهُ يَنْصُرُ مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ٥

6. यह अल्लाह का वादा है ⁹ अल्लाह वादे की अवहेलना नहीं करता लेकिन अधिकतर लोग जानते नहीं हैं।¹⁰

وَعَدَ اللَّهُ لَا يَخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ٦

7. वे दुनिया की ज़िन्दगी के केवल दृश्य पक्ष को ही जानते हैं और आख़िरत से वे गाफ़िल हैं।¹¹

يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غَفْلُونَ ٧

8. क्या इन्होंने अपने आप में सोच विचार नहीं किया ?¹² अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को और उन के बीच की समस्त वस्तुओं को (मक़सद) हक़ के साथ ¹³ और एक निश्चित अवधि के लिए पैदा किया है।¹⁴ किन्तु बहुत से लोग अपने रब की मुलाक़ात के इन्कारी हैं।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِمْ مَّا خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِأَحَدٍ مِّنْ عِلْمٍ يَوْمٍ ۖ وَإِنْ كَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ يَلْفَافُونَ ٨

1. हुरूफ़े-मुक्तआत (विभक्त अक्षरों) की व्याख्या के लिए देखिए सूरह बकरह नोट १, सूरह यूनुस नोट १ और सूरह अनकबूत नोट १।

इस सूरह में अलिफ़ ‘ا’ का इशारा आयात अर्थात् निशानियों की तरफ़ है जिस की ओर बार बार ध्यानाकर्षित किया गया है। उदाहरण स्वरूप आयत १०, २०, २१, २२, २४, ३५, ४६ आदि ‘ا’ लाम का इशारा “लिकाइ-रब्बिहिम” لِقَاءِ رَبِّهِمْ अर्थात् अपने रब की मुलाक़ात (आयत ८) और “लिकाइलआखिर: لِقَاءِ الْآخِرَةِ अर्थात् आखिरत की मुलाक़ात (आयत १६) की तरफ़ है।

और मीम ‘م’ का इशारा मोमिनीन की तरफ़ है जिन की मदद का वादा आयत ४, ५ और ३५ में किया गया है। मतलब यह कि यह सूरह एकेध्रवाद (तौहीद) के तर्कों, आखिरत के विश्वास और ईमान वालों की सहायता इन तीन महत्त्वपूर्ण विषयों पर आधारित है।

2. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी नियुक्त होने के ज़माने में दो महाशक्तियाँ थीं एक फ़ारस (Persioan Empire) जो ईरान और इराक़ पर आधारित थीं और दूसरी रूम (Roman Empire) जो फ़िलस्तीन, सीरिया तुर्की आदि पर आधारित थी और जिस की राजधानी कुस्तुन्तुनिया थी। रूमी अहले किताब में से थे और ईसा अलैहिस्सलाम के मानने वाले थे। किन्तु आन्तरिक विद्रोह के कारण उन का राज्य कमज़ोर हो गया था। फ़ारसवासी मजूसी अर्थात् अग्नि को पूज्य मानने वाले थे किन्तु उन्हें रूमियों की कमज़ोरी से लाभ उठाने का अवसर मिला और उन्होंने एक के बाद एक कई हमले कर के सीरिया और फ़िलस्तीन के इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया। यहाँ तक कि नुबुव्वत के सातवें वर्ष अर्थात् ६१६ ई. में वे अरब की उत्तरी सीमा तक पहुँच गए जहाँ रूमियों का क़ब्ज़ा था रूमियों की पराजय से मक्का के बहुदेववादी बहुत ख़ुश हुए और उन्हें मुसलमानों की ख़िल्ली उड़ाने का अवसर मिला कि देखो तुम्हारी तरह यह भी अल्लाह की किताब को मानने वाले हैं। यदि ये सच्चाई पर होते तो इन्हें कभी पराजय का मुँह न देखना पड़ता। उन की सहानुभूति फ़ारस वालों के साथ थी क्योंकि वे दोनों बहुदेववादी थे।

3. क़रीब के इलाक़े से तात्पर्य सीरिया और अरब के बीच की सीमा है जो अज़रिआत कहलाती थी। यह तबूक से ऊपर का इलाका है। यह इलाका रूमियों के अधिकार क्षेत्र में था और इस इलाके में लड़ाई का अर्थ यह था कि जंग अरब के दरवाज़े पर पहुँच गई है। स्पष्ट है यह अत्यन्त चिन्ता जनक परिस्थिति थी। फिर जब फ़ारस वालों के हाथों रूमी पराजित हुए तो मक्का के बहुदेववादी फूले न समाए और उन की पराजय में मुसलमानों

की पराजय तथा फ़ारस वालों की जीत में अपनी जीत के सपने देखने लगे। किन्तु इन आयतों ने भविष्य में घटित होने वाली घटना की ख़बर सुना कर लोगों को आश्चर्य में डाल दिया। इस आयत में स्पष्ट भविष्यवाणी की गई है कि रूमी यद्यपि पराजित हो गए हैं किन्तु वे विजयी होंगे।

4. मूल अरबी (Text) में शब्द “बिज़्अ” “بِضْع” अर्थात् (कुछ) प्रयुक्त हुआ है जो अरबी में तीन से नौ तक के लिए बोला जाता है। मतलब यह कि इस शब्द के द्वारा अवधि भी सुनिश्चित कर दी गई कि रूमी नौ वर्ष के अन्दर अन्दर विजयी हो जाएंगे।

ध्यान रहे कि उस समय तक नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दअवत रूमियों तक नहीं पहुँची थी और वे तौरात और इन्ज़ील पर ईमान लाने का दावा करते थे। इस लिए उन की हैसियत एक मुसलमान समूह ही की थी। इसी आधार पर कुआन ने उन के पक्ष में भविष्यवाणी की और इसी कारण मक्का के ईमान वाले उन के पक्षधर थे। इस से यह उसूली रहनुमाई मिलती है कि यदि एक देश के मुसलमानों पर दूसरे देश के ग़ैर मुस्लिम आक्रमण कर दें तो दुनिया के मुसलमानों को उस देश के मुसलमानों का समर्थन करना चाहिए जिन के विरुद्ध ग़ैर मुस्लिमों, क़ाफ़िरों या बुत परस्तों ने आक्रमण किया क्योंकि मुसलमान चाहे वे एक बिगड़ी हुई जाति ही क्यों न हों, उन का क़ाफ़िरों के हाथों परास्त होना कदापि पसंदीदा बात नहीं है, तथा इस से इस्लाम की भी मर्यादा को चोट लगती है। इस से अतिरिक्त रहनुमाई यह भी मिलती है कि मुसलमानों के किसी देश पर बहुदेववादियों और क़ाफ़िरों का प्रभुत्व सत्य के विरुद्ध है क्योंकि इस से कुफ़्र और शिर्क को अपना प्रभाव डालने का अवसर मिलता है और समाज में बिगाड़ के लिए मार्ग प्रशस्त हो जाता है। अतः इस का समर्थन कदापि नहीं किया जा सकता।

5. अर्थात् पहले जो रूमी पराजित हुए वह अल्लाह के ही हुक्म से हुए और बाद में जब वे विजयी होंगे तो अल्लाह ही की मर्ज़ी से होंगे। मतलब यह है कि सत्ता एवं संप्रभुता अल्लाह ही के हाथ में है वह जिस को चाहता है प्रदान करता है और जिस को चाहता है वंचित कर देता है। उस की ओर से विजयी एवं पराजय के जो फैसले होते हैं वह न्याय और तत्वदर्शिता पर आधारित होते हैं।

रूमियों ने अपनी मूल जीवन प्रणाली (इस्लाम) में नई नई बातें पैदा कर ली थीं और गृह युद्ध में लिप्त हो गये थे। इस लिए उन पर उन के दुश्मनों को मुसल्लत कर दिया गया ताकि वे होश में आएँ और अपना सुधार कर लें। इस प्रकार बाद में फ़ारस वालों की जो हार हुई वह इस लिए कि ज़ालिमों का ज़ोर टूटे।

6. यह ईमान वालों को ख़ुशख़बरी सुना दी गई कि वे बहुत

जल्दी रूमियों के विजयी होने पर खुशियाँ मनाएँगे। मगर इस में इस से बढ़ कर एक और खुशी की तरफ भी इशारा था और वह थी ईमान वालों के मक्का के काफ़िरों पर विजय अर्जित करने की खुशी। अतएव सन २ हिजरी तदनुसार सन ६२४ ई. में बद्र की घटना घटी जिस में ईमान वालों की जीत हुई और मक्का के काफ़िरों को बुरी तरह पराजय का सामना करना पड़ा।

उधर रूमी भी उसी वर्ष फ़ारस पर विजयी हो गए। हुआ यूँ कि रूम का शासक हिरकल (Herculius) जो कुस्तुन्तुनिया में घिर कर रह गया था। अपनी फ़ौज़ को नये सिरे से तैयार किया और सन ६२३ ई. में एक सुनियोजित योजना के अन्तर्गत आज़रबाइजान के मार्ग से फ़ारस पर हमला कर दिया और अन्दर दाख़िल हो कर मजूसियों के सब से बड़े अग्नि उपासना गृह को तोड़ दिया। उस समय खुसरो द्वितीय (Khosrow II) फ़ारस का शासक था। वह अपनी इस पराजय को विजय में परिवर्तित न कर सका। रूमियों को फ़ारस पर यह विजय सन ६२३ या सन ६२४ ई. में प्राप्त हुई। और इस के बाद उन्होंने कुछ वर्षों के अन्दर फ़िलस्तीन और अपने तमाम इलाके फ़ारस वालों से वापस ले लिए (ऐतिहासिक विवरण के लिए देखिए इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका जिल्द ८ पृष्ठ ७८१ और जिल्द १० पृष्ठ ४५४)।

सारांश यह कि सन २ हिजरी अथवा सन ६२४ ई. वह वर्ष है जिस में एक ओर रूमियों को फ़ारस पर विजय प्राप्त हुई और दूसरी ओर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथी ईमान वालों को मक्का के काफ़िरों पर विजय प्राप्त हुई। इस प्रकार कुर्आन की भविष्यवाणी शब्द शब्द पूरी हुई और ईमान वालों के लिए दोहरी खुशी का सामान हुआ।

कुर्आन की इस भविष्यवाणी का नौ वर्ष के अन्दर अन्दर पूरा हो जाना कुर्आन की और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सत्यता का बहुत बड़ा प्रमाण है। हदीस में आता है कि इस भविष्यवाणी के पूरा हो जाने पर बहुत से लोग ईमान ले आए।

7. अर्थात् ईमान वालों को यह खुशी अल्लाह की सहायता के चलते होगी। इस आधार पर नहीं कि ----- रूमियों ने अपने क़ौशल का प्रदर्शन कर के विजय प्राप्त कर ली क्यों कि ईमान वाले अल्लाह की सामर्थ्य शक्ति पर विश्वास रखते हैं और उस की मदद के उम्मीदवार होते हैं। रूमियों को फ़ारस पर जो विजय प्राप्त हुई उस के अलावा ईमान वालों ने बद्र की जंग में अल्लाह की मदद का प्रत्यक्ष दर्शन किया वह बड़ा ही आत्मविभोर एवं मुग्ध कर देने वाला था।

8. अल्लाह शक्तिशाली है इस लिए वह जिस की मदद करना चाहता है उस को कोई रोक नहीं सकता और वह दयावान है इस लिए वह ईमान वालों पर अवश्य ही दया करेगा और उन

की सहायता करेगा।

9. अर्थात् रूमियों के विजयी होने और ईमान वालों के अल्लाह की मदद पर खुशियाँ मनाने का जो वादा अल्लाह तआला ने किया है वह निश्चित रूप से पूरा हो कर रहेगा। और इतिहास गवाह है कि वह वादा पूरा हो कर रहा तथा कुर्आन का अल्लाह की ओर से होना एक सच्ची घटना के रूप में सामने आया।

10. रूमियों की जीत की जो भविष्यवाणी कुर्आन में की गई वह एक उदाहरण है अल्लाह का वादा पूरा होने का ताकि लोग अच्छी तरह समझ लें कि अल्लाह तआला ने अपनी किताब में जिन जिन बातों के वादे किये हैं वे सब पूरे हो कर रहेंगे किन्तु अधिकांश लोगों का हाल यह है कि वे इन वादों को कोई महत्व ही नहीं देते।

11. इस आयत में बड़ी गहरी बात कही गई है। दुनिया की ज़िन्दगी के बारे में लोगों की जानकारी बिल्कुल सतही है क्यों कि उन की निगाहें वहीं तक जा पाती हैं जो प्रत्यक्ष रूप से उन्हें दिखाई देता है। उस के अन्दरूनी पहलू अथवा वस्तु के अदृश्य पक्ष जो उन की निगाहों से ओझल हैं वहाँ तक उन की निगाह नहीं जा पाती। यदि वे अपने आप में दूरदर्शी होते तो आख़िरत की हक़ीक़त को पा लेते, मगर नहीं वे मात्र ख़ूबसूरत छिलके को देख कर अपना दिल बहला रहे हैं और मूल वस्तु की ओर से बेपरवाह हैं। इस लिए उन के हिस्से में दुनिया के छिलके ही आते हैं। दुनिया में जातियों के उत्थान और पतन और हार जीत की जो घटनाएँ घटित होती हैं उन के पीछे जो वास्तविकताएँ निहित होती हैं उन को देखने और समझने में वे असमर्थ रहते हैं और सतही राय बनाते हैं।

अधुनिक विज्ञान ने यह स्पष्ट कर दिया है कि एक कण (अणु) मात्र कण नहीं होता बल्कि उस के अन्दर इलेक्ट्रान, प्रोट्रान और न्यूट्रान की पूरी एक व्यवस्था होती है और उस में भारी शक्ति निहित होती है। इस लिए आप देख लीजिए कि एटमी शक्ति इसी खोज का परिणाम है। आश्चर्य है कि इन सब अनुभवों एवं प्रयोगों के बाद भी मनुष्य की आँखें नहीं खुलतीं और वह सांसारिक जीवन की ऊपरी चमक दमक पर ऐसा रीझ जाता है कि उस के अन्दर झाँक कर देखने के लिए आमादा नहीं होता। अगर वह जीवन की अन्दरूनी वास्तविकताओं का सुराग लगाने का प्रयास करता तो उस पर आख़िरत की सच्चाई ज़रूर खुल जाती। और वह अल्लाह की प्रकाशना (वहय) की रौशनी में दुनिया के अन्दरून को उसी तरह देख लेता जिस प्रकार वह विशेष प्रकार के एक्स-रे (X-Rays) के द्वारा शरीर के अन्दरूनी भाग को देख लेता है। बल्कि उस से भी अधिक बेहतर तरीक़े से देख लेता।

12. अर्थात् आखिरत का इन्कार करने वाले अपने अन्दर झाँक कर क्यों नहीं देखते कि उन की अन्तरात्मा उन से क्या कह रही है। क्या यह कह रही है कि न उन की पैदाइश का कोई उद्देश्य है और न इस कायनात की पैदाइश का। और मनुष्य अच्छे कर्म करे या बुरे कर्म परिणाम शून्य है, या फिर यह कह रही है कि मनुष्य अपने स्वभाव से एक ज़िम्मेदार सृष्टि है इस लिए उस के पैदा करने का भी एक उद्देश्य है। और चूँकि यह कायनात अत्यंत नीतिपूर्ण ढंग से चल रही है इस लिए इस की रचना का भी एक उद्देश्य है मनुष्य के अच्छे काम का परिणाम अच्छा और बुरे काम का परिणाम बुरा निकलना चाहिए। यदि मनुष्य अपने अन्दर विचार करे और अपनी अन्तरात्मा का विश्लेषण करे तो वह अपने अन्दर से इसी दूसरी बात के पक्ष में जवाब पायेगा। और यह कर्मानुसार मिलने वाले फल के पक्ष में मनुष्य की अन्तरात्मा की गवाही है।

13. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अनआम नोट १२४,

और सूरह यूनुस नोट ११५

14. अर्थात् यह ब्रह्माण्ड जिस प्रकार अनादिकालिक नहीं उसी प्रकार अनंत भी नहीं है मतलब यह कि कायनात न हमेशा से है आर न ही हमेशा रहने वाली है। इस का आरंभ भी है और अंत भी। यह कारखाना एक नियमित समय तक ही चलता रहेगा जिस का निर्धारण अल्लाह तआला ने किया है। और उसी को मालूम है कि इस की समाप्ति कब होनी है।

इस कायनात के दृश्य पक्ष को देख कर लोग यह समझते रहे हैं कि यह हमेशा ऐसी ही रहेगी। अतः इसी विचार के अनुसार उन्होंने अपनी धार्मिक धारणाएँ भी गढ़ ली हैं किन्तु विज्ञान ने इन धारणाओं को ग़लत ठहराया क्योंकि एक अणु (कण) का फट जाना और उस में से एक शक्ति का प्रस्फुटन होना यदि संभव है तो यह क्यों संभव नहीं कि पूरी कायनात एक धमाके से दोचार हो जाए और उस के फटने से ज़बरदस्त शक्ति का प्रस्फुटन हो जाए जो उस को नया आकार नया अस्तित्व प्रदान करे?



क्या ये लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि देख लेते उन लोगों का अन्जाम क्या हुआ जो इन से पहले गुज़र चुके हैं। वे इन से अधिक शक्तिशाली थे। उन्होंने ज़मीन को अधिक बोया जोता था और इन से अधिक उसे आबाद किया था। उन के पास उन के रसूल स्पष्ट निशानियाँ ले कर आए थे। फिर अल्लाह उन पर जुल्म करने वाला न था बल्कि वे स्वयं अपने ऊपर जुल्म कर रहे थे। तो उन लोगों का अन्जाम जिन्होंने बुराई की थी बुरा हुआ। इस लिए कि उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया था और उन का मज़ाक उड़ाते रहे। (अल-कुआन)

9. क्या ये लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि देख लेते उन लोगों का अन्जाम क्या हुआ जो इन से पहले गुज़र चुके हैं।¹⁵ वे इन से अधिक शक्तिशाली थे। उन्होंने ज़मीन को अधिक बोया जोता था और इन से अधिक उसे आबाद किया था।¹⁶ उन के पास उन के रसूल स्पष्ट निशानियाँ ले कर आए थे। फिर अल्लाह उन पर जुल्म करने वाला न था बल्कि वे स्वयं अपने ऊपर जुल्म कर रहे थे।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ⑨

10. तो उन लोगों का अन्जाम जिन्होंने बुराई की थी बुरा हुआ। इस लिए कि उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया था और उन का मज़ाक उड़ाते रहे।

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ اسَاءُوا وَالسُّوْأَى أَنْ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِءُونَ ⑩

11. अल्लाह ही सृष्टि का आरम्भ करता है फिर वह इस की पुनरावृत्ति करेगा।¹⁷ फिर तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे।

اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ⑪

12. और जिस दिन क्रियामत क़ायम होगी अपराधी निराश हो कर हक्का बक्का रह जाएंगे।¹⁸

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُونَ ⑫

13. उन के ठहराए हुए साझीदारों (शरीकों) में से कोई उन का सिफ़ारिशी न होगा और वे अपने शरीकों (साझीदारों) का इन्कार करेंगे।¹⁹

وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مِّنْ شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاءُ وَكَانُوا بِشُرَكَائِهِمْ كَافِرِينَ ⑬

14. जिस दिन वह घड़ी क़ायम होगी उस दिन लोग अलग अलग हो जाएंगे।²⁰

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُومِمُّ الْمُتَفَرِّقُونَ ⑭

15. तो जो लोग ईमान लाए होंगे और जिन्होंने अच्छे कर्म किये होंगे वे एक बाग़ में²¹ खुश खुश रखे जाएंगे।

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ⑮

16. और जिन्होंने ने कुफ़्र किया होगा और हमारी आयतों को और आख़िरत की मुलाक़ात को झुठलाया होगा²² वे यातना में उपस्थित किए जाएंगे।

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ فَأُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ⑯

15. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अनआम नोट २० और सूरह हज्ज नोट ८२

16. अर्थात् गुजरी हुई क्रौमों ने इन अरबों से अधिक सामाजिक प्रगति की थी किन्तु रसूलों को झुठलाने के फलस्वरूप उन पर अज़ाब (प्रकोप) टूटा और उन का सारा समाज सारी प्रगति खाक में मिल कर रही ।

17. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अनकबूत नोट ३६

18. अर्थात् जो लोग शिर्क जैसा अक्षम्य अपराध कर के आए होंगे वे अल्लाह की रहमत से निराश होंगे और क्रियामत के हालात देख कर उन के होश उड़ जाएंगे।

19. अर्थात् क्रियामत के दिन ईमान और कुफ्र के आधार पर लोगों को अलग अलग समूह में बाँट दिया जाएगा, रंग और वंश, जाति और देश के सारे विवाद निरर्थ हो चुके होंगे। धारणा

और कर्म का अन्तर वास्तविक अन्तर ठहरेगा और इसी के आधार पर लोगों के समूह बनेंगे ।

21. मूल अरबी में “रौज़ा ” (बाग) का शब्द प्रयुक्त हुआ है जो अरबी में उस बाग के लिए बोला जाता है जो सुदृश्य भी हो और जिस में अधिकता के साथ पानी भी हो। यहाँ जन्नत के हरे भरे तथा खुशी और आनंद प्रदान करने वाले बाग की कल्पना कराना अभिप्रेत है।

22. कुफ्र केवल यही नहीं है कि अल्लाह के होने का इन्कार किया जाए बल्कि उस के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए उस की आयतों का इन्कार करना भी है जिन में वे तमाम निशानियाँ शामिल हैं जो अल्लाह के एक होने पर तर्क प्रस्तुत करती हैं। तथा वे आयतें भी जो रसूल पर नाज़िल हुईं। इसी तरह क्रियामत के दिन अल्लाह के समक्ष पेशी को झुठलाना भी सरासर कुफ्र है।



17. तो अल्लाह की तस्बीह करो, शाम के समय भी और सुबह के समय भी।²³

فَسُبْحْنَ اللَّهَ حِينَ تَسُوءُ وَحِينَ تَصْبِحُونَ ①

18. —और उसी के लिए प्रशंसा है आसमानों और ज़मीन में²⁴—और (उस की तस्बीह करो) दिन के आखिरी हिस्से में भी।²⁵ और उस समय भी जब जुहर हो।²⁶

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ②

19. वह ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को ज़िन्दा से²⁷ और ज़मीन को उस के मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा करता है।²⁸ इसी तरह तुम भी निकाले जाओगे।²⁹

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُخْرِجُ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ③

20. उस की निशानियों में से यह है कि उस ने तुम को मिट्टी से पैदा किया³⁰ फिर यकायक तुम मनुष्य बन कर फैलने लगे।³¹

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُونَ ④

21. और उन की निशानियों में से यह है कि उस ने तुम्ही में से पत्नियाँ पैदा कीं³² ताकि तुम उन से सुकून प्राप्त करो।³³ और तुम्हारे बीच मुहब्बत और रहमत पैदा की।³⁴ निस्संदेह इस के अन्दर निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच विचार करते हैं।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ⑤

22. और उस की निशानियों में से आसमानों और ज़मीन की पैदाइश³⁵ और तुम्हारी भाषाओं और तुम्हारे रंगों का अन्तर है।³⁶ निस्संदेह इस में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं।³⁷

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافُ أَلْسِنَتِكُمْ وَالْوَانِكُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِلْعَالَمِينَ ⑥

23. और उस की निशानियों में से है रात और दिन में तुम्हारा सोना³⁸ और उस के फ़ज़ल (आजीविका) को तलाश करना।³⁹ निस्संदेह इस में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं।⁴⁰

وَمِنْ آيَاتِهِ مَنَامُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاؤُكُمْ مِنْ قَضِيَّتِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُسْمِعُونَ ⑦

24. और उस की निशानियों में से यह है कि वह तुम को बिजली की चमक दिखाता है जो भय भी उत्पन्न करती है और आशा भी⁴¹ और आसमान से पानी बरसाता है। और ज़मीन को उस के मुर्दा हो जाने के बाद जीवन प्रदान करता है। निस्संदेह इस में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं।

وَمِنْ آيَاتِهِ يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُخْرِجُ بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ⑧

23. अर्थात् जब अल्लाह की कुदरत के ये करिश्मे हैं जिन्हें तुम रात दिन अपनी आखों से देखते रहते हो, तो चाहिए कि उस की पाकी बयान करो, उस का गुणगान करो और उस का नाम जपते रहो विशेष रूप से दिन और रात के हर मोड़ पर जब कि आसमान पर कुदरती आसार स्पष्ट हो जाते हैं और वातावरण में परिवर्तन होने लगता है, अपने प्रभु की ओर ध्यान को मोड़ने वाले इन चिन्हों को देखकर तुम्हें उस का गुणगान और उस की प्रशंसा करनी चाहिए तथा उस की इबादत में लग जाना चाहिए।

तस्बीह (गुणगान) का यह हुक्म अपने भाव से काल मुक्त है अर्थात् किसी भी समय उस की तस्बीह की जा सकती है किन्तु यह और इस के बाद वाली आयत में पाँच वक्त की नमाज़ की ओर इशारा है जो गुणगान तथा प्रशंसा करने का उत्तम रूप है। शाम का समय मगरिब और इशा की नमाज़ का समय है और सुबह का समय फ़ज़्र की नमाज़ का।

24. अर्थात् आसमान और ज़मीन में अल्लाह ही प्रशंसा का वास्तविक हक़दार है और पूरी कायनात उस के गुणगान में तल्लीन है अतः तुम भी उस जैसे हो जाओ। तथा इस ब्रह्माण्ड में किसी और का राग अलापने तथा किसी और के नाम की माला जपने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

25. दिन के आखिरी हिस्से का मतलब अस्त्र का समय है। यह समय अस्त्र की नमाज़ अदा करने का है।

26. जुहर अर्थात् सूरज ढलने का समय। यह समय जुहर की नमाज़ अदा करने का है।

27. इस की व्याख्या सूरह आले-इमरान नोट ४० और सूरह अन्आम नोट १७७ में गुज़र चुकी।

28. इस की व्याख्या सूरह बकरः नोट १९७ में गुज़र चुकी।

29. अर्थात् मौत के बाद क्रियामत के दिन तुम दोबारा पैदा किए जाओगे।

30. अल्लाह मनुष्यों का सृष्टा है और जब सृष्टा ने स्वयं बतलाया कि उस ने मनुष्य को मिट्टी से पैदा किया है तो इस से अधिक विश्वस्नीय बात और क्या हो सकती है? इस का अनुमोदन इस बात से भी हो सकता है कि मनुष्य अपना आहार अपनी आजीविका मिट्टी से ही प्राप्त करता है और मर कर मिट्टी ही में मिल जाता है।

विज्ञान के अनुसार भी पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति बाद ही में हुई है। परन्तु डारविन का यह सिद्धान्त कि मनुष्य बन्दर से उत्पन्न हुआ है मात्र अटकल है जिस का कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं और कुर्आन के बयान के सरासर विरुद्ध है अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह हज़्ज नोट ७

31. मनुष्य मिट्टी से पैदा किया गया था। इस के बाद उस की नस्ल ऐसी चली कि पूरी दुनिया इन्सानों से आबाद हो गई और अरबों मनुष्य दुनिया में फैलते ही चले जा रहे हैं। यह किस की कुदरत का

करिश्मा है?

पहले भी मनुष्य अपनी पैदाइश पर इस पहलू से विचार न करने के फलस्वरूप शिर्क (बहुदेववाद) में लिप्त हुआ और आधुनिक युग का मानव भी इस पहलू से सोच विचार न करने के फलस्वरूप कुफ़्र और अनीश्वरवाद में लिप्त हैं।

32. इस की व्याख्या सूरह नहल नोट १०७ में गुज़र चुकी।

33. पत्नियों (औरतों) को पैदा करने का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि पुरुषों को उन से सुकून प्राप्त हो किन्तु इस का मतलब यह नहीं है कि औरतें मर्दों के हाथ में खिलौना मात्र हैं बल्कि जिस तरह एक बुलन्द मक़सद के लिए मर्दों की रचना की गई है उसी तरह उच्च उद्देश्य के लिए औरतों की भी रचना हुई है। इस लिए एक ज़िम्मेदार सृष्टि होने की हैसियत से दोनों बराबर हैं।

34. मुहब्बत ये कि गहरा दिली लगाव एक दूसरे के साथ पैदा हो जाता है। और रहमत ये कि पति और पत्नी एक दुसरे के दुख और सुख में शामिल रहते हैं। इस तरह दोनों “एक जान दो क़ालिब” अर्थात् एक बन कर रहते हैं।

35. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बकरः नोट १९६

36. मनुष्य यदि स्वचालित मशीन (Automatic Machine) में ढल कर निकला होता तो सब की भाषा सब का रंग एक जैसा होता, किन्तु हम देखते हैं कि विभिन्न जातियों की विभिन्न बोलियाँ हैं और रंग भी भिन्न भिन्न हैं। कोई काला है तो कोई गोरा, कोई गेहूँ रंग का है, तो किसी का रंग लाल होता, प्रांतीय होता है। बोल चाल, और रंग के ये अन्तर क्या इस वास्तविकता की ओर रहनुमाई नहीं करते कि मनुष्य की रचना के पीछे एक इरादा, एक नीति एक योजना निहित है जो एक महान संचालक के अस्तित्व पर तर्क प्रस्तुत करता है।

37. अर्थात् जो जिहालत के अंधकार में नहीं रहते बल्कि ज्ञान के उजाले में अपनी सोच को आकार देते हैं और अपने जीवन का सफ़र तय करते हैं।

38. नींद की अवस्था कितनी विचित्र एवं चकित कर देने वाली है कि उस में न आदमी को भूख का पता चलता है और न प्यास का। साथ ही वह थकावट को दूर कर के ताज़गी पैदा करती है और नींद के दौरान शरीर में सुधार की प्रक्रिया तेज़ी से अन्जाम पाती है। क्या यह सब आप से आप हो रहा है?

39. अपनी आजीविका को प्राप्त करने के लिए जो दौड़ धूप की जाती है उस को अल्लाह का फ़ज़ल तलाश करना कहा गया है। क्योंकि गुज़र बसर की सामग्री अल्लाह का महसूस होने वाला अनुग्रह (फ़ज़ल) है।

40. अर्थात् जो लोग नसीहत की बातों को सुनने के लिए अपने कान खुले रखते हैं वही पैग़म्बर की नसीहत का असर लेते हैं और उन चिन्हों से जिन को कुर्आन बताता है सही रहनुमाई ग्रहण करते हैं।

41. व्याख्या के लिए देखिए सूरह रअद नोट २८

25. और उस की निशानियों में से यह है कि आसमान और ज़मीन उस के हुक्म से क़ायम हैं⁴² फिर जब वह तुम को ज़मीन से पुकारेगा तुम अचानक निकल पड़ोगे।⁴³

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرِ ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ﴿٢٥﴾

26. आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं उसी के ममलूक हैं।⁴⁴ सब उसी की आज्ञा के आधीन हैं।⁴⁵

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلٌّ لَهُ قَانُونَ ﴿٢٦﴾

27. वही सृष्टि का आरम्भ करता है और वही उस की पुनरावृत्ति करेगा (लौटाएगा) और यह उस के लिए अधिक आसान है।⁴⁶ आसमान और ज़मीन में उस की शान सर्वश्रेष्ठ है⁴⁷ और वह प्रभुत्वशाली है, तत्त्वदर्शी।⁴⁸

وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ۚ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾

28. वह तुम्हारे लिए तुम्हारी अपनी हस्ती से सम्बन्धित उदाहरण प्रस्तुत करता है। क्या तुम्हारे ममलूकों (गुलामों) में से ऐसे भी हैं जो हमारे दिए हुए माल में तुम्हारे साझीदार (शरीक) हों ? कि तुम और वह उस में समान भागीदार ठहरें और तुम उन से उसी तरह डरते हो जिस तरह अपनों से डरते हो।⁴⁹ इस तरह हम अपनी आयतों को खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं।

ضَرَبَ لَكُمْ مَثَلًا مِّنْ أَنْفُسِكُمْ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَاءَ فِي مَارَرَقْتِكُمْ فَأَنْتُمْ فِيهِ سَوَاءٌ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٢٨﴾

29. परन्तु ये ज़ालिम⁵⁰ बे जाने बुझे अपनी इच्छाओं के पीछे चल रहे हैं।⁵¹ तो जिन को अल्लाह ने गुमराह कर दिया हो उन को कौन रास्ता दिखा सकता है?⁵² ऐसे लोगों का कोई सहायक न होगा।

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْوَاءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ فَمَنْ يَهْدِي مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نَّاصِرِينَ ﴿٢٩﴾

30. अतः तुम अपना रुख उस दीन की तरफ़ कर लो एकाग्रचित हो कर⁵³ वह स्वभाविक दीन जिस पर अल्लाह ने इन्सानों को पैदा किया।⁵⁴ अल्लाह की बनाई हुई संरचना में कोई परिवर्तन नहीं।⁵⁵ यही सही दीन है परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं हैं।⁵⁶

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾

42. आकाश का समस्त नक्षत्रों, ग्रहों एवं उपग्रहों के साथ इस तरह क्रायम रहना और ज़मीन का इस तरह टिका रहना कि लम्बी अवधि गुज़र जाने के बाद न उन में कोई ख़राबी पैदा हो और न उन की व्यवस्था में कोई विघ्न उत्पन्न हो, इस बात की स्पष्ट दलील है कि ख़ुदा ही की हस्ती है जिस के हुक्म से ये क्रायम हैं और जब उस के हुक्म से क्रायम हैं तो वह अपने हुक्म से इन को तोड़ फोड़ भी सकता है। अतः क्रियामत कदापि असंभव नहीं।

43. अर्थात् तुम को पुनः ज़िन्दा करने के लिए अल्लाह का तुम को एक बार पुकारना काफ़ी होगा। ज्यों ही वह तुम्हें आवाज़ देगा तुम ज़मीन से ज़िन्दा निकल पड़ोगे। यह निकलना शरीर के साथ होगा और अल्लाह की पुकार ज़मीन के अन्दर से सुनाई देगी।

44. अर्थात् उस के बन्दे हैं। इन में से कोई भी मालिक नहीं। बल्कि सब का मालिक अल्लाह है। इन्सान भी पैदाइशी तौर पर अल्लाह का बन्दा और गुलाम है।

45. अर्थात् सब उस के आगे बेबस हैं और उन पर उस के आदेश लागू हो कर रहते हैं।

46. अर्थात् अल्लाह के लिए दूसरी बार पैदा करना कुछ भी मुश्किल नहीं। जब तुम मानते हो कि पहली बार उस ने पैदा किया है तो फिर दूसरी बार पैदा करना उस के लिए और आसान होगा। परन्तु यह कैसी बात है कि तुम दोबारा पैदा किये जाने को असंभव समझते हो।

47. अर्थात् अल्लाह को मनुष्य या किसी अन्य सृष्टि जैसा न समझो। वह ऐसी उच्चतर हस्ती है जिस की कायनात में कोई मिसाल नहीं। वह अपने अस्तित्व और अपने गुणों में बिलकुल अकेला है और उस के गुण अत्यंत उच्च हैं।

इस वास्तविकता को देखते हुए अल्लाह तआला के बारे में कोई ऐसी बात कहना जो उस की शान से मेल न खाती हो या जिस से उस की शान में गुस्ताखी होती हो सरासर जिहालत और गुमराही है।

48. अल्लाह के दो गुण यहाँ बयान हुए “अज़ीज़” अर्थात् प्रभुत्वशाली और “हकीम” अर्थात् तत्त्वदर्शी। वह प्रभुत्वशाली है इस लिए उस का यह वादा कि वह मनुष्यों को दोबारा पैदा करेगा पूरा हो कर रहेगा। और उस का यह फैसला कि क्रियामत बरपा होगी और अदालत क्रायम होगी अत्यंत तत्वपूर्ण फैसला है जो लागू हो कर रहेगा।

49. यह उदाहरण शिर्क (बहुदेववाद) के बुद्धिसंगत न होने को स्पष्ट करने के लिए प्रस्तुत किया गया है। जब तुम अपने गुलामों को अपने माल में बराबर का साझीदार नहीं समझते और उन के साझीदार न होने के आधार पर तुम उन से यह भय नहीं

रखते जो अपनों से रखते हो मतलब यह कि कहीं कोई तुम्हारा हक़ न मार बैठे या उस को अनुचित ढंग से इस्तेमाल न कर ले। तो जब तुम अल्लाह के दिए हुए माल में अपने गुलामों को साझीदार नहीं ठहराते और उन को बराबरी का हक़दार नहीं समझते तो अल्लाह की बनाई हुई सृष्टि में उस का साझी और शरीक किस तरह ठहराते हो और उन के अधिकार अल्लाह के अधिकार के समान क्यों ठहराते हो? जो बात तुम अपने लिए पसन्द नहीं करते वह अल्लाह के लिए कैसे पसंद करते हो जब कि उस की शान बहुत बुलन्द है।

50. अभिप्रेत मुश्रिक (बहुदेववादी) एवं बुत परस्त हैं।

51. पता चला कि बहुदेववाद और मूर्ति पूजा का ज्ञान, बुद्धि एवं तार्किकता से कोई सम्बन्ध नहीं। वह मात्र इच्छा परस्ती है।

52. अर्थात् जो अल्लाह के बनाए हुए गुमराही के नियमानुसार गुमराह हुआ उस को सीधी राह पर लाना किसी के बस की बात नहीं।

53. अर्थात् जब एकेश्वरवाद ही मूल वास्तविकता है---और सब से बड़ी सच्चाई ---- तो चाहिए कि इस एकेश्वरवादी जीवन प्रणाली के लिए अपने दिल और दिमाग़ को एकाग्र कर लो और उसी पर डट जाओ। तुम्हारी निगाहें इधर उधर भटकने न पाएँ बल्कि इस्लामी जीवन प्रणाली ही पर केन्द्रित हो कर रह जाँएँ।

इस्लाम के सिवा जो शुद्ध रूप से एकेश्वरवादी जीवन प्रणाली है किसी भी धर्म की और मामूली सा झुकाव भी ईमान को प्रभावित कर देता है और सभी धर्मों के सही होने की बात तो सरासर गुमराही की बात है।

54. अभिप्रेत इस्लाम है और इस्लाम को स्वभाविक जीवन प्रणाली इस लिए कहा गया है कि

(A) प्रत्येक मनुष्य के स्वभाव में एक ख़ुदा की कल्पना बसी होती है जिसे वह अपने सृष्टा अपने प्रभु की हैसियत से पहचानता है। अन्य ख़ुदाओं की धारणा से स्वभावतः वह अनभिज्ञ होता है।

एक मात्र ख़ुदा के प्रभु होने की प्रतिज्ञा अन्तरात्मा की प्रतिज्ञा है जो समस्त मानवों से दुनिया में उन के भेजे जाने से पूर्व ही ली जा चुकी है। देखिए सूरह आराफ़ आयत १७२ नोट २६४, २६५।

(B) मनुष्य का स्वभाव मूल रूप से भलाई और नेकी के कामों को पसंद करता है और फ़ितने एवं बुराई से नफ़रत करता है। इस्लाम इन स्वभाविक इच्छाओं को परवान चढ़ाता है।

(C) इन्सान का अपना ज़मीर और उस की पूरी अन्तरात्मा उस को अपने प्रभु के समक्ष उत्तरादायी ठहराती है। इस्लाम इस धारणा का न केवल अनुमोदन करता है बल्कि उस को दिल में मज़बूती से बिठाता भी है।

(D) मानव स्वभाव सच और झूठ में अन्तर करता है। और जब इस्लाम एक सच्चा दीन होने की हैसियत से उस के सामने आ जाता है तो वह उस की ओर लपकता है जिस प्रकार सुई चुम्बक की तरफ़। ये तो पागल इच्छाएँ, वैमनस्य और शैतानी बहकावे हैं जो रुकावट बनते हैं।

(E) पानी का स्वभाव ढाल की ओर बहना है उसी प्रकार मनुष्य का स्वभाव सीधे मार्ग पर चलना है। यदि गुमराही के साधन न हों तो ज्यों ही इस्लाम की सीधी राह उस पर खुलेगी वह उसी पर चल पड़ेगा।

मतलब यह कि इस्लाम स्वभाव की अन्तरइच्छाओं का स्पष्टीकरण है इस लिए यह प्रत्येक व्यक्ति का दीन है और यह इस्लाम ही है जो पूरे दावे के साथ कहता है कि यह दीन अथवा यह जीवन प्रणाली स्वभाविक जीवन प्रणाली है जब कि कोई दूसरा दीन यह दावा करने का साहस नहीं कर सकता।

इस्लाम के स्वभाविक दीन होने को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस प्रकार स्पष्ट किया है।

مَا مِنْ مَوْلُودٍ إِلَّا يُولَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ. فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهِ وَ
يُنَصْرَانِهِ وَيُجَارِيَانِهِ. (مسلم کتاب القدر)

अर्थ: “हज़रत अबू हुसैरह रजि. कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, “कोई बच्चा ऐसा नहीं जो फ़ितरत (एक ही स्वभाव) पर पैदा न होता हो। फिर उस के माता पिता उसे यहूदी ईसाई या बहुदेववादी बना देते हैं।” (मुस्लिम)

अर्थात् बच्चे को उस के स्वभाव और स्वभाविक तरीके से फेर कर किसी अन्य धर्म तथा अन्य प्रणालियों से सम्बद्ध करने वाली वस्तु एक बाह्य प्रक्रिया है। यह काम माता पिता या माहौल अन्जाम देता है चाहे वह यहूदियत के रूप में हो यह ईसाईयत के रूप में या बुद्धमत के रूप में हो या हिन्दु मत के मुर्ति पूजा के रूप में या अनीशवरवाद एवं नास्तिकता के रूप में।

सार यह कि जिस व्यक्ति ने भी अपने स्वभाव को बिगाड़ न लिया हो तो वह इस्लाम को अपने दिल ही की आवाज़ समझेगा।

55. अर्थात् अल्लाह ने जिस स्वभाव पर पैदा किया है और जिस साँचे में ढाला है उस में परिवर्तन न किया जाए। यद्यपि यह बात अक़ीदे से सम्बन्धित बयान हुई है परन्तु शब्दों की सार्वजनिकता अर्थ के फैलाव को अपने अन्दर लिये हुए है जिस में संरचना का बाह्य परिवर्तन न करना भी शामिल है। अतः उस ज़माने में कुछ फैशन ऐसे थे जिन से अल्लाह की बनाई हुई संरचना में अन्तर आ जाता था। इस लिए हदीस में न केवल इन की मनाही कर दी गई बल्कि ऐसे फैशन परस्तों को लानत का पात्र बताया गया। जैसे भौहों को बरीक़ करना दाँतों के बीच दरजी (छेद) बनाना, हाथों को गोदना आदि। हदीस में आता है

عن عبد الله رضى الله عنه قال لعن الله الواشمات
والمستوشمات والمتمنّمصات والمتفلجات للحسن
المُغِيرَاتِ خَلَقَ اللَّهُ مَالِي لَا أَلْعَنُ مَنْ لَعَنَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ
وَهُوَ فِي كِتَابِ اللَّهِ. (صحیح البخاری- کتاب اللباس)

अर्थ :- “हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. से उल्लिखित है, कहते हैं कि अल्लाह ने लानत फ़रमाई है गोदने वालियों, गोदवाने वालियों, भौहों के बाल नोच नोच कर निकालने वालियों और दाँतों के बीच दरजी पैदा करने वालियों पर जो मात्र सुन्दरता के लिए अल्लाह की संरचना में परिवर्तन करती हैं। मैं उन पर क्यों न लानत करूँ जिन पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लानत फ़रमाई है और यह बात अल्लाह की किताब में मौजूद है। (अर्थात् रसूल के आज्ञा पालन का हुक्म)”

इसी प्रकार आजकल के दौर में दाढ़ी मुँडाने का फैशन, जब कि दाढ़ी स्वभाविक रूप से मर्द होने का प्रतीक है, मात्र ख़ूबसूरती बढ़ाने के लिए प्लास्टिक सर्जरी के द्वारा अपने चेहरे को बदलना, अपनी पिंडलियों को नाजुक बनाना। किसी वास्तविक मजबूरी के बग़ैर नस बन्दी कराना आदि।

56. और आज भी अधिकतर लोगों का हाल यही है कि वे नहीं जानते कि इस्लाम ही स्वभाविक एवं सच्चा दीन है। वे या तो यह समझते हैं कि जिस धर्म में वे पैदा हुए हैं वह सही धर्म है या यह समझते हैं कि दुनिया के सभी धर्म सही हैं जिन में इस्लाम भी शामिल है।

जब लोगों को तकलीफ़ पहुँचती हैं तो अपने रब को पुकारते हैं, उस की तरफ़ रुजू हो कर फिर जब वह अपनी रहमत का स्वाद चखाता है तो उन में से एक गिरोह अपने रब का साझी ठहराने लगता है। ताकि जो कुछ हम ने उन्हें प्रदान किया उस की नाशुक्री करे। तो मज़े कर लो बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जाएगा। (अल-कुर्आन)

31. (अपना रुख उस दीन की तरफ़ कर लो) उस की तरफ़ रुजू करते हुए⁵⁷ और उस से डरो⁵⁸ और नमाज़ क़ायम करो और बहुदेववादियों में से न हो जाओ।⁵⁹

مُنِيبِينَ إِلَيْهِ وَاتَّقُوهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا
مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝۳۱

32. जिन्होंने ने अपने दीन में विभेद पैदा किया और गिरोहों में बँट गए।⁶⁰ प्रत्येक गिरोह के पास जो कुछ है वह उस में मगन है।⁶¹

مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِعَاءً كُلِّ حِزْبٍ بِمَا
لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ۝۳۲

33. जब लोगों को तकलीफ़ पहुँचती है तो अपने रब को पुकारते हैं, उस की तरफ़ रुजू हो कर, फिर जब वह अपनी रहमत का स्वाद चखाता है तो उन में से एक गिरोह अपने रब का साझी ठहराने लगता है।⁶²

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا
أَذَقَهُمْ مِنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يَشْكُرُونَ ۝۳۳

34. ताकि जो कुछ हम ने उन्हें प्रदान किया उस की नाशुक्री करें। तो मज़े कर लो बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जाएगा।

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝۳۴

35. क्या हम ने कोई प्रमाण इन पर उतारा है जो इन के ठहराए हुए शरीकों पर साक्ष्य है।⁶³

أَمْ أَنْزَلْنَاهُمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ۝۳۵

36. जब हम लोगों को अपनी दयालुता का स्वाद चखाते हैं तो वे इतराने लगते हैं। और जब उन के करतूतों के कारण उन पर कोई मुसीबत आती है⁶⁴ तो वे तुरन्त निराश हो जाते हैं।⁶⁵

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا وَإِنْ تُصِيبُهُمْ سَيِّئَةٌ
بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ۝۳۶

37. क्या ये देखते नहीं? कि अल्लाह ही रोज़ी विस्तृत करता है जिस के लिए चाहता है और नपा तुला कर देता है जिस के लिए चाहता है। निस्संदेह इस में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं।⁶⁶

أَوْ لَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّ فِي
ذَلِكَ لَايَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝۳۷

38. तो नातेदार को उस का हक़ दो और मिस्कीन एवं मुसाफ़िर को उस का हक़।⁶⁷ यह बेहतर है उन लोगों के लिए जो अल्लाह की प्रसन्नता के इच्छुक हैं।⁶⁸ और वही सफलता (फ़लाह) पाने वाले हैं।⁶⁹

فَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ ذَٰلِكَ
خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝۳۸

57. अर्थात् इस्लाम की ओर अपना रुख इस तरह से कर लो कि दिल में अल्लाह के लिए रूजू और पश्चाताप हो।

58. अर्थात् वह कितना शक्तिशाली है यह सोच कर डरो और उस की अवज्ञा से बचो।

59. यह वाक्य कि “नमाज़ क़ायम करो और बहुदेववादियों में से न हो जाओ” इस बात की ओर इशारा करता है कि मुसलमान को बहुदेववादियों से अलग करने वाली चीज़ नमाज़ है। नमाज़ क़ायम कर के आदमी एकेश्वरवादी बनता है और इस को छोड़ कर अपने को शिर्क और कुफ़्र की राह पर डाल देता है।

यह सच है कि नमाज़ शुरू से आख़िर तक एकेश्वरवाद पर आधारित है। वह बन्दा और अल्लाह के बीच प्रार्थना एवं दुआ है जिस में न कोई वास्ता है और न वसीला, न किसी की मान मर्यादा का हवाला दिया जाता है और न किसी के सदके में कुछ माँगा जाता है। बल्कि जो कुछ माँगा जाता है अपने रब से सीधे सीधे माँगा जाता है उसी की प्रशंसा एवं गुणगान करते हुए। यदि मुसलमान नमाज़ में जो कुछ पढ़ा जाता है उसी पर गौर करें, तो अपना दामन शिर्क और बिदअतों से झाड़ दें।

60. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट २९५

61. अर्थात् प्रत्येक धर्म के अनुयायी अपने अपने धर्म पर खुश और उस में मन से आस्था व्यक्त करने वाले हैं। वे कभी यह सोचने के लिए आमादा नहीं होते कि जिस धर्म और व्यवस्था में वे विश्वास जताते हैं वह वास्तव में अल्लाह का प्रदान किया हुआ है या इन्सानों का अपना गढ़ा हुआ।

62. कष्ट में खुदा का याद आ जाना वास्तव में अन्तर्मन की आवाज़ है। अतः होना तो यह चाहिए था कि लोग तौहीद के क़ायल हो जाते। परन्तु जब अल्लाह तआला अपनी दया से कष्ट को दूर कर देता है तो इन्सानों की एक संख्या ऐसी है जो इस रहमत को किसी अन्य की कृपा बताने तथा उस को खुदा के अधिकारों में साझीदार ठहराने लगती है।

63. अर्थात् क्या इन लोगों के पास अल्लाह का उतारा हुआ कोई प्रमाण कोई सनद है जो इस की गवाही देता हो कि अल्लाह ने अपने अधिकारों में फ़लाँ और फ़लाँ को साझी ठहरा लिया है अतः तुम उन को अपनी फ़रियादें सुनाने और ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पुकार सकते हो और वे तुम्हारी पुकार भी सुन सकते हैं और तुम्हारी ज़रूरतें भी पूरी कर सकते हैं। परन्तु यदि ऐसा कोई प्रमाण तुम्हारे पास मौजूद नहीं है तो तुम्हारा यह दावा कितना ग़लत और बेबुनियाद है? मालूम हुआ कि विभिन्न धर्मों की जो किताबें पवित्र समझी जाती हैं उन में यदि देवी देवताओं की बात है या खुदा के गुणों और उस के अधिकारों में किसी को साझी ठहराया गया है तो वे खुदा के प्रमाण की

हैसियत बिल्कुल नहीं रखती क्यों कि खुदा ने इस प्रकार की कोई बात कभी किसी पैगम्बर पर नाज़िल नहीं की और न अपनी किसी किताब में बयान फ़रमाई। बल्की इन धर्मों के अनुयायियों ने अंधविश्वास और अटकल की बुनियाद पर खुदा के साझीदार ठहराए और उन को अपनी धार्मिक ग्रंथों में शामिल कर लिया।

यह तो है बहुदेववादियों का मामला, परन्तु मुसलमानों में से भी इन के बिदअत पसंद गिरोह ने कुछ कम जुल्म नहीं किया है। ये कुतुब अब्दाल, और औलिया को इस जगत में अधिकार रखने वाला तथा उस का इस्तेमाल करने वाला मानते हैं और कहते हैं कि हम उन को खुदा नहीं मानते बल्कि यह मानते हैं कि खुदा ने इन को करने धरने के अधिकार दिये हैं इस लिए वे माँगने वालों को देते हैं, फ़रियाद को पहुँचते और तकलीफ़ को दूर करते हैं, ग़रीब को नवाज़ते और पुकारने वाले की मदद करते हैं। प्रश्न यह है कि अल्लाह तआला ने यह प्रमाण कहाँ उतारा है कि फ़लाँ और फ़लाँ को उस ने करने और धरने के अधिकार सौंप रखे हैं अतः ज़रूरतों की पूर्ति के लिए उन को पुकारो वे तुम्हारी मदद को पहुँचेंगे? क्या कुर्आन में ऐसी कोई आयत दिखाई जा सकती है? हरगिज़ नहीं बल्कि कुर्आन तो साफ़ कहता है कि सारे इख्तियार और अधिकार अल्लाह ही के हाथ में हैं और उस के अधिकारों में उस का कोई साझी (Partner) नहीं। यदि उस ने किसी को अपना पार्टनर बना कर कुछ भी अधिकार उसे सौंपे होते तो उस के ज़िक्र से कुर्आन कैसे ख़ाली हो सकता था? फिर यह भी सोचिए कि किसी वली या पीर को दस्तगीर या ग़ौस (अर्थात् फ़रियादों का पूरा करने वाला) मानने का मतलब यह है कि वह लाखों और करोड़ों लोगों की पुकार को जो उस को पुकारते हैं, ग़ैब में (अदृश्य) रहते हुए सुनता है और उन में से हर हर व्यक्ति के हाल को जानता है कि कौन मोमिन है और कौन मुनाफ़िक़ कौन नेक है और कौन बद, किस ने उन की मन्नत मानी है और उस के नाम की नज़्र और नियाज़ करता है। इस विस्तृत जानकारी के बाद ही वह वली किसी की मदद कर सकता है। किसी वली के बारे में यह अवधारणा क्या उस को परोक्ष का ज्ञानी (आलिमुलग़ैब) मानने जैसा नहीं है? और यदि यह शिर्क नहीं तो फिर शिर्क क्या है?

64. इन्सान पर जो मुसीबतें आती हैं वे यद्यपि आजमाइश के तौर पर आती हैं परन्तु अधिकतर उस के करतूतों के कारण भी आती हैं। और यह बात हम सामान्य रूप से देखते भी रहते हैं।

65. मनुष्य का यह तरीक़ा ग़लत है। खुदा की किसी देन पर न इतराना सही है और न किसी कष्ट के पहुँचने पर निराश होना सही है। उसे पहली दशा में शुक्र करना चाहिए और दूसरी दशा में सब्र।

66. एक निशानी यह कि रोज़ी देने वाला अल्लाह ही है, दूसरी यह कि रिज़क़ खुदा की योजना के अनुसार मनुष्य को मिलता है। तीसरी यह कि अल्लाह जिस को रिज़क़ कम देना चाहे उस के लिए हालात और साधन वैसे ही बनते हैं और मनुष्य के बस में यह नहीं कि वह मात्र अपनी तदबीर से जितना चाहे रिज़क़ हासिल कर ले। अतः कितने ही लोग अपनी क्षमता, योग्यता और हिकमत के बावजूद बड़ी रोज़ी हासिल करने में असफल रहते हैं। यह असफलता इस बात का सबूत है कि तदबीर ही सब कुछ नहीं बल्कि अल्लाह की मर्जी और उस का मंशा असल चीज़ है। और चौथी निशानी यह कि रिज़क़ का तंग और अधिक होने का मतलब यह नहीं है कि जिस को नपा तुला रिज़क़ मिल रहा है वह अल्लाह की नज़र में अच्छा नहीं है और जिस को बड़ा रिज़क़ मिल रहा है वह उस की नज़र में प्रिय है, बल्कि दोनों ही दशाओं में इन्सान का इम्तिहान है। पहली दशा में उस के सब्र का और दूसरी दशा में उस के शुक्र का।

67. अर्थात् अल्लाह ने जो रिज़क़ तुम्हें दिया है उस में एक परीक्षा है कि तुम उन अधिकारों को अदा करते हो या नहीं जो उस के दिए हुए रिज़क़ में तुम पर अपने नातेदारों और अन्य ज़रूरतमंदों से सम्बन्धित आयद होते हैं। मुसाफ़िर से तात्पर्य वह मुसाफ़िर है जो सफ़र में रहने के कारण सहायता का हक़दार हो गया हो मक्की दौर में, नातेदारों मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के हक़ अदा करने की ताकीद उन की नैतिक एवं संवैधानिक (अख़लाकी एवं शरअी) महत्व को उजागर करती है।

68. अर्थात् इन अधिकारों की अदायगी ख़ालिस अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए होनी चाहिए। इस में दिखावा और नाम कमाने की झलक भी न हो।

69. अर्थात् सफलता पाने वाले लोग वही हैं जो अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए काम करेंगे और उन ज़िम्मेदारियों को पूरा करेंगे जो उस ने अपने बन्दों पर डाली हैं।

जिस ने कुफ्र किया उस का कुफ्र उसी पर पड़ेगा और जिन्होंने नेक अमल (अच्छा कर्म) किया वह अपने ही लिए (सफलता का) मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। ताकि वह अपने उदार अनुग्रह (फ़ज़ल) से उन लोगों को अच्छा बदला दें जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल (अच्छे कर्म) किये। निस्संदेह वह काफ़िरो को पसंद नहीं करता। (अल्-कुआन)

39. और जो सूद तुम देते हो ताकि लोगों के माल में वृद्धि हो तो वह अल्लाह के नज़दीक नहीं बढ़ता।⁷⁰ और जो ज़कात तुम अल्लाह की रज़ा के लिए देते हो तो यही लोग हैं (अपने माल को) बढ़ाने वाले।⁷¹

وَمَا آتَيْتُم مِّن رَّبٍّ لَّا يَرْبُوْا فِيْ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا
عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا آتَيْتُم مِّنْ زَكٰوةٍ تَّرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾

40. अल्लाह ही है जिस ने तुम को पैदा किया फिर तुम्हें रिज़क़ दिया, फिर तुम को मौत देता है, फिर तुम को ज़िन्दा करेगा। क्या तुम्हारे साझीदारों (शरीक़ों) में से कोई ऐसा है जो इन में से कोई काम भी करता हो?⁷² पाक और उच्चतर है वह उस शिर्क़ से जो ये लोग करते हैं।

اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُعِيْبُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ هَلْ مِنْ شَرِكَاۤئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ سُبْحٰنَهُ
وَتَعَالٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾

41. थल और जल में फ़साद बरपा हो गया है लोगों के अपने करतूतों के कारण ताकि वह उन्हें उन के आमाल (करतूतों) का मज़ा चखाए ताकि वे रुजू करें⁷³ (अर्थात् पलटें)

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ
لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوا اَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾

42. कहो ज़मीन में चल फिर कर देख लो कि उन लोगों का क्या अन्जाम हुआ है जो पहले गुज़र चुके हैं।⁷⁴ उन में से अधिकतर बहुदेववादी थे।⁷⁵

قُلْ سِيرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عٰقِبَةُ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ﴿٤٢﴾

43. तो तुम अपना रुख उस सही दीन की ओर किये रहो इस से पहले कि अल्लाह की तरफ़ से वह दिन आए जो टल नहीं सकता। उस दिन वे अलग अलग हो जाएंगे।⁷⁶

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ الْقَيُّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّآتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدٍّ
لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ يُّصَدِّقُوْنَ ﴿٤٣﴾

44. जिस ने कुफ़्र किया उस का कुफ़्र उसी पर पड़ेगा और जिन्होंने नेक अमल (अच्छा कर्म) किया वह अपने ही लिए (सफलता का) मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।⁷⁷

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ وَمَنْ عَمِلْ صٰلِحًا
فَلَا نَفْسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿٤٤﴾

45. ताकि वह अपने उदार अनुग्रह (फ़ज़ल) से उन लोगों को अच्छा बदला दे जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल (अच्छे कर्म) किये। निस्संदेह वह काफ़िरों को पसंद नहीं करता।⁷⁸

لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ اِنَّهٗ
لَا يُحِبُّ الْكَافِرِيْنَ ﴿٤٥﴾

70. यह पहली आयत है जिस में सूद का बरकत से खाली होना स्पष्ट किया गया है। और यह इशारा था शरअी तौर पर इस के बुराई होने का। मक्का में जो उस समय दारूलकुफ्र हो कर रह गया था, सूद के दोषों को स्पष्ट करने वाली आयत का उतारना गोया शरीअत के प्रारम्भ ही में ज़ेहनों को सूद का विरोध करने की दिशा में मोड़ देने जैसा था। बाद में इसे साफ़ तौर से हराम कर देने का आदेश मदीना में उतरा (देखिए सूरह बक्रर: आयत २७५ से २७९ और नोट ४५५ से ४६४ तथा सूरह आले-इमरान आयत १३० नोट १६०)

आयत का मतलब यह है कि सूद दे कर तुम यह समझते हो कि जिस को सूद दिया उस का माल बढ़ेगा किन्तु उस का बढ़ना ख़ैर और बरकत से ख़ाली होता है कि उस से माल में सच पूछिए तो कोई वृद्धि नहीं होती। अल्लाह की नज़र में सूदी लेने देन ऐसा अप्रिय तरीका है कि उस के नज़दीक सूद के माल का कौड़ी बराबर भी मूल्य नहीं। और न सूदी क़र्जों पर उस के यहाँ कोई अज़्र (फल) बनता है बल्कि उल्टे यह भारी गुनाह का काम है। जैसा कि सूरह बक्रर: आयत २७५ में बयान हुआ है।

आयत में सूद देने की बात आई है जिस का वर्णन ज़कात देने के मुकाबले में किया गया है। मतलब यह है कि सूद का देना ख़ैर और बरकत की बात नहीं है अलबत्ता ज़कात देना ख़ैर और बरकत की बात है। इस तरह सूद लेने वाले को ग़ैरत दिलाई गई है कि क़र्ज़ दे कर जो सूद लेता है उस से उसे बाज़ाहिर दौलत में वृद्धि प्रतीत होती है परन्तु ऐसा धन लेने वाले के लिए धन के बढ़ने और फलने की सारी राहें बन्द हो जाती हैं क्यों कि सूद जुल्म है और जुल्म का अन्जाम नुकसान ही है।

आयत पर ग़ौर करने से अन्दाज़ा होता है कि उस समय के हालात में ईमान वालों के लिए सूद देने की मज़बूरी रही होगी इस लिए सूद को बुरा बताते हुए निशाना उन लोगों को बनाया गया जो ऋण दे कर अपने माल को बढ़ाने के लिए सूद लेते थे।

मुफ़स्सिरीन (कुर्आन के टीकाकारों) के एक वर्ग ने इस आयत में रिबा का अर्थ उपहार लिया है और तावील यह है कि किसी को उपहार इस नियत से देना कि इस से अधिक उसे वापस मिलेगा, यद्यपि गुनाह नहीं है परन्तु शरअी तौर पर अप्रिय है। मगर रिबा का यह अर्थ लेने के लिए कोई दलील मौजूद नहीं है। रिबा कुर्आन की एक परिभाषा है जिस से सूद अर्थात् वह ज़्यादती अथवा वह अधिकांश भाग तात्पर्य हैं जो क़र्ज़ या वाजिबात (देन) में विलम्ब होने पर वसूल की जाए। फिर संदर्भ भी एक प्रमाण है कि यहाँ सूद ही मुराद है क्यों कि ऊपर की आयत में ज़रूरत मन्दों के हक़ अदा करने का आदेश दिया गया है और यहाँ हक़ मारने की वह तरकीब जो सूद के

रूप में होती है, बयान हुई तथा बाद वाले वाक्य में सूद की तुलना में ज़कात के ख़ैर और बरकत से भरे होने के पक्ष को उभारा गया है।

71. अर्थात् ज़कात देने से माल घटता हुआ प्रतीत होता है परन्तु ऐसे धन वास्तव में बढ़ते फलते हैं। वह ख़ैर और बरकत का साधन बनता है और ज़कात देने पर बहुत बड़ा अज़्र (बदला) मिलता है।

हदीस में सदक़ा करने का अज़्र इस प्रकार बयान हुआ है।

”مَنْ تَصَدَّقَ بِعَدَلٍ ثَمَرَةٍ مِنْ كَسْبٍ طَيِّبٍ وَلَا يَقْبَلُ اللَّهُ إِلَّا الطَّيِّبَ فَإِنَّ اللَّهَ يَقْبَلُهَا بِسَمِيَةِ ثُمَّ يُرَبِّيَهَا لِصَاحِبِهِ كَمَا يُرَبِّي أَحَدَكُمْ فَلَوْهُ حَتَّى تَكُونَ مِثْلَ الْجَبَلِ“ - (صحیح البخاری کتاب الزکوٰۃ)

अर्थ :- “जो व्यक्ति अपनी पाक कमाई से एक खजूर के बराबर सदक़ा करता है और अल्लाह केवल पाक सदके को ही स्वीकार करता है। फिर उस को सदक़ा देने वाले के लिए इस प्रकार उन्नति देता है जिस प्रकार तुम में से कोई व्यक्ति अपने बछड़े की परवरिश करता है यहाँ तक कि वह सदक़ा पहाड़ के बराबर हो जाता है।” (बुख़ारी)

72. अर्थात् जब तुम्हारे अपने गढ़े हुए साझीदार इन में से कोई काम भी नहीं करते तो वे पूज्य कैसे हुए?

73. यहाँ फ़साद से तात्पर्य अशान्ति है जो जल और थल में फैल चुकी थी। सो यह ज्ञात है कि अरब के इलाक़े में हत्या एवं तोड़ फोड़ का बाज़ार गर्म था। निकट के देशों रोम और फ़ारस में तो युद्ध ही छिड़ा हुआ था। इस हत्या एवं तोड़ फोड़ और युद्ध के प्रभावों से नदियों और समुद्रों के सफ़र भी सुरक्षित नहीं थे इसी परिस्थिति को जल और थल में फ़साद बरपा होना बताया गया है और इस को लोगों की करतूतों का परिणाम बताया गया है। मतलब यह है कि लोगों ने जब अल्लाह की अवज्ञा का मार्ग अपना लिया तो उन में नैतिक एवं व्यवहारिक बिगाड़ पैदा हुआ, लोग हत्या, लूटपाट, तोड़ फोड़ और युद्ध पर आमादा हो गए जिस से चारों ओर अशान्ति फैल गई। स्पष्ट हुआ कि लोगों के ग़लत रवैये के फलस्वरूप मानव समाज शान्ति से वंचित हो जाता है। और अल्लाह तआला दुनिया में यह सज़ा उन्हीं के हाथों इस लिए दिलवाता रहता है कि वे ठोकर खाने के बाद संभल कर चलें और अपने रब की ओर रुजू करें।

आजकल के ज़माने में तो अशान्ति बिल्कुल आम हो गई है, खून ख़राबा, लूट मार दंगा फ़साद, और जंगों ने दुनिया को जहन्नम का नमूना बना दिया है। जंग की अवस्था में तो समुद्र भी सुरक्षित नहीं रहते और बड़े बड़े जहाज़ नष्ट कर दिए जाते

हैं। और लड़ाई केवल थल और जल में ही नहीं होती अब तो आकाश में भी राकेट छोड़े जाते हैं। हवाई जहाज के अपहरण की घटनाएँ आए दिन होती रहती हैं तथा बमों का तो आम प्रचलन सा हो गया है। मतलब यह कि मनुष्य ने प्रगति की तो यह कि आकाश के भी खतरों से भर दिया। इस प्रकार मानवता के लिए सुकून और शान्ति की जगह न जल रहा न थल और न ही अन्तरिक्ष। हर जगह लोग अपने ही किये का मजा चख रहे हैं।

74. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अनआम नोट २०

75. मुराद वे जातियाँ हैं जिन पर अज़ाब आया। उन जातियों में अधिकतर बहुदेववादि ही थे। एकेश्वरवाद (तौहीद) पर ईमान लाने वाले बहुत कम थे और वही बचा लिये गए।

76. ये लोग अपनी धारना और कर्मानुसार अलग अलग समूहों में बँट जाएँगे।

77. इस प्रकार कुर्आन प्रत्येक व्यक्ति को उस की अपनी ज़िम्मेदारी महसूस कराता है और यह कुर्आन और नबियों की दअवत की महत्वपूर्ण विशेषता है।

मौजूदा दौर में इस्लाम की दअवत को दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करने का एक ऐसा तरीका प्रचलित हो गया है जो व्यक्ति को उस की व्यक्तिगत ज़िम्मेदारियों की ओर आकृष्ट करता है। और आखिरत की सफलता एवं मुक्ति से अधिक दुनिया की सफलता एवं मुक्ति की चिन्ता में डुबोता है।

78. अर्थात् क्रियामत का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और सकारात्मक पक्ष यही है कि अल्लाह अपने वफ़ादार बन्दों को अपनी कृपा और उदार अनुग्रह (फ़ज़ल) प्रदान करे। रहे काफ़िर और उद्दंड लोग तो अल्लाह उन्हें हरगिज़ पसंद नहीं करता। और जब पसंद नहीं करता तो उन को वह क्यों अपने फ़ज़ल और अपनी कृपा का पात्र बनाने लगा। उन्होंने जैसा किया वैसा भरेंगे।

उस की निशानियों में से यह है वह हवाओं को भेजता है जो खुशखबरी देती हैं ताकि वह तुम्हें अपनी दयालुता का स्वाद चखाए और ताकि नौकाएं उस के आदेश से चलें और ताकि तुम उस का फ़ज़ल (रिज़क) तलाश करो और ताकि तुम उस के शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) बनो। (अल-कुर्आन)

46. उस की निशानियों में से यह है वह हवाओं को भेजता है जो खुशखबरी देती हैं ताकि वह तुम्हें अपनी दयालुता का स्वाद चखाए ⁷⁹ और ताकि नौकाएं उस के आदेश से चलें और ताकि तुम उस का फ़ज़ल (रिज़्क) तलाश करो और ताकि तुम उस के शुक्रगुजार (कृतज्ञ) बनो।

وَمِنَ الْآيَاتِ أَنْ يُرْسِلَ الرِّيحَ مُبَشِّرَاتٍ وَلِيُذِيقَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلِتَجْرِيَ الْفُلُكُ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٣٩﴾

47. हम ने तुम से पहले भी रसूल इन की तरफ़ भेजे थे और वे उन के पास स्पष्ट निशानियाँ ले कर आए थे। फिर हम ने लोगों को सज़ा दी जिन्होंने अपराध किया और हम पर अनिवार्य था ईमान वालों की मदद।⁸⁰

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَى قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَأَنفَقْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرُمُوا وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٠﴾

48. अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है और वे बादल उठाती हैं। फिर वह जिस तरह चाहता है उन को आसमान में फैलाता है और उन के टुकड़े कर देता है। फिर तुम उन के अन्दर से बारिश को निकलते हुए देखते हो। फिर जब वह अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है बरसाता है तो वे यकायक खुश हो जाते हैं।

اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ كِسْفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤١﴾

49. हालाँकि इस से पहले ⁸¹ वे इस के बरसाये जाने के बारे में निराश थे।⁸²

وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ أَنْ يُنْزَلَ عَلَيْهِمْ مِنَ قَبْلِهِ لُمِبَلِّسِينَ ﴿٤٢﴾

50. तो देखो अल्लाह की रहमत के आसार, कि किस प्रकार वह ज़मीन को उस के मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा करता है। निश्चय ही वह मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है ⁸³ और वह हर चीज़ पर सामर्थ्यवान है।

فَانْظُرْ إِلَى اثْرِ رَحْمَتِ اللَّهِ كَيْفَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ عَجَائِ الْمَوْتَى وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٣﴾

51. और यदि हम प्रतिकूल हवाएँ भेज दें और वे उस को (अपनी खेती को) पीली पड़ी पायें तो इस के बाद वे कुफ़र करते रह जाएँगे।⁸⁴

وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا الظُّلُمَاتِ مِنْ بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ﴿٤٤﴾

52. तो तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो जब कि वे पीठ फेरे चले जा रहे हों।⁸⁵

فَإِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمَوْتَى وَلَا تَسْمِعُ الضُّمَمِ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَوْ أُمْدِرِينَ ﴿٤٥﴾

79. अर्थात् रहमत की बारिश का।

80. अर्थात् अगर लोग हवाओं और इस प्रकार की दूसरी निशानियों के द्वारा भी अपने रब की सही पहचान प्राप्त नहीं करते तो अल्लाह ने उन पर हुज्जत क़ायम करने के लिए रसूल भेजे फिर सत्य के पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाने के बाद भी जिन्होंने कुफ़र कर के अपराधियों का रवैया अपनाया उन को अन्ततः दण्ड दिया गया। और जब उन्हें दण्ड देने और विनष्ट कर देने का समय आया तो अल्लाह तआला ने ईमान वालों को बचा लिया। यह उस की मदद थी जो आखिरकार ईमान वालों के पक्ष में प्रकट हुई और अल्लाह का यह पूर्वनियोजित फैसला था कि वह उस अज़ाब से जो रसूल को झुठलाने की सूत में उस की जाति पर आएगा उस अज़ाब से ईमान वालों को बचा लेगा और कामयाबी उन्हीं के हिस्से में आएगी।

81. अर्थात् इन हवाओं को भेजे जाने और इन के बादलों को उठाये जाने से पहले।

82. बारिश की व्यवस्था मनुष्य को सोचने तथा विचार करने का निमंत्रण देती है और लोगों की निराशा को आशा में परिवर्तित भी कर देती है किन्तु लोगों का हाल यह है कि न वे इस बात पर विचार करते हैं कि वर्षा की यह आश्चर्यजनक व्यवस्था किस की कुदरत का करिश्मा है और न उस खुशी पर जो उन्हें निराशा के बाद होती है, अपने रब का शुक्र अदा करते हैं।

83. अर्थात् मुर्दा ज़मीन का बरिश होते ही ज़िन्दा हो जाना अल्लाह की दयालुता का प्रकट होना है। इसी प्रकार मुर्दा इन्सानों का ज़िन्दा हो जाना भी उस की दयालुता का प्रदर्शन होगा। यह संकेत है उस वास्तविकता की ओर कि दूसरे जिवन का प्रमाणित पहलू रहमते इलाही का प्रकट होना है उस के नेक बन्दों के पक्ष में जिन लोगों ने स्वयं सच्चा होना सांसारिक जीवन में सिद्ध कर दिखाया उन्हें आखिरत में मिलने वाले जीवन में उच्च स्थान पर रखा जाए और उन्हें अपनी रहमत से मालामाल किया जाए, रहा खोत तो वह आग में ही जलाए जाने के योग्य है।

84. ऊपर की पंक्तियों में रहमत लाने वाली हवाओं का वर्णन था यहाँ आफ़त लाने वाली हवाओं का वर्णन है कि यदि हम ऐसी तेज़ हवा चलाएँ जो खेतों को फूलने के बाद

तहस नहस कर के रख दे और उस की हरियाली पीली पड़ कर रह जाए तो ये अपने रब के प्रति आशंकित हो कर कुफ़र ही करने लगेंगे। उन का रवैया अपने रब के साथ बहुत विचित्र है। उस की कृपा एवं दया पर वे उस का शुक्र अदा नहीं करते और मुसीबत के पहुँच जाने पर कुफ़र करने लगते हैं।

85. इस की व्याख्या सूरह नम्ल नोट ११८ में गुज़र चुकी। स्पष्ट रहे मुर्दों के सुनने के पक्ष में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह हदीस जो पेश की जाती है कि आप ने बद्र में काफ़िरों की लाशों से संबोधन करते हुए फ़रमाया था :-

هَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوا إِنَّهُمْ الْآنَ يَسْمَعُونَ مَا أَقُولُ (بخاری کتاب المغازی)

अर्थ :- “क्या तुम ने अपने रब के वादे को सच्चा पाया? फिर फ़रमाया इस समय वे सुन रहे हैं जो मैं कह रहा हूँ” (बुखारी किताबुल मगाज़ी)

तो इस हदीस का वह मतलब नहीं है जो आम तौर पर समझा जाता है। अतः बुखारी ही कि रिवायत है कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने इस का खण्डन करते हुए फ़रमाया।

إِنَّمَا قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّهُمْ الْآنَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّ الَّذِي كُنْتُ أَقُولُ لَهُمْ هُوَ الْحَقُّ ثُمَّ قَرَأْتُ إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَى حَتَّى قَرَأْتُ الْآيَةَ.

अर्थ :- “नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तो यह फ़रमाया कि उन्हें अब मालू हो गया है कि मैं जो कुछ उन से कहता था वह हक़ है फिर हज़रत आइशा ने यह आयत आखिर तक पढ़ी “तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते.....” (बुखारी)

और जब कुआन स्पष्ट रूप से कह रहा है कि तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते तो फिर भी सम्बन्धित हदीस का अनिवार्य रूप से वही अर्थ लेना होगा जो कुआन के इस बयान से मेल खाता हो।

53. और न तुम अन्धों को उन की गुमराही से निकाल कर राह पर ला सकते हो। तुम तो उन्हीं को सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं और अनुपालन (ताबेदारी) स्वीकार करते हैं।⁸⁶

وَمَا أَنْتَ بِهَادِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلَالَتِهِمْ إِنْ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ
بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٥٣﴾

54. अल्लाह ही है जिस ने तुम को कमजोर हालत में पैदा किया। फिर इस कमजोरी के बाद तुम्हें शक्ति प्रदान की। फिर इस शक्ति के बाद तुम पर कमजोरी और बुढ़ापा तारी कर दिया। वह जो चाहता है पैदा करता है।⁸⁷ और वह सब कुछ सुनने वाला और बड़ी कुदरत वाला है।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ﴿٥٤﴾

55. और जिस दिन क्रियामत क़ायम होगी अपराधी सौगंध खा खा कर कहेंगे कि वे एक घड़ी से अधिक नहीं रहे। इस तरह वे धोखा खाते रहे हैं⁸⁸?

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ
مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ كَذَلِكَ كَانُوا يُفَكُّونَ ﴿٥٥﴾

56. और जिन को ज्ञान और ईमान प्रदान हुआ था, वे कहेंगे कि अल्लाह के (नौशता) रिकार्ड में तुम उठाए जाने के दिन (रोज़े महशर) तक रहे हो।⁸⁹ तो यह उठाए जाने का दिन है लेकिन तुम जानते न थे।

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْبَعْثِ فَهَذَا يَوْمُ الْبَعْثِ
وَلَكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٦﴾

57. इस दिन ज़ालिमों के लिए उन की क्षमा याचना बे फ़ायदा होगी और उन से तौबा की माँग नहीं की जाएगी।⁹⁰

فَيَوْمَئِذٍ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ
يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٥٧﴾

58. हम ने इस कुर्आन में लोगों (को समझाने) के लिए हर तरह के विषय बयान कर दिये हैं और (ऐ नबी!) चाहे तुम कोई निशानी ले आओ, जिन्होंने कुफ़्र का रवैया अपना रखा है वे यही कहेंगे कि तुम बिलकुल झूठे हो।⁹¹

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَلَكِنْ
جِنَّتُمْ بآيَاتِهِ لِيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا الْمُبْطِلُونَ ﴿٥٨﴾

59. इस प्रकार अल्लाह मोहर लगा देता है उन लोगों के दिलों पर जो ज्ञान से बेपरवाह रहते हैं।⁹²

كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٩﴾

60. तो सब करो। निस्संदेह अल्लाह का वादा सच्चा है और तुम्हें हरगिज़ बेवज़न (अर्थात् हल्का) न पायें वे लोग जो विश्वास नहीं रखते।⁹³

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفُّكَ الَّذِينَ
لَا يُوقِنُونَ ﴿٦٠﴾

86. व्याख्या के लिए देखिए सूरह नम्ल नोट ११९

87. मनुष्य जब पैदा होता है तो सब से अधिक कमजोर अवस्था में होता है। फिर धीरे धीरे शक्ति पा कर जवानी की आयु को पहुँचता है तो मजबूत और शक्तिशाली बन जाता है। फिर यह शक्ति धीरे धीरे उस से छीन ली जाती है अतः बुढ़ापे में वह फिर कमजोर हो कर रह जाता है। यह एक अवस्था से दूसरी अवस्था में परिवर्तन, और मनुष्य की स्वयं अपने मामले में यह बेबसी इस बात का स्पष्ट सबूत है कि उस का ख ही है जो जिस तरह चाहता है पैदा करता है और जिन चरणों से चाहता है उसे गुजारता है। फिर मनुष्य को यह कैसे शोभा देता है कि शक्ति पा लेने के बाद घमण्ड करने लगे और अपने ख को भूल जाए।

88. अर्थात् जो समय उन्होंने ने मौत के बाद गुजारा उस के बारे में उन के दिमाग में यही बात होगी कि वे घड़ी भर से अधिक नहीं थे हालाँकि वे एक समय गुजार चुके होंगे। वे जिस प्रकार मौत और क्रियामत के मध्य अवकाश के बारे में गलत अन्दाज़ा लगाएँगे, उसी प्रकार वे दुनिया में भी अपने बारे में गलत अन्दाज़ा लगाते रहे हैं और अपने संसारिक जीवन को जो बहुत अल्प था उसे बहुत दीर्घ समझते रहे हैं। यदि उस समय वे अपने सांसारिक जीवन को आखिरत की तुलना में देखते तो उन्हें अत्यधिक अल्प महसूस होती और वे आखिरत को असली जीवन समझकर उस के लिए तैयारी करते किन्तु धोखे में रह कर उन्होंने यह अवसर खो दिया। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि क़ब्र (यमलोक) में तो काफ़िर लम्बे समय तक अज़ाब भुगत चुके होंगे फिर वे इस को एक घड़ी भर की बात किस प्रकार समझेंगे? तो सच्ची बात यह है कि वे यमलोक में जिस अवस्था में रहेंगे वह नींद जैसी अवस्था है। सूरह यासीन में है कि जब वे क्रियामत के दिन उठेंगे तो कहेंगे :-

مَنْ بَعَثْنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا

अर्थ:- “हमारे बिस्तरों से हम को किस ने उठाया”

और यह हकीकत है कि नींद की हालत में जो कुछ आदमी पर गुजरता है वह सब पहली बात तो यह कि उसे याद नहीं रहता और दूसरी बात यह कि नींद से उठने के बाद उसे ऐसा महसूस होता है कि अभी सोये थे अभी उठे। इस लिए यदि काफ़िर उन वारदात को भुला चुके हों जो उन की आत्मा पर क्रियामत तक गुजरती रही और वे यह महसूस करें कि हम घड़ी भर सो कर उठे हैं तो इस में आश्चर्य की कोई बात नहीं। यमलोक

की इस स्थिति को सामने न रखने के कारण लोग यमलोक (बर्ज़ख़) के अज़ाब ही के इन्कार हो जाते हैं हालाँकि काफ़िरों के लिए बर्ज़ख़ (यमलोक) का अज़ाब अर्थात् वहाँ की यातना कुर्आन से सिद्ध है और हदीस में इस को क़ब्र का अज़ाब कहा गया है। और इस का सम्बन्ध आत्मा से है क्योंकि शरीर सड़ गल कर मिट्टी बन जाता है और कितने ही काफ़िरों की लाशों की क़बरें बनती ही नहीं हैं क्योंकि वे जलाई जाती हैं। अलबत्ता क्रियामत के दिन मनुष्य को शरीर सहित उठाया जाएगा। इस सूरत में काफ़िर अज़ाब अर्थात् यातना की पीड़ा पूरी तरह महसूस करेंगे।

89. अर्थात् तुम मौत और क्रियामत के बीच की लम्बी अवधि यमलोक (बर्ज़ख़) में गुजार चुके हो। यह अवधि कितनी थी यह अल्लाह ही को मालूम है और उस के रिकार्ड में वह लिखा हुआ है।

90. अर्थात् परीक्षा का समय निकल चुका होगा और वह ईनाम और सज़ा का दिन होगा इस लिए जिन लोगों ने अपने ऊपर जुल्म कर के अपने आप को शिर्क और कुफ़्र पर डाल दिया था उन की क्षमायाचना स्वीकार न होगी और न उन के लिए इस बात का मौक़ा होगा कि वे प्रायश्चित्त कर के अल्लाह से क्षमा माँगे। यह अवसर दुनिया में था जो उन्होंने खो दिया।

91. अर्थात् जो लोग समझना चाहते हैं उन के लिए कुर्आन काफ़ी है परन्तु जो अपने कुफ़्र को छोड़ना नहीं चाहते वे कोई बड़े से बड़ा प्रत्यक्ष चमत्कार भी नबी द्वारा देख लें तब भी वे नबी को झुठलाने में कोई कसर उठा न रखेंगे।

92. अर्थात् जो लोग हिदायत के ज्ञान से कोई अभिरुचि नहीं रखते और उस से दूर ही दूर रहना चाहते हैं वे धीरे धीरे सत्य को स्वीकार कर लेने की क्षमता को मिटा देते हैं और फिर नसीहत की कोई बात उन के दिल में उतरने नहीं पाती। इस मनोवैज्ञानिक दशा को दिलों पर मुहर लगाना बताया गया है।

93. यह नबी को और उस के माध्यम से ईमान वालों को नसीहत है कि तुम हालात के ख़राब होने से चिन्तित न हो बल्कि सब्र के साथ हक़ पर जमे रहो और पूरे साहस, आशा एवं दृढ़ता के साथ अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा करते रहो ताकि आखिरत पर विश्वास न रखने वाले तुम को महत्वहीन समझकर के यह विश्वास न बना बैठें कि इन लोगों को आसानी से दबाया जा सकता है। बल्कि तुम्हारी यह हैसियत उन पर स्पष्ट हो जानी चाहिए कि ये लोहे के चने हैं जिन को चबाना आसान नहीं।

सूरह लुक़मान

३१. सूरह लुकमान

नाम : आयत १२ में लुकमान को हिकमत अर्थात् तत्त्वदर्शिता प्रदान किये जाने का वर्णन हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम लुकमान है।

नाज़िल होने का समय : मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि सूरह अनकबूत से कुछ पहले नाज़िल हुई होगी जब कि बहुदेववादि अपनी औलाद को बहुदेववादी धर्म पर जमे रहने के लिए विवश कर रहे थे।

केन्द्रीय विषय :- दीन के मामले में आदमी अपने बाप दादा तथा पूर्वजों का अन्धानुकरण करने के बजाए अपनी बुद्धि एवं विवेक से काम लें और उन निशानियों से रहनुमाई प्राप्त करें जो अल्लाह के एक मात्र सृष्टा एवं पूज्य होने पर तर्क प्रस्तुत करती हैं। अज्ञानता के अंधकार में भटकने के बजाय अल्लाह की प्रकाशना स्वीकार कर ले, जो उस के जीवन को संवारने वाली और उसे सफलता की मन्ज़िल को पहुँचाने वाली है।

कलाम की तरतीब : आयत १ से ५ भूमिका पर आधारित है जिस में कुर्आन की इस विशेषता को स्पष्ट किया गया है कि यह हिकमत भरी (तत्त्व से परिपूर्ण) किताब है जिस के प्रभाव को अपनाने वाले जीवन संवरते हैं और वे एक मात्र खुदा के सच्चे भक्त तथा आखिरत पर विश्वास रखने वाले बन

जाते हैं।

आयत ६ से ११ में उन लोगों को बुरे अन्जाम से सावधान कर दिया गया है जो खुदा और उस के दीन के बारे में ज्ञान के बगैर तथा निराधार बातें करते हैं और खुद भी गुमराह होते हैं तथा दूसरों को भी गुमराह करते हैं। साथ ही ईमान लाने वालों और अपना रवैया दुरुस्त रखने वालों को अच्छे अन्जाम की खुशखबरी सुनाई गई है।

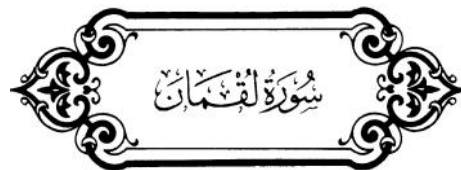
आयत १२ से १९ में लुकमान की तत्त्वपूर्ण नसीहतों और समझदारी की बातों को प्रस्तुत किया गया है जो अल्लाह की प्रदान की हुई हिकमत (तत्त्वदर्शिता) के फलस्वरूप उन की ज़बान से अदा हुई थी। ये वही शिक्षाएँ हैं जिन को कुर्आन प्रस्तुत कर रहा है।

आयत २० से ३२ में उन निशानियों की ओर रहनुमाई की गई है जिन से तौहीद और आखिरत की राह रौशन होती है।

आयत ३३ और ३४ आखिर की आयतें हैं जिन में खुदा के समक्ष पेशी के दिन से डराया गया है और अल्लाह के इस गुण को उजागर किया गया है कि वह सब कुछ जानता है और सब की खबर रखता है ताकि आखिरत के घटित होने की जो खबर वह दे रहा है उस पर विश्वास पैदा हो ।

३१. सूरह लुक़मान

आयतें : ३४



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़ लाम मीम ¹

الْم ١

2. यह हिकमत भरी किताब की आयतें हैं।²

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ٢

3. हिदायत और रहमत नेक काम करने वालों के लिए।³

هُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِينَ ٣

4. जो नमाज़ क़ायम करते हैं, ज़कात देते हैं और आख़िरत पर विश्वास रखते हैं।⁴

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ
يُوقِنُونَ ٤

5. यही लोग अपने रब की ओर से हिदायत पर हैं और यही हैं कामयाब होने वाले।⁵

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ٥

6. लोगों में ऐसे भी हैं जो ग़ाफ़िल कर देने वाला कलाम ख़रीदते हैं ⁶ ताकि ज्ञान के बग़ैर ⁷ अल्लाह की राह से (लोगों को) गुमराह करें और उन का (आयतों का) मज़ाक उड़ाएँ। ऐसे लोगों के लिए अपमानजनक यातना है।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِ
اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ٦

7. ऐसे व्यक्ति को जब हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह घमण्ड के साथ इस तरह मुँह फेर लेता है जैसे उस ने उसे सुना ही नहीं। जैसे कि उस के कानों में गरानी है ⁸ तो उसे दुखदायिनी यातना की ख़ुशख़बरी दे दो।

وَإِذَا تُلِيَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ وَلِيَ مُسْتَكْبِرًا كَانَ لَمْ يَسْمَعْهَا كَأَنَّ
فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا فَبَسَّرَهُ بَعْدَ آيِ الْيَمِّ ٧

8. अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किये उन के लिए नेमत भरे बाग़ होंगे।⁹

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ النَّعِيمِ ٨

9. जिन में वे हमेशा रहेंगे। यह अल्लाह का पक्का वादा है और वह प्रभुत्वशाली है, तत्वदर्शी।

خَالِدِينَ فِيهَا وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٩

1. हुरुफ़े-मुक़त्तआत (विभक्त अक्षरों) की व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्ररह नोट १ और सूरह युनुस नोट १ इस सूरह में “अलिफ़” का इशारा आयतों की तरफ़ है जिन का वर्णन आयत २, ७, ३१, और ३२ में हुआ है। “लाम” का इशारा लुक़मान की तरफ़ है जिन का वर्णन आयत ११ और १३ में हुआ है।

और “मीम” का इशारा मोहसिनीन नेक लोगों की तरफ़ है जिन का वर्णन आयत ३ में हुआ है।

2. व्याख्या के लिए देखिए सूरह युनुस नोट २

3. मोहसिनीन (नेक काम करने वालों) से तात्पर्य वे लोग हैं जो अल्लाह के आदेशों पर ईमान रखते हुए न केवल उस के आदेशों की पाबन्दी करें बल्कि सुरुचिपूर्ण ढंग से अपनी जिम्मेदारियों को अदा करें और अपने कर्मों में सुन्दरता पैदा करें।

4. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रर: नोट १०

5. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रर: नोट ११, १२

6. “लहवल हदीस” (गाफ़िल कर देने वाला कलाम) से मुराद जैसा कि प्रसंग से स्पष्ट है खुदा और आख़िरत से गाफ़िल कर देने वाला और उस की निशानियों और उस की उतारी हुई आयतों से ध्यान हटा देने वाला कलाम है। और उस को ख़रीदने का अर्थ उस को स्वीकार करना और अपनाना है। अतः सूरह बक्रर: में इर्शाद हुआ है।

أُولَئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبَحَتِ

تِجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ. (سورة بقره: १७)

अर्थ :- “यही लोग हैं जिन्होंने ने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली, तो न उन का सौदा लाभदायक हुआ और न वे हिदायत पा सके।” (सूरह बक्रर: १६)

अर्थात् हिदायत को उन्होंने त्याग दिया और उस के बदले में गुमराही स्वीकार कर ली। कुर्आन के मुक़ाबले में वे जिस चीज़ को अपना नित्यकर्म और लोगों की गुमराही का सामान बनाए हुए थे वह दुनिया के ऐश्वर्य पर आमादा करने वाली और इशक़ व मोहब्बत की आग भड़काने वाली शायरी, “الشُّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ” “और कवियों की पैरवी तो गुमराह लोग करते हैं। सूरह शुअरा आयत २२४) बेकार के क्रिस्से और लीलाएँ, “سَمِرَاتُهُمْ جُرُؤُنَ” “इस को किस्सा कहने के लिए मशगला बना का बकवास करते ” सूरह मुअमिनून आयत ६७) तथा गाना जो पेशावर लौंडियाँ गाती थीं लहवल हदीस (गाफ़िल कर देने वाले कलाम) में ये तीनों चीज़ें शामिल हैं। क्यों कि ये सब खुदा और आख़िरत से गाफ़िल कर देने वाली बातें

हैं। और कुर्आन तथा गाना तो बिल्कुल एक दूसरे की उलट चीज़ें हैं। अतः जो लोग गाने के मतवाले होते हैं उन्हें कुर्आन सुनने से कोई दिलचस्पी नहीं होती हालाँकि कुर्आन में ऐसी मिठास है कि इस का कोई उदाहरण प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। और उस को सुनने से आदमी ऐसा आत्मविभोर हो जाता है कि उसे महसूस होने लगता है जैसे रूह बुलंदी की तरफ़ उड़ान भरने लगी है। किन्तु इस स्वाद का रसास्वादन वही लोग कर सकते हैं जो कुर्आन से लगाव रखते हैं।

अधिकांश मुफ़स्सिरीन ने लहवलहदीस से गाना ही मुराद लिया है और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु तो क्रसम खा कर फ़रमाते थे कि इस से मुराद ग़िना और गाना है। और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं :- الغناء واشباهه अर्थ:- “लहवलहदीस गाना और उस जैसी चीज़ें हैं।” (तफ़सीर तबरी जिल्द २१ पृष्ठ ३९, ४०) इन के अलावा अन्य सहाबा और ताबिअीन से भी यही तफ़सीर मिलती है। आज कल के ज़माने में तो गाने बजाने ने महामारी का रूप धार लिया है। कहाँ हयादारी और लाज के बारे में इस्लाम की यह शिक्षा कि औरतें लोच के साथ मर्दों से बात न करें (فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ) “और पुरषों से लोच के साथ बात न करो।” सूरह अहज़ाब आयत ३२) और न इस प्रकार चलें कि उन के ज़ेवरों की झन्कार लोगों को सुनाई दे

وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِنْ زِينَتِهِنَّ

“और अपने पाँव ज़मीन पर मारती हुई न चलें कि अपना जो बनाव सिंगार उन्होंने छिपा रखा है, वह मालूम हो जाए।” सूरह नूर आयत ३१) और कहाँ औरतों का विगत अज्ञानकाल की भाँति मर्दों के सामने आ कर नाच रंग करना और मर्दों का बेकार के उपकरणों के साथ गन्दे और बेहूदा गाने गाना। फिर नये मिडिया संसाधनों सिनेमा, टी.वी. रेडियो, विडियो ऑडियो आदि ने तो लोगों को बुरी तरह अपने जाल में फंसा लिया है और माहौल ऐसा बना दिया है कि प्रत्येक घर सिनेमा घर बन गया है और बच्चे बच्चे की ज़बान की ज़बान पर फ़िल्मी गाने हैं। इस का परिणाम यह निकला कि शर्म, लाज और हयादारी उठ गई। इस मूल्यवान वस्तु के उठ जाने से व्यभिचार और बलात्कार रोज़ का नित्यक्रम हो गया है। आबरू का कोई अर्थ नहीं रह गया। इस का दूसरा नुक़सान यह हुआ कि ग़ैरत, स्वाभिमान और संजीदगी लोगों के अन्दर से ग़ायब हो गई और पढ़े लिखे संजीदा लोग ओछी हरकतें करने पर उतर आए। इस का तीसरा नुक़सान यह हुआ कि जिम्मेदारी का एहसास (दायित्वबोध) टूटने लगा और बेपरवाही ने उस की जगह ले ली। और इस का सब से बड़ा नुक़सान

यह हुआ कि आदमी अपने जीवन के मूल लक्ष्य की ओर से गाफ़िल हो गया। अब न वह खुदा का कलाम सुनने समझने के लिए तैयार है और न नसीहत और उपदेश की कोई बात सुनने के लिए। वह बुरी तरह सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति में मगन है। और सच्चाई यह है कि गाने की मदहोशी शराब की मदहोशी से भी बढ़ कर है। अगर कुर्आन को लोग दिल से सुनते तो होश में आते।

7. जो कलाम खुदा और आख़िरत से गाफ़िल कर देने

वाला हो उस का मूल ज्ञान से कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता। वह अज्ञान और अज्ञानता की ही पैदावार है।

8. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अनआम नोट ४४

9. इशारा है इस बात की तरफ़ कि जिन्होंने अपना समय गाने बजाने, डोल, संगीत और खुराफ़ात में व्यर्थ गंवाने के बजाय ईमान की दौलत को समेटने और अपने को नेक कर्मों से संवारने में लगाया उन्हें आख़िरत में ऐसे बाग़ प्रदान किये जाएंगे जहाँ वे नेमतों से माला माल होंगे।



उस ने आसमानों को बगैर सुतूनों (सहारे) के पैदा किया जैसा कि तुम देखते हो। उस ने ज़मीन में पहाड़ गाड़ दिए ताकि वह तुम को लेकर लुढ़क न जाए और उस में हर प्रकार के जानवर फैला दिये और आसमान से पानी बरसाया। और ज़मीन में हर प्रकार की उम्दा चीज़ें उगाई। (अल-कुर्आन)

10. उस ने आसमानों को बगैर सुतूनों (सहारे) के पैदा किया जैसा कि तुम देखते हो।¹⁰ उस ने ज़मीन में पहाड़ गाड़ दिए ताकि वह तुम को लेकर लुढ़क न जाए ¹¹और उस में हर प्रकार के जानवर फैला दिये और आसमान से पानी बरसाया। और ज़मीन में हर प्रकार की उम्दा चीज़ें उगाई।

خَلَقَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَآلَفَىٰ فِي الْأَرْضِ رَوَاسِي
أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ
مَاءً فَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ⑩

11. यह है अल्लाह की रचना। अब मुझे दिखाओ कि इन्होंने क्या पैदा किया है जो उस के सिवा (पूज्य बना लिये गए) हैं ? वास्तव में ये ज़ालिम खुली गुमराही में लिप्त हैं।

هَذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ بَلِ
الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ⑪

12. हम ने लुकमान ¹² को तत्त्वदर्शिता (हिकमत) प्रदान की, कि अल्लाह का शुक्र करो ¹³ और जो शुक्र करता है उस का शुक्र करना उस के अपने ही लिए लाभदायक है और जो नाशुकी करता है तो अल्लाह बेनियाज़ (बे मुहताज़) है, ख़ूबियों वाला।¹⁴

وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ
لِنَفْسِهِ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ⑫

13. जब लुकमान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा, ऐ मेरे बेटे ! अल्लाह का शरीक (साझी) न ठहरा निस्संदेह शिर्क बहुत बड़ा जुल्म है।¹⁵

وَإِذْ قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يُعْطِيهِ يُبْنَىٰ لَا تَشْرِكْ بِاللَّهِ
إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ⑬

14. — और हम ने ¹⁶ मनुष्य को उस के माँ बाप के बारे में हिदायत की। उस की माँ ने तकलीफ़ पर तकलीफ़ उठा कर उसे अपने पेट में रखा और दो साल उस के दूध छूड़ाने में लगे, कि मेरा शुक्र कर और अपने माँ बाप का।¹⁷ आखिरकार पलटना मेरी ही तरफ़ है।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ وَهْنًا عَلَىٰ وَهْنٍ
وَفَصْلُهُ فِي عَمَيْنِ أَنْ اشْكُرْ لِي وَلِوَالِدَيْكَ إِلَى الْمَصِيرِ ⑭

15. परन्तु यदि वे तुझ पर दबाव डालें कि तू किसी को मेरा शरीक (साझीदार) ठहरा जिस का तुझे कोई ज्ञान नहीं है ¹⁸ उन की बात न मान ¹⁹ और दुनिया में उन के साथ अच्छा व्यवहार कर ²⁰ और पैरवी उन के रास्ते की कर जिन्होंने मेरी तरफ़ रूजू किया।²¹ फिर मेरी ही तरफ़ तुम को लौटना है। उस समय मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम क्या करते रहे हो।

وَأِنْ جَاهِدْكَ عَلَىٰ أَنْ تَشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا
تُطْعِمَهَا وَصَاحِبِهَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا وَاتَّبِعْ سَبِيلَ مَنْ
أَنَابَ إِلَيَّ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ⑮

10. व्यख्या के लिए देखिए सूरह रअद नोट ५

11. व्यख्या के लिए देखिए सूरह रअद नोट २६

12. लुकमान अरब का एक ऐसा व्यक्तित्व है जो तत्वदर्शी और बुद्धिमान की हैसियत से प्रसिद्ध थे। उन का वर्णन अरब की शायरी में मिलता है। मगर चूँकि अरबों में इतिहास लिखने का प्रचलन नहीं था इस लिए लुकमान की जीवनी पुस्तक के पन्नों पर अंकित न हो सकी। रह गई बात अन्य उल्लेखों की तो उन में बड़ी परस्पर विरोधी बातें उल्लिखित हुई हैं। इस लिए हमें कुआन के ही बयान पर संतोष करना चाहिए। कुआन के बयान से स्पष्ट होता है कि :-

1) लुकमान अल्लाह के शुक्रगुजार (कृतज्ञ) बन्दे थे।

2) अल्लाह ने उन को हिकमत और सूझ बूझ प्रदान की थी।

3) उन की नज़र में शिर्क सब से बड़ा जुल्म था ।

4) उन्हें अल्लाह के ज्ञान और सामर्थ्य पर पूर्ण विश्वास था तथा वे कर्मानुसार फल पर विश्वास रखते थे।

5) उन्होंने ने अपने बेटे को जो नसीहतें की थी वह बड़ी अनमोल नसीहतें थीं। और वह वास्तव में अरबवासियों के लिए कीमती पूँजी थी और अब कुआन ने इस मूल्यवान पूँजी के लाभ को सब के लिए आम कर दिया।

6. लुकमान की नसीहत में नमाज़ क़ायम करने की हिदायत भी शामिल है जो इस बात का स्पष्ट सबूत है कि लुकमान की ये नसीहतें नबियों की शिक्षा से ली गई थी न कि खाली खूली बुद्धि का परिणाम। उन्हें अल्लाह तआला ने हिकमत (तत्वदर्शिता) प्रदान की थी इस लिए उन्होंने ने नबियों की शिक्षा का ग्रहण किया और प्रभावपूर्ण ढंग से बयान भी किया।

हिकमत से तात्पर्य वह सूझ बूझ है जो जीवन के प्रति धारणा बनाने तथा कर्म करने के लिए सत्य एवं न्याय को आधार बनाता है। हज़रत लुकमान इस सीख और सूझ बूझ से नवाजे गए थे। इस लिए उन की ज़बान से समझदारी की बातें अदा हुईं। इस से उन अरब वासियों को जो इस्लाम के पहले संबोधी थे यह समझना अभिप्रेत है कि तुम्हारे ही पूर्वजों में लुकमान जैसे समझदार व्यक्ति भी रहे हैं जिस को तुम स्वयं मानते हो। उस ने भी वही शिक्षा दी थी जो आज कुआन दे रहा है फिर तुम अपने ऐसे अच्छे पूर्वजों का अनुकरण क्यों नहीं करते और अपने गुमराह पूर्वजों के अनुकरण ही पर क्यों हठी हो?

13. अर्थात् सब से बड़ी हिकमत (समझदारी) ही है कि आदमी अपने पैदा करने वाले का कृतज्ञ बने। कृतज्ञता यह है कि आदमी अल्लाह की नेमतों और उस के एहसानों को दिल से स्वीकार करे ज़बान से इक़रार करे और अपने रवैये को उस के अनुकूल बना ले। फिर ज्ञान और सूझ बूझ बहुत बड़ी नेमत

और भलाई है और जिस को यह प्राप्त हो उस को इस की पूरी क़द्र करनी चाहिए।

14. अर्थात् किसी के कृतज्ञ बनने से अल्लाह को कोई लाभ नहीं पहुँचता और न उस की कृतघ्नता से अल्लाह का कुछ बिगड़ता है क्यों कि वह न किसी चीज़ का ज़रूरतमंद है और न उस का प्रशंसा के योग्य होना, तुम्हारे प्रशंसा करने पर आश्रित है। बल्कि वह आप की प्रशंसनीय और खूबियों वाला है इस लिए प्रशंसा के योग्य है चाहे कोई उस की प्रशंसा करे या न करे। अलबत्ता जो व्यक्ति उस का शुक्र अदा करता है और उस की प्रशंसा तथा गुणगान करता है वह अपने फ़र्ज़ को अदा करता है और जो नाशुक्री करता है वह अपने फ़र्ज़ के साथ ग़दारी करता है और अपने को विनाश की राह पर डाल देता है।

15. शिर्क अर्थात् खुदा का साझीदार मानना यह बहुत बड़ा जुल्म है क्यों कि यह उस तथ्यपूर्ण सत्य के विरुद्ध है जिस पर ज़मीन और आसमान क़ायम हैं। तथा यह अल्लाह के मामले में सब से बड़ा अधिकार हनन भी है क्यों कि इबादत और पूजा अल्लाह ही का अधिकार है जब कि शिर्क करने वाला (बहुदेववादी) ग़ैरुल्लाह को भी पूज्य ठहराता है। इस के अलावा शिर्क का अपराधी भारी भारी गुनाह कर के अपने ऊपर बड़े जुल्म ढाता है। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट १३७)

लुकमान ने अपने बेटे को शिर्क से बचने की जो ताकीद की उस से यह समझ लेना सही नहीं कि बेटा मुश्रिक (बहुदेववादी) था। क्यों कि आगे जो नसीहतें बयान हुई हैं जिन में नमाज़ क़ायम करने की हिदायत भी शामिल है वे इस पर तर्क प्रस्तुत करती हैं कि वह आज्ञाकारी अर्थात् मुस्लिम था, और हज़रत लुकमान ने उस में सही दीनी समझ पैदा करने और उस के अक़ीदे को सुदृढ़ करने के लिए शिर्क से बचने की ताकीद की इस से यह सबक़ मिलता है कि एक बाप अपनी संतान को सब से पहले ऐसी शिक्षा दे जो उस को शिर्क से बाज़ रखने वाली और एक खुदा की धारणा उस के मन में मज़बूती से बिठा देने वाली हो।

16. यह और इस के बाद वाली आयत का मज़मून अल्लाह तआला का अपना इर्शाद है और लुकमान के बयान पर वृद्धि की हैसियत रखता है। उन्होंने ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए मुनासिब नहीं समझा होगा कि बाप खुद अपने बेटे को अपने साथ अच्छे व्यवहार की नसीहत करे परन्तु चूँकि एक महत्वपूर्ण बात थी जो उन की नसीहतों में शामिल नहीं हो सकती थी। इस लिए अल्लाह तआला ने खुद बयान कर के इस कमी को पूरा कर दिया।

17. माँ चूँकि कष्ट पर कष्ट उठाती है इस लिए वह अच्छे

व्यवहार का सर्वाधिक हक़ रखती है हदीस में आता है :-

جاء رجل الى رسول الله ﷺ فقال : يا رسول الله من أحق بحسن
صَحَابَتِي؟ قَالَ أُمُّكَ ، قَالَ ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ أُمُّكَ قَالَ ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ
أُمُّكَ قَالَ ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ ثُمَّ أَبُوكَ. (صحیح البخاری کتاب الادب)

अर्थ :- “एक व्यक्ति अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और कहा ऐ अल्लाह के रसूल । मेरे अच्छे सुलूक का सब से ज़्यादा हक़दार कौन है? फ़रमाया तुम्हारी माँ उस ने पूछा, फिर कौन? फ़रमाया तुम्हारी माँ, उस ने पूछा फिर कौन? फ़रमाया तुम्हारी माँ उस ने पूछा फिर कौन? फ़रमाया तुम्हारा बाप।” (बुखारी किताबुल अदब)

आयत में माता पिता का शुक्र करने की हिदायत की गई है जब कि दूसरी जगहों पर अच्छे सुलूक की ताकीद की गई है। इस से स्पष्ट हुआ कि माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक इस लिहाज़ से वांछित है कि उन के साथ भावनात्मक लगाव भी हो और

ज़बान से उन के लिए ख़ैर और भलाई ही के शब्द निकलें। परन्तु अल्लाह का शुक्र माँ बाप के शुक्र पर हावी है जैसा कि आयत से स्पष्ट है।

18. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्कबूत नोट १०

19. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्कबूत नोट ११

20. यहाँ दुनिया से अभिप्रेत जायज़ बातों का वह परिधि क्षेत्र है जिस में शरीअत ने मामले की आज़ादी दी है। यदि माँ बाप ग़ैर मुस्लिम और काफ़िर हों तो उन के साथ भी यह मामले अन्जाम दिये जा सकते हैं बशर्ते कि किसी शरअी आदेश का उल्लंघन होने की राह न निकलती हो।

21. अर्थात् दीन के मामले में माँ बाप का अनुकरण नहीं करना है कि उन का जो भी धर्म और जैसी कुछ धारणा है बेटा उसी का अनुयायी बन जाए, बल्कि दीन का मूल सार अल्लाह की ओर रूजू है इस लिए उन्हीं लोगों की राह पर चलना चाहिए जिन्होंने अल्लाह की तरफ़ रूजू किया था और वह है नबियों की राह ।



(और लुकमान ने कहा) ऐ मेरे बेटे ! कोई चीज़ राई के दाने के बराबर भी हो और अगर वह किसी चट्टान या आसमानों या ज़मीन में कहीं छिपी हो तो अल्लाह उस को निकाल लाएगा वह अत्यंत सूक्ष्मदर्शी और ख़बर रखने वाला है। ऐ मेरे बेटे ! नमाज़ कायम कर, भलाई का हुक्म दे, बुराई से मना कर और जो मुसीबत पहुँचे उस पर सब्र कर। ये हौसले के काम हैं। (अल-कुआन)

16. (और लुक़मान ने कहा) ऐ मेरे बेटे ! कोई चीज़ राई के दाने के बराबर भी हो और अगर वह किसी चट्टान या आसमानों या ज़मीन में कहीं छिपी हो तो अल्लाह उस को निकाल लाएगा वह अत्यंत सूक्ष्मदर्शी और ख़बर रखने वाला है।²²

يَبْنِيْ اِنْهَآءَ تَكَ مُنْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ
فِي صَخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمَوَاتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاتِ بِهَا
اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿١٦﴾

17. ऐ मेरे बेटे ! नमाज़ क़ायम कर,²³ भलाई का हुक्म दे, बुराई से मना कर²⁴ और जो मुसीबत पहुँचे उस पर सब्र कर।²⁵ ये हौसले के काम हैं।²⁶

يَبْنِيْ اَقِمِ الصَّلَاةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَاَنْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَاصْبِرْ عَلٰى مَا اَصَابَكَ ط اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٧﴾

18. और लोगों से बेरुखी न कर²⁷ और न ज़मीन पर अकड़ कर चल।²⁸ अल्लाह किसी खुद पसंद²⁹ और अहंकारी को³⁰ पसंद नहीं करता।

وَلَا تَصْرِخْ ذٰلِكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا اِنَّ
اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ﴿١٨﴾

19. अपनी चाल में संतुलन अपनाओ³¹ और अपनी आवाज़ जरा नीची रखो।³² सर्वाधिक बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है।³³

وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ
لَصَوْتُ الْحَبِيْرِ ﴿١٩﴾

20. तुम देखते नहीं³⁴ कि अल्लाह ने उन तमाम चीज़ों को जो आसमानों में और ज़मीन में हैं तुम्हारे लिए वशीभूत कर रखा है।³⁵ और अपनी खुली और छिपी नेमतें तुम पर पूरी कर दी हैं।³⁶ फिर भी इन्सानों में ऐसे लोग हैं जो अल्लाह के बारे में किसी ज्ञान, किसी हिदायत और किसी रौशन किताब के बग़ैर झगड़ते हैं।³⁷

اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ تَاْفِي السَّمَوَاتِ وَتَاْفِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ
عَلَيْكُمْ نِعْمَةً ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللّٰهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنِيْرٍ ﴿٢٠﴾

21. और जब उन से कहा जाता है कि उस चीज़ की पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारी है तो कहते हैं कि हम तो उस तरीक़े की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है।³⁸ क्या उस सूरत में भी (ये उन की पैरवी करेंगे) जब कि शैतान उन्हें भड़कती हुई आग की तरफ़ बुला रहा हो? ³⁹

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ اتَّبِعُوْا مَا اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ
مَا وُجِدْنَا عَلَيْهِ اَبَاؤُنَا اَوْ لَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ
اِلَى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿٢١﴾

22. और जो व्यक्ति अपने को अल्लाह के हवाले कर दे और वह नेक काम करने वाला भी हो⁴⁰ तो उस ने निश्चय ही मज़बूत सहारा थाम लिया।⁴¹ और तमाम मामलों का अन्तिम निर्णय अल्लाह ही की तरफ़ है।

وَمَنْ يُسَلِّمْ وَجْهَهُ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدْ اسْتَمْسَكَ
بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿٢٢﴾

22. अर्थात् अल्लाह ऐसा सूक्ष्मदर्शी और खबर रखने वाला है कि अगर राई के दाने के बराबर भी कोई चीज किसी चट्टान के नीचे या आसमान और ज़मीन में कहीं छिपी हुई हो तो वह उस पर पूरी तरह ज़ाहिर है और जब चाहेगा वह उस को बाहर निकाल लाएगा। और जब उस के ज्ञान और सामर्थ्य से कोई चीज बाहर नहीं तो मनुष्यों के छोटे से छोटे कर्म भी उस से छिपे नहीं रह सकते और क्रियामत के दिन वह ज़रूर उसे सामने ला देगा। सूरह ज़िलज़ाल में है :-

فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ (زلزال: ८-९)

अर्थ :- “जिस ने कण बराबर भलाई की होगी उस को वह देख लेगा और जिस ने कण बराबर बुराई की होगी उस को वह देख लेगा” (ज़िलज़ाल ७, ८)

23. जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं कि नमाज़ कायम करना नबियों की शिक्षाओं में से है। लुकमान की तत्वपूर्ण बातें नबियों की शिक्षाओं से ही उद्धृत थीं इस लिए नमाज़ कायम करने की हिदायत भी उस में शामिल थी।

24. मालूम हुआ कि भलाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना प्रत्येक व्यक्ति की ज़िम्मेदारी है न कि केवल उलमा की ज़िम्मेदारी। रहा इस ज़िम्मेदारी को अदा करने का तरीका तो इस का सम्बन्ध आदमी के अपने सामर्थ्य, क्षमता और हालात से है।

25. जो व्यक्ति नेकियों को फैलाने और बुराइयों को मिटाने के लिए उठ खड़ा होगा उस को विरोध का सामना अवश्य करना पड़ेगा क्योंकि लोग साधारणतया सच्ची और सुधार की बातें स्वीकार करने के लिए आमदा नहीं होते। और सच्ची बात कहने तथा सुधार के प्रयास करने वालों को कष्ट पहुँचाते हैं। इस लिए इस राह में क्रम क्रम पर धैर्य और संयम की आवश्यकता होती है।

26. अर्थात् यह काम चूँकि कठिन है इस लिए इन को अन्जाम देने के लिए साहस की आवश्यकता पड़ती है। यदि आदमी में साहस हो तो वह नमरूदी आग में भी निर्भय हो कर कूद पड़ता है और यदि साहस न हो तो मामूली भय से प्रभावित हो कर सच्ची बात ज़बान से निकालने का साहस नहीं करता। आदमी का साहस भरा संकल्प लोहे की जंजीर को काट देता है और साहस की कमी अथवा बुजदिली उस को जंजीरों में जकड़ देती है।

27. लोगों से बेरुखी अहंकार का द्योतक है। आदमी में जब अहंकार उतपन्न हो जाता है तो वह दूसरों को खातिर में नहीं लाता। और वह बहुत बड़ी अनैतिकता है।

28. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बनी इस्राईल नोट ५०

29. “मुख्ताल” का अर्थ है अहंकारी और खुदपसंद अर्थात् खुदपसन्दी धनदौलत, सत्ता, लीडरी, ज्ञान और हुनर आदि के कारण पैदा होता है और आदमी अहंकारी तौर तरीके अपनाने लगता है यहाँ तक कि उस की चाल ढाल भी अहं से ग्रस्त होकर रह जाती है। इस लिए हदीस में अहं के साथ कपड़ा घसीटते हुए चलने पर कड़ी चेतावनी आई है।

مَنْ جَرَّ ثَوْبَهُ مَخِيلَةً لَمْ يَنْظُرِ اللَّهُ إِلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ. (صحیح البخاری کتاب اللباس)

अर्थ:- “जो अहं से अपने कपड़े घसीटते हुए चलेगा अल्लाह क्रियामत के दिन उस की ओर नहीं देखेगा।” (बुखारी किताबुल्लिबास)

यह बादशाहों और घमण्ड करने वालों का तरीका है कि अपने वस्त्रों को ज़मीन पर घसीटते हुए चलें। यदि पाजामा पैंट आदि टख्नों से नीचे हो तो वह भी आदमी में घमण्ड पैदा करती है इस लिए शरीअत ने यह सीमा निर्धारित कर दी है कि कपड़ा टख्नों तक हो उस से नीचे न हो। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है :-

مَا أَسْفَلَ مِنَ الْكَعْبَيْنِ مِنَ الْإِزَارِ فَفِي النَّارِ. (مشکوٰۃ کتاب اللباس بروایة البخاری)

अर्थ :- “तहबन्द का जो हिस्सा टख्नों से नीचे हो वह आग में होगा”। (मिशकात किताबुल्लिबास)

इस से यह रहनुमाई मिलती है कि आदमी ऐसा लिबास न पहने जिस से घमण्ड की अभिव्यक्ति होती हो।

30. “फ़खूर” (अहंकारी) जो अपनी बड़ाई का रोब दूसरों पर झाड़े। जो लोग कमज़फ़ होते हैं वही अपने कारनामों दूसरों के सामने गिनाते रहते हैं ताकि उन से वाहवाही लूटें। यह एक निन्दनीय आदत है जो अल्लाह को अत्यधिक अप्रिय है।

31. चाल में संतुलन अपनाने का मतलब यह है कि चाल से न आदमी के नीचे और सुस्त होने का पता चले। न दिखावटी तौर पर धीरे धीरे चले और न अहं से भरी चाल चले और न ऐसी तेज़ चाल चले कि मूर्ख लगे। हदीस में नमाज़ के लिए भी दौड़ने से मना किया गया है कि मूर्खता का प्रदर्शन न हो :-

إِذَا سَمِعْتُمُ الْأَقَامَةَ فَامْشُوا إِلَى الصَّلَاةِ وَعَلَيْكُمْ السَّكِينَةُ وَالْوَقَارُ وَلَا تُسْرِعُوا فَمَا أَدْرَكْتُمْ فَصَلُّوا وَمَا فَاتَكُمْ فَأَتِمُّوا. (صحیح البخاری کتاب الاذان)

अर्थ:- “जब तुम तकबीर सुनो तो नमाज़ के लिए सुकून और वक्रार के साथ चलो। दौड़ो मत। फिर जितनी नमाज़ मिल जाए पढ़ लो और जो छूट जाए उस को पूरा कर लो।” (बुखारी किताबुल अज़ान)

यह बात शिष्टाचार और नैतिकता के पहलू से है। अर्थात् चाल में संतुलन आदमी का स्वभाव हो वरना आवश्यकता पड़ने पर आदमी दौड़ भी सकता है। मिसाल के तौर पर आग को बुझाने के लिए या किसी की जान को बचाने के लिए या अपराधी को पकड़ने आदि के लिए। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह फुर्कान नोट ११)

इस से यह बात आप से आप स्पष्ट होती है कि नृत्य एक बुरी हरकत है क्यों कि यह संतुलन के बिल्कुल विरुद्ध है और अपमान भरी मूर्खता का खुला प्रदर्शन है। चाहे नाच औरत का हो या मर्द का और चाहे वह गन्दे गानों के साथ हो या क्राँव्वाली के साथ या वज्द (उन्माद) की हालत में।

32. अर्थात् बोल चाल में अपनी आवाज़ धीमी रखो। ऊँची आवाज़ से बोलना कोई अच्छी बात नहीं है बल्कि नासमझी का परिचायक है। और चीख चीख कर बोलने से तो झगड़ालूपन तथा अहंकार का प्रदर्शन होता है। आवाज़ में धीमापन एक अच्छा गुण है जो अपना एक प्रभाव रखती है।

आवाज़ में धीमापन भी एक आदत के तौर पर वांछित है वरना आवश्यकता पड़ने पर आवाज़ ऊँची करने में कोई हरज नहीं, जैसे भाषण, ऐलान और अज़ान आदि के लिए।

33. भोड़ी और भारी आवाज़ को गधे की आवाज़ से मिसाल दे कर इस से नफ़रत दिलाई गई है। गधे की आवाज़ सुनना कोई भी पसंद नहीं करता फिर मनुष्य जो अपना एक नैतिक अस्तित्व रखता है, गधे की तरह क्यों चीखे।

ध्यान रहे कि इस्लाम में ज़ाहिर और अन्दरून दोनों का महत्व है और दोनों एक दूसरे पर अपने अपने प्रभाव डालते हैं। अच्छे आचार, अच्छी आदतें जो मनुष्य के ज़ाहिर अथवा शरीर के बाह्य अंगों से सम्बन्धित हैं जैसे आवाज़ का धीमापन, निगाहों का झुका रहना, संतुलित चाल आदि उस के अन्दरून अर्थात् मन मास्तिष्क में अच्छे विचारों और अच्छी भावनाओं को पैदा करने का साधन बन जाती हैं इसी प्रकार वे गुण जो अन्दरून से सम्बन्ध रखते हैं जैसे खुलूस, मुहब्बत हमदर्दी आदि स्वभाव, तौर तरीक़ों को संवारते हैं और बुरे गुण जैसे कि जलन, वैमनस्य, घृणा आदि बुरे आचार पैदा करते हैं।

34. लुकमान की नसीहतें ऊपर समाप्त हो गई अब फिर बातों का रूख तौहीद की तरफ़ मुड़ जाता है।

35. तस्खीर का अर्थ वशीभूत कर देने के भी हैं और सेवा में लगा देने के भी। अल्लाह तआला ने कितनी ही चीज़ें मनुष्य

के आधीन कर दी हैं कि वे जिस तरह चाहें उन से काम लें। मिसाल के तौर पर जानवर जिन से वह अपनी मर्जी के अनुसार काम लेता है और उन को वध भी कर सकता है। इसी प्रकार बनस्पति और अन्य पदार्थों को, कि उन को विभिन्न प्रकार से प्रयोग में लाता है। परन्तु बहुत सी चीज़ें विशेष रूप से अन्तरिक्ष के ग्रह, उपग्रह जो मनुष्य के हाथ में नहीं हैं मनुष्य को किसी न किसी प्रकार लाभ पहुँचाने का कार्य कर रहे हैं। जैसे सूरज जो दिन रात लोगों को ताप और प्रकाश पहुँचाने के कार्य में लगा हुआ है और विशाल अन्तरिक्ष में अन्तरिक्ष की किरणों (Cosmic Rays) का अस्तित्व जो हाल ही की खोज है और हम नहीं जानते कि सात आसमान हमारे लिए क्या क्या काम करते जा रहे हैं। परन्तु प्रयोगों एवं अनुभवों से यह सिद्ध होता जा रहा है कि अन्तरिक्ष के ग्रह एवं उपग्रह मानव लाभ के लिए तरह तरह के सामान कर रहे हैं।

36. खुली नेमतों से मुराद महसूस और ज्ञात नेमतें हैं और छिपी नेमतों से मुराद वे नेमतें हैं जिन का लाभ तो उन्हें पहुँच रहा है परन्तु वे उस की जानकारी में नहीं हैं। मौजूदा दौर में मेडिकल साइंस ने ऐसी कितनी चीज़ों की खोज की है जो मानव शरीर के अन्दर लाभप्रद काम अन्जाम देती रहती हैं। रोगों से लड़ती हैं और शरीर के विकास में सहायक सिद्ध होती हैं। ये और इस प्रकार की कितनी ही चीज़ें पहले आदमी को ज्ञात नहीं थीं और अब विज्ञान की प्रगति के बदौलत मनुष्य की जानकारी में आ गई और असंख्य नेमतें अभी ऐसी हैं जिन का मनुष्य को ज्ञान नहीं है।

37. अर्थात् इन नेमतों के प्राप्त हो जाने पर जिन का वर्णन ऊपर हुआ है, चाहिए तो यह था कि मनुष्य अल्लाह का कृतज्ञ दास बन जाता परन्तु कितने ही लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के प्रति कृतघ्नता का रवैया अपनाते हैं और उस के सच्चे परोपकारी और एक मात्र पूज्य होने के बारे में बहसें खड़ी कर देते हैं। ये बहसें न तो ज्ञान के आधार पर होती हैं न हिदायत के आधार पर और न ही किसी स्पष्ट किताब के आधार पर बल्कि मात्र अज्ञानता और अंधविश्वास के आधार पर होती हैं। (इल्म (ज्ञान) की व्याख्या के लिए देखिए सूरह हज्ज नोट ५)

हिदायत से यहाँ अभिप्रेत तौहीद अर्थात् एकेश्वरवाद की वे निशानियाँ हैं जो मनुष्य के अपने अस्तित्व में तथा बाहर की दुनिया में फैली हुई हैं और विशेष रूप से नबियों के द्वारा प्राप्त होने वाली रहनुमाई भी।

और (किताब-मुनीर) से अभिप्रेत अल्लाह की प्रकाशना (वहय) के द्वारा उतरने वाली किताब है। मुनीर रौशन की विशेषता को उजागर करती है कि वह किताब अपने मूल रूप में मौजूद हो वरना परिवर्तित ग्रंथ हिदायत की राह पूरी तरह

रौशन नहीं कर सकता अतः मौजूदा तौरात और इन्जील पर जो बाइबिल में एक साथ पाई जाती हैं मुनीर (रौशन) की विशेषता फिट नहीं बैठती। और जहाँ तक वेद और गीता का सम्बन्ध है उन ग्रन्थों में इस बात का कोई प्रमाण मौजूद नहीं है कि यह सृष्टा की ओर से अवतरीत हुई हैं। वेद के बारे में तो यह भी नहीं मालूम कि उस का प्रस्तुत करने वाला और संकलन कर्ता कौन था। फिर इन किताबों के विषय भी इन के ईशवाणी होने की गवाही नहीं देते अतः वे प्रमाण अथवा अन्तिम तर्क नहीं हैं।

38. दूसरे शब्दों में हम अपने पैतृक धर्म और जातीय एवं धार्मिक संस्कृति पर जमे रहेंगे।

39. अर्थात् खुदा और मजहब के मामले में अल्लाह की

प्रकाशना को छोड़ कर गुमराह पूर्वजों अथवा बहुदेववादी जाति की संस्कृति का अनुकरण करना, शैतान की दअवत को कुबूल करना है। क्यों कि शैतान जहन्नम की तरफ बुलाता है और यह राह जहन्नम ही की राह है।

40. स्पष्ट हुआ कि इस्लाम की हक़ीक़त यह है कि आदमी पूरे सूझ बूझ के साथ अपने आप को अल्लाह के प्रति समर्पित कर दे और अपने व्यवहारिक जीवन में निखार पैदा करे।

41. “बिल ऊरवतुल वुसक़ा” بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَى (मजबूत सहारा) से मुराद अल्लाह का दीन है जो अल्लाह से सम्बन्ध को मजबूत करता है।



23. जिस ने कुफ्र किया उस का कुफ्र तुम्हारे लिए गम का कारण न हो।⁴² उन्हें पलट कर हमारी ही तरफ आना है। फिर हम उन्हें बताएंगे कि उन्होंने क्या कुछ किया था। निस्संदेह अल्लाह सीनों के राज तक जानता है।

وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنُكَ كُفْرُهُ ۚ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٢٣﴾

24. हम थोड़े दिन उन्हें जीवन की सामग्री देंगे⁴³ फिर उन को एक कठोर यातना की ओर खींच ले जाएंगे।

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٢٤﴾

25. अगर तुम इन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया है तो ज़रूर कहेंगे, अल्लाह ने।⁴⁴ कहो प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है किन्तु इन में से अधिकतर लोग जानते नहीं हैं।⁴⁵

وَلَكِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٥﴾

26. आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह ही का है। निस्संदेह अल्लाह बेनियाज़ है प्रशंसा का हक़दार।

لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٦﴾

27. यदि ज़मीन के सारे वृक्ष क़लम बन जाएं, और समुद्र रौशनाई बन जाए जिस को अतिरिक्त सात समुद्र रौशनाई उपलब्ध कराएं तब भी अल्लाह की बातें समाप्त न होंगी। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।⁴⁶

وَلَوْ أَنَّمَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِنْ بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَا نَفِدَتْ كَلِمَاتُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٧﴾

28. तुम सब को पैदा करना और फिर ज़िन्दा उठाना ऐसा है ही जैसा एक व्यक्ति को पैदा करना और फिर ज़िन्दा उठाना।⁴⁷ निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनने और देखने वाला है।⁴⁸

مَا خَلَقَكُمْ وَلَا يَعْنُكُمْ إِلَّا كَفْسٌ وَاحِدَةٌ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٢٨﴾

29. क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में⁴⁹ और सूरज और चाँद को वशीभूत कर रखा है। हर एक नियत समय तक चला जा रहा है।⁵⁰ अल्लाह को उन सब की ख़बर है जो कुछ तुम करते हो।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَأَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٩﴾

30. यह इस कारण से है कि अल्लाह ही सत्य है और उस को छोड़ कर जिन दूसरी चीज़ों को ये पुकारते हैं वे असत्य हैं।⁵¹ और यह कि अल्लाह उच्च और महान है।⁵²

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٣٠﴾

42. अर्थात् जब तुम ने उन की पूरी पूरी सहानुभूति की और उन को समझाने में कोई कसर उठा न रखी। इस के बावजूद यदि वे अपने कुफ्र पर जमे हुए हैं तो तुम उन का गम क्यों करो। वे अपने किये को पहुँच कर रहेंगे।

43. अर्थात् जो मोहलत उन्हें दुनिया से लाभ उठाने की मिल रही है वह बहुत थोड़ी है। बहुत जल्द उन्हें ये सब छोड़ कर यहाँ से कूच करना होगा।

44. अरब के बहुदेववादी अल्लाह को ही सृष्टा मानते थे।

45. अर्थात् जब कायनात का सृष्टा अल्लाह है तो शुक्र और प्रशंसा का हकदार भी अल्लाह ही है। किन्तु इतनी मोटी बात भी अधिकतर लोग नहीं जानते और इसी कारणवश शिर्क में लिप्त रहते हैं।

46. अर्थात् ज़मीन पर जितने वृक्ष हैं उन सब के अगर कलम बना लिये जाएँ और समुद्र रौशनाई बन जाए और सात अतिरिक्त समुद्रों को उस में बढ़ा लिया जाए तो भी अल्लाह की कुदरत और उस की हिकमत की बातों को लिखने के लिए यह सब अपर्याप्त हो जाए। खुली हुई बात है कि एक एक कण ने दुनिया शुरू होने के समय से जो जो काम अन्जाम दिये हैं उन्हें लिखने के लिए रौशनाई का यह भण्डार कदापि पर्याप्त नहीं हो सकता। किन्तु अल्लाह का ज्ञान इतना विस्तीर्ण है कि वह प्रत्येक वस्तु पर हावी है। यदि आदमी उस की बड़ाई की सही कल्पना कर ले तो उन बातों को स्वीकार करने में उसे तनिक भी संकोच और विलम्ब नहीं होगा जिन को कुर्आन प्रस्तुत कर रहा है।

(अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह कहफ़ नोट १३३)

47. अर्थात् अल्लाह के लिए असंख्य इन्सानों को पैदा करना उतना की आसान है जितना कि एक इन्सान को पैदा करना। इसी प्रकार समस्त लोगों को पुनः जीवित करना भी उतना ही आसान है जितना कि एक मनुष्य को दोबारा जीवित करना। उस के हुक्म “हो जा” (कुन) से सारी इन्सानियत वजूद में आ गई फिर उस के इसी आदेश कुन से मुर्दे क्यों न जी उठेंगे?

48. इशारा है इस बात की तरफ़ जब वह सब कुछ सुनता और देखता है तो वह तुम्हारे अच्छे कर्मों पर इनाम और बुरे कर्मों का दण्ड कैसे नहीं देगा?

49. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आले इमरान नोट ३९

50. व्याख्या के लिए देखिए सूरह रअद नोट ८

51. अर्थात् सूरज और चाँद इस लिए वशीभूत हैं कि अल्लाह ने इन को वशीभूत कर रखा है। यदि ये स्वयं ख़ुदा होते तो वशीभूत तथा अधीन नहीं हो सकते थे और यदि कई ख़ुदा होते तो कायनात की यह व्यवस्था इतनी सुरुचिपूर्ण ढंग से नहीं चल सकती थी। इस लिए यह स्पष्ट दलील है इस बात की कि अल्लाह ही एक मात्र ख़ुदा है और उस के सिवा किसी भी ख़ुदा का कोई अस्तित्व नहीं। इस लिए ये बहुदेववादी जिस चीज़ को भी पूज्य समझ कर पुकारते हैं वह सरासर सत्य के विरुद्ध है।

52. अर्थात् अल्लाह की शान बहुत बुलंद है और बड़ाई उसी के लिए है।

(अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह रअद नोट २५)



31. क्या तुम देखते नहीं कि नाव समुद्र में अल्लाह के अनुग्रह से चलती है ताकि वह तुम्हें अपनी कुछ निशानियाँ दिखाए। निस्संदेह इस में निशानियाँ हैं हर उस व्यक्ति के लिए जो सब्र और शुक्र करने वाला हो।⁵³

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُرِيَكُمْ مِنْ آيَاتِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝۳۱

32. और जब मौजे छत्रों की तरह इन पर छा जाती हैं तो वे अल्लाह को पुकारते हैं दीन (विनम्रता और बन्दगी) को उस के लिए ख़ालिस करते हुए।⁵⁴ फिर जब वह उन्हें बचा कर थल की तरफ़ ले आता है तो उन में से कुछ ही लोग संतुलित रहते हैं⁵⁵ और हमारी आयतों का इन्कार वही लोग करते हैं जो ग़द्दार⁵⁶ और कृतघ्न हैं।

وَإِذَا غَشِيَهم مَوَّجٌ كَالظُّلُمِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ۝۳۲

33. लोगो ! बचो अपने रब की अवज़ा से और डरो उस दिन से⁵⁷ जब न कोई बाप अपनी औलाद के काम आएगा और न कोई औलाद अपने बाप के काम आएगी।⁵⁸ निस्संदेह अल्लाह का वादा सच्चा है तो दुनिया की ज़िन्दगी तुम्हें धोखे में न डाले और न फरेब देने वाले⁵⁹ अल्लाह के मामले में तुम्हें धोखे में रखे।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ وَاحْشُوا يَوْمًا لَا يَجْزِي وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ وَلَا مَوْلَا ذُو جَا زَعَنْ وَالِدَهُ شَيْئًا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۝۳۳

34. क्रियामत की घड़ी का ज्ञान अल्लाह ही के पास है।⁶⁰ वही बारिश बरसाता है।⁶¹ वही जानता है कि गर्भाशयों में क्या है।⁶² कोई व्यक्ति नहीं जानता कि कल वह क्या कमाई करेगा⁶³ और न कोई व्यक्ति यह जानता है कि वह किस भू भाग में मरेगा।⁶⁴ अल्लाह ही सब कुछ जानने वाला और बाख़बर है।

إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا كَسَبَتْ عَادًا وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝۳۴

53. आदमी जब नाव में अथवा पानी के जहाज़ में सवार होता है तो वह भय से घिरा होता है। फिर यदि नाव तूफ़ान से दोचार हो जाती है तो वह अत्याधिक भय महसूस करने लगता है। यह इस बात का परिचायक है कि जीवन खतरे और भय से घिरा हुआ है और वह अल्लाह ही है जो खतरों के बीच से मनुष्य को सही सलामत गुज़ारता है। किन्तु यह रहनुमाई वही लोग प्राप्त करते हैं जो खतरों और मुसीबत में सब्र का दामन थामे रहते हैं अर्थात् जो सत्य को पा लेते और उस पर जमे रहने का साहस रखते हैं। दूसरे पहलू से देखिए तो नाव अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेमत है क्योंकि मनुष्य नाव और जहाज़ के द्वारा तरह तरह के लाभ हासिल कर लेता है। इसी प्रकार जब नौकाएँ तूफ़ान से सही सलामत निकल जाती हैं तो यह अल्लाह तआला का कितना बड़ा एहसान होता है किन्तु उस की ओर वही लोग ध्यानकर्षित करते हैं जो एहसान मानने वाले हों और अपने प्रभु के कृतज्ञ रहना चाहते हों।

54. व्याख्या के लिए देखिए सूरह यूनुस नोट ४२

55. अर्थात् कम ही लोग इस बात पर कायम रहते हैं कि अल्लाह को पुकारें विनम्रता और बन्दगी को उस के लिए ख़ालिस करते हुए। वरना अधिकतर लोग अपने प्रण से फिर जाते हैं।

56. “ख़त्तार” خَتَّار (गद्दार) अर्थात् प्रतिज्ञाभंग करने वाला अल्लाह से की गई बन्दगी की प्रतिज्ञा को तोड़ने वाला, विश्वासघाती। आघत का इशारा इस बात की तरफ़ है कि नौकाओं के तूफ़ान में घिर जाने पर तो खुद याद आ गया था और उस से विनम्रता पूर्वक प्रार्थना कर के उस की बन्दगी का प्रण किया था किन्तु जब वह उन लोगों को तूफ़ान की ज़द से बचा कर सही सलामत थल पर ले आया तो वे अपने इस प्रण से फिर गए और उस की आयतों का इन्कार करने लगे।

57. अर्थात् क्रियामत के दिन की पेशी से जब हर व्यक्ति को अल्लाह के समक्ष अपने कर्मों की जवाबदेही करनी होगी।

58. और जब न बाप बेटे के काम आएगा और न बेटा बाप के, तो प्रत्येक व्यक्ति को अपने बचाव की चिन्ता करनी चाहिए। उसे यह सोचना चाहिए कि किस धारणा और किस जीवन प्रणाली को अपना कर मैं आखिरत की यातना से बच सकता हूँ और हमेशा हमेशा की कामयाबी हासिल कर सकता हूँ। किन्तु स्थिति बड़ी विचित्र है। औलाद उसी धर्म पर जमी रहती है जो उन के माँ बाप का धर्म होता है हालाँकि यह धर्म असत्य होने के कारण माँ बाप को नरक में ले जाने वाला होता है और संतान को भी।

59. अभिप्रेत शैतान है जो अल्लाह के मामले में सब से बड़ा धोकेबाज़ है।

60. अर्थात् क्रियामत की घड़ी कब आएगी किसी को भी नहीं मालूम। इस का ज्ञान अल्लाह ही को है। उस की हिकमत और नीति के अनुसार यही बात उचित ठहरी कि वह इस के समय को किसी पर ज़ाहिर न करे। इस लिए इस बारे में नबी से प्रश्न करना या इस बहस में पड़ना बेफ़ायदा है। इस बहस में पड़ने के बजाए आदमी को चाहिए कि इस के लिए तैयारी करे, क्योंकि कि क्रियामत बहर हाल अपने समय पर आ कर रहेगी।

61. अर्थात् अल्लाह अपनी योजनानुसार बारिश बरसाता है। इस लिए इस बात का ज्ञान कि कब और कहाँ कितनी बारिश होगी अल्लाह ही को है। मनुष्य अपने अनुभवों के आधार पर जो पूर्वानुमान लगाता है वह सही भी होता है और ग़लत भी। आजकल के आधुनिक काल में मौसम विभाग के पूर्वानुमान निश्चित रूप से सही नहीं होते। तथा इस का क्षेत्र भी सीमित होता है और वह यह नहीं बता सकता कि इस साल सैलाब आएगा या अकाल पड़ेगा। यह सारी बातें अल्लाह ही जानता है।

62. अर्थात् गर्भाशयों में जो भ्रूण परवरिश पा रहा होता है उस का पूरा पूरा ज्ञान अल्लाह ही को है। वही जानता है कि गर्भपात हो कर यह नष्ट होगा या सही सलामत बच्चा पैदा होगा। उस का मिज़ाज और उस का स्वभाव तथा उस की प्रमुख विशेषताएँ क्या होगी। वह किन प्रतिभाओं से सम्पन्न होगा और उस की कार्यक्षमता क्या रहेगी। भ्रूण के बारे में यह और इस प्रकार की अन्य बहुत सी बातें अल्लाह ही जानता है और किसी को मालूम नहीं होता कि फ़लों और त के गर्भ में प्लेटो (अफ़लातून) जैसा व्यक्तित्व पल रहा है या इक्रबाल जैसी महान हस्ती ने जन्म लिया है। और न वह यह जानता है कि यह बच्चा आगे चल कर भलाई के काम अन्जाम देने वाला है या बुराई के। अल्लाह, जो उस की रचना करता है इस के लिए एक योजना (तक़दीर) भी बनाता है और वही इस बात का पूरा पूरा ज्ञान रखता है कि माँ के पेट में किस तरह की चीज़ अस्तित्व में आई है। और वह आगे जा कर क्या बनने वाली है।

आधुनिक युग में विज्ञान की प्रगति द्वारा मनुष्य के लिए यह जानना संभव हो गया है कि गर्भाशय में जो भ्रूण परवरिश पा रहा है उस का लिंग क्या है। अर्थात् वह लड़का है या लड़की। किन्तु इस आंशिक ज्ञान से इस बात का स्पष्टीकरण नहीं होता जो आयत के इस वाक्य में कही गई है। और जिस की व्याख्या हम ने ऊपर कर दी है। कोई कारण नहीं कि इस वाक्य के भावार्थ को भ्रूण के लिंग जानने की हद तक सीमित समझा जाए जब कि लिंग (Sex) का ज्ञान भी मनुष्य को गर्भ ठहरने के आरंभिक चरणों में नहीं होता बल्कि चार पाँच माह बाद परीक्षण (Anniocentesis Test) या सोनोग्राफी (Sonography) के द्वारा होता है।

63. कमाई से तात्पर्य केवल पैसे कमाना नहीं है बल्कि अच्छे और बुरे कर्म भी हैं। किसी को नहीं मालूम कि कल क्या हालात पेश आने वाले हैं, उस का इम्तिहान किन बातों में होगा और वह भलाई कमाएगा या बुराई। मतलब यह कि धन की कमाई हो या भलाई और बुराई की, मनुष्य की अज्ञानता का यह हाल है कि उसे यह भी नहीं मालूम होता कि कल उस के साथ क्या मामला पेश आने वाला है। किन्तु अल्लाह को इस का पूरा पूरा ज्ञान है।

64. जरूरी नहीं कि आदमी जहाँ रहता है वहीं मरे। बल्कि ऐसी कितनी घटनाएँ सामने आती रहती हैं कि आदमी किसी काम से दूर दराज़ के इलाके या विदेश में चला गया और वहीं उस की मृत्यु हो गई। और पहले उस ने सोचा भी नहीं था कि उस को फ़लों ज़रूरत से फ़लों सरज़मीन का सफ़र करना होगा और वहाँ उस की मौत हो जाएगी। वह अल्लाह ही है जो हर व्यक्ति की मौत के समय को भी जानता है और इस बात को भी कि उस को किस भूभाग में मरना है।

आयत का मंशा यह स्पष्ट करना है कि कितनी ही निकटस्थ चीज़ें हैं जिस से मनुष्यों को वास्ता पड़ता है परन्तु वह नहीं जानता कि कब क्या चीज़ अस्तित्व में आने वाली है और उस के इस न जानने का मतलब यह नहीं होता कि वह चीज़ अस्तित्व में आने वाली नहीं है। बल्कि उस की अनभिज्ञता के बावजूद ये सारी बातें अपने समय पर अस्तित्व में आती हैं। फिर यदि क्रियामत के घटि होने का समय मनुष्य को बतलाया नहीं गया है तो इस से क्रियामत के आने का खण्डन कहाँ होता है? वह अपने निर्धारित समय पर उसी तरह अस्तित्व में आएगी जिस तरह दूसरी चीज़ें इस के बावजूद कि आदमी उस से अनभिज्ञ है अस्तित्व में आ जाती हैं।

हदीस में इन पाँच चीज़ों को जिस का वर्णन इस आयत में हुआ है ग़ैब की कुंजियाँ कहा गया है। (बुख़ारी कितबुत्तप्सीर) अर्थात् ग़ैब के इल्म के ये दरवाज़े हैं जिन की कुंजियाँ अल्लाह ही के पास हैं।

३२. अस्सज्दा

नाम : आयत १५ में ईमान वालों का यह गुण बयान हुआ है कि जब उन्हें अल्लाह की आयतों के द्वारा याददेहानी और नसीहत की जाती है तो वे सज्दे में गिर पड़ते हैं। इसी मुनासिबत से इस सूरह का नाम अस्सज्दा है।

नाज़िल होने का समय : मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि मक्का के मध्यकाल (वस्ती दौर) में अवतरित हुई होगी।

केन्द्रीय विषय: तौहीद और आखिरत का मज़मून ऐसी शैली में बयान हुआ है जो संदेहों की परतों को हटाकर दिलों में विश्वास को बिठाता है। सूरह लुकमान में बुद्धि एवं विवेक से अपील थी तो इस सूरह में मन अन्तर्मन से अपील है।

कलाम की तरतीब: आयत १ से ३ भूमिका है जिन में स्पष्ट किया गया है कि यह किताब इस लिए रसूल पर अवतरित की गई है ताकि वह लोगों को सावधान करे।

आयत ४ से ९ में तौहीद को बयान करते हुए मनुष्य की पैदाइश का वर्णन हुआ है।

आयत १० से १४ में आखिरत का मज़मून है।

आयत १५ से १९ में ईमान वालों की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं का वर्णन करते हुए उन के बेहतरीन अन्जाम को बयान किया गया है।

आयत २० से २२ में अवज्ञाकारियों और झुठलाने वालों

के बुरे अन्जाम को प्रस्तुत किया गया है।

आयत २३ से २५ में स्पष्ट किया गया है कि लोगों की हिदायत के लिए अल्लाह की किताब का अवतरण कोई अनोखी बात नहीं है। इस से पहले मूसा अलैहिस्सलाम पर अल्लाह की किताब का अवतरण हुआ था और अल्लाह तआला बनी इस्राईल में से ऐसे महापुरुषों को पैदा करता रहा है जो उस ग्रंथ की हिदायत के अनुसार लोगों का मार्गदर्शन करते रहे।

आयत २६ और २७ में विनष्ट की गई जातियों के इतिहास से इबरत लेने तथा अल्लाह की महिमा और उस की खूबियत के दृश्यों को गौर से देखने की दअवत दी गई है।

आयत २८ से ३० सूरह की अन्तिम आयतें हैं जिन में इन्कार करने वालों के संदेहों और एतिराज़ आदि का जवाब देते हुए उन्हें सावधान किया गया है।

हदीस में आता है कि

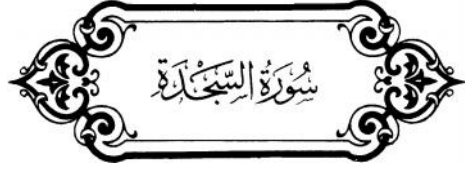
كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقْرَأُ فِي الْفَجْرِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ أَلَمْ

تَنْزِيلَ وَهَلْ أَتَى عَلَى الْإِنْسَانِ - (بخاری کتاب الجمعہ)

“नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमे के दिन फ़ज्र की नमाज़ में अलिफ़ लाम, मीम तन्ज़ील (सूरह सज्दा) और हल अता अलल इंसानि (सूरह दहर) पढ़ा करते थे।” (बुखारी किताबुल जुमुआ)

३२. सूरह अस्सजदा

आयतें : ३०



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़ लाम मीम ¹

الْم ①

2. यह किताब, इस में शक नहीं कि रब्बुल आलमीन की तरफ़ से नाज़िल हुई है।²

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ لَارَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ②

3. क्या ये कहते हैं कि इसे इस व्यक्ति ³ ने खुद गढ़ लिया है। नहीं, बल्कि यह सत्य है तुम्हारे रब की ओर से ताकि तुम ख़बरदार करो एक ऐसी क़ौम को जिस के पास तुम से पहले कोई ख़बरदार करने वाला नहीं आया।⁴ ताकि वे हिदायत पाएँ।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مِمَّا أَتَاهُمْ مِنْ نَذِيرٍ مِنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ③

4. अल्लाह ही है जिस ने आसमानों और ज़मीन और उन के बीच की चीज़ों को छः दिनों में पैदा किया।⁵ फिर वह अर्श पर बुलन्द हुआ।⁶ उस के सिवा न कोई तुम्हारा काम बनाने वाला है और न (उस के समक्ष) कोई सिफ़ारिश। फिर क्या तुम लोग समझते नहीं।⁷

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ مَا لَكُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا شَفِيعٍ ④
أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ④

5. वह आसमान से ज़मीन तक तदबीरे-अग्र (दुनिया के मामलों का संचालन) करता है फिर यह अग्र चढ़ता (लौटता) है उस के पास एक ऐसे दिन में जिस की तादाद तुम्हारी गणना के अनुसार एक हज़ार साल है।⁸

يُدَبِّرُ الْأُمُورَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ ⑤
كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ⑤

6. वह ग़ैब (छिपे) और हाज़िर (खुले) का जानने वाला और प्रभुत्वशाली एवं दयावान है।⁹

ذَٰلِكَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ⑥

7. उस ने जो चीज़ भी बनाई ¹⁰ ख़ूब बनाई और मनुष्य की सृष्टि की शुरूआत मिट्टी से की।¹¹

الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ⑦

8. फिर उस का वंश तुच्छ पानी के सत् से चलाया।¹²

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ⑧

1. हुरूफ़े-मुक्तआत (विभक्त अक्षरों) की व्याख्या के लिए देखिए सूरह बकर: नोट १ और सूरह युनुस नोट १ यह एक वास्तविकता है कि कुर्आन आवाज़ (स्वर) की दृष्टि से भी चमत्कार है। इस लिए ये अक्षर जब अलग अलग पढ़े जाते हैं तो वे एक खिंचाव पैदा कर के सुनने वाले को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इस सूरह में अलिफ़ का इशारा आयतों की तरफ़ है जिन का वर्णन आयत १५, २२, २४ और २६ में हुआ है।

लाम का इशारा लिक्कै-रब्बिहिम **لَقَاءِ رَبِّهِمْ** (अर्थात् अपने رب से मुलाकात-आयत १०) और लिक्का यौमिकुम हाज़ा **لَقَاءِ يَوْمِكُمْ هَذَا** (अर्थात् उस दिन की पेशी-आयत १४) और लिक्काइही **لَقَائِهِ** (अर्थात् उस का मिलना-आयत २३) की तरफ़ है। और मीम का इशारा **مُنْفِئُونَ** (अर्थात् हम सज़ा देने वाले हैं- आयत २२) की तरफ़ है।

2. अर्थात् इस किताब का सारे जहान के रब अल्लाह की ओर से उतरना शक और संदेह से परे है। यद्यपि कुर्आन के अल्लाह की ओर से उतरने के प्रमाण कुर्आन में कई जगहों पर बयान हुए हैं परन्तु बहुत सारी जगहों पर इस दावे को पूरी दृढ़ता के साथ प्रस्तुत किया गया है क्यों कि सूरज का निकल आना उस के सूरज होने का प्रमाण होता है। कुर्आन की एक एक आयत उस के अल्लाह के कलाम होने की दलील है और जो व्यक्ति भी निष्पक्ष भाव और नेक नीयत के साथ इस का अध्ययन करेगा उस को इस बात को जान लेने में कोई कठिनाई सामने न आएगी।

सूरह बकर: की शुरुआत में भी यह मज़मून गुज़र चुका कि इस के अल्लाह की किताब होने में संदेह नहीं है। देखिए सूरह बकर: नोट २

3. मुराद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।

4. व्याख्या के लिए देखिए सूरह क्रसस नोट ९१

5. इस की व्याख्या सूरह आराफ़ नोट ८२ में गुज़र चुकी

6. इस की व्याख्या सूरह आराफ़ नोट ८३ में गुज़र चुकी

7. अर्थात् क्या इतनी साफ़ और स्पष्ट बात भी तुम्हारी समझ में नहीं आती कि जिस हस्ती ने इस कायनात को अत्यन्त योजनाबद्ध नियमों पर पैदा किया है और इस के बाद उस का संचालन कर रहा है अर्थात् उन पर शासन कर रहा है, उस को छोड़कर दूसरा कौन है जो तुम्हारा काम बनाने वाला हो सकता है और वह कौन है जो उस के समक्ष तुम्हारा सिफ़ारशी बन कर खड़ा हो तथा तुम्हारी मुक्ति करा कर ही दम ले? ऐसी किसी हस्ती का इस कायनात में अस्तित्व ही नहीं है जो अल्लाह के सामने ऐसा ज़ोर और ऐसा बूता रखती हो।

8. अर्थात् अल्लाह तआला इस कायनात को योजनाबद्ध नियमों पर चला रहा है। ज़मीन (पृथ्वी) के लिए उस की एक एक योजना और एक एक स्कीम ज़मीनी दिन के हिसाब से हजार वर्षी होती है। जब कि उस के हिसाब से यह अवधि एक दिन की है जिस में यह योजना लागू हो कर अपनी पूर्ति को पहुँच जाती है। और फिर मामला उसी की तरफ़ पलटता है तथा उसी के समक्ष पेश होता है। यह आयत मुताशाबिहात में से है इस लिए किसी बहस में पड़े बग़ैर हमें इस संक्षिप्त ज्ञान पर संतोष करना चाहिए और जहाँ तक हजार वर्षी दिन की बात है यह कोई ऐसी बात नहीं है जो बुद्धि में समाने वाली न हो। तार्किक रूप से तो मनुष्य समझ सकता है कि जिस को हम चौबीस घंटे का दिन गिनते हैं वह एक दिन और रात पर आधारित होता है और सूरज के निकलने व डूब जाने के फलस्वरूप अस्तित्व में आता है। परन्तु सूरज की सतह पर जहाँ रात का अस्तित्व ही नहीं है दिन की पैमाइश के लिए यह पैमाना बेकार सिद्ध होगा और जहाँ तक आज के आधुनिक विज्ञान का सम्बन्ध है अन्तरिक्ष विज्ञान ने समय के बारे में हमारे ज्ञान में ज़बरदस्त वृद्धि की है। जैसे यह कि यदि ज़मीन पर सौर वर्ष (Solar Year) ३६५ दिन का होता है तो मंगल (Mars) पर इस हिसाब से ६८७ दिन का, बृहस्पति पर लगभग १२ वर्ष का, शनी (Saturn) पर २९ वर्ष का और प्लूटो (Pluto) पर २४८ वर्ष का। क्यों कि ये उपग्रह इस लम्बी अवधि में सूरज के चारों ओर अपना चक्र पूरा कर लेते हैं। दिन और साल का यह अन्तर कुर्आन के इस बयान की पुष्टि करता है कि अल्लाह के नज़दीक दिन का पैमाना और है तथा उस के अनुसार उस का दिन हमारे एक हजार वर्ष के बराबर होता है।

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह हज्ज नोट ८४

9. इशारा है इस बात की तरफ़ कि वह अपने पूरे ज्ञान, पूर्ण समर्थ्य अपनी विशाल दयालुता के साथ इस कायनात का संचालन कर रहा है।

10. अर्थात् जिस से जो काम लेना था उस के अनुकूल उस को शरीर प्रदान किया। उस की पैदा की हुई प्रत्येक वस्तु में संतुलन भी है और सलीका भी। और यह इस बात का द्योतक है कि इन तमाम चीज़ों का पैदा करने वाला अति सामर्थ्यवान भी है और सौन्दर्य का स्रोत भी है।

11. अर्थात् आदम को मिट्टी से पैदा किया।

12. अर्थात् मानव वंश का सिलसिला वीर्य जैसे तुच्छ पानी के सत से चलाया। यह सत आधुनिक भ्रूणविज्ञान (Embryology) की रौशनी में शुक्राणू (Spermatozon) है।

9. फिर उस को दुरुस्त किया ¹³ और उस में अपनी रूह फूँक दी। ¹⁴ और तुम्हारे लिए कान आँखें और दिल बनाए। ¹⁵ तुम लोग कम ही शुक्र करते हो। ¹⁶

ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ رُوحِهِ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ①

10. ये लोग कहते हैं जब हम ज़मीन में घुल मिल (विलीन हो) चुके होंगे तो क्या हम फिर नए सिरे से पैदा किये जाएंगे ? वास्तव में ये लोग अपने रब की मुलाक़ात ही के इन्कारी हैं। ¹⁷

وَقَالُوا إِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۚ بَلْ هُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ كَفِرُونَ ②

11. कहो तुम को मौत देता है मौत का वह फ़रिश्ता जो तुम पर नियुक्त है। फिर तुम अपने रब की ओर लौटाए जाओगे। ¹⁸

قُلْ يَتَوَكَّلْكُمْ مَلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ③

12. और यदि तुम उन (की उस समय की हालत) को देख लेते जब ये अपराधी अपने रब के सामने सर झुकाए होंगे। ऐ हमारे रब ! हम ने देख लिया और सुन लिया। हमें वापस भेज दे, हम नेक अमल करेंगे। हम यक़ीन रखने वाले हैं। ¹⁹

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ تَاكُسُوا نُفُسَهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ④

13. अगर हम चाहते तो प्रत्येक जान को इस की हिदायत दे देते ²⁰ परन्तु मेरी वह बात पूरी हो गई कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इन्सानों से भर दूँगा। ²¹

وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدًى وَلَكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ⑤

14. तो अब चखो मज़ा इस बात का कि तुम ने उस दिन की पेशी को भुला दिया था। हम ने भी तुम्हें भुला दिया है। ²² अब तुम अपने करतूतों के बदले हमेशा हमेशा की यातना का मज़ा चखो।

فَذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا إِنَّا نَسِينَاكُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ⑥

15. हमारी आयतों पर तो वही लोग ईमान लाते हैं जिन्हें इन के द्वारा जब याददेहानी (नसीहत) की जाती है तो वे सज्दे में गिर पड़ते हैं और अपने रब की प्रशंसा के साथ पाकी बयान (तस्बीह) करते हैं और अहं नहीं करते। ²³

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ⑦

16. उन की पीठें बिस्तरों से अलग रहती हैं। अपने रब को भय और आशा के साथ पुकारते हैं और जो कुछ हम ने प्रदान किया है उस में से खर्च करते हैं। ²⁴

تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا ۚ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ⑧

13. अर्थात् भ्रूण (Embroy) को पैदा करने के बाद उस के अंग दुरुस्त किये और उस को ठीक ठीक इन्सान का रूप दिया।

14. अर्थात् उस में रूह डाल कर ज़िन्दा इन्सान बनाया ! (रूह की अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिज़्र नोट २७)

भौतिक वादियों के अनुसार रूह की कोई हक़ीक़त नहीं है। मतलब यह कि मनुष्य मात्र शारीरिक अस्तित्व रखता है और जीवन मात्र गति का नाम है। इस गति के बन्द हो जाने ही का नाम मौत है। प्रश्न यह है कि यदि रूह का कोई अस्तित्व नहीं है तो वह क्या चीज़ है जिस के ग़ायब हो जाने से दिल का धड़कना बन्द हो जाता है और कहा जाता है कि आदमी मर गया। मानना पड़ेगा कि वह एक सूक्ष्म एवं अदृश्य वस्तु है जिस के निकल जाने से मनुष्य का शरीर एक मुर्दा लाश बन कर रह जाता है और इसी चीज़ का नाम रूह है जो वास्तव में अन्दर का इन्सान है। यदि अणु के अन्दर परमाणु शक्ति छिपी होती है तो कोई कारण नहीं कि इन्सान के अन्दर रूहानी शक्ति के होने का इन्कार किया जाये। फिर शरीर में तो पल पल परिवर्तन होते रहते हैं। नयी कोशिकाएँ (Cells) पुरानी कोशिकाओं की जगह ले लेती हैं यहाँ तक कि कुछ ही वर्षों में एक नया शरीर पुराने शरीर की जगह ले लेता है किन्तु अन्दर का इन्सान ज्यों का त्यों बाक़ी रहता है जिसे प्राण, नफ़्स (Self) या मैं कहा जाता है। और यही ख़ुदी उस में पहचान के भाव को उत्पन्न करती है और उस को दूसरों से थोड़ा अलग करती है। इस लिए रूह का इन्कार सच्चाई का इन्कार है।

15. अर्थात् सुनने, देखने और समझने की उत्तम क्षमताएँ प्रदान कीं ।

16. अर्थात् तुम को जो बेहतरीन अस्तित्व प्रदान किया गया है उस का एहसास बहुत कम तुम में पाया जाता है इस लिए कम ही ऐसा होता है कि तुम इस पर अपने पैदा करने वाले का शुक्र अदा करो ।

17. अर्थात् उन्हें मूल रूप से अल्लाह के समक्ष पेशी होने से ही इन्कार है। वे नहीं चाहते के जवाबदेही की धारणा को स्वीकार कर के अपने को अल्लाह के आदेशों का पाबन्द बनाएँ। इस लिए वे पेशी का इन्कार एतिराज़ के इस परदे में करते हैं कि मनुष्य का शरीर तो ज़मीन में विलीन हो कर मिट्टी हो जाता है। फिर वह क्रियामत के दिन किस तरह उठ खड़ा होगा ।

18. अर्थात् मरने पर मनुष्य का अस्तित्व समाप्त नहीं होता बल्कि उस का केवल शरीर समाप्त हो जाता है। मौत वास्तव में रूह की, जो अन्दर का आदमी है शरीर से जुदाई है। और यह कार्य अत्यन्त नियमबद्ध तरीके से अन्जाम पाता है। अल्लाह ने प्रत्येक व्यक्ति की रूह निकालने के लिए मौत का फ़रिश्ता

नियुक्त कर रखा है। वह निर्धारित समय पर जान को तन से अलग कर के पूरी तरह अपने क़ब्ज़े में ले लेता है। फिर अल्लाह का जो आदेश होता है उस के अनुसार वह उस के साथ मामला करता है। यहाँ तक कि क्रियामत के दिन उस रूह (प्राण) के लिए उस का शरीर दोबारा पैदा कर दिया जाएगा और वह शरीर सहित अपने रब के समक्ष जवाबदेही के लिए खड़ा होगा।

19. अर्थात् कुर्आन जिन वास्तविकताओं को स्वीकार करने का निमंत्रण देता है उस से आज तो ये लोग इन्कार कर रहे हैं परन्तु क्रियामत के दिन जब वे सब कुछ अपनी आँखों से देख लेंगे तो अपने पिछले रवैये पर बहुत पछताएँगे और अपने रब से प्रार्थना करेंगे कि उन्हें दुनिया में वापस भेज दिया जाए ताकि वे नेक बन जाएँ। आज वे जिस चीज़ का इन्कार कर रहे हैं कल वे इस पर विश्वास प्रकट करेंगे। क्रियामत के दिन अपराधियों का जो हाल होगा उस की यह एक झलक है जो इस आयत में प्रस्तुत की गई है ताकि लोग संभल कर चलें और आखिरत का इन्कार कर के अपने को अपराधियों में शामिल न कर लें।

20. अर्थात् वास्तविकताओं को प्रत्यक्ष रूप से देख लेने के बाद इम्तिहान का कोई मौक़ा बाक़ी नहीं रहता इस लिए अब दुनिया में तुम को वापस भेजने से क्या लाभ? यदि ऐसा ईमान वांछित होता जिस में तुम्हारी बुद्धि की कोई परीक्षा न होती तो अल्लाह प्रत्येक व्यक्ति को इस तरह हिदायत देता कि फिर उस से विमुखता बरतना उस के लिए संभव न होता।

21. मुराद शैतान के पीछे चलने वाले इन्सान और जिन्न हैं । अतः सूरह सौद में यह बात स्पष्ट रूप से बयान हुई है।

لَا مَلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبَعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ (ص: ८५)

अर्थ :- “ मैं तुझ से और जो इन में से तेरा अनुपालन करेंगे उन सब से जहन्नम को भर दूँगा। ” (सौद - ८५)

22. अल्लाह की तरफ़ से भुला दिये जाने का अर्थ यह है कि अल्लाह तआला उन पर कृपा दृष्टि नहीं डालेगा और उन को उस बुरी हालत में ही छोड़ देगा।

23. इन्कार करने वालों की तुलना में यह उन लोगों का हाल बयान हुआ है जो ख़ुदा के मामले में किसी प्रकार के अहं अथवा घमंड में लिप्त नहीं हैं और न उन्होंने अपने बन्दा होने के प्राकृतिक एहसास को मिटा दिया है। ऐसे लोगों को जब अल्लाह की आयतें सुना कर याददेहानी की जाती है तो उन के प्रभावित होने का हाल यह होता है कि वे अल्लाह के समक्ष सज्दे में गिर जाते हैं और उन की ज़बान पर प्रशंसा और गुणगान के शब्द जारी हो जाते हैं। ऐसे ही लोग आगे बढ़ कर पैग़म्बर की दअवत को स्वीकार कर लेते हैं और अल्लाह की आयतों पर ईमान लाते हैं।

यह सज्दा की आयत है अतः इस को पढ़ने पर सज्दा करना चाहिए ।

24. यह ईमान लाने वालों के उन गुणों का जिक्र है जो ईमान की बदौलत उन में पैदा हो जाते हैं। न उन की रातें अल्लाह की याद से खाली होती हैं और न दिन । यहाँ तक कि वे रातों को अपने बिस्तर छोड़ कर अल्लाह की इबादत में लीन हो जाते हैं। और उस से दुआएँ माँगने लगते हैं। उन की

ये दुआएँ गिड़गिड़ाने के साथ होती हैं। अर्थात् वे अल्लाह के अज़ाब से डरते हैं और उस की रहमत के उम्मीदवार होते हैं। इसी प्रकार उन का दिन बस रूपया कमाने के लिए नहीं होता बल्कि इस के साथ वे आखिरत की सफलता प्राप्ति का साधन भी जुटाते रहते हैं।

इस लिए वे अल्लाह के प्रदान किये हुए माल में से उस की राह में खर्च करते हैं।



और जिन्होंने अवज्ञा की उन का ठिकाना (जहन्नम की) आग है। जब कभी वे उस से निकलना चाहेंगे उस में ढकेल दिये जाएंगे और उन से कहा जाएगा चखो अब उस आग के अज़ाब का मज़ा जिस को तुम झुठलाते रहे हो। और हम उन्हें उस बड़े अज़ाब (यातना) से पहले दुनिया की यातना का मज़ा चखाएंगे ताकि वे रुजू करें। (अल-कुर्आन)

17. और कोई व्यक्ति नहीं जानता कि उन के कर्मों के बदले में उन की आँखों की ठंडक की क्या सामग्री उन से छिपा रखी गई है।²⁵

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ
أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾

18. फिर क्या वह व्यक्ति जो मोमिन है उस व्यक्ति की तरह हो जाएगा जो उल्लंघनकारी (फ़ासिक़) है।²⁶ दोनों कदापि बराबर नहीं हो सकते।²⁷

أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ فَاسِقًا لَّا يَسْتَوُونَ ﴿١٥﴾

19. जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किये उन के रहने के लिए बाग़ हैं।²⁸ अतिथि सत्कार स्वरूप²⁹ उन के कर्मों के सिले में।

أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ
جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

20. और जिन्होंने अवज्ञा की³⁰ उन का ठिकाना (जहन्नम की) आग है। जब कभी वे उस से निकलना चाहेंगे उस में ढकेल दिये जाएंगे और उन से कहा जाएगा चखो अब उस आग के अज़ाब का मज़ा जिस को तुम झुठलाते रहे हो।

وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا
مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي
كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿١٧﴾

21. और हम उन्हें उस बड़े अज़ाब (यातना) से पहले दुनिया की यातना का मज़ा चखाएंगे ताकि ये रुजू करें।³¹

وَلَنَذِقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ
الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٨﴾

22. और उस से बड़ा ज़ालिम कौन होगा जिस को उस के रब की आयतों के द्वारा याददेहानी (नसीहत) कराई जाए और वह उस से मुँह फेरे। ऐसे अपराधियों को हम अवश्य दण्ड देंगे।

وَمَن أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا
إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِبُونَ ﴿١٩﴾

23. हम ने मूसा को किताब प्रदान की थी अतः तुम इस के मिलने के बारे में शक में न पड़ो³² और हम ने इस को बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया था।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُن فِي مِرْيَةٍ
مِّن لِّقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ ﴿٢٠﴾

24. और हम ने उन में पेशवा पैदा किये जो हमारे आदेश से मार्ग दर्शन किया करते थे जब कि उन्होंने ने सब्र किया और हमारी आयतों पर विश्वास रखते थे।³³

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ إِمَّةً يَّهْدُونَ بِأَمْرِنَا لِمَا صَبَرُوا
وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٢١﴾

25. इस आयत में उक्त वर्णित गुणवान लोगों को जो खुशखबरी सुनाई गई है उस की कल्पना भी दिल को परितोष और आँखों को ठंडक पहुँचाने वाली है। कुर्आन में जन्नत का जो परिचय कराया गया है वह गोया एक झलक है जो शब्दों द्वारा दर्शाई गई है वरना जन्नत की नेमतों की इस दुनिया में कोई कल्पना नहीं की जा सकती। इस आयत की बेहतरीन व्याख्या वह है जो हदीस में बयान हुई है :-

قَالَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: أَعَدَدْتُ لِعِبَادِي
الصَّالِحِينَ مَا لَا عَيْنٌ رَأَتْ وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ وَلَا خَطَرَ
عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ. (بخاری کتاب التفسیر)

अर्थ :- “अल्लाह तआला फ़रमाता है, मैं ने अपने नेक बन्दों के लिए ऐसी नेमतें तैयार कर रखी हैं जिन को न किसी आँख ने देखा और न किसी कान ने सुना और न किसी इन्सान के दिल में उस का ख़्याल गुज़रा।” (बुख़ारी किताबुत्तफ़सीर)

26. फ़ासिक का अर्थ है अनुपालन से विमुख अर्थात् अवज्ञाकारी, व उल्लंघनकारी। यह शब्द यहाँ मोमिन के मुकाबले में आया है। इस लिए इस से तात्पर्य काफ़िर हैं जो अपने पूरे व्यक्तित्व से अल्लाह का नाफ़रमान (उल्लंघनकारी) होता है।

27. अर्थात् जब दोनों का कर्म समान नहीं है तो दोनों का अन्जाम समान कैसे हो सकता है।

28. अर्थात् ऐसे बाग़ जहाँ वे आश्रय करेंगे।

29. अर्थात् ये बाग़ उन को ऐसे सम्मान और स्वागत के साथ प्रदान किये जाएंगे कि जैसे ये अल्लाह के मेहमानों के लिए सत्कार सामग्री हैं।

30. मुराद काफ़िर हैं जो अल्लाह के नाफ़रमान बने रहे।

31. तात्पर्य सांसारिक विपदाएँ हैं जिन में काफ़िरों को इस लिए घेरा जाता है ताकि उन के करतूतों की सज़ा की एक किस्त दुनिया ही में मिल जाए और ताकि वे चौक जाएँ और अल्लाह की तरफ़ रुजू हों अर्थात् पलटें।

मौजूदा ज़माने में विपदाएँ और आफ़तें भी नए अन्दाज़ से नाज़िल हो रही हैं। रेल, बस और हवाई जहाज़ की घटनाएँ

अत्यंत हृदयविदारक होते हैं फिर बमों की घटनाओं और अग्निकांडों की बाहुल्यता है और मनुष्य को मनुष्य के ही हाथों अपने करतूतों का मज़ा चखना पड़ रहा है। किन्तु लोगों की कठोरता का हाल यह है कि ये ऐसे हृदयविदारक तथा इबरतनाक दृश्य देखते रहते हैं किन्तु अल्लाह की ओर नहीं पलटते।

32. संबोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माध्यम से तमाम लोगों से है और स्पष्ट करना यह अभिप्रेत है कि इतिहास में यह कोई पहली घटना नहीं है कि तुम को अल्लाह की तरफ़ से किताब मिली। बल्कि इस से पहले भी अल्लाह तआला पैग़म्बरों पर किताबें उतारता रहा है और कौन नहीं जानता कि इस से पूर्व मूसा को किताब प्रदान की गई थी। फिर कोई कारण नहीं कि कुर्आन के प्रदान किये जाने पर लोग संदेह में पड़ें। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह यूनुस आयत ९४ नोट १४५ और सूरह हूद आयत १७

33. अर्थात् मूसा को जो किताब प्रदान हुई थी वह बनी इस्राईल के लिए हिदायत का कारण थी और इसी हिदायत की बदौलत उन में ऐसे नेता लोग उठे जो अल्लाह के आदेशानुपालन में लोगों का सही मार्ग दर्शन करने वाले थे। अल्लाह ने उन को सुलझे और सुथरे नेतृत्व का पद इस लिए प्रदान किया था कि वे सत्य पर जमे रहें और अल्लाह की आयतों पर उन का पूरा विश्वास था। अर्थात् उन की आस्था दिखावा मात्र नहीं थी बल्कि विश्वास और दृढ़ता के साथ थी। ऐसे नेतृत्व को बनी इस्राईल के हिस्से में डाला गया जब कि उन्होंने सब्र, धैर्य, दृढ़ता और ईमान एवं विश्वास का सबूत दिया। इस ऐतिहासिक वास्तविकता को बयान करने से अभिप्रेत इस बात की तरफ़ इशारा करना है कि यदि तुम लोग कुर्आन के भारवाहक बन कर उठे तो अल्लाह तआला तुम्हें भी बुलन्दी प्रदान करेगा और तुम्हारे अन्दर अच्छे नेतृत्व को उभारेगा।

आज मुसलमान इस बात की शिकायत करते हैं कि उन्हें नेक और सुथरा नेतृत्व मयस्सर नहीं किन्तु समाज की दशा यह है कि उन्हें भावनाओं से खेलने वाले और जोशीले भाषण करने वाले लीडर पसंद हैं। वे न कुर्आन की रहनुमाई में चलने पर आमादा हैं और न वे नेक लोगों की बातों पर कान धरते हैं। ऐसी अवस्था में अच्छा नेतृत्व किस प्रकार उभर सकता है।

25. निस्संदेह तुम्हारा रब ही क्रियामत के दिन उन बातों का फैसला करेगा जिन में ये विभेद कर रहे हैं।³⁴

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾

26. क्या इन के लिए यह चीज़ हिदायत का कारण न हुई कि इन से पहले हम कितनी ही जातियों को विनष्ट कर चुके हैं जिन की बस्तियों में ये चलते फिरते हैं।³⁵ निस्संदेह इस में बड़ी निशानियाँ हैं। फिर क्या ये लोग सुनते नहीं ?³⁶

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسْكِنِهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٦﴾

27. क्या वे देखते नहीं कि हम पानी को चटियल ज़मीन की तरफ़ ले जाते हैं, फिर उस से खेती उगाते हैं जिन से इन के मवेशी भी (अपना) आहार खाते हैं और वे खुद भी।³⁷ फिर क्या इन की आँखें नहीं खुलती ?³⁸

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٧﴾

28. ये लोग कहते हैं यह फैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो?

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْفَتْحُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٨﴾

29. कहो फैसले के दिन ईमान लाना उन लोगों के लिए कुछ भी लाभदायक न होगा जिन्होंने कुफ़्र किया है और न उन को मोहलत दी जाएगी।³⁹

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِيمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٢٩﴾

30. तो इन से दामन बचाओ और इन्तिज़ार करो। ये भी इन्तिज़ार कर रहे हैं।⁴⁰

فَاعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ إِنَّهُمْ مُنْتَظَرُونَ ﴿٣٠﴾

34. ऊपर की आयत में बनी इस्राईल के उत्थान का वर्णन था और इस आयत में उन के पतन की दशा बयान हुई है। उन के पतन का मूल कारण अल्लाह की प्रदान की हुई जीवन प्रणाली और मौलिक बातों के सिलसिले में उन का विभेद में पड़ना और बेकार की बहसों में लिप्त होना है। इस मतभेदों का अन्तिम निर्णय अल्लाह की अदालत में होगा जिस के लिए क्रियामत का दिन सुनिश्चित है।

35. संबोधन अरब के बहुदेववादियों से है जिन का गुजरना आद, समूद, शुऐब और लूत की जातियों की विनष्ट बस्तियों की तरफ से होता था ।

36. अर्थात् इन घटनाओं में इबरात की जो बातें हैं इन को कुर्आन खोल खोल कर बयान कर रहा है किन्तु ये लोग कुछ सुनते समझते नहीं हैं।

37. अर्थात् क्या इस में अल्लाह की रबूबियत और उस की कुदरत की निशानियाँ इन्हें दिखाई नहीं देतीं और क्या यह प्रत्यक्षदर्शन उन में इस बात का विश्वास नहीं पैदा करता कि अल्लाह मुद्दे को ज़िन्दा करने पर पूरा सामर्थ्य रखता है।

38. अर्थात् ईमान वालों और काफ़िरों के बीच जिस फैसले की तुम खबर दे रहे हो और कह रहे हो कि इस फैसले में ईमान वाले ही कामयाब होंगे और काफ़िर जहन्नम में झोंक दिये जाएंगे तो यह बात कब सामने आएगी और क्रियामत की घटना कब घटेगी?

39. अर्थात् तुम्हें इस बहस में पड़ने के बजाय कि वह निर्णायक घड़ी कब आएगी इस बात की चिन्ता करनी चाहिए कि उस रोज़ तुम अपना बचाव किस तरह कर सकोगे क्योंकि वह घड़ी तो निश्चित रूप से आ कर रहेगी। उस समय यदि तुम ईमान लाना चाहो तो चूँकि परीक्षा का समय गुजर चुका होगा इस लिए उस समय तुम्हारा ईमान लाना बिल्कुल बेफ़ायदा होगा। और जो मोहलत तुम्हें आज मिल रही है वह दोबारा मिलने वाली नहीं।

40. अर्थात् यदि वे इस मज़बूत तर्क प्रस्तुत करने वाली और विश्वास पैदा करने वाली इन आयतों के बावजूद ईमान लाने के लिए आमादा नहीं हैं तो उन को उन के हाल पर छोड़ दो और उस घड़ी की प्रतीक्षा करो जब अल्लाह तआला अपने निर्णय को लागू करेगा। इन लोगों को भी तो इसी का इन्तिज़ार है।



३३. अल्-अहज़ाब

नाम : आयत २० में अहज़ाब अर्थात् उन गिरोहों का वर्णन हुआ है जिन्होंने ईमान वालों के विरुद्ध एक हो कर मदीना पर हमला किया था। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अहज़ाब है।

नाज़िल होने का समय: मदीना है और अहज़ाब की जंग के बाद नाज़िल हुई जो शव्वाल सन ५ हिजरी में पेश आया।

केन्द्रीय विषय: रिसालत का पद, उस की ज़िम्मेदारियाँ, उस के तक्राज़े और रसूल के साथ ईमान वालों का रवैया घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में।

कलाम की तरतीब : आयत १ से ३ भूमिका पर आधारित आयतें हैं जिन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को काफ़िरों और मुनाफ़िकों (पाखण्डियों) की बातों में न आने और अल्लाह पर पूरा भरोसा करते हुए अल्लाह की प्रकाशना का अनुपालन करने का आदेश दिया गया है। आयत ४ से ८ में मुँह बोले बेटे (दत्तक पुत्र) की प्रथा के सुधार पर ज़ोर देते हुए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ईमान वालों के सम्बन्ध को तथा आप की पत्नियों के दर्जे को स्पष्ट किया गया है। साथ ही उस प्रतिज्ञा की याददेहानी भी कराई गई है जो प्रत्येक नबी से अल्लाह के दीन की सच्चे मन से अनुपालन के सिलसिले में लिया गया था। आयत ९ से २७ में अहज़ाब की जंग और बनी कुरैज़ा की जंग पर टिप्पणी करते हुए इस बात को उजागर किया गया है कि इन नाज़ुक हालात में किस तरह अल्लाह की मदद सामने आई। और यह इस बात का सबूत है कि ईमान वालों का काम बनाने के लिए अल्लाह काफ़ी है। अतः उन को चाहिए कि किसी की परवाह किये बग़ैर उसी के भरोसे पर अपनी दीनी ज़िम्मेदारियों को अदा करें।

आयत २८ से ३४ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों को संबोधित कर के उन पर उन का अपना स्थान और इस मुनासिबत से उन की ज़िम्मेदारियाँ स्पष्ट की गई हैं।

आयत ३५ से ४० में मुँह बोले बेटे (दत्तक पुत्र) की पत्नी से विवाह न करने की धारणा को ग़लत ठहराने का एलान किया गया ! और सुधार हेतु इस आदेश को व्यवहारिक रूप से लागू करने के सिलसिले में हज़रत ज़ैनब से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विवाह की घटना को प्रस्तुत किया गया।

आयत ४१ से ४४ में ईमान वालों को अल्लाह के ज़िक्र व उस की चर्चा की हिदायत करते हुए दयालुता और भारी इनाम की खुशख़बरी सुनाई गई है।

आयत ४५ से ४८ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सम्बोधन करते हुए आप के नबी होने की शान को स्पष्ट किया गया है।

आयत ४९ से ५२ में पहले तलाक़ का एक मसला बयान हुआ है उस के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आप की पत्नियों से सम्बन्धित विशेष आदेश दिए गए हैं।

आयत ५३ से ६२ में परदे के आदेश दिए गए हैं।

आयत ६३ से ६८ में क्रियामत और आख़िरत का वर्णन है।

आयत ६९ से ७३ में ईमान वालों को अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास दिलाते हुए मुनाफ़िकों (पाखण्डियों) को चेतावनी दी गई है।

कुर्आन में शक पैदा करने वाली रिवायतें :- रिवायतों में कुछ रिवायतें ऐसी भी हैं जो ये बातें सामने लाती हैं कि सूरह अहज़ाब में दो सौ आयतें थी किन्तु जब हज़रत उस्मान रज़ि. ने कुर्आन लिखा तो वे इतनी ही आयतें लिख सके जितनी कि इस समय कुर्आन में मौजूद हैं। इस रिवायत ही को उद्धृत कर के अल्लामा आलूसी ने लिखा है कि इस से मालूम होता है कि कुर्आन का कुछ हिस्सा नष्ट हो गया है। परन्तु ऐसी रिवायतें गढ़ी हुई हो सकती हैं। वास्तव में हर वह रिवायत जिस से यह स्पष्ट होता हो कि कुर्आन का कुछ भाग नष्ट हो गया है या तो गढ़ी हुई है या फिर उस का कुछ और ही अर्थ है। (तफ़सीर रूहुल मआनी जिल्द ७ पृष्ठ १४२)

सच्चाई यह है कि जब मुसलमानों में विभिन्न वर्ग उत्पन्न हो गए तो उन्होंने अपनी धारणाओं और अपने मसलक के पक्ष में बहुत सारी रिवायतें गढ़ लीं और उन को इस प्रकार सच के साथ मिला दिया कि सही और ग़लत में अन्तर करना दुश्वार हो गया। विशेष रूप से हज़रत अली रज़ि. की शान में आतिशयोक्ति करने वालों और इमामत की धारणा पैदा करने वालों ने इतनी अधिकता के साथ रिवायतें गढ़ी कि दीन की बुनियादें हिल गईं और यह बताने की कोशिश की गई कि कुर्आन की कुछ आयतें ग़ायब कर दी गई हैं या उस के शब्द ग़ायब कर दिये गए हैं। जैसे सूरह अहज़ाब की आयत ७१

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا.

अर्थ :- “और जो अल्लाह और रसूल का अनुपालन करेगा वह बड़ी सफलता पायेगा।” के बारे में शीओ की महत्वपूर्ण

पुस्तक “उसूलुल काफ़ी” में अबू बसीर की रिवायत है कि हज़रत जाफ़र सादिक ने फ़रमाया यह आयत इस तरह नाज़िल हुई थी ।

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ (فِي وَلَايَةِ عَلِيٍّ وَوَلَايَةِ
الْإِمَامَةِ مِنْ بَعْدِهِ) فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا.

अर्थात् :- “जो कोई अली और उन के बाद के इमामों की विलायत के बारे में अल्लाह और उस के रसूल का अनुपालन करेगा, बड़ी सफलता प्राप्त करेगा ।” (उसूलुल काफ़ी जिल्द १ पृष्ठ ३४२ अल मकतबुल इस्लामिया तेहरान)

इसी प्रकार उसूलुल काफ़ी में हज़रत जाफ़र सादिक से रिवायत है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह आयत ले कर नाज़िल हुए थे

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ آمَنُوا بِمَا نَزَّلْنَا (فِي عَلِيٍّ) نُورًا مبینًا

अर्थात् :- “ऐ अहले-किताब, ईमान लाओ उस पर जो हम ने अली के बारे में नाज़िल की है जो नूरे मुबीन हैं।” (उसूलुल काफ़ी जिल्द १ पृष्ठ ३४५)

लेकिन यह आयत कुर्आन में कहीं नहीं है। कुछ रिवायतें ऐसी भी हैं जिन में कुर्आन के विभेद के नाम से कुछ आयतों में कुछ शब्दों की वृद्धि कर दी गई है जैसे यह कि सूरह अहज़ाब की आयत ६ में

وَأَرْوَاجُهُ أُمَمًا تَهُمُّ

(पैगम्बर की पत्नियाँ मुसलमानों की माएँ हैं) के बाद

وَهُوَ أَبٌ لَهُمْ

(और पैगम्बर मुसलमानों के बाप हैं) की वृद्धि कर दी गई है और यह भी दावा किया गया है कि कुर्आन में व्यभिचारी की सज़ा के लिए रजम की आयत (الشَّيْخُ وَالشَّيْخَةُ) थी किन्तु बाद में इस की तिलावत निरस्त कर दी गई। (देखिए तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द ३ पृष्ठ ४६५) या यह कि हज़रत अबदुल्लाह बिन मसऊद के नुस्खे में आखिरी दो सूरतें अर्थात् मुअौव्विज़तैन मौजूद ही नहीं थीं। इस प्रकार की रिवायतें गढ़ कर बहुत बड़े फितने का सामान किया गया, और अफ़सोस है कि तफ़सीरों में इस प्रकार की रिवायतों ने जगह पा ली । हालाँकि ये रिवायतें

अपने मूल भाव ही के कारण रद्द करने के योग्य थीं क्योंकि कुर्आन करीम ने अपनी रक्षा की स्वयं ज़मानत दी है।

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ (حجر- ९)

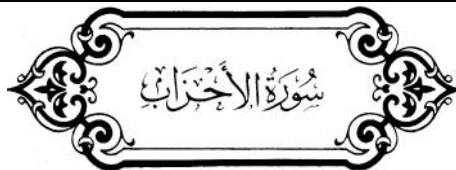
अर्थ :- “निस्संदेह यह याददेहानी वाला कुर्आन हम ही ने नाज़िल किया है और हम ही इस की सुरक्षा करने वाले हैं।” (सूरह हिज़्र - ९)

और यह बात क्रम और ठोस तरीके से साबित है तथा इस पर उम्मत में पूर्ण सहमति है कि जो नुस्खा आज हमारे पास मौजूद है वह पूरा कुर्आन है और इस में एक बिन्दु का भी अन्तर नहीं हुआ है। रह गया पढ़ने का अन्तर तो इस की गुन्जाइश उसी हद तक हो सकती है जिस हद तक मतलब में अन्तर न आता हो। जैसे सूरह गाशियः में शब्द मुसैतिर को सौद की आवाज़ के साथ पढ़ा जाये तो भी सही है और सीन की आवाज़ से पढ़ा जाये तो वह भी सही है। परन्तु जो रिवायतें पढ़ने के ऐसे अन्तर के बारे में कुछ बयान देती हैं जिन से मतलब में अन्तर हो जाता है वे कदापि मान्य एवं स्वीकरणीय नहीं हो सकतीं। इमाम राजी लिखते हैं :-

“शाज़ क़िर्अत मुतवातिर क़िर्अत को बातिल नहीं कर सकती इस लिए हम अपने मसलक के पक्ष में मुतवातिर क़िर्अत पर विश्वास करते हैं और इस लिए भी कि जो क़िर्अत शाज़ हो वह हमारे नज़दीक हुज्जत नहीं है क्योंकि हमारे नज़दीक उस की हैसियत हरगिज़ कुर्आन की नहीं है। अगर वह क़िर्अत कुर्आन की होती तो ज़रूर मुतवातिर होती । और अगर हम इस बात की गुन्जाइश निकाल लें कि कुर्आन का एक भाग तवातुर (क्रम) के साथ हम तक नहीं आया है तो हम शीओं और अनीश्वरवादियों के लिए कुर्आन में आरोप लगाने का दरवाज़ा खोलेंगे और कहा जा सकेगा कि कुर्आन में ऐसी आयतें थीं जो अली इब्ने अबी तालिब रज़ी. की इमामत का नस्सी (स्पष्ट) सबूत थीं लेकिन वे हम तक नहीं पहुँची और यह भी कहा जा सकेगा कि उस में बहुत से शरीअत के आदेशों को निरस्त करने वाली आयतें भी थीं लेकिन वे भी हम तक नहीं पहुँचीं मगर यह इस बिना पर ग़लत है कि अगर यह हिस्सा कुर्आन का हिस्सा होता तो ज़रूर मुतवातिर होता। और जब यह मुतवातिर नहीं है तो निश्चित रूप से कुर्आन नहीं है। अतः सिद्ध हुआ कि शाज़ क़िर्अत हरगिज़ हुज्जत नहीं।” (अत्तफ़सीरूल कबीर जिल्द ११ पृष्ठ २२७)

३३. सूरह अल-अहज़ाब

आयतें : ७३



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ऐ नबी ¹ अल्लाह से डरो और काफ़िरो और मुनाफ़िकों की बात न मानो।² निस्संदेह अल्लाह इल्म वाला, हिकमत वाला है।³

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ①

2. पैरवी करो उस वहय की जो तुम्हारे रब की ओर से तुम पर की जा रही है ⁴ तुम लोग जो कुछ करते हो उस से अल्लाह बाख़बर है।

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ②

3. और अल्लाह पर भरोसा करो ⁵ वह काम बनाने के लिए काफ़ी है।

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ③

4. अल्लाह ने किसी व्यक्ति के सीने में दो दिल नहीं रखे ⁶ और न उस ने तुम्हारी उन पत्नियों को जिन से तुम ज़िहार करते हो (अर्थात् यह कहते हो कि वे तुम्हारे लिए माँ की पीठ हैं) तुम्हारी माएँ बनाया है।⁷ और न ही उस ने तुम्हारे मुँह बोले बेटों को तुम्हारे बेटे बना दिया है।⁸ यह तुम्हारे अपने मुँह की बातें हैं।⁹ मगर अल्लाह हक़ बात कहता है और वही सही राह की तरफ़ रहनुमाई करता है।¹⁰

مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهِ ۚ وَمَا جَعَلَ أَزْوَاجَكُمُ اللَّائِي تُظَاهَرُونَ مِنْهِنَّ أُمَّهَاتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَاءَكُمْ أَبْنَاءَكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِأَفْوَاهِكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ ④

5. उन को उन के बापों के सम्बन्ध से पुकारो।¹¹ यह अल्लाह के नज़्दीक न्याय संगत बात है ¹² और अगर तुम को मालूम न हो कि उन के बाप कौन हैं तो वे तुम्हारे दीनी भाई और साथी हैं।¹³ इस बारें में जो ग़लती तुम से हुई उस के लिए तुम पर कोई पकड़ नहीं अलबत्ता इस बात पर ज़रूर पकड़ होगी जिस का इरादा तुम ने दिल से किया ¹⁴ अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।

أَدْعُوهُمْ لِأَبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ ۚ فَإِنْ لَّمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ ۚ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ ۚ وَلَكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ⑤

1. नबी का मतलब है अल्लाह के बारे में खबर देने वाला (लिसानुलअरब जिल्द १ पृष्ठ १६२) और कुआन की परिभाषा में इस से वह व्यक्ति तात्पर्य है जिस पर अल्लाह की ओर से प्रकाशना (वहय) आती हो और वह इस विशिष्ट ज्ञान स्रोत के आधार पर लोगों को अल्लाह के बारे में खबरें देता हो और उस के आदेश सुनाता हो।

यहाँ सम्बोधन कुआन के पैगम्बर हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है। कुआन में आप को आप के नाम के साथ कहीं भी संबोधित नहीं किया गया है बल्कि नबी कह कर सम्बोधित किया गया है। अर्थात् या मुहम्मद नहीं कहा गया है बल्कि “या अय्युहन्नबिय्यु” **يا ايها النبي** कह कर सम्बोधित किया गया जिस से नुबुव्वत की शान भी प्रकट होती है और आप के बारे में खास आदाब का लिहाज़ रखने की हिदायत भी मिलती है क्योंकि आप वक्त के नबी हैं।

2. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह ताकीदी हुक्म एक ऐसे अवसर पर दिया गया जब कि परिवारिक जीवन (Family Life) से सम्बन्धित एक मसले में सुधारात्मक क़दम उठाना आवश्यक था, और यह इस बात की दलील है कि शरीअत आप की मन गढ़ंत नहीं है बल्कि अल्लाह के आदेशों पर आधारित है जिस की पाबन्दी स्वयं आप पर भी ज़रूरी थी।

आयत का मतलब यह है कि किसी शरअी आदेश के अनुपालन में जब कि वह प्रचालित रीति के विरुद्ध हो कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए और न काफ़िरों और मुनाफ़िकों के बुरा भला कहने, खिल्ली उड़ाने तथा उन की ओर से किये जाने वाले दुष्प्रचार की कोई परवाह करना चाहिए। बल्कि अल्लाह का ऐसा डर और ऐसा लगाव अपनाना चाहिए कि ऐसी समस्त बातें बेवज़न सी लगे।

3. अल्लाह सर्वज्ञ एवं तत्वदर्शी है इस लिए उस के उतारे हुए समस्त शरअी आदेश शुरू से आख़िर तक ज्ञान और तत्व परिपूर्ण हैं।

4. अल्लाह की वहय (प्रकाशना) के अनुपालन का आदेश नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी दिया गया है और आप के माध्यम से समस्त लोगों को भी। इस वहय ने जो आप पर उतरी; मानव जीवन के समस्त पहलुओं को अपने परिधि क्षेत्र में ले लिया है। इस लिए अनुपालन का अर्थ खास धार्मिक मामलों ही में अनुपालन करना नहीं है बल्कि तमाम मामलों में अनुपालन करना है। इस उसूली हिदायत को ध्यान में रखते हुए ज़िन्दगी को सेक्यूलर और नान सेक्यूलर खानों में विभक्त करने की कोई गुनजाइश नहीं रहती।

5. अर्थात् अल्लाह के आदेशों पर चलने के कारण जिन

अवरोधों एवं विरोध का तुम्हें सामना करना पड़े उन से ज़रा भी प्रभावित मत हो बल्कि अल्लाह पर भरोसा रखो कि वही तुम्हारे काम बनाएगा और तुम्हें सफल करेगा।

अल्लाह पर पूर्ण रूप से आश्रय यह परिणाम है अच्छी धारणा का। यह हृदय को विश्वास से भर देता है और सत्य पर जमा देता है।

6. अर्थात् अल्लाह तआला ने मनुष्य की जैसी संरचना की है उस के लिहाज़ से उस के अन्दर एक ही हस्ती काम कर रही है। अतः एक औरत अपनी औलाद की तो माँ है लेकिन उस के पति द्वारा उस को माँ कह देने से वह उस की माँ नहीं बन जाती। इसी प्रकार एक व्यक्ति की औलाद वह है जो उस के अपने खून से है लेकिन किसी को बेटा भर कह देने से न वह उस का बाप बन जाता है और न मुँह बोला बेटा, सगा बेटा।

इस के अलावा इस वाक्य में यह अर्थ भी निहित है कि प्रत्येक व्यक्ति में उस की अपनी संरचना की दृष्टि से इरादा और संकल्प रखने वाली एक ही हस्ती एक ही प्राण काम कर रहा है अतः वह या तो ईमान वाला हो सकता है या काफ़िर। ऐसा नहीं हो सकता कि वह ईमान वाला भी हो और काफ़िर भी। अतः यदि कोई व्यक्ति अपने को ईमान वाला बताता है और अपने दिल में कुफ़र को छिपाये हुए है तो वह वास्तव में काफ़िर है और अपने अन्दर विरोधामास एवं विपरीतभाव रखने के कारण मुनाफ़िक कहलाये जाने का पात्र है।

7. अज्ञानता काल में जब कोई व्यक्ति अपनी पत्नी से कहता कि तू मेरे लिए माँ की पीठ की तरह है तो वह उस के लिए हराम हो जाती। फिर वह उस से न पति पत्नी का सम्बन्ध रख सकता था और न इस को तलाक़ ही समझा जाता था। कुआन ने जाहिलिय्यत अर्थात् अज्ञानता काल की इस कुप्रथा का सुधार किया जिस की तरफ़ इस आयत में इशारा किया गया है और इस के बारे में विस्तृत आदेश सूरह मुजादलह में आया है।

यहाँ यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि किसी व्यक्ति द्वारा अपनी पत्नी को माँ कह देने से वह माँ नहीं बन जाती। क्योंकि यह बात सत्य के विपरीत है इस लिए ऐसी बात कहने से परहेज़ करना चाहिए।

8. अज्ञानता काल में मुँह बोले बेटों (दत्तक पुत्रों) को सगे बेटों का दर्ज दे दिया गया था। कोई व्यक्ति अपने मुँह बोले बेटे की पत्नी से उस के तलाक़ देने के बाद निकाह नहीं कर सकता था और मुँह बोला बेटा उस का वारिस होता था। मगर चूँकि किसी को बेटा कह देने से वह वास्तव में बेटा नहीं बन जाता इस लिए सगे बेटे से सम्बन्धित जितने शरअी आदेश हैं वे उस पर (दत्तक पुत्र पर) लागू नहीं होते। ये आयतें इसी कुप्रथा के

सुधार के सिलसिले में उतरी और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुधार के लिए व्यवहारिक रूप से उदाहरण भी प्रस्तुत कर दिया जिस की तफ़सील आगे आ रही है।

ध्यान रहे कि इस्लाम इस बात से नहीं रोकता कि कोई मुसलमान अपने घर में किसी यतीम लावारिस या असहाय बच्चे की परवरिश करे बल्कि वह इसे बहुत बड़ी नेकी कहता है। परन्तु वह इस बात की अनुमति नहीं देता कि उस को सगा बेटा समझा जाए इस सिलसिले में उस ने निम्नलिखित पाबन्दियाँ लगाई हैं।

A) लड़के को उस के बाप के नाम से पुकारा जाये। अर्थात् उस की पहचान उस के सगे बाप से हो।

B) उस की पत्नी परवरिश करने वाले की बहू नहीं हो जाती कि उस के तलाक़ देने या मर जाने के बाद उस के साथ उस का विवाह न हो सकता हो।

C) वह अपने परवरिश करने वाले का वारिस नहीं हो सकता। अलबत्ता परवरिश करने वाला यदि उस के लिए कुछ वसीयत करना चाहे तो वसीयत के इस्लामी क़ानून के अनुसार एक तिहाई की हद तक वसीयत कर सकता है।

D) वह घर की स्त्रियों के लिए नामहरम होगा। और उस के बालिग़ हो जाने के बाद उन को (दत्तक पुत्र) के मामले में भी परदे की उन पाबन्दियों का लिहाज़ करना होगा जो नामहरमों के सिलसिले में उन पर शरीअत ने लागू की हैं।

मौजूदा दौर में धर्म निरपेक्ष राज्य कुछ इस तरह से क़ानून बनाते हैं कि दत्तक पुत्र को सगे बेटे का दर्जा हासिल हो जाए और उस को असहाय और बेबस बच्चों के साथ हमदर्दी और उन के पालन पोषण की समस्या के समाधान के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। किन्तु इस से घरेलू जीवन में जो अनियमितताएँ पैदा हो जाती हैं और ख़ूनी रिश्तेदारों का जो हक़ मारा जाता है, उस को बिल्कुल नज़रंदाज़ कर दिया जाता है जब कि असहाय और बेबस बच्चों के साथ हमदर्दी और उन के पालन पोषण की समस्या को हल करने की अन्य उचित राहें अपनाई जा सकती हैं। और ये वही राहें हो सकती हैं जो शरीअत की सीमा के बाहर न हों।

9. अर्थात् ऐसी बातों को शरीअत का दर्जा हासिल नहीं हो सकता।

10. अर्थात् अल्लाह ही की रहनुमाई सच्ची रहनुमाई है और उस के मुक़ाबले में किसी भी प्रथा रीति और क़ानून की रहनुमाई ग़लत है।

11. अर्थात् मुँह बोले बेटे को उस व्यक्ति से संबद्ध कर के न पुकारो जिस ने उस की परवरिश की है बल्कि उस को सगे बाप से संबद्ध कर के पुकारो। इस से सम्बन्धों का भी पता चल जाएगा और प्रत्येक दृष्टिकोण से यह बात न्यायसंगत है। हज़रत

ज़ैद की नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बेटे की तरह परवरिश की थी इस लिए उन्हें लोग ज़ैद बिन मुहम्मद कह कर पुकारते थे किन्तु इस आयत के अवतरण के बाद उन्हें ज़ैद बिन हारिसा कह कर पुकारने लगे।

इस आयत से एक यह बात भी मालूम हुई कि आदमी को अपनी पहचान बाप के नाम से प्रकट करनी चाहिए अर्थात् फ़लाँ पुत्र फ़लाँ या फ़लाँ पुत्री फ़लाँ और हदीस में आता है कि क्रियामत के दिन फ़लाँ पुत्र फ़लाँ कह कर ही पुकार जायेगा इस सिलसिले में एक मात्र अपवाद हज़रत ईसा अलैहिसस्सलाम का है। उन्हें ईसा पुत्र मरयम इस लिए कहा गया है कि वह बिना बाप के पैदा हुए थे।

भारत में औरतें शादी के बाद अपने को पति से जोड़कर अपना नाम फ़लाँ पत्नी फ़लाँ कहलाती हैं जब कि पति का रिश्ता ज़रूरी नहीं कि स्थायी हो किन्तु बाप का रिश्ता स्थायी होता है इस लिए इस्लामी तरीक़ा यह है कि औरतें अपना नाम अपने बाप के नाम से पहचनवाएँ अर्थात् फ़लाँ पुत्री फ़लाँ। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों के नाम भी उन के बापों से ही जोड़े जाते हैं अर्थात् हज़रत आइशा बिनत अबू बकर और हज़रत हफ़सा बिनत उमर कहा जाता है जब कि हज़रत फ़ातिमा को फ़ातिमा बिनत मुहम्मद।

12. अर्थात् यह सच्ची बात भी है और न्यायसंगत भी और इस से उन के सगे बापों की हक़ तल्फ़ी भी नहीं होती।

13. अर्थात् यदि किसी का बाप मालूम न हो तो उसे किसी और का बेटा कह कर न पुकारो बल्कि उन के मामले में दीनी भाईचारगी और दोस्ती के रिश्ते की अभिव्यक्ति करो।

इस्लाम बाप का नाम ग़लत बताने पर कड़ी पकड़ करता है। हदीस में आता है :-

مَنْ ادَّعَى إِلَى غَيْرِ أَبِيهِ وَهُوَ يَعْلَمُ إِنَّهُ غَيْرُ أَبِيهِ فَالْجَنَّةُ عَلَيْهِ حَرَامٌ - (مسلم کتاب الایمان)

अर्थ :- “जिस ने अपने को अपने बाप के सिवा किसी और से मंसूब किया हालाँकि वह जानता है कि वह उस का बाप नहीं है तो उस पर जन्नत हराम है।” (मुस्लिम किताबुल ईमान।)

लेकिन साथ ही अज्ञात बापों की सन्तानों को अपमानित करने या उन्हें तिरस्कृत समझने से भी रोकता है और उन्हें अपना दीनी भाई एवं साथी कहने को उत्प्रेरित करता है।

14. अनजाने में किसी पूर्व इरादे के बग़ैर तुम से जो ग़लतियाँ हो गई उन पर कोई पकड़ नहीं होगी परन्तु यदि तुम ने जान बूझ कर ग़लत बयानी से काम लिया तो इस पर अवश्य पकड़ होगी।

नबी मोमिनों के लिए उन की अपनी जान से अधिक का हकदार है और उस की पत्नियाँ उन की माएँ हैं। और अल्लाह के क़ानून में खून के रिश्तेदार ईमानवालों और हिजरत करने वालों के मुकाबले में एक दूसरे के अधिक हकदार हैं। यह और बात है कि तुम अपने साथियों के साथ कोई भलाई करो। यह हुक्म अल्लाह की किताब में लिखा हुआ है। (अल-कुर्आन)

6. नबी मोमिनों के लिए उन की अपनी जान से अधिक का हक़दार है ¹⁵ और उस की पत्नियाँ उन की माएँ हैं। ¹⁶ और अल्लाह के क़ानून में खून के रिश्तेदार ईमानवालों और हिजरत करने वालों के मुकाबले में एक दूसरे के अधिक हक़दार हैं। यह और बात है कि तुम अपने साथियों के साथ कोई भलाई करो। ¹⁷ यह हुक्म अल्लाह की किताब में लिखा हुआ है। ¹⁸

الْكِبَىٰ أُولَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَنْ تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَٰكُمْ مَعْرُوفًا كَانَ ذَلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ⑤

7. और (याद करो) जब हम ने नबियों से प्रतिज्ञा ली थी। (ऐ नबी !) तुम से भी और नूह इब्राहीम, मूसा, और ईसा इब्ने मरयम से भी। सब से हम ने दढ़ प्रतिज्ञा ली थी। ¹⁹

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ⑥

8. ताकि वह सच्चे लोगों से उन की सच्चाई के बारे में पूछे ²⁰ और काफ़िरों के लिए तो उस ने कष्टदायक यातना तैयार कर रखी है। ²¹

لِيَسْأَلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صٰدِقِهِمْ وَاعِدَ الْكَافِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ⑦

9. ऐ ईमान वालों ! अल्लाह के उस एहसान को याद करो जो उस ने तुम पर किया है । जब लश्कर तुम पर चढ़ आए तो हम ने उन पर आँधी भेजी और ऐसी फ़ौज़ें जो तुम को दिखाई नहीं देती थीं ²² और जो कुछ तुम कर रहे थे अल्लाह उस को देख रहा था।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ⑧

10. जब वे तुम पर ऊपर की तरफ़ से भी चढ़ आए और तुम्हारे नीचे की तरफ़ से भी। ²³ जब निगाहें फिर गई और कलेजे मुँह को आ लगे। ²⁴ और तुम लोग अल्लाह के बारे में तरह तरह के गुमान करने लगे।

إِذْ جَاءَ وَكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَنَظُّونَ بِاللَّهُ الظُّنُونًا ⑩

11. उस समय ईमान वाले आजमाइश में डाल दिये गए और बुरी तरह हिला मारे गये ²⁵।

هٰذَا لِكِ ابْتِلَآءِ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زِلْزَالًا شَدِيدًا ⑪

12. जब मुनाफ़िक़ीन (पाखण्डी) और वे लोग जिन के दिलों में रोग है ²⁶ कह रहे थे कि अल्लाह और उस के रसूल ने जो वादे हम से किये थे वे मात्र फ़रेब थे। ²⁷

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ⑫

15. अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सम्बन्ध ईमान वालों के साथ सर्वाधिक श्रेष्ठ है, इस कारण भी कि यह ईमान का तक्राज़ा है और इस कारण से भी कि आप उन की हस्ती से अधिक उन के शुभचिन्तक हैं। अतः ईमान वालों को चाहिए कि वे अपने ऊपर आप को सर्वोपरि रखें, आप को अपनी जान से अधिक प्रिय रखें, अपनी जानों पर खेलकर आप की हिफ़ाज़त करें और आप के समस्त फ़ैसलों को बिना किसी ना नुकुर के स्वीकार करें। हदीस में आता है :-

لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّىٰ أَكُونَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ وَالِدِهِ
وَوَلَدِهِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ. (بخاری کتاب الایمان)

अर्थ :- “तुम में से कोई व्यक्ति मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के लिए उस के पिता उस की संतान और तमाम लोगों से अधिक प्रिय न हो जाऊँ”। (बुखारी किताबुल ईमान)

16. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ईमान वालों के सम्बन्ध की जो विशेषता है उस का यही तक्राज़ा था कि आप की पत्नियाँ ईमान वालों के लिए माँ के दर्जे में हो और आप के बाद उन से निकाह करना हराम हो। अतः आगे आयत ५३ में स्पष्ट रूप से इस को हराम करार दिया गया है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नियों को उम्महातुलमोमिनीन अर्थात् मोमिनो की माँ का दर्जा दे कर उम्मत के अन्दर उन के विशेष स्थान और उन की प्रतिष्ठा एवं उन की मर्यादा का लिहाज़ करने की अत्याधिक ताकीद की गई ताकि किसी मुसलमान की कोई बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए कष्ट पहुँचाने वाली सिद्ध न हो।

(وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ - آیت ५३)

परन्तु अफ़सोस है कि इस स्पष्ट हिदायत के बावजूद मुसलमानों के एक फ़िक्के ने हज़रत अली की शान में अतिशयोक्ति से काम ले कर हज़रत आइशा सिद्दीका को मलामत का निशाना बनाया। ये लोग अपने फ़िक्के की धारणा को सही मान कर अपने मन में बसी इन धारणाओं के साथ जब कुर्आन का अध्ययन करते हैं तो जहाँ उन को अपनी धारणा के विरुद्ध कोई बात महसूस होती है उस का उल्टा सीधा मतलब निर्धारण करने लगते हैं इस प्रकार कुर्आन पढ़कर भी वे भटकते ही रहते हैं।

17. अर्थात् जहाँ तक विरासत का सम्बन्ध है अल्लाह के क़ानून के अनुसार ख़ूनी रिश्तेदार ही वारिस करार पायेंगे। यह इशारा है इस बात की तरफ़ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नियों को माँ का जो दर्जा दिया गया तो उस का सम्बन्ध ईमान वालों की विरासत से नहीं है तथा यह इस

बात की तरफ़ भी इशारा है कि मुहाजिरीन और अन्सार के बीच भाईचारागी का जो सम्बन्ध स्थापित कर दिया गया था और जिस के चलते अन्सार ने अपने माल में मुहाजिरीन को बराबर का साझीदार बना लिया था वह अस्थायी था। इस रिश्ते के कारण वे विरासत में शरीक नहीं हो सकते थे क्योंकि इस्लाम का स्थायी विरासती क़ानून ख़ून के रिश्ते को विरासत के लिए बुनियाद करार देता है अलबत्ता अपने साथियों के साथ भलाई की अन्य मुनासिब सूरतें अपनाई जा सकती हैं जैसे अपनी ज़िन्दगी ही में उन को कुछ दे देना या उन के लिए जायदाद के एक तिहाई हिस्से की हद तक वसीयत करना।

18. इशारा है उस विरासती क़ानून की तरफ़ जो सूरह निसा में बयान हुआ है तथा सूरह अन्फ़ाल आयत ७५ में भी ख़ूनी रिश्तेदारों के सामाजिक अधिकारों को प्राथमिकता दी गई है।

19. प्रतिज्ञा (मीसाक़) से तात्पर्य जैसा कि आयत के संदर्भ से स्पष्ट है कि नबी होने के दायित्व को निभाने की प्रतिज्ञा है जिस की पाबन्दी नुबुव्वत के दायित्वपूर्ण पद पर नियुक्त किये जाने के कारण आयत होती है। इस दायित्वों में लोगों की परवाह किये बग़ैर मात्र अल्लाह का डर रखते हुए उस के आदेशों का अनुपालन करना है और लोगों तक पूर्ण रूप से ज्यों का त्यों अल्लाह के पैग़ाम को पहुँचा देना है तथा उस की दी हुई जीवन प्रणाली (दीन) को स्पष्ट करना भी शामिल है। इस सूरह की आयत २ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह की वही का स्वयं अनुपालन करने का आदेश दिया गया है और आगे आयत ३९ में यह स्पष्टीकरण कर दिया गया है कि नबी अल्लाह के संदेशों को पहुँचाते हैं और उसी से डरते हैं। वे अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते। आयत में नबियों से ली गई प्रतिज्ञा का सामान्य रूप से वर्णन करते हुए कुछ बड़े एवं प्रसिद्ध नबियों का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है।

20. अर्थात् क्रियामत के दिन नबियों से सवाल किया जाएगा कि उन्होंने ने सच्चाई के साथ अल्लाह की वही (उस की प्रकाशना) पर अमल किया या नहीं और लोगों तक उस के संदेशों को ठीक ठीक पहुँचाए या नहीं। सूरह आराफ़ में इर्शाद हुआ है :-

فَلَنَسْأَلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَنَسْأَلَنَّ الْمُرْسَلِينَ (اعراف : ५)

अर्थ :- “हम उन लोगों से अवश्य पूछ ताछ करेंगे जिन की तरफ़ पैग़म्बर भेजे गए और निस्संदेह हम पैग़म्बरों से भी पूछेंगे” (आराफ़-६)

21. अर्थात् जब पैग़म्बरों के द्वारा अल्लाह की हुज्जत लोगों पर क़ायम हो जाएगी तो जो लोग कुफ़्र करेंगे उन को कष्ट दायक यातना भुगतनी होगी।

22. यह इशारा है खंदक की जंग की तरफ जिस में अल्लाह तआला की मदद ईमान वालों के लिए नाज़िल हुई और अत्यधिक कम संख्या में होने के बावजूद दुश्मन की फ़ौजें उन को पराजित न कर सकीं बल्कि मुकाबला किये बग़ैर उन को वापस लौटना पड़ा।

यह जंग जिसे ग़ज़वा-ए-अहज़ाब भी कहते हैं शव्वाल सन ५ हिजरी तदनुसार सन ६२७ ई. में घटित हुआ। यहूदियों के क़बीला बनी नुज़ैर ने मदीना से अपने निकाले जाने के बाद काफ़िरों को मुसलमानों के विरुद्ध जंग पर उकसाया। अतः हुयैय बिन अख़्तब जो बनी नुज़ैर का सरदार था एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ मक्का पहुँचा और कुरैश को इस बात के लिए आमादा किया कि वह संयुक्त मोर्चा बनाकर मदीना पर चढ़ाई कर दें। फिर नज्द का रुख़ किया और क़बीला ग़तफ़ान को भी जंग के लिए आमादा किया। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस की सूचना मिली तो आप ने हज़रत सलमान के सुझाव पर मदीना के उत्तर और पश्चिम की तरफ़ जिधर से दुश्मन मदीना में प्रवेश कर सकते थे लगभग दो किलोमीटर लम्बी खंदक खुदवाई (ग़ज़वा अल अहज़ाब- मुहम्मद अहमद बाशमील पृष्ठ १६२) और इस काम में जिस को सहाबा हज़रात बड़े परिश्रम से अंजाम दे रहे थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं शरीक हुए। खंदक के इस तरफ़ सुलअ पहाड़ी को पीछे कर के मुसलमान पंक्तिबद्ध हुए जो संख्या में लगभग तीन हजार थे। जिन में एक संख्या मुनाफ़िक़ों (पाखण्डियों) की भी शामिल हो गई थी। खंदक के उस पार कुरैश बनी कनाना के साथ पहुँचे और नज्द से ग़तफ़ान, हवाज़न और अन्य क़बीले। इस प्रकार दस हजार का भारी लश्कर जो तरह तरह के हथियारों से लैस था मुसलमानों के मुकाबले के लिए जमा हो गया। उधर यहूदियों के एक क़बीला बनी कुरैज़ा ने जो मदीना की पूर्वी दिशा में आबाद थे और जिन का मुसलमानों के साथ समझौता था ऐन मौक़े पर समझौते का उल्लंघन किया और काफ़िरों के समर्थन में खड़ा हो गया। काफ़िरों का यह घेराव लगभग एक महीने तक रहा। किन्तु अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों की फ़ौज़ उतार कर उन को ऐसे रौब में ले लिया कि वे मुसलमानों के विरुद्ध कोई गति विधि न कर सके। तथा ऐसी तेज़ और ठंडी हवा भेजी कि काफ़िरों के न केवल यह कि तंबू उखड़ गए बल्कि पाँव भी उखड़ गए। तेज़ आँधी ने आग भुजा दी और ऐसा अंधेरा हो गया कि उन्हें कुछ सुझाई न देता ऐसी परिस्थिति को देखते हुए कुरैश ने वापसी का फैसला किया और आखिरकार सारी फ़ौजें नाकाम वापस लौट गईं। दुश्मनों के वापस होने पर मुसलमान सलामती के साथ अपने घरों को लौट गए। अल्लाह तआला की

मदद उस के नबी और ईमान वालों के पक्ष में इस तरह प्रकट हुई कि मार काट की नौबत ही नहीं आई और काफ़िरों का सारा मंसूबा मिट्टी में मिल कर रह गया। अल्लाह तआला का यही वह एहसान है जिस का वर्णन इस आयत में हुआ है। और यह इतना बड़ा एहसान था कि फिर काफ़िर कभी मदीना पर चढ़ाई न कर सके। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काफ़िरों के नाकाम लौट जाने पर फ़रमाया था :-

لَنْ تَغْزُوا قُرَيْشٌ بَعْدَ عَامِكُمْ وَلَكِنَّكُمْ تَغْزُونَهُمْ

अर्थ :- “कुरैश अब कभी तुम पर चढ़ाई न कर सकेंगे, अब तुम उन पर चढ़ाई करोगे।”

और यह बात शब्द शब्द पूरी हुई। काफ़िर फिर कभी मदीना का रुख़ न कर सके अलबत्ता मुसलमान इस पोज़ीशन में हुए कि मक्का का रुख़ कर के उसे जीत लें।

स्पष्ट हुआ कि ईमान वाले अपनी जान जोखिम में डाल कर अल्लाह का कलिमा बुलंद करने के लिए उठें तो अल्लाह तआला असाधारण तरीक़े से उन की मदद करता है।

23. ऊपर की तरफ़ से अर्थात् मदीने की पूर्वी दिशा से और नीचे की तरफ़ से अर्थात् मदीना के पश्चिमी दिशा की तरफ़ से। मदीना का ऊँचाई का इलाका पूर्व की ओर और नीचाई का इलाका पश्चिम की ओर। पूर्व की ओर से ग़तफ़ान और हवाज़न आदि की फ़ौजें आ गई थीं और पश्चिम की ओर कुरैश और बनी कनाना आदि की।

24. यह शैली मनः स्थिति को प्रकट करता है जो अतयंत भय के कारण उत्पन्न हो गई थी। कलाम की उच्चता के तक्राजे के तहत सभी मुसलमानों को संबोधित कर के यह बात कह दी गई है किन्तु तात्पर्य वे लोग हैं जो अपने ईमान में कमज़ोर थे। सच्चे ईमान वालों का हाल इस से अलग था जैसा कि आयत २२ और २३ में बयान हुआ है।

25. अर्थात् खंदक की जंग के अवसर पर जिन कड़े हालात का सामना मुसलमानों को करना पड़ा उन में बहुत बड़ी मसलहत छिपी हुई थी। और वह यह कि ईमान वालों को कड़ी आजमाइश में डाल कर देखा जाए कि कौन अपने ईमान में सच्चा है और कौन निफ़ाक़ और शक (पाखण्ड एवं संदेह) की बीमारी में लिप्त है।

26. रोग से तात्पर्य शक की बीमारी है। कुआन और पैगम्बर के बारे में शक करने वाले यही मुनाफ़िक़ (पाखण्ड) लोग थे।

27. अर्थात् अल्लाह की मदद और विजय एवं सफलता के वादे।

13. जब उन में से एक गिरोह ने कहा ऐ यसरिब वालो।²⁸ तुम्हारे लिए ठहरने का कोई मौका नहीं अतः लौट जाओ²⁹ और उन में से एक गिरोह यह कह कर नबी से अनुमति माँग रहा था कि हमारे घर असुरक्षित हैं हालाँकि वे असुरक्षित न थे, बल्कि ये भागना चाहते थे।³⁰

وَاذْكَالَتْ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ يَاهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ إِنَّ يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ⑬

14. यदि शहर के किनारों से इन पर चढ़ाई होती और उस समय उन से फ़ितने में पड़ने के लिए कहा जाता तो वे उस में जा पड़ते और उन्हें मुश्किल से ही कोई संकोच होता।³¹

وَلَوْ دَخَلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ أَقْطَارِهَا تَمْسِكُ إِلَيْهِ فِتْنَةٌ لَا تَوْهَا وَمَا تَلْبَثُوا فِيهَا إِلَّا يَسِيرًا ⑭

15. हालाँकि ये लोग इस से पहले अल्लाह से प्रतिज्ञा कर चुके थे कि पीठ न फेरेंगे।³² और अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा के बारे में ज़रूर पूछ ताछ होगी।

وَلَقَدْ كَانُوا عَاهَدُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُؤْثِرُونَ الْأَدْبَارَ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ مَسْئُولًا ⑮

16. कहो, अगर तुम मौत या क़त्ल से भागो तो यह भागना तुम्हारे लिए कुछ भी लाभदायक न होगा और इस के बाद तुम जीवन सामग्री से थोड़ा ही लाभ उठा सकोगे।³³

قُلْ لَنْ يَنْفَعَكُمْ الْفِرَارُ إِنْ فَرَرْتُمْ مِنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذًا لَّاتُمْتَعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ⑯

17. कहो, कौन है जो तुम को अल्लाह से बचा सके अगर वह तुम्हें कोई नुकसान पहुँचाना चाहे या उस की रहमत को रोक सके अगर वह तुम पर मेहरबानी करना चाहे। अल्लाह के मुक़ाबले में वे अपने लिए न कोई सहायक पाएँगे और न मददगार।

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُمْ مِنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ⑰

18. अल्लाह तुम में से उन लोगों को जानता है जो (जंग के कामों में) रुकावटें डाल रहे थे और अपने भाईयों से यह कह रहे थे कि हमारे पास आओ।³⁴ और वे जंग में बहुत कम हिस्सा लेते रहे हैं।

فَذَرِكُوا اللَّهَ الْمُعَاقِبِينَ مِنْكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا وَلَا يَأْتُونَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيلًا ⑱

19. वे तुम्हारा साथ देने में तंगदिल हैं।³⁵ जब खतरा पेश आ जाता है तो तुम देखते हो कि वे तुम्हारी तरफ़ इस तरह आँखों को फिरा फिरा कर देखते हैं जैसे किसी व्यक्ति पर मौत की ग़ाशी (बेहोशी) छा गई हो।³⁶ फिर जब खतरा दूर हो जाता है तो माल के लोभी बन कर तेज़ ज़बानी से तुम से बातें करते हैं।³⁷ ये लोग ईमान नहीं लाए। इस लिए अल्लाह ने इन के कर्मों को नष्ट कर दिए³⁸ और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है।³⁹

أَشْجَاءَ عَلَيْهِمْ إِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يُنْظَرُونَ إِلَيْكَ تَدُومُ أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ إِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُمْ بِالسِّنَةِ جَدًا إِذْ أَشْجَاءَ عَلَى الْخَيْرِ أُولَئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ⑲

28. यसरिब मदीना का पुराना नाम है।

29. अर्थात् तुम इस पोजीशन में नहीं हो कि जो लश्कर तुम्हारे विरुद्ध उमड़ आया है उस का मुकाबला कर सको। अतः बेहतर यही है कि अपने घरों को लौट जाओ ताकि जंग की नौबत न आए।

30. मदीना में औरतों और बच्चों को सुरक्षित किलों में मुन्तकिल कर दिया गया था इस लिए मुनाफ़िकों का यह कहना सही न था कि हमारे घर खुले पड़े हैं अतः हमे जाने की अनुमति दी जाए। सच्ची बता यह थी कि उन में दुश्मन का मुकाबला करने का साहस नहीं था इस लिए वे मोर्चा छोड़ कर भाग जाना चाहते थे। और बहाना यह बना लिया था कि हमारे घर असुरक्षित हैं।

31. अर्थात् यदि मदीना में दुश्मन घुस पड़ते और उन लोगों से फितना की कोई बात कहते, जैसे यह माँग करते कि पैगम्बर के साथियों को क़त्ल करने में हमारा साथ दो या यह माँग करते कि इस्लाम से फिर जाओ तो उन्हें उन की इस माँग को पूरा करने में मुश्किल ही से कोई संकोच होता क्यों कि वे अपने ईमान में सच्चे नहीं हैं।

32. इशारा है इस बात की तरफ कि उन लोगों ने उहद की जंग के अवसर पर जो कमजोरी दिखाई थी उस के बाद वे अपनी भूल को दूर करने के लिए कहते रहे कि अगर अल्लाह ने अब कोई मौक़ा पैदा कर दिया तो वे जम कर लड़ेंगे और हरगिज़ पीठ नहीं फेरेंगे। मगर जब ख़ंदक़ की जंग में दुश्मन के मुकाबले में डट जाने का अवसर आया तो भाग जाने के लिए बहाने ढूँढने लगे।

33. अर्थात् मौत या क़त्ल हो जाने के भय से जंग से भाग निकलने की राहें ढूँढना जब कि वह एक दीनी कर्तव्य हो बिलकुल बेफ़ायदा बात है। क्यों कि इस सूरत में यदि जीने का अवसर मिल भी गया तो वह बहुत थोड़ा होगा और इस तरह के कामों का नतीजा महरूमी और नाकामी ही के रूप में सामने आयेगा।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की राह में जान का ख़तरा मोल लेने की उत्प्रेरणा देते हुए बड़ी सच्ची बात कही थी।

“जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा और जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा वह उसे पाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा?” (मत्ती १६:२५, २६)

34. अभिप्रेत मुनाफ़िक़ीन (पाखण्डी लोग) हैं जो मुसलमानों की रक्षा पंक्ति में अवरोध उत्पन्न कर रहे थे और दूसरों को मार्चों से हटाकर अपने साथ मिला लेना चाहते थे। यह उन की

खुली ग़द्दारी थी।

35. अर्थात् वे तुम्हारी सुरक्षा के लिए कोई ख़तरा मोल लेना नहीं चाहते। उन को न तो तुम्हारा अर्थात् सच्चे मुसलमानों का कोई दर्द है और न वे तुम्हारे लिए कोई कुर्बानी दे सकते हैं।

36. यह मुनाफ़िक़ों (विश्वासघातियों) की बुजदिली और उन की घबराहट का चित्रण है। जंग के अवसर पर जब कोई ख़तरनाक स्थिति सामने आ जाती तो उन की बदहवासी का यह आलम होता कि जैसे उन पर मौत की बेहोशी छा गई है। यदि वे अपने ईमान में सच्चे होते तो अल्लाह की राह में जवांमरदी से जिहाद करते और काफ़िरों का मर्दानगी के साथ मुकाबला करते।

37. अर्थात् जंग समाप्त हो जाने के बाद जब माले गनीमत के बंटवारे का मौक़ा आता तो धन के लोभी बन कर सामने आ जाते और पूरे अधिकार और ज़ोरदार शब्दों में माले-गनीमत में अपने भागीदार होने का दावा करने लगते हैं और मुसलमानों के विरुद्ध खूब शिकायतें करते हैं।

38. अर्थात् ये अपने मुसलमान होने का दावा तो करते हैं परन्तु वास्तव में ये ईमान नहीं लाए हैं। अगर ये दिल से ईमान लाते तो जिहाद में उन का रवैया अल्लाह और उस के रसूल के साथ बेवफ़ाई का न होता। और जब उन के दिल ईमान से खाली हैं तो उन की सारी दिखावटी नेकियाँ अकारथ गई उन का कोई फल उन को मिलने वाला नहीं।

इस से यह महत्वपूर्ण वास्तविकता स्पष्ट हुई कि जो लोग अपने को मुसलमान ज़ाहिर करते हैं मगर दिल से ईमान नहीं लाते वे अगर नेकी के काम करते हैं चाहे वह नमाज़ हो या जिहाद तो वह अल्लाह के यहाँ स्वीकार्य नहीं। क्यों कि अल्लाह तआला उन ही आमाल को कुबूल करता है जो ईमान लाने के बाद ख़ालिस उस की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए किये गए हों।

मुसलमानों की मौजूदा सोसायटी में ऐसे लोगों की कमी नहीं जो मुनाफ़िक़ों के पदचिन्हों पर हैं विशेष रूप से आधुनिक शिक्षा द्वारा शिक्षित वर्ग में। उन का रवैया ईमान के तकाज़ों के बिलकुल विरुद्ध होता है। लेकिन चूँकि दिलों का हाल अल्लाह ही को मालूम है इस लिए उन के दावे के आधार पर उन को दुनिया में मुसलमान समझा जाता रहेगा। मगर इस का यह मतलब नहीं कि अल्लाह के नज़दीक भी वे मुसलमान ही क्रार पायेंगे। अगर उन के दिल ईमान से खाली होंगे तो अल्लाह तआला उन के इस्लाम मानने के दावे को निर्मूल ठहराएगा और उन की नेकियाँ उन के मुँह पर दे मारी जाएंगी, चाहे वह नमाज़, हज्ज और जिहाद जैसी बड़ी बड़ी नेकियाँ

ही क्यों न हों। शरीर बेकार है यदि उस के अन्दर आत्मा मौजूद न हो उसी प्रकार सुकर्म भी निरस्तित्व है यदि उन के अन्दर ईमान की रूह मौजूद न हो।

39. अर्थात् कोई यह न समझे कि उन की नेकियाँ

अल्लाह तआला किस प्रकार नष्ट करेगा उस के लिए ऐसा करने में कोई रूकावट नहीं होगी। न तो किसी की सिफ़ारिश उस के लिए रूकावट बन सकेगी, और न ऐसा करना न्याय के विरुद्ध होगा।



यह लोग समझ रहे हैं कि हमलावर गिरोह अभी गए नहीं हैं और यदि हमलावर फिर आ जाएं तो ये चाहेंगे कि वे देहात में बददुओं (देहातियों) के बीच हों और वहाँ से तुम्हारी ख़बरें मालूम करते रहें। और अगर ये तुम्हारे बीच रहें भी तो जंग में कम ही हिस्सा लेंगे। तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में बेहतरीन नमूना (उत्तम आदर्श) है उन के लिए जो अल्लाह और आख़िरत के उम्मीदवार हों और अल्लाह को अधिकता के साथ याद करें। (अल-कुर्आन)

20. यह लोग समझ रहे हैं कि हमलावर गिरोह अभी गए नहीं हैं⁴⁰ और यदि हमलावर फिर आ जाएं तो ये चाहेंगे कि वे देहात में बददुओं (देहातियों) के बीच हों और वहाँ से तुम्हारी खबरें मालूम करते रहें।⁴¹ और अगर ये तुम्हारे बीच रहें भी तो जंग में कम ही हिस्सा लेंगे।⁴²

يَحْسَبُونَ الْآخِزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا وَإِنْ يَأْتِ الْآخِزَابُ يَودُّوا
لَوْ أَنَّهُمْ بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنْبَائِكُمْ
وَلَوْ كَانُوا فِيكُمْ مَا قُتِلُوا إِلَّا قَلِيلًا ۝

21. तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में बेहतरीन नमूना (उत्तम आदर्श) है⁴³ उन के लिए जो अल्लाह और आखिरत के उम्मीदवार हों और अल्लाह को अधिकता के साथ याद करें।⁴⁴

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا
اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ۝

22. जब ईमान वालों ने हमलावर गिरोहों को देखा तो पुकार उठे यह तो वही है जिस का अल्लाह और उस के रसूल ने हम से वादा किया था। अल्लाह और उस के रसूल ने बिलकुल सच फ़रमाया है। और इस चीज़ ने उन के ईमान और अनुपालन में और वृद्धि कर दी।⁴⁵

وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْآخِزَابَ قَالُوا هَذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ
وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا
وَسَلِيمًا ۝

23. ईमान लाने वालों में ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा को सच्चा कर दिखाया।⁴⁶ उन में से कुछ तो अपनी नज़र पूरी कर चुके⁴⁷ और कुछ प्रतिक्षा में हैं।⁴⁸ उन्होंने ने (उस में) कोई परिवर्तन नहीं किया।

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ
مَّنْ قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوا بَدْلًا ۝

24. (और यह परीक्षा इस लिए सामने आई) ताकि अल्लाह सच्चों को उन की सच्चाई का फल दे और मुनाफ़िकों को चाहे तो सज़ा दे या उन की तौबा स्वीकार कर ले।⁴⁹ निस्संदेह अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।

لِيَجْزِيَ اللَّهُ الصَّادِقِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ
إِنْ شَاءَ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

25. और अल्लाह ने काफ़िरों को इस हाल में लौटा दिया कि वे ग़ैज़ व ग़ज़ब (अमर्ष और क्रोध) में भरे हुए थे और कोई लाभ प्राप्त न कर सके।⁵⁰ और ईमान वालों की तरफ़ से लड़ने के लिए अल्लाह काफ़ी हो गया।⁵¹ अल्लाह बड़ा ही शक्तिशाली और प्रभुत्वशाली है।⁵²

وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوا خَيْرًا وَكَفَى اللَّهُ
الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ ۖ وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيمًا ۝

40. अर्थात् ये पाखण्डी (मुनाफ़ि़क़) लोग काफ़ि़रों के लश्कर से ऐसे भयभीत हो गए हैं कि यद्यपि हमलावर गिरोह नाकाम वापस हो चुके हैं किन्तु उन लोगों को ऐसा महसूस हो रहा है कि वे इधर उधर कहीं मौजूद हैं और उन के पुनः हमला कर देने का भय है।

41. अर्थात् अब वे इच्छा रखते हैं कि यदि काफ़ि़रों के लश्कर दोबारा मदीने पर हमलावर हुए तो उस अवसर पर वे शहर में मौजूद ही न रहें। बल्कि देहात में जा कर बददुओं अर्थात् देहातियों के बीच रहें ताकि मुकाबले की नौबत न आए और वहाँ रह कर ही मुसलमानों के हालात मालूम करते रहें कि उन्हें काफ़ि़रों के हाथों पराजय हुई या नहीं।

42. क्यों कि उन को न जिहाद में रूचि है और न वे कोई बलिदान देने के लिए आमादा हैं उन का जंग में सम्मिलित होना दिखावा मात्र और हालात के दबाव का नतीजा होता है।

स्पष्ट रहे कि उस ज़माने में क़बायली सिस्टम था, और औस तथा खज़रज नाम के दो बड़े क़बीले थे। जब इन क़बीलों ने इस्लाम कुबूल किया तो उन लोगों के लिए जो इस्लाम स्वीकार करना नहीं चाहते थे एक मसला पैदा हो गया, और वह यह कि इस सूरत में क़बीले के धर्म अर्थात् रीति रिवाज़ों एवं उस की संस्कृति से अलग होने के कारण उन का उस क़बीले में कोई स्थान न होगा और समाजी समस्याएँ भी पैदा हो जाएँगी इस लिए उन्होंने मसलहत इस में समझी कि दिल के इन्कार के बावजूद अपने को मुसलमानों में शामिल कर लें। इस के बाद उन जिम्मेदारियों को निभाना सके जो मुसलमान होने की हैसियत से उन पर आयद होती थी और उन का निफ़ाक़ (पाखण्ड) खुलता ही चला गया।

43. अर्थात् अल्लाह के रसूल ने इस अवसर पर जो कष्ट उठाए, जो खतरे मोल लिए, मोर्चे पर जिस तरह डटे रहे, और दृढ़ता औस साहस दिखाया उस में रसूल के अनुयाईयों के लिए बेहतरीन नमूना था। अतः तुम्हें इस अवसर पर वही कुछ करना चाहिए था जो अल्लाह के रसूल ने किया।

आयत का इशारा यद्यपि उस ख़ास घटना की ओर है परन्तु शब्दों की सार्वजनिकता एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उसूली बात पर तर्क प्रस्तुत करती है। और वह यह कि रसूल का आचार व्यवहार और रवैया उन के आदर्श उदाहरण है अतः उन्हें चाहिए कि रसूल की ज़िन्दगी को सामने रखें और इसी उत्तम आदर्श का अनुपालन करें।

इस से यह बात भी स्पष्ट होती है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदर्श उदाहरण से उल्लंघन कर के यदि किसी ने कोई रवैया अपनाया है तो वह मुसलमानों के लिए अनुकरण एवं अनुपालन योग्य नहीं है चाहे वह ज़ाहिदों और आबिदों का हो

या सूफी संतो का।

44. अर्थात् रसूल के उत्तम आदर्श का अनुकरण करने वाले वास्तव में वही लोग हो सकते हैं जो अल्लाह से मुलाक़ात के उम्मीदवार हों। आख़िरत के दिन पर मिलने वाले फल की आशा रखते हों और जिन के दिलों में अल्लाह की याद बस गई हो और ज़बानें उस के ज़िक्र से तर हों। जो लोग इस गुण से खाली हो उन में यह साहस नहीं हो सकता की खतरे के अवसर पर रसूल का साथ दें और उन के उत्तम आदर्श को सामने रखते हुए अपने आचार व्यवहार को ढालें।

आज मुसलमानों में तो ऐसे लोगों की कमी नहीं जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदर्श आचार व्यवहार की प्रशंसा तो खूब करेंगे परन्तु उन को अपने लिए रहनुमा नहीं बनाएँगे बल्कि जो गुमराह लोग अपने जीवन का बदतरीन उदाहरण “उसवये सीआ” प्रस्तुत कर रहे हैं उस को स्वीकार करेंगे ताकि उन की दुनिया भी बन जाए और दुनिया वाले भी उन से खुश रहें।

45. ग़ज़वा-ए-अहज़ाब (खन्दक की जंग) के अवसर पर सच्चे ईमान वालों का जो रवैया रहा उस को यहाँ स्पष्ट किया गया है, जिस से उन की अल्लाह और उस के रसूल के साथ वफ़ादारी, वचनबद्धता, साहस, और बलिदान के लिए तत्परता का पता चलता है। मुनाफ़ि़क़ (पाखण्डी) तो जैसा कि आयत ११ और १२ में बयान हुआ है काफ़ि़रों के भारी लश्करों को देख कर अल्लाह से ही बदगुमान हो गए और कहने लगे “अल्लाह और उस के रसूल का वादा तो बस एक धोखा था।” परन्तु सच्चे ईमान वालों की ज़बान से ये साहस के प्रतीक शब्द निकले कि “यह तो वही है जिस का अल्लाह और उस के रसूल ने हम से वादा किया था।” यह इशारा था इस बात की तरफ़ कि सफलता का मार्ग आजमाइशों से हो कर ही गुज़रता है जैसा कि सूरह बक्रः में इशाद हुआ है :-

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ

مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ. (بقره: २१४)

“क्या तुम ने समझ रखा है कि तुम जन्नत में दाखिल हो जाओगे हालाँकि तुम्हें उन लोगों जैसे हालात से वास्ता ही नहीं पड़ा जो तुम से पहले गुज़रे हैं। (बक्रः २१४)

और सूरह अनकबूत में फ़रमाया है :-

أَحْسِبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ. وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ. (سورة عنكبوت: २, ३)

“क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे यह कह देने पर छोड़ दिये जाएंगे कि हम ईमान लाए और उन को आजमाया न जाएगा? हालाँकि जो लोग उन से पहले गुज़रे हैं उन की हम आजमाइश कर चुके हैं। तो अल्लाह उन लोगों को ज़रूर जान कर रहेगा जो सच्चे हैं और उन लोगों को भी जो झूठे हैं।” (अनकबूत - २, ३)

और जब उन्होंने ने इस साहस से परिपूर्ण ईमानी भावनाओं को प्रकट किया तो उन के ईमान और अनुपालन में और वृद्धि हो गई।

46. अर्थात् यह प्रतिज्ञा कि वे अल्लाह की राह में जान की बाज़ी लगा देंगे।

47. अर्थात् जान की बाज़ी लगा कर उन्होंने शहादत को गले लगा लिया

48. अर्थात् इस बात की प्रतीक्षा में हैं कि कब उन्हें अल्लाह की राह में जान की बाज़ी लगाने का अवसर मिलता है।

49. अर्थात् वे ठोकर खाने के बाद संभलें और अपने रवैयो के प्रति अल्लाह के समक्ष प्रायश्चित करें। अभिप्रेत मुनाफ़िकों आर्थात् पाखण्डियों पर यह स्पष्ट करना है कि तुम्हारे लिए अब भी प्रायश्चित का अवसर है फिर अपने को क्यों अल्लाह के प्रकोप का भागीदार बनाते हो?

50. अल्लाह की तदबीर ऐसी हुई कि काफ़िर गुस्से में भरे

हुए नाकाम वापस हुए। वे मदीना के मुसलमानों का बाल भी बाका न कर सकें और न इस जंग से उन को कोई लाभ प्राप्त हो सका।

51. यद्यपि वे मुसलामानों के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बनाकर हमलावर हुए थे परन्तु अल्लाह तआला ने ऐसे हालात पैदा कर दिए कि मुसलमानों को लड़ने की ज़रूरत ही पेश नहीं आई। उन की तरफ़ से लड़ने के लिए अल्लाह काफ़ी हुआ। हज्ज के मौक़े पर सफ़ा और मरवा पर यह जो प्रवचन पढ़े जाते हैं :-

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ أَنْجَزَ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ
وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ. (مسلم کتاب الحج)

अर्थ :- “एक अल्लाह के सिवा कोई खुदा नहीं, उस ने अपना वादा पूरा किया और अपने बन्दे की मदद की और हमलावर लश्करों को स्वयं परास्त किया।” (मुस्लिम किताबुल हज्ज) तो यह इसी घटना की याद ताज़ा करते हैं और अल्लाह की मदद को याद दिलाते हैं।

52. अल्लाह शक्ति शाली है इस लिए भारी लश्कर को पराजित कर देने के संसाधन कर देना उस के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं। और वह प्रभुत्वशाली है इस लिए उस की हर योजना लागू हो कर रहती है।



और तुम में से जो अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञाकारी बन कर रहेगी और अच्छे कर्म करेगी हम उस को दोहरा बदला देंगे। और हम ने इस के लिए प्रतिष्ठित आजीविका तैयार कर रखी है। ऐ नबी की पत्नियों ! तुम दूसरी औरतों की तरह नहीं हो । अगर तुम परहेजगार हो तो लोच के साथ बात न करो कि जिस के दिल में रोग है वह लालसा करना लगे और भली बात कहो। (अल-कुर्आन)

26. और अहले किताब में से जिन लोगों ने उन (हमलावर) गिरोहों की सहायता की थी अल्लाह ने उन के क़िलों से उन को उतार दिया और उन के दिलों में ऐसा रौब डाल दिया कि एक गिरोह को तुम क़त्ल करते रहे और दूसरे गिरोह को तुम ने क़ैद कर लिया।⁵³

وَأَنزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوهُمْ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ صَيَاصِيهِمْ
وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيقًا تَقْتُلُونَ
وَتَأْسِرُونَ فَرِيقًا ۖ

27. और तुम को उन की ज़मीन, उन के घरों और उन के माल का वारिस बना दिया।⁵⁴ और ऐसी ज़मीन का भी जिस पर अभी तुम ने क़दम नहीं रखे।⁵⁵ अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्यवान है।

وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَّمْ تَطُوهَا
وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝

28. ऐ नबी ! अपनी पत्नियों से कह दो,⁵⁶ अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और उस की ज़ीनत चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें कुछ दे दिला कर अच्छे तरीके से विदा कर दूँ।⁵⁷

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ إِن كُنتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا
وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنَ أُمَتِّعْكُنَّ وَأَسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ۝

29. और अगर तुम अल्लाह और उस के रसूल और आखिरत के घर की इच्छुक हो तो (विश्वास रखो) तुम में से जो अच्छे कर्म का रवैया अपनाएगी उन के लिए अल्लाह ने बहुत बड़ा अज़्र (ईनाम) तैयार कर रखा है।⁵⁸

وَإِن كُنتُنَّ تُرِدْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالدَّارَ الْآخِرَةَ فَإِنَّ
اللَّهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَاتِ مِنكُنَّ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

30. ऐ नबी की पत्नियों ! तुम में से जो किसी खुली बेहयाई में लगेगी उसे दोहरी यातना दी जाएगी⁵⁹ अल्लाह के लिए यह बात आसान है।⁶⁰

يُنِسَاءَ النَّبِيِّ مَن يَأْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبِينَةٍ
يُضَعَّفَ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۖ وَكَانَ ذَلِكَ
عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

31. और तुम में से जो अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञाकारी बन कर रहेगी और अच्छे कर्म करेगी हम उस को दोहरा बदला देंगे।⁶¹ और हम ने इस के लिए प्रतिष्ठित आजीविका तैयार कर रखी है।

وَمَن يَقْنُتْ مِنكُنَّ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ وَتَعْمَلْ صَالِحًا
تُوَفَّيْهَا أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا ۝

32. ऐ नबी की पत्नियों ! तुम दूसरी औरतों की तरह नहीं हो।⁶² अगर तुम परहेज़गार हो तो लोच के साथ बात न करो कि जिस के दिल में रोग है वह लालसा करने लगे⁶³ और भली बात कहो।⁶⁴

يُنِسَاءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِّنَ النِّسَاءِ
إِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ
الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۝

53. तात्पर्य बनी कुरैजा हैं जो मदीना के पूर्वी भाग में आबाद थे और धर्म की दृष्टि से यहूदी थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिजरत के बाद उन से समझौता कर लिया था परन्तु वे अपने समझौते पर जमे न रह सके और ग़ज़वा-ए-अहज़ाब के अवसर पर समझौते का उल्लंघन करते हुए हमलावर काफ़िरों का साथ दिया। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ंदक की जंग से निपट कर घर लौटे तो हज़रत जिब्रील अल्लाह का यह आदेश ले कर उतरें कि अविलम्ब बनी कुरैजा का रूख़ किया जाए और उन के विरुद्ध फ़ौज़ी कार्रवाई की जाए। अतः उसी समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा को ले कर बनी कुरैजा की तरफ़ रवाना हो गए। वहाँ पहुँच कर उन का घेराव कर लिया जो पच्चीस दिन रहा। आख़िर कार बनी कुरैजा इस शर्त पर अपने क़िलों से उतर आए कि क़बीला औस के सरदार हज़रत सअद बिन मआज़ को जो बनी कुरैजा के सहप्रतिज्ञ (हलीफ़) थे निर्णायक बनाया जाए। अतः हज़रत सअद बिन मआज़ ने फैसला सुनाया कि :-

“इन के जो पुरुष लड़ने योग्य हैं उन सब को क़त्ल कर दिया जाए इन की औरतों और बच्चों को कैद कर लिया जाए और इन के माल बाँट दिए जाएँ।”

इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया “तुम ने अल्लाह के आदेशानुकूल निर्णय किया।” (बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी)

हज़रत सअद बिन मआज़ रज़ि. का यह फैसला तौरात के अनुकूल था। उस में यह जंगी क़ानून बयान हुआ है कि

“जब तू किसी नगर से युद्ध करने को उस के निकट जाए तब पहले उस से संधि करने का समाचार दे परन्तु यदि वे तुझ से संधि न करें परन्तु तुझ से लड़ना चाहें तो तू उस नगर को घेर लेना। और जब तेरा परमेश्वर यहोवा उसे तेरे हाथ में सौंप दे तब उस में के सब पुरुषों को तलवार से मार डालना। परन्तु स्त्रियों और बाल बच्चे और पशु आदि जितनी लूट उस नगर में हो उसे अपने लिए रख लेना।” (व्यवस्था विवरण २०:१० से १४)

इस प्रकार यहूदी बनी कुरैजा का मदीने से ख़ात्मा हो गया। उन के साथ यह कड़ाई एवं कठोरता इस लिए बरती गई कि इस से पहले यहूद के एक क़बीला बनी नुज़ैर के मसझौता उल्लंघन एवं साज़िश की कार्रवाइयों के बावजूद इन के साथ यह रियायत बरती गई थी कि वे अपने बाल बच्चों और कुछ सामान के साथ मदीना छोड़ कर चले जाएँ अतः वे ख़ैबर में आबाद हो गए। परन्तु वहाँ से उन्होंने मुसलमानों के विरुद्ध फिर साज़िशें शुरू कर दीं। फिर बनी कुरैजा ने एक ऐसे नाज़ुक अवसर पर समझौता का उल्लंघन किया जब कि काफ़िर बहुत बड़े लश्कर के साथ

मदीना पर हमलावर हुए थे और उन्होंने ने उन की मदद कर के मुसलमानों के पीठ में छुरा घोंप दिया था। इस लिए ऐसे ग़द्दारों को कठोर दण्ड मिलना ही चाहिए था।

ध्यान रहे कि मारे जाने वालों की संख्या आठ सौ से अधिक नहीं थी। और औरतों और बच्चों की संख्या जिन को कैद कर लिया गया था लगभग एक हजार थी। (ग़ज़वा-बनी कुरैजा मुहम्मद अहमद बाशमील पृष्ठ १९७)

54. माल के साथ भारी असलहा भी मुसलमानों के हाथ लगा। रिवायतों में आता है कि पंद्रह सौ तलवारें, दो हजार भाले, तीन सौ कवच, और पाँच सौ ढालें माले ग़नीमत में मिली। (ग़ज़वा बनी कुरैजा पृष्ठ २२९)

55. यह इस बात की खुशख़बरी थी कि बहुत जल्द ऐसे इलाक़े में तुम भी विजय पाओगा जहाँ अभी तुम्हारे क़दम नहीं पहुँचे हैं। इस के बाद सब से पहले ख़ैबर विजय हुआ और उस के बाद दूसरे इलाक़े। इस प्रकार कुर्आन की यह भविष्यवाणी भी पूरी हुई।

56. यहाँ से एक दूसरा मज़मून शुरू होता है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों से सम्बन्धित है इन आयतों के उतरने तक अर्थात् सन ५ हिजरी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में चार पत्नियाँ थी। हज़रत सौदा, हज़रत आइशा, हज़रत हफ़सा और हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु अन्हुना।

57. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों को जब ईमान वालों की माँ का दर्जा दिया गया तो उन की ज़िम्मेदारियाँ भी बढ़ गईं। अब उन को ईश-भय, परहेज़गारी, धैर्य, परितोष और आख़िरत की चाह में अभीष्ट आदर्श को पहुँचना था और चूँकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी मआशी लिहाज़ से निहायत उसरत की ज़िन्दगी थी और आप के पास संपन्नता एवं सांसारिक ऐश्वर्य का कोई सामान न था इस लिए अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिदायत की कि आप अपनी पत्नियों से उन की मज़ी माँलूम करें यदि वे खुशी खुशी इस तरह की ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए तैयार नहीं हैं और दुनिया ही की शौभा चाहती हैं तो उन्हें कुछ दे दिला कर भले तरीक़े से विदा कर दिया जाए। अतः हदीस में आता है कि आपने सब से पहले हज़रत आइशा रज़ि. से पूछा और फ़रमाया कि तुम अपने माता पिता से सलाह मश्वरा कर के जवाब दो। लेकिन हज़रत आइशा ने तुरन्त जवाब दिया कि इस मामले में अपने माता पिता से क्या सलाह मश्वरा करूँ। जब कि मैं अल्लाह और उस के रसूल और आख़िरत के घर ही को चाहती हूँ। फिर दूसरी पत्नियों ने भी इसी तरह जवाब दिया।” (बुख़ारी किताबुतफ़सीर-अल-अहज़ाब)

इस तरह उन की स्वतन्त्र राय मालूम करने का एक लाभ यह हुआ की उन को स्वयं साहसी एवं दृढ़ संकल्प लेने वाली का स्थान प्राप्त हो गया। दूसरा यह कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए उन का जवाब खुशी और सुकून प्रदान करने का कारण हुआ और तीसरा लाभ यह कि मुनाफ़िकों (पाखण्डियों) को यह दुष्प्रचार करने का अवसर नहीं मिल सका कि आप अपनी पत्नियों के अधिकार पूरी तरह अदा नहीं करते और वे अपनी मर्जी के विरुद्ध जीवन यापन करने के लिए विवश हो गई हैं।

आयत का सही भावार्थ स्पष्ट हो जाने के बाद इस बात के खण्डन की आवश्यकता महसूस नहीं होती कि आप की पत्नी आप से अधिक खर्च की माँग करती थी जिस के कारण आप परेशान हो गए थे। जिन रिवायतों में इस तरह की बात उल्लिखित हुई है वे तर्क की दृष्टि से सही नहीं, क्योंकि उन में परस्पर टकराने वाली बातें भी बयान हुई हैं और ऐसी बातें भी हैं जो बुद्धि संगत नहीं हैं। इन रिवायतों पर बात चीत इन्शाअल्लाह सूरह तहरीम के अन्तर्गत की जाएगी।

ध्यान रहे कि फ़ुक़हा (इस्लामी विद्वानों) ने इस इख़्तियार को राज़ी खुशी तलाक़ ओढ़ लेना बताया है। अर्थात् इस सूरत में औरतों को यह अधिकार प्राप्त हो जाता है कि वह अपने ऊपर तलाक़ लागू कर ले जब कि इस आयत में इस के लिए कोई दलील नहीं है। आयत में तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तो यह फ़रमाया गया है कि आप अपनी पत्नियों से मालूम कर लें कि वे दुनिया की शोभा चाहती हैं या अल्लाह और उस के रसूल को। अगर दुनिया की चमक दमक चाहती हैं तो भले तरीक़े से उन को विदा कर दिया जाए अर्थात् उन की यह मर्जी मालूम हो जाने के बाद आप उन्हें तलाक़ दे दें। इस से यह बात कहीं से निकली कि यदि आप की पत्नी दुनिया की शोभा चाहती तो तलाक़ आप से आप लागू हो जाती। आयत में तलाक़ का कोई शब्द प्रयुक्त नहीं हुआ है और आयत के ये शब्द

وَأَسْرَحُكُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا

अर्थ :- “मैं तुम्हें अच्छे तरीक़े से विदा कर दूँ”

साफ़ बता रहे हैं कि आप के जुदा कर देने से वे जुदा हो जाती। अतः इस इख़्तियार को राज़ी खुशी तलाक़ पर (महमूल) ओढ़ लेना समझना सही नहीं। और फ़ुक़हा (विद्वानों) ने राज़ी खुशी तलाक़ ले लेने का जो उसूल बनाया उस से मौजूदा दौर के वे मुसलमान जो इस्लाम के दाम्पत्य क़ानून से संतुष्ट नहीं हैं और उन में कांट छँट करने पर तुले रहते हैं यह सुझाव देते हैं कि निकाह के मौक़े पर एक काबीन नामा अर्थात् मेहर की रक़म की तफ़सील के साथ इक़रार नामा तैयार किया जाए जिस

में पुरुष स्त्री को यह पेशगी अधिकार दे कि फ़त्वाँ सूरत में औरत स्वयं अपने ऊपर तलाक़ लागू कर सकती है।

राज़ी खुशी तलाक़ ओढ़ने के इस बहाने को अपना कर के वे स्त्री पुरुष में समानता का नियम स्थापित करना चाहते हैं। मगर शरीअत ने बहुत सारी मसलहतों के तहत जिन में स्त्री का स्थान भी शामिल है, तलाक़ का अधिकार मर्द को दिया है, औरत को नहीं। इस लिए इस अधिकार को स्त्री को दिलाने के प्रयास शरीअत के मंशा के विरुद्ध है।

أَمْتَعُكُنَّ

अर्थात् :- “तुम्हें कुछ दे दिलाकर” से यह बात भी स्पष्ट हुई कि तलाक़ की सूरत में पत्नी को कुछ माल दिया जाना चाहिए। इस से उस बात का अनुमोदन होता है कि सूरह बक्रः की आयत २४१ में तलाक़ दी हुई औरतों को सामान्य और भले तरीक़े से कुछ माल देने का जो आदेश दिया गया है यह सभी तलाक़ पाई औरतों के बारे में है न कि केवल उन तलाक़शुदा औरतों के बारे में जिन्हें छूने से पहले तलाक़ दी गई हो। (देखिए सूरह बक्रः नोट ३७६ और ३७७)

58. अर्थात् अगर तुम ने दुनिया और उस की चमक दमक चाहने के बजाय आखिरत की चाह को अपना लक्ष्य तथा अल्लाह और उस के रसूल को महबूब बना लिया और अच्छे कर्मों तथा अच्छे आचार व्यवहार का रवैया अपनाया तो तुम्हारा दर्जा बहुत बड़ा होगा। और अल्लाह तआला तुम्हें बहुत बड़े इनाम से सुशोभित करेगा।

59. इस का यह मतलब नहीं है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नियों से किसी बेहयाई में लिप्त हो जाने का भय था बल्कि इस से अभिप्रेत पाकदामनी और पवित्रता का गहरा एहसास पैदा करना था ताकि वे बिलकुल सचेत रहें और मुनाफ़िकों (पाखण्डियों) को उन के विरुद्ध शक और संदेह पैदा करने का अवसर न मिले।

इस से यह बात भी स्पष्ट हुई कि अल्लाह का क़ानून बेलाग़ है। एक नबी की पत्नी भी यदि बेहयाई में लिप्त होती है तो वह अल्लाह के यहाँ दण्ड की पात्र ठहरेगी बल्कि दोहरे दण्ड की। क्योंकि यह अपराध इस कारण बेहद संगीन होगा कि इस से एक नबी के घर की बदनामी होगी और लोगों के लिए बहुत बुरा उदाहरण बनेगा।

60. अर्थात् अपराध में लिप्त होने की दशा में एक नबी की पत्नी को सज़ा देना अल्लाह के लिए मुश्किल न होगा क्योंकि कि अल्लाह का न्याय विधान बिलकुल बेलाग़ है।

61. जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों का दर्जा ईमान वालों की माँ का ठहरा तो इस ऊँचे पद की दृष्टि

से उन पर भारी ज़िम्मेदारियाँ भी आयद हो गई। इन ज़िम्मेदारियों को बयान करते हुए उन्हें यह खुशखबरी भी दी गई कि अगर वे अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञाकारी एवं वफ़ादार बन कर अच्छे कर्म करेगी तो उन्हें यह मान प्रदान किया जायेगा कि वह दो बार बदला (इनाम) पायें।

62. अर्थात् अन्य औरतों के मुकाबले में तुम्हें यह प्रमुखता प्राप्त है कि तुम नबी की पत्नी हो अतः तुम्हें अपने व्यवहारिक जीवन में अधिक सावधान होना चाहिए।

63. यहाँ रोग से तात्पर्य काम इच्छा का रोग है।

औरतों की आवाज़ साधारणतया महीन और मीठी होती है। और जब वे लोच के साथ बात करती हैं तो जिन के अन्दर कामपिपासा की भावना पनपती रहती है वे बुरी इच्छाओं को पाल लेते हैं। इस लिए परहेज़गारी का तकाज़ा यह है कि औरतें मर्दों से बात करते हुए अपनी बोली में लोच पैदा न होने दें। और जब परहेज़गारी का तकाज़ा यह है तो इस की पाबन्दी प्रत्येक नारी को करना चाहिए। यहाँ नबी की पत्नियों को संबोधित कर

के यह और इस प्रकार की जो दूसरी हिदायतें दी गई हैं उस का यह मतलब नहीं कि ये हिदायतें बस उन्हीं के लिए हैं, दूसरी औरतों के लिए नहीं हैं; बल्कि मतलब यह है कि नबी की पत्नियों को इन हिदायतों का कहीं अधिक पाबन्द होना चाहिए और इन मामलों में अत्याधिक सजग रहना चाहिए।

इसी से अन्तरगत यह उसूली बात भी स्पष्ट हो जाती है कि इस्लाम जब औरतों को मर्दों से लोचदार ज़बान में बात करने से मना करता है तो वह उन के गाने को किस तरह गवारा कर सकता है? इस का हराम होना बिलकुल स्पष्ट है। मगर मौजूदा ज़माने में औरतों का गाना वह भी इतने अभद्र एवं अश्लील अन्दाज़ में इतना प्रचालित हो गया है कि इस के ग़लत होने के बारे में लोग कल्पना भी नहीं कर पाते। अब मुश्किल ही से ऐसे लोग मिलेंगे जो इस के हराम होने का ध्यान रखते हुए इसे सुनने से परहेज़ करते हों।

64. अर्थात् तुम्हारी ज़बान से जो बात भी निकले वह भलाई ही की हो। हर प्रकार की अभद्र एवं ग़लत बातों से कड़ाई के साथ परहेज़ करना चाहिए



33. अपने घरों में ठहरी रहो और पिछली जाहिलियत की सी नुमाइश न करो,⁶⁵ नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो,⁶⁶ तथा अल्लाह और उस के रसूल का अनुपालन करो। अल्लाह तो चाहता है कि तुम अहले-बैत से ग़न्दगी को दूर करे और तुम्हें बिल्कुल पाक कर दे।⁶⁷

وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَى
وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ وَآتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ
وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ٣٣

34. याद रखो, अल्लाह की आयतों और हिकमत (तत्वदर्शिता) की उन बातों को जो तुम्हारे घरों में सुनाई जाती हैं⁶⁸। निस्संदेह अल्लाह सूक्ष्मदर्शी और ख़बर रखने वाला है।⁶⁹

وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلَىٰ فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ
وَالْحِكْمَةِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا ٣٤

35. निस्संदेह मुस्लिम मर्द और मुस्लिम औरतें, मोमिन मर्द और मोमिन औरतें⁷⁰ अज़ाकारी मर्द, और अज़ाकारी औरतें,⁷¹ सच बोलने वाले मर्द और सच बोलने वाली औरतें,⁷² सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें⁷³ (अल्लाह के समक्ष) विनम्रता करने वाले मर्द और विनम्रता करने वाली औरतें,⁷⁴ सदक़ा करने वाले मर्द और सदक़ा करने वाली औरतें,⁷⁵ रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें, अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले मर्द और रक्षा करने वाली औरतें⁷⁶ और अल्लाह को अधिकता से याद करने वाले मर्द और अधिकता से याद करने वाली औरतें⁷⁷ अल्लाह ने उन के लिए क्षमादान और भारी बदला तैयार कर रखा है।⁷⁸

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
وَالْقَنَاتِ وَالْقَنَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ
وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ
وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّالِحِينَ وَالصَّالِحَاتِ وَالْحَافِظِينَ
فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا
وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ٣٥

36. किसी मोमिन मर्द और किसी मोमिन औरत को यह हक़ नहीं कि जब अल्लाह और उस का रसूल किसी मामले का फ़ैसला कर दें तो उन के लिए अपने मामले में कोई इज़्तिहार बाक़ी रहे।⁷⁹ और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी करे तो वह खुली गुमराही में पड़ गया।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا لِمُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَىٰ اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَنْ
يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ
ضَلَّ ضَلَالًا مُّبِينًا ٣٦

65. मूल अरबी (Text) में “तर्बुज” का शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का मतलब प्रदर्शन एवं नुमाइश के हैं। और इस से कहने का तात्पर्य यह है कि अजनबी मर्दों के सामने अपने बनाव श्रंगार की नुमाइश करते फिरना है। जैसा कि सूरह नूर की आयत ६०

غَيْرِ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ

अर्थ :- “अपनी ज़ीनत की नुमाइश करने वाली न हो”
‘الجاهلية الاولى’ से स्पष्ट है और पिछली जाहिलियत (विगत अज्ञान काल) से मुराद ग़ैर इस्लामी तौर तरीक़े हैं जो इस्लाम से पहले प्रचलित थे। मतलब यह है कि तुम्हारा मूल कार्य क्षेत्र घर है जहाँ रह कर तुम्हें अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा करना है और इस उद्देश्य से तो बाहर निकलना बिल्कुल जायज़ नहीं कि अपनी ज़ीनत की नुमाइश करती फ़िरो।

इस का यह अर्थ निकालना भी सही नहीं कि नबी की (अज़वाज़) पत्नी के लिए घर से निकलने की बिल्कुल मनाही थी। आगे आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों, बेटियों और आम मुसलमान औरतों को यह आदेश दिया गया है कि वे बाहर निकलें तो अपने ऊपर चादर डाल लिया करें, जिस से बाहर निकलने की बात सिद्ध होती है। हदीस में आता है :-

قَدْ أُذِنَ لَكُنَّ أَنْ تَخْرُجْنَ لِحَاجَتِكُنَّ - (بخاری کتاب النّسب)

अर्थ :- “तुम्हें अपनी आवश्यकताओं के लिए बाहर निकलने की अनुमति दे दी गई है।” (बुखारी किताबुत्तप्सीर)

नबी की पत्नियों की गरिमानुकूल बात यही थी कि वे अपने घरों में ठहर कर रहें और बाहर निकलने के सिलसिले में ज़्यादा मुहतात रहें। रहीं आम मुसलमान औरतें तो इस आयत की रोशनी में उन का असल दायराकार घर ही क्रार पाता है चूँकि उन को बाहर निकलने की आवश्यकता नबी की पत्नियों की तुलना में कहीं अधिक हो सकती है इस लिए इस आयत का मंशा यह नहीं है कि वे घर की चार दीवारी में बिल्कुल कैद हो कर रह जाएँ। आज कल के दौर में तो औरतों की आवश्यकताएँ वास्तव में बहुत बढ़ गई हैं। जैसे सफ़र, पढ़ना, पढ़ाना, औरतों के लिए सामाजिक सेवाएँ, अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति। दीनी इज्तिमाअ आदि में शामिल होना। इस प्रकार की उचित आवश्यकताओं के लिए औरतों के बाहर निकलने पर पाबन्दी नहीं है। बशर्ते कि वे बाहर निकलने के शरअी तौर तरीक़ों का ध्यान रखें। विशेष रूप से यह बात कि वे अपनी सुन्दरता और बनाव श्रंगार की नुमाइश न करें।

66. नमाज़ और ज़कात का हुक्म सब के लिए है लेकिन विशेष रूप से नबी की पत्नियों को संबोधित कर के आदेश देने

का मंशा यह है कि वे कड़ाई के साथ इस पर कारबन्द हो जाएँ।

इस आयत से यह भी स्पष्ट हुआ कि औरत के माल की ज़कात औरत ही के ज़िम्मे है न कि उस के पति के ज़िम्मे। इस लिए उस को अपने माल में से ज़कात अदा करना चाहिए। दूसरी बात इस से यह भी मालूम हुई कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियाँ बिल्कुल निर्धन नहीं थी, जैसा कि आम तौर से समझा जाता है, बल्कि वे ज़कात देने की पोजीशन में थीं जब ही तो ज़कात देने का आदेश उन्हें दिया गया और इस का अनुमोदन इस बात से भी होता है कि आप की पत्नी का मेहर चार सौ अस्सी दिरहम हुआ करता था जब कि दो सौ दिरहम पर ज़कात आयद होती है।

67. प्रसंग (Context) से यह बात स्पष्ट है कि यहाँ “अहले बैत” से मुराद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियाँ हैं। मगर मुसलमानों का एक वर्ग जिस ने हज़रत अली के प्रति अतिशयोक्ति से काम ले कर इमामत की धारणा को दीन में शामिल किया है। वे इस आयत में भी अहले-बैत से मुराद हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन को लेते हैं। जहाँ तक अहले-बैत के शाब्दिक अर्थ की बात है उस में पत्नियाँ सर्वप्रथम आती हैं उन के अलावा संतान भी। इस लिए नबी के अहले-बैत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों के अलावा आप की संतान पर भी लागू होता है। लेकिन इस आयत में आप की पत्नियों को अहले-बैत कह कर संबोधित किया गया है और दिशा निर्देश भी उन्हीं को दी गई हैं। इस लिए यहाँ पर केवल आप की पत्नियाँ ही मुराद हो सकती हैं। परन्तु कुर्आन के स्पष्ट भावार्थ को नकारने वालों ने “अहले-बैत” में से आप की पत्नियों को खारिज कर दिया और हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन पर इस को लागू कर दिया। और इन की पवित्रता से इन के मासूम होने और फिर इमामों के मासूम होने का दावा ले कर बैठे। ये लोग आयत की जो व्याख्या करते हैं उस की ग़लती स्पष्ट करने के लिए हम यहाँ संक्षेप में कुछ बातें रखेंगे।

A) कुर्आन में अहले बैत का शब्द दो और जगह प्रयुक्त हुआ है। एक उस मौके पर जब कि फ़रिश्तों ने हज़रत इब्राहीम की पत्नी सारा को इस्हाक़ के पैदाइश की खुशख़बरी दी थी। और जब उन्हीं ने इस पर आश्चर्य जताया तो फ़रिश्तों ने उन से कहा

اتَّعَجِبِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ رَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ عَلَيْكُمْ أَهْلُ الْبَيْتِ - (هود: ८३)

अर्थ :- “तुम अल्लाह के हुक्म पर आश्चर्य करती हो। अल्लाह की रहमतें और उस की बरकतें हों तुम पर ऐ एहले बैत”। (हूद - ७३)

इस आयत में अहले बैत हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की

पत्नी को कहा गया है। दूसरे हज़रत मूसा को दूध पिलाने के सिलसिले में जब कि उन की बहन ने फिरऔन वालों से कहा

هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ. (قصص: १२)

अर्थ :- “क्या मैं तुम्हें ऐसे घर वालों का पता बताऊँ जो तुम्हारे लिए उस की परवरिश करेंगे।” (अल-क़सस १२)

इस आयत में भी अहले-बैत से तात्पर्य मूसा की माँ हैं। स्पष्ट हुआ कि अहले-बैत में सर्वप्रथम पत्नी आती हैं। हदीस में आता है कि हज़रत ज़ैनब के वलीमे के अवसर पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत आइशा के हुजरे में तशरीफ़ ले गए तो फ़रमाया :-

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ

अर्थात् “सलाम और अल्लाह की रहमत हो तुम पर ऐ अहले-बैत” (बुखारी किताबुत्तफ़सीर) अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद अहले-बैत कह कर अपनी पत्नीयों को संबोधित किया है। इस के बाद आप की पत्नी के अहले-बैत में से होने के लिए किस दलील की ज़रूरत बाक़ी रह जाती है।

B) यह बात कि आयत में अहले-बैत से संबोधित पुल्लिंग शब्द प्रयुक्त हुए हैं अतः पत्नियाँ मुराद नहीं हो सकतीं, सही नहीं। क्योंकि अरबी में अहल शब्द के साथ पुल्लिंग शब्द ही इस्तेमाल किया जाता है। अतः ऊपर जिन दो आयतों का हवाला दिया गया उन में भी पुल्लिंग शब्द ही प्रयुक्त हुआ है जब कि पहली आयत में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की पत्नी से संबोधन है और दूसरी आयत में अहले बैत से तात्पर्य हज़रत मूसा की माँ है।

C) ऐसी व्याख्या करने वाले उन रिवायतों का सहारा लेते हैं जिन में उल्लिखित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़ातिमा, हसन, हुसैन और अली को बुलाया और एक चादर में ढाँक लिया और फ़रमाया ऐ खुदा ये मेरे अहलेबैत हैं, इन से गन्दगी को दूर फ़रमा और उन्हें ख़ूब पाक साफ़ कर दे। यह हदीस तिर्मिज़ी ने बयान की है और इस भावार्थ की कई रिवायतें तबरी ने अपनी तफ़सीर में भी बयान की हैं। परन्तु ये रिवायतें कमज़ोर हैं अतः तिर्मिज़ी ने इस के ग़रीब (कमज़ोर) होने की पुष्टि की है और तबरी की रिवायतों में कई उल्लेखकर्ता शीआ हैं। मिसाल के तौर पर एक उल्लेखकर्ता अब्दुल्लाह बिन अब्दुलकुदुस हैं जो शीआ हैं। इब्ने मुअनी ने इन्हें राफ़ज़ी कहा है। और अबूदाऊद, नसई और दारक़ितनी ने इसे कमज़ोर कहा है। इन रिवायतों को समझने और परखने के लिए देखिए डाक्टर अली अहमद सालूसी की किताब آية التطهير بين امهات المؤمنين واهل الكساء. “आयतुत्तहरी बैन उम्माहातुल मोमिनीन व अहलुल कसा” (प्रकाशक

मकतबा इब्ने तैमिया पोस्ट बाक्स १४०६४ कुवैत)

यहाँ यह प्रश्न भी पैदा होता है कि इस आयत के अवतरण के समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो और बेटियाँ हज़रत उम्मे कुल्सुम, और हज़रत ज़ैनब ज़िन्दा थीं फिर उन को छोड़ कर केवल हज़रत फ़ातिमा को अहले-बैत में शरीक करने का क्या मतलब? उम्मे कुल्सुम तो हज़रत उस्मान के निकाह में थीं और हज़रत ज़ैनब अबुलआस के निकाह में। लेकिन चूँकि शीआ हज़रत अली की इमामत के दावेदार हैं इस लिए वे अहले-बैत में हज़रत फ़ातिमा, हसन और हुसैन को तो शामिल करते हैं लेकिन उम्मे कुल्सुम और हज़रत ज़ैनब को नज़रंदाज़ कर देते हैं। इस लिए असंभव नहीं कि उक्त वर्णित रिवायत शीओं की गढ़ी हुई हो।

D) ऐसी व्याख्या करने वाले इस आयत को हज़रत अली और इमामों के मासूम होने पर तर्क की हैसियत से प्रस्तुत करते हैं लेकिन आयत में ऐसी कोई बात नहीं कही गई है। पहली बात तो यह कि आयत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों के बारे में है इस के अलावा इस में यह नहीं कहा गया है कि ऐ अहले बैत तुम को अल्लाह ने पाक साफ़ कर दिया है बल्कि कहा गया है कि अल्लाह तुम्हें पाक करना चाहता है और यह ऐसी ही बात है जैसे सूरह माइदा में ईमान वालों को वुजू का हुक्म देने के बाद फ़रमाया :-

وَلَكِنْ يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ

अर्थ :- “बल्कि वह चाहता है कि तुम्हें पाक साफ़ करे।” (माइदा - ६)

जाहिर है यहाँ इस का यह मतलब नहीं कि सभी ईमान वाले जिस को वुजू का हुक्म दिया जा रहा है वे पाक और मासूम हैं। बल्कि मतलब यह है कि वुजू के हुक्म पर अमल करने से उन को पाकीज़गी मिलेगी। इस में जिस प्रकार ईमान वालों के मासूम होने की कोई दलील नहीं है। उसी प्रकार आयत तहरीर में भी अहले-बैत के मासूम होने की कोई दलील नहीं है।

थोड़े विस्तार के साथ यह व्याख्या इस लिए की गई ताकि अन्दाज़ा हो जाए कि जो लोग अपनी ख़ास सोच और ख़ास धारणा को कुर्आन से साबित करना चाहते हैं वे कुर्आन के स्पष्ट भावार्थ को छोड़ कर किस तरह ग़लत व्याख्या के चक्कर में पड़ जाते हैं और कमज़ोर रिवायतों का सहारा ले कर कुर्आन को रिवायत के अनुकूल बनाना चाहते हैं चाहे इस के लिए उन्हें कितना ही उठा पटख क्यों न करना पड़े। और वास्तविकता यह है कि शीअिय्यत अपनाने वालों ने अपनी सोच, अपनी धारणा और अपने मसलक के पक्ष में इतनी अधिकता के साथ रिवायतें गढ़ी हैं कि सुन्नी भी उन से प्रभावित हुए बग़ैर न रह सके।

68. अल्लाह की आयतों से तात्पर्य कुर्आन की आयतें हैं और हिकमत से मुराद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा और आप के मुबारक आदेश हैं। उन को याद रखने का हुक्म विशेष रूप से आप की पत्नियों को दिया गया ताकि सब से पहले वे इस रौशनी से अपनी ज़िन्दगी को रौशन करें और साथ ही इस लाभ प्रद बातों को फैलाने में लग जाएं।

इस आदेश के अनुपालन में नबी की पत्नियों ने हदीस की जो सेवा की उस के लिए पूरी उम्मत उन की आभारी है। अल्लाह उन से राज़ी हो।

69. अल्लाह लतीफ़ अर्थात् सूक्ष्मदर्शी है इस लिए उस से कोई बात भी छिपी नहीं रह सकती।

70. ऊपर नबी की पत्नियों के लिए विशेष कृपादृष्टि थी अब यह मुसलमान मर्दों और औरतों के लिए सार्वजनिक रूप से विशेष कृपानुदान है। यहाँ वे गुण बयान हुए हैं जो वांछित आदर्श की हैसियत रखते हैं और प्रत्येक मुसलमान को चाहे वह मर्द हों या औरत अपने अन्दर यह गुण पैदा करना चाहिए और इन गुणों ही के आधार पर वह अल्लाह तआला से क्षमा दान और बड़े बदले का अधिकारी होगा।

मुस्लिम और मोमिन या इस्लाम और ईमान दोनों शब्द जब एक साथ प्रयुक्त होते हैं तो इस्लाम से मुराद होता है एकेश्वरवाद की धारणा को स्वीकार कर के इस्लाम को दीन की हैसियत से अपनाना तथा ईमान से मुराद होता है दिल से स्वीकार करना अर्थात् किसी व्यक्ति का मात्र अपने को मुसलमान कहलाना और इस्लामी धारणा को मानने का एलान करना उस के लिए सच्चा ईमान वाला होने के लिए काफ़ी नहीं बल्कि सच्चा मोमिन होने के लिए आवश्यक है कि वह दिल से इन अवधारणाओं को मानता हो और उसे इस्लाम के सत्यधर्म होने का विश्वास हो। अर्थात् किसी व्यक्ति का इस्लाम अल्लाह तआला के यहाँ उसी सूरत में स्वीकारणीय ठहरेगा जब कि उस का अन्दरून उस से मेल खाता हो वरना नाम मात्र के मुसलमान की अल्लाह तआला के यहाँ कोई मान सम्मान नहीं, कोई मूल्य नहीं।

71. “क्रानितीन” (आज्ञाकारी) होने का गुण व्यवहारिक वफ़ादारी को ज़ाहिर करता है अर्थात् इस्लाम और ईमान के बाद व्यवहारिक रूप से उन्होंने अल्लाह की वफ़ादारी का रवैया अपनाया।

72. सच बोलना और सत्यवादी बनना बहुत बड़ी विशेषता है मगर यह विशेषता और यह खूबी वही लोग अपने अन्दर पैदा करते हैं जो बुलन्दी की तरफ़ चढ़ने का साहस रखते हैं। आराम पसंद इन्सान को झूठ बोलने में तनिक भी संकोच नहीं होता और मौजूदा ज़माने में जब कि दुनिया का कारोबार झूठ ही पर चल रहा है, सच्चाई को अपनाए रहना अत्यंत कठिन काम है किन्तु

सत्यवादिता मनुष्य का मूल तत्व है और अल्लाह की नज़र में अत्याधिक प्रिय। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है।

عَلَيْكُمْ بِالصِّدْقِ فَإِنَّ الصِّدْقَ يَهْدِي إِلَى الْبِرِّ وَإِنَّ الْبِرَّ يَهْدِي إِلَى الْجَنَّةِ وَمَا يَزَالُ الرَّجُلُ يَصْدُقُ وَيَتَحَرَّى الصِّدْقَ حَتَّى يُكْتَبَ عِنْدَ اللَّهِ صِدْقًا . (مسلم کتاب البر)

अर्थ :- “सच्चाई अपनाओ, क्योंकि सच्चाई नेकी की तरफ़ ले जाती है और नेकी जन्नत की तरफ़। आदमी सच बोलता रहता है और सच्चाई ही को अपना लेता है यहाँ तक कि अल्लाह तआला के यहाँ सिद्दीक़ (बड़ा सच्चा) लिख लिया जाता है।” (मुस्लिम किताबुल बर)

73. सब्र की व्याख्या के लिए देखिए सूरह रअद नोट ५१

74. खुशू (विनम्रता) की व्याख्या के लिए देखिए सूरह मोमिनून नोट २, यहाँ खुशू का इशारा नमाज़ की तरफ़ है।

75. सदका में ज़कात भी शामिल है और अल्लाह की राह में हर प्रकार का खर्च भी। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताबा नोट १८९

76. गुप्तांगों की रक्षा में अपनी मर्यादा और पवित्रता की रक्षा भी शामिल है और सतर पोशी अर्थात् शरीर के छिपाने योग्य अंगों को ढाँकना भी। (देखिए सूरह मोमिनून नोट ५)

77. अल्लाह के ज़िक्र की व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट ३१०, सूरह ताहा नोट १६, १६१ तथा सूरह अनकबूत नोट ८५

78. क्षमादान गोया जन्नत का प्रवेश पत्र है और बड़ा बदला हमेशा हमेशा की वे नेमतें हैं जो अच्छे कर्म के प्रतिफल स्वरूप मिलेंगी।

यहाँ अखिरत की सफलता की ज़मानत उन्हीं लोगों को दी गई है जो अपने अन्दर उपरोक्त वर्णित गुण पैदा करें चाहे वे पुरुष हो या स्त्रियाँ। रहे नाम के मुसलमान जिन के जीवन इन गुणों से खाली हों तो उन के लिए यह ज़मानत नहीं है।

79. इस आयत में अत्यंत महत्वपूर्ण मौलिक एवं उसूली बात बयान हुई है। अल्लाह और उस के रसूल का जीवन से सम्बन्धित मामलों एवं समस्याओं पर कोई निर्णय दे दें तो ऐसा नहीं है कि उस के बाद किसी मुसलमान को न नुकुर करने या अपने अधिकार को इस्तेमाल करने का हक़ बाक़ी रहता हो। निर्णय किसी विवादित मामले पर हो अथवा किसी मतभेद पर हो अथवा किसी झगड़े से सम्बन्धित हो या उस निर्णय की हैसियत रसूल के अदालती फ़ैसले की हो, एक मुसलमान को उसे मन से स्वीकार करना चाहिए और निश्चित रूप से उस का

पालन करना चाहिए।

जीवन को धर्म और संसार के खानों में विभक्त कर अल्लाह और उस के रसूल के कितने ही फैसलों को जो परिवारिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन से सम्बन्धित हैं रद्द कर देना और तथाकथित धर्मनिरपेक्ष जीवन पद्धति को अपनाना इस्लाम से खुली विमुखता है।

जहाँ तक अल्लाह के फैसलों का सम्बन्ध है वे कुर्आन में मौजूद हैं और निश्चित रूप से मान्य। रहे रसूल के फैसले तो जिन फैसलों का क्रमानुसार प्रमाण मिलता है उन के भी निश्चित रूप से मान्य होने में संदेह नहीं और जो विश्वसनीय उल्लेखकर्ताओं की रिवायत के विरुद्ध हो, या उस रिवायत में कोई ऐसी बात बयान हुई जो न तर्कसंगत हो न बुद्धिसंगत हो बल्कि उलझी हुई हो या जो प्रमाणिक न हो। ऐसी रिवायतों के बारे में जब दृढ़ता पूर्वक यह नहीं कहा जा सकता कि वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के इर्शादों में से हैं तो वे हुज्जत नहीं हो सकती और निश्चित रूप से मान्य भी नहीं। अतः हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़ातिमा बिनत क़ैस की उस हदीस को जिस में बयान हुआ कि बाइन तलाक़ दी हुई औरत के लिए उस के पूर्व पति के ज़िम्मे नुफ़्का (खर्च) नहीं है यह कह कर रद्द कर दिया था कि:-

لَا تَرْكُ كِتَابِ اللَّهِ وَ سُنَّةَ نَبِيِّنا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِقَوْلِ
إِمْرَأَةٍ لَأَنْدَرِي لَعَلَّهَا حَفِظْتُ أَوْ نَسِيتُ . (مسلم کتاب الطلاق)

अर्थ:- “हम अल्लाह की किताब और अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत मात्र एक औरत के कहने पर नहीं छोड़ देंगे। हमें नहीं मालूम उस ने (इर्शाद को) सुरक्षित (याद) रखा या भूल गई।” (मुस्लिम किताबुतलाक़)

वे अल्लाह के संदेशों को पहुँचाते हैं और उसी से डरते हैं और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते। और हिसाब लेने के लिए अल्लाह काफ़ी है। मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के बाप नहीं है बल्कि वह अल्लाह के रसूल और (खातमन्नबिय्यीन) नबियों के समापक हैं और अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है। ऐ ईमान वाले ! अल्लाह को अधिकता के साथ याद करो। (अल-कुआन)

37. (ऐ नबी !) जब तुम उस व्यक्ति से कह रहे थे जिस पर अल्लाह ने एहसान किया और तुम ने भी, ⁸⁰ कि अपनी पत्नी को अपने पास रखो (अर्थात् तलाक़ न दो) और अल्लाह से डरो ⁸¹ और अपने दिल में वह बात छिपा रहे थे जिस को अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था। ⁸² तुम लोगों से डर रहे थे, हालाँकि अल्लाह इस बात का ज़्यादा हक़दार है कि उस से डरो। ⁸³ फिर जब ज़ैद उस से अपनी गरज़ (ज़रूरत) पूरी कर चुका तो हम ने उस को तुम्हारे विवाह में दे दिया ⁸⁴ ताकि ईमान वालों पर उन के मुँह बोले बेटों की पत्नियों के मामले में जब कि वे उन से अपनी ज़रूरत पूरी कर चुके हो, कोई तंगी न रहे। ⁸⁵ और अल्लाह के हुक्म को अमल में आना ही था। ⁸⁶

وَأَذِّنْ لِلَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفَىٰ فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ فَلَمَّا قَضَىٰ زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاكَ لِلْكِ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿٣٧﴾

38. नबी पर ऐसे काम में कोई तंगी नहीं जो उन के लिए अल्लाह ने नियत कर दिया हो ⁸⁷ अल्लाह की यही सुन्नत (नियम) उन (नबियों) के मामले में रही है जो पहले गुज़र चुके हैं ⁸⁸ और अल्लाह का हुक्म एक अकाट्य निश्चित निर्णय होता है। ⁸⁹

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَقْدُورًا ﴿٣٨﴾

39. वे अल्लाह के संदेशों को पहुँचाते हैं और उसी से डरते हैं और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते। ⁹⁰ और हिसाब लेने के लिए अल्लाह काफ़ी है। ⁹¹

لِلَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ﴿٣٩﴾

40. मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के बाप नहीं है ⁹² बल्कि वह अल्लाह के रसूल और (खातमन्नबियीन) नबियों के समापक हैं ⁹³ और अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है। ⁹⁴

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٤٠﴾

41. ऐ ईमान वालो ! अल्लाह को अधिकता के साथ याद करो। ⁹⁵

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ﴿٤١﴾

42. और सुबह व शाम उस की तस्बीह (पाकी बयान) करो। ⁹⁶

وَسَبِّحْهُ بَكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٤٢﴾

80. इस से मुराद ज़ैद बिन हारिसा हैं जो गुलाम थे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नबी नियुक्त होने से पहले उन को आज़ाद कर के अपने बेटे की तरह उन की परवरिश की थी इस लिए वह आप के मुँह बोले बेटे (दत्तक पुत्र) कहलाते थे। अल्लाह तआला ने ज़ैद पर यह एहसान किया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की संगत में रहने के कारण ईमान की तौफ़ीक़ दी। अतः मक्का में सब से पहले ईमान लाने वालों में हज़रत ज़ैद शामिल हैं और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन पर यह एहसान किया था कि उन को गुलामी से आज़ाद कर के उन का पालन पोषण और उन की तरबियत की थी। अल्लाह के इस उदार अनुग्रह और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस एहसान के फलस्वरूप हज़रत ज़ैद एक प्रमुख व्यक्ति की हैसियत से उभरे और कई महत्वपूर्ण कारनामे अन्जाम दिये। यह खुला उदाहरण है इस बात का कि इस्लाम ने एक गुलाम को कितने ऊँचे स्थान पर पहुँचाया।

81. हज़रत ज़ैद ने हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश से जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फ़ूफ़ीज़ाद बहन थी विवाह कर लिया। एक आज़ाद किये गुलाम के साथ एक कुरैशी महिला का विवाह सामाजिक समानता को स्थापित करने का उत्तम उदाहरण है लेकिन चूँकि मिज़ाज मेल नहीं खाते थे इस लिए एक डेढ़ साल के अन्दर ही तलाक़ तक नौबत पहुँच गई। इस मौक़े पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ैद को तलाक़ से रोकना चाहा और उन्हें हिदायत की कि वह इस मामले में अल्लाह से डरें। किन्तु जब ज़ैद ने देखा कि निर्वाह होना मुश्किल है तो उन्होंने अपनी पत्नी को विवाह के बन्धन से मुक्त कर देने का निर्णय किया।

इस से एक उसूली बात तो यह स्पष्ट हुई कि इस्लाम ने यद्यपि मर्द को तलाक़ का अधिकार दिया है परन्तु इस अधिकार को इस्तेमाल करते हुए अल्लाह से डरना चाहिए। अर्थात् इस अधिकार के बेजा इस्तेमाल से औरत को अत्याधिक कष्ट पहुँच सकता है। और यह अल्लाह के नज़दीक नापसंदीदा बात होगी और इस पर पकड़ हो सकती है।

दूसरी बात यह स्पष्ट हुई कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नहीं चाहते थे कि ज़ैद अपनी पत्नी को तलाक़ दे दें। अतः जिन रिवायतों में इस घटना को कहानी का स्वरूप दे कर यह बात जताने के प्रयास किये गये हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़ैद की विवाहिता को अपने विवाह में लेने के इच्छुक थे, वह बयान कुआन के विरुद्ध है और एक ऐसी बात है जो आप की पवित्र जीवनी से कदापि मेल नहीं खाती इस कारण ये रिवायतें रद्द कर देने के योग्य हैं।

इस तरह यह रिवायत भी है कि हज़रत ज़ैनब ज़ैद से विवाह

करने के लिए आमादा नहीं थीं। किन्तु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बहुत कहने पर उन्होंने विवाह कर लिया था जो अन्ततः तलाक़ पर जा कर समाप्त हुआ। पहली बात तो यह कि किसी सही हदीस से साबित नहीं और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ किसी बात को मन्सूब करने के लिए हदीस का सही होना आवश्यक है। केवल जीवनी लिखने वालों का लिख देना या इब्ने अबी हातिम जैसी हदीस की तीसरे दर्जे कि किताब में किसी रिवायत का बयान होना, रसूल की हदीस होने का पर्याप्त सबूत नहीं है। इस के अलावा यह भी कि ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता कि आप ने किसी स्त्री को उस की पसन्द के खिलाफ़ किसी पुरुष से निकाह करने पर विवश किया हो। यहाँ तक कि बुरैरह को उस का पूर्व पति अपने विवाह में लेने के लिए बेहद परेशान और बेचैन रहा और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस की परेशानी को देखते हुए यह चाहते थे कि बुरैरह अपने पूर्व पति की ओर लौट जाएँ, परन्तु आप ने उस को विवश नहीं किया और न वे अपने पूर्व पति के पास लौटें। फिर आप अपनी फ़ूफ़ीज़ाद बहन को एक ऐसे व्यक्ति से निकाह के लिए क्यों विवश करते जो पहले गुलाम रह चुका था।

82. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने जैसा कि आयत के आखिरी शब्द “अल्लाह का हुक्म तो अमल में आना ही चाहिए था” से स्पष्ट है, यह हुक्म दिया गया था कि ज़ैद के तलाक़ देने की सूरत में आप को उन की तलाक़ दी हुई स्त्री से निकाह करना होगा ताकि अज्ञान काल की यह प्रथा कि मुँह बोले बेटे की तलाक़ दी हुई स्त्री से विवाह नहीं किया जा सकता, समाप्त हो जाए। परन्तु आप अपने अन्दर इस भय को महसूस कर रहे थे कि इस सूरत में मुनाफ़िकों और काफ़िरों को आप के विरुद्ध एक फ़ितना खड़ा करने का अवसर मिलेगा। इस लिए आप चाहते थे कि न ज़ैद तलाक़ दें और न आप को उन की तलाक़ दी हुई स्त्री से निकाह करने की नौबत आए। मगर अल्लाह आप के इस भय को जो आप अन्दर ही अन्दर महसूस फ़रमा रहे थे ज़ाहिर करने वाला था। अतः उस ने इस आयत के द्वारा न केवल उस को ज़ाहिर कर दिया बल्कि इस पर ध्यानाकृष्ट भी कराया कि अल्लाह के हुक्म के मामले में किसी भय को खातिर में लाना सही नहीं।

इस का यह मतलब नहीं है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह की आज्ञा के पालन में तनिक भी संकोच किया था क्योंकि अभी उस आज्ञा के पालन की नौबत ही नहीं आई थी। बल्कि इस का मतलब यह है कि यद्यपि उस के आदेशनुपालन की नौबत अभी नहीं आई किन्तु जब एक इशारा अल्लाह की ओर से मिल गया तो फिर लोगों की तरफ़ से आने

वालो एतिराज आदि को खातिर में लाना नबी की शान के खिलाफ है।

आयत के प्रसंग से यह मतलब स्पष्ट होता है परन्तु कुछ रिवायतों में इस का बिलकुल उलटा मतलब बयान हुआ है और ये रिवायतें कुछ तफ्सीरों में भी आ गई हैं जिन का खुलासा यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़ैद को तलाक़ देने से ऊपर ऊपर से तो मना कर रहे थे परन्तु चाहते थे कि ज़ैद अपनी पत्नी को तलाक़ दें ताकि फिर स्वयं उस से विवाह करें। यही बात थी जिस को आप अपने दिल में छिपाये हुए थे। मगर इन रिवायतों के खण्डन के लिए आयत के ये शब्द ही काफ़ी हैं **مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ** “जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था।” अब प्रश्न यह है कि अल्लाह तआला ने इस घटना के बारे में क्या बात ज़ाहिर की? क्या यह कि आप चाहते थे कि ज़ैद अपनी पत्नी को तलाक़ दें ताकि आप उस से निकाह कर सकें या यह कि आप ज़ैद को तलाक़ देने से मना कर रहे थे और नहीं चाहते थे कि उन की पत्नी से निकाह की नौबत आए। पहली बात तो अल्लाह तआला ने कही नहीं ज़ाहिर की। फिर उल्लेख कर्ताओं को कैसे मालूम हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने दिल में हज़रत ज़ैनब से विवाह करने का ख़याल छिपाये हुए थे। अलबत्ता दूसरी बात कि आप नहीं चाहते थे कि ज़ैद उन्हें तलाक़ दें और फिर उन से निकाह करने की नौबत आए और लोगों को विवाद खड़ा करने तथा एतिराज जड़ने का मौक़ा मिले, आयत के मज़मून से बिलकुल स्पष्ट है।

83. यहाँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सचेत किया गया है कि अल्लाह के आदेशानुपालन में लोगों के प्रति किसी भय को मन में न बिठाएँ। कुर्आन की नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह पकड़ कुर्आन के अल्लाह के कलाम होने की स्पष्ट दलील और आप की सत्यता का रौशन सबूत है। यदि कुर्आन आप की लिखी रचना होती तो उस में ऐसी आयतें न होतीं जिन में आप की बहुत ही हल्की कोताही पर पकड़ की गई है।

84. अर्थात् जब ज़ैद ने अपनी पत्नी ज़ैनब बिनत जहश को तलाक़ दे दी और उस की इद्दत पूरी हो गई तो अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आदेश दिया कि आप उस से निकाह करें अतः आप ने अल्लाह तआला के इस आदेश का अनुपालन किया और हज़रत ज़ैनब आप के विवाह में आ गई। इब्ने हिशाम का बयान है कि :-

“रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ैनब बिन जहश बिन रिसाइब अल-असरिया से निकाह कर लिया। उन के भाई अबु अहमद बिन जहश ने आप से उन का निकाह कर दिया। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन को

चार सौ दिरहम महर दिया। इस से पहले वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम द्वारा आज़ाद किये गए गुलाम ज़ैद बिन हारिसा के निकाह में थी। उन ही के बारे में अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल की

فَلَمَّا قَضَىٰ زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَا كَهَا

अर्थ :- “जब ज़ैद ने अपनी ज़रूरत पूरी कर ली तो हम ने उस का निकाह तुम से कर दिया” (सीरत इब्ने हिशाम जिल्द ४ पृष्ठ ३२२)

यह रिवायत अगर सही है तो इस का मतलब यह हुआ कि यह निकाह शरीअत के नियमानुसार अन्जाम पाया था। अलबत्ता चूँकि यह अल्लाह के हुक्म से हुआ था इस लिए इसे एक तरह की प्रमुखता प्राप्त थी। इसी कारण हज़रत ज़ैनब को अपने निकाह पर गर्व था। बुखारी में है :-

“ज़ैनब बिनत जहश रजि. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों से गर्व के साथ कहती, आप लोगों का निकाह आप के घर वालों ने कर दिया लेकिन मेरा निकाह अल्लाह तआला ने सातवें आसमान के ऊपर से कर दिया” (तफ्सीर इब्ने कसीर जिल्द ३ पृष्ठ ४९१)

बहरहाल यह बात कुर्आन और हदीस से साबित है कि हज़रत ज़ैनब बिनत जहश रजि. से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निकाह अल्लाह के हुक्म से हुआ था इस लिए इस निकाह से सम्बन्धित जिन रिवायतों में व्यर्थ के क्रिस्से बयान हुए हैं उन का आप से आप खण्डन हो जाता है। इब्ने जरीर तबरी को अल्लाह माफ़ करे उन्होंने ने सावधानी नहीं बरती और एक ऐसी रिवायत उद्धृत की जिस में इस निकाह से सम्बन्धित बड़ा ही बेहूदा क्रिस्सा बयान हुआ है और जिस से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में तौहीन भी होती है। ऐसी रिवायतों से इस्लाम दुश्मनों को रसूल के व्यक्तित्व पर हंसने और खिल्ली उड़ाने का मौक़ा मिलता है। हम उस बेहूदा रिवायत को यहाँ नकल करना भी उचित नहीं समझते और अल्लामा इब्ने कसीर के इस स्पष्टीकरण को काफ़ी समझते हैं।

“इस मौक़े पर इब्ने अबी हातिम और इब्ने जरीर ने कुछ सहाबा से कुछ क़ौल (कथन) नकल किये हैं लेकिन उन की अप्रमाणिकता के आधार पर हम ने उन को नज़रंदाज़ करना उचित समझा अतः हम उन को बयान नहीं करेंगे।” (तफ्सीर इब्ने कसीर जिल्द ३ पृष्ठ ४९१)

85. यह वह मसलहत है जिस के चलते अल्लाह तआला ने अपने रसूल को ज़ैद द्वारा तलाक़ दी हुई स्त्री से निकाह करने का विशेष आदेश दिया था। इस निकाह ने वह रुकावट दूर कर दी जो मुँह बोले बेटे की पत्नी से ब्याह करने के सिलसिले में

अज्ञानता काल से चली आ रही थी और इस्लाम के वैवाहिक (परिवारिक) नियम की एक महत्वपूर्ण धारा उभर कर सामने आ गई।

हज़रत ज़ैनब से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विवाह उस समय हुआ जब कि आप की चार पत्नियाँ मौजूद थीं। चार से अधिक औरतों से विवाह की अनुमति जो विशेष रूप से आप को दी गई थी वह बहुत सारी दीनी मसलहतों पर ही आधारित थी। किन्तु एतिराज़ करने वाले इस से आँखें बन्द कर लेते हैं और नुबुव्वत की शान में बुरा भला कहकर खुद भी गुमराह होते हैं और अन्य लोगों की गुमराही का सामान भी करते हैं। मौजूदा ज़माने में तो एतिराज़ करने वालों ने इस को ख़ास मुद्दा बना लिया है। शायद उन्हें यह नहीं मालूम कि चाँद पर थूकने का क्या परिणाम सामने आता है।

86. अर्थात् जब अल्लाह ने अपने नबी को इस विवाह का आदेश दिया था तो उसे निश्चित रूप से अमल में आना चाहिए था।

87. अर्थात् नबी को इत्मीनान रखना चाहिए कि जो काम भी अल्लाह ने उस के लिए निर्धारित किया है चाहे वह निकाह का ही मामला क्यों न हो, उस के करने में उस के लिए कोई हरज नहीं है। और न उस को एतिराज़ों की परवाह करना चाहिए और न यह सोच कर परेशान हो जाना चाहिए, कि इस को इस्लाम के प्रति शक और संदेह पैदा करने का साधन बनाया जाएगा। क्यों कि अल्लाह अपने दीन की मसलहतों को बेहतर जानता है।

88. अर्थात् इस से पहले भी नबियों को अल्लाह ऐसे आदेश देता रहा है। जो उन के लिए इस दृष्टि से आजमाइश का कारण रहे हैं कि उन के विरोधी इन को उन पर दोषारोपण का साधन बना लेंगे। परन्तु उन्होंने ने इस की कोई परवाह न करते हुए अल्लाह के आदेश का पालन किया और नबियों का तरीका यही है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी हज़रत ज़ैनब से निकाह कर के अल्लाह के इर्शाद का अनुपालन किया और वही रवैया अपनाया जो प्रत्येक नबी अपनाते रहे हैं यह सोचे बग़ैर कि विरोधियों की क्या प्रतिक्रिया होगी। शुरू में जब कि अल्लाह तआला की तरफ़ से आप को इशारा भर मिला था तो यह विचार ज़रूर परेशान करता रहा की, शत्रुगण इस के ज़रिया आप के पवित्र जीवनी को दागदार बनाने की कोशिश करेंगे। परन्तु जब अल्लाह का स्पष्ट आदेश आ गया तो आपने निःसंकोच आदेशानुपालन किया।

आधुनिक युग में पश्चिमी सभ्यता के प्रेमी जब आप की पवित्र जीवनी में किसी प्रकार के दोषों की निशानदेही नहीं कर

पाते तो आप की पत्नियों की संख्या को मुद्दा बना कर आप की शान में तौहीन करने लगते हैं तथा बुरा भला कहने लगते हैं। जब कि यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि आप ने यह निकाह बिल्कुल शौक्रिया नहीं किये थे बल्कि दीन की बड़ी मसलहत के तहत किये थे। और हज़रत ज़ैनब से निकाह तो आपने अल्लाह के सीधे आदेश पर किया था वरना आप इस के इच्छुक न थे। और जब वास्तविकता यह है तो एतिराज़ करने वालों को जवाब देने के लिए झुकना नहीं चाहिए न ही झुका रवैया अपनाना चाहिए।

89. अर्थात् अल्लाह जब अपने नबी को किसी काम के करने का आदेश देता है तो उस की हैसियत एक निश्चित निर्णय की होती है जिस का लागू होना सुनिश्चित है। उस को किसी तरह टाला नहीं जा सकता।

90. अर्थात् नबियों का तरीका यही रहा है कि वे अल्लाह के संदेशों को पहुँचाने की ज़िम्मेदारी अदा करते रहे और इस सिलसिले में उन्होंने किसी एतिराज़ या निन्दा की परवाह न की और केवल अल्लाह ही से डरते रहे। उन ही के पदचिन्हों का ऐ नबी! आप को भी अनुकरण करना है।

91. अर्थात् जब हिसाब अल्लाह को देना है तो इस की चिन्ता में आदमी को ग्रस्त होना चाहिए।

92. अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं तो न ज़ैद आप के बेटे हुए और न ज़ैनब आप की बहु हुई। फिर ज़ैनब को तलाक़ होने पर उन से आप के निकाह करने में क्या आपत्ति है?

ध्यान रहे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बेटा ज़रूर हुआ परन्तु उन का देहान्त बचपन में ही हो गया था और इस आयत के उतरने के समय कोई बेटा भी ज़िन्दा नहीं था। बाद में मारिया क़िब्तिয়া से एक लड़का पैदा हुआ जिस का नाम आप ने इब्राहीम रखा था मगर उस का भी देहान्त बचपन में ही हो गया।

93. ख़ातिम का अर्थ अन्त अथवा आख़िर के हैं। अरबी के प्रसिद्ध एवं प्रमाणिक शब्दकोष लिसानुल अरब में है :-

خَاتَمُهُمْ : آخِرُهُمْ

अर्थ :- क्रौम का ख़ातम अर्थात् उन का आख़िर व्यक्ति “(लिसानुलअरब जिल्द १२ पृष्ठ १६४)

और ख़ातमन्नबिय्यीन का अर्थ आख़िरी नबी के हैं। इस मौक़े पर नबी और रसूल के उस अन्तर का भी ध्यान रखना चाहिए कि नबी की बनिस्बत रसूल का स्थान विशिष्ट है। अर्थात् हर रसूल नबी होता है परन्तु हर नबी अपने पद की दृष्टि से रसूल नहीं होता। अतः जब आयत से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आख़िरी नबी होने की पुष्टि कर दी गई तो

आप का आखिरी रसूल होना आप से आप स्पष्ट हो गया। आयत का मतलब यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई रसूल या नबी आने वाला नहीं है। इस लिए दीन को आप ही के हाथों पूर्ण होना है और इस का तकाज़ा है कि मुँह बोले बेटे की तलाक़ दी हुई स्त्री से निकाह की मनाही की प्रथा को जो कि अज्ञानता काल से चली आ रही है उस की आप के हाथों समाप्ति हो और लोगों पर यह स्पष्ट हो जाए कि अल्लाह की शरीअत में यह निकाह बिल्कुल जायज़ है। अगर आप के हाथों इस अज्ञान काल की कुप्रथा का सुधार नहीं हुआ तो फिर आप के बाद कोई नबी आने वाला नहीं है जो इस कसर को पूरा कर दे।

आयत में नुबुव्वत के समाप्त होने की जो बात बयान हुई है वह इस्लामी अक़ीदे का एक हिस्सा है। कुर्आन न केवल यह कि किसी आने वाले नबी की भविष्यवाणी नहीं करता जब कि विगत आसमानी ग्रंथों में आने वाले नबी के बारे में भविष्यवाणियाँ मौजूद रही हैं, बल्कि कुर्आन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आखिरी नबी बताते हुए दीन के पूरा होने की घोषणा करता है।

الْيَوْمَ اكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ (सूरा मائدة: ३)

अर्थात् जब इस्लाम पूर्ण चन्द्रमा बन कर आसमान पर रौशन हो गया तो अतिरिक्त किसी रौशनी की ज़रूरत बाक़ी नहीं रही। फिर यह ज़मानत भी दी गई कि जो हिदायत इस नबी पर नाज़िल की गई है वह सुरक्षित रहने वाली है इस लिए कि इस की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआला ने स्वयं ले रखी है।

(إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لِحَافِظُونَ. सूरा حجر: ९)

इस लिए इस में किसी काट छाँट की भी संभावना नहीं है कि किसी दूसरे नबी को इस की इस्लाम और सुधार के लिए भेज दिया जाए।

नुबुव्वत का सिलसिला समाप्त हो जाने के सबूत में कुर्आन के अलावा कई हदीसों को प्रस्तुत किया जा सकता है। उदाहरण स्वरूप यहाँ कुछ हदीसों प्रस्तुत की जाती हैं।

مَثَلِي وَمَثَلُ الْأَنْبِيَاءِ مِنْ قَبْلِي كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنَى بَيْتًا فَاحْسَنَهُ وَاجْمَلَهُ الْأَمْوَضِعَ لَبْنَةٍ مِنْ زَاوِيَةٍ فَجَعَلَ النَّاسُ يَطُوفُونَ بِهِ وَيَعْجَبُونَ لَهُ وَيَقُولُونَ هَذَا بَيْتُ اللَّهِ قَالَ فَأَنَا اللَّبْنَةُ وَأَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّينَ. (بخاری کتاب احادیث الانبیاء)

अर्थ:- “हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरी और पूर्व नबियों की मिसाल उस व्यक्ति की सी है जिस ने एक सुन्दर और

शानदार मकान बनाया लेकिन उस के एक किनारे में एक ईंट की जगह ख़ाली छोड़ दी। लोग उस के गिर्द घूमते और उस की सुन्दरता पर आश्चर्य जताते अलबत्ता (ख़ाली जगह को देख कर) कहते क्या बात है यहाँ ईंट नहीं रखी गई। आप ने फ़रमाया तो वह ईंट मैं हूँ और मैं नबियों का समापक हूँ।” (बुख़ारी किताबुल अहादीसुल अम्बिया)

كَانَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ تَسُوسُهُمُ الْأَنْبِيَاءُ كُلَّمَا هَلَكَ نَبِيٌّ خَلَفَهُ نَبِيٌّ وَإِنَّهُ لَانَبِيٌّ بَعْدِي وَسَيَكُونُ خَلَفَاءُ. (بخاری کتاب السّاقب)

अर्थ:- “बनी इस्राईल का नेतृत्व नबी किया करते थे। जब एक नबी का इन्तिक़ाल हो जाता तो दूसरा नबी उस की जगह आ जाता परन्तु मेरे बाद कोई नबी नहीं बल्कि ख़लीफ़ा होंगे।” (बुख़ारी किताबुलमनाज़िब)

وَأَرْسَلْتُ إِلَى الْخَلْقِ كَافَّةً وَخَتَمَ بِي النَّبِيُّونَ. (مسلم کتاب المساجد)

अर्थ:- “मुझे समस्त सृष्टियों की ओर नबी बना कर भेज दिया गया है और नबियों का सिलसिला मुझ पर समाप्त कर दिया गया है।” (मुस्लिम किताबुलमसाजिद)

وَأَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّينَ لَأَنْبِيٍّ بَعْدِي. (ترمذی ابواب الفتن)

अर्थ:- मैं आखिरी नबी हूँ। मेरे बाद कोई नबी नहीं। (तिर्मिज़ी अबवाबुलफ़तन)

आप के आखिरी नबी होने पर सहाबा का इज्मा (सहमति) है और पूरी उम्मत इस पर सहमत है। अल्लामा आलूसी लिखते हैं।

“रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आखिरी नबी होने तथा नबियों के समापक होने पर अल्लाह की किताब साक्ष्य है। सुन्नत ने भी इस को खोल कर बयान कर दिया है और उम्मत इस पर सहमत है। अतः जो व्यक्ति इस के विरुद्ध कोई दावा करे उसे काफ़िर क़रार दिया जाएगा। और अगर उस ने इस पर हट किया तो उसे क़त्ल कर दिया जाएगा।” (रूहुल मआनी जिल्द २२ पृष्ठ २१)

अल्लामा इब्ने कसीर फ़रमाते हैं

“अल्लाह तआला ने अपनी किताब में और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी सुन्नत में जो तवातुर से साबित है, ख़बर दी कि आप के बाद कोई नबी नहीं ताकि लोगों को मालूम हो जाए कि आप के बाद जो व्यक्ति भी इस पद का दावेदार होगा, वह झूठा, आरोपी और दज्जाल (धोखेबाज़) है। खुद भी गुमराह है और दूसरों को भी गुमराह करने वाला है।” (तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द ३ पृष्ठ ४९८)

नुबुव्वत समाप्ति के इस स्पष्ट अक़ीदे के बावजूद जिस पर

कुर्आन और सुन्नत गवाह हैं और जिस पर उम्मत एक मत है मौजूदा ज़माने में कुछ लोगों ने इस की ग़लत और गुमराह करने वाली व्याख्या कर के एक नई नुबुव्वत का फ़िल्ता खड़ा कर दिया है। क़ादियानी धर्म की आधारशिला इसी ग़लत अवधारणा पर है और बहाई धर्म भी नई नुबुव्वत ही का दावेदार है। हालाँकि नुबुव्वत का झूठा दावा परले दजें की गुमराही और एक संगीन अपराध है। कुर्आन कहता है :-

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ
أُوْحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ - (انعام- १३)

अर्थ :- “और उस से बड़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या दावा करे कि मुझ पर प्रकाशना (वह्य) की गई है हालाँकि उस पर कोई वह्य न की गई हो।” (अनआम ९३)

और जो लोग नुबुव्वत के झूठे दावेदारों पर ईमान लाते हैं वे वास्तव में तागूत (अल्लाह की विरोधी शक्तियों) पर ईमान लाते हैं जब कि उस से कुफ़्र करने अर्थात् उस का इन्कार करने का आदेश दिया गया है।

94. यह इशारा है इस बात की तरफ़ कि अल्लाह ने नुबुव्वत के समापन का निर्णय अपने ज्ञान के आधार पर किया है। उस को आगे के हालात का भी ज्ञान है इस लिए उस के फ़ैसले में किसी ग़लती की संभावना नहीं है। अब यह सूरज क्रियामत तक रौशनी देता रहेगा।

95. अल्लाह का ज़िक्र एक ऐसी इबादत है जिस के लिए कोई सीमा निर्धारित नहीं की गई है। यह जितना अधिक हो सके करना चाहिए ज़िक्र का मतलब जैसा कि हम स्पष्ट करते आए हैं, दिल की आमादगी के साथ अल्लाह को याद करना, ज़बान पर उस का नाम जारी रखना और पूरे विवेक के साथ उस की प्रशंसा के गुणगान करते रहना। अल्लाह को इस तरह याद करने ही का फल वह है जो आगे आयत ४३ में बयान हुआ है और हदीस में ऐसे ही ज़िक्र की फ़ज़ीलत (महत्व) बयान हुई है।

مَثَلُ الَّذِي يَذْكُرُ رَبَّهُ وَالَّذِي لَا يَذْكُرُهُ مَثَلُ

الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ - (بخاری کتاب الدعوات)

अर्थ:- “उस व्यक्ति की मिसाल जो अपने रब को याद करता है और उस की जो याद नहीं करता, ज़िन्दा और मुर्दा

की सी है।” (बुखारी किताबुद्दावत)

अर्थात् अल्लाह को याद करने से विवेक जागृत होता है और अन्तर्मन में ताज़गी पैदा हो जाती है परन्तु जो व्यक्ति अल्लाह को याद नहीं करता वह ग़फ़लत में पड़ा रहता है और उस का ज़मीर मुर्दा हो जाता है।

إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ : يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى :
أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي ، وَأَنَا مَعَهُ إِذَا ذَكَرَنِي ، فَإِنْ
ذَكَرَنِي ، فِي نَفْسِهِ ذَكَرْتُهُ فِي نَفْسِي وَإِنْ ذَكَرَنِي فِي
مَلَأَةٍ ذَكَرْتُهُ فِي مَلَأَةٍ خَيْرٍ مِنْهُمْ - (بخاری کتاب التوحید)

अर्थ :- “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला इश्राद फ़रमाता है, मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ रहता हूँ जो वह मुझ से रखता है। जब वह मेरा ज़िक्र करता है तो मैं उस के साथ रहता हूँ। अगर वह मुझे दिल में याद करता है तो मैं भी अपने दिल में उसे याद करता हूँ और अगर वह मुझे महफ़िल में याद करता है तो मैं उस से बेहतर महफ़िल में उसे याद करता हूँ।” (बुखारी कितबुत्तौहीद)

قَالَ : لَا يَزَالُ لِسَانُكَ رَطْبًا مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ - (ترمذی أبواب الدعوات)

अर्थ :- “तुम्हारी ज़बान हमेशा अल्लाह के ज़िक्र से तर रहे।” (तिर्मिज़ी अबवाबुद्दावत)

عن عائشة رضي الله عنها قالت : كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ
يَذْكُرُ اللَّهَ عَلَى كُلِّ أَحْيَانِهِ - (رياض الصالحين برواية مسلم)

अर्थ :- “हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने सभी समयों में अल्लाह को याद किया करते थे।” (रियाज़ुस्सालिहीन मुस्लिम की रिवायत से)

कुर्आन और सुन्नत के इन स्पष्टीकरणों को ध्यान में रखते हुए अल्लाह के ज़िक्र का ज़बान से प्रवचन किये जाने के महत्व को घटाना या उस को बेक़ीमत समझना बड़ी ग़लत बात है और दीन की रूह को ठीक से न समझने का प्रतीक है।

96. तस्बीह से मुराद तस्बीह के दाने घुमाना नहीं है। बल्कि अल्लाह की पाकी बयान करना है। इस तस्बीह अर्थात् अल्लाह की पाकी बयान करने के लिए सुबह और शाम के समय का बड़ा महत्व है। इस लिए विशेष रूप से इन का वर्णन किया गया है।

43. वही है जो तुम पर रहमत भेजता है और उस के फ़रिश्ते भी। ताकि वह तुम्हें अंधकार से निकाल कर प्रकाश में ले आए।⁹⁷ वह ईमान वालों पर बृहत् मेहरबान है।

هُوَ الَّذِي يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّوْرِ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيْمًا ﴿٣٣﴾

44. जिस दिन वे उस से मिलेंगे उन का स्वागत सलाम से होगा⁹⁸ और उन के लिए उस ने सम्मान जनक बदला तैयार कर रखा है।

يَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامًا ۚ وَآعَدَ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيْمًا ﴿٣٤﴾

45. ऐ नबी ! हम ने तुम्हें ‘‘शाहिद’’⁹⁹ (गवाही देने वाला) ‘‘मुबशिशर’’¹⁰⁰ (खुशखबरी देने वाला) और ‘‘नज़ीर’’¹⁰¹ (खबरदार करने वाला) बना कर भेजा है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٣٥﴾

46. और अल्लाह की तरफ़ उस के इज़्ज़ (मर्जी) से दअवत देने वाला¹⁰² और रौशन चिराग़ बना कर।¹⁰³

وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِآذِنِهِ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا ﴿٣٦﴾

47. ईमान वालों को खुशखबरी दो कि उन के लिए अल्लाह की तरफ़ से बहुत बड़ा फ़ज़ल (अनुग्रह) है।

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُم مِّنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ﴿٣٧﴾

48. और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की बात न मानो, उन के कष्ट देने की परवाह न करो और अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) करो। अल्लाह इस बात के लिए काफ़ी है कि उस पर तवक्कुल (भरोसा) किया जाए।

وَلَا تَطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعَاؤُهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿٣٨﴾

49. ऐ ईमान लाने वालो !¹⁰⁴ जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो और फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो, तो तुम्हारे लिए उन पर कोई ईहत वाजिब नहीं है जिस को तुम गिनो। मगर उन्हें कुछ माल दो और अच्छे तरीक़े से विदा करो।¹⁰⁵

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَمْسُوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عَدَدَةٍ تَعْتَدُونَهَا فَمَتَّعُوهُنَّ وَسَرَخُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٣٩﴾

97. यह फल है अल्लाह की तस्बीह और उस के ज़िक्र का। जब यह चीज़ मोमिन के जीवन के नित्यकार्य बन जाते हैं तो अल्लाह उस पर रहमत भेजता है और फ़रिश्ते उस के लिए रहमत की दुआएँ करते हैं और इस की बरकतें इस तरह प्रकट होने लगती हैं कि अज्ञानता के अंधकार से निकलना और ज्ञान एवं हिदायत की रौशनी में आना आसान हो जाता है।

98. यह सम्मान है जो अल्लाह को अधिकता के साथ याद करने वाले मोमिनो को क्रियामत के दिन दिया जाएगा। अल्लाह तआला की तरफ़ से उन का स्वागत सलाम के सम्मानजनक और शान्तिपूर्ण शब्दों के साथ होगा।

99. यहाँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ बयान हुई हैं जो रिसालत के दायित्व से सम्बन्ध रखती हैं।

पहली विशेषता यह कि आप शाहिद हैं। शाहिद का अर्थ है :-

الشَّاهِدُ الْعَالِمُ الَّذِي يَبِينُ مَا عَلِمَهُ.
(لسان العرب ج ٣ ص ٢٣٩)

अर्थ :- “शाहिद अर्थात् जानने वाला जो बयान करे उस बात को जिसे वह जानता है”। (लिसानुल अरब जिल्द ३ पृष्ठ २३९)

और शहादत का अर्थ है सुनिश्चित एवं अन्तिम ख़बर

والشهادة خبر قاطع (ايضاً)

अर्थ:- “शहादत अर्थात् अन्तिम एवं सुनिश्चित ख़बर”।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शाहिद होने का मतलब यह है कि आप वही के ज्ञान के कारण अल्लाह की हस्ती तथा उस की विशेषताओं, उस के गुणों उस के आदेशों तथा उस की पसंद और ना पसन्द की आखिरी और पक्की ख़बर देने वाले हैं। दूसरे शब्दों में आप अल्लाह की तरफ़ से सच्चे दीन की गवाही देने वाले हैं। सूरह मुज़म्मिल में भी यह शब्द इसी अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ
كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا. (الزمر: १५)

अर्थ :- “हम ने तुम्हारी तरफ़ रसूल, तुम पर शाहिद (गवाह) बना कर उसी तरह भेजा जिस तरह फ़िरऔन की तरफ़ रसूल भेजा था।” (अलमुज़म्मिल १५)

कुछ उर्दू अनुवादकों ने शाहिद का अनुवाद हाज़िर और नाज़िर अर्थात् हर जगह मौजूद और सब कुछ देखने वाला कर दिया है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में उन के

अतिशयोक्तिपूर्ण एवं बिदअती अक्रीदे को ज़ाहिर करता है। जब कि प्रसंग की दृष्टि से यह अर्थ बिलकुल ग़लत है।

100. दुसरी विशेषता यह है कि आप मुबशिशर हैं। अर्थात् ईमान लाने वालों को अल्लाह की रहमत और हमेशा हमेशा की सफलता की खुशख़बरी देने वाले हैं। यह खुशख़बरी कुर्आन में भी दी गई है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने इर्शादात में भी दी है सही हदीसों में नेक कामों की जो फ़ज़ीलत बताई गई है वह वास्तव में इसी खुशख़बरी की लड़ी में पिरोये हुए मोती हैं। किन्तु याद रहे कि यह दौलत उन्हीं लोगों का हिस्सा है जो अपने ईमान में सच्चे और अल्लाह से डरने वाले हों।

101. तीसरी विशेषता यह कि आप नज़ीर हैं अर्थात् कुफ़्र और उद्दण्डता अपनाने वालों को अल्लाह के अज़ाब और आख़िरत के बुरे अन्जाम से ख़बरदार करने वाले हैं। कुर्आन में इन्ज़ार (ख़बरदार करने) का यह पक्ष इतना उजला एवं उभरा हुआ है कि जो व्यक्ति भी कुर्आन का अध्ययन करेगा वह यह महसूस किये बग़ैर नहीं रहेगा कि इन्कार करने वालों तथा अपराधियों के लिए जहन्नम बिलकुल खुल कर सामने आ गई है और हदीस में भी बुरे कर्मों के बुरे अन्जाम से आगाह कर दिया गया है।

102. चौथी विशेषता यह कि आप को अल्लाह तआला ने इस बात पर नियुक्त किया कि आप लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाएँ। चूँकि यह दअवत आप अल्लाह के इज़्ज़ (मर्जी) से दे रहे हैं इस लिए आप की दअवत बिलकुल हक़ है और पूरी तरह प्रामाणिक है।

103. पाँचवीं विशेषता यह है कि आप सिराज मुनीर अर्थात् रौशन चिराग़ हैं। तात्पर्य हिदायत के चिराग़ हैं जिस की रौशनी में आदमी अपनी अभीष्ट मन्ज़िल को पहुँच सकता है। कुर्आन और सुन्नत में ये पहलू इस तरह उजागर हुए हैं कि जैसे आज भी आप, हमारे बीच इन सभी विशेषताओं के साथ रहनुमाई के लिए मौजूद हैं।

104. यहाँ से विषय का रूख सामाजिक आदेशों की ओर मुड़ता है। इस आयत में तलाक़ से सम्बन्धित मसले का जवाब दिया गया है और बाद की कुछ आयतों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए विवाह से सम्बन्धित विशेष आदेश बयान हुए हैं।

105. यहाँ निकाह का शब्द प्रतिज्ञा अथवा पवित्र वचन के अर्थ में इस्तेमाल हुआ है और यही इस शब्द का मूल अर्थ है। और उन को छूने से तात्पर्य पति पत्नी का सम्बन्ध स्थापित करना है।

अगर किसी ने निकाह के बाद अपनी पत्नी से शारीरिक सम्बन्ध बनाने से पहले उस को तलाक़ दे दी तो इस सूरत में

औरत को इद्दत नहीं गुजारना होगी। परन्तु ऐसी सूरत में पति को चाहिए कि वह उसे कुछ माल, नक़द रूपये, कपड़े अथवा ज़ेवर आदि के रूप में अवश्य दे जैसा कि सूरह बक्रर: आयत २४१ में तलाक़ पाई औरतों के बारे में ताकीदी हुक्म दिया गया है। (कुछ माल की व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रर: नोट ३७६) यह कुछ माल (मताअ) महर के अतिरिक्त है। अगर महर निर्धारित हुई थी और पति पत्नी का सम्बन्ध स्थापित होने से पहले तलाक़ दे दी तो जैसा सूरह बक्रर: आयत २३७ में गुज़र चुका आधा महर देना होगा और महर निर्धारित नहीं हुआ था तो कुछ अतिरिक्त माल देते समय इस का लिहाज़ करना होगा। ध्यान रहे की महर का सम्बन्ध निकाह से है। इस लिए प्रत्येक तलाक़ शुदा को विदा करते समय उपहार देना आवश्यक है जो सामान्य रीति के अनुकूल हो अर्थात् जो न मर्द की हैसियत से अधिक हो और न इतना कम कि उस का कोई मूल्य ही न हो ! अल्लामा इब्ने तैमिया फ़रमाते हैं :-

“तीसरा कथन अधिक सही है और वह है इमाम अहमद द्वारा उल्लिखित, दूसरा कथन कि प्रत्येक तलाक़ शुदा के लिए मताअ (अतिरिक्त उपहार) है जैसा कि आयत से स्पष्ट है

وَلِلْمُطَلَّاتِ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ

और इस लिए भी कि अल्लाह तआला का इर्शाद है :-

إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ سَرَاحًا جَمِيلًا.

इस आयत में उन औरतों को जिन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दी गई हो मताअ (कुछ अतिरिक्त उपहार) देने का आदेश दिया गया है और यह आदेश उन तलाक़ शुदा औरतों के लिए ख़ास नहीं है जिन का महर निर्धारित नहीं किया गया था। जब कि अधिकतर औरतों को जो तलाक़ दी जाती है तो महर निर्धारित करने के बाद ही दी जाती है।” (संग्रह फ़तावा इब्ने तैमिया जिल्द ३२ पृष्ठ २७)

तलाक़ हो जाने की सूरत में औरत को अच्छे तरीक़े से विदा करने का आदेश दिया गया है और इस्लाम की यह उच्च नैतिक शिक्षा है कि जब जुदाई की नौबत आ जाए तो कुव्ववहार का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। बल्कि शराफ़त और भलाई का तरीक़ा अपनाना चाहिए। ताकि मन मुटाव एवं वैमनस्य कम से कम हो मगर आम तौर से मुसलमानों ने इस शिक्षा को भुला दिया है इस लिए जब रिश्ते टूटते हैं तो आपसी सम्बन्धों में और दूरी हो जाती है।



इस के बाद तुम्हारे लिए दूसरी औरतें जायज़ नहीं है और न यह जायज़ है कि उन की जगह दूसरी पत्नियाँ कर लो, चाहे उन की सुन्दरता तुम्हें कितनी ही प्रिय हो सिवाय उन के जो तुम्हारी मिल्कियत में हों (अर्थात् लौंडी अथवा दासी हों) और अल्लाह हर चीज़ पर निगराँ (निगाह रखे हुए) है। (अल-कुर्आन)

50. ऐ नबी !¹⁰⁶ हम ने तुम्हारे लिए तुम्हारी उन पत्नियों को जायज़ कर दिया जिन के महर तुम अदा कर चुके हो।¹⁰⁷ और उन औरतों को भी जो अल्लाह के प्रदान किये हुए माले-गनीमत में से तुम्हारी मिल्कियत में आई।¹⁰⁸ और तुम्हारे चचा, तुम्हारी फूफ़ियों, तुम्हारे मामाओं और तुम्हारी खालाओं की उन बेटियों को भी जिन्होंने तुम्हारे साथ हिजरत की है।¹⁰⁹ और उस मोमिन औरत को भी जिस ने अपने आप को नबी के लिए हिबा कर दिया हो बशर्ते कि नबी उस को अपने निकाह में लाना चाहे।¹¹⁰ यह दूसरे मोमिनों को छोड़ कर विशेष रूप से तुम्हारे लिए है।¹¹¹ - - - - - हम को मालूम है कि हम ने उन की पत्नियों और उन की ममलूक औरतों (दासियों) के बारे में उन पर क्या फ़र्ज किया है।¹¹² - - - ताकि तुम पर कोई तंगी न रहे।¹¹³ और अल्लाह क्षमा करने वाला और दया करने वाला है।¹¹⁴

51. इन में से तुम जिन को चाहो दूर रखो और जिन को चाहो अपने पास रखो। और जिन को तुम ने अलग रखा उन में से किसी को तुम तलब करो तो इस में भी तुम्हारे लिए कोई हरज नहीं। इस से इस बात की आशा अधिक की जा सकती है कि उन की आँखें ठण्डी हों और वे शोकाकुल न हों और जो कुछ भी तुम उन को दो वे उस पर वे सब राज़ी रहेंगी।¹¹⁵ अल्लाह जानता है जो कुछ तुम लोगों के दिलों में है।¹¹⁶ और अल्लाह सर्वज्ञ और सहनशील है।

52. इस के बाद तुम्हारे लिए दूसरी औरतें जायज़ नहीं है और न यह जायज़ है कि उन की जगह दूसरी पत्नियाँ कर लो, चाहे उन की सुन्दरता तुम्हें कितनी ही प्रिय हो।¹¹⁷ सिवाय उन के जो तुम्हारी मिल्कियत में हों।¹¹⁸ (अर्थात् लौंडी अथवा दासी हों) और अल्लाह हर चीज़ पर निगराँ (निगाह रखे हुए) है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ الَّتِي أَتَيْتَ
أُجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ
مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمَّتِكَ وَبَنَاتِ
خَالَكَ وَبَنَاتِ خَلَّتِكَ الَّتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ وَامْرَأَةً
مُؤْمِنَةً إِنْ وَهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ
يَسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ قَدْ عَلِمْنَا
مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ
لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ⑤٠

تُرْجَى مِنْ نَشَاءٍ مِنْهُنَّ وَتُؤْتَى إِلَيْكَ مِنْ نَشَاءٍ وَمِنْ ابْتِغَاءٍ
مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ذَلِكَ أَدْنَى أَنْ تَقْرَءَ عَيْنُهُنَّ
وَلَا يَحْزَنَ وَيَرْضَيْنَ بِمَا آتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا
فِي قُلُوبِكُمْ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ⑤١

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ
مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْبَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ
يَمِينُكَ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ رَقِيبًا ⑤٢

106. इस आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए पत्नियों की संख्या के बारे में विशेष नियम बयान हुआ है जिस से स्पष्ट होता है कि महत्वपूर्ण दीनी मसलहतों के चलते आप के लिए ख़ास छूट दे दी गई थी। और चूँकि यह छूट अल्लाह तआला की तरफ़ से थी इस लिए किसी को एतिराज़ का हक़ नहीं है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो भी निकाह किये उस परिधि क्षेत्र में रह कर ही किये जो अल्लाह तआला ने आप के लिए निर्धारित कर दिया था।

107. जिन औरतों के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने महर अदा किये थे वे छ थीं। हज़रत सौदा, हज़रत आइशा, हज़रत हफ़सा, हज़रत उम्मे सलमा, हज़रत ज़ैनब बिनत हारिस और हज़रत उम्मे हबीबा (हज़रत ख़दीजा और हज़रत ज़ैनब बिनत ख़ज़ीमा का पहले ही इन्तिकाल हो चुका था।) नबी की पत्नियों के महर जैसे कि हदीस में आता है पाँच सौ दिरहम (१४८७ ग्राम चाँदी) हुआ करता था (मुस्लिम किताबुन्निकाह) अलबत्ता उम्मे हबीबा का महर चार सौ दीनार (१७०० ग्राम सोना) था जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से हब्शा के शासक नज़ाशी ने अदा कर दिया था। (तफ़सीर इब्रे कसीर जिल्द ३ पृष्ठ ४९९)

यह मिसाल है दिल की विशालता के साथ महर अदा करने की। मगर मुसलमानों के एक वर्ग ने महर को मात्र रस्म समझ लिया है। या तो वे पचीस पचास रुपये महर बाँधते हैं जिस में पाँच ग्राम चाँदी भी नहीं आती जब कि वे शादि पर हज़ारों रुपये ख़र्च करते हैं या फिर दिखावे के लिए इतना बड़ा महर बाँधते हैं कि उस की अदायगी की नौबत ही नहीं आती! ये दोनों ही बातें सुधार योग्य हैं।

108. तात्पर्य वे औरतों हैं जो जंग में गिरफ़्तार हो कर ग़नीमत के तौर पर आप के हिस्से में आई हों। ऐसी औरतों से निकाह करने की आप को अनुमति थी। इस अनुमति के तहत आपने हज़रत जुवैरिया और हज़रत सफ़िया से निकाह कर लिया था। हज़रत जुवैरिया बनी मुस्तलक की जंग (शाबान सन ६ हिजरी) में गिरफ़्तार हो कर आ गई थीं। वह उस क़बीले के सरदार की बेटी थी और इस्लाम कुबूल कर लिया था इस लिए आप ने उन के दर्जे का ख़याल रखते हुए उन को आज़ाद कर के अपने निकाह में ले लिया था। इसी तरह हज़रत सफ़िया ख़ैबर की जंग (सन ७ हिजरी) में गिरफ़्तार हो कर आ गई थीं और यहूद के मशहूर सरदार की बेटी थीं। जब उन्होंने ने इस्लाम स्वीकार किया तो आप ने उन की आज़ादी को महर करार दे कर उन से निकाह कर लिया। इस प्रकार इन दोनों ममलूक औरतों को पवित्र पत्नियों में शामिल होने का गौरव प्राप्त हुआ।

109. “तुम्हारे साथ हिज़रत की” का मतलब यह नहीं कि

वह हिज़रत के सफ़र में तुम्हारे साथ रही बल्कि मतलब यह है कि जिस प्रकार इस्लाम की खातिर तुम ने अपने देश, अपने घर बार को छोड़ा उसी प्रकार उन्होंने ने भी यह कुर्बानी दी और इस नेक काम में तुम्हारी शरीक रहीं। ऐसी चचेरी, फुफ़ेरी, ममेरी, और मौसेरी बहनों से विवाह करने की आप को अनुमति दे दी गई। इस छूट से आप ने उसी हद तक लाभ उठाया जिस हद तक दीनी मसलहतों का तकाज़ा हुआ। हज़रत ज़ैनब और हज़रत उम्मे हबीबा से निकाह की बात ऊपर गुज़र चुकी। हज़रत ज़ैनब आप की फूफ़ीज़ाद बहन थीं और हज़रत उम्मे हबीबा अबू सफ़ियान की बेटी थीं जो बनी उमैय्या में से थीं। अर्थात् अबू सफ़ियान पर दादा के नाते से आप के चचा होते थे।

110. अर्थात् कोई मोमिन औरत नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से बिना महर निकाह की पेशकश करे और आप उस की पेशकश को स्वीकार करते हुए उस से निकाह कर लें। हज़रत मैमूना से आप का निकाह जो सन ७ हिजरी में हुआ था इसी नियम के तहत था।

111. अर्थात् बिना महर निकाह की पेशकश (हिबा अर्थात् आत्म समर्पण) को कुबूल करना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए ख़ास है। आम मुसलमानों को इस की इजाज़त नहीं है।

112. इशारा है इस बात की तरफ़ कि सूरह निसा में मुसलमानों को चार तक पत्नी रखने की अनुमति दी गई है और ममलूक औरतों के सिलसिले में भी उस में आदेश बयान हुए हैं।

113. अर्थात् आप के लिए निकाह का परिधि क्षेत्र इस लिए बढ़ा दिया गया था ताकि महत्वपूर्ण दीनी मसलहतों के चलते इस सीमा में रहते हुए निकाह करने में आप कोई रुकावट महसूस न करें और विरोधियों के ऐतिराज़ की कोई परवाह न करें।

ध्यान रहे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अधिकतर विवाह विधवाओं और बड़ी आयु वाली औरतों से किये थे जिस से उन औरतों को ढाँस देनी भी अभिप्रेत था और सम्बन्धित क़बीलों एवं परिवारों पर इस्लाम का प्रभाव छोड़ना भी तथा उन की तरबियत कर के उन्हें उम्मत के लिए शिक्षा एवं प्रशिक्षण का साधन बनाना भी।

114. इशारा है इस बात की तरफ़ कि यदि इन महान परिवारिक ज़िम्मेदारियों को अदा करने में अनजाने में कोई ग़लती हो जाए तो अल्लाह तआला क्षमा करने वाला और दया करने वाला है।

115. अर्थात् इस बात का आप को अधिकार है कि इन में से जिन को चाहें दूर रखें और जिन को चाहें साथ रखें। और इस बात में भी आप पर कोई हरज नहीं कि जिन को आप ने

अलग रखा हो उन में से किसी को अपने पास बुला लें। मतलब यह है कि नबी का हक उन के हुक्क पर सर्वोपरि है। और नबी ने कई विवाह मात्र दीन की मसलहतों की खातिर किये हैं इस लिए आप की पत्नियों को जिस हद तक भी नबी की संगत में रहने का अवसर मिले अपना सौभाग्य समझते हुए उस पर संतोष करना चाहिए। इस सूरत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी ज़िम्मेदारियों की अदायगी में भी सहूलत होगी और आप की पत्नियाँ भी संतुष्ट और प्रसन्न रहेंगी। इस प्रकार नबी के घर का वातावरण बहुत ही अच्छा रहेगा।

यद्यपि यह अधिकार जिस का वर्णन ऊपर हुआ है, अल्लाह तआला ने आप को दे दिया था परन्तु इस के बावजूद आप अपनी तमाम पत्नियों के बीच बारी बारी रहते थे और उन के साथ न्याय करते थे। जिन रिवायतों में यह आया है कि आप ने अपनी कुछ पत्नियों को अलग कर रखा था वे सही नहीं हैं। अबू बकर जस्सास लिखते हैं:-

“नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत है कि आप अपनी पत्नियों के बीच (रहने के लिए) बारी तय किया करते थे और उस में इस बात का कहीं वर्णन नहीं है कि किसी को आप ने बारी से अलग कर दिया हो ----- हज़रत आइशा फरमाती हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न्याय के साथ बारी निर्धारित किया करते थे और फरमाते ऐ अल्लाह यह बटवारा जिस हद तक मेरे बस में है मैं ने किया है तो जो तेरे बस में है और मेरे बस में नहीं है उस पर पकड़ न करा” (तफ़सीर जस्सास जिल्द ३ पृष्ठ ४५३)

अलबत्ता हज़रत सौदा रजि. चूँकि उन की आयु काफ़ी हो गई थी अपनी बारी हज़रत आइशा को दे दी थी।

इस हिदायत ही का असर था कि आप की पत्नियों में न कोई ईर्ष्या थी और न नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उन की तरफ़ से किसी कष्ट का सामना करना पड़ा और मोमिनों की माँ की हैसियत से उन का आचार व्यवहार एवं चरित्र बुलन्द तथा अनुकरणीय रहा।

116. इशारा है इस बात की तरफ़ कि अल्लाह ने अपने नबी को उन की पत्नियों से सम्बन्धित जो छूट दी है उस पर किसी को कोई एतिलाज़ का हक़ नहीं है परन्तु यदि तुम ने आशंकाओं एवं संदेहों को अपने दिल में जगह दी तो याद रखो अल्लाह तुम्हारे दिलों का हाल ख़ूब अच्छी तरह जानता है।

117. अर्थात् नबी इस ख़ास सीमा में रह कर ही निकाह कर सकते हैं जिन का ज़िक्र ऊपर हुआ है। इस सीमा के बाहर नबी को निकाह करने की अनुमति नहीं है। गोया नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जहाँ ख़ास तरह की छूट दी गई है वही निकाह के सिलसिले में कुछ ऐसी पाबन्दियाँ भी आप पर आयद की गई हैं जो आम मुसलमानों पर नहीं हैं। जैसे यह कि अगर किसी मुसलमान की चार पत्नियाँ हैं तो वह उन में से किसी को तलाक़ दे कर उस की जगह दूसरी पत्नी ला सकता है। परन्तु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अल्लाह तआला ने यह पाबन्दी लगा दी थी कि आप अपनी मौजूदा पत्नियों में से किसी को तलाक़ दे कर उस की जगह दूसरी पत्नी नहीं ला सकते। अर्थात् शरीअत की पाबन्दी आप के लिए भी थी और यह इस बात का प्रमाण है कि जो कुछ अल्लाह की ओर से अवतारित होता था उस का आप अनुपालन करते थे, यहाँ तक कि आप का अपना परिवारिक जीवन भी इस से मुक्त नहीं है।

अल्लामा इब्ने कसीर ने स्पष्ट किया है कि इस बारे में कोई मतभेद नहीं है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इन्तिकाल के समय आप की नौ पत्नियाँ मौजूद थीं। (अल बिदय: वन्निहाय: जिल्द ५ पृष्ठ २९१)

आयत का यह भाग “यद्यपि उन की सुन्दरता तुम्हें कितना ही पसन्द आए” से एक यह बात भी स्पष्ट हुई कि पुरुषों के लिए निकाह के सिलसिले में औरतों की सुन्दरता आकर्षण का कारण है मगर ईमान वालों के लिए शरीअी सीमा का लिहाज़ अनिवार्य रूप से आवश्यक है।

118. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए निकाह तो उन ही औरतों से जायज़ ठहराया गया जिन का ज़िक्र ऊपर की आयत में हुआ। अलबत्ता अपनी ममलूका औरतों अर्थात् लौंडियों (दासियों) से पति पत्नी का सम्बन्ध रखने की अनुमति दे दी गई जो साधारण मुसलमानों के लिए भी थी। इस अनुमति के तहत मारिया क़िब्तिया को आप ने स्वीकार कर लिया था जिस को उपहार स्वरूप मिस्र के ईसाई शासक मक्रौक़स ने आप की सेवा में भेजा था और यह स्पष्ट भी कर दिया था कि इन को अत्यंत शरीफ़ समझा जाता है। इन ही से आप को बेटा हुआ जिस का नाम आप ने इब्राहीम रखा था और जिस का इन्तिकाल सन ९ हिजरी में हुआ।

अल्लाह और उस के फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं। ऐ लोगों जो ईमान लाए हो, तुम भी उन पर रहमत (दरूद) और सलाम भेजो। जो लोग अल्लाह और उस के रसूल को कष्ट देते हैं उन पर अल्ला ने दुनिया और आखिरत में लानत की है और उन के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है। (अल-कुर्आन)

53. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो ! नबी के घरों में दाखिल न हो मगर उस समय तक जब तुम्हें अनुमति दी जाए। (अनुमति मिलने पर) खाने की तैयारी के इन्तिज़ार में (बैठे) न रहो।¹¹⁹-----
- अलबत्ता जब तुम को (खाने के लिए) बुलाया जाए तो प्रवेश करो और जब खाना खा चुको तो तितर बितर (Disperse) हो जाओ¹²⁰-----
-- और बातें करने में न लग जाओ।¹²¹ यह बातें नबी के लिए कष्टदायक हैं मगर वे तुम से कुछ कहने में लिहाज़ करते हैं और अल्लाह हक़ बात कहने में लिहाज़ नहीं करता¹²² और जब तुम्हें नबी की पत्नियों से कोई चीज़ माँगना हो तो परदे के पीछे से माँगो। यह तरीक़ा तुम्हारे दिलों के लिए भी अधिक पाकीज़ा है और उन के दिलों के लिए भी।¹²³ और तुम्हारे लिए हरगिज़ जायज़ नहीं कि अल्लाह के रसूल को कष्ट दो और न यह जायज़ है कि इस के बाद कभी भी तुम उन की पत्नियों से निकाह करो।¹²⁴ अल्लाह के नज़दीक यह बड़ी संगीन बात है।

54. तुम कोई बात जाहिर करो या छिपाओ, अल्लाह को हर बात का ज्ञान है।

55. उन पर कोई गुनाह नहीं हैं उन के बापों के (प्रवेश होने के) बारे में और न उन के बेटों, उन के भाईयों, उन के भतीजों, उन के भांजो, उन की अपनी औरतों और उन के ममलूक के बारे में।¹²⁵ अल्लाह से डरो, निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है।¹²⁶

56. अल्लाह और उस के फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं। ऐ लोगों जो ईमान लाए हो, तुम भी उन पर रहमत (दरूद) और सलाम भेजो।¹²⁷

57. जो लोग अल्लाह और उस के रसूल को कष्ट देते हैं उन पर अल्लाह ने दुनिया और आख़िरत में लानत की है¹²⁸ और उन के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَى طَعَامٍ غَيْرِ نَبِظٍ إِنَّهُ وَلَكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثٍ إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ يُؤْذَى النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِي مِنْكُمْ وَاللَّهُ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ذَلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تُنكِحُوا أَزْوَاجَهُ مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ۝

إِنْ تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تَخْفَوْهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

لَا حَبَاسَ عَلَيْهِنَ فِي آبَائِهِنَّ وَلَا أَبْنَائِهِنَّ وَلَا إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءَ إِخْوَانِهِنَّ وَلَا آبَاءَ أَخَوَاتِهِنَّ وَلَا نِسَاءِهِنَّ وَلَا مَمْلَكَتٍ إِيْمَانَهُنَّ وَاتَّقِينَ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُهِينًا ۝

119. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के घर वालों की मर्यादा से सम्बन्धित ईमान वालों को कुछ हिदायतें दी गई हैं। एक यह कि आप के घरों में बिना आज्ञा के प्रवेश न करें दूसरे यह कि अनुमति मिल जाने के बाद जाएं तो ज़रूरत भर रुके रहें, खाने के इन्तिज़ार में बैठे न रहें कि खाने का समय हो जाए और खाना तुम्हारे सामने आ जाए। ज़ाहिर है यह बात शिष्टाचार के विरुद्ध है और एक नबी के घर में खराब आचार का प्रदर्शन बहुत बुरी हरकत है।

120. यह तीसरी हिदायत है कि अगर तुम्हें नबी के घर में खाने के लिए बुलाया जाए तो ज़रूर जाओ लेकिन जब खाना खा चुको तो वहाँ से उठ पड़ो। आयत के पहले टुकड़े में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घरों में आज्ञा ले कर प्रवेश करने का निर्देश दिया गया था चाहे किसी ज़रूरत से जाना पड़े और इस बाद वाले टुकड़े में खाने पर बुलाये जाने की सूत में आवश्यक सावधानी बरतने का निर्देश दिया गया है।

121. अर्थात् नबी के घर में दाखिल हो जाने के बाद तुम्हें बातों में नहीं लग जाना चाहिए चाहे तुम आज्ञा लेकर किसी काम के लिए गये हो या खाने पर बुलाये गए हो। बहरहाल नबी का घर साधारण मुसलमानों का घर नहीं है इस लिए आदाब (आचार संहिता) का यहाँ खास लिहाज़ करना चाहिए।

122. अर्थात् नबी मुरौव्वत में तुम से कुछ नहीं कहते और अपने घर में तुम्हारे ज़रूरत से ज़्यादा बैठे रहने को या तुम में से किसी के खाने का समय ताकते रहने को अपने शिष्टाचार के कारण सहन कर लेते हैं किन्तु अल्लाह के लिए मुरौव्वत का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। वह अपने नबी के मामले में आदाब और शिष्टाचार का ख्याल करने का निर्देश देता है ताकि इस पहलू से भी तुम्हारी सही तरबियत हो जाए।

123. यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में दाखिल होने से सम्बन्धित चौथी हिदायत है कि तुम्हारे और नबी की पत्नियों के बीच परदा होना चाहिए। अगर कोई चीज़ माँगने की ज़रूरत आन पड़े तो परदे के ओर से माँगो। किसी आड़ के बग़ैर उन के सामने जा खड़े न हो ----- इस में क्या हिकमत निहित है यह भी स्पष्ट कर दी कि इस प्रकार तुम भी अपने दिलों को अधिक पाक साफ़ रख सकोगे और वह भी।----- बदगुमानी की कोई बात पैदा न हो सकेगी। परदे के सिलसिले में यह पहली आयत थी और परदे के आदेश की शुरुआत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर से शुरू की गई। यह परदा यद्यपि आम मुसलमानों के घरों में वांछित और पसंदीदा है किन्तु उन पर यह वाजिब नहीं किया गया है। अतः सूरह नूर में जो सूरह अहज़ाब के बाद नाज़िल हुई औरतों को यह हुक्म दिया गया है कि वे उन मर्दों के सामने जो अनुमति

ले कर घर में दाखिल हों अपनी ज़ीनत और श्रृंगार का प्रदर्शन न करें अर्थात् बन संवर कर उन के सामने न आएँ। देखिए सूरह नूर आयत ३१ नोट ४३. अगर घर में परदा डाल देने का आदेश सभी मुसलमानों के लिए होता तो फिर घर में आज्ञा ले कर आने वालों के सामने ज़ीनत और श्रृंगार के साथ आने का सवाल औरतों के लिए पैदा ही नहीं होता। मालूम हुआ कि आम मुसलमान औरतों को घर के परदे के मामले में इतना कड़ा आदेश नहीं दिया गया जितना कड़ा आदेश नबी की पत्नियों को दिया गया और यह इस कारण कि नबी की पवित्र पत्नियों का स्थान मोमिनों की माँएँ होने की हैसियत से साधारण मुस्लिम औरतों से बहुत बुलन्द है।

हदीस में आता है कि यह आयत हज़रत ज़ैनब के वलीमे के अवसर पर नाज़िल हुई थी।

“हज़रत अनस रजि. फ़रमाते हैं कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ैनब बन्ते जहश से निकाह किया तो लोगों को (वलीमा के लिए) बुलाया जब लोग खाना खा चुके तो बैठ कर बातें करते रहे। आप खड़े होना चाहते थे लेकिन लोग नहीं उठे। आख़िरकार आप खड़े हो गए तो और लोग भी उठ खड़े हुए लेकिन तीन आदमी बैठे रहे। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोबारा अन्दर आना चाहा तो देखा लोग बैठे हुए ही हैं। (इस लिए वापस तशरीफ़ ले गए) फिर जब वे उठ कर चले गए तो मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जा कर कहा वे चले गए हैं, आप तशरीफ़ लाए और अन्दर दाखिल हुए तो मैं भी दाखिल होने लगा लेकिन आप ने मेरे और अपने बीच परदा डाल दिया और अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई

“يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ-

(अर्थ :- “ऐ ईमान वालो ! नबी के घरों में दाखिल न हो...”)” (बुखारी किताबुत्तफ़सीर)

124. अर्थात् आप के इन्तिकाल के बाद भी आप की पत्नियों से निकाह करना हaram है।

125. अर्थात् घर के परदे की इस क़ैद से जो ऊपर की आयत में बयान हुई है ये लोग अलग हैं। इन में महरम के अलावा मुसलमान औरतें और ममलूक अर्थात् लौंडी गुलाम जिन के वे मालिक हों शामिल हैं।

126. अर्थात् अल्लाह हर जगह है और सब कुछ देख रहा है।

127. अरबी में जब “सल्लि” के साथ “अला” का उपसर्ग (Preposition) आता है तो इस का अर्थ रहमत भेजने और रहमत की दुआ करने के होते हैं। इस लिए आयत का अर्थ हुआ अल्लाह नबी पर रहमत भेजता है और उस के

फ़रिश्ते नबी के लिए रहमत की दुआएँ करते हैं। ऐ ईमान वालो! तुम भी नबी के लिए रहमत की दुआ करो और ख़ूब सलाम भेजो। फिर “सलात” का अर्थ साधारण रहमत नहीं बल्कि ख़ास शब्द दरूद है और सलाम भेजने के अर्थ में हर प्रकार की आफ़तों से सलामत रहने की दुआ करना है।

दुरूद और सलाम का यह उपहार रसूल की सेवा में प्रस्तुत करने का यह आदेश प्रत्येक मुसलमान को दिया गया है और जैसा कि हदीस में आता है इस का अधिकता के साथ नित्यकार्य में शामिल रखना भी अभिप्रेत है क्योंकि दरूद और सलाम के द्वारा आप से प्रेम एवं आस्था का सम्बन्ध सुदृढ़ होता है।

नमाज़ में तशहहूद में (बैठे हुए) सलाम और दुरूद के जो कलिमे (प्रवचन) अदा किये जाते हैं वे कुर्आन के इसी आदेश के अन्तर्गत हैं। इस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद और सलाम भेजने का जो तरीक़ा सिखाया गया है वह यह है :-

السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ
وَبَرَكَاتُهُ. (بخاری ابواب صفۃ الصلوۃ)

अर्थ : “सलाम हो आप पर ऐ नबी ! और अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें हों।” (बुखारी, अबवाबुस्सलात)

ध्यान रहे कि “अय्युहन्नबिय्यु” अर्थात् “अय्युहन्नबि” कहने का अर्थ यह नहीं है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर जगह मौजूद और सब कुछ देखने वाले हैं क्योंकि यह गुण तो केवल अल्लाह का है। बल्कि यह सम्बोधन समय के नबी होने की हैसियत से है अर्थात् यह आभास दिलाने के लिए कि गोया आप हमारे बीच रहनुमाई के लिए मौजूद ही हैं और हम रसूल के दरबार में उपस्थित हो कर सलाम पेश कर रहे हैं। यह गहरे साहित्य की एक शैली है जिस की मिसाल वह दुआ है जो क़ब्रों की ज़ियारत के अवसर पर की जाती है। इस दुआ में भी मुर्दों को सम्बोधित कर के उन्हें सलाम किया जाता है और इस का यह मतलब नहीं होता कि मुर्दे हाज़िर और नाज़िर हैं बल्कि यह आभास कराना अभिप्रेत होता है कि ज़ियारत करने वाला गोया मुर्दों की सभा में पहुँच गया है और उन्हें सलाम कर रहा है। जो लोग गहरे कलाम की इस शैली को नहीं समझते वे इस का ग़लत अर्थ निर्धारित कर के शिर्क और बिदअत के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं। किन्तु इस के खण्डन के लिए हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद का यह स्पष्टीकरण काफ़ी है कि أَيُّهَا النَّبِيُّ (ऐ नबी) के शब्द का प्रयोग हर समय किया करते थे जब आप हमारे बीच मौजूद थे परन्तु जब आप दूसरे लोक में चले गए तो हम

السَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ अर्थात् सलाम हो नबी पर कहने लगे। (बुखारी किताबुल इस्तिज़ान) यानी सम्बोधित के सिगा (إيها)

के बजाये गायब के सिगा में सलाम भेजने लगे। फिर यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि सलाम बैठ कर भेजा जाता है अतः आप पर सलाम भेजने के लिए किसी समय भी खड़े होने की कोई क़ैद नहीं है मगर बिदअतियों अर्थात् दीन में नई नई बातें पैदा करने वालों ने मीलादुन्नबी की मजलिस आयोजित करने के जो तरीक़े निकाले हैं उन में आप पर सलाम भेजते समय खड़ा होना आवश्यक बताया है। अगर कोई खड़ा न हो तो उसे बुरा भला कहा जाता है यहाँ तक कि उस की धारणा और उस के अक़ीदे ही को ग़लत समझा जाता है। ऐसी ही बिदअतों ने उम्मत के बीच विभेद एवं दूरी पैदा कर दी हैं।

रही बात दुरूद की तो इस का तरीक़ा भी हदीस में बयान हुआ है। कअब बिन उज्ज़ा कहते हैं कि हम ने निवेदन किया ऐ अल्लाह के रसूल आप पर सलाम भेजने का तरीक़ा तो हमें मालूम है लेकिन हम आप पर दुरूद किस तरह भेजें? फ़रमाया कहो :-

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ. اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى
مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ
إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ. (بخاری کتاب الدعوات)

अर्थ :- “ऐ अल्लाह मुहम्मद पर और आले मुहम्मद पर रहमत भेज जिस तरह तूने आले इब्राहीम पर रहमत भेजी। निस्संदेह तू प्रशंसा योग्य और बुजुर्गी वाला है। ऐ अल्लाह बरकत भेज मुहम्मद पर और आले मुहम्मद पर जिस तरह तूने आले-इब्राहीम पर बरकतें भेजी। निस्संदेह तू प्रशंसा योग्य और बुजुर्गी वाला है।” (बुखारी किताबुद्दावत)

दूसरी रिवायत में दोनों जगह عَلَى إِبْرَاهِيمَ के शब्द भी हैं। दरूद में “तबअन आले मुहम्मद” को भी शामिल किया गया है। आल का शब्द अरबी में वंश और नस्ल के अर्थ में भी आता है तथा अनुयायियों के अर्थ में भी आता है अतः लिसानुल अरब में है आल अर्थात् अनुपालन करने वाले। (लिसानुल अरब जिल्द २ पृष्ठ ३८) और कुर्आन में आले फ़िरऔन उस गिरोह को कहा गया है जो फ़िरऔन का अनुपालक था। हज़रत इब्राहीम के अनुयायियों में भारी संख्या उन लोगों की थी जो आप की नस्ल से थे इस लिए उन को आले इब्राहीम कहा गया मगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायी एक विश्वव्यापक उम्मत हैं इस लिए अर्थ दृष्टि से वे आले मुहम्मद हुए। इस भावार्थ के अनुमोदन आयत ४३ से भी होता है जिस में ईमान वालों पर अल्लाह और उस के फ़रिश्तों के सलात अर्थात् रहमत भेजने

का वर्णन हुआ है, दरूद का महत्व इस सही हदीस में यूँ है :-

مَنْ صَلَّى عَلَى صَلَاةِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرًا - (مسلم کتاب الصلوة)

अर्थ :- “जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजेगा अल्लाह उस पर दस बार रहमत भेजेगा।” (मुस्लिम - किताबुस्सलात)

मगर कमज़ोर और गढ़ी हुई हदीसों में बड़े अतिशयोक्ति के साथ इस के फ़ज़ायल बयान हुए हैं। बुख़ारी के टीकाकार हाफ़िज़ इब्ने हज़र कहते हैं :-

“इस बाब (अर्थात् दुरूद की फ़ज़ीलत के बारे) में बहुत सारी कमज़ोर और बेबुनियाद हदीसों हैं और जिन रिवायतों को कहानीकारों ने गढ़ा है वे असंख्य हैं परन्तु सही हदीसों इन सब से विमुख कर देने के लिए काफ़ी है।” (फ़तुलुलबारी जिल्द ११ पृष्ठ १४१)

मिसाल के तौर पर अविश्वसनीय रिवायत में जुमें के दिन अस्सी बार दुरूद भेजने की फ़ज़ीलत यह बयान हुई है कि अस्सी साल के गुनाह माफ़ कर दिये जाएंगे। (सिलसिलतुल अहादीसुज्जईफ़: लिलअल्बानी जिल्द १ पृष्ठ २५१)

ऐसी रिवायतों को शोध न करने वाले आलिम बड़ी असावधानी के साथ उद्धृत करते हैं। जिस का परिणाम यह निकला कि लोग इन फ़ज़ीलतों का तो ख़ूब आयोजन करने लगे परन्तु कितनी ही दीनी ज़िम्मेदारियों की तरफ़ से ग़ाफ़िल हो गए। रस्मी तौर पर तो वे दीनदार बन गए परन्तु दीन का पूर्ण रूप तथा सच्चे मन से अनुपालन का एहसास उन में न उभर सका।

यह भी ध्यान रहे कि दरूद एक दुआ है और इस का दीन में एक महत्वपूर्ण स्थान है लेकिन विर्द (चर्चा) के बारे में हुक्म दिया गया है कि अल्लाह ही के नाम का करें और प्रसंशा एवं पाकी भी उसी की बयान करें। एक लाख दरूद शरीफ़ पढ़ने के लिए जो मज़लिसे आयोजित की जाती हैं उस का प्रचलन सहाबा किराम के ज़माने में न था और न यह तरीक़ा कुर्आन और सुन्नत से साबित है। दरूद ताज और इस प्रकार के दूसरे दरूद तथा उन की लंबी चौड़ी फ़ज़ीलतें सब बाद वालों की बढ़ाई हुई हैं। सीधे सच्चे मुसलमानों के लिए तो वह दुरूद ही काफ़ी है जिस की शिक्षा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दी है।

आप की हस्ती असाधारण आदर के योग्य है इस लिए आप के नाम के साथ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पढ़ना ज़रूरी है। सहाबा किराम आप से हदीसों रिवायत करते हुए

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ

(अर्थ : फ़रमाया रसूलुल्लाह ने दरूद और सलाम हो आप पर) कहा करते थे और मुहादिसीन ने भी यही तरीक़ा अपनाया। संक्षिप्त रूप में स. अथवा सल्ल. लिखना सही नहीं क्योंकि यह कन्जूसी है। लिखने वाला इसे सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नहीं पढ़ता और न पढ़ने वाला पढ़ता है। दरूद और सलाम की पुनरावृत्ति जितनी बार भी लिखने और पढ़ने में होगी उतना ही इनाम में वृद्धि होगी। फिर कंजूसी से काम लेने की क्या अवश्यकता है?

128. ऊपर की आयत में ईमान वालों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर रहमत भेजने का आदेश दिया गया था इस आयत में उन लोगों को अपमानजनक अन्जाम से ख़बरदार किया जा रहा है जो नबी को कष्ट पहुँचाने के प्रायस में रहते हैं। स्पष्ट हुआ कि जो लोग नबी पर रहमत भेजते हैं वे खुद भी रहमत के भागीदार बन जाते हैं। इस के विपरित जो लोग नबी को कष्ट पहुँचाते हैं वे लानत के भागीदार बन जाते हैं। और यह इशारा है ख़ास तौर से उन मुनाफ़िकों (पाखण्डियों) की तरफ़ जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बहुविवाह और आप के परिवारिक जीवन को एतिराज का निशाना बनाते थे और अल्लाह के आदेशों की भी खिल्ली उड़ाते थे।

अल्लाह को कष्ट देने का अर्थ यह है कि उस के बारे में ऐसी बातें कही जाएं जो उस के प्रकोप को निर्मंत्रण देने वाली हों जैसे उस का पुत्र बताना, उस का साड़ी ठहराना, दोष एवं त्रुटि को उस से जोड़ना उस को सृष्टि जैसा समझना, उस की महानता से गिरी बातें उस की ओर मन्सूब करना, उस के रसूलों, उस की किताबों और उस के आदेशों का मज़ाक उड़ाना और उस की शान में गुस्ताख़ी की बातें करना आदि।

और रसूल को कष्ट देने का मतलब यह है कि रसूल की शान में गुस्ताख़ी करना, आप की तौहीन करना, आप की सुन्नत का मज़ाक उड़ाना, आप के परिवारिक जीवन पर एतिराज करना और आप के फैसलों का आदर न करना, आप की तरफ़ झूठी बातें मन्सूब करना और आप के फैसलों के बारे में यह ख़्याल करना कि आप ने अन्याय किया होगा और आप से लड़ना आदि।

अल्लाह और उस के रसूल की तौहीन करने वालों के लिए न केवल आख़िरत में लानत है बल्कि दुनिया में भी उन पर अल्लाह की लानत बरसती है। वे अल्लाह की रहमत से इस तरह दूर फेंक दिये जाते हैं कि उन के हिस्से में अपमान और रुस्वाई ही आती है। सच्ची इज़्ज़त उन को कभी नसीब नहीं होती।

58. और जो लोग मोमिन मर्दों और औरतों को उन बातों पर तकलीफ़ देते हैं जो उन्होंने नहीं किया है वे अपने सर एक बोहतान और खुले गुनाह का भार लेते हैं।¹²⁹

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بَغَيْرِ مَا كَسَبُوا فَقَدْ احْمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ۝

59. ऐ नबी ! अपनी पत्नियों, और अपनी बेटियों और ईमान वालों की औरतों से कह दो कि अपने ऊपर अपनी चादरें डाल लिया करें। यह इस लिहाज़ से अधिक मुनासिब है कि उन की पहचान हो जाए और सताई न जाएं।¹³⁰ और अल्लाह क्षमा करने वाला रहम फ़रमाने वाला है।¹³¹

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ ذَلِكَ أَدْنَى أَنْ يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

60. मुनाफ़िक़ीन और वह लोग जिन के दिलों में रोग है ¹³² और जो मदीना में झूठी अफ़वाहें फैलाते हैं, अगर बाज़ न आए तो हम तुम्हें उन के विरुद्ध उठा खड़ा करेंगे फिर वे इस (शहर) में तुम्हारे साथ कम ही रह सकेंगे।¹³³

لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ وَالْمُرْجِفُونَ فِي الْمَدِينَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ۝

61. उन पर लानत होगी ¹³⁴ और जहाँ कहीं पाये जाएंगे, पकड़े जाएंगे और बुरी तरह क़त्ल किये जाएंगे।¹³⁵

مَلْعُونِينَ ۖ أَيُّمَّا نَقَفُوا أَخَذُوا وَاقْتُلُوا تَقْتِيلًا ۝

62. यह अल्लाह की सुन्नत (नियम) रही है उन लोगों के मामले में जो पहले गुज़र चुके। और तुम अल्लाह की सुन्नत में कोई परिवर्तन न पाओगे।¹³⁶

سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝

63. लोग तुम से क्रियामत की घड़ी के बारे में पूछते हैं। कहो उस का ज्ञान तो अल्लाह ही के पास है। और तुम्हें क्या ख़बर शायद वह घड़ी क़रीब आ लगी हो।¹³⁷

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ۝

64. निस्संदेह अल्लाह ने काफ़िरोں पर लानत की है और उन के लिए भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है।¹³⁸

إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ۝

65. जिस में वे हमेशा रहेंगे। उन्हें न कोई दोस्त मिलेगा और न सहायक।

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

129. इशारा है मुनाफ़िकों (पाखण्डियों) की उन शरारतों की तरफ़ जो वे मोमिन मर्दों और औरतों को बदनाम करने के लिए किया करते थे ताकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरबियत से जो उत्तम समूह तैयार हुआ था उस को लोगों की नज़रों में गिराया जाए और इस्लाम के फैलने में रुकावटें पैदा हों। आयत में इस बात पर कड़ी चेतावनी है कि किसी भी मोमिन मर्द या औरत का दिल दुखाया जाये, झूठे दोषरोपण उन पर किये जाएँ। निर्दोष को दोष लगाना उस पर बोहतान लगाना है और यह कोई मामूली गुनाह नहीं बल्कि भारी (कबीरा) गुनाह है। खास तौर से ऐसी बातें कहना जो उस की पवित्रता और आबरू को दागदार बनाने वाली हों।

मौजूदा मुस्लिम समाज में तो मालूम होता है इस गुनाह का कोई एहसास पाया ही नहीं जाता। दीनदार मुसलमानों पर मिथ्यारोपण आम लोगों की आदत बन गई है। मुसलमानों के विभिन्न गिरोह एक दूसरे के विरुद्ध झूठे आरोप लगाते रहते हैं और पत्रकारिता मिथ्यारोपण को सहयोग दे कर दिल दुखाने का पूरा सामान करती रहती है। बहरहाल जो व्यक्ति अल्लाह का डर रख कर परहेजगारी की राह अपनाना चाहता है उसे अत्यंत सजग होना चाहिए और अपने मुसलमान भाई के खिलाफ़ ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए जो उस से सम्बन्धित न हो या जिस का दोषी वह न हो हदीस में आता है:-

اَلْمُسْلِمُ مِّنْ سَلَمِ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِّسَانِهِ وَيَدِهِ.

(रियाज़ الصالحين ص ५९९ بروایت بخاری و مسلم)

अर्थ : “मुसलमान वह है जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान सुरक्षित रहें।” (रियाज़ुस्सालिहीन पृष्ठ ५९९ बुखारी और मुस्लिम के हवाले से)

130. इस आयत में आम मुसलमान औरतों को निर्देश दिया गया है कि जब वे घर से बाहर निकलें जैसा कि बाद के वाक्य से स्पष्ट है तो अपने ऊपर चादर डाल लिया करे और इस की मसलहत भी खोल कर बता दी कि इस से वे पहचान ली जाएंगी अर्थात् इस से पता चल जाएगा कि वे शरीफ़ और हयादार औरतें हैं अतः फूहड़ लोग एवं असमाजिक तत्व इन को न ग़लत समझ सकेंगे और न छेड़ छाड़ कर सकेंगे। हया की यह चादर उन को अन्य उपायों की तुलना में अधिक सुरक्षित रख सकेगी।

जिलबाब (चादर) का ثوبٌ واسعٌ अर्थ “कुशादा कपड़े” के हैं (लिसानुलअरब जिल्द १ पृष्ठ २७२) और यह उस चादर के लिए बोला जाता है जो दुपट्टे से बड़ा होता है और जिसे औरतें अपने शरीर और वस्त्र ढाँकने के लिए ओढ़ लेती हैं।

“मिन” यहाँ उसी तरह बयानिया है जिस तरह हदीस उम्मे अतिया में बयानिया आया है :-

“उम्मे अतिया कहती हैं (आप ने जब औरतों को ईद की नमाज़ में शामिल होने पर आमादा किया तो मैं ने निवेदन किया ऐ अल्लाह के रसूल ! हम में से किसी के पास चादर नहीं होती तो वह क्या करें? फ़रमाया لِّلْمُسْلِمَةِ اُخْتُهَا مِنْ جَلْبَابِهَا (अर्थ : उस की बहन अपनी चादर उस को उढ़ाए)”) (फ़तुलक़दीर जिल्द ४ पृष्ठ ३०४ बुखारी के हवाले से)

इस हदीस में भी “मिन जिलबाबिहा” مِنْ جَلْبَابِهَا के शब्द इस्तेमाल हुए हैं जिन का अर्थ अपनी चादर के एक भाग या पल्लू को ओढ़ाने के लिए नहीं है बल्कि अपनी चादर ओढ़ाने के लिए हैं। और “युदनीन अलैहिन्न” يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ का मतलब अपने ऊपर डाल लेने के हैं। कुर्आन में दूसरी जगह है।

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلَالُهَا

अर्थ:- “उस के साये उन के ऊपर होंगे” (अल-इन्सान आयत १४)

मतलब यह है कि मुसलमान औरतें जब घर से निकलें तो अपने ऊपर ऐसा कपड़ा डाल कर निकलें जो ओढ़नी से बड़ा हो और जो उन के शरीर और उन के वस्त्र को छिपाये। यह कपड़ा चाहे चादर के रूप में हो या निकाब की शक्ल में। इस से अभिप्रेत शरीर के खुले हिस्सों और वस्त्रों के बनाव सिंगार को छिपाना है ताकि औरत अपने आकर्षण के साथ अजनबी पुरुषों के सामने से न गुजरे बल्कि उस तैयारी के साथ गुजरे जो हया और मर्यादा के तकाज़ों को पूरा करता है और जिस से उस के शरीफ़ औरत होने का पता चले। परदे के बारे में यह एक संक्षिप्त किन्तु व्यापक आदेश है जो इस आयत में दिया गया है और इस में यह पुष्टि नहीं की गई है कि औरत न अपना चेहरा खुला रख सकती है और न हाथ। क्यों कि कुर्आन जहाँ फ़ितनों को समाप्त करने की तदबीर बताता है वही वह अपत्तियों एवं अवरोधों को भी दूर करता है ताकि औरतों को असाधारण कठिनाइयों का सामना न करना पड़े। अतः सूरह नूर में जो इस सूरह के बाद नाज़िल हुई है औरतों को जहाँ अपने बनाव सिंगार छिपाने का आदेश दिया गया है वहीं اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا “सिवाय उस के जो ज़ाहिर हो जाये” की रिआयत भी की गई है (देखिए सूरह नूर आयत ३१ और नोट ४२) इस लिए चादर के हुक्म में भी यह रिआयत रहेगी। विशेष रूप से जब कि यह आदेश संक्षिप्त रूप से दिया गया है। और चेहरा और हाथों को निश्चिन्त रूप से छिपाना उद्देश्य होता तो आयत में इस की पुष्टि अवश्य होती। इस पुष्टि के न होने की सूरत में चेहरा और हाथों को छिपाने और चादर को इस तरह सर से पाँव तक लपेट लेने

पर हट् पकड़ना कि लिबास (वस्त्र) का कोई भाग कतई खुलने न पाये, कुर्आन के एक व्यापक आदेश में कड़ाई पैदा करने के सिवा कुछ नहीं। यह कड़ाई यदि अतीत में पैदा की गई थी तो वह उस समय के हालात में स्वीकार कर ली गई हो गी परन्तु मौजूदा हालात में जब कि औरतों को अपनी बहुत सी ज़रूरतों को पूरा करने और अपनी बहुतेरी ज़िम्मेदारियों को अन्जाम देने के लिए घर से निकलना पड़ता है, परदे के हुक्म में इस कड़ाई के पैदा करने से उन के लिए बड़ी कठिनाई और अवरोध उत्पन्न हो सकते हैं और इस का नतीजा यह भी निकल सकता है कि औरतें परदे को अव्यवहारिक बता कर बिलकुल ही त्याग दें। इस लिए बीच की राह का लिहाज करना आवश्यक है।

131. इशारा है इस बात की तरफ कि परदे के हुक्म की तामील अगर नेक नीयती के साथ सही तरीके पर की गई तो इस सिलसिले में अनजाने में जो कोताहियाँ होंगी अल्लाह तआला उन से दरगुजर करेगा और रहम फ़रमायेगा।

132. तात्पर्य काम इच्छा का रोग है अर्थात् कामुक व्यक्तित्व।

133. इस से अन्दाज़ा होता है कि उस समय मुनाफ़िकों और असमाजिक तत्वों ने मदीने के वातावरण को दूषित करने, जंग की झूठी ख़बरे उड़ा कर लोगों में भय और आतंक पैदा करने तथा मुसलमान शरीफ़ औरतों को छेड़ने और उन को बदनाम करने के लिए उन पर बोहतान लगाने और झूठी अफ़वाहें फैलाने में बहुत ही निर्भीक हो गए इस लिए एक तरफ़ मुसलमान औरतों को उन के फ़ितनों से सुरक्षित रखने के लिए घर के बाहर परदे का आदेश दिया गया और दूसरी तरफ़ पाखण्डियों, गुन्डों और असमाजिक तत्वों को चेतावनी दी गई कि यदि वे बाज़ नहीं आए तो अल्लाह तआला अपने रसूल को आदेश देगा कि वह इन का पूरी तरह सर कुचल दें और इस्लामी समाज को इन उपद्रवियों से पाक करें।

ध्यान रहे कि परदे के आदेश की इस मसलहत का जो उस समय के हालात के परिवेश में बयान हुई है, यह मतलब नहीं है कि वह आदेश उन हालात के साथ ही ख़ास हैं। कुर्आन के बहुत से आदेश ख़ास हालात के तहत नाज़िल हुए हैं परन्तु वे अपना स्थायी अस्तित्व रखते हैं और किसी आदेश की एक मसलहत के ज़िक्र से यह अनिवार्य नहीं ठहरता कि उस आदेश की कुल मसलहत वही हो बल्कि दूसरी मसलहतें भी हो सकती हैं जब कि एक ही मसलहत बयान करने पर बस किया गया हो।

134. अर्थात् वे अल्लाह की रहमत से दूर फेंक दिये जाएंगे। और जिन को अल्लाह अपनी रहमत से महरूम कर देता है वे अपमानित हो कर रहते हैं।

135. अतः सूरह तौबा में सन ९ हिजरी में मुनाफ़िकों (आस्तीन के साँपों) के साथ लड़ाई बरतने का आदेश दिया

गया।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ - (توبة: ८३)

अर्थ : “ऐ नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िकों से जिहाद करो और उन के साथ कड़ाई से पेश आओ।” (सूरह तौबा : ७३)

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन की मस्जिद को भी जो उन्होंने ने मुसलमानों के बीच विभेद उत्पन्न करने के लिए बनाई थी जलाने का आदेश दिया। यह सब तफ़सील सूरह तौबा में गुज़र चुकी है।

136. अर्थात् इन से पहले जिन उम्मतों में रसूल भेजे गए थे उन में जहाँ काफ़िरों को मिटा दिया गया वहाँ मुनाफ़िकों (पाखण्डियों) एवं फ़सादियों से भी समाज को पाक कर दिया गया और नेक और ईमान वालों पर आधारित जिस नए समाज की संरचना हुई थी उसी को बरकरार रखा गया और ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारियाँ उसी के सुपुर्द कर दी गई। इसी तरह अल्लाह तआला ज़मीन से फ़साद को मिटा देने के बाद सोसाइटी की व्यवस्था का नये सिरे से अच्छे, मौलिक एवं नैतिक उसूलों पर स्थापित करता रहा है। फिर कोई कारण नहीं कि अल्लाह की यह सुन्नत (नियम) इस रसूल के पक्ष में पूरी न हो। और यह वास्तविकता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इन्तिक़ाल से पहले मदीने का माहौल उपद्रवी एवं असामाजिक तत्वों से पाक हो गया था।

137. क्रियामत कब आएगी यह प्रश्न न केवल मक्का के लोग बार बार उठाते रहे बल्कि मदीना में भी यह सवाल दोहराया जाता रहा। यद्यपि कुर्आन ने इस का कई बार जवाब दिया है परन्तु लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बराबर परेशान करते रहे। मक़सद उन का यह था कि क्रियामत के बारे में आशंकाएँ एवं संदेह उत्पन्न कर दिये जाएँ। मक्का में अगर ये काफ़िर आशंकाएँ संदेह उत्पन्न कर रहे थे तो मदीना में वही कुछ मुनाफ़िक (पाखण्डी लोग) भी कर रहे थे।

अगर अल्लाह की हिकमत का तकाज़ा यह हुआ कि क्रियामत का समय किसी पर ज़ाहिर न किया जाए तो इस का यह मतलब कहाँ हुआ कि क्रियामत आयेगी ही नहीं। मौत का समय किसी को मालूम नहीं होता तो क्या मात्र इसी कारण यह कहना सही होगा कि मौत आएगी ही नहीं? जब कि इस का आना बिलकुल सुनिश्चित है। इसी तरह क्रियामत का आना बिलकुल सुनिश्चित है यद्यपि कि उस का समय हम को मालूम नहीं। अलबत्ता कुर्आन यह पुष्टि अवश्य करता है कि क्रियामत क़रीब ही आ लगी है और सच्चाई भी यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़िरी नबी हैं। आप के द्वारा दीन पूरा हो गया और अल्लाह ने तर्क स्थापित कर दिया, दुनिया वालों पर हुज्जत क़ायम हो गई इस लिए दुनिया अपने अन्तिम

चरणों से ही गुजर रही है। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةُ كَهَاتَيْنِ وَيَقْرُنُ بَيْنَ أَصْبَعَيْهِ
السَّبَابَةِ وَالْوُسْطَى. (مشکوٰۃ کتاب الصلوٰۃ بروایۃ مسلم)

अर्थ :- “मैं और क्रियामत इस तरह साथ साथ भेजे गए हैं आप ने अपनी दो उंगलियों शहादत की उँगली और बीच की उँगली को मिला कर इशारा फ़रमाया।” (मिशकात, किताबुस्सलात मुस्लिम के हवाले से)

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट २८६

से २८९।

138. यह क्रियामत के लिए जल्दी मचाने वालों के लिए चेतावनी है कि क्रियामत तो अपने समय पर आ कर रहेगी। रहे उस का इन्कार करने वाले तो उन के लिए अल्लाह की रहमत से महरूमी है और जिस दिन क्रियामत आ जाएगी उन्हें भड़कती आग (जहन्नम) से वास्ता पड़ेगा। क्यों कि क्रियामत के इन्कार के बाद आदमी अपने अन्दर वह गुण पैदा कर ही नहीं सकता जिस के चलते वह आख़िरत में अच्छे बदले का हक़दार ठहरे। बल्कि वह ऐसे कुकृत्य में लिप्त रहता है कि जिस के चलते आख़िरत में दण्ड का ही भागीदार होता है।

66. जिस दिन उन के चेहरे आग में उलट पलट, कर दिये जाएंगे उस समय वे कहेंगे काश हम ने अनुपालन किया होता अल्लाह का और अनुपालन किया होता रसूल का।¹³⁹

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ لَوْلَا أَنَّا طَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَ ﴿٣٩﴾

67. और कहेंगे ऐ हमारे रब ! हम ने अपने सरदारों और बड़ों का अनुपालन किया और उन्होंने हमें राह से गुमराह कर दिया।¹⁴⁰

وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلًا ﴿٤٠﴾

68. ऐ हमारे रब ! इन को दोहरा अज़ाब दे और इन पर बहुत बड़ी लानत कर ।¹⁴¹

رَبَّنَا إِنَّهُمْ ضَعُفٌ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنَاءِ لَعَنَّا كَبِيرًا ﴿٤١﴾

69. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो ! उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने ने मूसा को तकलीफ़ दी मगर अल्लाह ने उस को उन की कष्टदायक बातों से बरी कर दिया और वह अल्लाह के नज़दीक प्रतिष्ठित था।¹⁴²

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسَىٰ فَبَرَّأَهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا ﴿٤٢﴾

70. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह से डरो और दुरुस्त (ठीक) बात कहो।¹⁴³

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ﴿٤٣﴾

71. वह तुम्हारे कर्मों को ठीक करेगा ¹⁴⁴ और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा, और जो अल्लाह और उस के रसूल का अनुपालन करेगा ¹⁴⁵ उस ने बहुत बड़ी सफलता पाई।

يُضِلِّحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٤٤﴾

72. हम ने (अपनी) अमानत को आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों के सामने रखा तो उन्होंने ने उस के उठाने से इन्कार किया और उस से डर गए, मगर इन्सान ने उसे उठा लिया। निस्संदेह वह बड़ा ज़ालिम और जाहिल सिद्ध हुआ है।¹⁴⁶

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٤٥﴾

73. ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ मर्दों और औरतों को और मुश्रिक (बहुदेववादी) मर्दों तथा मुश्रिक औरतों को दण्ड दे ¹⁴⁷ और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों की तौबा स्वीकार करे।¹⁴⁸ अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।

لِيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٤٦﴾

139. क्रियामत का इन्कार करने वाले दुनिया में तो अल्लाह के अनुपालन से भी मुँह मोड़े हुए हैं और उस के रसूल के अनुपालन से भी, परन्तु क्रियामत के दिन जब जहन्नम से वास्ता पड़ेगा तब उन्हें अपनी गलती का आभास होगा और पछताते हुए कहने लगेंगे कि काश हम ने अनुपालन किया होता अल्लाह का और अनुपालन किया होता उस के रसूल का।

140. “अपने सरदार” से मुराद लीडर और सत्ताधारी लोग हैं “अपने बड़ो” से मुराद धार्मिक पेशवा आदि हैं। इन्कार करने वालों को जहन्नम में पहुँच कर यह एहसास होगा कि हम ने दुनिया में अल्लाह के बजाय अल्लाह के बागी लीडरों की बात मानी और उस के रसूल के बजाय गुमराह करने वाले धार्मिक पेशवाओं का अनुकरण किया।

141. अर्थात् आज तो ये इन्कार करने वाले अपने नेताओं पर डोंगरे बरसा रहे हैं और अपने धार्मिक पेशवाओं में श्रद्धा एवं आस्था व्यक्त कर रहे हैं परन्तु जहन्नम में पहुँचने के बाद ये उन पर लानत भेजेंगे और चाहेंगे कि उन (नेताओं एवं पेशवाओं) के अज़ाब और लानत में वृद्धि हो जाए !

142. यह फिर ताक़ीदी आदेश है कि अपने नबी को इस तरह से कष्ट मत पहुँचाओ जिस तरह बनी इस्राईल ने मूसा को कष्ट पहुँचाया था। हज़रत मूसा की अवज्ञा करते हुए बनी इस्राईल उन्हें कटु उत्तर देते रहे उस का ज़िक्र कुर्आन में कई जगहों पर हुआ है जैसे उन का यह उत्तर कि पवित्र धरती में तुम और तुम्हारा ख़ुदा जाओ और लड़ो, हम तो यहाँ बैठे रहेंगे। इस प्रकार के कष्ट पहुँचाने की और “सूरह सफ़्र” की आयत ५ इशारा करती है। परन्तु यहाँ जिस कष्ट का वर्णन हुआ है वह उन के आचार व्यवहार को आहत करने वाली थी अर्थात् उन के विरुद्ध दोषारोपण और बोहतान। एक नबी पर जब कोई घिनावना आरोप लगाया जाता है तो अल्लाह तआला उस की ज़िन्दगी ही में उस को उस से बरी कर देता है ताकि नबी का व्यक्तित्व लोगों की नज़रों में दागदार न होने पाये इस सिलसिले में हज़रत यूसुफ़ की मिसाल बहुत स्पष्ट है जिन्हें आरोप से अल्लाह तआला ने इस तरह बरी कर दिया कि किसी शक और संदेह की गुंजाइश बाक़ी नहीं रही। इस आयत में भी यह इर्शाद हुआ है कि अल्लाह ने मूसा को आरोपों से बरी कर दिया और वे अल्लाह के नज़दीक प्रतिष्ठित थे। ये दोनों ही बातें इस बात पर तर्क प्रस्तुत करती हैं कि आरोप इस प्रकार के थे जिस से हज़रत मूसा की प्रतिष्ठित एवं मर्यादा पर आँच आती थी। कुर्आन ने यह नहीं बताया कि वह घटना क्या थी। क्यों कि समझाने और नसीहत करने की दृष्टि से ऐसी घटनाओं को न बयान करना ही लाभदायक होता है। इस लिए कोई ज़रूरत नहीं कि हम उस को कुरेदने की कोशिश करें।

मुफ़स्सिरीन (टीकाकार) आम तौर से इस आयत की तफ़्सीर में एक हदीस नक़ल करते हैं जिस का सार यह है कि अबू हुरैरह रज़िअल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फ़रमाया मूसा बड़े हयादार और सतर पोश थे। इस लिए उन के शरीर का कोई भाग दिखाई नहीं देता था। मगर बनी इस्राईल ने इस को यह समझा कि उन को कोई गुप्त रोग या कोई दोष है (एक नबी की प्रतिष्ठा को ध्यान में रखते हुए उस दोष का ज़िक्र करना हम मुनासिब नहीं समझते जो रिवायत में बयान हुआ है) अल्लाह ने उन को उस दोष से मुक्त करना चाहा इस लिए ऐसा हुआ कि एक दिन जब मूसा अकेले थे उन्होंने ने अपने कपड़े उतार कर पत्थर पर रखे और नहाने लगे। जब नहा चुके तो कपड़े लेने के लिए आगे बढ़े लेकिन पत्थर उन के कपड़े ले कर भागने लगा। मूसा उस पत्थर का पीछा करते हुए बनी इस्राईल के समूह में जा पहुँचे। वहाँ उन लोगों ने उन्हें खुले बदन में देखा और उन्हें मालूम हो गया कि मूसा के अन्दर कोई दोष नहीं है। इस प्रकार अल्लाह ने उन को इस बात से बरी कर दिया जो ये लोग उन से सम्बद्ध बताते थे। फिर पत्थर ठहर गया और मूसा ने अपने कपड़े ले कर पहन लिए और उस पत्थर पर अपनी लाठी से वार किये जिस के निशान पत्थर पर पड़ गए यह आयत कि “उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने ने मूसा को तकलीफ़ दी” का इशारा इसी घटना की तरफ़ है।” (बुख़ारी किताब अहादीस अम्बिया) यह हदीस बुख़ारी ने भी रिवायत की है और मुस्लिम ने भी। बुख़ारी की एक रिवायत में यह भी है कि आप ने फ़रमाया बनी इस्राईल नग्न स्नान किया करते थे और एक दूसरे के सतर (गुप्तांगों) को देखते थे लेकिन मूसा एकान्त में नहाया करते थे। (बुख़ारी किताबुल गुस्ल)

मगर उक्त वर्णित रिवायत अपने प्रमाण और मज़मून की दृष्टि से तार्किक एवं हुज्जत नहीं। अब्दुल वहाब नज्जार ने क़ससुल अम्बिया में जो अरबी की एक शोध पुस्तक है इस रिवायत पर कड़ी पकड़ की है जिस का सार यह है।

(A) यह कैसा चमत्कार है जो एक नबी को निर्वस्त्र करता है। यदि मूसा को कोई शारीरिक दोष था तो वह अल्लाह के नज़दीक उन के प्रतिष्ठित होने में बाधक कैसे हो सकता था।

(B) अगर मूसा पर शारीरिक दोष का आरोप लगाया गया था तो इस से उन के अल्लाह के रसूल होने का इन्कार कैसे होता जब कि सूरह सफ़्र में हज़रत मूसा का यह इर्शाद नक़ल हुआ है “ऐ मेरी क़ौम के लोगों ! मुझे क्यों कष्ट देते हो जब कि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ” अतः कष्ट निश्चित रूप से इस से बड़ी किसी बात का रहा होगा। और कुर्आन करीम में ईज़ा (कष्ट) का शब्द किसी बड़ी बात ही के लिए

इस्तेमाल किया गया है।

(C) उक्त वर्णित हदीस के प्रमाण में एक उल्लेख कर्ता औफ़ हैं जिन के बारे में तहज़ीबुत्तहज़ीब (अस्माउर्रिजाल की प्रसिद्ध एवं प्रमाणिक किताब) में है कि वह शीआ राफ़ज़ी और शैतान था।

(D) मैं उसी हदीस को स्वीकार करता हूँ जो खालिस हो, जिस के रावियों (उल्लेख कर्ताओं) में कोई दोष न हो और जिस पर मेरा मन संतुष्ट होता है। रही वह हदीस जिस का कोई उल्लेखकर्ता आपत्तिजनक हो चाहे वह आपत्ति मामूली ही सी क्यों न हो उस को मेरा मन स्वीकार नहीं करता, चाहे उस हदीस को कितनों ने ही सही माना हो। क्यों कि मैं आपत्तिजनक की तुलना में ठीक और दुरुस्त को वरीयता देता हूँ विशेष रूप से उस सूत्र में जब कि उल्लेखकर्ता बिदअती अर्थात् दीन में नई बातें निकालने वाला हो, चाहे वह अपनी बिदअत की तरफ़ बुलाता हो यह न बुलाता हो और इस सूत्र में और भी अधिक जब कि उल्लेखकर्ता शीआ हो।

(E) हदीस में है कि हसन (बसरी) ने अबू हुरैरा से रिवायत की है जब कि हसन (बसरी) की अबू हुरैरा से हदीस सुनना साबित नहीं और न खिलास का अबू हुरैरा से सुनना सिद्ध है। अमदतुलक़ारी (बुख़ारी की टीका) में यह स्पष्टीकरण मौजूद है।

(F) रही बुख़ारी की वह रिवायत जो एक दूसरे प्रमाण के द्वारा बयान हुई है तो उस में का एक उल्लेखकर्ता अब्दुर्रज़ाक़ हैं जिन के बारे में इब्ने मुईन कहते हैं कि वह मज़बूत नहीं हैं और उन का सम्बन्ध शीइय्यत से बताया गया है। उन्होंने ने अहले बैत के फ़ज़ाईल में बहुत सी हदीसों बयान की हैं जो किसी विश्वस्नीय उल्लेखकर्ता ने नहीं बयान की।

(G) उलमा कहते हैं कि बनी इस्राईल की शरीअत में नग्न स्नान जायज़ था लेकिन इस दावे की कोई दलील नहीं। लोगों के सामने सतर (गुप्तांग) खोलने की हिचकिचाहट तो मानव स्वभाव में निहित है।

(H) क्या मोअज़्ज़ा कुआन के स्पष्टीकरण के बग़ैर सिद्ध होता है?

(क्रससुल अम्बिया अब्दुलवहाब नज़्ज़ार पृष्ठ २८१ से २९१)

अब्दुल वहाब नज़्ज़ार के इन तर्कों में बड़ा वज़न है। इस लिए कोई कारण नहीं कि उक्त वर्णित हदीस को रसूल की हदीस क़रार दिया जाए और हज़रत मूसा की तरफ़ एक ऐसी बात मंसूब की जाए जिस से उन की हतक होती हो। मगर जो लोग हदीस के मामले में खोज़ बीन तथा दीनी सूझ बूझ से काम लेने की राह खुली रखना नहीं चाहते हैं वे ऐसे मौक़े पर हदीस का इन्कार की फ़त्ती कस देते हैं। मगर हमें अपने बचाव से अधिक कुआन

और पैग़म्बरों का बचाव अधिक प्रिय होना चाहिए। इस के अलावा हम यह कहना चाहते हैं कि प्रमाण की दृष्टि से यह हदीस हरगिज़ ऐसी नहीं है जिस को सही का दर्जा दिया जाए। अब्दुर्रज़ाक़ के बारे में “मीज़ानुल एतिदाल” (अस्माउर्रिजाल की किताब जो इमाम ज़हबी द्वारा संकलित है) में मुहद्दीसीन की विपरीत रायें उद्धृत की गई हैं। इमाम बुख़ारी कहते हैं कि वे विश्वस्नीय हैं लेकिन मअमर से हदीसों रिवायत करने में ग़लती कर जाते हैं।

नसई कहते हैं कि इन से मुन्किर हदीसों उल्लिखित हैं और इब्ने अदी कहते हैं कि इन को शीअिय्यत की तरफ़ मन्सूब किया गया है। मुहम्मद बिन उस्मान अस्सक्रिफ़ अलबसरी का बयान है कि जब अब्बास बिन अब्दुल अज़ीम सनआ से अब्दुर्रज़ाक़ के पास से वापस आए तो हम से कहा अल्लाह की क़सम जिस के सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं अब्दुर्रज़ाक़ झूठा है। इब्ने अदी कहते हैं अब्दुर्रज़ाक़ ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह हदीस भी बयान की है कि जब तुम मुआवियः को मेरे मिम्बर पर देखो तो उन्हें क़त्ल कर दो (देखिए मीज़ानुल एतिदाल जिल्द २ पृष्ठ ६०९ से ६१४) इसी तरह औफ़ के बारे में भी मुहद्दीसीन की अलग रायें हैं (मीज़ानुल एतिदाल जिल्द ३ पृष्ठ ३०५)

मुहद्दीसीन के इन स्पष्टीकरणों के बाद भी अगर इमाम बुख़ारी अब्दुर्रज़ाक़ की रिवायत को स्वीकारणीय समझते हैं तो ज़रूरी नहीं कि दूसरे भी उन से सहमत हों।

आयत की तफ़्सीर में अलबत्ता बुख़ारी की रिवायत को पेश किया जा सकता है :

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने माल को बाँटा तो एक व्यक्ति ने कहा, इस बंटवारे में अल्लाह की रज़ा नहीं चाही गई। अब्दुल्लाह बिन मसऊद कहते हैं कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और आप को इस से सूचित किया। आप बहुत क्रोधित हुए। फिर फ़रमाया अल्लाह मूसा पर रहम फ़रमाए उन्हें इस से भी अधिक कष्ट दिया गया लेकिन उन्होंने ने सब्र किया।” (बुख़ारी किताब अहादीसुल अम्बिया)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर माल के बंटवारे में अन्याय का आरोप इस प्रकार का था जिस से आप की नैतिक छवि धुमिल होती थी इस लिए इस मौक़े पर आप ने हज़रत मूसा का जो हवाला दिया तो उस से भी यही स्पष्ट होता है कि हज़रत मूसा को ऐसी तकलीफ़ दी गई थी जो आप की नैतिक छवि को धुमिल कर देने वाली थी।

143. ठीक बात कहने के भाव में यह बात शामिल है कि किसी के विरुद्ध दोषारोपण और बोहतान की बातें न की जाएं। और यह बात भी कि जो बात की जाए सच्चाई पर आधारित

हो। कुछ सच्ची और कुछ झूठी तथा गोल मोल बातें करना जिस से दूसरों को धोखा हो सही नहीं। जंग के मौक़े पर या किसी विवाद एवं उपद्रव से बचने के लिए आधा सच कहना एक अपवादिक स्थिति है। ईमान वालों को चाहिए कि वे जो बात करें अल्लाह से डरते हुए करें। और सच्चाई को अपना स्वभाव बना लें अगर किसी से वादा करें तो उस को पूरा करने के इरादे से करें। ख़ाली वादे जिन को पूरा करने की कोई चिन्ता नहीं की जाती ठीक बात कहने के आदेश के विरुद्ध है।

144. मालूम हुआ कि जो व्यक्ति अपनी ज़बान को ठीक रखता है और अपने कहने (वचन) का सच्चा और पक्का होता है उस को अपने कर्मों को ठीक करने की तौफ़ीक़ मिलती है मतलब यह कि ठीक ठीक बात करने का फल है व्यवहारिक जीवन का ठीक होना। इस के विपरीत जो व्यक्ति ग़ैर ज़िम्मेदाराना बातें करता है और अपनी ग़लतियों को सुनने को तैयार नहीं होता वह अपने को सुधार से महरूम रखता है।

145. अल्लाह के अनुपालन के साथ रसूल के अनुपालन का भी आदेश दिया गया है और रसूल का अनुपालन यह है कि आप से जो आदेश साबित हैं चाहे वह इबादत से सम्बन्धित हों या व्यावहारिक, व्यक्तिगत जीव से सम्बन्धित हों या सामाजिक जीवन से, उन की ठीक ठीक पाबन्दी की जाए।

146. यहाँ अमानत से मुराद वे अख्तियार हैं जो दिये तो इस लिए गए हैं कि अल्लाह के अनुपालन के लिए इस्तेमाल किये जाएँ। लेकिन चूँकि ये इख्तियार दे कर मनुष्य को परीक्षा के मैदान में खड़ा कर दिया गया है इस लिए उसे यह आज़ादी हासिल है कि वह इन इख्तियार का चाहे तो अल्लाह के अनुपालन के लिए इस्तेमाल करे और चाहे तो उस की अवज्ञा के लिए इस्तेमाल करे। जो व्यक्ति उस के अनुपालन के लिए इस्तेमाल करेगा वह इस परीक्षा में सफल होगा और अमानतदारी का सबूत प्रस्तुत करने के चलते बहुत बड़े इनाम अर्थात् हमेशा हमेशा की कामयाबी और मुक्ति का हक़दार ठहरेगा। और जो व्यक्ति उस की अवज्ञा के लिए इस्तेमाल करेगा वह इस परीक्षा में नाकाम ठहरेगा और अल्लाह की अमानत में ख़ियानत करने के कारण बहुत बड़े दण्ड अर्थात् हमेशा हमेशा के घाटे और यातना का भागीदार ठहरेगा।

यह अमानत का बोझ ऐसा भारी था कि आसमान और ज़मीन और पर्वत जैसी विशाल सृष्टि इसे उठाने से डर गई मगर इन्सान चूँकि अपने स्वभाव से इसे उठाने की योग्यता रखता था इस लिए उस ने अल्लाह की इस पेशकश को हमेशा हमेशा के इनाम के लोभ में स्वीकार कर लिया। अतः मनुष्य की हैसियत दुनिया में अमानती अधिकार रखने वाली सृष्टि की है और स्वाभाविक रूप से उस की ज़िम्मेदारी यह है कि वह इन

अधिकारों को उस के रब की मर्जी के अनुसार इस्तेमाल करे लेकिन मनुष्य ने इस हक़िक़त को भुला दिया है अतः इन्सानों की बहुत बड़ी संख्या अपने को खुदमुख्तार समझती है और मन माने तरीक़े पर अपने अधिकारों का इस्तेमाल कर के वे अपनी आत्मा पर घोर अन्याय भी कर रहे हैं और बड़ी जिहालत का परिचय भी दे रहे हैं।

كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا को कुछ मुफ़स्सिरिन ने “वह बड़ा ज़ालिम और जाहिल था” के अर्थ में लिया है और फिर तरह तरह के अर्थ निकाले हैं हालाँकि अरबी में “काना” “था” ही के अर्थ में प्रयुक्त नहीं होता बल्कि “है” और “सिद्ध हुआ है” के अर्थ में भी आता है जैसे كَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا अर्थ : “अल्लाह क्षमा करने वाला और रहम करने वाला है” كَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا अर्थ: “मनुष्य जल्दबाज़ सिद्ध हुआ है।”

इस लिए यहाँ जो अर्थ अनुकूल बैठता है वह यही है कि मनुष्य इस भारी अमानत को उठाने के बाद ज़ालिम और जाहिल बन गया है। ज़ालिम इस दृष्टि से कि अल्लाह की अमानत में ख़ियानत करता है और जाहिल इस दृष्टि से कि अपनी ज़िम्मेदारी को महसूस नहीं करता तथा अन्जाम से बेख़बर हो कर अपने को आज़ाद और खुदमुख्तार समझने लगता है। दुनिया में अधिकतर इन्सान का हाल यही है।

रहा यह प्रश्न कि आसमान और ज़मीन और पहाड़ जड़ पदार्थ हैं इन के सामने अमानत को पेश करने और उन के इनकार करने का क्या मतलब? तो हमे अपने सीमित ज्ञान परिधि में रह कर इस का अर्थ निर्धारित नहीं करना चाहिए और न इस को अवास्तविक अथवा कल्पित समझना चाहिए बल्कि इस को उसी तरह सच्ची बात समझना चाहिए जिस तरह कुर्आन में इसे पेश किया गया है। अल्लाह अपनी किसी भी सृष्टि से चाहे वह जड़ पदार्थ ही क्यों न हो बात कर सकता है और वह सृष्टि उस बात को सुन सकती है। कुर्आन पुष्टि करता है कि आसमान और ज़मीन की प्रत्येक वस्तु अल्लाह की पाकी बयान करती है तथा उस की प्रशंसा एवं गुणगान करती है। मगर इन्सान इस को समझ नहीं पाता। आयत से यह बात भी निकलती है कि अगर आसमान और ज़मीन और पहाड़ इस अमानत को क़बूल करने के लिए तैयार होते तो उन्हें उन के अनुकूल इख्तियार दे कर आज़माइश में डाला जाता किन्तु वे इस की कल्पना मात्र ही से काँप उठे। उन का इन्कार भी इस अर्थ में नहीं था कि अल्लाह ने उन को उठाने का आदेश दिया था और उन्होंने ने इन्कार किया बल्कि इस अर्थ में था कि उन को अमानत स्वीकार करने या न करने का इख्तियार (choice) दिया गया तो वे उस को स्वीकार करने के लिए आमादा न हुए।

147. अर्थात् इस अमानत में ख़ियानत का अनिवार्य परिणाम

यह निकला है कि इस के अपराधी दण्ड पायें। मुनाफ़िक़ (अपने कुफ़्र को छिपा कर अपने को मुसलमान कहलाने वाले) और वे मुश्रिक (बहुदेववादी) चाहे वे मर्द हों या औरत सब के सब ख़ियानत करने वाले बेईमान हैं। इस लिए वे अपने इस अपराध की सज़ा भुगत कर रहेंगे।

148. अर्थात् जो अमानतदारी का सबूत देंगे वे अल्लाह की रहमत के हक़दार क्ररार पाएँगे और अमानतदारी का सबूत

देने वाले सच्चे मोमिन ही हो सकते हैं चाहे वे मर्द हों या औरतें। उन्होंने जब इन अधिकारों को अल्लाह की अमानत समझ कर इस्तेमाल किया होगा तो जो ग़लतियाँ और जो गुनाह उन से हुए होंगे उन के बारे में अल्लाह उन की तौबा कुबूल फ़रमाएगा। इस में ईमान वालों के लिए प्रेरणा है इस बात की कि वे अपनी ग़लतियों और गुनाहों पर नज़र रखें और अल्लाह के समक्ष तौबा करते रहें।



३४. सूरह सबा

नाम :- आयत १५ में सबा की क्रौम का वर्णन हुआ है और इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “सबा” है।

नाज़िल होने का समय :- मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह मक्का के मध्य दौर में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- कायनात में अल्लाह ही की हस्ती है जो अनंत खूबियों, एवं गुणों से सुसज्जित है इस लिए प्रशंसा और कृतज्ञता का वही एक मात्र हक़दार है और अल्लाह के शुक्र अदा करने की अकेली सूरत यह है कि तौहीद और आख़िरत पर ईमान लाया जाए।

कलाम की तरतीब :- आयतें १ से ९ भूमिका हैं जिन में शंकाओं एवं संदेहों को दूर करते हुए अल्लाह की ऐसी पहचान और उस तक पहुँचने का ऐसा रास्ता बताया गया है जिस से तौहीद और आख़िरत का दृढ़ विश्वास पैदा हो जाता है।

आयत १० से १३ में हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान पर अल्लाह की कृपा एवं दयालुता तथा उन की कृतज्ञता को एक ऐतिहासिक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

आयत १४ से २१ में इब्रत के लिए सबा की क्रौम की कृतघ्नता और उस के अन्जाम को प्रस्तुत किया गया है।

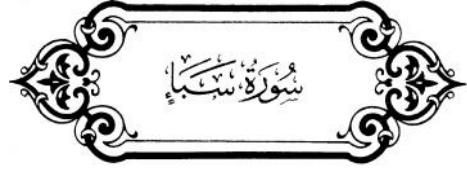
आयत २२ से २७ में शिर्क (बहुदेववाद) का खण्डन है।

आयत २८ से ४५ में विरोधियों के एतिराज आदि का जवाब देते हुए आख़िरत की कुछ सच्चाईयाँ उन के सामने पेश की गई हैं।

आयत ४६ से ५४ सूरह की अन्तिम आयतें हैं जिन में चिन्तन कर के फैसला करने का आह्वान किया गया है और इस बात से ख़बरदार भी कर दिया गया है कि अगर समय निकल गया तो फिर हमेशा के लिए पछताते रहेंगे।

३४.सूरह सबा

आयतें : ५४



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. प्रशंसा ¹ अल्लाह ही के लिए है जो आसमानों और ज़मीन की तमाम चीज़ों का मालिक है और आखिरत में भी उसी के लिए प्रशंसा है।² वह तत्वदर्शी और सर्वज्ञ है।³

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَهُ
الْحَمْدُ فِي الْآخِرَةِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ①

2. वह जानता है जो कुछ ज़मीन में जाता है और जो कुछ उस से निकलता है ⁴ और जो कुछ आसमान से उतरता है, और जो कुछ उस में चढ़ता है।⁵ वह दया करने वाला और क्षमा करने वाला है।⁶

يَعْلَمُ مَا يَلْجِ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ
مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ②

3. इन्कार करने वाले कहते हैं कि हम पर क़ियामत नहीं आएगी।⁷ कहो कैसे नहीं आएगी? मेरे रब आलिमुल ग़ैब (परोक्ष के ज्ञाता) की क़सम, वह तुम पर आ कर रहेगी।⁸ उस से कण बराबर वस्तु न आसमानों में छिपी हुई है और न ज़मीन में, न उस से छोटी और न उस से बड़ी मगर यह कि वह एक स्पष्ट किताब में अंकित है।⁹

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي
لَتَأْتِيَ كَمَا عَلَّمَ الْغَيْبُ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي
السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا
فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ③

4. (क़ियामत इस लिए आएगी) ताकि वह सिला दे उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे कर्म करते रहे। उन के लिए क्षमा और सम्मानजनक रोज़ी है।¹⁰

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ
مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ④

5. और जो लोग हमारी आयतों को प्रभावहीन करने के लिए सक्रिय हैं ¹¹ उन के लिए बदतरीन क़िस्म की दुखदायिनी यातना है।

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ
مِّن رَّجْزٍ أَلِيمٌ ⑤

6. और जिन को ज्ञान प्रदान हुआ है वे समझते हैं कि जो कुछ तुम्हारे रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया है वह बिल्कुल सत्य है ¹² और उस (हस्ती) का रास्ता दिखाता है जो प्रभुत्वशाली और ख़ूबियों वाला है।

وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ
هُوَ الْحَقُّ لَا يَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ⑥

1. प्रशंसा की व्याख्या के लिए देखिए सूरह फ़ातिहा नोट २

2. आखिरत में अल्लाह की करिश्मा साज़ी और उस के कमाल, उस के चमत्कार उस से कहीं अधिक होंगे जो दुनिया में प्रकट हो रहे हैं इस लिए वहाँ भी वही प्रशंसा का अधिकारी होगा। उसी के गुन गाए जाएँगे। ईमान वाले इनाम से अलंकृत किये जाने पर उसी का शुक्र आदा करेंगे और जन्नत में उसी की प्रशंसा के स्वर सुनाई देंगे।

3. अर्थात् उस ने दुनिया और आखिरत के लिए जो योजना भी बनाई है वह पूरे ज्ञान और पूरी तत्वदर्शिता पर आधारित है। उस का कोई काम भी ज्ञान और तत्वदर्शिता से खाली नहीं। इस लिए वह अपने समस्त कार्यों पर प्रशंसा का अधिकारी है। अगर उस के किसी काम की हिकमत, उस में निहित तत्व किसी की समझ में नहीं आते तो दोष उस की समझ का है या फिर उस कारण है कि उस की बुद्धि की पहुँच अपने सीमित होने के चलते उस में निहित तत्व एवं हिकमत तक नहीं हो सकती।

4. ज़मीन के अन्दर जो चीज़ भी जाती है वह यूँ तो गायब हो जाती है अर्थात् ज़मीन में विलय हो जाती है किन्तु अल्लाह के ज्ञान में वह मौजूद होती है। इस लिए हम देखते हैं कि पानी के ज़मीन में विलय होने के बाद ज़मीन में कोंपलें निकलना शुरू होती हैं यह इस बात का प्रमाण है कि जो पानी ज़मीन के अन्दर चला गया था वह अल्लाह के ज्ञान में था। और उस ने उस पानी से वनस्पति निकाली। इसी प्रकार मनुष्य भी मरने के बाद ज़मीन में घुल मिल जाता है किन्तु उस के अंश अंश अल्लाह की जानकारी में होते हैं। इस लिए क्रियामत के दिन उस का मुर्दे को उन के शरीर सहित ज़मीन से निकाल लेना और उन्हें दोबारा ज़िन्दा करना कुछ मुश्किल नहीं।

5. आसमान से पानी भी बरसाता है, किरणें भी ज़मीन पर गिरती हैं और बिजली आदि भी। इसी प्रकार भाप समुद्र से उठते हैं और आसमान में पहुँच कर बूँद का रूप धारकर बरसते हैं। यह भी इस बात का प्रमाण है कि भाप अल्लाह के ज्ञान में थे और उस ने उन को बारिश के रूप में बरसाया। फ़रिश्ते भी आसमान से उतरते और उस में चढ़ते हैं। इसी प्रकार नेक लोगों की रूहें आसमान की तरफ़ जाती हैं।

6. इन आयतों में अल्लाह की पहचान प्रस्तुत करते हुए उस के दयावान और क्षमाशील होने के गुण बयान किये गए हैं। यह गोया दअवत है बन्दों को इस बात की कि वह अल्लाह की रहमत अर्थात् उस की दया और उस की क्षमा की ओर लपकें।

7. आज भी क्रियामत का इन्कार करने वालों की कमी नहीं है मगर उन के पास इस का कोई प्रमाण नहीं है।

8. जो लोग क्रियामत का इन्कार कर रहे थे उन के सिलसिले में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिदायत की गई कि उन के दावे का खण्डन अपने रब परोक्षज्ञाता की क्रसम खा कर पूरे विश्वास और पूरे जोर के साथ करें क्योंकि क्रियामत एक अटल सच्चाई है और इस का ज्ञान अल्लाह की वहय ने विश्वस्नीय बना दिया है।

कुर्आन के इस बयान को देखते हुए मौजूदा दौर के इन्कार करने वालों के सामने भी क्रियामत की ख़बर पूरे विश्वास के साथ साहसिक रूप से प्रस्तुत करना इस्लाम की ओर न्योता देने वालों की ज़िम्मेदारी है।

परोक्षज्ञाता अर्थात् “आलिमुलग़ैब” की विशेषता के साथ क्रसम खाने का आदेश इस लिए दिया गया है ताकि स्पष्ट हो जाए कि क्रियामत का रिश्ता ग़ैब अर्थात् परोक्ष से है और मेरा रब ही परोक्ष को जानता है इस लिए उस की दी हुई ख़बर निश्चित रूप से सही है। इन्कार करने वालों ने तो ग़ैब में झाँक कर देखा नहीं फिर वे किस आधार पर ये दावा करते हैं कि क्रियामत कभी आएगी ही नहीं?

9. अर्थात् हर चीज़ का रिकार्ड स्पष्ट रूप से अल्लाह के पास मौजूद है।

10. यह क्रियामत का सकारात्मक पक्ष है कि नेक और अच्छे ईमानवालों को अच्छा सिला दिया जाए, उन के गुनाह माफ़ कर दिये जाएँ और उन्हें ऐसी अच्छी और सुन्दर रोज़ी दी जाए जो उन के लिए सम्मानजनक हो।

11. अल्लाह की आयात को प्रभावहीन करने के लिए सक्रिय होने का अर्थ यह है कि आदमी अल्लाह के इर्शादात और उस के आदेशों का विरोध करने के लिए खड़ा हो जाए जैसे अल्लाह के अस्तित्व या उस के अकेले खुदा होने तथा ईशदूतता एवं आखिरत को ग़लत सिद्ध करने के लिए पूरा जोर लगाए ताकि इन धारणाओं को लोग स्वीकार न करें।

12. ज्ञान से तात्पर्य वह ज्ञान है जो अल्लाह का सही परिचय कराए और उस का मार्ग रौशन करे। यह आदमी को एक सीमा तक अपने स्वाभाव और अपने सदबुद्धि से प्राप्त होता है। अतः कुर्आन नाज़िल होने से पहले मक्का के बुहदेववादियों के बीच ऐसे लोग मौजूद थे जो एक ही खुदा की इबादत किया करते थे और उन की सोच, उन का धर्म यही था कि बस एक अल्लाह के हो कर रहें। लेकिन ज्ञान की पूरी पूरी रौशनी अल्लाह की वहय के द्वारा ही प्राप्त होती है।

जो लोग जिहालत में लिप्त नहीं होते बल्कि ज्ञान की रौशनी में खुदा, धर्म, और आखिरत के मसले पर विचार करते हैं उन को कुर्आन की सच्चाई का यक़ीन हो जाता है।

7. जिन लोगों ने कुफ्र किया वे कहते हैं कि क्या हम तुम्हें ऐसा व्यक्ति बताएं जो तुम को यह खबर देता है कि जब तुम बिलकुल चूर्णविचूर्ण हो चुके होगे उस समय तुम नये सिरों से पैदा किये जाओगे।¹³

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُنذِرُكُمْ
إِذَا مَرِئْتُمْ كُلَّ مَرْقٍ أَنْتُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ④

8. इस ने अल्लाह के नाम से झूठ गढ़ा है या इस को जुनून हो गया है ?¹⁴ नहीं बल्कि जो लोग आखिरत को नहीं मानते। वही अज्ञाब और दूर की गुमराही में पड़े हुए हैं।¹⁵

أَفَتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْبَعِيدِ ⑤

9. क्या उन्होंने ने अपने आगे और पीछे आसमान और ज़मीन को नहीं देखा। हम चाहें तो इन्हें ज़मीन में धँसा दें या आसमान के कुछ टुकड़े उन पर गिरा दें।¹⁶ निस्संदेह इस में बहुत बड़ी निशानी है हर उस बन्दे के लिए जो रूजू करने (पलटने) वाला हो।¹⁷

أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِنَ السَّمَاءِ
وَالْأَرْضِ إِنَّ تَشَاخُفَ بِهِمُ الْاَرْضُ أَوْ تَسْقُطُ عَلَيْهِمْ كِسَفًا
مِّنَ السَّمَاءِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ⑥

10. हम ने दाऊद को अपने पास से विद्वत्ता (फ़ज़ल) प्रदान किया था।¹⁸ ऐ पर्वतो ! तुम भी इस के साथ पाकी बयान करने में एक आवाज़ (सहयोगी) हो जाओ और यही आदेश हम ने परिन्दों को दिया था।¹⁹ और हम ने उस के लिए लोहे को नर्म कर दिया था।²⁰

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِمَّا فُضِّلَ بِهِ إِبْرَاهِيمَ آوِي مَعَهُ وَالطَّيْرِ
وَالنَّالَةِ الْحَدِيدِ ⑦

11. कि पूर्ण कवचें बनाओं और उन के कुण्डलों को ठीक अन्दाज़े से रखो ²¹ और तुम सब अच्छे कर्म करो।²² जो कुछ तुम लोग करते हो उस को मैं देख रहा हूँ।

إِنْ أَعْمَلُ سَبِغْتِ وَقَدِّرْ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا
إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ⑧

12. और हम ने सुलैमान के लिए हवा को वशीभूत कर दिया। उस का सुबह के समय चलना भी महीने भर (कि दूरी) का होता और उस का शाम के समय चलना भी महीने भर (की दूरी) का होता।²³ और हम ने उस के लिए ताँबे का स्रोत बहा दिया ²⁴ और ऐसे जिन्न उस के लिए वशीभूत कर दिये जो अपने रब के आदेश से उस के आगे काम करते।²⁵ उन में से जो हमारे आदेशों की अवहेलना करता हम उस को भड़कती आग का मज़ा चखाते।²⁶

وَلَسَلَيْنَا الرِّيحَ عُدُوَّهُمْ وَأَحْشَاهُمْ وَاسْلَخْنَا
عَيْنَ الْفُطْرِ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهِ وَمَنْ
يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نَذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ⑨

13. यह जिहालत के अन्धकार में भटकने वालों की मूर्खतापूर्ण हरकतें हैं कि वे पैगम्बर का और उस की इस बात का, कि वह दोबारा ज़िन्दा किये जाने की खबर दे रहा है, मज़ाक़ उड़ाते हैं।

14. पैगम्बर के बारे में इन्कार करने वालों का यह कहना कि इस व्यक्ति ने झूठ गढ़ा है या इसे जुनून हो गया है, इस बात का सबूत है कि वह मात्र शक और वहम के कारण ये बातें कहते थे। यदि उन को विश्वास होता तो कोई एक बात कहते। दो विभिन्न बातें न कहते।

15. इन्कार करने वालों की ये बातें सूरज को अन्देखा कर के उन का इन्कार करने के समानार्थ था इस लिए उन का जवाब देने के बजाए उन के मूल दोष को गिनाया गया कि वे आखिरत को मानना ही नहीं चाहते इस लिए पैगम्बर के बारे में ऐसी बेतुकी बातें कहते हैं मगर आखिरत के इन्कार का खैया अपना कर वे अज़ाब की पकड़ में आ गए हैं और गुमराही में बहुत दूर निकल गए हैं।

16. अर्थात् आसमान और ज़मीन को उठते बैठते रात दिन अपने अपने पीछे देखते रहते हैं परन्तु कभी इस बात पर विचार करने के लिए आमादा नहीं होते कि उन का पैदा करने वाला अगर चाहे तो इस ज़मीन में उन को धंसा भी सकता है। अगर वे इस तरह सोचते तो उन के अन्दर खुदा का भय पैदा होता। फिर न वे आखिरत का इन्कार करते न अपराधी बन कर रहते।

17. ज़मीन और आसमान की विशालता में अल्लाह की संप्रभुता की बहुत बड़ी निशानी मौजूद है। चाहे तो वह बहुत बड़ा प्रकोप ला सकता है। मगर इस निशानी की तरफ़ अल्लाह के वही बन्दे ध्यानाकृष्ट करते हैं जो उस की तरफ़ रूजू करने (पलटने) वाले हों।

“मुनीब” अर्थात् “वह जो दिल से अल्लाह की तरफ़ पलटे यह मनःस्थिति हिदायत की राह खोल देती है।

18. अर्थात् दाऊद को अल्लाह ने अपने विशेष उदारदान से अलंकृत किया था। इस उदारदान की कुछ तफ़्सीर आगे बयान हुई है जिस से यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि प्रशंसा और शुक्र के लायक अल्लाह ही की हस्ती है जो अपने विशेष बन्दों (नबियों) को असाधारण उदारदान से अलंकृत करता रहा है।

19. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अम्बिया नोट १०६

20. हज़रत दाऊद के हाथ में लोहे का नर्म हो जाना जैसा कि आयत के शब्द और शैली से स्पष्ट है एक मोज़े (चमत्कार) के तौर पर था। इस को लोहे के इस्तेमाल के साधारण तरीके जैसा समझना बिल्कुल ग़लत है जिस में लोहे को गर्म किया जाता है और जब वह गर्म हो कर नर्म पड़ जाता है तो फिर इस से विभिन्न वस्तुएँ ढाल कर बनाई जाती हैं। अगर साधारण नियम के अनुसार अस्तित्व में आने वाली कोई टेक्नोलाजी या विज्ञानिक एवं

समाजिक प्रगति होती तो कुर्आन इसे इस शान से बयान न करता और न चमत्कारों के बीच इस का वर्णन करता।

21. कवच एक जंगी ज़रूरत की चीज़ है और प्राचीन काल में इस का बड़ा महत्व था। हज़रत दाऊद से पहले अगर कवचें बनती भी थीं तो सपाट तरीके की जो बहुत वज़नी होती थीं। परन्तु अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद पर यह इनाम किया कि लोहा उन के हाथ में मोम की तरह नर्म हो जाता था ताकि वे उस से कुण्डलें बना कर उन को कवच का रूप दें। ये कवचें हल्की होने के कारण आसानी से इस्तेमाल की जा सकती थीं। यह हज़रत दाऊद के रक्षा अस्त्रों में एक योग्य एवं महत्वपूर्ण वृद्धि थी और चूँकि इस कला से दूसरी क्रौमों अनभिज्ञ थीं इस लिए दुश्मन शक्तियाँ हज़रत दाऊद के लश्कर के मुकाबले में टिक नहीं सकती थीं। यह बहुत बड़ा सैन्य लाभ था जो बनी इस्राईल को हज़रत दाऊद के इस चमत्कार के द्वारा प्राप्त हुआ। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अम्बिया नोट ८

22. सम्बोधन दाऊद वालों अर्थात् बनी इस्राईल से है कि इस उदारदान से अलंकृत किये जाने पर तुम्हें नेक बनना चाहिए कि यह सच्ची कृतज्ञता है।

23. हज़रत सुलैमान के लिए हवा को इस तरह वशीभूत कर दिया गया था कि वह उन के इशारे पर इस तेज़ी से मगर नर्म के साथ चलती थी कि सुबह के कुछ घंटों में एक माह की दूरी तय हो जाए। इसी प्रकार शाम के कुछ घंटों में भी एक माह की दूरी तय हो जाए। हज़रत सुलैमान का राज्य बाइबिल के बयान के अनुसार फ़लस्तीन से फ़ुरात नहर तक फैली हुई थी इस लिए असंभव नहीं कि वे इस ईश्वरीय चमत्कार के चलते इतना लम्बा सफ़र सुबह और शाम के समय में तय करते हों। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अम्बिया नोट १०९

24. तांबे की खानें होती हैं किन्तु हज़रत सुलैमान के लिए अल्लाह तआला ने तांबे का ख़ोत जारी कर दिया था। यह एक असाधारण बात थी जो उस के विशेष अनुग्रह का परिणाम थी ताकि खान के परिश्रमों से गुजरे बग़ैर सुलैमान एक वैभवशाली और अद्वितीय इस्लामी राज्य स्थापित कर सकें। अतः उन्होंने इस से जैसा कि आगे आ रहा है बड़े बड़े बरतन बनाए।

25. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अम्बिया नोट ११० तथा सूरह नमल नोट २५

26. यह ख़्याल सही नहीं कि हज़रत सुलैमान ने जिन्नों को अपने क्रब्जे में कर लिया था बल्कि जैसा कि आयत पुष्टि करती है, अल्लाह तआला ने अपने आदेश से जिन्नों को हज़रत सुलैमान के अधीन कर दिया था कि वे उन से जो चाहें सेवा लें। और यदि उन में से कोई जिन्न इस आदेश की अवहेलना करता तो अल्लाह तआला उस पर आग के अज़ाब का प्रकोप तोड़ देता।

13. वे उस के लिए बनाते थे जो कुछ वह चाहता , इमारतें,²⁷ तस्वीरें,²⁸ लगन ऐसे जैसे बड़े बड़े हौज़ और अपनी जगह जमीं रहने वाली भारी देंगे।²⁹ ऐ दाऊद की संतान अमल करो शुक्र के साथ ³⁰ और मेरे बन्दों में शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) कम ही हैं।³¹

يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُونَ مِنْ مَّحَارِبٍ وَتَمَاثِيلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ
وَقُدُورٍ رَاسِيَتٍ اِعْمَلُوا لِيْ دَاوُدَ شُكْرًا وَقَلِيلٌ مِّنْ عِبَادِيَ
الشَّكُوْرُ ﴿١٣﴾

14. फिर जब हम ने उस की मौत का आदेश लागू किया तो उन को उस की मौत से आगाह करने वाली चीज़ केवल ज़मीन का किड़ा था जो उस की लाठी को खा रहा था। जब सुलैमान गिर पड़ा तो जिन्नों पर यह बात स्पष्ट हुई कि अगर वे परीक्षण ज्ञाता (गैब जानते) होते तो इस अपमान भरी मुसीबत में पड़े न रहते।³²

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَى مَوْتِهِ اِلَّا دَابَّةُ
الْاَرْضِ تَاْكُلُ مِنْسَاتِهِ فَلَمَّا خُرَّجَتْ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْكَانُوا
يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿١٤﴾

15. सब ³³ के लिए उन के निवास स्थान ही में एक बड़ी निशानी मौजूद थी।³⁴ दो बाग़ दाएं और बाएं तरफ़।³⁵ खाओ अपने रब की प्रदान की हुई रोज़ी और शुक्र करो उस का। अच्छी सरज़मीन और क्षमा करने वाला रब।³⁶

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِيْ مَسْكِنِهِمْ اَيُّةٌ جَّثِيْنٌ عَنْ يَمِيْنٍ وَشِمَالٍ ؕ
كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗٓ بَلَدُهُ طَيِّبَةٌ وَرَبُّ
عَفُوْرٌ ﴿١٥﴾

16. मगर उन्होंने मुँह मोड़ा ³⁷ तो हम ने उन पर बाँध का सैलाब भेज दिया ³⁸ और उन के बाग़ों को दो ऐसे बाग़ों में बदल दिया जिन में बदमज़ा फल और झाऊ और कुछ थोड़ी बेरियाँ थीं।³⁹

فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنَاهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ
جَنَّتَيْنِ ذَوَاتِيْ اَكْلِ خُمُطٍ وَّاَثَلٍ وَشَيْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ﴿١٦﴾

17. यह था उन की नाशुकी (कृतघ्नता) का बदला जो हम ने उन को दिया।⁴⁰ और ऐसा बदला हम नाशुके लोगों को ही दिया करते हैं।

ذٰلِكَ جَزَآئُهُمْ بِمَا كَفَرُوْا وَاُولَٰئِكَ لَئِنْ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ﴿١٧﴾

18. और हम ने उन के और उन बस्तियों के बीच जिन में हम ने बरकतें रखी हैं खुली बस्तियाँ भी आबाद की थीं और उन के बीच सफ़र की मन्जिलें भी निर्धारित कर दी थीं।⁴¹ सफ़र करो इन में रात दिन अमन (शान्ति) के साथ।⁴²

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقَرَى الْاَّتَىٰ بُرُكْنًا فِيْهَا قَرْيٌ ظَاهِرَةٌ
وَقَدَرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ سَيْرُوْا فِيْهَا لَيَالٍ وَّاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿١٨﴾

27. हज़रत सुलैमान ने उन जिन्नो से बड़ी बड़ी और मज़बूत इमारतों के निर्माण का काम लिया बड़े बड़े पत्थरों को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाना उस ज़माने में जब कि क्रेन ईजाद नहीं हुए थे आसान नहीं था परन्तु जिन्नो के कारण यह काम आसान हो गया ।

28. आयत में शब्द “तमासील” इस्तेमाल हुआ है जो तिम्साल का बहुवचन है और तिम्साल अरबी में आकृति एवं प्रतिमा को भी कहते हैं तथा तस्वीर को भी। अरबी की प्रमाणिक शब्दकोष लिसानुलअरब में है।

والتّمثال : الصورة.....

“तिम्साल अर्थात् सूरत” (तस्वीर)

وظل كل شئ تمثاله.....

हर चीज़ का साया उस की तिम्साल (तस्वीर) है.....

والتّمثال اسم للشئ المصنوع متشبهًا بخلق

من خلق الله. (لسان العرب، ج ११، ص ११३)

अर्थ :- “और तिम्साल उस बनाई गई चीज़ का नाम है जो अल्लाह की किसी सृष्टि के अनुरूप बनाई गई हो।” (लिसानुल अरब जिल्द ११ पृष्ठ ६१३)

والتّمثال الشئ المصوّر - (مفردات راغب، ص ८८)

अर्थ :- तिम्साल अर्थात् चित्रित वस्तु (मुफ़रदात राग़िब पृष्ठ ४७८)

हज़रत सुलैमान पैग़म्बर थे और हज़रत मूसा की शरीअत के अनुयायी थे । अतः उन के बारे में यह नहीं समझा जा सकता कि उन्होंने जानदार (जीव) की प्रतिमा अथवा चित्र बनाए होंगे। तौरात में जीवों का चित्र बनाने को हराम बताया गया है।

“तू अपने लिए कोई मूर्ति खोद कर न बनाना न किसी की प्रतिमा बनाना जो आकाश में वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में है।” (व्यवस्थाविवरण ५:८)

जिन मुफ़स्सरीन (टीकाकारों) ने यह कहा है कि पिछली शरीअत में जीव प्राणी की तस्वीरें बनाना जायज़ था उन्होंने ने ग़लत कहा है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह हदीस भी इस बात का खण्डन करती है :-

عن عائشة أنّ أمّ حبيبة وأمّ سلمة ذكّرنا كنيسة رأيتها بالحِمْصَةِ فيها تصاوير لرسول الله ﷺ فقال رسول الله ﷺ أن أولئك إذا كان

فِيهِم الرّجل الصّالحُ فَمَاتَ بَنَوِا عَلَى قَبْرِهِ مَسْجِدًا
أَوْ صُورًا فِيهِ تِلْكَ الصُّورُ أُولَئِكَ شِرَارُ الْخَلْقِ
عِنْدَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. (مسلم كتاب المساجد)

अर्थ :- उम्मुलमोमिनीन हज़रत आइशा से रिवायत है कि उम्मे हबीबा और उम्मे सलमा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक गिरजे का वर्णन किया जिस को उन्होंने ने हब्शा में देखा था और जिस में तस्वीरें थीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इन लोगों में जब कोई नेक पुरुष होता और वह मर जाता तो ये लोग उस की क़ब्र पर उपासना स्थल बना देते और उस में इस तरह की तस्वीरें बना लेते। ये लोग क्रियामत के दिन अल्लाह तआला के नज़दीक बदतरीन सृष्टि होंगे।” (मुस्लिम किताबुलमसाजिद)

यह हदीस इस बात में बिलकुल स्पष्ट है कि पिछली शरीअत में भी तस्वीर बनाना जायज़ न था।

इस लिए हज़रत सुलैमान ने निर्जीव की ही तस्वीरें बनवाई होंगी जो शरीअत में मना नहीं हैं। ये तस्वीरें, फूल, पत्ते, वृक्ष और कुदरती जलवों की हो सकती हैं। रहा बाइबिल की किताब “राजाओं का वृत्तांत” और “इतिहास” का यह बयान कि हज़रत सुलैमान ने जीवों की तस्वीरें बनाई थी तो यह बात विश्वसनीय एवं स्वीकारणीय नहीं क्योंकि कि ये किताबें जैसा कि बाइबिल के टीकाकार का बयान है हज़रत सुलैमान के सदियों बाद लिखी गई जिन में सुनी सुनाई बातों और क्रिस्सों को बड़ा दख़ल रहा है। देखिए (The Interpreters Commentary on the Bible one Volume Page 181) और बाइबिल में तो हज़रत सुलैमान से शिर्क और बुत परस्ती को भी सम्बद्ध बताया गया है। इस लिए इस मसले में इस से तर्क निकालना सही नहीं। इस आयत का सही एवं उत्तम भावार्थ वही हो सकता है जो शरअी आदेशों से मेल खाता हो और जिस से एक पैग़म्बर के चरित्र पर आँच न आती हो। इस बारे में कुछ बातों का लिहाज़ रखना ज़रूरी है :

एक बात यह कि चित्रों में सुसज्जित शानदार भवनों के निर्माण का काम जैसे कि आयत में साफ़ तरीक़े से बयान हुआ है हज़रत सुलैमान ने जिन्नो से लिया था वे बड़े बड़े और क़ीमती पत्थर उठाकर भी लाते थे और उन पर तराश ख़राश कर के कुछ चित्रकारी भी करते थे। इस काम की उन को न मज़दूरी देनी पड़ती थी और न सरकारी ख़ज़ाने पर इस का भार पड़ता था इस लिए इस को फुज़ूल खर्ची नहीं कहा जा सकता।

दूसरी बात यह कि हज़रत सुलैमान के कारनामों में अच्छा ख़ासा हिस्सा ईश्वरीय चमत्कार का था। ताबें के स्रोत का जारी

हो जाना और जिन्नो से काम लेना ये सब इसी तरह की चीजे हैं। उन्होंने ने इस निर्माण कार्य तथा चित्रकारी को कला अथवा संस्कृति के तौर पर अपनी क्रौम में प्रचलित न किया था।

तिसरी बात यह कि चित्रों से सुसज्जित शानदार भवन नुमाइश एवं घमण्ड के लिए नहीं बनाए गए थे बल्कि अल्लाह के विशेष उदारदान को प्रकट करने के लिए बनाए गए थे जो उस ने अपने पैगम्बर सुलैमान पर किया था। अल्लाह तआला ने उन को ऐसे असाधारण संसाधन उपलब्ध कराए थे कि उन का काम मजदूरों तथा शिल्पकारों के बगैर और सरकारी खजाने को मुक्त रखते हुए अन्जाम पाता था। इस से एक तो इस्लामी हुकूमत का रौब तथा प्रभाव अन्य जातियों पर छा गया था और दूसरे हज़रत सुलैमान की सत्यता स्पष्ट हो रही थी कि वह वास्तव में अल्लाह के नबी हैं। अतः उन के शीश महल को देख कर रानी सबा के हज़रत सुलैमान से प्रभावित होने की घटना सूरह नम्ल में गुजर चुकी।

चौथी बात यह कि अल्लाह तआला की मसलहत यह थी कि एक खास शान की इस्लामी हुकूमत एक नबी के हाथों बनी इस्राईल में स्थापित हो जाए ताकि यह बनी इस्राईल के लिए असाधारण इनाम भी हो और दुनिया वालों पर स्पष्ट हो जाए कि एक ऐसी इस्लामी हुकूमत स्थापित हो चुकी है जो अपनी शासन प्रणाली में बिल्कुल अलग और उस के प्रताप एवं वैभव को देख कर खुदा याद आ जाता था। और इस हुकूमत को अत्यंत सफलतापूर्वक और पूरे न्याय एवं समानता के साथ एक नबी ने चला कर दिखाया है।

इन बातों को समझ लेने के बाद हज़रत सुलैमान के कारनामे को मुसलमान राजाओं के फुज़ूल एवं दिखावटी निर्माण और शाही महलों की वैधता अथवा इसे सही सिद्ध करने के लिए दलील नहीं बनाया जा सकता। देहली के लाल किले का दीवाने-खास जिस की दीवारों न केवल फूलों की तस्वीरों तथा अन्य चित्रकारी से सुसज्जित हैं। बल्कि जिन में क्रीमती जवाहर भी जड़ दिये गए थे फुज़ूल खर्ची का बदतरिन नमूना है और मूगल बादशाहों ने वैभवशाली महल मात्र अपने ऐश्वर्य के लिए बनाए थे और ताजमहल जैसे शान शौक़त वाले स्मारक जो उन्होंने ने निर्माण कराए वह मात्र दिखावे के लिए थे।

तस्वीर का मसला सामने आने से मन में फोटो के जायज़ अथवा नाजायज़ होने का सवाल भी उभरने लगता है मगर यहाँ बहस ख्वाहमख्वाह लंबी खिंच जाएगी क्यों कि फोटो मौजूदा ज़माने की ईजाद है और इस लिहाज़ से एक इज्तिहादी मसला है, तथा यहाँ हम इस बहस में पड़ना उचित भी नहीं समझते इस लिए बस इतनी ही बातों पर संतोष करते हैं।

29. बड़ी बड़ी देगों में खाना पकता था और बड़े बड़े लगन

में उस को निकाला जाता था ताकि एक साथ बहुत से लोग खाना खाएँ। हज़रत सुलैमान के पास जो भारी लश्कर था ऐसा लगता है कि उन के खाने के लिए यह तैयारी की गई थी अर्थात् एक फ़ौजी ज़रूरत को पूरा करने के लिए।

पत्थर के बड़े बड़े लगन और बड़ी बड़ी देगें बनाने का काम जो अपनी जगह से हटाई नहीं जा सकती थी जिन्नो से लिया गया था। यह सारी कारीगरी जैसा कि आयत में साफ़ साफ़ बयान हुआ है जिन्नो ही की कारीगरी थी।

30. आले-दाऊद से मुराद दाऊद की सन्तान भी हैं और उन के अनुयायी भी। और शुक्र के साथ अमल का मतलब यह है कि अल्लाह के इन एहसानों का शुक्र इस तरह अदा करे कि व्यवहारिक जीवन से उन की अभिव्यक्ति हो अर्थात् ऐसा रवैया जो कृतज्ञता से मेल खाता हो। इस से मालूम हुआ कि कृतज्ञता की अभिव्यक्ति के लिए मात्र ज़बान से कुछ कलिमों और प्रवचनों का पढ़ लेना काफी नहीं बल्कि उसे व्यवहारिक जीवन में उतारना ज़रूरी है।

31. क्रीमती चीज़ें दुनिया में कम ही पाई जाती हैं। सोना लोहे के मुकाबले में, हीरे और जवाहरात कोयले और पत्थर के मुकाबले में, खूबसूरत और खुशबूदार फूल झाड़ झंकाड़ के मुकाबले में और ज़ाफ़रान घास फूस के मुकाबले में। इसी प्रकार अल्लाह के कृतज्ञ बन्दे कृतघ्नों एवं नाशुक्रों के मुकाबले में बहुत कम पाये जाते हैं किन्तु वही सोसाइटी का मक्खन और मूल्यवान पूँजी होते हैं।

32. हज़रत सुलैमान की मौत भी चमत्कारिक रूप से हुई थी। हुआ कुछ यूँ कि वे अपनी लाठी से टेक लगाए खड़े थे और जिन्नो के काम की देख रेख कर रहे थे कि मौत ने उन्हें आ लिया मगर उन की लाश को अल्लाह तआला ने ज़मीन पर गिरने नहीं दिया बल्कि उसे लाठी के सहारे खड़ा ही रखा ताकि जिन्न यह समझते ही रहें कि सुलैमान जिन्दा हैं और काम में लगे रहें जो उन के सुपुर्द कर दिया गया था ताकि निर्माण कार्य पूर्ण हो। वे इस काम को करते रहे यहाँ तक कि जब उन की मौत को अल्लाह तआला ने ज़ाहिर करना चाहा तो ज़मीन के कीड़े अर्थात् दीमक को इशारा किया कि वह उन की लाठी को खा ले। दीमक ने जब लाठी को चाट डाला तो लाठी ठहर न सकी और हज़रत सुलैमान ज़मीन पर गिर पड़े। उस समय जिन्नो पर यह बात खुल गई कि सुलैमान की मौत इस से पहले ही हो चुकी थी तथा उन की लाश लाठी के सहारे खड़ी थी। उस समय उन्हें एहसास हुआ कि अगर वे ग़ैब (परोक्ष) की बातें जानते होते तो सुलैमान की मौत की खबर उन्हें पहले ही हो गई होती और उन्हें इस काम से जो अपमान के साथ मुसीबतों से अन्जाम देना पड़ रहा था कभी का छुटकारा मिल गया होता क्यों कि जिन्न सुलैमान

के दरबार में उन्हीं के निर्देश पर काम करने के लिए नियुक्त किये गए थे।

इस घटना का खास पहलू जिस की ओर लोगों का ध्यानकृष्ट कराना अभिप्रेत है यह है कि जिन्नों के बारे में यह खयाल गलत है कि वे ग़ैब की बातें जानते हैं जिन्नों को परोक्ष ज्ञाता (ग़ैब का जानने वाला) समझ कर लोग उन से मदद चाहने के इच्छुक होते हैं और सिफली अमल में लिप्त हो जाते हैं। यह मात्र अंधविश्वास है किन्तु आज भी कितने ही लोग विश्वास एवं धारणा की खराबी के चलते जिन्नों की दुहाई देते हैं और जब कोई व्यक्ति मानसिक रोग में लिप्त हो जाता है तो उसे आसेब समझकर निर्दयता से उस की पिटाई करते हैं और यह समझते हैं कि वास्तव में वे उस जिन्न को पीट रहे हैं जो उस व्यक्ति पर सवार हो गया है। और फिर जिन्न को हाज़िर कर वे उस से कुछ उगलवाने की कोशिश करते हैं। इस मौक़े पर शैतान उन्हें धोखे पर धोखे दिये चला जाता है और उन का अंधविश्वास उन को नीचता एवं अपमान में ग्रस्त कर देता है।

ध्यान रहे कि कुर्आन ने इस बात की पुष्टि नहीं की कि हज़रत सुलैमान इन्तिक़ाल के बाद कितने समय तक टेक लगाए खड़े रहे। जिन रिवायतों में एक वर्ष का उल्लेख हुआ है और जिन को मुफ़स्सिरीन ने उद्धृत किया है वे सब अविश्वसनीय एवं अस्वीकारणीय है। सही दर्जे की कोई रिवायत भी इस सिलसिले में मौजूद नहीं है। इस लिए किसी लम्बी मुद्दत को मान लेना ज़रूरी नहीं हो सकता है, वे इस हालत में कुछ रोज़ रहे होंगे और इतना समय भी जिन्नों को यह महसूस करा देने के लिए काफ़ी हुआ कि उन्हें उन के मौत की समय पर ख़बर न हो सकी। रहा यह प्रश्न कि अगर जिन्नों को हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के इन्तिक़ाल की ख़बर न हो सकी तो क्या इन्सानों को भी नहीं हो सकी थी और अगर इन्सानों को हुई थी तो फिर बग़ैर कफ़न दफ़न के लाश को किस तरह एक समय तक उसी हालत पर रहने दिया गया? तो इस सिलसिले में यह बात सामने रहनी चाहिए कि कुर्आन ने केवल जिन्नों के बेख़बर रहने की पुष्टि की है। इन्सानों के बेख़बर रहने की पुष्टि नहीं की है।

مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ

“उस की मौत पर उन को सूचित करने वाली चीज़ ज़मीन का कीड़ा था” में उन को का इशारा जिन्नों की तरफ़ है क्योंकि कि इस आयत में भी जिन्नों की कारीगरी बयान हुई है। इस संदर्भ (Context) में कोई ऐसी बात नहीं जो इन्सानों के लिए तर्क प्रस्तुत करती हो। इस लिए हम समझते हैं कि हज़रत सुलैमान ने अल्लाह से इशारा पा कर अपने इन्तिक़ाल के मौक़े पर ही अपने परिवार जनों और हुकूमत के प्रतिनिधियों को निर्देश दिया होगा कि वे उन की लाश को अपने हाल पर रहने दें जब तक

कि वह गिर न पड़े और उन्हीं ने उस का पालन किया होगा। या फिर उन्हीं ने यह देख कर कि हज़रत सुलैमान इन्तिक़ाल के बावजूद लाठी के सहारे खड़े हैं और ज़मीन पर उन की लाश गिर नहीं रही है, यह समझा होगा कि यह अल्लाह का खुला मोज्जा (चमत्कार) है इस लिए आगे आईदा कोई बात ज़ाहिर होने तक लाश को इसी हालत में रहने देना चाहिए। और चूँकि उन की लाश खुदा के मोज्जे के चलते खड़ी थी इस लिए उस के सुरक्षित रहने की तरफ़ से भी इत्मीनान रहा होगा और दफ़न करने का सिलसिला भी तब शुरू हुआ होगा जब कि वह ज़मीन पर गिर पड़े। जो जिन्न काम पर तैनात थे उन के और इन्सानों के बीच अल्लाह तआला ने ऐसी रूकावटें खड़ी कर दी होंगी कि जिन्नों को किसी तरह भी हज़रत सुलैमान की मौत का पता चल न सका। हमारे खयाल में इस औचित्यपूर्ण व्याख्या के बाद कोई दुविधा और कोई प्रश्न बाक़ी नहीं रहता। और वास्तविकता का ज्ञान तो अल्लाह ही को है।

33. सबा एक जाति का नाम है जो यमन के इलाक़े में आबाद थी और उन की राजधानी माआरिब थी जो सनआ के पूर्व की दिशा में १९३ किमी. के फासले पर है। सूरह नम्ल में रानी सबा को हज़रत सुलैमान के पास हाज़िर होने और इस्लाम स्वीकार करने की घटना गुज़र चुकी। उस ज़माने में आम तौर पर प्रजा का वही धर्म होता था जो राजा का होता था। इस लिए सबा की रानी जब इस्लाम स्वीकार कर के अपने देश को लौटी होगी तो उस की प्रजा ने भी इस्लाम स्वीकार किया होगा। इस प्रकार सबा के देश यमन में हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के ज़माने ही में इस्लाम पहुँच गया था। सबा की क़ौम सैकड़ों वर्ष तक राज्य भी करती रही और खुशहाल भी रही। वह अरब का प्रतापी, सुसभ्य एवं विकसित राज्य था परन्तु बाद में जब उन्होंने ने अल्लाह की नाशुक़ी (कृतघ्नता) का रवैया अपनाया तो वे सारी नेमतें उन से छीन ली गईं जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान की थीं। नाशुक़ी करने वाली क़ौम के इस अन्जाम को यहाँ इबरात के लिए प्रस्तुत किया गया है।

34. अर्थात् जिस क्षेत्र में वे आबाद थे उस के उपजाऊ होने और पूरी जाति के लिए खुशहाली का साधन होने में इस बात के स्पष्ट चिन्ह मौजूद थे कि ये नेमतें उन के ख अल्लाह ही की प्रदान की हुई हैं और उस के इस एहसान पर शुक्र (कृतज्ञताभिव्यक्ति) अनिवार्य है और यह कि अगर वह चाहे तो ये नेमतें छीन भी सकता है इस लिए उस से डरते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिए।

35. अर्थात् बागों का एक सिलसिला दाईं ओर था और दूसरा बाईं ओर, जिन में सुन्दर और स्वादिष्ट फलों से लदे हुए वृक्ष लहलहाते खेत और खुशबूदार वृक्ष इतने अधिक थे कि पूरा क्षेत्र सुन्दर वाटिका बनी हुई थी।

36. अर्थात् रोजी की यह बाहुल्यता उन के ख ही की प्रदान की हुई थी और ये नेमत की चीजें जैसे अपने मुँह से कह रही हों कि अपने ख की रोजी खाओ और उस का शुक्र अदा करो। और कुदरत भी अपनी खामोश ज़बान में एलान कर रही थी कि कैसी उत्तम और उपजाऊ है यह भूमि और खूब है वह ख जो अपने कृतज्ञ बन्दों के गुनाहों को क्षमा करता है।

37. अर्थात् उन्होंने अल्लाह का शुक्र अदा करने के बजाय उस से बेपरवाह हो गए तथा उस से विमुखता अपना ली और जब उन्होंने ने अल्लाह से मुँह फेरा तो फिर उन का बहुदेववाद और संसार की मोहमाया में लिप्त होना सुनिश्चित है।

38. बाँध का सैलाब से तात्पर्य वह सैलाब है जो बाँध (Dam) तोड़ कर सबा के बागों और खेतों में घुस पड़ा और सब कुछ तहस नहस कर के रख दिया। यह बाँध सद्दे मआरिब के नाम से प्रसिद्ध है जो सबा की जाति ने अपनी राजधानी मआरिब में दो पहाड़ों के बीच जिन का नाम अबलक है बनाया था ताकि बारिश और स्रोतों का पानी उस में जमा रहे। उन्होंने ने इस से नहरें निकाल कर सिंचाई का सामान किया था। बाँध (Dam) बनाने की कला आधुनिक युग का आविष्कार नहीं है बल्कि यह कला दो हजार वर्ष पूर्व से भी अधिक पुरानी है। सबा की जाति ने इस में बड़ी निपुणता एवं दक्षता का सबूत दिया था। (बाँध की तफ़सील के लिए देखिए अर्जुल कुर्आन, सैय्यद सुलैमान नदवी, शीर्षक सद्दे-मआरिब जिल्द १ पृष्ठ २५४) बाँध टूटने की यह घटना अनुमानतः दूसरी सदी ईसा पूर्व में घटित हुई होगी।

इस बाँध (Dam) के पुरातत्व अब भी मआरिब में मौजूद हैं और अपनी दशा से इबरत की दास्तान सुना रहे हैं। हम इस के चित्र आगे के पृष्ठों पर दे रहे हैं। इन पुरातत्वों की तफ़सीलात के लिए देखिए डा. अब्दुल अलीम अबदुर्हमान खिज़्र की किताब “मफ़ाहीम जुग्राफ़िया फिल क्रिसासिल कुर्आनी, प्रकाशक दारुशशरूक जिदा पृष्ठ १९५ से २०६)

39. अर्थात् सैलाब की विनाशकारियों का परिणाम यह हुआ कि फलदार वृक्ष समाप्त हो गए और उन की जगह कड़वे कसैले फल वाले वृक्षों, और झाड़ झंकाड़ ने ले ली अगर खाने का कोई वृक्ष रहा तो वह बेरियों का वृक्ष था और वह भी बहुत कम।

मालूम होता है कि सैलाब ने अपने साथ रेत और कुछ ऐसे

तत्व बिखेर दिये कि ज़मीन पर उन की तह जम जाने से उन की सारी उर्वरता एवं उपज शक्ति समाप्त हो गई।

40. सबा के लोगों को अकृज्ञता व नाशुक्री की ऐसी सज़ा मिली कि उस का सारा ऐश्वर्य काफूर हो गया और खुशहाली का जीवन बदहाल हो कर रह गया।

स्पष्ट हुआ कि अल्लाह तआला जब किसी कृतघ्न एवं अकृतज्ञ जाति को दण्ड देना चाहता है तो उस से अपनी नेमतें छीन लेता है और उस की आर्थिक व्यवस्था को छिन्न भिन्न कर देता है। यह तभी होता है जब कि जाति अल्लाह की नेमतों का निरादर करने लगती है और अपने ख से मुँह फेर लेती है। कुर्आन करीम में दूसरी जगह अल्लाह की यह सुन्नत (नियम) बयान हुई है :-

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغَيِّرُ مَا بَقِيَتْ حَتَّىٰ يُعَيِّرُ أَمَّا بِأَنفُسِهِمْ. (عد-॥)

अर्थ :- “अल्लाह किसी क्रौम की हालत को नहीं बदलता जब तक कि वह अपने रवैये को नहीं बदलती।” (रउद ११)

सबा की इस घटना से यह भी स्पष्ट हुआ कि खुशहाली हो या बदहाली सब अल्लाह ही के वश में है। न देवी देवताओं का कोई अस्तित्व है और न रोजी देने पर कोई समर्थन है। सत्य केवल एकेश्वरवाद है और बहुदेववाद सरासर असत्य।

41. यह एक दूसरी नेमत का ज़िक्र है जो सबा को प्रदान की गई थी। उन के लिए यात्रा को बहुत आसान और आराम दह बनाया गया था। वे सीरिया और फ़लस्तीन की ओर व्यापारिक सफ़र करते थे। अल्लाह तआला ने उस राजमार्ग को जो यमन से बैतुलमुकद्दस और दमिश्क तक जाती थी इस लायक बना दिया था कि क़रीब क़रीब बस्तियाँ आबाद हो गईं। मुसाफ़िरों के लिए मन्ज़िलें तय करना आसान हो गया। ये बस्तियाँ राजमार्ग के किनारों पर आबाद होने की वजह से खुली दिखाई देने वाली बस्तियाँ थीं इस लिए सुकून और शान्ति के साथ सफ़र करना संभव हो गया था।

“उन बस्तियों के बीच जिन में हम ने बरकतें रखी थीं” से तात्पर्य बैतुलमुकद्दस फ़लस्तीन और सीरिया का इलाका है इस सरज़मीन के लिए कुर्आन का समान्य सम्बोधन है। व्याख्या के लिए देखिए सूरह बनी इस्राईल नोट १

42. यह भी कुदरत का अपनी खामोश ज़बान में एलान था।

मगर उन्होंने ने कहा ऐ हमारे रब ! हमारे सफ़र के फासले में दूरी पैदा कर दे और उन्होंने ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया। तो हम ने उन को अफ़साना बना कर रख दिया और उन को बिलकुल तितर बितर कर डाला। निस्संदेह इस में निशानियाँ हैं हर उस व्यक्ति के लिए जो सब्र करने वाला शुक्र करने वाला हो। और इब्लीस ने उन पर अपना गुमान सच कर दिखाया अतः उन्होंने उस की पैरवी की सिवाय एक गिरोह के जो मोमिन था। (अल-कुर्आन)

19. मगर उन्होंने ने कहा ऐ हमारे रब !⁴³ हमारे सफ़र के फासले में दूरी पैदा कर दे ⁴⁴ और उन्होंने ने अपने ऊपर जुल्म किया।⁴⁵ तो हम ने उन को अफ़साना बना कर रख दिया ⁴⁶ और उन को बिलकुल तितर बितर कर डाला।⁴⁷ निस्संदेह इस में निशानियाँ हैं हर उस व्यक्ति के लिए जो सब्र करने वाला शुक्र करने वाला हो।⁴⁸

فَقَالُوا رَبَّنَا بَعْدَ بَيْنِ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ وَمَرَّقْنَاهُمْ كُلَّ مَسْرِقٍ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ①٩

20. और इब्लीस ने उन पर अपना गुमान सच कर दिखाया ⁴⁹ अतः उन्होंने उस की पैरवी की सिवाय एक गिरोह के जो मोमिन था।⁵⁰

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ②٠

21. उस का उन पर कोई ज़ोर न था ⁵¹ मगर हम यह देखना चाहते थे कि कौन आखिरत पर ईमान लाता है और कौन उस के बारे में शक में पड़ा हुआ है।⁵² और तुम्हारा रब हर चीज़ की निगरानी करने वाला है।

وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِمْ مِّن سُلْطَانٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ مَن يُّؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنهَا فِي شَكٍّ وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيزٌ ②١

22. कहो,⁵³ पुकारो उन को जिन को तुम ने अल्लाह के सिवा पूज्य समझ रखा है। वे न आसमानों में कण बराबर अधिकार रखते हैं और न ज़मीन में।⁵⁴ और न इन दोनों में उन का कोई साझा है ⁵⁵ और न ही उन में से कोई उस का मददगार।

قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِّن دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهَا مِن شَرْكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُمْ مِّن ظَهِيرٍ ②٢

23. उस के समक्ष कोई शफ़ाअत (सिफ़ारिश) काम नहीं आ सकती मगर जिन के लिए वह इजाज़त दे।⁵⁶ यहाँ तक कि जब उन के दिलों से घबराहट दूर होगी तो वे पूछेंगे तुम्हारे रब ने क्या फ़रमाया?⁵⁷ वे कहेंगे बिलकुल हक़ फ़रमाया है ⁵⁸ और वह महान और उच्चतर है।⁵⁹

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُ إِلَّا لِمَن أَذِنَ لَهُ حَتَّىٰ إِذَا فُزِعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقُّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ②٣

24. इन से पूछो कौन तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी देता है? कहो अल्लाह। और हम और तुम दोनों में से एक हिदायत (सीधी राह) पर है और दूसरा खुली गुमराही में।⁶⁰

قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ وَ إِنَّا أَوْلَاكُمْ لَعَلِّي هُدَىٰ أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ②٤

25. कहो तुम से हमारे अपराध की पूछ ताछ न होगी और जो कुछ तुम कर रहे हो उस के बारे में हम से नहीं पूछा जाएगा।⁶¹

قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَمَّا أَجُومَنَّا وَلَا أَسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ ②٥

43. मालूम हुआ कि सबा की क्रौम अल्लाह को अपना रब मानती थी फिर भी उस की नाशुक्री तथा अवहेलना करती थी।

44. सबा वालों ने अल्लाह की इस नेमत का भी निरादर किया। कहने लगे जिस सफ़र में कष्ट न हो वह सफ़र ही क्या। उन की यह दुआ कि हमारे सफ़र की मन्जिलों (फासलों) में दूरी पैदा कर दे मनुष्य की उस मानसिकता को दर्शाता है जो कुर्आन में दूसरी जगह बयान हुई है।

وَيَذْعُو الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ - (ن.स. ११)

अर्थ :- “और मनुष्य शर (बुराई) के लिए उसी तरह दुआ करने लगता है जिस तरह उसे खैर (भलाई) के लिए दुआ करनी चाहिए।” (बनी इस्राईल - ११)

और मक्का के बहुदेववादियों ने भी अपने लिए बहुआ की थी :-

اَللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِكَ فَامْطُرْ عَلَيْنَا جَارَةً مِنَ السَّمَاءِ اَوْ تُنْتَابِعِ اَذَابِ الْيَمِّ - (अन्फाल - ३२)

अर्थ :- “ऐ अल्लाह अगर यह वास्तव में सत्य है तेरी ओर से तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या हम पर कोई और दुखदायिनी यातना उतारा।” (अनफ़ाल ३२)

45. अर्थात् ऐसा कर के उन्होंने अपने ही ऊपर ज़्यादती की। अल्लाह की नाशुक्री करने से अल्लाह का कुछ नहीं बिगड़ता बल्कि आदमी अपने ही को अल्लाह के प्रकोप का भागीदार बना देता है।

46. अर्थात् कहाँ सबा का वह उत्थान और कहाँ उस का यह पतन कि वे इतिहास के पन्नों में चिरकालीन कथा बन कर रह गए।

47. बाँध के टूट जाने और बागों के उजड़ जाने से सबा वालों का व्यपार भी प्रभावित हुआ। जो व्यापारिक काफ़िले खुशबूदार मसाले और अन्य क्रीमती सामान ले कर सीरिया की तरफ़ जाया करते थे उन का कारोबार भी ठप्प पड़ गया। परिणाम यह हुआ कि सबा के विभिन्न क़बीले देश छोड़ने पर विवश हो गए और तिहामा, सीरिया आदि विभिन्न इलाक़ों में उन्होंने अपना ठिकाना बना लिया। इस प्रकार सबा जाति छिन्न भिन्न हो गई और वे बिखर कर रह गए।

कुछ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि सबा की तरफ़ नबी भेजे गए थे। मगर यह बात न कुर्आन में बयान हुई है और न किसी सही हदीस में। और जो सज़ा सबा की क्रौम को मिली उस से अन्दाज़ा होता है कि उन की तरफ़ सीधे कोई रसूल नहीं भेजा गया था वरना रसूल को झुठलाने का अन्जाम तो यह होता है कि उस क्रौम का अस्तित्व ही मिटा दिया जाता है, जब कि सबा

की अर्थ व्यवस्था नष्ट कर दी गई और वे तितर बितर हो कर रह गए। यह सज़ा उस सज़ा से अलग थी जो रसूल को झुठलाने वाली क्रौमों को दी जाती रही। रही इस्लाम की दअवत का सबा जाति तक पहुँचने की और उन पर अल्लाह की हुज़्जत कायम हो जाने की बात तो यह काम हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के द्वार सम्पन्न हुआ था और बनी इस्राईल के अन्य नबियों द्वारा भी अन्जाम पाता रहा होगा क्यों कि उस ज़माने में पवित्र धरती को इस्लामी दअवत का केन्द्र बनाया गया था ताकि बनी इस्राईल के द्वारा दूसरी क्रौमों तक दअवत पहुँचे।

48. सबा की इस ऐतिहासिक घटना में रहनुमाई का काफ़ी सामान मौजूद है। जैसे यह कि किसी क्रौम की खुशहाली अल्लाह तआला के एहसान का फल होती है और जब वह क्रौम उस का निरादर करती और अपने रब से मुँह फेर लेती है तो उस की खुशहाली को अल्लाह तआला बदहाली में परिवर्तित कर देता है। दूसरे यह कि क्रौमों का उत्थान और पतन मात्र बाह्य कारणों के चलते नहीं होता बल्कि उस के पीछे अल्लाह की हिकमत और उस का न्याय परक विधान निहित होता है। तीसरे यह कि उस ने सबा को नाशुक्री एवं कृतघ्नता की सज़ा दे कर इब्रत के लिए एक उदाहरण सामने रख दिया है जो इतिहास के पन्नों पर यादगार बन गया है। चौथे यह कि यह दुनिया मज़े उड़ाने के लिए नहीं बल्कि ज़िम्मेदारियों को अदा करने के लिए है और मनुष्य की सफलता का दारोमदार ज़िम्मेदारियों को अदा करने ही पर निर्भर है।

किन्तु अल्लाह और उस की तरफ़ रहनुमाई करने वाले इन चिन्हों से वही लोग लाभ उठाते हैं जो सब्र और शुक्र के गुण अपने स्वाभाव में रखते हों।

49. इशारा है उस बात की तरफ़ जो इब्लीस ने कही थी कि :-

وَلَاغُو يَنْهَمُ أَجْمَعِينَ الْإِعْبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُخْلِصِينَ - (ح. ३९-४०)

अर्थ :- “और मैं इन सब को बहकाऊंगा सिवाय तेरे उन बन्दों के जिन को तूने उन में से ख़ास कर लिया हो।” (सूरह हिज़्र ३९, ४०)

وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ - (अ. १८)

अर्थ :- “और तू इन में से अधिकतर को शुक्र गुज़ार (कृतज्ञ) न पायेगा।” (सूरह आराफ़ - १७) और सब ने इब्लीस को उस का यह ख़्याल सही सिद्ध कर दिखाने का अवसर दिया।

50. मालूम हुआ कि सबा की क्रौम में एक मोमिन वर्ग भी था जिस ने शैतान का अनुसरण नहीं किया और अल्लाह की

कृतघ्नता का रास्ता नहीं अपनाया।

51. अर्थात् शैतान ने अपने पीछे चलने के लिए लोगों को विवश नहीं किया था केवल उकसाया भर था इस लिए जो लोग उस के पीछे चले वे अपने किये के खुद ज़िम्मेदार हैं।

52. अर्थात् अल्लाह तआला ने सब को पहले खूशहाल और फिर बदहाल बना कर इस आजमाइश में डाला कि वे आखिरत को मानते हैं या नहीं। जो आखिरत पर ईमान रखने वाले हैं वे उन लोगों से अलग हो जाएं जिन को आखिरत का विश्वास नहीं है और आशंकाओं एवं संदेहों में लिप्त हैं।

स्पष्ट हुआ कि वास्तव में अल्लाह की कृतज्ञता, उस की शुक्र गुजारी वही है जो आखिरत पर ईमान के साथ हो।

53. यहाँ से सम्बोधन बहुदेववादियों की तरफ़ मूड गया है और बहुदेववाद (शिरक) के खण्डन में दिल और दिमाग़ को अपील करने वाली बातें इर्शाद हुई हैं।

54. यह बहुदेववादियों की उस धारणा का खण्डन है कि उन के पूज्य कुछ ईश्वरीय अधिकार रखते हैं। और न ही कुछ कर सकने का अधिकार रखते हैं, न आसमानों में और न ज़मीन में। सारा अधिकार अल्लाह ही का है फिर जो कोई अधिकार नहीं रखते वे किस तरह उपास्य योग्य हो गए और उन की पूजा कर के क्या चीज़ प्राप्त की जा सकती है?

इस आयत में ग़ैरुल्लाह के अधिकारों का जो खण्डन किया गया है उस से केवल बुत परस्तों की धारणा का ही खण्डन नहीं होता बल्कि क़ब्र परस्तों की धारणा का भी खण्डन होती है। वे भी कुत्ब, अब्दाल आदि को अधिकार वाला मानते हैं और बात यह बताते हैं कि ये अधिकार उन को अल्लाह के प्रदान करने से प्राप्त हुए हैं। मगर पहली बात तो यह कि यह अल्लाह पर मिथ्यारोप (झूठ) है क्यों कि अल्लाह ने कही नहीं फ़रमाया कि उस ने फ़लाँ और फ़लाँ को कुछ अधिकार दिए हैं। दूसरे यह कि अल्लाह के अधिकार परिवर्तनीय हैं ही नहीं बिलकुल उसी तरह जिस प्रकार खुदा का कोई भाग परिवर्तनीय नहीं है। वरना अल्लाह के गुणों में शिरक (साझा) शामिल हो जाएगा। सृष्टि को जो अधिकार अल्लाह तआला प्रदान करता है वे संरचना से सम्बन्धित होते हैं अर्थात् खुदा के पैदा किये हुए होते हैं न कि खुदा के अधिकारों का अंश। और हाज़तों का पूरा करना, फ़रियादों का सुनना और मुश्किलों को दूर करना इन सब का सम्बन्ध अल्लाह के अधिकार से है क्यों कि उस के लिए हाज़िर-व-नाज़िर होना, प्रत्येक व्यक्ति के हालात को जानना, जिस भाषा में वह पुकारे उस को समझना, उस के दिल की बातों को भी जान लेना और उस की आवश्यकताओं को पूरा करने पर समर्थ होना ज़रूरी है। इस लिए बन्दों को जो अधिकार प्राप्त होते हैं वे संरचनात्मक तथा अत्याधिक सीमित होते हैं। फ़रियादों का

सुनना, और आवश्यकताओं को पूरा करना, जो खुदा के ही काम हैं कोई सम्बन्ध नहीं होता। इस अन्तर को नज़रंदाज़ कर के कितने ही मुसलमान शिरक (बहुदेववाद) में लिप्त हो गए हैं और जब ऐसी तफ़्सीरें भी लिखी जा रही हैं जो शिरक के बारे में लोगों को भ्रमित करती हैं। एक पंक्ति उदाहरण स्वरूप देखिए:-

“मालूम हुआ कि किसी चीज़ पर मालिक न होना बुतों के लिए है। नबी, वली, रब की अता से रब की हर चीज़ के मालिक हैं।” (संक्षिप्त तफ़्सीर नईमी पृष्ठ ६८७) आयत की यह तफ़्सीर कितनी गुमराह करने वाली है। जो आयत ग़ैरुल्लाह के अधिकारों का खण्डन करती है उसी को नबियों, वलियों के अधिकारवान होने के प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है। अर्थात् जो आयत हिदायत के लिए थी उस से गुमराही उद्धृत की गई। अल्लाह तआला इन गुमराहियों से बचाए।

55. अर्थात् आसमानों और ज़मीन के पैदा करने में ग़ैरुल्लाह का कोई हाथ नहीं फिर उन्हें इस कायनात में वे अधिकार कहाँ से प्राप्त हो गए जो उस के सृष्टा ही के लिए विशिष्ट हैं।

56. इशारा है फ़रिश्तों की तरफ़ जिन को बहुदेववादी अल्लाह की बेटियाँ समझ कर पूजते थे और कहते थे कि ये अल्लाह के समक्ष हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं। अर्थात् यदि क्रियामत आन ही पड़ी तो ये अल्लाह के समक्ष हमारी सिफ़ारिश करें के हमें अज़ाब से मुक्ति दिलाएंगे। सिफ़ारिश की इस धारणा को ग़लत बताते हुए स्पष्ट किया गया कि फ़रिश्तों की यह मज़ाल नहीं कि वे अल्लाह के समक्ष किसी की सिफ़ारिश करें ना यह कि वे अपनी सिफ़ारिश मनवा कर रहें। शफ़ाअत (सिफ़ारिश) अल्लाह की क्षमा की एक सूरत है और वह उन ही लोगों के पक्ष में हो सकेगी जिन के लिए अल्लाह इज़ाज़त दे और यह इज़ाज़त बहुदेववादियों के पक्ष में कदापि नहीं होगी क्यों कि उन की क्षमा के दरवाज़े बन्द होंगे।

सिफ़ारिश की अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह मरयम नोट १११, सूरह बक्रर: नोट ४१२ और सूरह अम्बिया नोट ३१।

57. इस वाक्य का सम्बन्ध “मगर जिन के लिए वह इज़ाज़त दे” से है। अर्थात् जिन लोगों के पक्ष में सिफ़ारिश की इज़ाज़त दी जाएगी तो इस का मौक़ा भी क्रियामत के दिन एक ख़ास चरण में आएगा। इस चरण के आने तक तो सिफ़ारिश के उम्मीदवारों पर अत्यंत भय छाया रहेगा और वे घबराहट की हालत में रहेंगे। उन की यह घबराहट उसी समय दूर होगी जब अल्लाह तआला उन के पक्ष में सिफ़ारिश करने की अनुमति फ़रिश्तों और नबियों आदि को देगा उस समय वे सिफ़ारिश

करने वालों से पूछेंगे कि तुम्हारे रब ने क्या फ़रमाया।

58. वे जवाब देंगे कि हक़ फ़रमाया अर्थात् उस ने शफ़ाअत की इजाज़त दी है और यह हक़ न्याय पर आधारित है। मतलब यह है कि उस ने तुम्हारे पक्ष में शफ़ाअत की इजाज़त इस लिए दी है कि तुम बहुदेववादी और काफ़िर नहीं थे।

इस से शफ़ाअत के सिलसिले में यह बात मन में बिठाना अभिप्रेत है कि :-

प्रथम :- फ़रिश्तों की सिफ़ारिश की वह धारणा जो बहुदेववादियों ने गढ़ रखी है सरासर ग़लत और निर्मूल है।

द्वितीय :- क्रियामत के दिन कामयाबी और मुक्ति का असल दारोमदार ईमान और अच्छे कर्मों पर होगा। सिफ़ारिश एक अलग रियायत होगी और वह उन ही लोगों के पक्ष में होगी जो बहुदेववादी और काफ़िर नहीं होंगे और जिन के बारे में अल्लाह तआला सिफ़ारिश करने की इजाज़त दे।

तृतीय :- यह इजाज़त भी न्याय और हिसाब किताब की प्रक्रिया शुरू होते ही नहीं दे दी जाएगी बल्कि एक ख़ास चरण में दी जाएगी। उस समय तक सिफ़ारिश के उम्मीदवारों पर बेपनाह घबराहट छाई होगी। अर्थात् जब तक सिफ़ारिशें स्वीकार करने का ख़ास चरण शुरू नहीं हो जाता क्रियामत का दीर्घतम दिन उन के लिए यातना और मुसीबत का ही दिन रहेगा। मनुष्य जब दुनिया में थोड़ी देर के लिए मुसीबत सहन करने के लिए तैयार नहीं होता तो फिर सिफ़ारिश पर आश्रय कर के क्रियामत के दिन की दीर्घकालिक यातना को सहन करने के लिए किस तरह आमादा हो जाता है। सही सूरत यही है कि आदमी सिफ़ारिश पर आश्रित होने के बजाय ईमान और अच्छे कर्मों का जीवन बिताये।

मौजूदा मुसलमानों में भी सिफ़ारिश की ग़लत धारणा बैठ गई है और इसी कारण उन की भारी संख्या कर्म हीन हो कर रह गई है। अगर वे कुआन की इन आयतों पर ग़ौर करते तो

गिर कर इतने नीचे तक न पहुँचते।

कुछ मुफ़स्सरीन ने “उन के दिलों की घबराहट दूर होगी” से फ़रिश्तों की घबराहट मुराद ली है लेकिन عَنْ قُلُوبِهِمْ (उन के दिलों से) के शब्द फ़रिश्तों के लिए उचित नहीं मालूम होते। अगर फ़रिश्तों की घबराहट मुराद होती तो उन के लिए عَنْ أَنْفُسِهِمْ (उन के नफ़्स से) के शब्द प्रयुक्त होते इस लिए हम ने सिफ़ारिश चाहने वालों की घबराहट मुराद ली है और आयत का जो भावार्थ हम ने बयान किया है उस के बाद हमारे ख़्याल में कोई आपत्ति बाक़ी नहीं रहती ----- (वल्लाहु आलम)

59. अल्लाह महान और उच्चतर है इस लिए किसी की मजाल नहीं कि वह बलपूर्वक उस से अपनी सिफ़ारिश मनवाए।

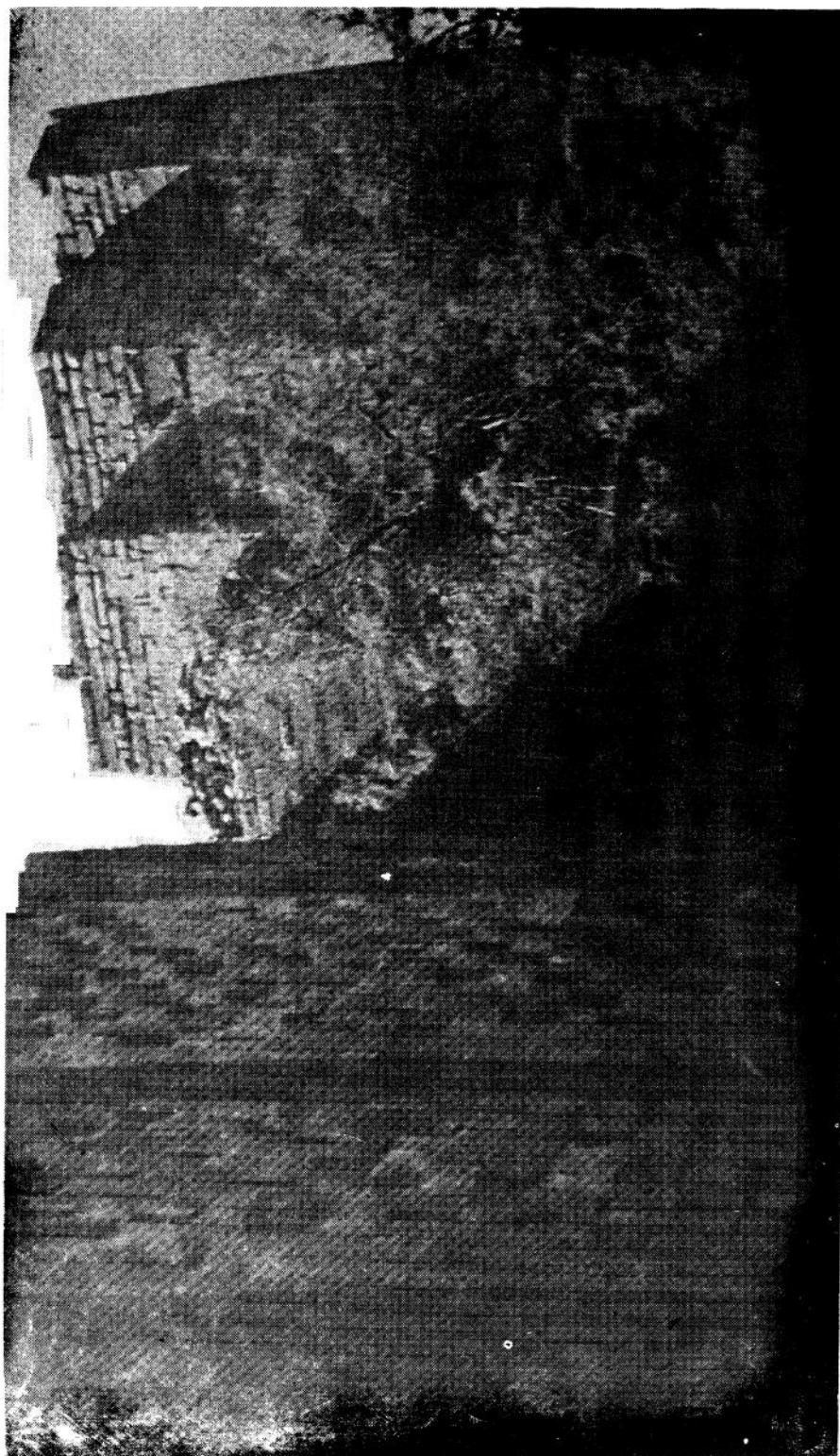
60. अर्थात् जब इस सच्चाई से तुम्हें भी इन्कार नहीं कि रोज़ी अल्लाह ही देता है तो फिर ग़ैरुल्लाह को जो रोज़ी नहीं देते पूज्य ठहराने का क्या औचित्य है। और जब हम ने वास्तविक रोज़ी देने वाले को पूज्य मान लिया और तुम ने उन को पूज्य बना लिया जो रोज़ी देने वाले नहीं हैं तो हमारी और तुम्हारी राहें अलग हो गईं। अब निश्चित रूप से हम दोनों में कोई एक सीधी राह पर है और दूसरा गुमराही में। अब तुम सोच लो कि हिदायत पर कौन है और गुमराह कौन?

आयत में जिस शैली में बात कही गई है वह इन्कार करने वालों को सोचने तथा विचार करने का निर्मंत्रण देने वाली है।

61. इस आयत में इन्कार करने वालों को सोचने तथा विचार करने का न्योता दिया गया है कि तुम उल्टे हमें अपराधी बताते हो लेकिन यदि हम ने सचमुच अपराध किया है तो उस की जवाबदेही हमें करनी होगी न कि तुम्हें और तुम्हारे कर्मों के बारे में तुम से पूछा जाएगा न कि हम से। अतः बुद्धिमानी का तक्राज़ा है कि तुम हमें अपराधी बताने से पहले खुद अपनी धारणाओं और कर्मों का जायज़ा लो कि क्या ये सही हैं और क्रियामत के दिन जब तुम से पूछ ग़छ होगी तो तुम इस का क्या जवाब दे सकोगे ?



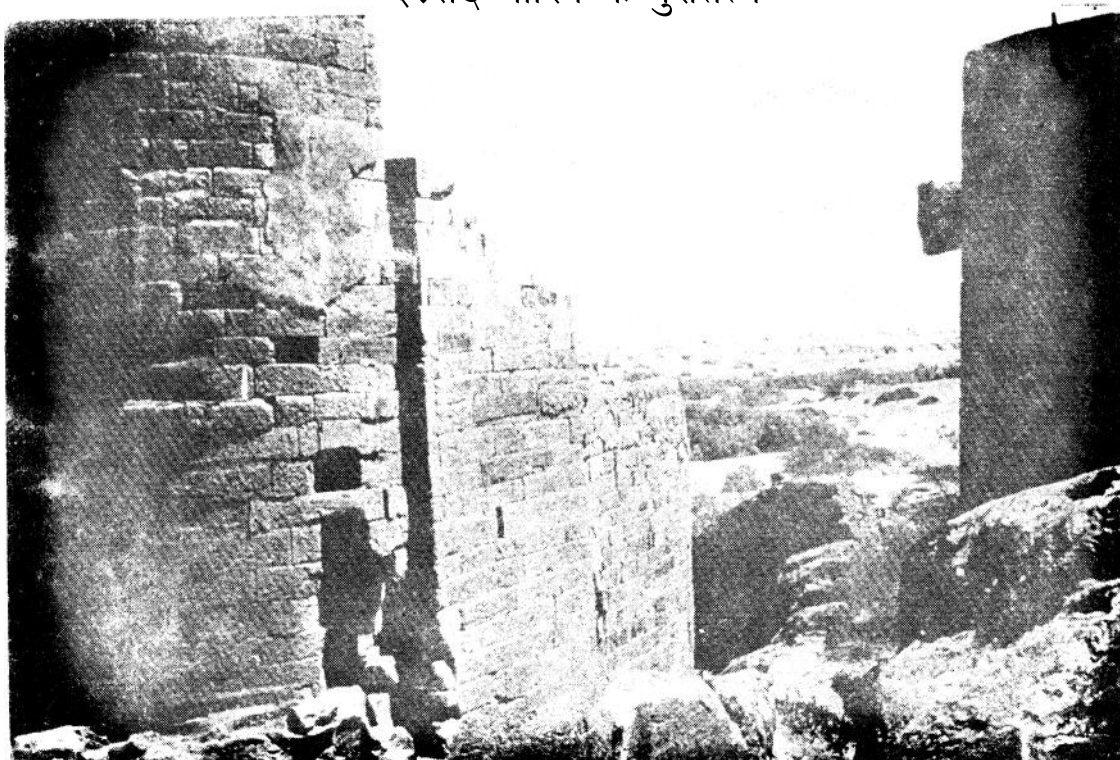
सबा के बनाए हुए बाँध (Dam) सहे-मआरिब के पुरातत्व



२.सद्दे मारिब के पुरातत्व



३.सद्दे मारिब के पुरातत्व



26. कहो हमारा रब हम सब को जमा करेगा ⁶²
फिर हमारे बीच हक के साथ फ़ैसला करेगा ⁶³
और वही फ़ैसला करने वाला सर्वज्ञ है।

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبَّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ٢٦

27. कहो ज़रा मुझे दिखाओ तो वे कौन हैं जिन को
तुम ने उस के साथ शरीक (साझी) जोड़ रखा
है? ⁶⁴ हरगिज़ नहीं, प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी
तो अल्लाह ही है। ⁶⁵

قُلْ أَرُونِي الَّذِينَ ادَّعَوْا شُرَكَاءَ اللَّهِ فَلْيُفْتَحْ لَهُمْ سُبُلَ السَّمَوَاتِ وَلْيُخْرِجُوهُمْ مِنْ أَهْلِ الْبِلَادِ ٢٧

28. और (ऐ नबी!) हम ने तुम को समस्त लोगों के
लिए ख़ुशख़बरी देने वाला और ख़बरदार करने
वाला बना कर भेजा है। लेकिन अधिकतर लोग
नहीं जानते। ⁶⁶

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ٢٨

29. ये लोग तुम से कहते हैं कि यह वादा कब पूरा
होगा अगर तुम सच्चे हो? ⁶⁷

وَيَقُولُونَ مَتَى هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ٢٩

30. कहो तुम्हारे लिए एक ऐसे दिन की मीआद
निर्धारित है जिस से तुम एक घड़ी न पीछे हट
सकते हो और न आगे बढ़ सकते हो। ⁶⁸

قُلْ لَّكُمْ مَبْعَادُ يَوْمٍ وَلَا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً
وَلَا تَسْتَقْتِدِرُونَ ٣٠

31. काफ़िर कहते हैं हम इस कुर्आन पर हरगिज़
ईमान नहीं लाएंगे और न इस से पहले की किसी
किताब पर। ⁶⁹ और अगर तुम (उन की उस
हालत को) देख लेते जब ये ज़ालिम अपने रब के
सामने खड़े कर दिये जाएंगे। ⁷⁰ वे एक दूसरे को
मलामत करेंगे। जो लोग कमज़ोर थे वे उन
लोगों से जो बड़े बनकर रहे थे कहेंगे अगर तुम
न होते तो हम ज़रूर मोमिन होते। ⁷¹

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنُؤْمِنَ بِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي
بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِندَ رَبِّهِمْ يُرْجَعُ
بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ لِّقَوْلِ الَّذِينَ
اسْتَضَعَفُوا الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا وَلَا أَنْتُمْ لَكُمُ الْمُؤْمِنِينَ ٣١

32. बड़े बन कर रहने वाले उन कमज़ोर लोगों को
जवाब देंगे कि क्या हम ने तुम को हिदायत से
रोका था जब कि वह तुम्हारे पास आ चुकी थी?
नहीं बल्कि तुम स्वयं अपराधी थे।

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتَضَعَفُوا أَخْنُ صَدَدْنَاكُمْ عَنِ
الْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ جَاءَكُمْ بَلْ كُنتُمْ مُجْرِمِينَ ٣٢

33. कमज़ोर लोग बड़े बन कर रहने वालों से कहेंगे
नहीं बल्कि तुम्हारी रात दिन की मक्कारी थी
जब तुम हम से कहते थे कि अल्लाह से कुफ़्र करें
और उस के समवर्ती ठहराएँ और जब वे अज़ाब
को देख लेंगे तो दिल में पछताएंगे। और हम
काफ़िरों की गर्दन में तौक़ डाल देंगे। वे बदले
में वही पायेंगे जो वे करते रहे हैं। ⁷²

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتَضَعَفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ الْإِيلِ
وَالْهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَنَا أَنْ نَكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَنْدَادًا
وَأَسْرُوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَىٰ فِي
أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ يُعْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ٣٣

62. अर्थात् क्रियामत के दिन।

63. क्रियामत के दिन अल्लाह तआला ईमान वालों और काफ़िरों के बीच सत्य और न्याय के आधार पर फैसला करेगा और फैसले को लागू भी करेगा कि कौन ग़िरोह सत्य पर था और कौन असत्य पर। किस ने सत्य धर्म का अनुपालन किया और कौन झूठे धर्मों के अनुपालन में लगे रहे।

64. यह प्रश्न भी बहुदेववादियों को विचार करने का न्योता देता है कि जिन को तुम ने पूज्य बना रखा है उन में वे कौन से ईश्वरीय गुण हैं जिन के चलते तुम ने उन को अल्लाह का साझीदार ठहरा रखा है और जिन के कारण तुम उन की परस्तिश करते हो जब कि परस्तिश केवल अल्लाह का हक़ है।

65. अर्थात् अल्लाह के सिवा कोई नहीं प्रभुत्व जो, सत्ता, ज्ञान, एवं तत्त्वदर्शिता के गुणों से सुसज्जित हो। अतः जिन को तुम ने खुदा और पूज्य बना रखा है वे कदापि न खुदा हैं और न पूज्य।

66. यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विश्वव्यापी रिसालत का एलान है कि आप की नियुक्ति केवल अरबों की तरफ़ नहीं बल्कि देश और जाति की सीमा से मुक्त समस्त मानवों की तरफ़ हुई है और क्रियामत तक पैदा होने वाली समस्त जातियों के आप मार्गदर्शक तथा ईशदूत हैं। यहाँ इन्कार करने वालों पर यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि जिस व्यक्तित्व के विरोध पर तुम तुले हुए हो और उस का निरादर कर रहे हो उसे अल्लाह तआला ने इस शान का रसूल बनाकर भेजा है कि वह पूरी इन्सानियत के लिए रहनुमा है। ऐसे महान एवं प्रतापी व्यक्तित्व का यदि तुम निरादर करते हो तो तुम्हारे लिए बड़ी महरूमी की बात है।

67. अर्थात् क्रियामत का वादा कब पूरा होगा।

68. अर्थात् क्रियामत की घड़ी सुनिश्चित है तुम्हारी माँग पर न एक क्षण पहले आ सकती है और न एक क्षण बाद। और जब क्रियामत प्रकट हो जाएगी तो ठीक समय पर तुम हाज़िर का दिये जाओगे। न एक घड़ी पहले और न एक घड़ी बाद।

69. अर्थात् तौरात इन्जील आदि पर।

70. अर्थात् आज तो ये बड़े तनकर कहते हैं कि हम कुर्आन और अन्य आसमानी किताबों को नहीं मानते लेकिन क्रियामत के दिन जब ये जवाबदेही के लिए अल्लाह के समक्ष खड़े होंगे तो उन्हें अपनी इस भारी गलती का एहसास होगा। उस समय उन के सर शर्म से झुके होंगे। क्रियामत का यह दृश्य शब्दों के रूप में प्रस्तुत कर दिया गया है ताकि लोग होश में आएं।

71. “जो लोग कमज़ोर थे” से मुराद वे लोग हैं जिन को बड़े बन कर रहने वालों अर्थात् लीडरों और धार्मिक पेशवाओं ने अपनी पकड़ में ले रखा था और वे उन के अनुपालन बन गए थे। क्रियामत के दिन वे जिस प्रकार एक दूसरे पर दोषारोपण करेंगे तथा एक दूसरे को बुरा भला कहेंगे और एक दूसरे का खण्डन करेंगे उस की एक झलक यहाँ प्रस्तुत कर दी गई है।

72. अर्थात् साधारणजन हों या लीडर, पीछे चलने वाले हों या पीछे चलाने वाले कुफ़्र करने के आधार पर सब के सब दण्ड के भागीदार ठहरेंगे। साधारणजन अपने लीडरों और पेशवाओं पर गुमराह करने का आरोप लगाकर के अपनी ज़िम्मेदारी से बरी नहीं हो सकते। उन्होंने ने अल्लाह की प्रदान की हुई बुद्धि का उपयोग क्यों नहीं किया और क्यों आँखें बन्द कर के बड़े बनने वालों के पीछे चलते रहे और क्यों उन्होंने ने कुर्आन और पैगम्बर की बातों पर ध्यान नहीं दिया?



34. हम ने जिस बस्ती में भी कोई ख़बरदार करने वाल भेजा तो उस के ख़ुशहाल लोगों ने यही कहा कि जो पैग़ाम दे कर तुम भेजे गए हो हम उस के इन्कारी हैं।⁷³

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ﴿٣٢﴾

35. और उन्होंने कहा हम तुम से अधिक माल और औलाद रखते हैं। और हम को हरगिज़ अज़ाब (यातना) नहीं दिया जाएगा।⁷⁴

وَقَالُوا خُنُّنْ أَكْثَرُ أَمْوَالِ وَأَوْلَادٍ أَوْ مَا خُنُّنْ بِمَعْدَبَيْنِ ﴿٣٣﴾

36. कहो मेरा रब जिस के लिए चाहता है रोज़ी कुशादा, कर देता है और जिस के लिए चाहता है तंग कर देता है लेकिन अधिकतर लोग जानते नहीं हैं।⁷⁵

قُلْ إِن رَّبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

37. तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद वह चीज़ नहीं हैं जो तुम्हें हमारा निकटस्थ बनाती हों।⁷⁶ अलबत्ता जो ईमान लाए और जिन्होंने ने अच्छा कर्म किया तो उन के लिए उन के कर्मों का दोहरा फल है और वे (जन्नत के) ऊँचे भवनों में चैन से रहेंगे।

وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِالَّتِي تُقَرَّبُ بِكُمْ عِنْدَنَا زُلْفَىٰ إِلَّا مَنَ أَمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضَّعُوفِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرُفَاتِ الْمُتَوَنِّينَ ﴿٣٥﴾

38. और जो लोग हमारी आयतों को निष्प्रभाव करने के लिए दौड़ धूप करते हैं वे यातना में पकड़ लिये जाएंगे।⁷⁸

وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ﴿٣٦﴾

39. कहो मेरा रब अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिस के लिए चाहता है तंग कर देता है⁷⁹ और जो कुछ तुम खर्च करते हो उस की जगह वह तुम को और देता है और वह बेहतरीन रोज़ी देने वाला (राज़िक) है।⁸⁰

قُلْ إِن رَّبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٣٧﴾

40. और वह दिन कि जब इन सब को वह जमा करेगा, फिर फ़रिश्तों से पूछेगा कि क्या ये लोग तुम्हारी पूजा किया करते थे?⁸¹

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَهْلُوا لَهُ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٣٨﴾

41. वे निवेदन करेंगे, पाक है तू। हमारा दोस्त तू है न कि ये लोग।⁸² वास्तव में ये जिन्नों की पूजा करते रहे हैं। इन में से अधिकतर इनही पर आस्था एवं विश्वास रखते थे।⁸³

قَالُوا سُبْحَانَكَ أَنْتَ وَلِيِّنَا مِنْ دُونِهِمْ بَلْ كَانُوا يَعْبُدُونَ الْجِنَّ أَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُونَ ﴿٣٩﴾

73. खुशहाल लोग दुनियापरस्ती में मग्न होते हैं इस लिए वे रसूल की दअवत पर कान नहीं धरते और जब वह उन्हें अल्लाह के अज़ाब से ख़बरदार करता है तो वे अपनी तल्लीनता के कारण उस का इनकार करने लगते हैं और अल्लाह के संदेश तथा आदेश को रद्द कर देते हैं।

74. अर्थात् खुशहाल लोग इस ख़ाम ख़्याली में लिप्त होते हैं कि माल और औलाद की जो बोहतात उन्हें हासिल है वह इस बात की प्रतीक है कि वे अल्लाह के प्रिय और उस के चहीते हैं उन के अज़ाब भुगतने का क्या सवाल?

75. यह उन खुशहाल लोगों के दावे का खण्डन है कि माल और औलाद, (संपत्ति और सन्तान) की संपन्नता अल्लाह के प्रिय और उस के चहीते होने का प्रतीक नहीं है। रोज़ी में कुशादगी और तंगी उस की मर्ज़ी पर निर्भर है न कि उस की प्रसन्नता का प्रतीक। वह बन्दों की बहुत सारी मसलहतों के तहत जिस को चाहता है ख़ूब रोज़ी देता है और जिस को चाहता है नपा तुला देता है और दोनों सूरतों में बन्दों की आजमाइश होती है कि वे शुक्र और सन्न करतें हैं या नहीं। मगर इस वास्तविकता को बहुत से लोग नहीं जानते इस लिए ग़लत मतलब बताने लगते हैं।

76. यह इन्कार करने वालों की उस धारणा का खण्डन है कि जिस के पास संपत्ति और सन्तान की अधिकता है वह खुदा का प्रिय और निकटस्थ बन्दा है। ये चीज़ें तो उन लोगों को भी प्राप्त होती हैं जो उल्लंघनकारी, पापी, झूठे और उपद्रवी होते हैं फिर इस को ईश्वर के निकट होने का प्रतीक किस तरह कहा जा सकता है?

77. अर्थात् ईमान और सुकर्म ही वह चीज़ है जिस के द्वारा मनुष्य अल्लाह का सन्निध्य प्राप्त करता है और इस गुण के लोग ही अल्लाह को प्रिय हैं।

78. जो लोग अल्लाह के इर्शादों एवं आदेशों के विरुद्ध सक्रियता दिखा रहे हैं उन को निश्चित रूप से सज़ा भुगतनी होगी चाहे वे दुनिया में कितने ही धनवान रहे हो तथा संतान का

कितना ही बड़ा जत्था उन के साथ रहा हो। उन की ये सारी शान व शौकत दुनिया ही में रह जाएगी और आखिरत में वे अज़ाब (यातना) में ढकेल दिये जाएंगे।

79. ऊपर यह बातें गुज़र चुकी। इस आयत में “अपने बन्दों में से” शब्द की वृद्धि है और अभिप्रेत इस बात को स्पष्ट करना है कि अल्लाह तआला ही रोज़ी देने वाला है।

80. अर्थात् अल्लाह ही रोज़ी देने वाला है इस पर विचार करो। वह तुम्हें निरंतर रोज़ी दिये जा रहा है। जो कुछ तुम खर्च करते हो उस के बाद ऐसा नहीं होता कि तुम्हारे पास कुछ न रह गया हो बल्कि तुम खर्च करते रहते हो और वह है कि देता रहता है कितना बेहतरीन रोज़ी देने वाला है। फिर भी तुम उस के आभारी एवं कृतज्ञ नहीं बनते?

81. यहाँ क्रियामत का एक और चित्रण प्रस्तुत किया गया है। बहुदेववादी जब हशर के मैदान में जमा होंगे तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों से प्रश्न करेगा कि क्या ये लोग तुम्हारी पूजा किया करते थे?

82. फ़रिश्ते उत्तर में सर्वप्रथम अल्लाह की पाकी बयान करेंगे कि तू इस बात से पवित्र है कि कोई तेरा साझीदार हो। और हम ने इन गुमराहों को दोस्त नहीं बनाया था कि इन की पूजा से खुश होते और इन से अपना सम्बन्ध जोड़ते। बल्कि हमारा दोस्त तू ही था और है।

83. इस के अलावा फ़रिश्ते यह भी कहेंगे कि ये वास्तव में जिन्नों की इबादत करते थे और इन ही में आस्था जताते थे, तथा इन ही पर विश्वास करते थे। मतलब यह है कि अगर इन्होंने हमारी पूजा की भी थी तो हमारे कहने से नहीं बल्कि जिन्नों के शैतान के इशारे पर की थी। वे उन के ऐसे कृतज्ञ थे कि उन के पीछे बराबर चलते रहे और गुमराह होते रहे। हमें इन से कोई सरोकार न था। फ़रिश्तों का यह बयान उन के भक्तों पर यह हकीकत खोल देगा कि फ़रिश्तों को पूज्य बनाना और अल्लाह का साझीदार ठहराना सही न था।

42. तो आज के दिन तुम में से कोई एक दूसरे को न लाभ पहुँचा सकता है और न हानि।⁸⁴ और ज़ालिमों⁸⁵ से हम कहेंगे चखो अब आग के अज़ाब (यातना) का मज़ा जिस को तुम झुठलाते थे।

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا وَنَقُولُ
لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ
كُنْتُمْ بِهَا كَاذِبُونَ ﴿٣٧﴾

43. इन लोगों को जब हमारी स्पष्ट आयतें सुनाई जाती हैं तो ये कहते हैं कि यह तो बस एक आदमी है⁸⁶ जो चाहता है कि तुम को उन चीज़ों से रोक दे जिन की पूजा अर्चना तुम्हारे बाप दादा करते आए हैं और कहते हैं कि यह (कुआन) तो बस मन गढ़ंत झूठ है। और इन काफ़िरों के सामने जब हक़ (सत्य) आया तो इन्होंने कहा ये तो खुला जादू है।

وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمُ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٌ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا رَجُلٌ
يُرِيدُ أَنْ يَمْدُدَ كُمُ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤَكُمْ وَقَالُوا مَا هَذَا
إِلَّا إِفْكٌ مُفْتَرًى وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا
جَاءَهُمْ إِنَّ هَذَا إِلَّا أَسْحَرُ مِثْلُ ﴿٣٨﴾

44. हम ने इन को किताबें नहीं दी थीं जिन को वे पढ़ते हों और न तुम से पहले इन की तरफ़ कोई ख़बरदार करने वाला भेजा था।⁸⁷

وَمَا آتَيْنَاهُمْ مِنْ كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ
مِنْ نَذِيرٍ ﴿٣٩﴾

45. इन से पहले गुज़रे हुए लोगों ने भी झुठलाया था। जो कुछ हम ने उन को दिया था उस के दसवें भाग को भी यह नहीं पहुँचे।⁸⁸ उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया तो देखो कैसी रही मेरी सज़ा।⁸⁹

وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا بَلَّغُوا مَعْشَرَ
مَا آتَيْنَاهُمْ فَكَذَّبُوا رُسُلِي فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٠﴾

46. कहो मैं तुम्हें एक बात की नसीहत करता हूँ वह यह कि अल्लाह के लिए तुम दो दो मिल कर उठो और अकेले अकेले भी और सोचो।⁹⁰ तुम्हारे साथी को कोई जुनून नहीं है।⁹¹ वह तो एक कड़ी यातना से पहले तुम्हें ख़बरदार करने वाला है।

قُلْ إِنَّمَا أَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ مَشْئِ
وَفَرَادَىٰ شُومٍ تَتَفَكَّرُونَ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِنْ جِنَّةٍ
إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ﴿٤١﴾

47. कहो अगर मैं ने तुम से कोई बदला माँगा है तो वह तुम्हारे ही लिए है।⁹² मेरा बदला तो अल्लाह ही के ज़िम्मे है। और वह हर चीज़ पर गवाह है।

قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ
وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٤٢﴾

48. कहो मेरा रब सत्य का प्रकाशन (हक़ का इल्का) करता है। वह ग़ैब की तमाम बातों का जानने वाला है।⁹³

قُلْ إِنْ رَدِّي يَقْدِفُ بِالْحَقِّ عَلَٰمُ الْغُيُوبِ ﴿٤٣﴾

84. फ़रिशतों के इस बयान के बाद बहुदेववादी जो उन से सिफ़ारिश की आशा रखते थे, निराश हो जाएंगे कि वे उन के कुछ काम न आ सके। यह है अल्लाह को छोड़कर और सहायों पर जीने का अन्जाम।

85. ज़ालिम अर्थात् ग़लत करने और ग़लत चलने वाले, जिस की धारणा न्याय और सत्य के विरुद्ध हो और इसी कारण वश वह अपने ऊपर स्वयं ज़्यादाती कर रहा हो, इस आयत में जैसा कि प्रसंग से स्पष्ट है, ज़ालिम से मुराद बहुदेववादी और आख़िरत के इन्कारी लोग हैं।

86. अर्थात् रसूल नहीं हैं।

87. अर्थात् बनी इस्माईल में -----इन अरबों में---- किताबों का अवतरण नहीं हुआ जिस तरह बनी इस्माईल में तौरात, इन्जील, आदि का हुआ था। यह एक अनपढ़ क्रौम थी और कोई पैग़म्बर भी हज़रत इस्माईल के बाद इन में नहीं भेजा गया इस लिए एक लम्बी मुद्दत के बाद जो पैग़म्बर इन में नियुक्त हुआ है और जो किताब इन्हें दी जा रही है उस का इन्हें आभारी एवं कृतज्ञ होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने उन की हिदायत का कैसा सामान किया है और वह उन्हें कितना उच्च स्थान प्रदान करना चाहता है। मगर ये लोग पैग़म्बर और किताब की कद्र करने के बजाए इन को झूठ और जादू बता रहे हैं।

88. तात्पर्य विगत कि वे जातियाँ हैं जिन को महान शक्ति, सत्ता और आर्थिक संसाधन अथाह प्राप्त थे जैसे आद की क्रौम, फ़िरऔन की क्रौम आदि। उन की तुलना में कुरैश को न वैसी शक्ति और सत्ता प्राप्त थी और न वह सपन्नता। उन के पास न लाव लश्कर था और न समाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नति की सामग्री और न ही आर्थिक संसाधनों की बहुतायत।

89. अर्थात् जब ऐसी शक्तिशाली जातियाँ रसूल को झुठलाने के कारण अल्लाह के अज़ाब से न बच सकीं तो तुम रसूल को झुठलाकर किस तरह अल्लाह के प्रकोप एवं उस की यातना से बच सकते हो। जो शक्ति और धन सम्पत्ति तुम्हें प्राप्त

है उस के घमंड में लिप्त हो कर रसूल के विरोध पर आमादा हो जाना अपने लिए बुरे अन्जाम को दअवत देना है।

90. आदमी अधिकतर अपने माहौल और अपनी सोसाइटी की राय से प्रभावित होता है और यह देखने का कष्ट नहीं करता कि सत्य क्या है और असत्य क्या। इस लिए इस आयत में समझाया गया है कि दो दो आदमी मिल कर विचार करें कि पैग़म्बर की बातें वास्तव में दीवाने की बड़ हैं या बुद्धिमानी और समझदारी की बातें हैं। वे आपस में संजीदगी के साथ इस पर बातचीत कर के सहीह परिणाम पर पहुँचने की कोशिश करें। अथवा एक एक व्यक्ति अपने तौर पर भी विचार करे कि मुआमला की स्थिति क्या है। अगर सन्जीदगी के साथ विचार करने का यह तरीका इख्तियार किया गया तो सही नतीजा पर पहुँचना मुश्किल न होगा। अल्लाह तआला उन्हें ज़रूर इस की तौफ़ीक़ देगा क्योंकि जिन को सत्य की खोज होती है उन पर अल्लाह तआला ज़रूर सत्य खोल देता है।

91. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी और यह तत्त्वपूर्ण कुर्आन इस बात का स्पष्ट सबूत है कि आप किसी मानसिक रोग में कदापि लिप्त नहीं थे बल्कि आप की समझदारी अत्यंत बुलन्दी को पहुँची हुई थी।

92. मतलब यह है कि मैं ने तुम से बदला माँगा ही नहीं है। जो कुछ मैं ने तुम से चाहा है वह यह है कि तुम उस हिदायत अर्थात् उस सीधे मार्ग को स्वीकार कर लो जो तुम्हारे रब ने बताया है और जिस को स्वीकार करने में तुम्हारा अपना भला है। मैं बिलकुल निःस्वार्थ हो कर पूरे सच्चे मन से तुम्हारी भलाई चाह रहा हूँ।

93. अर्थात् मेरा रब जो बातें वहय के द्वारा मुझ पर उतार रहा है वे बिलकुल सत्य हैं और सत्य क्यों न हों जब कि उसे ग़ैब (परोक्ष) के समस्त भेदों का ज्ञान है। उस से अधिक इस बात को जानने वाला कौन हो सकता है कि सही क्या है और ग़लत क्या तथा सत्य क्या है और असत्य क्या?



49. कहो सत्य आ गया और असत्य न पहली बार पैदा करता है और न दूसरी बार पैदा करेगा।⁹⁴

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِيُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ۝٩٤

50. कहो अगर मैं गुमराह हो गया हूँ तो मेरी गुमराही का वबाल मुझ पर है।⁹⁵ और अगर मैं हिदायत पर हूँ तो यह उस वह्य (प्रकाशना) के कारण है जो मेरा रब मेरी तरफ़ उतारता है।⁹⁶ वह सब कुछ सुनने वाला और अत्यंत निकट है।⁹⁷

قُلْ إِنْ صَلَّيْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَى نَفْسِي وَإِنْ اهْتَدَيْتُ فِيمَا يُؤْتِي إِلَىٰ رَبِّيَ إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ۝٩٥

51. और अगर तुम इन्हें देख लेते जब ये घबराए हुए होंगे और भाग न सकेंगे और करीब ही से पकड़ लिए जाएंगे।⁹⁸

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فِرْعَوْنُ أَفْلَحَ وَأَخَذُوا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۝٩٦

52. (उस समय) ये कहेंगे कि हम उस पर ईमान लाए।⁹⁹ और इतनी दूर से ये उस को कहाँ पा सकते हैं।¹⁰⁰

وَقَالُوا الْمَنَاجِبُ ؕ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَاقُشُ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۝٩٧

53. इस से पहले इन्होंने उस का इन्कार किया था और दूर से अटकल के तीर चलाते रहे।¹⁰¹

وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ وَيَقْدِرُونَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۝٩٨

54. (उस रोज़) उन के और उन की (इस) इच्छा के बीच रूकावट खड़ी कर दी जाएगी जिस प्रकार उन के पहले के सहपन्थियों के साथ मामला किया जा चुका होगा।¹⁰² वे भी ऐसे शक में पड़े हुए थे जिस ने उन को उलझन में डाल दिया था।¹⁰³

وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِمْ مِّن قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُّبِينٍ ۝٩٩

94. अर्थात् यह बात स्पष्ट रूप से तुम्हारे सामने आई है कि तौहीद ही सत्य है। रहा असत्य अर्थात् तुम्हारे मन गढ़ंत पूज्य तो वे न जीवन देते हैं और न मौत के बाद दोबारा जीवित करने का सामर्थ्य रखते हैं फिर वे खुदा कैसे बन गए और इबादत के हकदार कैसे हो गए। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह यूनस नोट ६१)

95. जब समझने बूझने के लिए बहस का तरीका अपनाया जाता है तो कुछ बातें मान कर के भी कहना पड़ती हैं ताकि संबोधी लाग लपेट और पक्षपात से बुलंद हो कर सोचने के लिए आमादा हो जाए। यहाँ “अगर मैं गुमराह हो गया हूँ” की बात इसी मुनासिबत से कही गई है।

96. अर्थात् मेरा हिदायत पर होना मेरे ख ही के अनुग्रह के चलते है और उस का अतिरिक्त अनुग्रह यह है कि उस ने मुझ पर वह्य नाज़िल कर के हिदायत की राह मुझ पर खोल दी।

97. इन्सान की गुमराही का एक बड़ा कारण यह है कि वह अल्लाह को बहुत दूर समझता है और फिर इधर उधर सहारे तलाश करता है। अगर वह विश्वास कर ले कि अल्लाह बहुत करीब है और सब कुछ सुनता है तो उसी से अपना सम्बन्ध जोड़े और उसी को अपना कर्ताधर्ता और कार्यवाहक समझे।

98. यहाँ क्रियामत का एक और दृश्य प्रस्तुत किया जा रहा है। इन्कार करने वाले आज तो बड़े इत्मीनान से सत्य का

विरोध करते हैं परन्तु क्रियामत के दिन घबराहट की अवस्था में होंगे और भागना चाहेंगे मगर भाग न सकेंगे क्यों कि फ़रिश्ते करीब ही में मौजूद होंगे और वे उन्हें पकड़ लेंगे। कैसा भयावह दृश्य होगा वह उन की बेबसी का ।

99. अर्थात् उस सत्य पर ईमान लाए जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उतारा था।

100. अर्थात् ईमान लाने का समय बीत चुका। जो काम दुनिया में करने का था वह आखिरत में क्यों और कैसे किया जा सकता है। दुनिया परीक्षा की जगह थी और आखिरत बदला पाने की जगह। जब आखिरत में पहुँच गए तो दुनिया से दूरी हो गई। और परीक्षा स्थल से इतनी दूर पहुँचने के बाद ईमान प्राप्ति की कोई सूरत संभव न रही।

101. अर्थात् दुनिया में उन्हें ईमान लाने का मौक़ा प्राप्त था। परन्तु अटकल पच्चू बातें कर के उन्होंने ने वह अवसर खो दिया।

102. अर्थात् उन के और उन की इस इच्छा के बीच कि वे दुनिया में फिर लौटाए जाएँ ताकि वे ईमान ला सकें, रूकावट खड़ी कर दी जाएँगी। मतलब यह कि उन की यह इच्छा कभी पूरी होने वाली नहीं । और यही हश्र (अन्जाम) उन से पहले गुजरे सहपन्थियों का भी हो चुका होगा।

103. खुदा, आखिरत, और रिसालत के बारे में शक में पड़ने का नतीजा इस के सिवा कुछ नहीं कि इत्मीनान एवं परितोष नसीब न हो और मन उलझकर रह जाए।



सूरह फ़ातिर

३५. सूरह फ़ातिर

नाम :- पहली आयत में शब्द “फ़ातिर” (पैदा करने वाला) आया है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “फ़ातिर” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह मक्का के मध्य काल में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- इस सूरह में अल्लाह की सृष्टि शक्ति को उस के एक मात्र पूज्य होने की बुनियाद बताते हुए रिसालत और आखिरत को इस तरह प्रस्तुत किया गया है और ये उस के कर्तार होने तथा उस की सृजन शक्ति के प्रतीक हैं।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ८ भूमिका पर आधारित आयतें हैं जिन में अल्लाह की सृजन शक्ति और उस की पालनहारी को स्पष्ट करते हुए लोगों को तौहीद, रिसालत और आखिरत पर ईमान लाने का निमंत्रण दिया गया है। इन

आयतों में गोया पूरी सूरह का सार आ गया है।

आयत ९ से १८ में तौहीद और आखिरत का तफ़्सीली बयान है और शिर्क का खण्डन है।

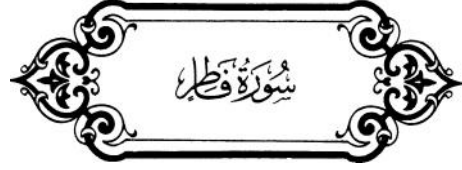
आयत १९ से २६ में रिसालत (ईश दूतत्व) का बयान है और रसूल पर ईमान न लाने वालों का अन्जाम बयान किया गया है।

आयत २७ से ३८ में स्पष्ट किया गया है कि अल्लाह की निशानियों के द्वारा जो अल्लाह का परिचय प्राप्त होता है और अल्लाह की किताब के द्वार जो ज्ञान प्राप्त होता है वह हिदायत का मार्ग खोल देता है जिस से हमेशा की सफलता प्राप्त होती है और इस ज्ञान और अल्लाह की पहचान से विमुखता का परिणाम कुफ़्र है और इस का अन्जाम हमेशा हमेशा की विनाशकारी यातना।

आयत ३९ से ४५ में शिर्क अर्थात् अल्लाह का साझी ठहराने वालों को चेतावनी है।

३५. सूरह फ़ातिर

आयतें : ४५



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हम्द (प्रशंसा) अल्लाह ही के लिए है जो आसमानों और ज़मीन का सृष्टा¹ और फ़रिश्तों को संदेशवाहक बनाने वाला है² जिन के दो दो और तीन तीन और चार चार पर हैं,³ वह सृष्टि में जिस तरह चाहता है वृद्धि करता है⁴ निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्यवान है।

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَكِ رُسُلًا
أُولَىٰ أَجْنَحَةٍ مَّتَنَّىٰ وَتِلْكَ وَرُبَّ يُزِيدُنِي الْخَلْقَ مَا يَشَاءُ إِنَّ اللَّهَ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

2. अल्लाह लोगों के लिए जिस रहमत का (दरवाज़ा) खोल दे उसे कोई रोकने वाला नहीं। और जिस को रोक ले तो उस के बाद उस को कोई खोलने वाला नहीं।⁵ वह प्रभुत्वशाली है, तत्त्वदर्शी।

مَا يَفْتَحُ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا وَمَا يُمْسِكُ
فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنْ بَعْدِهِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ②

3. लोगो ! तुम पर अल्लाह के जो एहसानात है उन्हें याद करो। क्या अल्लाह के सिवा कोई और सृष्टा है, जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता हो? उस के सिवा कोई पूज्य नहीं।⁶ फिर तुम को कहाँ फेरा जा रहा है⁷?

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرِ اللَّهِ
يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَآَنِي تُؤْفَكُونَ ③

4. अगर ये लोग (ऐ नबी !) तुम को झुठलाते हैं तो तुम से पहले भी कितने ही रसूल झुठलाए जा चुके हैं और सारे मामले अंततः अल्लाह ही के समक्ष पेश होंगे।⁸

وَإِنْ يَكْذِبُواكَ فَتَكْذِبْتَ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ
الْأُمُورُ ④

5. लोगो ! अल्लाह का वादा सच्चा है।⁹ अतः दुनिया की ज़िन्दगी तुम्हें धोखे में न डाले¹⁰ और न वह बड़ा धोखेबाज़,¹¹ तुम को अल्लाह के बारे में धोखे में रखे।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ
الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ الْغُرُورُ ⑤

6. निस्संदेह शैतान तुम्हारा दुश्मन है अतः उस को दुश्मन ही समझो¹² वह अपने गिरोह को (अपनी तरफ़) इस लिए बुलाता है ताकि वे दोज़ख़ वालों में शामिल हो जाएं।¹³

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا إِنَّمَا يَدْعُو حِزْبَهُ لِيَكُونُوا
مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ⑥

1. अल्लाह का आसमानों और ज़मीन का सृष्टा होना एक ऐसी वास्तविकता है जिस का इन्कार करना असंभव है। और जब वह सृष्टा है तो हम्द अर्थात् तारीफ़ और शुक्र का अधिकारी भी वही है अतः उसी के गुन गाये जाने चाहिए और उसी का कृतज्ञ बन कर रहना चाहिए। यही तौहीद (एकेश्वरवाद) का मूल सार है इस से शिर्क (बहुदेववाद) की जड़ कट जाती है।

आयत के भावार्थ में यह बात शामिल है कि कायनात के पैदा करने पर अल्लाह की प्रशंसा ही की जा सकती है क्योंकि यह सुन्दर ब्रह्माण्ड इस बात का परिचायक है कि इस का पैदा करने वाला बड़ी खूबियों वाला है। मौजूदा ज़माने के अनीश्वरवादी अथवा नास्तिक लोग कहते हैं कि ब्रह्माण्ड का कोई सृष्टा नहीं है। मगर उन का यह दावा तर्कहीन और बिल्कुल बुद्धि के विरुद्ध है। यदि इस का अस्तित्व बिना किसी रचायिता के होता तो इस में न परिवर्तन होता और न प्रगति और न कोई सृष्टि अस्तित्व में आती। परन्तु हम देखते हैं कि भौतिक तत्वों में भी परिवर्तन होते हैं और यह भी मानते हैं कि कायनात की मौजूदा प्रगति विभिन्न चरणों से गुज़रने के बाद हुई है और हमें यह भी ज्ञात है कि पृथ्वी पर मनुष्य का अस्तित्व बहुत बाद में हुआ है। प्रश्न यह है कि मनुष्य जो पृथ्वी पर सर्वोच्च एवं सर्वश्रेष्ठ सृष्टि है और जो थल और जल पर शासन करता है अचानक किस तरह अस्तित्व में आ गया। क्या यह कायनात अपने अन्दर बुद्धि और ज्ञान, संकल्प एवं योजना के गुण रखती है? इन प्रश्नों का उत्तर कदापि हाँ में नहीं दिया जा सकता क्योंकि न यह हमारा अनुभव है और न इस के पक्ष में कोई तर्क है। अतः सृष्टा के अस्तित्व से इन्कार सर्वाधिक स्पष्ट सच्चाई का इन्कार है।

2. फ़रिश्तों को अल्लाह तआला संदेशवाहक बना कर नबियों की तरफ़ भेजता है, जो उन पर वह्य करते हैं। इस के अलावा उन से संदेश पहुँचाने का काम किस तरह लिया जाता है और किस किस सृष्टि की तरफ़ उन को दूत बना कर भेजा जाता है इस का ज्ञान अल्लाह ही को है।

3. पर (पंख) उड़ने की शक्ति को दर्शाते हैं। जिन फ़रिश्तों के जितने अधिक पर हैं इस का मतलब यह है कि उन की शक्ति भी उतनी ही अधिक है। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्रिल को देखा कि उन के ६ सौ पर थे। कुर्आन ने यह बयान कर के कि फ़रिश्तों के कई पर होते हैं मनुष्य के ज्ञान में एक दुर्लभ वृद्धि कर दी। वरना उस के पास यह जानने का कोई साधन वा कोई माध्यम न था।

4. अर्थात् ऐसा नहीं कि उस ने जो कुछ सृष्टि की अब उस के पास सृष्टि करने के लिए कुछ नहीं है बल्कि वह अपनी सृष्टि में वृद्धि करता रहता है। इस का उदाहरण मनुष्यों की जनसंख्या में निरंतर वृद्धि है और इस का उत्तम उदाहरण वह नया जगत

होगा जो इस जगत के बाद प्रकट होगा।

5. इसी वास्तविकता को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ के प्रवचनों में इस तरह अदा किया है।

اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ
وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ. (مسلم کتاب الصلاة)

अर्थ :- ऐ अल्लाह तू जो कुछ दे उस को रोकने वाला कोई नहीं और जिस चीज़ को रोक ले उस को देने वाला कोई नहीं। और तेरे मुकाबले में किसी धनवान को उस का धन लाभ नहीं पहुँचा सकता।” (मुस्लिम किताबुस्सलात)

6. अर्थात् जो रोज़ी देने वाला है वही पूज्य भी है। जो रोज़ी देने वाले नहीं हैं वे किस तरह पूज्य हो सकते हैं?

7. अर्थात् अल्लाह से फेर कर तुम को कहाँ ले जाया जा रहा है? मतलब यह है कि शैतान तुम्हें बहकाकर सत्य से फेर रहा है। बुद्धि से काम लो और शैतान के बहकावे में न आओ।

8. अतः तुम्हारे इस झगड़े का फैसला भी क्रियामत के दिन अल्लाह की अदालत में होगा और उस समय तुम्हें पता चलेगा कि तुम ने अल्लाह के रसूल को झुठलाकर कितना बड़ा अपराध किया था।

9. मुराद क्रियामत और आखिरत का वादा है।

10. दुनिया का बाह्य आकर्षण ऐसा है कि वह मनुष्य का ध्यान परलोक से हटा कर उसे दुनिया का परस्तर बना देती है। यह बहुत बड़ा धोका है जिस से सावधान रहने की ताक़िद की गई है। आज भी जब कि मनुष्य की ‘बुद्धि’ ने प्रगति के बड़े बड़े शिखर सर किये हैं वह दुनिया की दिलफ़रेबियों (चमक दमक) से निरंतर धोखा खा रहा है अतः संसार की बड़ी संख्या इस दुनिया के सिवा और दुनिया को ख़ातिर में लाने के लिए तैयार नहीं है।

11. “बड़े धोखे बाज़” से तात्पर्य शैतान है जो अपने वस्वसों के द्वारा मनुष्य को खुदा के बारे में बहुत बड़े धोखे में डाल देता है।

12. शैतान जैसे दुश्मन को दोस्त समझना बहुत बड़ी मूर्खता है। उस को दुश्मन समझ कर उस की चालों से होशियार रहना ज़रूरी है। कुर्आन ने मनुष्य को इस बात से आगाह किया है कि उस के विचारों पर बाह्य रूप से प्रभाव डालने वाले ग़लत तत्व मौजूद हैं जो यद्यपि उसे दिखाई नहीं देते मगर अपना काम करते रहते हैं। ये शैतान हैं जिन की बुराई और फ़ितने से बचने के लिए मनुष्य को हर समय चौकन्ना रहना चाहिए।

13. अर्थात् जो लोग शैतान से दोस्ती गाँठ लेते हैं वे उस के गिरोह में शामिल हो जाते हैं और शैतान अपने गिरोह को जहन्नम की राह दिखाता है। उस का तो उद्देश्य ही लोगों को गुमराह करना है ताकि वे नर्कवासियों (दोज़ाखियों) में शामिल हो जाएँ।

7. जिन्होंने ने कुफ़्र किया उन के लिए कठोर यातना है और जो ईमान लाए और अच्छा कर्म किये उन के लिए क्षमा और बड़ा बदला (ईनाम) है।

الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ④

8. क्या वह जिस का बुरा कर्म उस के लिए सुन्दर (खुशनुमा) बना दिया गया हो और वह उसे अच्छा समझता हो (हिदायत पा सकता है?) 14 वास्तविकता यह है कि अल्लाह जिस को चाहता है गुमराह करता है और जिस को चाहता है हिदायत देता है। तो (ऐ नबी!) तुम्हारी जान इन के ग़म में न घुले। 15 जो कुछ यह कर रहे हैं उस को अल्लाह अच्छी तरह जानता है।

أَفَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ فَرَاهُ حَسَنًا فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ فَلَا تَذْهَبُ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسْرَتٍ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ⑤

9. वह अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है और वे बादलों को उठाती हैं। फिर हम उस को निर्जीव भू-भाग की ओर ले जाते हैं और उस के द्वारा ज़मीन को जो मुर्दा हो चुकी थी, ज़िन्दा कर देते हैं। (क्रियामत के दिन) मुर्दों का जी उठना इसी तरह होगा। 16

وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فُسْقَنَهُ إِلَى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَحْيَيْنَاهُ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا كَذَلِكَ النُّشُورُ ⑥

10. जो इज़्ज़त चाहता हो उसे जान लेना चाहिए कि इज़्ज़त सारी की सारी अल्लाह ही के अधिकार में है। 17 उस की तरफ़ पाक़ीज़ा कलिमा चढ़ता है और अच्छे कर्म को वह बुलन्दी प्रदान करता है। 18 और जो लोग बुरी चालें चल रहे हैं उन के लिए कठोर यातना है और उन की चालें विनष्ट हो कर रहेंगी। 19

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَكْرُؤُاْلَيْكُ هُوَ يُبْورُ ⑦

11. अल्लाह ने तुम को मिट्टी से पैदा किया, 20 फिर वीर्य से, 21 फिर तुम्हारे जोड़े बना दिये। और कोई औरत न गर्भवती होती है और न जनती है, मगर उस के ज्ञान से। कोई उम्र वाला 22 लम्बी उम्र नहीं पाता और न उस की उम्र में कमी होती है, मगर ये सब एक किताब में अंकित है। यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है। 23

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَى وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُعْتَمِرٍ وَلَا يُنْقِصُ مِنْ عُمرِهِ إِلَّا فِي كِتَابٍ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ⑧

14. यह एक मनोवैज्ञानिक वास्तविकता है कि आदमी जब बुराई को अच्छाई समझ कर करने लगता है तो उस का बाज आना संभव नहीं होता जब तक कि वह बुराई को बुराई न समझ ले और अल्लाह का गुमराही में लिप्त रहने देने वाला नियम यह है कि जिस व्यक्ति को अपनी बुराइयाँ भली मालूम होने लगती हैं हिदायत की राह उस पर बन्द कर दी जाती हैं और उस को छोड़ दिया जाता है कि भटकता रहे।

15. अर्थात् जब उन्हें अपने बुरे कर्मों पर हठ है और वे गुमराही से निकलना नहीं चाहते तो तुम उन का ग़म कहाँ तक करो। बेहतर है उन को उन के हाल पर छोड़ दो। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह कहफ़ नोट ७)

16. अर्थात् जिस प्रकार बारिश होते ही ज़मीन से वनस्पति निकलने लगती हैं और उस की हरयाली को देख कर ऐसा महसूस होने लगता है कि मुर्दा ज़मीन ज़िन्दा हो गई। उसी तरह क्रियामत के दिन जब दूसरा सूर फूँका जाएगा तो मुर्दे ज़िन्दा हो कर ज़मीन से निकल पड़ेंगे।

17. अर्थात् इज़्जत देना अल्लाह ही के अधिकार में है।

18. पाक़ीज़ा कलिमा से मुराद कलिमा तैय्यिबा “ला इलाहा इल्लल्लाह” لا اله الا الله है जो एकेश्वरवादी प्रवचन है। इस के अल्लाह की तरफ़ चढ़ने का अर्थ यह है कि वह अल्लाह की निकटता बढ़ाने का साधन है। और अच्छे कर्म को बुलन्दी

प्रदान करने का मतलब उस को स्वीकृति देने का सम्मान प्रदान करना है। यहाँ विशेष रूप से यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि इज़्जत ग़ैरुल्लाह के पास नहीं है और न वह उन की पूजा अथवा भेंट चढ़ावे अर्पित कर के प्राप्त की जा सकती है बल्कि इज़्जत अल्लाह के पास है और वह ईमान और अच्छे कर्मों ही के द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

19. अर्थात् जो लोग सत्य के विरोध में एड़ी चोटी का जोर लगा रहे हैं और भाँत भाँत के षडयंत्र रच रहे हैं उन को अंततः असफलता का मुँह देखना होगा। जब परिणाम सामने आने का समय आएगा इन की सारी योजनाएँ खाक में मिल जाएगी।

20. अर्थात् मानव जाति की पैदाइश की शुरुआत मिट्टी से की। आदम मिट्टी से पैदा किये गए थे।

21. फिर आदम की नस्ल का सिलसिला वीर्य अर्थात् तुच्छ बूँद से चलाया।

22. अर्थात् किसी की आयु को लम्बी करना या कम करना अल्लाह ही के अधिकार में है। और इस बारे में उस के फैसले एक किताब में अंकित होते हैं। मतलब यह है कि आयु के बढ़ने घटने में ग़ैरुल्लाह का कोई हस्तक्षेप नहीं।

23. अर्थात् असंख्य लोगों की आयु का निर्धारण करना और उन को किताब में अंकित करना अल्लाह के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं।



12. और दोनों दरया समान नहीं हैं, एक मीठा, प्यास बुझाने वाला और पीने में रूचिकर है, और दूसरा खारी, कड़वा । और तुम दोनों से ताज़ा गोश्त निकाल कर खाते हो²⁴ और सज्जा सामाग्री निकालते हो जिन को तुम पहनते हो।²⁵ और तुम देखते हो कि नौकाएँ उस को चीरती हुई चली जाती हैं। ताकि तुम उस का फ़ज़ल (रोज़ी) तलाश करो²⁶ और ताकि तुम उस के कृतज्ञ बनो।

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَيْنِ هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَائِغٌ شَرَابُهُ
وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَمِنْ كُلٍّ تَأْكُلُونَ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُونَ
حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا وَتَرَى الْفُلْكَ فِيهِ مَوَازِيرَ لَبَتَعُوا مِنْ
فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾

13. वह दिन को रात में दाखिल करता है और रात को दिन में।²⁷ उस ने सूरज और चाँद को वशीभूत कर रखा है। प्रत्येक एक नियत समय तक के लिए चला जा रहा है।²⁸ वही अल्लाह तुम्हारा रब है। उसी की बादशाही है।²⁹ उस को छोड़ कर तुम जिन को पुकारते हो वे एक “क्रितमीर” जितना भी अधिकार नहीं रखते।³⁰

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ
وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْعٍ ﴿١٣﴾

14. अगर तुम इन को पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार सुन नहीं सकते और अगर सुन भी लें तो उस के जवाब में तुम्हारे लिए कुछ कर नहीं सकते और क्रियामत के दिन तुम्हारे शिर्क का इन्कार करेंगे।³¹ और उस बाख़बर की तरह तुम्हें (असल हकीकत) कोई नहीं बतला सकता।³²

إِنْ تَدْعُهُمْ لَا يَسْمَعُوا دَعَاءَكُمْ وَهُمْ سَامِعُونَ مَا اسْتَجَابُوا
لَكُمْ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ وَلَا يُنَبِّئُكَ
مِثْلُ خَبِيرٍ ﴿١٤﴾

15. लोगो ! तुम ही अल्लाह के मोहताज हो। अल्लाह तो बेनियाज़ (बेमोहताज) और ख़ूबियों वाला है प्रशंसा का हक़दार।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ
الْحَمِيدُ ﴿١٥﴾

16. वह चाहे तो तुम्हें समाप्त कर दे और एक नई सृष्टि ला खाड़ी कर दे।³³

إِنْ يَشَاءُ يُدْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٦﴾

17. ऐसा करना अल्लाह के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं।

وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿١٧﴾

24. अर्थात् मीठे पानी (दरया) से भी मछली प्राप्त करते हो और खारे पानी (समुद्र) से भी ।

25. जैसे मोती और मरजान। और कुछ दरयाओं से हीरे और सोना भी बरामद होता हैं। दरयाओं की लाई हुई रेत में सोने के अंश पाये जाते हैं। इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका में यह स्पष्टीकरण है।

“ Alluvial deposits of native gold found in or along streams were the principal sources of the metal for the ancient civilization of the middle East.

“The alluvial deposits mined by placer methods are the gold-bearing sands and gravel that have been deposited by rapidly moving streams and other rivers at places where they widen or for some other reason lose speed.”

-(The New Encyclopedia Britannica Vol. 8 page 237)

और हिरे के बारे में इन्साइक्लोपीडिया आफ साइंस एंड टेक्नालॉजी में यह स्पष्टीकरण मौजूद है कि ये दरया की जमी हुई तहों में पाये जाते हैं।

“But a significant amount (of diamonds) comes from individual operations from stream-bed deposits in Sierra Leone, Ghana and the Union of South Africa.”

-(Me Grow-Hill Encyclopedia of Science and Technology, New York Vol. 4, page 164.)

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह नहल नोट २४

26. अर्थात् कारोबारी सफ़र कर के रोज़ी प्राप्त करो जो अल्लाह का फ़ज़ल (अनुग्रह) है।

27. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आले इमरान नोट ३९

28. व्याख्या के लिए देखिए सूरह रअद नोट ८

29. अर्थात् उस का शासन आसमान सहित पूरे ब्रह्माण्ड पर छाया हुआ है और उसी के आदेश लागू होते हैं।

30. “क्रितमीर” उस झिल्ली हो कहते हैं जो खजूर की गुठली के ऊपर होती है। मतलब यह है कि वे मामूली अधिकार भी नहीं रखते।

31. क्रियामत के दिन अपने भक्तों के शिर्क का इन्कार उस

से विमुखता व्यक्त करने वाले वे फ़रिश्ते और बुजुर्ग इन्सान होंगे जिन को आवश्यकताओं को पूरा करने, मुश्किलों को दूर करने और फ़रियादों को सुनने के लिए पुकारा जाता था। उन ही के बारे में यहाँ बताया गया है कि पहली बात तो यह कि ये पुकारने वाले कि पुकार सुनते नहीं हैं और अगर सुन भी लें तो न आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं और न फ़रियादों को सुन सकते हैं। फ़रिश्ते जिन कामों पर नियुक्त किये गए हैं उन का कार्य क्षेत्र उसी सीमा तक है। इस से आगे उन के बस में नहीं है कि जो व्यक्ति जहाँ से भी उन को पुकारे वे उस की पुकार को सुन लें और उस की सहायता को पहुँचें। और चलो थोड़ी देर के लिए मान लो कि सुन लें तो वे उस की आवश्यकताएँ कदापि पूरी नहीं कर सकते। रह गई बात बुजुर्ग लोगों की रूहें तो उन के बारे में भी यह समझना कि वे पुकारने वाले की पुकार सुनते हैं बिल्कुल निराधार और सरासर ग़लत है। वे आलमे-बर्ज़ख़ (यमलोक) में रह कर न किसी की फ़रयाद सुनते हैं और न उस की मदद और आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए पहुँचते हैं।

कोई कारण नहीं कि आयत के भावार्थ को मात्र बुत परस्तों के खण्डन की सीमा तक सीमित मसझ लिया जाए। बल्कि इस के व्यापक भावार्थ में हर प्रकार की बुजुर्ग परस्ती और क़ब्र परस्ती भी शामिल हैं। अतः जो मुसलमान या अली अलमदद और या ग़ौस अल मदद के नारे लगाते हैं वे खुले शिर्क के अपराधी होते हैं। और इन बुजुर्गों का इन की मदद को पहुँचना तो अलग वे इन की पुकार सिरे से सुनते ही नहीं। और सोचने की बात यह है कि जब ये बुजुर्ग अपनी ज़िन्दगी में हर पुकारने वाले की पुकार सुनते नहीं थे और न उन की फ़रियाद को पहुँचना उन के बस में था तो क़ब्र में पहुँचने के बाद अचानक उन में यह शक्ति कहाँ से उत्पन्न हो गई?

32. अर्थात् उन बातों की ख़बर जो ईश्वरीय लोक और परोक्ष से सम्बन्ध रखने वाली हैं एक सर्वज्ञ हस्ती ही दे सकती है और वह सर्वज्ञ हस्ती अल्लाह ही है। उस के सिवा और कोई नहीं जो तुम्हें वहाँ की वास्तुस्थिति की सही ख़बरें दे। अतः अल्लाह अपनी किताब और अपने रसूल के द्वारा ग़ैब (परोक्ष) की जो ख़बरें दे रहा है उन पर विश्वास करो और उन लोगों की बातों को छोड़ दो जो मात्र गुमान और अटकल से ग़ैब की बातें करते हैं।

33. अर्थात् यह न समझो कि तुम्हारा अस्तित्व ज़मीन पर बाकी रखने में अल्लाह का कोई स्वार्थ है। वह बेनियाज़ (निःस्वार्थ) है और कोई उस की प्रशंसा करे या न करे वह आप ही प्रशंस्य योग है वह चाहे तो पूरे मानव जगत को समाप्त कर सकता है और उस की जगह नई सृष्टि ला सकता है।

18. कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा।³⁴ और अगर कोई बोझ से लदा हुआ व्यक्ति अपना बोझ उठाने के लिए किसी को पुकारेगा तो कोई भी उस के बोझ का कोई हिस्सा अपने सर न लेगा चाहे वह उस का नातेदार ही क्यों न हो। (ऐ नबी !) तुम उन ही लोगों को खबरदार कर सकते हो जो बे देखे अपने रब से डरते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं।³⁵ और जो पाकीज़गी अपनाता है वह अपने ही लाभ के लिए अपनाता है।³⁶ और पहुँचना सब को अल्लाह ही के पास है।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ وَإِن تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ جُنْدٍ لَّا يُحْمَلُ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۚ إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۚ وَمَن تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝¹⁸

19. अंधा और आँखों वाला दोनो समान नहीं है।³⁷

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۝¹⁹

20. न अँधियारिया और रौशनी समान है।³⁸

وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ۝²⁰

21. न छाँव और धूप समान है।³⁹

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ ۝²¹

22. और न ज़िन्दा और मुर्दा समान हैं।⁴⁰ अल्लाह जिन को चाहता है सुनवाता है,⁴¹ और तुम उन को सुना नहीं सकते जो क़बरों के अन्दर हैं।⁴²

وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَن يَشَاءُ ۚ وَمَا أَنتَ بِمُسْمِعٍ مَّن فِي الْقُبُورِ ۝²²

23. तुम तो बस खबरदार करने वाले हो।

إِن أَنتَ إِلَّا نَذِيرٌ ۝²³

24. हम ने तुम को (ऐ पैग़म्बर !) हक़ के साथ भेजा है, ख़ुशख़बरी देने वाला और खबरदार करने वाला बना कर और कोई उम्मत ऐसी नहीं जिस में कोई खबरदार करने वाला न आया हो।⁴³

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَإِن مِّن أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ۝²⁴

25. अगर ये लोग तुम्हें झुठलाते हैं तो इन से पहले गुजरे हुए लोग भी (रसूलों को) झुठला चुके हैं। उन के पास उन के रसूल स्पष्ट दलीलें, सहीफ़ें और रौशन किताब ले कर आए थे।⁴⁴

وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ جَاءَهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۚ وَبِالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ۝²⁵

26. फिर जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन को मैं ने पकड़ लिया, तो देख लो कैसी थी मेरी सज़ा।

ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَكَيْفَ كَانَ بَكْرِئٌ ۝²⁶

27. क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह आसमान से पानी बरसाता है ⁴⁵ और उस के द्वारा फल पैदा करता है जिन के रंग भिन्न भिन्न होते हैं। और पहाड़ों में भी सफ़ेद और लाल भिन्न भिन्न रंगों के हिस्से हैं ⁴⁶ और गहरे काले भी।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بَيَضٌ وَحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ ۝²⁷

34. अर्थात् क्रियामत के दिन गुनाहों का बोझ उठाने वाला। व्याख्या के लिए देखिए सूरह बनी इस्राईल नोट १८ और सूरह अनकबूत नोट १८

35. अर्थात् तुम्हारे खबरदार करने का लाभ वही लोग उठा सकेंगे जो अल्लाह से बेखौफ नहीं हैं बल्कि अपने अन्दर उस का भय रखते हैं और नमाज़ को जो अल्लाह के भय का प्रतीक है, क़ायम करते हैं।

36. अर्थात् अक़ीदा और अमल की पाकीज़गी अपनाने का लाभ उसी को पहुँचता है जो ये गुण अपने अन्दर पैदा करता है। और कुआन अपने संबोधियों से यही माँग करता है कि वे सब से पहले अपने विचार और आचार, अक़ीदा और अमल को पाकीज़ा बनाने की चिन्ता करें।

आयत से यह भी स्पष्ट हुआ कि अल्लाह का भय और नमाज़ का आयोजन आदमी को पाकीज़गी की राह पर डाल देता है और फिर उस के लिए एक साफ़ सुथरी ज़िन्दगी बसर करना आसान हो जाता है।

37. अर्थात् जब अन्धा और आँखों वाला समान नहीं है तो बुद्धि और सूझ बूझ वाला दोनों किस तरह समान हो सकते हैं? और जब दोनों अपने कर्म की दृष्टि से समान नहीं होते तो दोनों का अन्जाम कैसे समान हो सकता है?

38. अर्थात् जब अँधयारियाँ और रौशनी बराबर नहीं हो सकते तो जिहालत के अन्धेरे और ज्ञान की रौशनी किस तरह बराबर हो सकते हैं?

39. अर्थात् जब छाँव और धूप समान नहीं हो सकते तो नेकी की ठण्डक और गुनाहों की तपिश देने कैसे समान हो सकते हैं। प्रभाव की दृष्टि से निश्चित रूप से दोनों में अन्तर है।

40. अर्थात् जब जीवित व्यक्ति और मृत व्यक्ति दोनों समान नहीं है तो अल्लाह की प्रकाशना (वह्य) से नवजीवन पाने वाला और इस के लाभ से वन्चित हो कर अपनी आत्मा को मुर्दा करने वाला समान किस प्रकार हो सकते हैं? और जब समान नहीं हैं तो अन्जाम भी दोनों का अलग अलग होना चाहिए। और यह वस्तुस्थिति इस बात का ताक़ाज़ा करती है कि इन्सानों का रब एक दिन अदालत बरपा करे और इनाम और दण्ड का मामला सामने आए।

41. अर्थात् सत्य बात वही लोग सुनते और स्वीकार करते हैं जिन को अल्लाह इस की तौफ़ीक़ देता है और वह ऐसे लोगों को तौफ़ीक़ नहीं देता जिन के दिल मुर्दा हो चुके हैं।

42. अर्थात् ऐ पैग़म्बर ! जिस तरह तुम उन लोगों को नहीं सुना सकते जो क़ब्र में दफ़न हो चुके उसी प्रकार उन लोगों को भी नहीं सुना सकते जिन के दिल मुर्दा हो चुके हैं। मतलब यह है कि मुर्दा दिल इन्सानों पर तुम्हारी नसीहत प्रभावकारी नहीं हो

सकती नसीहत हासिल करने के लिए दिल का ज़िन्दा होना और विवेक का जागृत होना आवश्यक है।

यहाँ मुर्दों के न सुनने की बात यद्यपि उदाहरण स्वरूप बयान हुई है परन्तु उदाहरण वस्तुस्थिति तथा वास्तविक घटना ही की है जो इस बात की स्पष्ट दलील है कि मुर्दों को जो क़ब्र में दफ़न हैं, सुनाना किसी व्यक्ति के बस की बात नहीं है, यहाँ तक कि पैग़म्बर भी उन्हें नहीं सुना सकता। और जब क़ब्र वालों को सुनाया ही नहीं जा सकता तो जो लोग उन से फ़रियाद करते हैं वे एक व्यर्थ की हरकत करते हैं। यह आयत भी क़ब्र परस्ती की जड़ काटती है। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह नमल नोट ११८

43. अर्थात् अल्लाह तआला ने मानवजाति की हिदायत का ऐसा सामान किया कि किसी क़ौम या जाति को भी अन्धकारों में भटकने के लिए नहीं छोड़ा। उस ने प्रत्येक जाति में एक रसूल भेजा जिस ने उस जाति को क्रियामत के दिन और अल्लाह की अवज्ञा के अन्जाम से खबरदार किया। कुआन ने बहुतेरी जातियों का वर्णन जिन की ओर रसूल भेजे गये थे उन के नामों की पुष्टि के साथ किया है परन्तु जिन जातियों का वर्णन नहीं किया है उन के बारे में हमारे पास यह जानने का कोई विश्वस्नीय साधन नहीं है कि उन की ओर कौन रसूल भेजे गए थे। इस लिए हम विश्वास के साथ यह नहीं कह सकते कि इन जातियों के रसूल फ़र्लाँ और फ़र्लाँ थे। कुआन ने फ़ारस की मजूस जाति का वर्णन किया है परन्तु उस की ओर किस को रसूल बना कर भेजा गया था इस की पुष्टि नहीं की। इस लिए हमें कोई हक़ नहीं कि हम ज़रतुश्त को नबी या रसूल ठहराएँ। इसी प्रकार हिन्दू जाति के बारे में हम पूरे विश्वास से नहीं कह सकते कि उन के ये और ये व्यक्ति नबी अथवा रसूल थे। किसी को नबी या रसूल पक्के ज्ञान और पूर्ण विश्वास के ठोस आधार पर ही क़रार दिया जा सकता है न कि क़ियास और गुमान की बिना पर। क्योंकि यह मसला विश्वास और आस्था (अक़ीदे) से सम्बन्धित है और अक़ीदे की बुनियाद स्पष्ट दलीलों पर होती है। इस बहस में पड़ने की आवश्यकता इस लिए भी बाक़ी नहीं रही की हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया की समस्त जातियों की तरफ़ रसूल और डराने वाला बना कर भेजे गए हैं और आप की लाई हुई किताब (कुआन) हिदायत और रहनुमाई के लिए मौजूद है तथा आप की उम्मत (उम्मत-मुस्लिमा) को बरपा किया गया है ताकि वे दुनिया के कोने कोने में सत्य संदेश पहुँचाएँ और लोगों को सत्य धर्म की ओर बुलाएँ।

44. अर्थात् ऐसी दलीलें ले कर आए थे जो उन के रसूल होने का स्पष्ट एवं पर्याप्त सबूत थे। उन रसूलों में ऐसे भी थे जिन को सहीफ़े दिए गए थे, जैसे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और

ऐसे भी थे जिन को किताबें दी गई थीं जैसे हज़रत मूसा और हज़रत ईसा। सहीफ़ा और किताब में अन्तर यह है कि सहीफ़ा संक्षिप्त होता है और किताब विस्तृत।

45. आसमान से पानी बरसाने का मतलब आसमान की ओर से अर्थात् ऊपर से पानी बरसाना है।

46. अर्थात् पहाड़ों में सफ़ेद पत्थर के भी भू भाग होते हैं जैसे संगे-मरमर और लाल रंग के भी। अतः राजस्थान में लाल रंग के पहाड़ हैं और देहली की जामा मस्जिद और लाल क़िले का निर्माण लाल पत्थरों ही से हुआ है।



इसी प्रकार इन्सानों, जानवरों और चौपायों के रंग भी भिन्न भिन्न हैं। वास्तविकता यह है कि अल्लाह से उस के वही बन्दे डरते हैं जो ज्ञान रखने वाले हैं। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, क्षमा करने वाला है। (अल-कुर्आन)

28. इसी प्रकार इन्सानों, जानवरों और चौपायों के रंग भी भिन्न भिन्न हैं।⁴⁷ वास्तविकता यह है कि अल्लाह से उस के वही बन्दे डरते हैं जो ज्ञान रखने वाले हैं।⁴⁸ निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, क्षमा करने वाला है।⁴⁹

وَمِنَ النَّاسِ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ
كَذَلِكَ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ
إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ﴿٢٨﴾

29. जो लोग अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं⁵⁰ और नमाज़ क़ायम करते हैं⁵¹ और जो कुछ रिज़्क (रोज़ी) हम ने उन को दिया है उस में गुप्त रूप से और आलानिया खर्च करते हैं।⁵² वे एक ऐसे व्यापार की आस रखते हैं जिस में हरगिज़ घाटा न होगा।⁵³

إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ
وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ
تِجَارَةً لَّن تَبُورَ ﴿٢٩﴾

30. ताकि वह उन को पूरा पूरा बदला दे और अपने उदार अनुग्रह (फ़ज़ल) से अतिरिक्त प्रदान करे। निस्संदेह वह क्षमा करने वाला और क़द्रदान है।⁵⁴

لِيُؤْفِقَهُمْ أَجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ
إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٠﴾

31. और (ऐ नबी !) जो किताब हम ने तुम्हारी तरफ़ वही की है वही सत्य है।⁵⁵ उन किताबों की पुष्टि करने वाली जो इस से पहले आ चुकी हैं।⁵⁶ निस्संदेह अल्लाह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला और देखने वाला है।⁵⁷

وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٣١﴾

32. फिर हम ने किताब का वारिस बनाया उन को जिन को हम ने अपने बन्दों में से चुना। तो कोई उन में से अपने नफ़्स (प्राण) पर ज़ुल्म करने वाला है तो कोई बीच की राह चलने वाला है और कोई अल्लाह की तौफ़ीक़ से नेकियों में आगे निकलने वाला है।⁵⁸ यह बहुत बड़ा अनुग्रह (फ़ज़ल) है।⁵⁹

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا
فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ
بِالْخَيْرَاتِ إِذْنُ اللَّهِ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٣٢﴾

33. हमेशा हमेशा के बाग़ हैं जिन में ये दाखिल होंगे।⁶⁰ वहाँ उन्हें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और उस में उन का लिबास रेशम होगा।⁶¹

جَنَّتْ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَكُونَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ
ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٣٣﴾

34. वे कहेंगे शुक्र है अल्लाह का जिस ने हम से ग़म दूर कर दिया।⁶² हमारा रब बड़ा क्षमा करने वाला है, क़द्र फ़रमाने वाला है।⁶³

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزْنَ إِنَّ رَبَّنَا
لَغَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٤﴾

47. अर्थात् रंगों की यह भिन्नता अल्लाह की कुदरत के कमाल को स्पष्ट करता है। उस ने जो चीज़ भी बनाई उस के विभिन्न नमूने सामने ला दिये ताकि उन को देख कर अन्तर्मन खुदा की ओर आकृष्ट हो। अगर यह कायनात खुदा के बग़ैर होती तो यहाँ रंगा रंगी नहीं हो सकती थी और अगर उस की कुदरत सीमित होती तो उस की संरचना में यह भाँत भाँत की किलकारियाँ नहीं हो सकती थीं।

48. ज्ञान रखने वालों से तात्पर्य अल्लाह की पहचान रखने वाले लोग हैं अथवा जो लोग खुदा शनास होते हैं। वे अल्लाह की बड़ाई की कल्पना मात्र से ही काँप उठते हैं। चारों ओर फैली हुई अल्लाह की निशानियों को जब वे आँखें खोल कर देखते हैं तो उन को उस के गुणों तथा उस की खूबियों के जलवे दिखाई देते हैं और अल्लाह के गुणों तथा उस की खूबियों का सही ज्ञान मन में ईश भय पैदा करता है। यह वास्तविकता ज्ञान है और जो व्यक्ति इस ज्ञान में जितनी तरक्की करता है उतना ही अधिक वह अल्लाह से डरने वाला होता है। यह अल्लाह का डर ही है जो मनुष्य के अन्दर ईमान और अच्छे कर्म की रुह फूँक देता है। इस के विपरीत जो व्यक्ति अल्लाह की पहचान से कोरा है वह (जाहिले मुत्लक़) निपट मूर्ख है। चाहे वह सांसारिक ज्ञान और विज्ञान का माहिर ही क्यों न हो।

49. इशारा है इस बात की तरफ़ कि अल्लाह के जो बन्दे अपने दिल में उस का डर रखते हैं उन के अपराधों को वह कठोर और प्रभुत्वशाली होने के बावजूद क्षमा कर देगा।

50. तिलावत की व्याख्या के लिए देखिए सूरह अनकबूत नोट ८३

51. नमाज़ क़ायम करने का अर्थ मात्र नमाज़ का बाह्य रूप से आयोजन करना नहीं बल्कि उस को पाबन्दी के साथ और ठीक ठीक अदा करना है। यह सूरह मक्की है और मक्का में सलात (नमाज़) क़ायम करने के आन्तरिक पक्षों पर ही असल जोर था क्योंकि बाह्य आयोजन के अवसर अधिक उपलब्ध नहीं थे। अलबत्ता जब मदीना में यह अवसर उपलब्ध हुए तो मस्जिदें भी निर्मित हुई और अज़ान और जमात की भी तैयारी की गई।

शब्दकोष में भी सलात क़ायम करने का अर्थ, स्थायित्व और सूरक्षा बयान किये गए हैं। “लिसानुल अरब” में है :

وَأَقَامَ الشَّيْءَ إِذَا مَهِ مِنْ قَوْلِهِ تَعَالَى

وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ (ج १२ ص २१४)

अर्थ :- “किसी चीज़ को क़ायम करने का अर्थ है उस पर स्थायित्व निरंतरता एवं दृढ़ता के साथ आ जाए। अल्लाह

तआला का इर्शाद “नमाज़ क़ायम करते हैं” इसी भावार्थ में है।” (जिल्द १२ पृष्ठ ४९८)

और मुफ़रिदाते रागिब में है :-

يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ أَيُ دِيمُونَ

فَعَلَهَا وَيُحَافِظُونَ عَلَيْهَا. (ص २१४)

अर्थ :- “नमाज़ क़ायम करते हैं अर्थात् हमेशा ये अमल करते हैं और नमाज़ की रक्षा करते हैं। (पृष्ठ ४२८)

स्पष्ट हुआ कि नमाज़ क़ायम करने में बुनियादी महत्व इस बात का है कि आदमी उस को हमेशा और सही तरीक़े से अदा करता रहे।

52. अल्लाह की राह में छिपा कर गुप्त रूप से खर्च करना बेहतर है लेकिन जहाँ ज़रूरत हो ऐलानिया भी खर्च कर सकता है।

53. अर्थात् वह अल्लाह की राह में खर्च कर के आखिरत के लाभ की आशा रखते हैं।

54. अल्लाह क़दरदान है अतः सच्चे मन से उस की राह में जो खर्च किया जाएगा और उस के लिए जो कुर्बानिया दी जाएंगी उन की अल्लाह तआला क़द्र फ़रमाएगा।

55. अर्थात् यह किताब बिल्कुल सत्य है उस में असत्य की कहीं से भी कोई मिलावट नहीं हुई है इस लिए इस का अनुकरण और अनुपालन सत्य का अनुकरण एवं अनुपालन है।

56. मुराद तौरात और इन्जील हैं। कुर्आन इन की पुष्टि इस अर्थ में भी करता है कि ये किताब अल्लाह तआला ने नाज़िल की थी और इस अर्थ में भी कि उन की शिक्षा भी वही थी जो कुर्आन की शिक्षा है तथा इस अर्थ में भी कि इन किताबों में जो भविष्यवाणियाँ उम्मी नबी के बारे में मौजूद हैं वे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं हैं। दूसरे शब्दों में आप की रिसालत से तौरात और इन्जील की भविष्यवाणियाँ सच सिद्ध होती हैं और ये इन किताबों की सच्चाई का सबूत है।

ध्यान रहे कि कुर्आन असल तौरात और इन्जील की पुष्टि करता है। यहूदियों और ईसाईयों ने इन में जो काट छाँट और परिवर्तन किये हैं उन की नहीं।

57. अतः अब वह देखेगा कि उस के बन्दे इस सच्ची किताब के साथ क्या सुलूक करते हैं।

58. अर्थात् इस किताब को पैगम्बर पर नाज़िल कर के इस का वारिस इस की उम्मत (Followers) को बनाया। किताब से मुराद कुर्आन है और इस का वारिस बनाने का मतलब इस का भारवाहक बनाना है। और “अपने बन्दों में से जिस को चुना” से मुराद उम्मते-मुस्लिमा है जिस का चुनाव सत्य धर्म

(दीने-हक़) की गवाही देने के लिए हुआ है।

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ
عَلَى النَّاسِ - (البقره- १३३)

अर्थ :- “और इस प्रकार हम ने तुम को वस्तु उम्मत बनाया ताकि तुम लोगों पर गवाह हो।” (बक़र: १४३)

और दूसरी जगह फ़रमाया

هُوَ أَجَبًاكُمْ (ج- ८८)

अर्थ :- “उस ने तुम्हें चुन लिया है।” (हज्ज - ७८)

यह चुनाव समुदाय की हैसियत में है। और इस समुदाय का चुनाव इस लिए किया गया है ताकि किताब उस को प्रदान की जाए और वह इस का भारवाहक बने। यह समुदाय इस श्रेष्ठता से तो अलंकृत किया गया है लेकिन इस के लोगों का हाल अलग ही है। इस में ऐसे भी हैं जो ग़लत रवैया अपना कर के अपने ही नफ़्स (प्राण) पर जुल्म ढा रहे हैं। उन्होंने न इस किताब की क़द्र की और न अपने इस गौरव का जो उन्हें उम्मत-मुस्लिमा में शामिल होने की हैसियत से प्राप्त हुआ था। कुर्आन ऐसे लोगों को ज़ालिम कहता है इस लिए वास्तव में वे उस गौरव के पात्र नहीं हैं जो उम्मत-मुस्लिमा को प्रदान किया गया है। और उम्मत मुस्लिमा में दूसरे प्रकार के लोग वे हैं जो बीच की राह चलने वाले हैं। मुग़द ईमान के साथ अच्छे कर्म करने वाले लोग हैं। सूरह माइदा आयत ६६ में “बीच का गिरोह” उन लोगों को कहा गया है जो उल्लंघनकारी नहीं हैं। और उम्मत मुस्लिमा में तिसरे प्रकार के लोग वे हैं जो अल्लाह की तौफ़ीक़ से नेकियों में बढ़त लेने वाले लोग हैं अर्थात् नेक कामों में अग्रसर और दीन की जद्दोज़हद में सक्रिय रहने वाले हैं। ये साधारण नेक लोगों से उच्च स्थान रखने वाले और प्रथम श्रेणी के लोग हैं।

59. अर्थात् अल्लाह की किताब का सही अर्थों में भारवाहक बनना बहुत बड़े सौभाग्य की बात है और जिन लोगों को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ उन पर अल्लाह का बहुत बड़ा करम हुआ।

60. अर्थात् जन्नत का हमेशा हमेशा रहने वाला बाग़। यह इनाम जैसा कि प्रसंग (Tenor of the speech) से तथा कुर्आन के अन्य स्पष्टीकरणों से स्पष्ट है आखिर के दो समूहों अर्थात् नेक और नेकी में बढ़त रखने वालों का बयान हुआ है। रहा पहला समूह अर्थात् अपने नफ़्स पर जुल्म करने वाले वे अपनी आस्था और विश्वास के अनुसार दण्ड के भागीदार हैं जिस की पुष्टि कुर्आन ने दूसरी जगहों पर की है। जैसे किसी ईमानवाले व्यक्ति की जान बूझ कर हत्या करने का दण्ड जहन्नम है जैसा कि सूरह निसा आयत ९२ में बयान हुआ है। इसी प्रकार

अल्लाह और उस के रसूल की अवज्ञा करने वालों को भी जहन्नम की चेतावनी सुनाई गई है।

وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ يُدْخِلْهُ
نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُهِينٌ (نساء- १३)

अर्थ :- “और जो अल्लाह और उस के रसूल की अवज्ञा करेगा और उस की निर्धारित की हुई सीमाओं का उल्लंघन करेगा उसे वह आग में डालेगा जिस में वह हमेशा रहेगा और उस के लिए अपमानजनक यातना है।” (निसा : १४)

फिर अपने नफ़्स पर जुल्म करने वालों में फ़ासिक (उल्लंघनकारी, पापी) भी हो सकते हैं और मुनाफ़िक (पाखण्डी, कपटी) भी। इस लिए कुर्आन यहाँ जन्नत की जो खुशख़बरी दे रहा है उस को इन सच्चे लोगों से सम्बन्धित बताना किसी तरह उचित नहीं हो सकता मगर कई मुफ़स्सिरन (टीकाकारों) ने इस खुशख़बरी में इन लोगों (अपने प्राणों पर जुल्म करने वालों) को भी शामिल कर के आयत का ग़लत मतलब निकाला है। जन्नत का जे बदला यहाँ बयान हुआ है लगभग इनही शब्दों में सूरह हज्ज में बयान हुआ है और इस पुष्टि के साथ कि यह उन लोगों का बदला है जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किये।

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ
ذَهَبٍ وَوُلُوءًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ - (ج- २३)

अर्थ :- “और जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने ने अच्छे कर्म किये अल्लाह उन्हें ऐसे बाग़ों में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होगी। उन को वहाँ सोने के कंगन और मोती के ज़ेवर पहनाए जाएंगे और उन का लिबास वहाँ रेशम का होगा।” (हज्ज- २३)

और जिन हदीसों को इस बात के पक्ष में प्रस्तुत किया जाता है कि आयत में जो खुशख़बरी सुनाई गई है वह इस उम्मत के ज़ालिम गिरोह के लिए भी है, वे हदीसों सही नहीं हैं। जैसे तिर्मिज़ी की अबू सईद ख़ुदरी वाली हदीस कि उस के प्रमाणों में दो उल्लेखकर्ता मजहोल हैं अर्थात् उन के नाम ही सिरे से लिखे नहीं हैं सकीफ़ के एक व्यक्ति से सुना और कनाना के एक व्यक्ति से उल्लिखित है कहने पर बस किया गया है। (तिर्मिज़ी अबवाबुतप्सीर तप्सीर सूरह मलाइका।)

ज़ाहिर है जब उल्लेखकर्ता ही अज्ञात है तो उल्लेख (रिवायत) को किस तरह सही समझा जा सकता है। इसी प्रकार अहमद बिन हम्बल ने अबू दर्दा से जो हदीस रिवायत की है उस के एक रावी (उल्लेखकर्ता) इस्हाक बिन ईसा हैं और दूसरे रावी अली बिन

अब्दुल्लाह अल अज्दी हैं और इन दोनों के बारे में हाफ़िज़ इब्ने हजर ने पुष्टि की है कि वे सच्चे हैं किन्तु हदीस बयान करने में गलतियाँ कर जाते हैं। (तकरीबुत्तहज़ीब पृष्ठ ३७, २७३)

ध्यान रहे कि इस समय उम्मत में फ़ासिकों और मुनाफ़िकों और (उल्लंघनकारियों एवं पाखण्डियों) तथा अकर्मण्य लोगों की अधिकता है और मुनाफ़िकों की भी कमी नहीं। इन सब को मात्र मुस्लिम उम्मत में शामिल होने के कारण जन्नत का अधिकारी बताना या समझना उन को इस हाल में छोड़ देना है कि वे गुनाहों में डूबे रहें। हम नहीं जानते कि अल्लाह इन में से किन लोगों को क्षमा दान देगा और कब देगा। इस लिए हमें कोई ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए जिस से अकर्मों और बुराई में लिप्त लोग संतुष्ट हो कर बैठ जाएं।

61. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हज्ज नोट ३५।

62. ग़म से तात्पर्य हर प्रकार का ग़म है। जन्नत का जीवन ग़मों से बिल्कुल पाक और पूर्ण रूप से सुखमय जीवन होगा। मनुष्य का स्वभाव ऐसे ही आनन्दमय एवं सुखी जीवन की मनोकामना करता है। मगर ऐसा जीवन प्राप्त होने की जगह यह दुनिया, यह कर्मलोक नहीं बल्कि जन्नत (स्वर्गलोक) है। यदि मनुष्य इस वास्तविकता को समझ ले तो वह अपने दुखों की पीड़ा को भूल जाए।

63. इशारा है इस बात की तरफ़ कि हम से जो गलतियाँ और अपराध हुए थे उन को हमारे रब ने क्षमा कर दिया और अच्छे कर्मों की क़द्र की।



35. जिस ने हमें अपने फ़ज़ल (अनुग्रह) से इस इक़ामत (स्थायी सुरक्षित) के घर में ठहराया। यहाँ न हमें कोई मशक्कत पेश आती है और न थकान लगती है।⁶⁴

الَّذِي أَحْكَنَّا دَارَ الْمَقَامَةِ مِنْ فَضْلِهِ لَا يَسْتَأْذِنُ فِيهَا
نَصَبٌ وَلَا يَسْتَأْذِنُ فِيهَا الْعُوبُ ﴿٣٥﴾

36. और जिन्होंने कुफ़्र किया⁶⁵ उन के लिए जहन्नम की आग है। न उन को मौत आवेगी कि मर जाएँ⁶⁶ और न उन से उस का अज़ाब हल्का कर दिया जाएगा। इस प्रकार हम बदला देंगे हर नाशुके (कृतघ्न) को।⁶⁷

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا
وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِنْ عَذَابِهَا كَذَلِكَ نَجْزِي
كُلَّ كَفُورٍ ﴿٣٦﴾

37. और वे उस में चीख चीख कर कहेंगे ऐ हमारे रब ! हमें वहाँ से निकाल। अब हम अच्छा अमल करेंगे। उन कर्मों से भिन्न जो हम करते रहे।⁶⁸ क्या हम ने तुम को इतनी आयु नहीं दी थी कि कोई यादेदेहानी हासिल करना चाहता तो हासिल कर सकता था⁶⁹ और तुम्हारे पास ख़बरदार करने वाला भी आ गया था।⁷⁰ अब मज़ा चखो। ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا
غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۖ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ
مَنْ تَذَكَّرُ وَجَاءَكُمُ النَّذِيرُ فَذُوقُوا
فَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَاصِرٍ ﴿٣٧﴾

38. अल्लाह आसमानों और ज़मीन के ग़ैब को जानने वाला है। वह सीनों में छिपी हुई बातों को भी जानता है।

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمُ غَيْبِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ
الصُّدُورِ ﴿٣٨﴾

39. उसी ने तुम को ज़मीन में ख़लीफ़ा⁷¹ (अधिकार वाला) बनाया है। तो जो कुफ़्र करेगा उस के कुफ़्र का वबाल उसी पर पड़ेगा।⁷² और काफ़िरों के लिए उन का कुफ़्र उन के रब के नज़दीक उस के प्रकोप को ही बढ़ाने वाला होगा। और काफ़िरों के लिए उन का कुफ़्र उन के घाटे में ही वृद्धि करेगा।

هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ
وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا مُقْتًا وَلَا يَزِيدُ
الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾

40. कहो क्या तुम ने देखा अपने उन शरीकों (साझीदारों) को जिन को तुम अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हो। मुझे बताओ उन्होंने ने ज़मीन में से कोई चीज़ पैदा की है? या आसमानों में उन की कोई भागिदारी है? या हम ने उन को कोई किताब दी है तो वे उस की किसी खुली हुज्जत पर हैं? नहीं बल्कि ये जालिम एक दूसरे से मात्र फरेब के वादे कर रहे हैं।⁷³

قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمُوتِ
أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَتٍ مِّنْهُ بَلْ إِنَّ يَعْدُ
الظَّالِمُونَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا إِبْرَءًا ﴿٤٠﴾

64. अर्थात् हमारे रब ने हमें उस मन्ज़िल पर उतारा है जो हमेशा हमेशा रहने का घर है और वहाँ हमारा रहना भी स्थायी है। फिर उस घर (जन्नत) की विशेषता कि यहाँ न मेहनत और परिश्रम करना पड़ती है और न किसी प्रकार की थकान लगती है।

आदमी जब मेहनत करता है तो उसे थकान लगती है लेकिन जन्नत का माहौल दुनिया के माहौल से बहुत ऊँचा और बुलन्द होगा। वहाँ किसी चीज़ को प्राप्त करने के लिए मेहनत और कठिन परिश्रम की ज़रूरत नहीं होगी इस लिए थकान भी महसूस न होगी।

65. मुराद विशेष रूप से वे लोग हैं जिन्होंने कुर्आन को अल्लाह की किताब मानने से इनकार किया।

66. अर्थात् मौत आ कर उन के कष्टों एवं यातनाओं का निवारण कर देने वाली नहीं बल्कि वे सदा सर्वदा तकलीफ़ की हालत में रहेंगे।

67. इतनी कड़ी सज़ा अल्लाह के न्याय विधान के अनुसार होगी कि जहाँ शुक्र करने का बदला हमेशा हमेशा की जन्नत है वहाँ नाशुक्र करने वालों का बदला सदा सर्वदा के लिए जहन्नम।

जो व्यक्ति अपनी आँखें फोड़ देता है उस को दोबारा आँखें नहीं मिलतीं। उसी प्रकार जो व्यक्ति अल्लाह की नेमतों को तुकरा देता है उस का हमेशा हमेशा की नेमतों से महरूम रहना सुनिश्चित है।

68. यह जहन्नम का कैसा दिल हिला देने वाला दृश्य है जिस में काफ़िरों को चीखते चिल्लाते हुए और अपने कुकर्मों को स्वीकार करते हुए दिखाया गया है। ताकि जो लोग कुर्आन का इन्कार करते हैं वे अपने भयावह एवं दुखदायी अन्जाम की एक झलक देखलें संभव है कि यह झलक उन को अपने सुधार पर आमदा कर दे।

69. मुराद वह आयु है जिस में मनुष्य सत्य और असत्य में अन्तर करने और घटनाओं एवं परिणामों से शिक्षा ग्रहण करने के योग्य होता है। कुर्आन ने दूसरी जगह जवानी की आयु को सुझा बूझ की आयु बताया है (حَتَّى يَبْلُغَ أَشُدَّهُ. (غفر-मक़-३४)) जो व्यक्ति भी सूझ बूझ की आयु को पहुँच गया उस पर यह ज़िम्मेदारी आयद होती है कि वह दुनिया में अपनी राह, अपनी सोच और अपनी दिशा निर्धारण करने के प्रति होश से काम ले और शिक्षा ग्रहण करने की जो बातें उस के सामने आएँ उन से वह सबक ले।

70. अर्थात् इस के अलावा अल्लाह तआला की तरफ़ से तुम्हारे पास रसूल आया था जिस ने तुम पर हुज्जत क़ायम कर दी थी।

71. ख़लीफ़ा का अर्थ अधिकार वाला होने के है। इस की

व्याख्या सूरह नूर नोट १५ में गुज़र चुकी। स्पष्ट रहे कि कुर्आन में मनुष्य को अल्लाह का ख़लीफ़ा कहीं नहीं कहा गया बल्कि यह कहा गया कि उस को अल्लाह ने ख़लीफ़ा बनाया है जिस का अर्थ यह है कि वह एक अधिकार रखने वाली सृष्टि है और ये अधिकार अल्लाह के बनाए तथा उस की तरफ़ से अमानत है। ईश्वरीय अधिकारों और इख़्तियार का कोई अंश भी उस को प्राप्त नहीं है और न वह ख़ुदा के स्थान पर (क़ायम मक़ाम) है। ख़ुदा का ख़लीफ़ा या प्रतिनिधी कहने से ग़लत फ़हमी पैदा हो सकती है इस लिए ख़लीफ़ा का अनुवाद अधिकार वाला अधिक उचित है और यह कहना अधिक सही है कि अल्लाह ने मनुष्य को ज़मीन पर ख़लीफ़ा बनाया है।

72. अर्थात् जो इस हक़ीक़त को मानने से इन्कार करेगा कि अल्लाह ने उस को ख़लीफ़ा बनाया है और उस के विरुद्ध वह अपने को ख़ुद मुख़्तार कहेगा तो उस की हैसियत अल्लाह के बागी और बहुत बड़े अपराधी की होगी और उस का सारा वबाल उसी पर पड़ेगा।

73. अर्थात् अल्लाह को छोड़ कर जिन को तुम ने ख़ुदा बना रखा है उस की कोई अक़ली या नक़ली दलील तुम्हारे पास है? अगर है तो बताओ उन्होंने ज़मीन में कौन सी चीज़ पैदा की है या आसमानों की संरचना में उन का क्या योगदान है? अगर आसमान और ज़मीन की पैदाइश में उन का कोई योगदान नहीं है तो फिर वे ख़ुदा कैसे हुए? और बहुत से ख़ुदाओं के पक्ष में कोई बुद्धि संगत दलील नहीं है तो क्या कोई आसमानी किताब तुम्हारे पास मौजूद है जिस में यह बात कही गई हो? अगर ऐसा नहीं है और वास्तविकता यही है कि बहुत से ख़ुदाओं के अस्तित्व की न कोई बुद्धि संगत दलील है और न इस के पक्ष में तुम कोई आसमानी किताब पेश कर सकते हो तो फिर तुम्हारी यह धारणा निराधार नहीं तो और क्या है? और इस निराधार एवं झूठी धारणा से जुड़े रहने के लिए तुम एक दूसरे को जो आस दिलाते हो कि यह धारणा तथा यह धर्म ही तुम्हें सफलता दिलाने वाला, मुक्ति देने वाला और मालामाल कर देने वाला है तो यह इस के सिवा क्या है कि एक दूसरे को हरे हरे बाग़ दिखाना और धोखे में रखना।

अरब के बहुदेववादियों के पास तो कोई धार्मिक ग्रंथ था ही नहीं जिस के आसमानी होने का वे दावा करते मगर भारत के बहुदेववादियों के पास प्राचीन धार्मिक ग्रंथ वेद मौजूद है जिस में असंख्या पूज्यों की धारणा पाई जाती है। परन्तु वेद न तो स्वयं आसमानी ग्रंथ होने का दावा करती है और न उस के अल्लाह की वहुय होने का कोई साक्ष्य उपलब्ध है, यहाँ तक कि यह भी ज्ञात नहीं कि इस का लेखक या इस का प्रस्तुत करने वाला कौन था। वेद के बारे में सी कुन्हन राजा लिखते हैं :-

"In most of the religions, the person who had the revelation, had that revelation imparted by a God, and there may be religions where he received that revelation through personal effort without a God. Even within the scheme of the rituals of

the vedas, there is no such original Teacher of the religion and there are no dogmas for belief."

(The Quintessence of the Rigveda P.6).

इस लिए वेद में पाये जाने वाले असंख्य पूज्यों और देवताओं की धारणा को दलील नहीं बनाया जा सकता।



निस्संदेह वह अल्लाह ही है जो आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है कि वे टल न जाएं और अगर वे टल जाएं तो उस के बाद कोई नहीं है जो उन को थाम सके। निस्संदेह वह बड़ा सहनशील और क्षमा करने वाला है। (अल-कुर्आन)

41. निस्संदेह वह अल्लाह ही है जो आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है कि वे टल न जाए ⁷⁴ और अगर वे टल जाएं तो उस के बाद कोई नहीं है जो उन को थाम सके। ⁷⁵ निस्संदेह वह बड़ा सहनशील और क्षमा करने वाला है। ⁷⁶

إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهِ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٣١﴾

42. ये लोग अल्लाह की पक्की क़समें खा कर कहा करते थे कि अगर उन के पास कोई ख़बरदार करने वाला आया तो वे हर उम्मत से अधिक हिदायत अपनाने वाले बनेंगे ⁷⁷ मगर जब ख़बरदार करने वाला उन के पास आ गया तो उन की दूरी ही में वृद्धि हो गई।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ إِحْدَى الْأُمَمِ فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَا زَادَهُمُ إِلَّا نُفُورًا ﴿٣٢﴾

43. ये ज़मीन में घमण्ड करने लगे और बुरी चालें चलने लगे। हालाँकि बुरी चालें उन ही को पकड़ में लेती हैं जो ये चालें चलते हैं। ⁷⁸ अब क्या ये लोग इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि इन के साथ भी वही मामला किया जाए जो पिछली क़ौमों के साथ किया गया था। ⁷⁹ ऐसा है तो तुम अल्लाह के नियम में कोई परिवर्तन न पाओगे और न अल्लाह के नियम को टलता हुआ देखोगे। ⁸⁰

إِسْتَكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّيِّئَاتِ الْأُولَىٰ ۖ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَحْوِيلًا ﴿٣٣﴾

44. क्या ये लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि देख लेते उन लोगों का क्या अन्जाम हुआ जो इन से पहले गुज़र चुके हैं। वे इन से कहीं अधिक शक्तिशाली थे। और आसमान और ज़मीन में कोई चीज़ भी ऐसी नहीं जो अल्लाह को आज़िज़ (विवश) करने वाली हो। वह सब कुछ जानने वाला और बड़ी कुदरत वाला है।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِن شَيْءٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ﴿٣٤﴾

45. अगर वह लोगों को उन के करतूतों पर पकड़ता तो ज़मीन पर एक जानदार को भी नहीं छोड़ता। मगर वह उन्हें निर्धारित समय तक के लिए मोहलत देता है। फिर जब उन का नियत समय आ जाएगा तो अल्लाह अपने बन्दों को देख लेगा। ⁸¹

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَى ظَهْرِهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَكِنْ يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ﴿٣٥﴾

74. अर्थात् उन को जिस तरह स्थापित कर दिया गया है स्थापित रहें। ज़मीन कहीं लुढ़क न जाए और आसमान कहीं गिर न पड़े।

75. अगर अल्लाह आसमानों और ज़मीन की पकड़ ढीली कर दे या उन को नष्ट कर दे तो उन को अपनी जगह स्थापित रखने वाला कोई नहीं। मतलब यह है कि आसमान और ज़मीन अल्लाह के स्थापित रखने से स्थापित हैं और अगर वह उन को स्थापित न रखना चाहे तो कोई नहीं जो उन को स्थापित रख सके।

76. इशारा है इस बात की तरफ़ कि काफ़िरों की बातें ऐसी हैं कि अल्लाह का प्रकोप टूट पड़े और आसमान और ज़मीन की व्यवस्था छिन्न भिन्न हो कर रह जाए। लेकिन अल्लाह सहनशील है इस लिए उस का प्रकोप टूट नहीं पड़ता और वह क्षमा करने वाला है इस लिए काफ़िरों को भी मोहलत देता है कि वे उस से क्षमादान के प्रार्थी बन कर अपना सुधार कर लें।

77. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आमद से पहले मक्का के बहुदेववादी, यहूदियों और ईसाईयों को देख कर कहा करते थे कि अगर हमारे पास अल्लाह का कोई रसूल आया तो हम इन उम्मतों के मुकाबले में अपने को अधिक अनुपालन और हिदायत पर जमे रहने वाला सिद्ध कर दिखाएंगे।

78. अर्थात् अल्लाह के रसूल और सच्चे दीन के विरुद्ध जो षडयंत्र भी रचे जाएंगे उन के जाल में अंततः षडयंत्रकारी ही फ़सेंगे। और दुनिया ने देख लिया कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरुद्ध षडयंत्र रचने वालों की चालें किस प्रकार उलटी पड़ी। यह तो दुनिया में उन का अन्जाम हुआ और आखिरत में तो हौलनाक अन्जाम से उन्हें दोचार होना

है।

79. अर्थात् रसूलों को झुठलाने का जो अन्जाम गुज़री हुई क्रौमों का हुआ वही अन्जाम इन का हो जाए?

80. अर्थात् अल्लाह का नियम कि उस के रसूल को झुठलाने वालों को वह दुनिया में तबाह कर देता है एक अटल नियम है। इस में किसी जाति के साथ कोई रियायत नहीं बरती जाती। प्रत्येक झुठलाने वाली जाति का यही अन्जाम हुआ है। अतः कुर्आन के पैग़म्बर को झुठलाने वाली जातियों का भी निश्चित रूप यही अन्जाम होगा। अल्लाह के इस विधान (नियम) में न कोई परिवर्तन हो सकता है और न इस के अनुसार प्रकट होने वाले अज़ाब को टाला जा सकता है। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह बनी इस्राईल नोट १०७)

81. यह इन्कार करने वालों की उस आशंका का उत्तर है कि अगर हम गुमराह हैं तो अल्लाह हमें दण्ड क्यों नहीं देता। फ़रमाया अगर अल्लाह लोगों को उन के अपराधों और ग़लतियों पर फ़ौरन पकड़ लेता तो पूरी मानव जाति की समाप्ति हो चुकी होती। क्यों कि कोई मनुष्य ऐसा नहीं जिस से कोई न कोई ग़लती या अपराध न होता हो लेकिन अल्लाह लोगों को अपना सुधार कर लेने का अवसर देता है। यहाँ तक कि वह गुमराह क्रौमों को भी एक समय तक अवसर देता है ताकि वे अपने रवैये को दुरुस्त कर लें। जब यह मोहलत समाप्त होगी और फैसले का समय आ जाएगा तो अल्लाह देख लेगा कि उस के बन्दों ने क्या किया है और उन के साथ क्या मामला किया जाना चाहिए। इस में गुमराह और बुरा रास्ता अपनाने वालों के लिए कड़ी चेतावनी है कि वे यह न समझें कि अल्लाह उन को कभी पकड़ने वाला नहीं है।



सूरह यासीन

३६. सूरह यासीन

नाम :- सूरह की शुरुआत ही “या” (या) और “स” (सीन) दो शब्दों से हुई है इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम सूरह “यासीन” है।

नाज़िल होने का समय :- मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि मक्का के मध्य दौर के अंत में नाज़िल हुई होगी। तथा यह भी अंदाज़ा होता है कि सूरह फ़ातिर के बाद नाज़िल हुई होगी। क्योंकि उस में ख़बरदार करने वाले (नज़ीर) का वर्णन संक्षेप में हुआ था और इस में अधिक विस्तार के साथ हुआ है।

केन्द्रीय विषय :- आख़िरत के अन्जाम से ख़बरदार करना है, इस तरह से कि ग़फ़लत में पड़े हुए लोग जाग उठें और उन्हें अपने भविष्य और अपनी मुक्ति की चिंता लगे। रसूल की नियुक्ति इसी लिए हुई है कि वह ख़बरदार करने का दायित्व निभाएँ।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से १२ में रसूल की सत्यता पर कुर्आन की गवाही प्रस्तुत करते हुए स्पष्ट किया गया है कि उस की नियुक्ति का उद्देश्य ग़फ़लत में पड़े हुए लोगों को ख़बरदार करना है।

आयत १३ से ३२ में इब्रत के लिए एक बस्ती का उदाहरण दिया गया जिस ने ख़बरदार करने वाले रसूलों को झुठलाया था। परिणाम यह कि अल्लाह ने अज़ाब भेज कर उस को विनष्ट कर दिया।

आयत ३३ से ५० में तौहीद की निशानियों की तरफ़ रहनुमाई करते हुए इन्कार करने वालों के एतिराज़ आदि का खण्डन किया गया है।

आयत ५१ से ६५ में क़ियामत के हालात इस तरह से प्रस्तुत किये गए हैं कि पढ़ने वाला महसूस करने लगता है कि क़ियामत बरपा हो गई है और वह हश्श के मैदान में खड़ा है।

आयत ६६ से ६८ में इन्कार करने वालों को चेतावनी है। आयत ६९ से ८३ में रिसालत, तौहीद और मरने के बाद मिलने वाले दूसरे जीवन से सम्बन्धित इन्कार करने वालों के संदेहों का उत्तर दिया गया है।

फ़ज़ीलत के बारे में रिवायतें :- इस सूरह की फ़ज़ीलत (महत्व बताने) में तिर्मिज़ी ने हज़रत अनस से यह हदीस उद्धृत की है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया “यासीन कुर्आन का दिल है” साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है यह हदीस हसन ग़रीब है और इस का एक रावी (उल्लेखकर्ता) हारून अबू मुहम्मद मजहोल हैं। (देखिए तिर्मिज़ी अबवाब फ़ज़ाइलुल कुर्आन)

दूसरी हदीस अबू दाऊद की है जिस में उन्होंने ने माक़िल बिन यसार से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह इर्शाद उद्धृत किया है।

اقرأوايس على موتاكم (ابوداؤد کتاب الجنائز)

अर्थ :- “मरने वालों पर यासीन पढ़ा करो” (अबूदाऊद किताबुल जनाइज़)

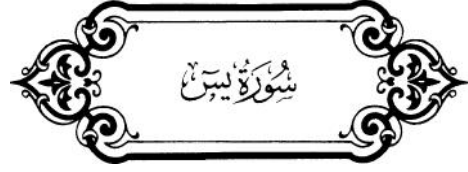
यह रिवायत अबू उस्मान ने अपने पिता के माध्यम से माक़िल बिन यसार से बयान की है। लेकिन इमाम ज़हबी अबू उस्मान के बारे में लिखते हैं “न उस का बाप मारूफ़ (प्रसिद्ध) है और न वह” (देखिए मीज़ानुलएतिदाल जिल्द ४ पृष्ठ ५५०)

इस मज़मून की रिवायतें मुस्नद अहमद और दूसरी हदीस की किताबों में भी बयान हुई है परन्तु प्रमाण की दृष्टि से यह विश्वस्नीयता की सीमा तक नहीं पहुँचती इस लिए इन को रसूल का बयान नहीं बताया जा सकता। और यह बात भी साबित नहीं है कि सहाबा इस सूरह को किसी व्यक्ति के प्राण निकलने के समय पढ़ा करते थे।

३६. सूरह यासीन

आयतें : ८३

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. या - सीन ¹

يَس ١

2. क्रसम है हिकमत भरे (तत्वपूर्ण) कुआन की।

وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ ٢

3. तुम निश्चय ही रसूलों में से हो।²

إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ٣

4. सीधे रास्ते पर।³

عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ٤

5. यह नाज़िल किया हुआ है उस का जो प्रभुत्वशाली और दयावान है।⁴

تَنْزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ٥

6. ताकि तुम ऐसी जाति को ख़बरदार करो जिस के बाप दादा को ख़बरदार नहीं किया गया था इस लिए वे ग़फ़लत में पड़े हुए हैं।⁵

لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أُنذِرَ آبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ ٦

7. उन में से अधिकतर लोगों पर हमारा क़ौल सादिक आ (सत्य सिद्ध हो) चुका है,⁶ इस लिए वे ईमान नहीं लाते।

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَى أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ٧

8. हम ने उन की गर्दनो में तौक्र डाल दिये हैं जो उन की ठोड़ियों तक हैं, इस लिए उन के सर ऊपर को उठ कर रह गए हैं।⁷

إِنَّا جَعَلْنَا فِيْ أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى

الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُونَ ٨

9. हम ने उन के आगे भी एक दीवार खड़ी कर दी है और उन के पीछे भी एक दीवार और हम ने उन को ढाँक दिया है, अतः उन्हें कुछ सुझाई नहीं देता।⁸

وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا

فَأَعْيَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يَبْصُرُونَ ٩

10. उन के लिए एक जैसा है, तुम उन्हें ख़बरदार करो या न करो। वे ईमान लाने वाले नहीं।⁹

وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ١٠

1. कुछ मुफस्सिरीन ने यासीन का मतलब ऐ इन्सान बताया है और कुछ के नजदीक इस से तात्पर्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं लेकिन यह बात न तो शब्द कोष से सिद्ध होती है और न हदीस से।

हुरूफ़े-मुकत्तआत (विभक्त अक्षर) जैसा कि हम बयान कर चुके हैं सूरतों के कुछ महत्वपूर्ण विषयों की ओर इशारा करते हैं। (देखिए सूरह बक्रः नोट १ और सूरह यूनस नोट १) इस सूरह में “या” का इशारा يَحْسُرُونَ عَلَى الْعِبَادِ “या हसरतन अलल इबाद” (बन्दों के हाल पर अफ़सोस ! आयत ३०) की तरफ़ है और “सीन” का इशारा سَلَامٌ فَلَا مُنْ رَّبِّ رَحِيمٍ (अर्थ:- “जन्नत में उन के लिए दयावान प्रभु की ओर से क्रौल होगा सलाम” आयत ५८) की तरफ़ है। मतलब यह कि इस सूरह में एक ओर उन बन्दों के हाल पर अफ़सोस प्रकट किया गया है जो रसूल की सत्यता पर विश्वास नहीं रखते बल्कि उस का मज़ाक़ उड़ाते हैं और दूसरी तरफ़ ईमान लाने वालों को खुशख़बरी दी गई है कि उन का दयावान रब उन को सलाम का तोहफ़ा पेश करेगा।

2. अरबी में ऐसे मौक़े पर क्रसम गवाही के अर्थ में आती है। अर्थात् जिस चीज़ की क्रसम खाई जाती है उस को सबूत और दलील के तौर पर प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रसूल होने के सबूत में हिकमत भरे कुर्आन को प्रस्तुत किया गया है।

जो व्यक्ति भी कुर्आन का खुले मन से अध्ययन करेगा वह यह महसूस किये बग़ैर नहीं रहेगा कि :-

प्रथम यह कि कुर्आन के ज्ञान का स्तर अत्यंत उच्चतम है। वह मनुष्य के ज्ञान में बेपनाह वृद्धि करता है और उस पर कायनात के भेदों को खोलता है और इन्सानी ज़िन्दगी के बारे में सच्चाईयों एवं वास्तविकताओं को बेनिक़ाब करता है।

द्वितीय यह कि वह इन्सान को बुलन्दी की तरफ़ ले जाता है और उसे भी बुलन्दी प्रदान करता है।

तृतीय यह कि सोच विचार तथा चिन्तन मनन की क्षमता को उभारता है और उस की बुद्धि को बढ़ाता है।

चतुर्थ यह कि उस की शिक्षाएँ अत्यंत ऊँची और मानव स्वभाव से बिलुकल मेल खाती हुई हैं।

पंचम यह कि वह न्याय की तुला (मीज़ान) की स्थापना करता है और दुश्मनों के साथ भी इन्साफ़ करना सिखता है।

षष्ठम यह कि वह इतिहास के गुम पन्नों को प्रस्तुत करता है जिन में इन्सानियत के लिए बहुत बड़ा सबक़ है। और भविष्य में क्या कुछ सामने आने वाला है उस से आगाह करता है।

सप्तम यह कि वह मनुष्य के शरीर को भी पवित्रता प्रदान करता है और आत्मा को भी और उस में ऐसी रूह फूँक देता है कि वह जीवन की मूल वास्तविकता से परिचित हो जाता है।

ऐसा तत्वपूर्ण कलाम जो मनुष्य की काया पलट देता हो और उसे ऊँचाई के शिखर पर पहुँचाता हो अल्लाह की प्रकाशना (वह्य) ही हो सकती है। और जब यह कलाम अल्लाह की प्रकाशना है तो इस का प्रस्तुत करने वाला निश्चित रूप से अल्लाह का रसूल है। सारांश यह कि कुर्आन का चमत्कार की हद तक तत्वपूर्ण एवं हिकमत भरा होना उस के लाने वाले के जो एक उम्मी (अन्यद्) व्यक्ति है, पैगम्बर होने का स्पष्ट सबूत है और यह ऐसा सबूत है जो रहती दुनिया तक बाक़ी रहने वाला है ताकि हर ज़माने और हर युग के लोग आप की रिसालत (ईशदूतत्व) पर विश्वास कर सकें।

3. सीधे रास्ते से तात्पर्य वह रास्ता है जो सीधा अल्लाह तक पहुँचता है और वह है तौहीद (एकेश्वरवाद) का रास्ता जिस का नाम इस्लाम है।

सूरह फ़ातिहा में जिस सीधे मार्ग की हिदायत के लिए बन्दों की ज़बान से दुआ निकली है वह यही सीधा रास्ता है जिस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थे।

4. अर्थात् इस कुर्आन को अल्लाह ने उतारा है जो प्रभुत्वशाली भी है और दयावान भी। इन दो विशेषताओं की ओर इशारा करने से अभिप्रेत यह स्पष्ट करना है कि यह कुर्आन उस हस्ती का आदेश है जिस की सत्ता सब पर छाई हुई है। इस लिए इस को रद्द करना या इस से विमुखता का प्रदर्शन करना कोई मामूली बात नहीं बल्कि बहुत बड़ी अवज्ञा है जिस पर उस की तरफ़ से सख्ती से पकड़ होगी। और अगर तुम उस के आदेशों को स्वीकार करो तो उस की दया के पात्र बन सकते हो।

5. मुराद अरब अर्थात् बनी इस्माईल हैं जिन में हज़रत इस्माईल के बाद कोई रसूल (ख़बरदार करने वाला) नहीं आया। हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का युग लगभग दो हजार वर्ष ई. पू. का है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नियुक्ति सन ६१० ई. में हुई। गोया ढाई हजार वर्ष बाद इन में पैगम्बर आए। इतनी लम्बी अवधि तक उन में कोई पैगम्बर इस लिए नहीं उतारा गया कि हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल ने मक्का में अल्लाह का घर निर्माण कर के और नमाज़ और हज्ज का तरीक़ा विस्थापित कर के एकेश्वरवाद की गहरी छाप छोड़ी थी और एक छोटे एवं असभ्य समाज के लिए जिस हद तक शरीर आदेशों की आवश्यकता थी वह भी इब्राहीमी सुन्नत के रूप में मौजूद चली आ रही थी। इस के अलावा उन की याददेहानी और नसीहत का सामान सीधे सीधे हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के द्वारा जो उत्तरी हिजाज़ के क्षेत्र में नियुक्त हुए थे तथा बनी इस्माईल के पैगम्बर विशेष रूप से हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के

द्वारा अन्जाम पाता रहा। अर्थात् उन के आस पास के इलाकों में आबाद हुए और दीन की बातें बराबर उन तक पहुँचती रही। इस लिए यह समझना सही नहीं कि इस लम्बे समय में वे बिल्कुल ही अज्ञानता के अंधकार में रहे और हिदायत की रौशनी का उन के लिए कोई इन्तिजाम नहीं किया गया था। यहाँ वास्तव में अरबों पर यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि एक लम्बे अन्तराल के बाद तुम्हारे अन्दर जो रसूल भेजा गया है उस का तुम्हें आदर करना चाहिए कि अल्लाह ने तुम्हें बहुत बड़ा अनुग्रह प्रदान किया। जिस ग़फ़लत में तुम पड़ गये थे उस से तुम्हें जगाने का सामान किया और हिदायत की जो रौशनी धीमी पड़ गई थी उस को तेज कर दिया लेकिन तुम उस की नाक़द्री और निरादर कर रहे हो। गोया न तुम्हें रसूल की आवश्यकता है न हिदायत की।

6. मुराद अल्लाह तआला का इर्शाद है जो उस ने इब्लीस को सम्बोधित कर के फ़रमाया था :-

لَا مَلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَتَّبَعُ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ - (स-१५)

अर्थ :- “मैं तुझ से और जो इन में से तेरा अनुपालन करेंगे उन सब से जहन्नम को भर दूँगा”। (सॉद ८५)

मतलब यह है कि इन में अधिकतर लोगों ने शैतान के पीछे चलकर अपने को जहन्नम का भागीदार बना लिया है। यहाँ विशेष रूप से मक्का के बहुदेववादी अभिप्रेत हैं। जिन पर अल्लाह की हुज्जत क़ायम हो गई थी। इस के बावजूद उन में से अधिकतर लोग ईमान नहीं लाए और अंततः कुफ़्र की हालत

ही में मरे या जंग ने उन को मिटा दिया। मक्का में कम ही तादाद ऐसी निकली जो देर सवेर ईमान ले आई।

7. तौक्र से मुराद बाप दादा से चली आ रही कुरीतियों एवं अंध विश्वासों अंधानुकरण के फंदे हैं। उन्होंने ने जब यही फंदे पसंद कर लिए तो अल्लाह के गुमराही में झोंक दिये जाने वाले नियम ने उन्हें यही फंदे पहना दिये। ये फ़न्दे उन की ठोड़ियों तक आ लगे हैं इस लिए उन के सर ऊपर ही को उठकर रह गए हैं। यह उन के घमण्ड और उन की उद्वण्डता का चित्रण है कि अब उन के सर अल्लाह के आगे झुकने वाले नहीं हैं। स्पष्ट हुआ कि धारणा एवं आस्था के मामले में बाप दादा का अंधानुकरण मनुष्य में घमण्ड पैदा करता है और उस को अल्लाह का विद्रोही बना देता है। प्रत्येक मनुष्य का यह दायित्व है कि वह सत्य को खोजे और अल्लाह की दी हुई बुद्धि का सदुपयोग करे।

8. यह उन गुमराहों की उस स्थिति का चित्रण है कि उन के सामने सत्य की ओर रहनुमाई करने वाली जो निशानियाँ फैली हुई हैं वे उन्हें दिखाई नहीं देती और इस लिए दिखाई नहीं देती कि उन के और सत्य के बीच ईष्य एवं पक्षपात की दीवार आड़े आ गई है। इसी प्रकार गुजरी हुई जातियों के इबरतनाक अन्जाम से भी उन्हें कोई सबक नहीं मिल रहा है क्योंकि उन के पीछे भी दीवार आड़े आ गई है। पक्षपात एवं वैमनस्य के ये परदे उन की आँखों पर इस तरह पड़ गए हैं कि उन को कुछ दिखाई नहीं देता।

9. अर्थात् ऐसे हट्ठर्म लोग पैगम्बर की चेतावनियों का कोई असर स्वीकार करने वाले नहीं।



तुम उसी को ख़बरदार कर सकते हो जो नसीहत की पैरवी करे और रहमान (दयावान) से बे देखे डरे। ऐसे व्यक्ति को क्षमादान और सम्मानजनक बदले की खुशख़बरी दो। (अल-कुआन)

11. तुम उसी को खबरदार कर सकते हो जो नसीहत की पैरवी करे और रहमान (दयावान) से बे देखे डरे।¹⁰ ऐसे व्यक्ति को क्षमादान और सम्मानजनक बदले की खुशखबरी दो।
12. हम निश्चय ही मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे।¹¹ और हम लिख रहे हैं जो कुछ उन्होंने ने आगे भेजा और जो आसार उन्होंने ने पीछे छोड़े। हम ने हर चीज़ को एक खुली किताब में लिख रखा है।¹²
13. इन को मिसाल के तौर पर बस्ती वालों का वृत्तांत सुनाओ जब कि उन के पास रसूल आए।¹³
14. जब हम ने उन के पास दो रसूल भेजे तो उन्होंने उन को झूठलाया। फिर हम ने तीसरा रसूल भेज कर (उन रसूलों की) ताईद की। उन सब ने कहा, हम तुम्हारी तरफ़ रसूल बना कर भेजे गए हैं।¹⁴
15. उन लोगों ने जवाब दिया तुम तो हमारे ही जैसे मनुष्य हो, और रहमान ने कोई चीज़ भी नाज़िल नहीं की है। तुम बिलकुल झूठ बोलते हो।¹⁵
16. उन्होंने ने कहा हमारा रब जानता है कि हम तुम्हारी तरफ़ रसूल बना कर भेजे गए हैं।¹⁶
17. और हमारी ज़िम्मेदारी इस के सिवा कुछ नहीं कि साफ़ साफ़ संदेश पहुँचा दें।¹⁷
18. उन लोगों ने कहा हम तो तुम्हें मन्हूस (अपशगुन) समझते हैं।¹⁸ अगर तुम बाज़ न आए तो हम तुम को संगसार (पत्थरवाह) कर देंगे। और तुम हमारे हाथों दुखदायी सज़ा पाओगे।
19. उन्होंने ने (रसूलों ने) जवाब दिया तुम्हारी नहूसत (अपशगुन) तो तुम्हारे साथ लगी हुई है।¹⁹ क्या यह (सज़ा) इस कारण (दोगे) कि तुम्हें नसीहत की गई।²⁰ सच्ची बात यह है कि तुम हद से गुज़रे हुए लोग हो।²¹

إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَنََ الْغَيْبِ
فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ⑩

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ
وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ ⑪

وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ إِذْ
جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ⑫

إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ
فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُمْ مُّرْسَلُونَ ⑬

قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَنُ
مِنْ شَيْءٍ ⑭ إِن أَنْتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ ⑮

قَالُوا رَبَّنَا عَلِّمْنَا إِنَّا إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ ⑯

وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ⑰

قَالُوا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ لَئِن لَّمْ تَنْتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ
وَلَيَسْئَلَنَكُمْ مِنْهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑱

قَالُوا طَائِرُكُمْ مَعَكُمْ أَإِنْ
ذُكِّرْتُمْ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ⑲

10. अर्थात् ऐसे लोग ही पैगम्बर की चेतावनियों से प्रभावित होंगे जो शिक्षा की बात स्वीकार करने के लिए आमादा हों और दयावान खुदा की महानता तथा उस की बड़ाई का डर रखते हों। खुदा से बिन देखे डरने की व्याख्या के लिए देखिए सूरह अम्बिया नोट ६८

11. अर्थात् क्रियामत के दिन मरे हुए इन्सानों को ज़िन्दा किया जाएगा ताकि वे अल्लाह के समक्ष अपने कर्मों की जवाबदेही करें और उन की मुनासिबत से अच्छा बुरा बदला पायें।

12. अर्थात् हम न केवल उन कर्मों को लिख रहे हैं जो उन्होंने ने किये बल्कि जो प्रभाव और जो छाप उन्होंने अपने पीछे छोड़े हैं उन का भी रिकार्ड तैयार कर रहे हैं। अल्लाह ने ऐसा रिकार्ड तैयार करने का प्रबन्ध किया है कि प्रत्येक व्यक्ति के समस्त कर्म और उस की छोड़ी हुई हर छाप सुरक्षित हो जाए ताकि क्रियामत के दिन वह देख ले कि उस ने दुनिया में अच्छे काम किये थे या बुरे। अपने पीछे अच्छी छाप छोड़ी थी या बुरी और अच्छी फ़सल बोई थी या काँटे।

उस ज़माने में कुर्आन का यह बयान लोगों को विचित्र सा प्रतीत होता था, कि इन्सान के कर्मों का ऐसा विस्तृत रिकार्ड किस तरह तैयार किया जा सकता है लेकिन मौजूदा दौर में जब कि मनुष्य ने टेप रिकार्ड, कम्प्यूटर और बोलती फ़िल्मों का आविष्कार कर लिया है, इस पर विश्वास करना भी कुछ मुश्किल नहीं रहा। और अल्लाह तो सब कुछ कर सकने में पूरी तरह समर्थ और हर बात को जानने वाला है।

مَا قَدَّمُوا

“जो कुछ उन्होंने आगे भेजा” से मुराद उन के कर्म हैं जिन का नतीजा आखिरत में उन के सामने आने वाला है। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह इन्फ़ितार नोट ५)

13. इन आयतों में एक ऐतिहासिक घटना प्रस्तुत की गई है ताकि रसूल का इन्कार करने वाले इस से सबक सीखें। घटना के केवल उन ही भागों का वर्णन किया गया है जो नसीहत दिलाने के लिए पर्याप्त हो सकते थे। यह बस्ती कौन सी थी, किन रसूलों को वहाँ भेजा गया था और यह घटना कब घटी? इन बातों की पुष्टि कुर्आन ने नहीं की। संभवतः इस का कारण यह है कि यह घटना अत्यंत प्राचीन काल में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से भी पहले घटित हुई होगी और चूँकि उस के ऐतिहासिक प्रमाण मिट चुके थे इस लिए बस्ती के नाम आदि की पुष्टि का कोई लाभ नहीं था।

अधिकतर मुफ़स्सिर ने बस्ती से मुराद अन्ताकिया (Antioch) लिया है जो सीरिया में टर्की की सीमा के निकट

एक बड़ा उद्योगिक शहर था और रसूलों से मुराद ईसा अलैहिस्सलाम के हवारी लिए हैं जिन्होंने अन्ताकिया में दीन का प्रचार एवं प्रसार किया था। लेकिन अल्लामा इब्ने कसीर ने इन को कुछ कारणों के चलते गलत बताया है (देखिए तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द ३ पृष्ठ ५९६) हम समझते हैं कि ये आयतें अन्ताकिया और वहाँ के प्रचारकों पर किसी तरह भी लागू नहीं होती।

पहली बात तो यह कि अन्ताकिया वह बस्ती नहीं है जो अल्लाह के अज़ाब से नष्ट कर दी गई जब कि कुर्आन आगे आयत २९ में स्पष्ट करता है कि उस बस्ती पर अन्ततः अल्लाह ने अज़ाब नाज़िल किया जिस के फलस्वरूप वह बिलकुल विनष्ट हो कर रह गई। अन्ताकिया में तो जैसा कि बाइबिल का बयान है ईसाई प्रचारकों को बड़ी सफलता प्राप्त हुई थी (देखिए बाइबिल की किताब “प्रेरितों के कामों का वर्णन अध्याय ११”)

दूसरी बात यह है कि जिन तीन व्यक्तियों को बस्ती वालों की तरफ़ भेजा गया था उन के बारे में कुर्आन साफ़ कहता है कि वे अल्लाह के भेजे हुए रसूल थे (आयत १४, १६) जब कि हज़रत ईसा के हवारी परिभाषिक शब्दों में अल्लाह के रसूल नहीं थे। वे तो जैसा कि कुर्आन का बयान है हज़रत ईसा के साथी और सहयोगी थे। (सूरह सफ़ आयत १४)

तीसरी बात बस्ती वालों का यह एतिराज कि तुम हमारी ही तरह मनुष्य हो और रहमान ने कोई चीज़ भी नाज़िल नहीं की (आयत १५) अल्लाह के उन रसूलों के बारे में हो सकता था जो कहते थे कि हम पर अल्लाह की वही नाज़िल होती है। हज़रत ईसा के हवारी (साथी) तो प्रचारक की हैसियत से अन्ताकिया गए थे। और एक प्रचारक पर जब कि वह अल्लाह के रसूल होने का दावा न करे कोई व्यक्ति यह एतिराज नहीं करता कि तुम तो हमारी ही तरह मनुष्य हो।

तदब्बुरे-कुर्आन के मुफ़स्सिर ने इस से अलग अपनी इस राय को व्यक्त किया है कि बस्ती से तात्पर्य मिस्र है और दो रसूलों से मुराद हज़रत मूसा और हज़रत हारून हैं और तिसरा व्यक्ति जिस के द्वारा उन्हें बल पहुँचाया गया फ़िराऊन के दरबार का वह व्यक्ति था जो ईमान ले आया। मगर यह राय इस लिए सही नहीं कि कुर्आन तीनों व्यक्तियों को रसूल बताता है (आयत १६) और आयतों का जो मतलब उन्होंने निकाला है वह तकल्लुफ़ से ख़ाली नहीं था इस बात का भी कोई सबूत नहीं है कि मिस्र की तबाही हौलनाक चीख के द्वारा हुई थी। इस लिए आयत २९ में जिस अज़ाब का वर्णन हुआ है उस से वह अज़ाब तात्पर्य नहीं लिया जा सकता जो फ़िराऊन के देश पर आया था। सारांश यह कि कुर्आन के स्पष्टीकरणों से इस राय का खण्डन होता है। हमारे नज़दीक जैसे कि हम ने ऊपर बताया कुर्आन के संक्षिप्त एवं व्यापक बयान पर संतोष करना उचित

है बनिस्बत इस के कि हम मात्र अपने अनुमानों से काम ले कर उन बातों का निर्धारण करें जिन का निर्धारण कुर्आन ने नहीं किया।

14. स्पष्ट हुआ कि तिसरा व्यक्ति भी रसूल था और ये तीनों रसूल अल्लाह के भेजे हुए थे अर्थात् ये परिभाषिक शब्दों में रसूल थे इस लिए उन को हजरत ईसा का संदेशवाहक बताना हरगिज़ सही नहीं। एक बस्ती में तीन रसूल भेजने की मसलहत यह मालूम होती है कि तर्क स्थापित करने तथा हुज्जत पूरी करने की एक मिसाल यह भी कायम हो जाए और दुनिया वालों पर स्पष्ट हो जाए कि जो क्रौम हठधर्मी में लिप्त होती है वह एक नहीं तीन तीन रसूलों को भी झुठलाने में संकोच नहीं करती।

15. ये वैसे ही एतिराज़ एवं आपत्तियाँ थी जैसी कि मक्का के बहुदेववादी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कर रहा था।

16. अर्थात् यदि तुम इन दलीलों की रौशनी में हमें रसूल स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हो जो हम प्रस्तुत कर रहे हैं तो न मानो। हम तो अल्लाह को गवाह कर के कहते हैं कि उस ने हम को रसूल बना कर भेजा है।

17. अर्थात् हमारी ज़िम्मेदारी केवल यह है कि स्पष्ट रूप से अल्लाह का पैग़ाम बहूँचा दें इस के बाद अपने कर्मों के तुम खुद ज़िम्मेदार हो। हमारी ज़िम्मेदारी यह नहीं है कि तुम्हें ईमान लाने के लिए विवश करें।

ध्यान रहे यहाँ जो बात कही गई है वह उन लोगों से सम्बन्धित है जो ईमान नहीं लाए। इस से यह नतीजा निकालना सही नहीं कि रसूल की ज़िम्मेदारी ईमान वालों के मामले में भी संदेश पहुँचा देने से अधिक कुछ नहीं होती। हज़रत मूसा को बनी

इस्त्राईल से सम्बन्धित कैसी कैसी ज़िम्मेदारियों को निभाना पड़ा। हज़रत दाऊद को ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी सौंपी गई। हज़रत सुलैमान ने एक शानदार हुकूमत कायम करने के साथ अदालत के दायित्व को भी उठाया। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तज़किया और तरबियत अर्थात् मनुष्य का बाह्य रूप से तथा आन्तरिक रूप से शुद्धिकरण एवं प्रशिक्षण, तथा किताब और हिकमत की शिक्षा भी दी और अदालती फैसले भी किये। साथ ही साथ काफ़िरों के साथ जिहाद जैसे महान दायित्व को भी पूरी तरह निभाया। सारांश यह कि पूरे दीन की आप ने अपने आचार विचार और कथनी करनी से स्पष्ट रूप से व्याख्या कर दी जिस का अनुपालन ईमान वालों के लिए ज़रूरी है।

18. मालूम होता है अल्लाह तआला ने उन्हें अकाल या किसी और आफ़त में मुब्तिला कर दिया था ताकि वे अल्लाह की तरफ़ रुजू हों। लेकिन उन्होंने ने अपने रसूलों को अपशगुन बताया।

19. अर्थात् अपशकुन कहीं बाहर नहीं बल्कि तुम्हारे अपने ही अन्दर मौजूद है। बुरे कर्मों का परिणाम भी बुरा है इस लिए बुरे कर्म के परिणामों का ज़िम्मेदार दूसरों को नहीं ठहराया जा सकता।

20. अर्थात् हम ने क्या अपराध किया है जिस की इतनी कड़ी सज़ा तुम हम को देना चाहते हो क्या समझाने बुझाने का काम करना तथा सदुपदेश देना भी अपराध है?

21. अर्थात् नैतिकता तथा न्याय एवं समानता के सभी तक्राज़ों को तुम ने एक किनारे डाल दिया है और फ़साद एवं उपद्रव पर उतर आये हो ।



और शहर के आखिरी किनारे से एक व्यक्ति दौड़ता हुआ आया। उस ने कहा मेरी जाति के लोगो ! रसूलों की पैरवी करो। पैरवी करो इन लोगों की जो तुम से कोई सिला नहीं माँगते और सीधी राह पर हैं। और मैं क्यों न इबादत करूँ उस की जिस ने मुझे पैदा किया है और जिस की तरफ़ तुम सब लौटाए जाओगे । (अल-कुर्आन)

20. और शहर के आखिरी किनारे से एक व्यक्ति दौड़ता हुआ आया।²² उस ने कहा मेरी जाति के लोगो ! रसूलों की पैरवी करो।²³

وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَى قَالَ يَاقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٠﴾

21. पैरवी करो इन लोगों की जो तुम से कोई सिला नहीं माँगते और सीधी राह पर हैं।²⁴

اتَّبِعُوا مَنْ لَا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُهْتَدُونَ ﴿٢١﴾

22. और मैं क्यों न इबादत करूँ उस की जिस ने मुझे पैदा किया है ²⁵ और जिस की तरफ़ तुम सब लौटाए जाओगे। ²⁶

وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدَ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٢﴾

23. क्या मैं उस को छोड़ कर और माबूद (पूज्य) बना लूँ ? अगर रहमान मुझे तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो न उन की सिफ़ारिश मेरे काम आ सकती है और न वे मुझे छुड़ा सकते हैं।²⁷

أَتَتَّخِذُ مِنْ دُونِهِ إِلَهًا إِنْ يُرِدْنِ الرَّحْمَنُ بِضُرٍّ لَا تُغْنِ عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنْقِذُونِ ﴿٢٣﴾

24. अगर मैं ऐसा करूँ तो मैं खुली गुमराही में हूँगा।

إِنِّي إِذًا لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٢٤﴾

25. मैं तो तुम्हारे रब पर ²⁸ ईमान ले आया तो मेरी बात सुनो।²⁹

إِنِّي آمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمِعُونِ ﴿٢٥﴾

26. इश्राद हुआ जन्नत में दाखिल हो जा, उस ने कहा काश मेरी क़ौम जान लेती।

قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ يَا لَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

27. कि मेरे रब ने मुझे क्षमा कर दिया और मुझे प्रतिष्ठित लोगों में शामिल किया।³⁰

يَا عَاقِرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ﴿٢٧﴾

28. इस के बाद ³¹ हम ने उस की जाति पर आसमान से कोई लश्कर नहीं उतारा और न हम लश्कर उतारा करते हैं।

وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ مِنَ السَّمَاءِ وَكُنَّا مُنْزِلِينَ ﴿٢٨﴾

29. बस एक हौलनाक आवाज़ थी कि सब बुझकर रह गए।³²

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خُمُودُونَ ﴿٢٩﴾

30. अफ़सोस बन्दों के हाल पर ! जो रसूल भी उन के पास आया उस का वे मज़ाक़ ही उड़ाते रहे।³³

يُخْسِرُونَ عَلَى الْعِبَادَةِ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٠﴾

22. अर्थात् उस पूरी बस्ती में एक मोमिन मर्द निकल आया वरना पूरी जाति ने पैगम्बरों की दअवत को रद्द कर दिया था यह व्यक्ति यद्यपि शहर के आखिरी किनारे पर था लेकिन जब पैगम्बरों की दअवत उस तक पहुँच गई तो वह दौड़ते हुए अर्थात् अविलम्ब उस स्थान पर पहुँच गया जहाँ रसूलों और बस्ती वालों के बीच कशमकश बरपा थी।

23. उस ने बस्ती वालों के बीच पहुँच कर सत्य की घोषणा की और अपनी जाति को रसूलों का अनुपालन स्वीकार कर लेने का आहवान किया। ईमान ने उस के अन्दर ऐसी स्पिरिट पैदा कर दी कि वह देखते देखते सत्य का आहवान कर्ता और मुजाहिद बन गया।

24. अर्थात् रसूल अपने चरित्र और अपनी सोच की दृष्टि से बिल्कुल निस्वार्थ और सच्चे हैं और बिल्कुल सही रहनुमाई करने वाले हैं क्यों कि वे सत्यमार्ग पर हैं और उसी मार्ग की तरफ़ तुम्हें बुला रहे हैं।

25. अर्थात् पूजा अर्चना, वा इबादत सृष्टा का ही अधिकार है फिर मैं अपने सृष्टा की ही पूजा क्यों न करूँ।

26. इन शब्दों में उस व्यक्ति ने आखिरत पर अपने दृढ़ विश्वास को प्रकट भी कर दिया और जातिवालों को भी आगाह किया कि तुम सब को अन्ततः उसी के पास जाना है अतः अपने परलोक की चिन्ता करो।

27. इस अवसर पर उस व्यक्ति की ज़बान से रहमान शब्द का निकलना उस का अल्लाह से हार्दिक लगाव को भी ज़ाहिर करता है और इस बात की स्वीकृत भी प्रकट होती है कि वह अतयंत दयावान है। उस दयावान प्रभु को छोड़ कर औरों को पूज्य बनाने का क्या लाभ जिन के बस में कुछ भी नहीं। अगर दयावान प्रभु कष्ट पहुँचाना चाहे तो न इन की सिफ़ारिश कुछ काम आ सकती है और न वे मुसीबत से छुटकारा दिला सकते हैं फिर ये वास्ते और वसीले का क्या अर्थ?

28. अर्थात् अल्लाह जो तुम सब का वास्तविक प्रभु है।

29. अर्थात् मैं ईमान ला कर रसूलों के अनुपालन को स्वीकार करने की जो नसीहत तुम्हें कर रहा हूँ उसे मान लो।

30. प्रसंग से पता चलता है कि उस मोमिन मर्द की बातें लोगों को बेहद बुरी लगीं और उन्होंने ने उसे क्रुल कर दिया। उस ने ईमानी जुर्अत का सबूत दिया था और जाँबाज़ी के जौहर दिखाते हुए अल्लाह की राह में शहीद हो गया था इस लिए उसे तुरन्त जन्नत की खुशखबरी सुना दी गई।

कुर्आन की पुष्टि के अनुसार ईमान वाले अपने शरीर सहित जन्नत में क्रियामत के दिन ही दाखिल होंगे। अलबत्ता इस से पहले आलमे-बर्ज़ख़ (यमलोक) में पाक़ीज़ा रूहों को मान सम्मान और ईनामों से अलंकृत किया जाता है और शहीदों को एक विशेष प्रकार का जीवन मिलता है और वे रिज़्क भी पाते हैं। (सूरह बक्रर: आयत

१५४ आले इमरान आयत १६९) उस मोमिन जाँबाज़ ने भी आलमे-बर्ज़ख़ में पहुँच कर अल्लाह की इसी कृपा पर अपनी प्रसन्नता को प्रकट किया कि मेरे प्रभु ने मुझे क्षमा प्रदान की और मुझे उन लोगों में शामिल किया जिन्हें इनाम और मान सम्मान से अलंकृत किया गया और यह कामना की कि काश मेरी जाति को यह मालूम हो जाता और वह ईमान ले आती। अल्लाह तआला ने उस मोमिन जाँबाज़ की यह मनोकामना कुर्आन के पढ़ने वालों तक पहुँचा दी। अब उन का काम है कि वे इस की रौशनी में अपनी कार्यपद्धति और रवैय्ये का जायज़ा लें।

यह आयत इस बात की दलील है कि मरने के बाद रूहें (आत्माएँ) आलमें बर्ज़ख़ (यमलोक) में जिस को हदीस में क़ब्र कहा गया, पहुँचती हैं और वहाँ उन के साथ उन के कर्मों के लिहाज़ से मामला किया जाता है। रहा यह प्रश्न कि क्रियामत से पहले इनाम या दण्ड कैसे मिलता है? तो वास्तव में क्रियामत के दिन तो मनुष्य को शरीर सहित उठाया जाएगा और उस के कर्मों का हिसाब कर के उस को पूरा पूरा बदला दिया जाएगा। लेकिन क्रियामत से पहले इनाम या दण्ड का अंश भर मिलता है और वह भी केवल रूह को। इस में आश्चर्य की कोई बात नहीं है क्यों कि दुनिया में भी एक हद तक इनाम और दण्ड का मामला सामने आता रहता है। जिन काफ़िर जातियों को अल्लाह तआला ने इस दुनिया में अज़ाब (प्रकोप) नाज़िल कर के विनष्ट किया उन को भी तो क्रियामत से पहले ही सज़ा का एक हिस्सा मिल गया।

31. अर्थात् उस जाँबाज़ मोमिन के इस दुनिया से कूच कर जाने के बाद।

32. अर्थात् उस जाति का विनाश करने के लिए अल्लाह को कोई विशेष तैयारी नहीं करनी पड़ी कि इतनी बड़ी आबादी को दण्ड देने के लिए कोई लश्कर उतारा गया हो और न अल्लाह तआला ने इस से पहले किसी जाति को दण्ड देने के लिए कोई लश्कर उतारा था। बल्कि उस का एक इशारा किसी जाति को विनष्ट करने के लिए काफ़ी हो गया। संभव है यह बिजली की चिंगाड़ रही हो या भूकंप और लावे का धमाका या और कोई असाधारण आवाज़। अल्लाह ही जानता है कि क्या हुआ। बहर हाल उस हौलनाक आवाज़ ने पूरी जाति का इस तरह सर्वनाश कर दिया कि वह राख का ढेर हो कर रह गई।

33. और यह मात्र गुज़री हुई बात नहीं, आज भी अधिकांश लोग ऐसे हैं कि रिसातल और वह्य की बात सुनते ही ग़ैर संजीदा हो जाते हैं और इस को मज़ाक़ बना लेते हैं। मगर एक समय आएगा जब ये लोग अपनी हरकतों पर अफ़सोस करते रह जाएँगे।

बन्दों के हाल पर अफ़सोस का अर्थ यह है कि बन्दों ने स्वयं को ऐसी हालत में पहुँचा दिया है कि उन के लिए हाथ मलने और अफ़सोस करने के सिवा कुछ नहीं।

31. क्या उन्होंने देखा नहीं ³⁴ कि इन से पहले कितनी ही जातियों को हम विनष्ट कर चुके हैं। और वे लोग उन के पास वापस आने वाले नहीं।³⁵

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ
أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٣١﴾

32. और निस्संदेह सब ही हमारे समक्ष उपस्थित किये जाएंगे।³⁶

وَأِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيعٌ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٣٢﴾

33. और एक बड़ी निशानी उन के लिए मुर्दा ज़मीन है। हम ने उस को ज़िन्दा किया ³⁷ और उस से अनाज निकाला जिसे वे खाते हैं।

وَآيَةٌ لَهُمُ الْأَرْضُ الْمَيِّتَةُ أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا
فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ ﴿٣٣﴾

34. हम ने इस में खजूरों और अंगूरों के बाग़ पैदा किये और उस में स्रोत जारी कर दिये।

وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِنْ نَخِيلٍ وَأَعْنَابٍ
وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ﴿٣٤﴾

35. ताकि वे इस के फल खाएँ। यह उन के हाथ का काम नहीं है। फिर क्या वे शुक्र नहीं करेंगे?³⁸

لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٥﴾

36. पाक है वह जिस ने हर क्रिस्म के जोड़े पैदा किये।³⁹ ज़मीन की वनस्पति में से भी, ⁴⁰ उन के अपने अन्दर से भी ⁴¹ और उन चीज़ों के अन्दर से भी जिन को वे नहीं जानते।⁴²

سُبْحَنَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْبِتُ الْأَرْضُ
وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾

37. इन के लिए एक निशानी रात है। हम उस से दिन खींच लेते हैं तो वे अंधेरे में रह जाते हैं।⁴³

وَآيَةٌ لَهُمُ اللَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُمْ مُظْلِمُونَ ﴿٣٧﴾

38. और सूरज अपने ठिकाने की ओर चला जा रहा है।⁴⁴ यह उस हस्ती का बाँधा हुआ हिसाब है जो प्रभुत्वशाली और सर्वज्ञ है।⁴⁵

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَهَا ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٣٨﴾

39. और चाँद कि हम ने उस की मज़िलें नियत कर दी हैं यहाँ तक कि वह खजूर की पुरानी शाख की तरह रह जाता है।⁴⁶

وَالْقَمَرَ قَدَرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ﴿٣٩﴾

40. न सूरज के बस में है कि चाँद को जा पकड़े और न रात दिन से पहले आ सकती है। सब एक एक परिधि में गतिशील हैं।⁴⁷

لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ
وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٤٠﴾

34. “क्या इन्होंने देखा नहीं” अरबी में “क्या इन्होंने गौर नहीं किया” के अर्थ में बोला जाता है। उर्दू में भी यह मुहावरा है।

35. अर्थात् जिस जाति को एक बार मिटा दिया गया वह दोबारा लौट कर दुनिया में नहीं आती। यह एक ऐसी सच्चाई है जिस का इन्कार कोई नहीं कर सकता। इस से आवागमन के सिद्धान्त का भी खण्डन होता है।

36. अर्थात् उन जातियों का अस्तित्व यद्यपि दुनिया में नहीं रहा परन्तु उन की रूहें आलमे-बर्ज़ख (यमलोक) में हैं और क्रियामत के दिन उन को शरीर सहित उठाया जाएगा और अल्लाह के समक्ष अपने कर्मों की जवाबदेही के लिए उपस्थित कर दिया जाएगा। यह बात उन जातियों की हद तक ही नहीं है बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को अल्लाह के समक्ष उपस्थित होना है।

37. मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करने का अर्थ यह है कि ज़मीन सूखी पड़ी थी और पानी बरसाने से हरीभरी हो गई और उस में से पौधे फूट निकले। प्रत्येक व्यक्ति इस बात को अपनी आँखों से देखता है कि मुर्दा ज़मीन बारिश होते ही गल्ला उगलने लगती है। क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं है कि इस के पीछे एक ज़बरदस्त शक्ति और सामर्थ्य रखने वाली हस्ती का हाथ निहित है और क्या इस से यह विश्वास पैदा नहीं होता कि वह मुर्दों को ज़िन्दा करने पर समर्थ है।

38. गल्ला और फल आदि मनुष्य के आहार का सामान हैं और इन आहार सामग्रियों में से कोई चीज़ भी ऐसी नहीं है जो मनुष्य ने पैदा की हो। मनुष्य तो अल्लाह की ही पैदा की हुई बीज ज़मीन में बोता है और ज़मीन अल्लाह के आदेश से अनाज उगल देती है। इसी प्रकार मनुष्य केवल वृक्षारोपण करता है और अल्लाह तआला वृक्ष और बाग पैदा कर देता है जो फलों से लदे हुए होते हैं। परन्तु यह बात कितनी विचित्र है कि अल्लाह की प्रदान की हुई इन नेमतों से लाभ उठाने के बावजूद मनुष्य उस का कृतज्ञ नहीं बनता।

खजूरों और अंगूरों का वर्णन विशेष रूप से इस लिए किया गया कि जिस भूभाग में कुर्आन नाज़िल हुआ उस के आस पास खजूर और अंगूर के बाग पाये जाते थे तथा ये दो फल स्वादिष्ट भी हैं और आहारतत्त्व से परिपूर्ण भी।

39. अर्थात् जोड़े (Pair) होना सृष्टि की विशेषता है क्यों कि जोड़े एक दूसरे के मिलते जुलते होते हैं और एक दूसरे के पूरक भी। लेकिन सृष्टि को सृष्टि जैसा नहीं समझा जा सकता वह हर प्रकार के दोषों से پاک है इस लिए उस के जोड़ का कोई नहीं। वह बिलकुल अद्वितीय और बेजोड़ है।

40. वनस्पति अर्थात् पेड़ पौधों में जोड़ों का अस्तित्व विभिन्न रूपों में पाया जाता है कुछ फलवाले होते हैं तो कोई फल

वाले नहीं होते। कुछ पैदावार का दो तत्वों (भागों) से मिलकर बनना आम तौर से देखने में आने वाली बात है जैसे चना, दालें विभिन्न प्रकार के बीज, बादाम, काजू, पिस्ता आदि। इन के दोनों भाग असानी से अलग किये जा सकते हैं। कुछ वे जिन के पुष्प पराग में नर और मादा की विशेषता पाई जाती हैं।

“Most forest trees in fact, have separate flowers for each sex (some for pollen othens for ovules) but have both types of flowers on every tree.” -(Hugh Johnsons.-Ency. of Trees London, p.15).

और उन में उर्वरण (Fertilization) होने से फल पैदा होते हैं। कोंपलें बीज को फाड़कर उस को दो भागों में विभक्त कर के निकल आती हैं। वनस्पति विज्ञान (Botany) के अनुसार यह संविभाजन (Fragmentation) बहुत सी वनस्पतियों में प्रजनन की प्रक्रिया है। देखिए इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका शीर्षक " Reproductive Systems, Plant Cells." और आधुनिक विज्ञान ने यह खोज भी की है कि पौधों (Plants) में कोशिकाएँ (Cells) होती हैं और प्रत्येक कोशिकाओं में क्रोमोज़ोम्स (Pairs) अर्थात् गुण सूत्र के जोड़े (Pairs) होते हैं। (सूरह रअद नोट १३ भी सामने रहे)

41. अर्थात् पुरुष और स्त्री।

42. अर्थात् अल्लाह ने हर चीज़ का जोड़ा पैदा किया है लेकिन कितनी ही चीज़ें ऐसी हैं जिन के बारे में मनुष्य नहीं जानता कि उन के जोड़ा होने की अन्तस्थिति क्या है। जड़ पदार्थ व निश्चल वस्तुओं के बारे में कौन जानता था कि उन में भी जोड़े होते हैं। लेकिन आधुनिक विज्ञान ने यह खोज की कि अणु और परमाणु (Atom) में एक नाभिक (Nucleous) होता है जो धनात्मक चार्ज (Positive Charge) रखता है और दूसरा इलेक्ट्रान (Electron) जो ऋणात्मक चार्ज (Nagative Charge) रखता है और यह अपने नाभिक के गिर्द चक्कर काटता है फिर नाभिक (Nucleous) भी प्रोटोन (Proton) और न्यूट्रान (Nutron) से मिश्रित (मिला) होता है। (देखिए Mc. Grow Hill Ency. of Science and Technology, New York, Vol. 1 P. 844).

वास्तविकता अपनी सच्चाई के लिए वैज्ञानिक खोजों की मोहताज नहीं है क्यों कि वह एक सर्वज्ञ हस्ती की बताई हुई वास्तविकताएँ हैं जिन में गलती की कदापि कोई आशंका नहीं है परन्तु आधुनिक वैज्ञानिक खोजों से कुर्आन की सत्यता और अधिक स्पष्ट हो जाती है।

43. अर्थात् दिन की सफ़ेद चादर जब हम खींच लेते हैं तो अन्धेरा ही अन्धेरा रह जाता है। मतलब यह कि दिन की रौशनी मानवजाति के लिए अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत और उस की

कुदरत का करिश्मा है। अगर मनुष्य इस पहलू से इस निशानी पर गौर करे जो रोज़ाना प्रकट होती रहती है तो उस के अन्दर एक मात्र खुदा का विश्वास और उस के प्रति कृतज्ञता की भावनाएँ उत्पन्न हो जाएँ।

44. अर्थात् सूरज गतिशील है और उस की यह गति उस के ठिकाने की तरफ़ है। मतलब यह है कि जो राह उस के लिए नियत कर दी गई है उसी राह पर वह चला जा रहा है और अपने आखिरी ठिकाने की तरफ़ बढ़ रहा है। उस का आखिरी ठिकाना क्रियामत की मन्ज़िल है जहाँ पहुँचकर उस की गति रुक जाएगी।

बुखारी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस आयत की यह व्याख्या उद्धृत है कि सूरज जब डूब जाता है तो अर्श (अल्लाह के सिंहासन) के नीचे सज्दा करने के लिए जाता है। (बुखारी किताबुतप्सीर) प्रसंग एवं संदर्भ दलील है कि यहाँ मूल वास्तविकता की ओर ध्यान को मोड़ने के लिए रुपकालंकार (Metaphor) की शैली अपनायी गई है। अभिप्रेत यह स्पष्ट करना है कि सूरज अपनी रौशनी बाँटने के बाद जब नज़रों से ओझल हो जाता है तो वह अल्लाह, सर्वशक्तिमान सत्ता के आधीन ही रहता है और उस के इस विधान का अनुपालन करते हुए जो उस के लिए नियत कर दिया गया है इस बात को स्पष्ट करता है कि वह अल्लाह ही के आगे झुका हुआ है। जो लोग बात को उस के संदर्भ में रख कर समझने का प्रयास नहीं करते वे शब्दों को पकड़ कर बहसें खड़ी कर देते हैं और न समझने के कारण हदीस ही का इन्कार कर बैठते हैं।

जहाँ तक आधुनिक विज्ञान की बात है वह सूरज को गतिशील मानता है। इस के अनुसार सूरज का अक्षीय चक्कर लगभग २७ दिन में पूरा होता है:-

“The sun is a slow rotator,... period of rotation is 26.9 days.” -(The New Ency. Britannica Vol. 17, P. 799 and 801).

रही बात सूरज के कक्षीय चक्कर (Orbital Rotation) की तो इस सिलसिले में अब तक कोई शोधात्मक बात सामने नहीं आ सकी है अलबत्ता वैज्ञानिकों का अनुमान है कि वह अपनी व्यवस्था के साथ २५० किमी, प्रति सेकेन्ड की रफ़्तार से गतिशील है।

“Earth’s sun moves with the system at a speed of about 250 kilometers (160 miles) per second.” -(The New Ency. Britannica Vol. 17, P.833 15th, Edn.).

विज्ञान की ये पुष्टियाँ कुआन के इस बयान से इस हद तक तो मेल खाती हैं कि सूरज गतिशील है परन्तु वैज्ञानिकों की

पुष्टियों में अनुपालन और अन्दाज़ों का भी दखल है। और इसी कारणवश यह प्रश्न उठता है कि यदि सूरज अपने कक्ष (परिधि) में चक्कर काटता है तो ज़मीन और सूरज के फ़ासलों में भी कमी बेशी होती रहनी चाहिए। अलबत्ता यह हो सकता है कि सूरज अपनी सौर व्यवस्था को लिये हुए गति शील हो और यह दूसरी सूरत ही कुआन के बयान से मेल खाती हुई प्रतीत है क्योंकि कुआन साफ़ कहता है कि सूरज अपने ठिकाने की तरफ़ चला जा रहा है और कुआन का बयान मूल वस्तुस्थिति का इज़हार है। यह और बात है कि हमारे ज्ञान और बुद्धि की पहुँच इतनी दूर तक नहीं हो सकती कि उस की अन्तस्थिति हम पर पूरी तरह स्पष्ट हो जाए।

45. अर्थात् सूरज की यह गति किसी संयोग अथवा आकस्मिक घटना का परिणाम नहीं है बल्कि एक महान और सर्वज्ञ हस्ती का बाँधा हुआ हिसाब है। यह योजना ऐसी सुदृढ़ है कि सूरज बिन्दु भर भी उस से विमुखता नहीं बरत सकता। यदि सूरज देव होता जैसा कि बहुदेववादी समझते हैं तो वह एक विशेष गति का पाबन्द हो कर न रहता और यदि वह आकस्मिक घटना के फलस्वरूप अस्तित्व में आ गया होता जैसा कि नास्तिक और अनीश्वरवादी समझते हैं तो उस की गति में ऐसा अनुशासन और उस की व्यवस्था में यह संतुलन होता। फिर क्या सूरज की यह अनुशासित व्यवस्था जिसे हर व्यक्ति अपनी आँखों से देखता रहता है, इस बात का विश्वास नहीं जगाता कि यह सब कुछ एक योजना के अन्तर्गत हो रहा है और यह योजना उसी हस्ती की बनाई हुई है जो सब पर अपना प्रभुत्व जमाए हुए और सब कुछ जानता है।

46. चाँद अपना एक चक्कर एक महीने में पूरा कर लेता है। उस का रूप रोज़ बदलता रहता है। दूज के चाँद से पूर्ण चन्द्रमा बन जाता है और फिर घटते घटते दूज के चाँद के ही रूप में रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी टहनी जो सूख कर टेढ़ी हो जाती है। चाँद के ये रूप कक्षीय गति (Orbital Motion) के फलस्वरूप स्पष्ट होते हैं इस लिए इस की गति को मन्ज़िलों वाले सफ़र कह कर संबोधित किया गया है गोया चाँद रोज़ाना एक मन्ज़िल तय करता हुआ और अपने बदलते हुए रूप को स्पष्ट करता हुआ अपना चक्कर पूरा कर लेता है।

47. अर्थात् सूरज अपनी परिधि से निकलकर चाँद की परिधि में नहीं दाखिल हो सकता और न रात दिन के समय प्रकट हो सकती है। हर एक के लिए जो परिधि क्षेत्र सुनिश्चित कर दिया गया है उस में रह कर उसे गति करना है। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अम्बिया नोट ४२)

और इन के लिए एक बड़ी निशानी यह है कि हम ने इन की नस्ल को भरी हुई नौका में सवार किया। और उन के लिए उसी की जैसी और (नौकाएं) पैदा की जिन पर वे सवार होते हैं। अगर हम चाहें तो इन्हें डुबो दें फिर न इन की कोई फ़रियाद सुनने वाला होगा और न वे बचाए जा सकेंगे। (अल-कुर्आन)

41. और इन के लिए एक बड़ी निशानी यह है कि हम ने इन की नस्ल को भरी हुई नौका में सवार किया।⁴⁸

وَاٰیَةُ لَهُمْ اَتَاٰحْمِلُنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلِّ الْمَشْحُونِ ﴿٣١﴾

42. और उन के लिए उसी की जैसी और (नौकाएं) पैदा की जिन पर वे सवार होते हैं।⁴⁹

وَحَلَقْنَاهُمْ مِّنْ مِّثْلِهِ بَا۟رِكَبُوْنَ ﴿٣٢﴾

43. अगर हम चाहें तो इन्हें डुबो दें फिर न इन की कोई फ़रियाद सुनने वाला होगा और न वे बचाए जा सकेंगे।⁵⁰

وَإِنْ شَأْنُ غَرَقْنَاهُمْ فَلَا صَرِيحَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُونَ ﴿٣٣﴾

44. मगर ये हमारी रहमत है और एक समय तक के लिए लाभ उठाने की सामग्री है।

إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ﴿٣٤﴾

45. और जब इन से कहा जाता है कि डरो उस चीज़ से जो तुम्हारे आगे और पीछे है ताकि तुम पर दया की जाए⁵¹ (तो वे मुँह मोड़ लेते हैं।)

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٣٥﴾

46. और उन के रब की निशानियों में से जो भी निशानी इन के पास आती है ये उस से मुँह फेर लेते हैं।

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٣٦﴾

47. और जब इन से कहा जाता है कि अल्लाह ने जो रोज़ी तुम्हें प्रदान की है उस में से (मोहताज़ों पर) खर्च करो तो ये काफ़िर ईमान लाने वालों से कहते हैं क्या हम उन लोगों को खिलाएँ जिन को अगर अल्लाह चाहता तो खिला देता।⁵² तुम लोग खुली गुमराही में पड़ गए हो।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْطَعِمُ مَنْ لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُ تَبَّانُ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٧﴾

48. और कहते हैं यह (क्रियामत का) वादा कब पूरा होगा ?⁵³ अगर तुम सच्चे हो (तो बताओ)।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾

49. ये लोग बस एक हौलनाक आवाज़ की प्रतीक्षा में हैं जो इन्हें इस हाल में कि परस्पर झगड़ रहे होंगे, आ पकड़ लेगी।⁵⁴

مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَٰحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ﴿٣٩﴾

50. फिर न तो वसीयत कर सकेंगे और न अपने घर वालों के पास लौट ही सकेंगे।⁵⁵

فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤٠﴾

48. इस की नस्ल से तात्पर्य इन्सानी नस्ल है और भरी हुई नौका से तात्पर्य नूह की नौका है जो ईमान वालों से और उन के काम आने वाले जानवरों से भर दी गई थी और जो उस तूफान में जिस ने पूरी इन्सानी आबादी को बर्बाद कर दिया था, सही सलामत चलती रही।

فَانْجَيْنَاهُ وَمَنْ مَّعَهُ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ - (شعرا: ११९)

अर्थ:- अंततः हम ने उस को (नूह को) और उन को जो उस के साथ थे भरी हुई नौका में मुक्ति दी। (शुअरा, ११९)

नौका में जो ईमान वाले सवार थे वे इन्सानी आबादी की कुल पूँजी थे। बाद में उन्हीं की नस्लों से ज़मीन आबाद हुई इस लिए उन लोगों को जो नौका में सवार थे (ذُرِّيَّتُهُمْ) “इन्सानी नस्ल” कहा गया है। अगर अल्लाह तआला उन्हें न बचाता तो ज़मीन पर मनुष्य का अस्तित्व बाक़ी न रहता। यह महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि वह अल्लाह ही है जिस ने मानवता की नौका को पार लगाया और यह उसी की दया है कि इन्सानी नस्ल सुरक्षित रही।

49. पहली नौका हज़रत नूह की थी जो उन्होंने ने अल्लाह के निर्देशानुसार बनाई थी। उस के बाद लोगों ने उसी नौका की भाँति दूसरी नौकाएँ बनाई और आधुनिक युग के बड़े बड़े जहाज़ भी उस मूल ज्ञान का प्रतिबिम्ब हैं जो मनुष्य को पहली नौका से सम्बन्धित अल्लाह तआला ने उसे प्रदान किया था इस लिए ये नौकाएँ और जहाज़ यद्यपि मनुष्य की कारीगरी हैं परन्तु वास्तव में ये अल्लाह की हैं पैदा की हुई सवारी हैं।

50. अर्थात् ये लोग इस बात पर क्यों विचार नहीं करते कि अगर इन लोगों को जब वे नौका में सवार होते हैं दुबाना अथवा जलमग्न कर देना चाहे तो न कोई इन की फ़रियाद को पहुँच सकता है और न वे इस मुसीबत से मुक्ति पा सकते हैं।

आयत में शब्द “सरीख” इस्तेमाल हुआ जिस का मतलब है फ़रियाद को पहुँचने वाला। यही अर्थ ग़ौस शब्द का भी है। यह आयत इस सच्चाई का स्पष्ट रूप से एलान करती है कि अल्लाह के सिवा न कोई ग़ौस है और न कोई नाव को पार लगाने वाला। अतः जिस प्रकार बहुदेववादियों का अपने देवी देवताओं को “ग़ौस” (फ़रियाद सुनने वाला) समझना ग़लत है उसी प्रकार मुसलमानों को अपने पीरों और वलियों को ग़ौस समझना भी

सरासर ग़लत और बहुदेववादी धारणा है।

51. जो तुम्हारे आगे है से मुराद दुनिया का अज़ाब है और जो तुम्हारे पीछे है से मुराद आख़िरत का अज़ाब है। मतलब यह है कि इस बात से डरो कि अल्लाह का अज़ाब तुम्हें आगे और पीछे से घेर न ले।

52. इस आयत में उन काफ़िरो का हाल बयान हुआ है जिन का माया मोह संगदिली की हद तक पहुँच गया था। उन को मोहताजों की हालत पर दया नहीं आती थी जब उन से ईमान वाले कहते कि इन पर खर्च करो तो वे उन की बात का मज़ाक़ उड़ाते हुए कहते कि हम उन को क्या खिलाएँ जिन को अल्लाह ने ही खिलाना पसंद नहीं किया। यही कारण है कि ये मिस्कीन और मोहताज हैं।

उन के इस ऐतिराज़ की ग़लती (नामाकूलिय्यत) बिलकुल स्पष्ट है इस लिए इस का कोई जवाब नहीं दिया गया। मानव स्वभाव भूखों को खाना खिलाने पर उकसाता है और दुखी व्यक्ति को देख कर संदवेदना व्यक्त करने की भावना का उत्पन्न हो जाना एक स्वाभाविक बात है। तथा इस में मनुष्य की परीक्षा भी है कि वह दीन और स्वभाव के इस तक्काज़े को पूरा करता है या नहीं। किन्तु मूर्ख अथवा बुद्धिहीन लोग अपनी ज़िम्मेदारी महसूस करने के बजाएँ अल्लाह और उस के दीन पर ऐतिराज़ करने लगते हैं।

53. मुराद क्रियामत का वादा है।

54. अर्थात् ये अपने बुरे अन्जाम ही को देखना चाहते हैं। क्रियामत जिस की ख़बर उन्हें दी जा रही है वह तो एक हौलनाक आवाज़ के रूप में प्रकट होगी कि लोग ग़फ़लत में पड़े होंगे और इसी बहस में उलझे हुए होंगे कि क्रियामत आयेगी भी या नहीं।

मालूम हुआ कि क्रियामत की बहस दुनिया में चलती ही रहेगी और इन्कार करने वाले इन्कार करते ही रहेंगे यहाँ तक कि क्रियामत अपनी हौलनाकियों के साथ प्रकट हो कर समस्त बहसों का ख़ात्मा कर देगी।

55. अर्थात् क्रियामत इस तरह अचानक आएगी कि लोगों को मोहलत न मिल सकेगी। न किसी को कुछ वसीयत (हिदायत) कर सकने की मोहलत और न अपने घर जाने की मोहलत। जो जहाँ होगा वही ढेर हो कर रह जाएगा।

51. और सूर (नरसिंघा) फूँका जाएगा तो यकायक वे अपनी क़ब्रों से निकल कर अपने रब की तरफ़ दौड़ पड़ेंगे।⁵⁶ ⑤
52. कहेंगे अफ़सोस हम पर ! किस ने हम को हमारे शयनकक्षों से उठाया ?⁵⁷ यह वही है जिस का रहमान ने वादा किया था और रसूलों ने सच कहा था।⁵⁸ ⑥
53. बस एक हौलनाक आवाज़ होगी और यकायक वे सब के सब हमारे समक्ष उपस्थित कर दिये जाएंगे।⁵⁹ ⑦
54. आज किसी पर कोई जुल्म न होगा और तुम्हें वही कुछ बदले में मिलेगा जो तुम करते रहे हो।⁶⁰ ⑧
55. आज जन्नत वाले अपने मशग़लों में प्रसन्नचित होंगे।⁶¹ ⑨
56. वे और उन की पत्नियाँ साए में तख़्तों पर तकिया लगाए हुए होंगे।⁶² ⑩
57. उस में उन के लिए मेवे होंगे और जो कुछ वे चाहेंगे वह उन्हें मिलेगा।⁶³ ⑪
58. उन को सलाम कहलाया जाएगा दयावान रब की तरफ़ से।⁶⁴ ⑫
59. और ऐ मुजरिमों ! आज तुम अलग हो जाओ।⁶⁵ ⑬
60. ऐ आदम की औलाद ! क्या मैं ने तुम्हें हिदायत नहीं की थी कि शैतान की इबादत न करो। वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।⁶⁶ ⑭
61. और यह कि मेरी ही इबादत करो यह सीधा रास्ता है।⁶⁷ ⑮
62. फिर भी उस ने तुम में से बड़ी आबादी को गुमराह कर लिया।⁶⁸ तो क्या तुम बुद्धि नहीं रखते थे ?⁶⁹ ⑯

56. अर्थात् जब क्रियामत का दूसरा सूर (नरसिंधा) फूँका जाएगा तो यकायक समस्त मुद्दे क्रब्रों से अर्थात् ज़मीन के अन्दर से निकल पड़ेंगे और अपनी पेशी के स्थान की ओर चल पड़ेंगे। मनुष्यों की इतनी बड़ी संख्या को पुनर्जीवित करने में अल्लाह तआला को तनिक भी समय नहीं लगेगा।

57. अर्थात् यह लोग जो दूसरे जीवन का इन्कार कर रहे हैं जब क्रब्रों से उठाए जाएंगे तो उन्हें आश्चर्य और अफ़सोस होगा कि हम किस दुनिया में पहुँच गए और किस हाल में उठे हैं। “मरक़द” का मतलब शयनकक्ष है। दूसरा सूर फूँके जाने से पहले बर्ज़ख़ को जो अन्तिम चरण होगा उस में उन की रुहों पर सोने की मुद्रा छायी रहेगी और दूसरा सूर फूँके जाने पर वे जाग उठेंगे और शरीर के साथ उठ खड़े होंगे इस लिए उन्हें आश्चर्य होगा कि हमें नींद से किस ने उठाया।

इस से बर्ज़ख़ (यमलोक) की यातना का खंडन नहीं होता क्योंकि नींद की इस अवस्था में वे बर्ज़ख़ के अन्तिम चरणों में रहेंगे।

58. यह उत्तर जैसा कि इस की स्पिरिट से जाहिर है ईमान वाले देंगे। वे उन इन्कार करने वालों को याद दिलाएंगे कि दयावान प्रभु ने पुनः जीवित करने का जो वादा किया था यह उसी की पूर्ति है और रसूलों ने क्रियामत की जो खबर दी थी वह बिलकुल सच्ची थी और आज का दिन उन की सच्चाई का प्रमाण है। क्रियामत के दिन ईमान वालों का इन्कार करने वालों को जवाब देना सूरह रूम में बयान हुआ है।

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْنَا فِي
كِتَابِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْبَعْثِ فَهَذَا يَوْمُ الْبَعْثِ
وَلَكِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ - (سورة روم: ५१)

अर्थ :- “और जिन लोगों को ज्ञान और ईमान प्रदान हुआ था वे कहेंगे अल्लाह के लेख्य (किताब) में तुम उठाए जाने के दिन (रोज़े महशर) तक रहे तो यह उठाये जाने का दिन है परन्तु तुम जानते न थे।” (रूम ५६)

59. इस हौलनाक आवाज़ को दूसरी जगह डाँट कहा गया है :-

فَأَنصَبْ زَجْرَةً وَاحِدَةً - (نازعات: १३)

अर्थ:- “वह तो बस एक डाँट होगी।” (नाज़िआत १३)

अर्थात् क्रियामत का दूसरा बिगुल क्या होगा एक हौलनाक आवाज़ के रूप में अल्लाह तआला की तरफ़ से एक सख़्त डाँट होगी कि उठो और हाज़िर हो जाओ मेरे समक्ष। इस डाँट के नतीजे में सब मुद्दे पेशी के लिए उठ खड़े होंगे।

60. जब सब मुर्दा इन्सान उठ खड़े होंगे तो घोषणा कर

दी जाएगी कि यह न्याय का दिन है और प्रत्येक व्यक्ति को अपने किये का फल पाना है।

61. अर्थात् क्रियामत के दिन उन लोगों को जो नेक अमल (सुकर्म) करते हैं बदले में जन्नत मिलेगी वहाँ उन के लिए एक से बढ़ कर एक दिलचस्पी का सामान होगा।

62. यह जन्नत की शाहाना तथा ऐश्वर्य एवं प्रसन्नचित जीवन की एक झलक है। जन्नत में ब्रह्मचर्य का नहीं बल्कि वैवाहिक जीवन होगा जो सुकून और राहत का जीवन है। वहाँ धूप की तपिश नहीं होगी बल्कि ठंडक प्रदान करने वाला छायादार वातावरण होगा और बैठने के लिए शाहाना अन्दाज़ के अत्याधिक आरामदायक तख़्त होंगे।

63. अर्थात् खाने के लिए उच्च कोटि के मेवे भी मिलेंगे और जो कुछ वे अपनी पसंद और इच्छा के अनुसार चाहेंगे वह भी उन को मिल जाएगा।

64. दयावान प्रभु की तरफ़ से सलाम, उन के सम्मान और प्रतिष्ठा का प्रतीक भी होगा और इत्मीनान का भी कि यह ज़मानत है इस बात की, कि वे हमेशा सलामत रहेंगे।

65. दुनिया में तो मोमिन और काफ़िर, वंश, परिवार देश जातीयता एवं राष्ट्रीयता आदि के आधार पर आपस में घुलमिल जाते हैं। लेकिन क्रियामत के दिन उन के बीच स्पष्ट अन्तर कर दिया जाएगा। उस रोज़ अक़ीदा और अमल (अर्थात् आस्था और आचरण) के आधार पर ग़िरोह बन्दी होगी। इस लिए काफ़िरों से कहा जाएगा कि तुम्हारा ईनाम वालों से कोई सम्बन्ध नहीं है चाहे वे तुम्हारे अपने नातेदार ही क्यों न हों। तुम्हें उन से बिलकुल अलग हो कर अपने अन्तिम ठिकाने पर (नरक में) पहुँचना है।

66. समस्त मानव आदम की संतान हैं और हज़रत आदम के साथ शैतान की जो घटना घटी थी उस में इन के लिए यह पाठ था कि वे शैतान के इशारों पर न चलें। उन का स्वभाव भी बुराई से बचे रहने पर उभारता था और नबियों के द्वारा अल्लाह तआला ने उन्हें ताकीद की थी कि शैतान का अनुसरण न करें वह इन्सान का खुला दुश्मन है।

“शैतान की इबादत न करो” में इबादत से तात्पर्य शैतान का अनुपालन है जिस में मनुष्य अपने नफ़्स अपनी इच्छाओं की बागडोर शैतान के हवाले कर के उस के आदेशों पर चलने लगता है दूसरे शब्दों में मनुष्य शैतान के अनुपालन का फंदा अपनी गर्दन में डालता है और उस का अनुपालन अल्लाह के अनुपालन की जगह ले लेती है। इस प्रकार मनुष्य अल्लाह का नहीं बल्कि शैतान का गुलाम बन कर रहता है इस लिए उस के अनुपालन को उस की इबादत कहा गया है। यह ऐसी ही बात है जैसे हदीस में धन और लक्ष्मी के पुजारी को दीनार और

दिरहम का बन्दा कहा गया है:-

تَعَسَّ عَبْدُ الدِّينَارِ وَالدِّرْهَمِ

अर्थ :- “दीनार और दिरहम का बन्दा विनष्ट हो।”

और इस की व्याख्या हदीस में इस तरह कर दी गई है कि :-

إِنْ أُعْطِيَ رَضِيَ وَإِنْ لَمْ يُعْطَ لَمْ يَرْضَ - (بخاری کتاب الرقاق)

अर्थ :- “अगर उसे दिया गया तो राजी और न दिया गया तो नाराज़ ” (बुखारी किताबुर्रिकाक़)

अर्थात् माल मिल जाने पर अल्लाह से खुश होना और न मिलने पर उस से नाराज़ होना अल्लाह की बन्दगी नहीं बल्कि दिरहम और दीनार (माल) की बन्दगी है। इस हदीस में भी दिरहम और दीनार का बन्दा उस से गहरे हार्दिक लगाव के चलते कहा गया है। ऐसा लगाव जो अल्लाह से लगाव की जगह ले ले और आदमी उसी का हो कर रह जाए।

फिर शैतान के अनुपालन को उस की इबादत इस कारण भी कहा गया है कि आदमी इसी के बहकावे में आ कर गैरुल्लाह की इबादत (पूजा अनुपालन आदि) करता है इस लिए वह वास्तव में शैतान ही की इबादत है।

अल्लामा आलूसी ने इस की बड़ी अच्छी व्याख्या की है । फ़रमाते हैं :-

“शैतान की इबादत का मतलब उस का अनुपालन है उन बातों में जिन के प्रति वह उन के अन्दर वस्वसा पैदा करता है और उन को शोभायमान बना कर के प्रस्तुत करता है। इस को इबादत इस लिए कहा गया है ताकि इस से दूरी और घृणा बढ़े तथा इस लिए भी कि यह अल्लाह की इबादत के मुकाबले में होती है। और इस से मुराद गैरुल्लाह की इबादत भी हो सकती है। इस की निस्वत और उस का ताल्लुक शैतान की तरफ़ इस लिए कर दिया गया है कि वह इस का आदेश देता है और इस को नज़रों में ख़ुबा देता है अतः यह कहना इसी मुनासिबत से है।” (रुहुलमआनी जिल्द १३ पृष्ठ ४०)

स्पष्ट रहे की अनुपालन को इबादत कहने का मतलब यह नहीं है कि इबादत और अनुपालन बिलकुल समानार्थी शब्द हैं और इन में कोई अन्तर नहीं है। ऐसा समझना अल्लाह की इबादत के मूल्य एवं प्रतिष्ठा को घटाना और दीन में उस का जो स्थान है उस से निम्नस्तर का स्थान उस के लिए सुनिश्चित करना है। इबादत और अनुपालन में जो अन्तर है उस के कुछ स्पष्ट पहलू ये हैं :-

(1) इबादत मानव स्वभाव में निहित एक विशिष्ट इच्छा शक्ति है जो श्रद्धा एवं प्रेम की भावनाओं और लगाव एवं आत्मसमर्पण की मनोभावना का द्योतक है जब कि अनुपालन का

सम्बन्ध इरादा और कर्म से है।

(2) आस्था और ईमान का प्रथम द्योतक इबादत अर्थात् परस्तिश है और इस के बाद अनुपालन अर्थात् आदेशानुसार।

(3) इबादत में दिल का विशिष्ट भाव वांछित होता है जब कि अनुपालन के लिए नियत का दुरुस्त होना काफ़ी होता है।

(4) इबादत के भावार्थ में यद्यपि अनुपालन का भाव शामिल है क्योंकि इबादत भी आदेश के अनुपालन स्वरूप ही किया जाता है। इस के बावजूद इबादत की एक परिधि है और अनुपालन की एक परिधि। फ़ुक़हा ने भी इबादत और मामलात की अलग अलग परिधियाँ निर्धारित की हैं।

(5) इबादत अल्लाह के लिए ख़ास है और इस में ईश भय, ईश-प्रेम, दिल की परहेज़गारी अपने बन्दा होने का एहसास, विनम्रता और अल्लाह के ज़िक्र जैसी चीज़ें मूल रूप से अभिप्रेत होती हैं जब कि अनुपालन के लिए जो आदेश दिए गए हैं उन के द्वारा बन्दों के अधिकारों की अदायगी, समाज का सुधार और सामाजिक न्याय की स्थापना जैसी चीज़ें वांछित होती हैं।

(6) इबादत अल्लाह के सिवा किसी की न करने का आदेश दिया गया है जब कि अनुपालन रसूल का भी करने का आदेश दिया गया है और मुसलमान साहबे-अम्र की भी। इस से इबादत और अनुपालन का अन्तर बिलकुल स्पष्ट है।

(7) ग़ैर शरअी आदेश और क़ानून के अनुपालन के लिए विवशता एक बहाना अथवा एक कारण हो सकता है। परन्तु ग़ैरुल्लाह की उपासना (इबादत) के लिए विवशता भी बहाना नहीं है। सिवाय इस के कि जान को ख़तरा लागू हो और सामयिक रूप से दिखावे की हद तक अवैध तरीक़ा अपनाना पड़े।

(8) इबादत के तौर तरीक़ों में बुद्धि और अनुसंधान का कोई दखल नहीं होता। बल्कि जो तौर तरीक़े अल्लाह की वहय ने निर्धारित किये हैं उन का ज्यों का त्यों अनुपालन किया जाता है परन्तु अनुपालन के बारे में जो आदेश दिये गए हैं उन के औचित्यों, कारणों व मसलहतों की तरफ़ ख़ुद अल्लाह की वहय ने इशारे कर दिये हैं। इस लिए नये परिवेश में इस का क्रियान्वयन (Application) और नई समस्याओं के उभर आने पर इन मसलहतों को सामने रखते हुए अनुसंधान (इज्तिहाद) किया जाता है।

(9) एक मोमिन अज्ञानता के कारण क्षणिक रूप से शैतान के फरेब का शिकार हो कर गुनाह का अपराधी हो सकता है परन्तु उस के इस अमल को शैतान की इबादत नहीं कहा गया है। बल्कि शैतान के स्थायी रूप से अनुपालन को उस की इबादत कहा गया है।

(10) अल्लाह के अनुपालन का सम्बन्ध इस बात से है

कि उस ने क्या आदेश दिये हैं परन्तु इबादत तो इन्सान की वह अन्तर्भावना है जो उस के प्रभु के लिए स्वभाविक रूप से उमड़ पड़ता है।

67. एक अकेले खुदा की इबादत को सिराते-मुस्तक्रीम (सीधा मार्ग) कहा गया है क्यों कि यही मार्ग अल्लाह तक पहुँचता है और यही सफलता की मन्ज़िल है। इसी मार्ग का नाम इस्लाम है।

68. अर्थात् इस ताकीद के बावजूद इन्सानों की भारी संख्या शैतान के पीछे चल पड़ी और उस के इशारे पर गैरुल्लाह को पूज्य बना बैठी। इस प्रकार उन पर हिदायत की राह (सीधी राह) गुम हो गई और वे गुमराही में पड़ गए।

69. अल्लाह तआला ने बुद्धि इस लिए नहीं दी थी कि उस को बेकार और बन्द कर के रखा जाए और खुदा और धर्म के बारे में उस का उपयोग न किया जाये बल्कि इस लिए दी थी कि वे खुदा और धर्म के बारे में पैदा होने वाले महत्वपूर्ण और बुनियादी प्रश्नों का सही जवाब मालूम करने के लिए उस इस

का उपयोग करे। यदि मनुष्य अपनी इच्छाओं के पीछे न चले और अल्लाह की प्रदान की हुई बुद्धि से काम ले तो उस को इन प्रश्नों का सही उत्तर मिलेगा कि इस कायनात का मात्र एक खुदा है और वही पूज्य है। मगर अधिकतर लोगों का हाल यह है कि अपनी इच्छाओं के पीछे चल कर अपने पैतृक धर्म से जुड़े रहते हैं चाहे उन्हें हजारों पूज्य को क्यों न स्वीकार करना पड़े और चाहे उन्हें ईंट पत्थर की पूजा क्यों न करनी पड़े। इन बातों का बुद्धि के विपरीत होना बिल्कुल स्पष्ट है परन्तु उन्होंने ने जब इस मामले में बुद्धि की रौशनी में चलने से इन्कार कर दिया तो उन के बनाउटी पूज्य भी उन को वास्तविक लगने लगे। कुर्आन समस्त मानव को आहवान करता है कि खुदा और धर्म के मामले में सत्य क्या है उस के ज्ञात करने के लिए वे अपनी बुद्धि की रौशनी में विचार करें और नबियों की हिदायत से मदद लें।

स्पष्ट रहे कि अनीश्वरवाद (नास्तिकता) बुद्धिसंगत नहीं है बल्कि वह भी वैसी ही नामाकूल और बुद्धि हीन बात है जैसे कि असंख्या पूज्यों को स्वीकार करना ।



63. यह है वह जहन्नम जिस का तुम से वादा किया जाता रहा।

هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٦٣﴾

64. अब प्रविष्ट हो जाओ इस में उस कुफ़्र की पादाश में जो तुम करते रहे।

إِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٦٤﴾

65. आज हम इन के मुँह पर मुहर लगा देंगे और इन के हाथ हम से बात करेंगे और इन के पाँव गवाही देंगे कि वे क्या करते रहे हैं।⁷⁰

الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٦٥﴾

66. अगर हम चाहें तो इन की आँखें मिटा दें, फिर वे रास्ते की तरफ़ बढ़े। इन्हें कहाँ से दिखाई देगा?⁷¹

وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَىٰ أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنَّىٰ يُبْصِرُونَ ﴿٦٦﴾

67. अगर हम चाहें तो इन्हें इन की जगह ही पर मसख (विकृत) कर दें फिर न ये आगे बढ़ सकें और न पीछे लौट सकें।⁷²

وَلَوْ نَشَاءُ لَسَخْنَاهُمْ عَلَىٰ مَكَاتِرِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ﴿٦٧﴾

68. और जिस को हम लम्बी आयु देते हैं उस को हम खिलकत (संरचना) में औँधा कर देते हैं। फिर क्या वे बुद्धि से काम नहीं लेते।⁷³

وَمَنْ نُعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٨﴾

69. हम ने इस (नबी) को शेर (काव्य) कहना नहीं सिखाया और न यह उस की शान के अनुकूल है। यह तो एक याद देहानी और स्पष्ट कुर्आन है।⁷⁴

وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُّبِينٌ ﴿٦٩﴾

70. ताकि वह उन लोगों को खबरदार कर दे जो ज़िन्दा हैं और काफ़िरो पर हुज्जत क़ायम (तर्क प्रस्तुति सिद्ध) हो जाए।⁷⁵

لِيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٧٠﴾

71. क्या ये लोग ग़ौर नहीं करते कि हम ने अपने हाथों की बनाई चीज़ों में से उन के लिए चौपाये पैदा किये तो वे उन के मालिक हैं।⁷⁶

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِنَّا غِلَافًا يُدِيرُونَ أَيْدِيَهُمْ فَمَا ظَنُّهُمْ أَنَّا نَعْمَاءٌ ﴿٧١﴾

72. और हम ने उन को इन के मातहत कर दिया तो उन में से कोई इन की सवारी के काम आता है और किसी का वे गोशत खाते हैं।

وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ﴿٧٢﴾

73. और इन के लिए उन में दूसरे लाभ⁷⁷ और पेय⁷⁸ भी हैं। फिर क्या वे शुक्र नहीं करेंगे⁷⁹?

وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾

70. क्रियामत के दिन काफ़िरो को विभिन्न चरणों से गुजरना होगा। एक चरण वह आएगा कि उन की ज़बानें उन की इच्छानुसार बात न कर सकेंगी और उन के हाथ पाँव व अंग अंग ज़बान पा कर गवाही देंगे कि वे क्या कर्म करते रहे हैं।

71. अर्थात् ये लोग अल्लाह से क्यों नहीं डरते कि यदि उदाहरणस्वरूप वह उन की आखें ही मिटा दे तो उन का क्या हाल होगा। क्या वे इस योग्य रह सकेंगे कि रास्ते की तरफ़ बढ़ें। जब आँखें ही नहीं रहेंगी तो उन्हें दिखाई कहाँ से देगा? आँखें मिटा देने की कई सूरतें हो सकती हैं। एक सूरत यह भी हो सकती है कि किसी दुर्घटना से अल्लाह तआला दोचार कर दे और आँखें फूट जाए और यह भी हो सकता है कि दृष्टि को छीन लेने वाला कोई प्रकोप आ जाए और अंधा बनाकर रख दे जिस प्रकार हज़रत लूत के घर पर हमला करने वालों की आँखें मिटा दी गई थीं। यदि मनुष्य इस बात पर विचार करे कि इस ब्रह्माण्ड का स्वामी और रचयिता यदि चाहें तो उस की क्षमता उस की शक्ति किसी समय भी छीन सकता है, तो उस के भय से काँप उठे। और जब उस के डर से वह काँप उठेगा तो फिर अपने को उस राह पर डाल देगा जो ईश-भय और परहेज़गारी की राह है।

72. अर्थात् अल्लाह के अज़ाब का एक रूप यह भी हो सकता है कि इन काफ़िरो की सूरतें वह ठीक उस समय बिगाड़ दे जब कि यह राह चल रहे हों और न केवल सूरतें बिगाड़ दे बल्कि पूरी तरह उन को विकृत (बिगाड़) कर के रख दे कि फिर वे आगे क्रदम न बढ़ा सकेंगे और न घर लौट सकेंगे बल्कि रास्ते ही में जहाँ थे वहीं ढेर हो कर रह जाएंगे। इस की सूरत आसमानी अज़ाब (ईश्वरीय प्रकोप) की भी हो सकती है और दुर्घटनाओं की भी जिन में लाशें इस प्रकार निकलती हैं कि हाथ पैर गायब होते हैं और सूरतें ऐसी बिगाड़ जाती हैं कि देखने को मन नहीं करता। आजकल के ज़माने में तो मोटर ट्रेन और हवाई जहाज़ के हृदयविदारक दुर्घटनाएँ आए दिन होती रहती हैं और नसीहतें भी बराबर देती रहती हैं मगर है कोई जो इन दुर्घटनाओं को देख कर अल्लाह से डरे।

73. व्याख्या के लिए देखिए सूरह नहल नोट १०४

यहाँ स्पष्ट करना यह अभिप्रेत है कि जो खुदा मनुष्य की क्षमताओं और शक्ति को बुढ़ापे में क्रमानुसार कर देता है वह यदि चाहे तो किसी समय भी इन क्षमताओं को पूरी तरह छीन सकता है यदि इस पहलू से मनुष्य अपनी क्षमताओं पर विचार करे तो घमंड में लिप्त न हो और खुदा के आगे झुक जाए।

74. यह काफ़िरो के उस आरोप का खण्डन है कि यह व्यक्ति नबी नहीं बल्कि शायर है और कुर्आन शेरों का मज्मूआ (काव्य संग्रह) है फ़रमाया शेर कहना हम ने अपने नबी को नहीं

सिखाया और न शायरी नबी की शान के अनुकूल है। यह कलाम सरासर याददेहानी, नसीहत और स्पष्ट रूप से पढ़ी जाने वाली किताब (कुर्आन) है।

शायरी में काफ़ियाबन्दी और कलाम को मौज़ूअ (काव्यानुसार ठीक) बनाना आवश्यक होता है अतः शायर कलाम को मौज़ूअ बनाने तथा तुक बन्दी करने के लिए दूर दूर की काल्पनिक बातें करने लगता है। कोई नियमबद्ध एवं ढंग की बात प्रस्तुत करने के बजाय यह उलझी बिखरी बातें शायरी द्वारा करने लगता है। गोया शायरी की विशेषता ही काल्पनिक बातें करना है इस लिए यह नबी की प्रतिष्ठा से बहुत गिरी हुई चीज़ है। नबी जो बात भी करता है ठोस अटल और सत्य पर आधारित होती है इस लिए अल्लाह तआला ने नबी को शेर कहना नहीं सिखाया और जो कुर्आन आप पर नाज़िल हुआ उस का शायरी से कोई रिश्ता नहीं है। हर वह व्यक्ति जो इस का अध्ययन करे यह महसूस कर सकता है कि इस में काल्पनिक बातों का कोई दखल नहीं है और न इस में काफ़िये को ठीक करने के लिए तुक बन्दी की गई है। बल्कि यह किताब मनुष्य के भूले हुए सबक की याददेहानी सरासर नसीहत और ऐसा स्पष्ट कलाम है कि प्रत्येक व्यक्ति इस को समझ सकता है और इस से हिदायत और रहनुमाई प्राप्त कर सकता है।

75. अर्थात् जिन के दिल मुर्दा नहीं हुए हैं बल्कि ज़िन्दा हैं वे पैग़म्बर की इस चेतावनी का असर लेंगे जो कुर्आन के द्वारा की जा रही है। रहे वे लोग जिन के दिल बिलकुल मुर्दा हो चुके हैं तो वे कोई असर लेने से रहे अलबत्ता उस पर अल्लाह की हुज्जत ज़रूर कायम हो जाएगी। और वे क्रियामत के दिन यह बहाना न कर सकेंगे कि उन को इस अन्जाम की ख़बर नहीं थी।

76. मतलब यह है कि वे चौपाये जो इन की संपत्ति में आ जाते हैं और जिन से वे भाँत भाँत के लाभ उठाते हैं अल्लाह ही के हाथों की कारीगरी है किसी और के हाथों की नहीं। आयत का भावार्थ बिलकुल स्पष्ट है और इस बहस में जाने की कोई आवश्यकता नहीं कि अल्लाह के हाथों की वास्तविकता क्या है। हमारे लिए यह जानना काफ़ी है कि उस के जैसी कोई चीज़ नहीं। इस लिए सृष्टि के हाथों पर सृष्टा के हाथों को समझा नहीं जा सकता है।

77. चमड़ा ऊन आदि तथा बैलों से ज़मीन जोतने का काम।

78. अर्थात् गाय बकरी और ऊँट के विभिन्न प्रकार के दूध।

79. ये नेमतें जब अल्लाह ही की प्रदान की हुई हैं तो उस पर उस का शुक्र अदा करना अनिवार्य हो जाता है और यह शुक्र तभी अदा हो सकता है जब कि उस को एक मात्र पूज्य और प्रभु मान कर उस की इबादत और उस का अनुपालन किया जाए।

74. किन्तु इन्होंने ने अल्लाह के सिवा और पूज्य बना लिए हैं इस आशा पर कि उन की सहायता की जाएगी।

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ إِلَهَةً لَعَلَّهُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٣﴾

75. वे इन की सहायता नहीं कर सकते बल्कि ये इन के लश्कर की हैसियत से उपस्थित कर दिए जाएंगे।⁸⁰

لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُعْضَرُونَ ﴿٤٤﴾

76. तो इन की बातें तुम्हारे लिए शोक का कारण न हो।⁸¹ हम इन की उन बातों को भी जानते हैं जो ये छिपाते हैं और उन को भी जो ये ज़ाहिर करते हैं।

فَلَا يَخِزُّكَ قَوْلُهُمْ إِنَّهُمْ لَمَعْلَمٌ مَا يُرِيدُونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٤٥﴾

77. क्या मनुष्य ने गौर नहीं किया कि हम ने उस को वीर्य से पैदा किया फिर वह खुला झगड़ालू बन कर उठ खड़ा हुआ।⁸²

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ﴿٤٦﴾

78. वह हमारे लिए मिसालें बयान करता है⁸³ और अपनी पैदाइश को भूल जाता है।⁸⁴ कहता है हड्डियों को कौन ज़िन्दा कर सकता है जब कि वे बोसीदा (जीर्ण) हो चुकी होंगी।

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ﴿٤٧﴾

79. कहो इन को वही ज़िन्दा करेगा जिस ने इन को पहली बार पैदा किया और वह हर सृष्टि को जानता है।⁸⁵

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ﴿٤٨﴾

80. वही है जिस ने तुम्हारे लिए हरे वृक्षों से आग पैदा कर दी और तुम उस से आग जलाते हो।⁸⁶

إِلَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ مِّنْهُ تُوقَدُونَ ﴿٤٩﴾

81. क्या वह जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया इस बात का सामर्थ्य नहीं रखता कि इन जैसों को पैदा करे।⁸⁷ क्यों नहीं ? वह बड़ा पैदा करने वाला, ज्ञान वाला है।⁸⁸

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ﴿٥٠﴾

82. वह जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो उसे आदेश देता है कि हो जा और वह हो जाती है।⁸⁹

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَن يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٥١﴾

83. तो पाक है वह जिस के हाथ में प्रत्येक वस्तु की सत्ता (अधिकार) है और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे।⁹⁰

فَسُبْحَانَ الَّذِي يَبْدَأُ مَكْلُوتٍ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٥٢﴾

80. अर्थात् उन के ये पूज्य उन की सहायता क्या करेंगे उलटे ये अपने पूज्यों के लश्कर की हैसियत से गिरफ्तार कर के अल्लाह के समक्ष प्रस्तुत कर दिए जाएंगे। ये दुनिया में अपने पूज्यों की जय पुकारते रहे। उन के बुत बनाकर और उन के लिए मन्दिर निर्माण कर के एक मात्र पूज्य के भक्तों से उलझते और लड़ते रहे यहाँ तर कि उन पूज्यों के समर्थन में उन से जंगें भी कीं। इस प्रकार दुनिया में ये पूज्यों की फौज बन कर रहे। अतः क्रियामत के दिन इन को इन के पूज्यों के लश्कर की हैसियत से गिरफ्तार कर के अल्लाह के समक्ष उपस्थित कर दिया जाएगा।

81. यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए तसल्ली के शब्द हैं कि इतनी स्पष्ट और बुद्धि संगत बातों को भी समझने के लिए तैयार नहीं हैं तो तुम इन का क्यों शोक मनाओ। वे अपने अन्जाम को पहुँच कर रहेंगे।

82. अर्थात् मनुष्य बना तो है एक तुच्छ पानी की बूँद से परन्तु अपनी बड़ाई का घमण्ड उस के सर में ऐसा समा गया है कि वह अपने रब की बात भी मानने के लिए तैयार नहीं होता और उस का विरोधी बन कर खड़ा हो जाता है। यदि वह अपनी विवशता पर चिंतन करता तो उस के अन्दर अपने रब की बन्दगी और विनम्रता एवं आत्मसमर्पण की भावना उभरती किन्तु वह अपनी हकीकत को भुला कर खुदा के बारे में ऐसी बातें कहता है जो सत्य के विरुद्ध हैं और ऐसी असत्य बातों को ज़बान पर लाना उन को शोभा नहीं देता।

83. अर्थात् अल्लाह को सृष्टि अर्थात् अपने जैसा समझकर उस के बारे में ऐसी बातें कहने लगता है जिस से उस की हस्ती और उस की विशेषताओं में दोष और त्रुटि निकलती है हालाँकि वह हर प्रकार के दोष और त्रुटि से बिलकुल پاک है।

84. अर्थात् अल्लाह के बारे में यह धारणा रखता है कि वह मनुष्य को पुनः जीवित नहीं कर सकता और अपनी पैदाइश को भूल जाता है कि उस को अल्लाह ने पानी की एक तुच्छ बूँद से जीता जागता इन्सान बनाकर खड़ा किया है। जिस हस्ती का यह कारनामा हो उस की शक्ति और उस का समर्थ्य सीमित किस प्रकार हो सकता है?

85. अर्थात् वह अपनी प्रत्येक सृष्टि को तमाम छोटी छोटी तफ़्सीलात के साथ जानता है। उस को हर एक के रचना तत्व का भी ज्ञान है और अन्य समस्त विशेषताओं का भी। फिर उस के लिए मनुष्य को पुनः पैदा करना क्या मुश्किल है?

86. पुराने ज़माने में जब कि लाइटर और माचिस का

आविष्कार नहीं हुआ था, आग पैदा करने का एक साधन वृक्षों की टहनियाँ थीं जिन को एक दूसरे पर रगड़ने से आग पैदा हो जाती थी। अब में उस ज़माने में इस प्रकार के दो वृक्ष पाये जाते थे जिन के नाम मर्ख और अफ़ार थे। एक नर था और दूसरा मादा। अतः अरबी की प्रसिद्ध शब्दकोष लिसानुल अरब में इन के बारे में यह पुष्टि है कि :-

ये मर्ख और अफ़ार हैं और इन दोनों वृक्षों में आग होती है, दूसरे वृक्षों में नहीं। और इन की टहनियों से चक्रमाक बनाए जाते हैं और उन से आग निकाली जाती है। अज़हरी कहते हैं मैं ने यह वृक्ष बियाबान में देखा है।” (लिसानुल अरब जिल्द ४ पृष्ठ ५८९)

हरे भरे वृक्षों से आग की चिंगारी पैदा कर देना अल्लाह की कुदरत का बहुत बड़ा करिश्मा है और यह भी उसी कुदरत का करिश्मा है कि जो लकड़ी आग में जलाई जाती है वह भी हरे भरे वृक्षों से ही प्राप्त की जाती है। पानी भी आक्सीजन और हाइड्रोजन से मिल कर बना होता है। और आक्सीजन आग पकड़ने वाली गैस है। विज्ञान के इन अविष्कारों ने अल्लाह की कुदरत के करिश्मों के कई और मनुने हमारे समक्ष प्रस्तुत कर दिए हैं।

87. अर्थात् जिस मांस और चमड़ी के मनुष्य इस ज़मीन पर पैदा हुए उसी मांस और चमड़े के मनुष्य दोबारा पैदा कर दे।

88. अर्थात् मनुष्यों की इतनी बड़ी संख्या को पैदा कर के वह थक नहीं गया है बल्कि वह अथाह समर्थ्य वाला है और उस के सामर्थ्य में कोई कमी होने वाली नहीं। और वह बड़ा ही ज्ञान वाला है तथा उस से कभी कोई भूल होने वाली नहीं।

89. अर्थात् उस को किसी चीज़ को नए सिरे से पैदा करने के लिए कोई परिश्रम नहीं करना पड़ता बल्कि वह जब इस का इरादा कर लेता है तो जो चीज़ उस के इरादे में होती है उस के लिए वह हो जा कह देता है और उसी समय वह अस्तित्व में आ जाती है।

अल्लाह की सृजन शक्ति के बारे में यह बिलकुल सही बात और सही ज्ञान है जो कुर्आन के माध्यम से मनुष्य को प्रदान किया गया है। इस के बाद उन फ़लसफ़ियाना और उलझी हुई बातों के लिए कोई गुनजाइश बाक़ी नहीं रही जिन में धार्मिक लोग उलझ कर रह गए हैं।

90. यह इस सूरह की आख़िर की आयत है जिस में कुछ शब्दों में तीन महत्वपूर्ण बातें बयान हुई हैं और इस तरह बयान हुई हैं कि दिल में उतर जाती हैं। एक यह कि अल्लाह की हस्ती हर प्रकार के दोषों और त्रुटियों से

बिलकुल पाक है। दूसरी यह कि प्रत्येक वस्तु उसी के आधिपत्य में है और सब पर उसी का शासन चल रहा है। इस कायनात में समस्त अधिकार उसी के हाथ में हैं और तीसरी बात यह कि आखिर कार जब लोगों को पलट कर उसी के समक्ष उपस्थित होना है ताकि वे अपने कर्मों की

जवाबदेही करें और अपने कर्मानुसार अच्छा या बुरा बदला पायें। इस प्रकार तौहीद और आखिरत दोनों विषय इस आयत में सिमट कर आ गए हैं। और इन के अन्दर से रिसालत का तक्काज़ा आप से आप उभर रहा है। कुर्आन के सरल, संक्षिप्त और चमत्कारिक कलाम का यह एक स्पष्ट उदाहरण है।



३७. सूरह अस्साफ़फ़ात

नाम :- सूरह की शुरुआत “वस्साफ़फ़ात” (क़सम है पंक्ति बद्ध फ़रिश्तों की) से हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अस्साफ़फ़ात” है

नाज़िल होने का समय :- आयतों की तरकीब और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह मक्का के मध्य दौर में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- इस सूरह में अल्लाह के एक मात्र पूज्य होने पर एक और अन्दाज़ से रौशनी डाली गई है और इस के समर्थन में “मला-ए-आला” (सर्वोच्च दरबार वालों) की गवाही प्रस्तुत की गई है। और इस वास्तविकता को मानने के फलस्वरूप मिलने वाला इनाम और न मानने के फलस्वरूप मिलने वाले दण्ड को इस तरह प्रस्तुत किया गया है कि भविष्य के हालात की एक झलक आज ही देखी जा सकती है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से १० में अल्लाह के एक मात्र पूज्य होने पर फ़रिश्तों की गवाही प्रस्तुत की गई है और स्पष्ट किया गया है कि शैतानों की पहुँच सर्वोच्च दरबार

वालों (फ़रिश्तों) तक नहीं है। उन्हें इस से दूर रखा गया है।

आयत ११ से ७४ में दूसरे जीवन के हालात बयान किये गए हैं। एक तरफ़ ग़ैरुल्लाह के भक्तों का बुरा अन्जाम बयान किया गया है तो दूसरी तरफ़ अल्लाह के परस्तारों का बेहतरीन अन्जाम।

आयत ७५ से १४८ में कई नबियों का वर्णन है जिन्होंने तौहीद की दअवत को पेश करते हुए तरह तरह के कष्ट झेले और अल्लाह की राह में बहुतेरी कुर्बानियाँ पेश की और अल्लाह तआला ने उन को इस का बेहतरीन सिला प्रदान किया।

आयत १४९ से १७० में बहुदेववादियों की ग़लत धारणाओं एवं मान्यताओं विशेष रूप से फ़रिश्तों के बारे में ग़लत धारणाओं का खण्डन करते हुए फ़रिश्तों का अपना बयान पेश किया गया है।

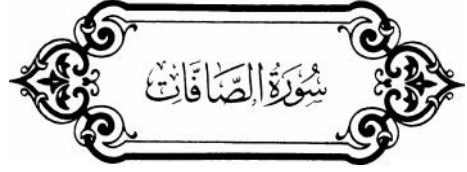
आयत १७१ से १८२ सूरह की आख़िर की आयतें हैं जिन में रसूल के लिए अल्लाह की मदद और अल्लाह के लश्कर अर्थात् रसूल के अनुयायियों के लिए विजय की खुशख़बरी दी गई है।

३७. सूरह अस्साफ़ात

आयतें : १८२

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



1. पंक्तिबद्ध खड़े होने वाले (फ़रिश्तों) की क्रमस।¹
2. और डांटने धुतकारने वालों की।²
3. और (अल्लाह के) ज़िक्र की तिलावत करने वालों की।³
4. तुम्हारा माबूद (उपास्य) एक ही है।⁴
5. वह जो आसमानों और ज़मीन और उन के बीच मौजूद वस्तुओं का रब है और सारे पूरबों का रब।⁵
6. हम ने दुनिया के आसमान को सितारों की शोभा से सजाया है।⁶
7. और प्रत्येक उड़ंड शैतान से उस को सुरक्षित कर दिया है।⁷
8. वे मला-ए-आला (सर्वोच्च दरबार वालों) की बातें नहीं सुन सकते। और हर तरफ़ से उन पर मार पड़ती है।⁸
9. वे धुतकारे जाते हैं⁹ और उन के लिए हमेशा यातना है।¹⁰
10. अगर कोई कुछ उचक ले तो एक चमकता शोला उस का पीछा करता है।¹¹
11. इन से पूछो क्या इन को पैदा करना मुश्किल है या जिन को हम पैदा कर चुके हैं उन को पैदा करना मुश्किल था? ¹² हम ने इन को लैसदार मिट्टी से पैदा किया है।¹³

وَالصَّفَّاتِ صَفًّا ۝۱

فَالرَّجَرِ زَجْرًا ۝۲

فَالْتِّلِيتِ ذِكْرًا ۝۳

إِنَّ إِلَٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝۴

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝۵

إِذَا زَيَّيْنَا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةِ الْكَوَاكِبِ ۝۶

وَحِفْظًا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ تَارِدٍ ۝۷

لَا يَسْمَعُونَ إِلَى الْمَلَأِ الْأَعْمَى وَيَقْدِفُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝۸

دُخُورًا وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝۹

إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝۱۰

فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مَنْ خَلَقْنَا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ

طِينٍ لَّازِبٍ ۝۱۱

1. पंक्तिबद्ध हो कर खड़े होने वालों से तात्पर्य फ़रिश्ते हैं जैसा कि इसी सूरह की आयत १६५ से स्पष्ट है जिस में फ़रिश्तों का यह बयान उद्धृत हुआ है।

وَأَنَّا لَنَحْنُ الصّٰفُّوْنَ

अर्थ:- “ और हम (अल्लाह के समक्ष) पंक्तिबद्ध खड़े रहते हैं।”

और क्रसम गवाही के अर्थ में है और यह अरबी में अच्छे ढंग से अपनी बातें कहने की एक शैली है। ऐसे अवसर पर क्रसम का वह अर्थ नहीं होता जो हम अपनी ज़बान में समझते हैं अर्थात् किसी की महानता को ध्यान में रखते हुए उस की सौगंध खाना। ऐसी सौगंध केवल अल्लाह के लिए खाई जाती है।

आयत में مَلَأَءِ اعْلٰی मला-ए-आला (आसमानी दरबार) की एक झलक प्रस्तुत की गई है। फ़रिश्तों का अल्लाह के समक्ष पंक्ति बद्ध हो कर हाथ बाँधे विनम्रता के साथ खड़े हो जाना इस बात का साक्ष्य है कि अल्लाह ही उन के नज़दीक उपास्य योग्य हैं।

2. अर्थात् फ़रिश्ते शैतानों को डाँटते और फटकारते हैं। वे उन उदंडों से कोई वास्ता नहीं रखते बल्कि उन को लानत मलामत करते हैं।

3. तात्पर्य फ़रिश्ते हैं जो अल्लाह के ज़िक्र में लगे रहते हैं। ज़िक्र के साथ तिलावत का शब्द इस बात की ओर इशारा करता है कि फ़रिश्तों के लिए भी ज़िक्र के कुछ कलिमे (प्रवचन) ख़ास कर दिए गए हैं। जिस प्रकार हमारे लिए اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ के कलमात ख़ास कर दिए गये हैं, ज़िक्र के लिए ये ख़ास प्रवचन जो अल्लाह ही के सिखाए हुए हैं, बड़ा महत्व रखते हैं।

फ़रिश्ते अल्लाह के सिखाए हुए कलिमों (प्रवचनों) के साथ ज़िक्र भी करते हैं इस लिए इस को ज़िक्र की तिलावत कहा गया है और यह ज़िक्र की तिलावत इबादत है।

4. यह है वह बात जिस पर फ़रिश्तों की इबादत को गवाही के तौर पर प्रस्तुत किया गया है। मतलब यह है कि तुम्हारा उपास्य एक ही है और वही है जो आसमानों में फ़रिश्तों का भी उपास्य है।

5. आसमान और ज़मीन के बीच मौजूद वस्तुएँ असंख्या व अथाह हैं। अंतरिक्ष वैज्ञानिकों का कहना है कि केवल इस विशिष्ट मंडली (Galaxy) में जिस में हमारी पृथ्वी है करोड़ों तारे पाये जाते हैं।

“Our Galaxy is a vast system of 100 billion stars.” -(The Cambridge Ency. of Astronomy, London, P. 313).

इतने विशाल ब्रह्माण्ड का सृष्टा और स्वामी कौन है और इस पर किस का शासन चल रहा है? इस प्रश्न का वैज्ञानिक स्तर पर उत्तर इस के सिवा कुछ नहीं हो सकता कि एक खुदा ही पूरी कायनात (संपूर्ण ब्रह्माण्ड) का सृष्टा और स्वामी है और उसी का शासन इस पर स्थापित है।

आयत से यह भी मालूम हुआ कि पूरब एक नहीं बल्कि अनेक हैं और यह बात आधुनिक अंतरिक्ष विज्ञान की रौशनी में समझना मनुष्य के लिए आसान हो गया है। जिस तरह पृथ्वी पर सूरज के उदय और अस्त से पूरब और पश्चिम बन गए हैं उसी प्रकार अन्य उपग्रहों पर भी पूरब और पश्चिम का अस्तित्व है। कुर्आन ने पूरबों का रब कह कर इस वास्तविकता की ओर संकेत कर दिया है कि यह कायनात अत्यंत विशाल है इस को एक पूरब तक सीमित न समझो और इस विशाल ब्रह्माण्ड का एक ही स्वामी है और वह है अल्लाह।

6. अर्थात् आसमान को तारों से इस तरह सजाया है कि उस का मनोरम दृश्य निगाहों के लिए एक आकर्षण बन गया है और देखने वालों को सोचने तथा विचार करने का न्योता देता है कि वह कौन है जिस ने अपनी कुशल एवं सुन्दर कारीगरी का यह नमूना पेश कर दिया है?

7. अर्थात् उदंड शैतान जब आसमान की तरफ़ उड़ान भरते हैं ताकि वे आसमान के ऊपर की ख़बरें लाएं तो उन की पहुँच आसमान तक नहीं हो पाती। उस को शैतानों के घुस आने से बिलकुल सुरक्षित कर दिया गया है।

8. “मला-ए-आला” से तात्पर्य आसमान के ऊपर का दरबार अर्थात् फ़रिश्तों की महफिल है। इस महफिल की कोई बात शैतान सुन नहीं सकते। इस लिए यह समझना बिलकुल ग़लत है कि शैतान आसमान की ख़बरें काहिनों वा ज्योतिषियों तक पहुँचाते हैं और इसी ग़लत धारणा के चलते मक्का के काफ़िरों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के काहिन होने की आशंका व्यक्त किया करते थे। वे कहते थे कि आप आसमान के ऊपर की जो ख़बरें सुना रहे हैं वे शैतान की लाई हुई ख़बरें हैं जिन में झूठ की मिलावट है। इस धारणा के खण्डन में यहाँ यह कहा गया है कि शैतान मला-ए-आला की बातें सुन ही नहीं सकते। उन्हें इस से दूर रखा गया है और ऐसी व्यवस्था रखी गई है कि यदि वे इस सीमा से आगे बढ़ने की चेष्टा करते हैं जो उन की उड़ान के लिए निर्धारित की गई है तो उन पर हर तरफ़ से मार पड़ती है।

9. अर्थात् फ़रिश्ते उन को धुतकारते हैं।

10. अर्थात् आखिरत में तो इन शैतानों के लिए हमेशा का आज़ाब है।

11. शहाब का अर्थ होता है “शोला”। इस से तात्पर्य

सितारों से निकलने वाले शोले हैं। कोई शैतान आसमान की खबरें लाने के लिए सितारों से आगे उड़ान भरने की कोशिश करता है तो सितारों से निकलने वाला शोला उस का पीछा करता है अर्थात् उस की मार उस पर पड़ती है और यह आगे नहीं बढ़ पाता। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिज्र नोट १६)

12. अर्थात् इन्सानों, फ़रिश्तों और जिन्नों को जो हम पैदा कर चुके हैं तो उन को अनास्तित्व से अस्तित्व में लाना कठिन कार्य था या इन्सानों को दोबारा पैदा करना कठिन कार्य है। अगर पहली चीज़ अल्लाह के लिए आसान थी तो दूसरी चीज़ और भी आसान होना चाहिए। इन लोगों के पास इस का क्या जवाब है?

“मन” مَنْ अरबी ज़बान में ذوى العفول बुद्धि रखने वालों के लिए आता है। इस लिए हम ने इस के लिहाज़ से اَمَّنْ خَلَقْنَا “अम्मन खलकना” का अनुवाद “या जिन को हम पैदा कर चुके हैं उन को ” किया है।

13. मनुष्य की संरचना मिट्टी से हुई है और जिस मिट्टी से मनुष्य का ढाँचा बनाया गया है उस को विभिन्न चरणों से गुज़ारा गया है। कुर्आन ने कई जगहों पर इस के विभिन्न चरणों का वर्णन किया है। यहाँ उस की उस स्थिति का वर्णन किया है जब कि पानी से मिल कर मिट्टी लेस दार अर्थात् चिपकने वाली बन गई थी। उसी से मनुष्य का ढाँचा बनाया गया।



यह वही फैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाते थे।
जमा करो जालिमों को और उन के साथियों को और
उन को भी जिन की ये पूजा किया करते थे। अल्लाह
को छोड़ कर (जिन की ये पूजा किया करते थे) फिर
इन सब को जहन्नम का रास्ता दिखाओ। (अल-कुर्आन)

12. तुम ताज्जुब करते हो और ये मज़ाक़ उड़ाते हैं।¹⁴

بَلْ عَجَبْتَ وَيَسْخَرُونَ ﴿١٢﴾

13. और जब इन को नसीहत की जाती है तो वे नसीहत कुबूल नहीं करते।

وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ ﴿١٣﴾

14. और जब कोई निशानी देखते हैं तो उस का मज़ाक़ उड़ाते हैं।

وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخَرُونَ ﴿١٤﴾

15. और कहते हैं यह तो खुला जादू है।¹⁵

وَقَالُوا إِن هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾

16. क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियाँ बन कर रह जाएंगे तो हमें उठा खड़ा किया जाएगा?

عَلَمَآءُ مَتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا إِنَّا لَبَعُوثُونَ ﴿١٦﴾

17. और क्या हमारे अगले बाप दादा को भी?

أَوَابَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ﴿١٧﴾

18. कहो हाँ और तुम अपमानित भी हो जाओगे।¹⁶

قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دَخِرُونَ ﴿١٨﴾

19. वह तो एक ही डाँट होंगी और यकायक वे (क्रियामत का दृश्य) देखने लगेंगे।¹⁷

فَأَمَّا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ﴿١٩﴾

20. कहेंगे हम पर अफ़सोस ! यह बदले का दिन है।¹⁸

وَقَالُوا يَوَيْلَنَا هَذَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿٢٠﴾

21. यह वही फैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाते थे।¹⁹

هَذَا يَوْمُ الْقُصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَكْذِبُونَ ﴿٢١﴾

22. जमा करो ज़ालिमों को और उन के साथियों को और उन को भी जिन की ये पूजा किया करते थे।

أُحْشِرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٢٢﴾

23. अल्लाह को छोड़ कर (जिन की ये पूजा किया करते थे) फिर इन सब को जहन्नम का रास्ता दिखाओ।²⁰

مِنْ دُونِ اللَّهِ فَأَهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْجَحِيمِ ﴿٢٣﴾

24. और इन्हें (ज़रा) ठहराओ, इन से कुछ पूछना है।²¹

وَقَفُّهُمْ إِنَّهُمْ مَسْئُولُونَ ﴿٢٤﴾

14. अर्थात् ऐ पैगम्बर तुम्हें अल्लाह की कुदरत के चमत्कारों को देख कर आश्चर्य होता है कि उस ने अपनी रचना शक्ति के कैसे उच्च कोटि के नमूने पेश कर दिए हैं परन्तु इन लोगों का हाल यह है कि ये अल्लाह की कुदरत का मज़ाक़ उड़ा रहे हैं और कह रहे हैं कि दूसरी बार पैदा करना संभव नहीं।

15. अर्थात् जब इन लोगों के सामने कोई ऐसा तर्क या ऐसी हुज्जत आ जाती है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी होने का प्रमाण प्रस्तुत करने वाली होती है तो ये उस का मज़ाक़ उड़ाने लगते हैं और जब उस का यह प्रभाव देखते हैं कि यह दिलों को जीतती जा रही है तो उस को वे कहते हैं कि यह जादू है जो अपना असर दिखा रहा है। इस प्रकार उन पर न तो कोई नसीहत कारगर होती है और न हुज्जत।

16. अर्थात् तुम इस हाल में उठाए जाओगे कि तुम्हारा कस बल निकल चुका होगा और तुम्हारा घमंड चूर चूर हो चुका होगा तथा तुम अपने आप को बिलकुल बेबस पाओगे।

17. अर्थात् क्रियामत के दिन अल्लाह की अपने बन्दों के लिए एक डाँट होगी कि उठो और हिसाब के लिए मेरे

समक्ष उपस्थित हो जाओ। उस डाँट के फलस्वरूप समस्त मेरे हुए मनुष्य तुरंत उठ खड़े होंगे गोया एक डाँट सारे इन्सानों को जो सोये पड़े थे जगा देगी और हश्र के मैदान में ला खड़ा करेगी जहाँ सब के सामने क्रियामत का मन्जर होगा।

18. वो क्रियामत का दृश्य देख कर अपने हाल पर अफ़सोस करने लगेंगे कि यह क्या हुआ। हम तो हिसाब के दिन को झुठलाते रहे हैं और आज हिसाब का दिन सामने आ गया है। अब हमारी शामत आ गई है।

19. अर्थात् उस समय उन को एहसास दिलाया जाएगा कि तुम तो फैसले के दिन को झुठलाते थे। अब देख लो वह दिन सामने आ गया है।

20. यह आदेश फ़रिश्तों को होगा कि ज़ालिम लीडरों और पेशवाओं को जमा करो और इन के साथियों व अनुयायियों को भी तथा उन बुतों को भी जिन को ये अल्लाह को छोड़ कर पूजते रहे हैं। फिर सब को जहन्नम की तरफ़ ले जाओ।

21. अर्थात् जब वे जहन्नम के निकट पहुँचेंगे तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमाएगा कि इन को ज़रा रोको ताकि इन से पूछा जाए। जो बात पूछी जाएगी वह आगे बयान हुई है।



25. क्या बात है अब तुम एक दूसरे की सहायता नहीं करते? ²²

مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ ۖ

26. बल्कि ये तो आज बड़े आज्ञाकारी बने हुए हैं। ²³

بَلْ هُم الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ۖ

27. और वे एक दूसरे की ओर संबोधित हो कर परस्पर वाद विवाद करेंगे। ²⁴

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۖ

28. कहेंगे तुम ही हमारे पास दायीं ओर से आते थे। ²⁵

قَالُوا إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ۖ

29. वे जवाब देंगे नहीं, बल्कि तुम खुद ईमान लाने वाले न थे।

قَالُوا بَلْ كُنْتُمْ نَوَافِلًا ۖ

30. और हमारा तुम पर कोई ज़ोर न था। तुम स्वयं ही उद्दंड लोग थे। ²⁶

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طَٰغِينَ ۖ

31. आखिरकार हम पर हमारे रब का आदेश पूरा हो कर रहा। ²⁷ हम को (यातना का) मज़ा चखना ही होगा।

فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۖ إِنَّكَ لَدَٰلِيقُونَ ۖ

32. तो हम ने तुम को बहकाया, हम स्वयं बहके हुए थे। ²⁸

فَاغْوَيْنَاكُمْ ۖ إِنَّا كُنَّا غَاوِينَ ۖ

33. इस प्रकार उस दिन वे सब यातना में शरीक होंगे। ²⁹

فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ۖ

34. हम अपराधियों के साथ ऐसा ही करेंगे। ³⁰

إِنَّا كُنَّا لَفَعْلٌ بِالْمُجْرِمِينَ ۖ

35. ये वे लोग थे कि जब इन से कहा जाता अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं तो अहं करते।

إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ۖ

36. और कहते हम एक दीवाने शायर के कहने पर अपने पूज्यों को छोड़ दें। ³¹

وَيَقُولُونَ إِنَّا لَنَرُوكُمُ الْهَيْئَةَ لِشَاعِرٍ مُّجَنُّونٍ ۖ

37. हालांकि वह सत्य ले कर आया था और उस ने रसूलों की पुष्टि की थी। ³²

بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ۖ

38. अब तुम को दुखदायिनी यातना का मज़ा चखना है।

إِنَّكُمْ لَدَٰلِيقُوا الْعَذَابِ الْإِلِيمِ ۖ

22. अर्थात् दुनिया में तो तुम एक दूसरे के सहयोगी बने रहे एक धार्मिक समूह की हैसियत से एकता का प्रदर्शन करते रहे। अब तुम्हें क्या हो गया है कि एक दूसरे से बिलकुल बेतअल्लुक हो गए और इतनी बड़ी मुसीबत में एक दूसरे की मदद नहीं करते। इस प्रश्न का वे कोई उत्तर नहीं दे सकेंगे जिस से उन की बेबसी जाहिर होगी।

23. अर्थात् दुनिया में तो वे अल्लाह के नाफ़रमान बने रहे परन्तु आज उन्होंने अपने को अल्लाह के प्रति पूर्ण समर्पण (Surrender) कर दिया है। अब जो आदेश उन्हें दिया जाता है उस का वे अनुपालन करते हैं। कहाँ गया अब उन की स्वाधीनता का अहं?

24. अर्थात् एक दूसरे का खण्डन-प्रतिष्ठान करते हुए एक दूसरे को दोषी ठहराएँगे। लीडर जनता को और जनता लीडर को। धार्मिक पेशवा अपने अनुयायियों को और अनुयायी अपने पेशवाओं को और शैतान अपने चेलों और चले अपने गुरुओं को।

25. “दायीं ओर” से का अर्थ अरबी मुहावरे के अनुसार ख़ैर और भलाई की राह” से है। मतलब यह है कि हम तुम्हारे हितैषी बन कर आते थे किन्तु सच पूछो तो तुम ने हमारा बुरा चाहा। तुम ने हमें सुहाने ख़्वाब दिखाए और हम तुम्हारी बातों में आ कर इस अन्जाम को पहुँच गए।

26. वे गुमराह करने वाले को उत्तर देंगे कि तुम कब ईमान लाना चाहते थे। अगर ईमान लाना होता तो तुम ले आते हमारा कोई ज़ोर तुम पर नहीं था कि तुम को ईमान लाने से

रोक देते। तुम स्वयं अपनी उदंडता के ज़िम्मेदार हो।

27. अर्थात् उस का यह आदेश कि शैतान के अनुयायियों को जहन्नम का दण्ड भुगतना होगा।

28. वे स्वीकार करेंगे कि हम बहके हुए थे तुम को भी बहकाने का काम कर सकते थे मगर तुम क्यों हमारे बहकाने में आ गये?

29. अर्थात् लीडर और जनता, पेशवा और उन के अनुयायी सब अपनी अपनी गुमराही के ज़िम्मेदार थे इस लिए अज़ाब में भी सब शरीक होंगे।

जनता भी निर्दोष नहीं है। वह क्यों आँखें बन्द कर के गुमराह लीडरों और धार्मिक पेशवाओं के पीछे चलते रहे। और जब उन के पीछे चलते रहे तो जिस गढ़ में वे गिरेंगे उस गढ़ में उन को भी गिरना होगा।

30. इशारा है मक्का के काफ़िरों की तरफ़ कि हम इन अपराधियों को भी जहन्नम की सज़ा देंगे।

31. अल्लाह के रसूल को वह दीवाना शायर कहते थे।

32. अर्थात् कुर्आन का लाने वाला सत्य ले कर आया था। और उस की शिक्षा दूसरे पैग़म्बरों की शिक्षा से जो पहले आ चुके थे भिन्न नहीं थी कि उन के लिए इन्कार का कोई कारण होता। बल्कि उस ने उन रसूलों की सच्चाई का भी एलान किया था। तथा उस की शिक्षाएँ भी उन की शिक्षाओं से बिलकुल मेल खाती थीं तथा वह उन की भविष्यवाणी का साक्षी व प्रमाण बन कर आया था जो उन रसूलों ने उन के बारे में की थीं।



39. और तुम को उसी का बदला दिया जाएगा जो तुम करते रहे हो।³³

وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٩﴾

40. मगर अल्लाह के ख़ास बन्दे इस से सुरक्षित होंगे।³⁴

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾

41. उन के लिए नियत रोज़ी होगी।³⁵

أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ﴿٤١﴾

42. मेवे होंगे³⁶ और उन्हें सम्मानित किया जाएगा।³⁷

فَوَاكِهُ وَهُمْ مُكْرَمُونَ ﴿٤٢﴾

43. नेमत भरी जन्नतों में।

فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٤٣﴾

44. तख़्तों पर आमने सामने बैठे होंगे।³⁸

عَلَى سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٤٤﴾

45. बहती हुई शराब के जाम उन के बीच गर्दिश में होंगे।

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّنْ مَّعِينٍ ﴿٤٥﴾

46. साफ़ स्वच्छ, पीने वालों के लिए स्वाद ही स्वाद।

بَيْضَاءَ لَدَّةٍ لِّشَرِبِينَ ﴿٤٦﴾

47. न उस में कोई हानि होगी और न उस से उन की अक़ल जाती रहेगी।³⁹

لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ﴿٤٧﴾

48. और उन के पास नीची निगाहें रखने वाली और हसीन आँखों वाली औरतें होंगी।⁴⁰

وَعِنْدَهُمْ قُصِرَّتْ الْظُرُوفُ عَيْنٌ ﴿٤٨﴾

49. गोया वे अन्डे हैं छिपाये हुए।⁴¹

كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مُّكْنُونٌ ﴿٤٩﴾

50. फिर वे एक दूसरे से सम्बोधित हो कर हाल मालूम करेंगे।

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٥٠﴾

51. उन में से एक व्यक्ति कहेगा कि मेरा एक साथी था।

قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ﴿٥١﴾

52. जो कहा करता था क्या तुम भी पुष्टि करने वालों में से हो?⁴²

يَقُولُ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ ﴿٥٢﴾

53. क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियाँ बन कर रह जाएंगे तो हमें (उठाकर) बदला दिया जाएगा?

إِذَا أُمِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْدُيُونَ ﴿٥٣﴾

33. अर्थात् तुम पर कोई ज्यादाती नहीं की जाएगी बल्कि तुम्हारे आमाल का ठीक ठीक बदला तुम्हें दिया जाएगा।

34. खास बन्दों से तात्पर्य वे लोग हैं जिन को अल्लाह तआला ने अपनी इबादत और बन्दगी के लिए चुन लिया। उन पर शैतान का कोई दाँव चल न सका। और वे अल्लाह की तौफ़ीक़ से उसी के हो कर रहे। ऐसे लोग क्रियामत के दिन जहन्नम की यातना से सुरक्षित होंगे और न केवल यातना से सुरक्षित होंगे बल्कि जैसा कि आगे बयान हुआ है क़ीमती इनामों से अलंकृत किये जाएंगे।

ध्यान रहे कि इन इनामों का वादा नाम मात्र के दिखावटी मुसलमानों के लिए नहीं किया गया है बल्कि उन लोगों से किया गया है जो अपने ईमान और कर्म से वास्तव में अल्लाह के बन्दे सिद्ध होंगे।

35. अर्थात् उन्हें अपनी रोज़ी की कोई चिन्ता नहीं करनी होगी बल्कि उन्हें इत्मीनान होगा कि उन के लिए रोज़ी सुनिश्चित है जो सदा उन्हें मिलती रहेगी।

36. मेवों का वर्णन यहाँ उदाहरणस्वरूप हुआ है वरना अन्य जगहों पर खाने की दूसरी उत्तम चीज़ों का भी वर्णन हुआ है। जन्नत में शरीर को जीवित रखने के लिए आहार की आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि उन्हें ऐसे शरीर मिल चुके होंगे जिन में कोई दोष उत्पन्न होने वाला नहीं। वहाँ खाना पीना, स्वाद और आनन्द प्राप्त करने के लिए होगा। इसी लिए मेवों का वर्णन विशेष रूप से हुआ है।

37. अर्थात् उन्हें केवल खाने पीने की ही वस्तुएँ नहीं मिलेंगी बल्कि सम्मान, प्रतिष्ठा एवं बुलन्दी भी प्राप्त होगी।

38. जन्नत में बैठने के लिए शाहाना तख़्त होंगे और जन्नत वाले एक दूसरे के सामने इस तरह बैठेंगे कि जैसे प्रेम और सद्भाव की सभाएँ हैं।

39. अर्थात् जन्नत की शराब दुनिया की शराब से बिल्कुल भिन्न होगी। उस से न तो सर दर्द या किसी और प्रकार का शारीरिक दोष उत्पन्न होगा और न अक़ल ही अपने ठिकाने से हटेगी। वह हर प्रकार के दोषों से پاک साफ़ सुथरी और अत्यंत स्वादिष्ट शराब होगी। जन्नत के इस पेय को शराब इस लिए कहा गया है कि उस से एक विशेष प्रकार का स्वाद और आनन्द प्राप्त होगा जिस के सामने दुनिया की शराब कुछ भी नहीं। मतलब यह कि दोनों के नाम तो समान हैं लेकिन अपने अन्तर्भाव एवं प्रभाव की दृष्टि से दोनों में बहुत बड़ा अन्तर है।

40. अर्थात् उन की संगिनी के रूप में ऐसी लाजवंती पत्नियाँ होगी जो हया और लाज के मारे अपनी निगाहें नीचे किये हुए होंगी “अैन” का मतलब बड़ी आँखों वाली के हैं जो सुन्दरता का प्रतीक है।

41. उन की सफेद रंगत और उन के सुरक्षित, कौमार्य एवं छिपे होने को उन अंडों से उपमा दी गई है जिन को परिन्दे अपने परो के नीचे छिपाये हुए हों। अज्ञानता काल के अरबी शायर इमराऊलक़ैस ने भी परदा नशीन कुमारियों के लिए यही उपमा इस्तेमाल की है।

وَبَيْضَةٌ خَدْرٍ لَا يُرَامُ خَبَاءُهَا

42. अर्थात् क्या तुम भी क्रियामत और दूसरे जीवन पर विश्वास रखते हो?



54. इर्शाद होगा कि क्या तुम उसे झाँक कर देखना चाहते हो ?⁴³

قَالَ هَلْ أَنْتُمْ مُظْلِعُونَ ⑤०

55. वह झाँक लेगा तो देखेगा कि वह जहन्नम के बीच में है।⁴⁴

فَاطْلَعَ قَرَاهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ⑤१

56. वह कहेगा अल्लाह की कसम तू तो मुझे तबाह ही कर देने वाला था।

قَالَ تَاللَّهِ إِنْ كِدْتَ لَتُرْدِينَ ⑤२

57. अगर मेरे रब का अनुग्रह (फ़ज़ल) न होता तो मैं भी उन लोगों में से होता जो पकड़ कर लाए गए हैं।⁴⁵

وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ⑤३

58. क्या यह बात नहीं है कि अब हम मरने वाले नहीं हैं ?⁴⁶

أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ⑤४

59. अतः पहली मौत थी जो आ चुकी⁴⁷ और न हमें कोई यातना दी जाएगी।⁴⁸

إِلَّا مَوْتَنَا الْأُولَى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ⑤५

60. निस्संदेह यही बड़ी सफलता है।⁴⁹

إِنَّ هَذَا هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ⑤६

61. ऐसी ही सफलता के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिए ?⁵⁰

لِيُنْشِلَ هَذَا فَلَيعْمَلِ الْعَامِلُونَ ⑤७

62. “ यह आवभगत अच्छी है या ज़क्कूम का वृक्ष ? ”⁵¹

أَذَلِكَ خَيْرٌ نُزْلاً أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ ⑤८

63. हम ने उस को ज़ालिमों के लिए फ़ितना बनाया है।⁵²

إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِلظَّالِمِينَ ⑤९

64. वह ऐसा वृक्ष है जो जहन्नम की तह से निकलता है।⁵³

إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ⑥०

65. उस के खोशे (पल्लव) ऐसे हैं जैसे शैतानों के सर।⁵⁴

طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيَاطِينِ ⑥१

66. वे उस को खाएंगे और उस से पेट भरेंगे।⁵⁵

فَأَنَّهُمْ لَا يَكُونُونَ مِنْهَا قَائِلُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ⑥२

67. फिर उस पर उन को पीने के लिए गर्म पानी दिया जाएगा।⁵⁶

ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا شَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ ⑥३

43. उस की बात अभी पूरी नहीं होने पायेगी कि अल्लाह इर्शाद फ़र्माएगा कि क्या तुम उसे झाँक कर देखना चाहते हो अगर देखना चाहते हो तो तुम सब को इस का अवसर प्राप्त है।

44. वह व्यक्ति ज्यों ही झाँक कर देखेगा तो उस का साथी उसे जहन्नम के बीच दिखाई देगा।

इस से पता चला कि जन्नत वाले आगर जहन्नमियों को देखना चाहेंगे तो आसानी से देख सकेंगे। इस के लिए दूरबीन आदि की आवश्यकता नहीं होगी।

45. वह जन्नती व्यक्ति अल्लाह का शुक्र अदा करेगा कि यह उसी का फ़ज़ल (अनुग्रह) हुआ कि मैं अपने साथी के बहकाने में नहीं आया। आगे चल कर घटित होने वाली इस घटना के बारे में अल्लाह तआला ने इस लिए बयान फ़रमा दिया है ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपने साथी के मामले में होशियार रहे। यदि वह आखिरत का इन्कारी है तो उस के बहकाने में न आए।

46. फिर वह जन्नती व्यक्ति मजलिस वालों से संबोधित हो कर कहेगा कि यह सच्चाई नहीं है कि जन्नत में हमें हमेशा हमेशा का जीवन मिल गया है और अब मौत से कभी वास्ता पड़ने वाला नहीं। इस प्रकार वह प्रश्नों के रूप में अपने विश्वास को व्यक्त करेगा।

47. अर्थात् दुनिया में हमें जो मौत आई वह आखिरी थी।

48. जन्नत अल्लाह तआला का अनंत इनाम होगा इस लिए यातना और कष्ट का प्रश्न पैदा ही नहीं होता।

49. अर्थात् ऐसी सफलता कि इस से बढ़ कर किसी सफलता की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

50. उस जन्नती व्यक्ति का बयान ऊपर समाप्त हुआ। अब यह अल्लाह तआला की तरफ से लोगों को आमदा किया जा रहा है कि वे इसी सफलता की प्राप्ति के लिए प्रयास करें जो उन्हें जन्नत की ओर ले जाने वाले हों।

51. ज़क्रूम एक अत्यंत कड़वे कसैले वृक्ष का नाम है जो अरब में तिहामा के इलाक़े में पाया जाता था। जहन्नम में जो अत्यंत कड़वा और जहरीला फल खाने को मिलेगा उस का कुछ अन्दाज़ा ज़क्रूम के वृक्ष से हो सकता है।

52. अर्थात् ज़क्रूम का वृक्ष ज़ालिमों के लिए आजमाइश का कारण है। होना तो यह चाहिए कि वे इस दुखदायिनी यातना की कल्पना ही से काँप उठें लेकिन वे मज़ाक़ उड़ाएंगे कि कहीं आग में वृक्ष उगता है।

53. अल्लाह की कुदरत से यह कदापि असंभव नहीं कि वह जहन्नम में वृक्ष पैदा कर दे। और उस के बारे में जो स्पष्टीकरण इन आयतों में किया गया है उस से विश्वास और सुदृढ़ हो जाता है। जो वृक्ष जहन्नम की तह से निकलता हो वह कैसा भयावह होगा और खाने वालों पर क्या आफ़त लाएगा।

54. शैतान को यद्यपि इन्सानों ने नहीं देखा। किन्तु उस की भयानक कल्पना मास्तिष्क में मौजूद है। इसी लिहाज़ से ज़क्रूम के खोशों को शैतानों के सरों की उपमा दी गई है। अर्थात् देखने में अत्यंत ही बीभत्स एवं कुरूप होंगे।

55. दोज़ख़ (नरक) वाले जब भूख से बेहाल होंगे तो उन्हें अपना पेट ज़क्रूम के कड़वे कसैले फलों से भरना होगा। यह वास्तव में उन के कुकर्मों के फल होंगे जो उन्हें खाने के लिए मिलेंगे।

56. ज़क्रूम का फल खाने के बाद पीने के लिए उन को गर्म पानी मिलेगा।



68. फिर उन की वापसी जहन्नम की आग की तरफ़ होगी।⁵⁷

ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ إِلَى الْجَحِيمِ ۝٦٨

69. इन्हों ने अपने बाप दादा को गुमराह पाया।

إِنَّهُمْ أَقْوَمُ آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ۝٦٩

70. और ये उन ही के पद चिन्हों पर दौड़ रहे हैं।⁵⁸

فَهُمْ عَلَىٰ أَثَرِهِمْ يُهْرَعُونَ ۝٧٠

71. इस से पहले गुज़रे हुए लोगों में भी अधिकतर लोग गुमराह हुए थे।⁵⁹

وَلَقَدْ ضَلَّٰ قَبْلَهُمُ الْكَثْرَةُ الْأَوَّلِينَ ۝٧١

72. और हम ने उन में ख़बरदार करने वाले रसूल भेजे थे।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُّنْذِرِينَ ۝٧٢

73. तो देख लो उन लोगों का क्या अन्जाम हुआ जिन्हें ख़बरदार किया गया था।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ۝٧٣

74. इस अन्जाम से अल्लाह के ख़ास बन्दे ही सुरक्षित रहे।⁶⁰

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝٧٤

75. और नूह ⁶¹ ने हमें पुकारा था, तो क्या ही ख़ूब हैं हम पुकार का जवाब देने वाले।⁶²

وَلَقَدْ نَادَيْنَا نُوْحًا فَلَنَعَمْ الْمُجِيبُونَ ۝٧٥

76. हम ने उस को और उस से सम्बन्धित लोगों को सख़्त तकलीफ़ से मुक्ति दी।⁶³

وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۝٧٦

77. और उसी की नस्ल को बाक़ी रखा।⁶⁴

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ۝٧٧

78. और बाद वालों में उस के लिए ज़िक्रे-जमील (प्रशंसा व सराहना) बाक़ी रखा।⁶⁵

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝٧٨

79. सलाम है नूह पर दुनिया वालों में।⁶⁶

سَلَامٌ عَلَىٰ نُوْحٍ فِي الْعَالَمِينَ ۝٧٩

80. हम सुकर्मियों को इसी तरह बदला दिया करते हैं।⁶⁷

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝٨٠

81. निस्संदेह वह हमारे मोमिन बन्दों में से था।

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝٨١

82. फिर दूसरों को हम ने डुबो दिया।⁶⁸

ثُمَّ أَخْرَقْنَا الْآخَرِينَ ۝٨٢

57. जहन्नम अत्यंत विशाल होगी और उस के विभिन्न भाग विभिन्न सजाओं के लिए खास होंगे। अपराधियों को जहन्नम ही के एक भाग में खाने के लिए ज़क्रूम और पीने के लिए गर्म पानी मिलेगा। इस के बाद जहन्नम के उस समूह में जहाँ प्रचण्ड रूप से आग भड़क रही होगी और जिस का नाम जहीम है, उन्हें वापस लौटना होगा।

58. यह बात मक्का के बहुदेववादियों के बारे में कही जा रही है। अर्थात् बावजूद इस के कि उन के बाप दादा गुमराह थे उन के अंधानुकरण का जुनून उन पर ऐसा सवार है कि उन के पदचिन्हों पर तेज़ी के साथ चले जा रहे हैं। पैतृक धर्म एवं धारणा के अंधानुकरण का जुनून ऐसा होता है कि आदमी सूझ बूझ और बुद्धि से काम नहीं लेता।

59. लोगों की गुमराही का मौलिक कारण यही है कि वे समझते हैं कि जो धर्म और जो संस्कृति प्राचीन काल से चली आ रही है वह बिलकुल सही है और उसी से संबद्ध रहना चाहिए। इसी आधार पर धार्मिक वर्ग अस्तित्व में आ गए हैं। हालाँकि पिछले समयों में भी मनुष्यों की भारी संख्या गुमराह ही रही है। न उन के पास सत्य की कोई हुज्जत व तर्क था और न इन के पास है। सत्य का प्रकाश तो दलील और तर्क के द्वारा प्राप्त होता है न कि अंधानुकरण के द्वारा।

60. व्याख्या के लिए देखिए नोट ३४।

61. नूह अलैहिस्सलाम के वृत्तांत का वह भाग यहाँ प्रस्तुत किया गया है जिस से स्पष्ट होता है कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने उन्हें कष्ट से मुक्ति दी जो उन की जाति उन्हें सत्य के विरोध में पहुँचा रही थी। और उस अज़ाब से भी किस तरह बचा लिया जो उन की जाति पर अंततः आया। तथा उन को किस तरह अल्लाह तआला ने इनामों से अलंकृत किया। (हज़रत नूह के बारे में विस्तार के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट ९५)

62. इशारा है उस दुआ की तरफ़ जो नूह अलैहिस्सलाम ने अपनी जाति में एक लम्बा समय गुज़ारने तथा उन पर हुज्जत क़ायम करने के बाद की थी जिस का वर्णन सूरह क्रमर आयत १० में हुआ है। अल्लाह ने उन की दुआ स्वीकार की। वह इस बात का स्पष्ट उदाहरण है कि उस के सच्चे बन्दे जब उस को पुकारते हैं तो वह न केवल उन की पुकार को सुनता है बल्कि बेहतरीन तरीक़े पर उस का जवाब देता है। इस में सत्य मार्ग में

सताये जाने वालों के लिए तसल्ली का पूरा सामान मौजूद है।

63. उस के “अहल” (सम्बन्धियों) से मुराद वे लोग हैं जो हज़रत नूह पर ईमान लाए थे और “क्रब्रे-अज़ीम” से तात्पर्य वे सख्त तकलीफ़ें हैं जो काफ़िर क़ौम की तरफ़ से उन्हें पहुँच रही थीं तथा वह तूफ़ान भी जो उस क़ौम पर आया।

64. तूफ़ान ने सारी इन्सानियत को समाप्त कर दिया था और केवल वही लोग बचा लिए गए थे जो हज़रत नूह के साथ नाव में सवार थे तथा ईमान ला चुके थे। उन में अधिकतर उन के घर के सदस्य ही थे और बाद में हज़रत नूह की ही संतान से जो बचा लिए गए थे इन्सानी नस्ल का सिलसिला चला और जातियाँ अस्तित्व में आईं। बाइबिल के अनुसार हज़रत नूह के तीन बेटों साम, हाम और याफ़स से इन्सानी नस्ल का सिलसिला चला। साम से अरब, रोम आदि सैमेटिक (Sametic) जातियाँ अस्तित्व में आईं। हाम से हबशी, मिस्री आदि और याफ़स से तुर्क मुग़ल और याज़ूज माज़ूज आदि। (वल्लाह आलम)

65. नूह अलैहिस्सलाम को अल्लाह की तरफ़ से जो सिला मिला वह एक तो वह है जिस का वर्णन इस से पहले की आयत में हुआ। अर्थात् उन्हीं की औलाद से इन्सानी नस्ल का सिलसिला चला और दूसरा सिला यह कि बाद के लोगों में उन की प्रशंसा और सराहना बाक़ी रखी गई। विशेष रूप से कुर्आन पर ईमान लाने वाले न केवल अच्छे शब्दों के साथ उन को याद करते हैं बल्कि कुर्आन में कई जगहों पर जिस शान से उन का वर्णन हुआ है वह बार बार उन की ज़बान पर आता रहता है और वे उन से लगाव और प्रेम का भाव प्रकट करते रहते हैं।

66. यह तीसरा सिला है जो उन को दुनिया में मिला कि वे सलामती से नवाज़े गए। उन के दुश्मन उन का कुछ बिगाड़ न सके। दुनिया की बड़ी बड़ी मिल्लतें बड़े बड़े समुदाय यहूदी, ईसाई और मुसलमान उन का आदर करते हैं और ईमान वालों के दिल से उन के लिए दुआएँ निकलती हैं और उन पर वे सलाम भेजते हैं। “सलामुन अला नूह”

67. अर्थात् जो लोग अच्छे कर्म करते हैं उन को अल्लाह उन के कर्मानुसार दुनिया में भी अच्छा सिला देता है।

68. अर्थात् जिन्होंने ने कुफ़्र किया था उन सबको डूबो दिया। व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १०३

83. और उसी की जमाअत में से इब्राहीम था।⁶⁹

وَرَانَ مِنْ شَيْعَتِهِ لِابْرَاهِيمَ ۝۸३

84. जब कि वह अपने रब के समक्ष शुद्ध हृदय ले कर आया।⁷⁰

إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۝۸४

85. जब उस ने अपने बाप और अपनी जाति से कहा कि ये तुम किस चीज़ की पूजा करते हो ?⁷¹

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ۝۸५

86. क्या अल्लाह को छोड़ कर मन गढ़ंत पूज्य चाहते हो ?⁷²

أَفِئْكَ إِلَهَةً دُونَ اللَّهِ تُرِيدُونَ ۝۸६

87. और रब्बुलआलमीन (सारे जहान के रब) के बारे में तुम्हारा क्या गुमान है ?⁷³

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝۸७

88. फिर उस ने एक नज़र तारों पर डाली।⁷⁴

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ۝۸८

89. और कहा मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं है।⁷⁵

فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ۝۸९

90. तो वे लोग उस को छोड़ कर चले गए।

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ۝९०

91. फिर वह चुपके से उन के पूज्यों के पास गया और कहा तुम लोग खाते नहीं।⁷⁶

فَرَاغَ إِلَى إِلَهِهِمْ فَقَالَ آلَا تَأْكُلُونَ ۝९१

92. क्या बात है बोलते भी नहीं।⁷⁷

مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ۝९२

93. फिर उन पर टूट पड़ा और सीधे हाथ से उन पर चोटें लगाई।⁷⁸

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ۝९३

94. लोग उस के पास दौड़ते हुए आए।⁷⁹

فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزْفُونَ ۝९४

95. उस ने कहा क्या तुम लोग अपनी ही तराशी हुई चीज़ों को पूजते हो ?⁸⁰

قَالَ تَعْبُدُونَ مَا تَنْحِتُونَ ۝९५

96. हालाँकि अल्लाह ने ही पैदा किया है तुम को भी और उन चीज़ों को भी जिन को तुम बनाते हो।⁸¹

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ۝९६

97. उन्होंने (आपस में) कहा इस के लिए एक आग का अलाव बनाओ और इस को दहकती आग में झोंक दो।⁸²

قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ ۝९७

69. अर्थात् इब्राहीम नूह ही के दीन और समुदाय से सम्बन्ध रखते थे। जो दीन नूह का था वही इब्राहीम का था और उसी समूह के सदस्य थे जो नूह का अनुयायी था।

70. अर्थात् इब्राहीम ने अपने को अल्लाह के समक्ष इस प्रकार प्रस्तुत कर दिया कि उन का दिल बहुदेववाद और अपराध की गन्दगियों से बिलकुल पाक था। प्रकृति ने जो स्वस्थ हृदय उन को प्रदान किया था उस के स्वास्थ्य को उन्होंने बाक़ी रखा और होश संभालते ही उन्होंने अपने रब की दास्ता स्वीकार की।

71. यह उस समय की बात है जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम नबी नियुक्त किये गए थे। उन के बाप आजर बुत परस्त थे और उन की जाति भी बुत परस्ती थी। और बुत परस्ती बदतरीन शिर्क, खुली गुमराही और संगीन जुर्म है। इस लिए उन्होंने ने अपनी दअवत की शुरुआत इस प्रकार की कि बुत परस्ती पर करारा प्रहार किया। उन्होंने ने उन्हें सोचने तथा विचार करने का निमंत्रण दिया कि जिन चीज़ों को तुम पूजते हो क्या वास्तव में वे पूजने के योग्य और अधिकारी हैं?

72. अल्लाह ही एक वास्तविक पूज्य है। उस के सिवा जिस को भी पूज्य बना लिया जाए वह झूठ और मनगढ़न्त पूज्य ही होगा।

73. असंख्या पूज्यों की धारणा आदमी इस भ्रम में लिप्त हो कर बना लेता है कि कायनात का रब न तो हमारे मुख से सीधे सुनेगा और न फ़रियादों को पूरा करेगा और न कायनात की व्यवस्था वह अकेले चला रहा है और न ही वह अकेला पूज्य है। बल्कि ईश अधिकारों को उस ने बाँट रखा है। और इसी आधार पर दूसरे भी पूज्य हैं। यह सारे जहान के रब के साथ सरासर बदगुमानी है और जो शिर्क और बुत परस्ती अपनाता है वह निश्चित रूप से रब्बुलआलमीन की अवहेलना तथा निरादर करता है और उस से बदगुमान होता है। यही एहसास दिलाने के लिए इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बुत परस्तों से प्रश्न किया कि बताओ आखिर तुम्हारा रब्बुलआलमीन के बारे में क्या गुमान है?

74. यह उस समय की बात है जब कि लोग संभवतः किसी मेले में भाग लेने के उद्देश्य से शहर के बाहर जा रहे थे। रात हो गई थी और तारे दिखाई देने लगे थे। उन्होंने ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को भी साथ चलने के लिए कहा। हज़रत इब्राहीम ने देखा कि उन सितारा परस्तों को जिन्होंने सितारों को ख़ुदा मान कर उन के बुत बना लिए हैं सबक़ देने का अच्छा मौक़ा है। उन्होंने ने प्रथम तो सितारों पर एक विचारणीय दृष्टि डाली कि ये हैं इन के ख़ुदा जिन का प्रतिनीधित्व इन के तराशे हुए बुत करते हैं। इन में ख़ुदा होने के कौन से गुण हैं? आश्चर्य है इन लोगों की बुद्धि पर। इस के बाद उन्होंने साथ चलने के सिलसिले में

अपने आप को अलग कर लिया जिस का ज़िक्र आगे हुआ है।

75. यह उज़्र हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इस लिए भी पेश कर दिया था कि सचमुच उन की तबीयत ख़राब थी। और रात के समय बाहर जाने में उन को तकलीफ़ हो सकती थी। और इस लिए भी कि वे लोगों की अनुपस्थिति का लाभ उठा कर बुतों के विरुद्ध कार्रवाई करना चाहते थे। यह कार्रवाई ख़ामोशी के साथ एकान्त ही में की जा सकती थी इस लिए उन्होंने ने अपना मूल उद्देश्य प्रकट किये बग़ैर तबीयत सही न होने का उज़्र पेश किया। मगर टीकाकारों की एक संख्या ने इस प्रयाप्त कारण (उज़्र) को असत्य समझ कर उस की बहुत ही विचित्र स्पष्टीकरण कीए हैं। वे उस के पक्ष में एक हदीस पेश करते हैं जिस में बयान हुआ कि हज़रत इब्राहीम ने तीन अवसर पर ग़लत बयानी से काम लिया था जिन में से एक मौक़ा यह है जब कि उन्होंने ने कहा اِنِّیْ سَقِیْمٌ “मेरी तबियत ख़राब है” (बुख़ारी किताबुल अम्बिया)

इस हदीस पर तो हम लम्बी वार्ता सूरह अम्बिया के नोट ८० में कर चुके हैं जिस का सार यह है कि इस हदीस को कुछ कारणवश सही हदीस नहीं समझा जा सकता और कोई कारण नहीं कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम के इस कहने को कि “मेरी तबियत ख़राब है” झूठ समझा जाए। ऐसी बात तो ज़मी कही जा सकती है जब कि यह सिद्ध हो जाए कि उन की तबियत उस समय ख़राब नहीं थी और जब यह सिद्ध नहीं है तो उन के इस बयान को जो कुर्आन में नक़ल हुआ है सच्चा बयान ही समझना होगा।

76. लोगों के शहर से बाहर चले जाने के बाद इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मन्दिर में जा कर बुतों के विरुद्ध कार्रवाई करने का अवसर मिला। वे जब मन्दिर के अन्दर गए तो बुतों के सामने खाना रखा हुआ देखा। उन्होंने ने बुतों को सम्बोधित कर के कहा तुम लोग खाते क्यों नहीं? यह वास्तव में कटाक्ष था उन के भक्तों पर जो अपने पूज्यों के सामने खाना पेश करने की मूर्खता करते हैं।

77. यह दूसरा कटाक्ष था उन के भक्तों पर कि जो बोल नहीं सकते उन को यह लोग ख़ुदा बना बैठे हैं।

78. सीधा हाथ अधिक शक्तिशाली होता है। हज़रत इब्राहीम ने पूरी शक्ति के साथ बुतों पर प्रहार किये और उन को तोड़ फोड़ कर रख दिया। यह क्रिस्सा तफ़सील से सूरह अम्बिया में गुजर चुका। व्याख्या के लिए देखिए सूरह अम्बिया नोट ७६

79. अर्थात् जब लोग मेले से लौटे तो देखा कि बुतों की यह दुर्गत बनी हुई है और चूँकि इब्राहीम अलैहिस्सलाम पहले ही कह चुके थे कि मैं तुम्हारे बुतों के विरुद्ध कार्रवाई करूँगा। जैसा कि सूरह अम्बिया आयत ५७ में बयान हुआ है इस लिए लोग

दौड़ते हुए उन के पास यह मालूम करने के लिए आए कि क्या वास्तव में उन्होंने ने ही यह हरकत की है?

80. हज़रत इब्राहीम ने उन को जो जवाब दिया वह सूरह अम्बिया में तप्सील के साथ बयान हुआ है इन आयतों में उन के जवाब का एक भाग प्रस्तुत किया गया है।

हज़रत इब्राहीम ने बुतों की निष्क्रियता एवं अवास्तविकता को स्पष्ट करने के लिए यह प्रश्न उठाया कि अपने ही हाथों तराशी हुई वस्तु को पूजने का क्या मतलब? इन बुतों में से कोई भी सृष्टा नहीं है क्योंकि इन को तुम ने स्वयं तराशा है फिर वे ईश्वर अथवा पूज्य किस तरह हुए।

81. अर्थात् सृष्टा तो अल्लाह ही है तुम्हारा भी और उस मिट्टी, पत्थर, लकड़ी का भी जिस से तुम बुत बनाते हो। इस

लिए अल्लाह का वास्तविक पूज्य होना बिल्कुल खुली सच्चाई है और अपने ही तराशे बुतों को पूज्य बनाना खुली मूर्खता।

82. उन के पास हज़रत इब्राहीम के इन प्रश्नों का जो स्पष्ट तर्क एवं हुज्जत की हैसियत रखते थे कोई उत्तर न था और धार्मिक वैमनस्य के चलते सत्य स्वीकारने के लिए भी आमादा नहीं थे इस लिए उन्होंने ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग के अलाव में झोकने का फैसला किया ।

आग का अलाव बनाने में यह नीति निहित रही होगी कि दीवारों के अन्दर आग तेज़ भड़काई जा सकती है, उस के अन्दर से उन्हें भागने का मौक़ा भी नहीं मिल सकेगा और उन के परिवार वालों की निगाहों से छिपा कर उन्हें लाना और इस आग में झोंकना आसान होगा।



और उस ने कहा मैं अपने रब की तरफ़ जाता हूँ वह मेरी रहनुमाई करेगा। ऐ मेरे रब मुझे स्वालेह (नेक) औलाद प्रदान कर। तो हम ने उसे एक सहनशील लड़के की खुशखबरी दी। और जब वह लड़का उस के साथ दौड़ धूप करने की आयु को पहुँच गया तो उस ने कहा ऐ मेरे बेटे ! मैं स्वप्न में देखता हूँ कि तुम्हें ज़बह (वध) कर रहा हूँ। तो तुम्हारी क्या राय है। उस ने कहा अब्बा जान ! कर गुजरिए जिस का आदेश आप को दिया जा रहा है आप इन्शाअल्लाह मुझे धैर्यवान पायेंगे। (अल-कुर्आन)

98. उन्होंने ने उस के साथ एक चाल चलनी चाही किन्तु हम ने उन्हीं को नीचा दिखाया।⁸³

فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ﴿٩٨﴾

99. और उस ने कहा मैं अपने रब की तरफ़ जाता हूँ वह मेरी रहनुमाई करेगा।⁸⁴

وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٩٩﴾

100. ऐ मेरे रब मुझे स्वालेह (नेक) औलाद प्रदान कर।⁸⁵

رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٠٠﴾

101. तो हम ने उसे एक सहनशील लड़के की खुशखबरी दी।⁸⁶

فَبَشِّرْنَاهُ بِعِلْمٍ حَلِيمٍ ﴿١٠١﴾

102. और जब वह लड़का उस के साथ दौड़ धूप करने की आयु को पहुँच गया ⁸⁷ तो उस ने कहा ऐ मेरे बेटे ! मैं स्वप्न में देखता हूँ कि तुम्हें ज़बह (वध) कर रहा हूँ।⁸⁸ तो तुम्हारी क्या राय है।⁸⁹ उस ने कहा अब्बा जान ! कर गुजरिए जिस का आदेश आप को दिया जा रहा है आप इन्शाअल्लाह मुझे धैर्यवान पायेंगे।⁹⁰

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَبْنَؤُ إِنِّي أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرَىٰ قَالَ يَٰأَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَيَجْعَلُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٠٢﴾

103. फिर जब दोनों ने अपने को (अपने रब के) हवाले कर दिया ⁹¹ और इब्राहीम ने उस को माथे के बल गिरा दिया।⁹²

فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ﴿١٠٣﴾

104. तो हम ने उस को आवाज़ दी ऐ इब्राहीम।⁹³

وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ ﴿١٠٤﴾

105. तुम ने स्वप्न को सच कर दिखाया।⁹⁴ हम नेक लोगों को इसी तरह बदला दिया करते हैं।⁹⁵

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا إِنَّا كُنَّا لَمَكِّنِينَ لِّجَزَى الْمُحْسِنِينَ ﴿١٠٥﴾

106. बेशक यह एक खुली आजमाइश थी।⁹⁶

إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ﴿١٠٦﴾

107. और हम ने उस लड़के की जान बचा ली एक महान कुर्बानी के बदले।⁹⁷

وَقَدَرْنَاهُ بِذَبْحٍ عَظِيمٍ ﴿١٠٧﴾

108. और हम ने बाद वालों में उस का ज़िक्रे जमील (सराहनीय चर्चा) बाक़ी रखा।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿١٠٨﴾

109. सलाम है इब्राहीम पर।

سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ﴿١٠٩﴾

83. उन्होंने ने हज़रत इब्राहीम को आग की भेंट चढ़ाने का षड्यंत्र रचा था मगर जैसा कि सूरह अम्बिया आयत ६९ में बयान हुआ, अल्लाह तआला ने आग को इब्राहीम के लिए ठंडा कर दिया और वे सही सलामत रहे। इस तरह उन के दुश्मनों को मुँह की खाना पड़ी और वे हार कर रह गए।

84. चूँकि जाति वालों पर अल्लाह की हुज्जत (तर्क प्रस्तुति) पूरी तरह सिद्ध हो चुकी थी और जाति वाले उन की जान लेने पर तुल गए थे इस लिए हज़रत इब्राहीम ने हिजरत का फैसला किया। इस हिजरत की तफ़सील के लिए देखिए सूरह अनकबूत नोट ४८

85. हज़रत इब्राहीम इराक से हिजरत कर के सीरिया (फ़लस्तीन) पहुँच गए थे। वहाँ उन्होंने ने नेक औलाद के लिए दुआ की ताकि वह उन का सहारा और उन की शक्ति बने और दीन की रौशनी उन के माध्यम से फैले।

नेक औलाद अल्लाह की बड़ी नेमत है। और दुआ जब औलाद के लिए की जाए तो नेक औलाद ही के लिए करना चाहिए।

86. अर्थात् इस्माईल की जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पहले बेटे थे। सहनशीलता का गुण उन में कूट कूट कर विद्यमान था जिस का सबूत उन की बेमिसाल कुर्बानी है।

87. अर्थात् इब्राहीम के लिए सहारा बन गया कि उन के साथ चल फिर सके और उन के काम में हाथ बटा सके।

88. अर्थात् अल्लाह के लिए तुम्हें कुर्बान कर रहा हूँ यह स्वप्न एक नबी का स्वप्न था जिस में अल्लाह की तरफ से परोक्ष संकेत होते हैं और जो शैतानी वस्वसों की मिलावट से बिलकुल पाक होता है इस लिए हज़रत इब्राहीम ने इस को अल्लाह की तरफ से इशारा समझा।

ध्यान रहे कि किसी व्यक्ति के लिए सपने के आधार पर कोई ऐसा क़दम उठाना सही नहीं है जिस की शरीअत इजाज़त न देती हो। लेकिन नबियों को चूँकि इस्मत (अस्मिता) हासिल होती है इस लिए उन के सपने भी सच्चे होते हैं और उन के साथ ख़ास बात यह भी होती है कि अगर यह मान भी लें कि कोई नबी स्वप्नार्थ समझने में कोई ग़लती करता है तो अल्लाह तआला सही समय पर उस को दुरूस्त कर देता है।

89. हज़रत इब्राहीम ने अपने बेटे से राय इस लिए पूछि कि ज़ब्ह (वध) उसी का करना था। तथा इस लिए भी कि उस के धैर्य एवं सहिष्णुता का अन्दाज़ा हो जाए।

90. यह था बेटे का जवाब जिस का एक एक शब्द ईमान विश्वास, सच्चाई, धैर्य, सहिष्णुता, सुदृढ़ता, साहस, बलिदान तथा ईश-भय की भावना से ओत प्रोत था। इस दृढ़ता के बावजूद इन्शाअल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा तो) कहना,

अल्लाह पर भरोसा करने का उच्च उदाहरण है। बेटे के इस जवाब से यह भी अन्दाज़ा होता है कि इस समय वह न केवल प्रौढ़ावस्था (सिन तमीज़) को पहुँच गया था बल्कि उस में सूझ बूझ भी पैदा हो गई थी।

91. “अस्लमा” अर्थात् दोनों ने अपने को अपने रब के हवाले कर दिया बिना कुछ कहे अल्लाह के आदेशानुपालन के लिए आमादा हो गए। पता चला कि इस्लाम की हक़ीक़त किसी सुरक्षा के बग़ैर अपने आप को अल्लाह के हवाले कर देना है। यहाँ तक कि अगर जान कुर्बान कर देने का आदेश हो तो उस के अनुपालन से भी बन्दे को पीछे नहीं हटाना चाहिए। हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) एक ऐसी आज्ञा का अनुपालन कर के जिस में उन की कड़ी परीक्षा थी इस्लाम के उच्चतम शिखर पर पहुँच गए थे।

92. अर्थात् इस्माईल को ज़ब्ह करने के लिए पेशानी (माथे) के बल लिटा दिया। संभव है कि इस की यह मसलहत रही हो कि ज़ब्ह करते समय चेहरा सामने न रहे।

93. अर्थात् अभी छुरी चलाने की नौबत भी नहीं आई थी कि अल्लाह ने इब्राहीम को पुकारा और ज़ब्ह करने से रोक दिया।

94. हज़रत इब्राहीम ने ख़्वाब में बेटे को ज़ब्ह करते देखा था और इस ईश्वरीय संकेत के अनुपालन में उन्होंने ने कोई कसर उठा न रखी बल्कि ज़ब्ह करने की पूरी पूरी तैयारी की। इस प्रकार उन्होंने ने अपने सपने को सच कर दिखाया था। अब जब कि गले पर छुरी चलाई जाने वाली थी अल्लाह तआला ने उन्हें रोक दिया क्योंकि इस्माईल का ख़ून बहाना अभिप्रेत नहीं था बल्कि यह देखना था कि इस कड़ी परीक्षा में बाप बेटे पूरे उतरते हैं या नहीं और जब वे पूरे उतरे तो अल्लाह ने ज़ब्ह करने से पहले ही कुर्बानी स्वीकार कर ली अतः छुरी चलाने की आवश्यकता बाक़ी नहीं रही थी। यह अल्लाह की रहमत थी और उस की तरफ़ से आदर और सम्मान भी।

95. अर्थात् जो लोग नेकी को अपना स्वभाव बना लेते हैं उन को अल्लाह तआला परीक्षा से सही सलामत गुज़ारता है और मान सम्मान से अलंकृत करता है।

96. अर्थात् इस में कोई शक़ नहीं कि यह एक बहुत बड़ी आज़माइश थी। इब्राहीम की आज़माइश इस बात में कि वे अपने प्यारे और इकलौते बेटे को कुर्बान करने के लिए तैयार होते हैं या नहीं और इस्माईल की आज़माइश इस बात में कि वे कुर्बान होने के लिए आमादा होते हैं या नहीं।

97. अर्थात् अल्लाह ने उस की जान के बदले में एक मेंढा (दुंढा) पेश कर दिया कि इस को ज़ब्ह कर के इस कुर्बानी की महान यादगार स्थापित की जाए। अतः हज्ज के मनासिक में से एक महत्वपूर्ण मन्सक कुर्बानी है जो ऊँट, गाय, बैल, बकरी, मेंढे

और दुंबे में से किसी जानवर की, की जाती है तथा ईदुलअज़हा के अवसर पर दुनिया भर में मुसलमान कुर्बानी करते हैं। हज़रत इब्राहीम ने अपने बेटे की जान के फ़िदयः (बदले) में अल्लाह के आदेशनुसार एक मेंढा ज़ब्ह किया था जिस को अल्लाह तआला ने महान कुर्बानी के तौर पर कुबूल फ़रमाया और यह कुर्बानी इस दृष्टि से भी महान कुर्बानी ठहरी कि इब्राहीम के इस तरीक़े (सुन्नत) को महान यादगार के तौर पर जारी कर दिया गया। बाइबिल की किताब उत्पत्ति अध्याय २२ में मेंढे की कुर्बानी का वर्णन है।

कुर्बानी की यह घटना मक्का में मरवा पर्वत पर घटी थी जो ख़ाना-ए-काबा के पास स्थित है और जिस की “सअी” की जाती है। संक्षिप्त तर्क निम्न हैं।

(1) यह एक बेमिसाल कुर्बानी थी जिस के लिए उचिततम स्थान या तो बैतुलमुक़द्दस हो सकता था या मक्का। जहाँ तक बैतुल मुक़द्दस का सम्बन्ध है उस का निर्माण हज़रत इब्राहीम के बहुत बाद हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के ज़माने में हुआ। अलबत्ता मक्का में बैतुल्लाह का निर्माण हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के हाथों हुआ। इस लिए यह मुक़द्दस सरज़मीन (पावन धरती) ही इस कुर्बानी के लिए उचिततम जगह थी।

2) कुर्बानी की असल जगह बैतुल्लाह है।

ثُمَّ مَحَلُّهَا إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيقِ (سورة حج- ३२)

इस लिए इस के आस पास कुर्बानी ठीक उस की जगह पर

कुर्बानी है।

3) बाइबिल में है कि हज़रत इब्राहीम को “मोरिय्याह” के देश में जा कर एक पर्वत पर कुर्बानी करने का आदेश हुआ था (देखिए उत्पत्ति अध्याय २२)

यह मोरिय्याह का देश कौन सा है, इस की निशानदेही बाइबिल वाले नहीं कर सके हैं अतः बाइबिल का टीकाकार लिखता है।

“The land of Moriah cannot be identified.”-(The Interpreter’ one volume commentary of the Bible p.18)

मोरिय्याह वास्तव में मरवह को तोड़कर बनाया गया शब्द है और मरवह पर्वत मक्का में बैतुल्लाह के पास स्थित है जो ईश-भक्ति के चिन्हों (शआइरुल्लाह) में से है। इस पर्वत पर हज़रत इस्माईल की कुर्बानी की घटना घटी थी। हदीस में आता है कि आप ने मरवह के बारे में फ़रमाया।

هَذَا الْمَنْحَرُ كُلُّ فَحَاجٍ مَكَّةَ وَطُرُقَهَا مَنْحَرٌ (مَوْطَأُ كِتَابِ الْحَجِّ)

अर्थ :- “यह कुर्बान गाह है और मक्का के तमाम छोटे और बड़े रास्ते कुर्बानी की जगहें हैं।” (मूअता, किताबुल हज्ज)

हदीस में मिना को “मन्हर”(कुर्बानी की जगह) बताया गया है वह शरअी मसलहतों की दृष्टि से है। पहली बात तो यह कि मिना मक्का से निकट स्थित है। दूसरे हज्ज के अवस पर भारी संख्या में जानवर ज़ब्ह करने के लिए जगह का कुशादा होना आवश्यक था इस लिए मिना में कुर्बानी करना संवैधानिक हुआ।



इसी प्रकार हम सुकर्मियों को बदला देते हैं। निस्संदेह वह हमारे मोमिन बन्दों में से था। और हम ने उस को इस्हाक़ की खुशख़बरी दी। एक नबी होगा स्वालिहीन (नेक लोगों) में से। और हम ने उस पर और इस्हाक़ पर बरकतें उतारी। और इन दोनों की नस्ल में से सुकर्मी भी हैं और अपने प्राणों पर खुला जुल्म करने वाले भी। और हम ने मूसा और हारून पर फ़ज़ल (अनुग्रह) किया। उन को और उन की जाति को बड़ी मुसीबत से मुक्ति दी। (अल-कुर्आन)

110. इसी प्रकार हम सुकर्मियों को बदला देते हैं।

كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ⑪①

111. निस्संदेह वह हमारे मोमिन बन्दों में से था।

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ⑪②

112. और हम ने उस को इस्हाक़ की खुशखबरी दी।
एक नबी होगा स्वालिहीन (नेक लोगों) में से।⁹⁸

وَبَشِّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِنَ الصَّالِحِينَ ⑪③

113. और हम ने उस पर और इस्हाक़ पर बरकतें उतारी।⁹⁹ और इन दोनों की नस्ल में से सुकर्मों भी हैं और अपने प्राणों पर खुला जुल्म करने वाले भी।¹⁰⁰

وَبَارَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَى إِسْحَاقَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَظَالِمٌ لِنَفْسِهِ مُبِينٌ ⑪④

114. और हम ने मूसा और हारून पर फ़ज़ल (अनुग्रह) किया।

وَلَقَدْ مَنَّا عَلَى مُوسَى وَهَارُونَ ⑪⑤

115. उन को और उन की जाति को बड़ी मुसीबत से मुक्ति दी।¹⁰¹

وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ⑪⑥

116. और उन की सहायता की तो वही ग़ालिब (विजयी) रहे।¹⁰²

وَنَصَرْنَاهُمْ فَكَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ⑪⑦

117. उन को रौशन किताब प्रदान की।¹⁰³

وَاتَيْنَاهُمَا الْكِتَابَ الْمُسْتَبِينَ ⑪⑧

118. और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत प्रदान की।¹⁰⁴

وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ⑪⑨

119. और बाद वालों में उन का ज़िक्र-जमील (सराहनीय-चर्चा) बाक़ी रखा।¹⁰⁵

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْآخِرِينَ ⑪⑩

120. सलाम है मूसा और हारून पर।¹⁰⁶

سَلَامٌ عَلَى مُوسَى وَهَارُونَ ⑪⑪

121. इसी प्रकार हम सुकर्मियों को बदला देते हैं।

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ⑪⑫

122. निस्संदेह वे हमारे मोमिन बन्दों में से थे।

إِنَّهُمْ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ⑪⑬

123. और निस्संदेह इलयास¹⁰⁷ भी पैगम्बरों में से था।

وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ⑪⑭

124. जब उस ने अपनी जाति वालों से कहा तुम लोग (अल्लाह से) डरते नहीं हो ?¹⁰⁸

إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَلَا تَتَّقُونَ ⑪⑮

98. यह आयत पुष्टि करती है कि हज़रत इब्राहीम को इस्हाक़ की खुशख़बरी पहले बेटे की पैदाइश और उस की कुर्बानी की घटना के बाद दे दी गई थी। इस लिए जिस लड़के की कुर्बानी दी गई थी वे हज़रत इस्माईल ही हैं। परन्तु बाइबिल में हज़रत इस्हाक़ की कुर्बानी दी गई बताया गया है जो यहूदियों की काट छाँट का परिणाम है। हज़रत इस्माईल को ज़बह किया गया है इस के पक्ष में वे दलीलें भी हैं जो हम ने ऊपर नोट ९७ में प्रस्तुत की और अतिरिक्त यह कि :-

1) बाइबिल में है कि वह हज़रत इब्राहीम का इकलौता बेटा था। (उत्पत्ति अध्याय २२) और उत्पत्ति अध्याय १६ में बयान हुआ है कि हज़रत सारा की कोई संतान नहीं थी और हज़रत हाजरा से इस्माईल पैदा हुए थे।

“और हाजिरा अब्राम के द्वारा एक पुत्र जनी और अब्राम ने अपने पुत्र का नाम जिसे हाजिरा जनी, इश्माएल रखा। जब हाजिरा ने अब्राम के द्वारा इश्माएल को जन्म दिया उस समय अब्राम छियासी वर्ष का था। (उत्पत्ति १६:१५, १६)

और यह बात बाइबिल ही से सिद्ध है कि हज़रत इस्माईल हज़रत इस्हाक़ से १४ वर्ष बड़े थे (उत्पत्ति अध्याय १७) इस लिए इकलौते बेटे इस्माईल ही हो सकते हैं। मगर यहूदियों ने केवल वैमन्स्य के चलते इस्माईल की जगह इस्हाक़ का नाम दर्ज कर दिया। यह किताब में उन की खुली छाँट और परिवर्तन है।

(2) बाइबिल में है कि जब अल्लाह तआला ने इब्राहीम को इस्हाक़ की पैदाइश की खुशख़बरी दी तो फ़रमाया :-

“तब परमेश्वर ने कहा निश्चय तेरी पत्नी सारा के तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा तू उस का नाम इस्हाक़ रखना। और मैं उस के साथ ऐसी वाचा बाँधूंगा जो उस के पश्चात उस के वंश के लिए युग की वाचा होगी।” (उत्पत्ति १७:१९)

अर्थात् इस्हाक़ की पैदाइश की खुशख़बरी के साथ ही यह खुशख़बरी भी दी गई थी कि उस के औलाद होगी। फिर इस्हाक़ के औलाद होने से पूर्व उन को ज़बह करने का आदेश किस प्रकार दिया जा सकता था? कुर्आन में भी बयान हुआ है कि जब हज़रत इब्राहीम की पत्नी को इस्हाक़ की पैदाइश की खुशख़बरी दी गई थी तो उन से याक़ूब के पैदा होने की भी खुशख़बरी दी गई थी।

فَبَشِّرْنَا هَا بِإِسْحَاقَ وَمِنْ وَرَاءِ إِسْحَاقَ يَعْقُوبَ (هود: ८१)

अर्थ :- “हम ने उस को इस्हाक़ की और इस्हाक़ के बाद याक़ूब की खुशख़बरी दी।” (हूद - ७९)

(3) अगर इस्हाक़ की कुर्बानी दी गई होती तो इस्माईल में यह कुर्बानी एक चिन्ह के रूप में बाक़ी रखी जाती। लेकिन उन में इस कुर्बानी की ईश-भक्ति के चिन्ह की हैसियत से बाक़ी न

रहना और ईद फ़सीह की कुर्बानी जिस का सम्बन्ध मिस्र से उन के निकल जाने से है प्रचलित होना इस बात की स्पष्ट दलील है कि कुर्बानी इस्हाक़ की नहीं बल्कि इस्माईल की दी गई थी क्यों कि हज्ज में इस कुर्बानी को ईश-भक्ति के चिन्ह के रूप में बाक़ी रखा गया है। तथा ईदुल अज़हा में भी।

(4) हज़रत इस्माईल के दो गुण कुर्आन में ऐसे बयान हुए हैं जो इस बात को सिद्ध करते हैं कि कुर्बानी उन ही की पेश की गई थी। एक उन का “हलीम” (सहनशील) होना (आयत १०१) और दूसरा उन का “सादिकुल वाद” (वादे का सच्चा होना) (सूरह मरयम आयत ५४) जब कि हज़रत इस्हाक़ का गुण “अलीम” (ज्ञान वाला बयान हुआ है। (सूरह हिब्र - ५३)

मुफ़स्सिरीन ने हज़रत इस्हाक़ की कुर्बानी पेश किये जाने से सम्बन्धित जो रिवायतें नक़ल की हैं, मालूम होता है कि वे अहले किताब की बातों पर विश्वास करते हुए बयान की गई हैं। किन्तु जैसा कि तर्कों द्वारा ऊपर स्पष्ट किया गया कि इस का अनुमोदन कुर्आन से नहीं होता।

99. अर्थात् इस्माईल और इस्हाक़ दोनों पर बरकतें नाज़िल कीं। अतः इन दोनों शाखों से दो ऐसी नस्लों का सिलसिला चला जो इतिहास में प्रमुख स्थान रखती हैं। हज़रत इस्माईल से बनी इस्माईल (अरब) का सिलसिला और हज़रत इस्हाक़ से बनी इस्राईल का सिलसिला ।

100. अर्थात् बनी इस्माईल हो या बनी इस्राईल दोनों में अच्छे और बुरे लोग मौजूद हैं। ऐसे भी जिन्होंने ने नेकी को अपना रखा है और ऐसे भी जो शिकं कुफ़्र और उदंडता द्वारा अपने आप पर स्वयं जुल्म ढा रहे हैं। मतलब यह है कि ये दोनों नस्लें इस दृष्टि से प्रमुख अवश्य हैं कि उन का सिलसिला दो महान हस्तियों से सम्बद्ध है परन्तु अल्लाह की तुला में जो चीज़ वज़न रखती है वह हर एक का अपना अच्छा कर्म है न कि कुल अथवा वंश की श्रेष्ठता।

101. अर्थात् उन कष्टों से जो फ़िरऔन उन्हें पहुँचा रहा था।

102. बनी इस्राईल मिस्र के अन्दर यद्यपि संख्या की दृष्टि से अल्प थे और फ़िरऔन ने उन को जुल्म और सितम का निशाना बना दिया था लेकिन चूँकि वे ईमान वाले थे और हज़रत मूसा और हज़रत हारून के बताये रास्ते का अनुसरण कर लिया था इस लिए अल्लाह की मदद उन के साथ थी और अन्ततः विजय उन्हीं को प्राप्त हुई फ़िरऔन अपने लश्कर के साथ डूब मरा और बनी इस्राईल को उस से मुक्ति मिली। इस प्रकार यह मज़लूम अल्पसंख्यक पैगम्बरों का साथ देने के कारण फ़िरऔन के मुकाबले में भारी सिद्ध हुई।

103. तात्पर्य तौरात से है जो एक स्पष्ट एवं रौशन किताब

थी।

104. सीधा रास्ता अल्लाह का दीन अर्थात् इस्लाम है जिस की पहली विशेषता एक अल्लाह (तौहीद) को मानना है।

105. अर्थात् मूसा और हारून का। अतः ईमान वाले उन में आस्था व्यक्त करते हैं और उस की प्रशंसा एवं सराहना करते हैं। इस के विपरीत फिरऔन पर हर कोई लानत ही भेजता है।

106. अर्थात् अल्लाह की तरफ से मूसा और हारून के लिए सलामती है। इस में ईमान वालों को इस पर उत्तप्रेरित किया

गया है कि वे उन पर सलाम भेजें। सलामुन अला मूसा व हारून।

107. हज़रत इलयास का नाम बाइबिल में एलिय्याह (Elijah) है और वे बनी इस्राईल में से थे। उन का युग नवी सदी ईसा पूर्व का युग बताया जाता है। बाइबिल की किताब “राजाओं का वृत्तांत (एक) अध्याय १८ में इन का वृत्तांत बयान हुआ है।

108. वे किस जाति की ओर भेजे गए इस की पुष्टि कुर्आन ने नहीं की। अलबत्ता बाइबिल के कथानुसार वे बनी इस्राईल ही के एक समूह की ओर भेजे गए थे। जो बुत परस्ती में लिप्त थे।



किन्तु उन्होंने ने उसे झुठलाया तो निश्चय ही उन्हें गिरफ्तार कर के पेश किया जाएगा। अलबत्ता अल्लाह के खास बन्दे इस से सुरक्षित होंगे। और बाद वालों में हम ने उस का ज़िक्रे-जमील (सराहनीय चर्चा) बाक़ी रखा। सलाम है इलयासीन पर। हम सुकर्मियों को इसी प्रकार बदला देते हैं। निस्संदेह वह हमारे मोमिन बन्दों में से था। (अल-कुर्आन)

125. क्या तुम “बअल” को पुकारते हो और उत्तम सृष्टा को छोड़ देते हो।

اَتَدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ﴿١٢٥﴾

126. अल्लाह को जो तुम्हारा रब भी है और तुम्हारे अगले बाप दादा का भी।¹¹⁰

اللَّهُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأُولِينَ ﴿١٢٦﴾

127. किन्तु उन्होंने ने उसे झुठलाया तो निश्चय ही उन्हें गिरफ्तार कर के पेश किया जाएगा।¹¹¹

فَكَذَّبُوهُ فَأَنَّهُمْ كُفَرُوهٗ ﴿١٢٧﴾

128. अलबत्ता अल्लाह के खास बन्दे इस से सुरक्षित होंगे।¹¹²

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٢٨﴾

129. और बाद वालों में हम ने उस का ¹¹³ जिक्रे-जमील (सराहनीय चर्चा) बाक़ी रखा।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿١٢٩﴾

130. सलाम है इलयासीन पर।¹¹⁴

سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ﴿١٣٠﴾

131. हम सुकर्मियों को इसी प्रकार बदला देते हैं।

إِنَّا كَذَلِكْ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣١﴾

132. निस्संदेह वह हमारे मोमिन बन्दों में से था।

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾

133. और लूत ¹¹⁵ भी रसूलों में से था।

وَإِنَّ لُوطًا لِّمَنِ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٣﴾

134. जब हम ने उस को और उस के समस्त सम्बन्धियों (समूह) को मुक्ति दी।¹¹⁶

إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٣٤﴾

135. सिवाय एक बुढ़िया के जो पीछे रह जाने वालों में से थी।¹¹⁷

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَيْرِينَ ﴿١٣٥﴾

136. फिर बाक़ी सब को हम ने विनष्ट कर डाला।¹¹⁸

ثُمَّ دَمَرْنَا الْآخَرِينَ ﴿١٣٦﴾

137. और तुम उन की (उजड़ी हुई) बस्तियों पर से गुज़रते हो, सुबह को भी।

وَأَنْتُمْ لَتَهْرُؤُنَّ عَلَيْهِمْ مُّصِحِّينَ ﴿١٣٧﴾

138. और रात को भी।¹¹⁹ फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?

وَبِالْأَيْلُ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٣٨﴾

139. और निस्संदेह यूनस ¹²⁰ भी रसूलों में से था।

وَإِنَّ يُونُسَ لِمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٩﴾

109. “बअल्” का अर्थ मालिक और सरदार के हैं। लेकिन हज़रत इलयास की जाति ने जिस बुत को पूज्य बना लिया था उस का नाम “बअल्” रब (Lord) के अर्थ में था।

110. हज़रत इलयास (अलैहिस्सलाम) ने अपनी जाति को बुत परस्ती से निकालने की कोशिश की और यह स्पष्ट तर्क प्रस्तुत किया कि अल्लाह जो तुम सब का रब है और बेहतरीन सृष्टा है उस को छोड़ कर अपने ही तराशे हुए बुत को पूज्य बनाने का क्या अर्थ?

111. अर्थात् नबी को झुठलाने और बुत परस्ती पर जमे रहने का नियत परिणाम आखिरत की यातना है। क्रियामत के दिन ऐसे लोग गिरफ्तार कर के अल्लाह के समक्ष दण्ड के लिए प्रस्तुत किये जाएंगे।

112. अर्थात् जिन्होंने ने अल्लाह ही को एक मात्र पूज्य मानकर उस की इबादत और उस का अनुपालन किया वे इस दण्ड से बचे रहेंगे।

113. अर्थात् इलयास का।

114. इलयासीन और इलयास एक ही नाम हैं जो दो तरह बोला जाता है। जैसा तूरे सीना और तूरे-सीनीन।

115. लूत अलैहिस्सलाम का वृत्तांत कई सूरतों में गुजर चुका। यहाँ कुर्आन ने उस घटना की ओर संक्षिप्त रूप से इशारा कर के मक्का के बहुदेववादियों को इबरत दिलाई है।

116. अर्थात् लूत के समूह और उस के अपने लोगों को जो ईमान लाए थे, अज़ाब से बचा लिया।

117. यह हज़रत लूत की पत्नी थी जो ईमान नहीं लाई थी इस लिए पीछे रह गई और अज़ाब की चपेट में आ गई। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १३२।

118. मुग़द हज़रत लूत और उन पर ईमान लाने वाले लोगों को छोड़ कर बाक़ी सब लोग हैं अर्थात् उन सब को जो काफ़िर थे विनष्ट कर दिया गया।

119. लूत की क्रौम की उजड़ी हुई बस्तियाँ मृत सागर के किनारे थीं जिन की तरफ़ से सारिया और फ़लस्तिन को जाते हुए मक्का वालों का गुज़र होता था। उस ज़माने में तप्ती धूप में बियाबान का सफ़र करना कठिन था। इस लिए लोग आम तौर पर रात को और सुबह ठंड के समय सफ़र करते थे। इस मुनासिबत से सुबह और रात के समय उन बस्तियों पर से गुज़रने का वर्णन हुआ है। सुबह का वर्णन इस लिए पहले हुआ कि उन उजड़ी हुई बस्तियों का निरीक्षण सुबह के उजाले में भली भाँति किया जा सकता था। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिज़्र नोट ७५।

120. यूनस अलैहिस्सलाम की घटना के विवरण के लिए देखिए सूरह यूनस नोट १४७ और सूरह अम्बिया नोट ११७, ११८



140. जब वह भाग कर एक भरी हुई नाव में जा पहुँचा।¹²¹

إِذْ بَقِيَ إِلَى الْفُلِّ الْمَشْحُونِ ﴿١٣٠﴾

141. फिर नाव वालों ने कुर्आ (परची) डाला तो वह उस में परास्त हो गया।¹²²

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ﴿١٣١﴾

142. फिर मछली ने उसे निगल लिया¹²³ इस हाल में कि वह अपने को मलामत कर रहा था।¹²⁴

فَالْتَمَتَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُمِيلٌ ﴿١٣٢﴾

143. अगर वह तस्बीह (पाकी बयान) करने वालों में से न होता।¹²⁵

فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ﴿١٣٣﴾

144. तो लोगों के उठाये जाने के दिन तक वह उस के पेट में रहता।¹²⁶

لَكَيْتَ فِي بَطْنِهِ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٣٤﴾

145. फिर हम ने उस को एक चटियल ज़मीन पर डाल दिया इस हाल में कि वह निढाल था।¹²⁷

فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ﴿١٣٥﴾

146. और हम ने उस पर एक बेलदार वृक्ष उगाया।¹²⁸

وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَقْطِينٍ ﴿١٣٦﴾

147. और उस को भेजा एक लाख से भी अधिक लोगों की तरफ़।¹²⁹

وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَى مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ﴿١٣٧﴾

148. वे ईमान लाए अतः हम ने एक समय तक उन्हें जीवन सामाग्री दी।¹³⁰

فَأَمْنُوا فَنَعَّمْنَا عَلَيْهِمْ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١٣٨﴾

149. इन से पूछो क्या तुम्हारे रब के लिए बेटियाँ हैं और उन के लिए बेटे ?¹³¹

فَأَسْتَفْتِهِمُ الرِّبَّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُونَ ﴿١٣٩﴾

150. क्या हम ने फ़रिश्तों को स्त्री बनाया है और ये इस के साक्ष्य हैं ?¹³²

أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ﴿١٤٠﴾

151. सुनो ये लोग बस मनगढ़ंत तौर पर यह बात कह रहे हैं।

أَلَا إِنَّهُمْ مِّنْ أَفْكَهَمَ لَيَقُولُونَ ﴿١٤١﴾

152. कि अल्लाह के औलाद है और ये बिलकुल झूठे हैं।

وَلَدَ اللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٤٢﴾

153. क्या उस ने बेटों के बजाय बेटियाँ पसंद कर ली?

أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ﴿١٤٣﴾

121. हज़रत यूनस को नैनवा (इराक़) की जाति की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया था। उन का ज़माना आठवीं सदी ईसा पूर्व का ज़माना बताया जाता है। उन्होंने जब दाअवत पेश की तो उन की क़ौम ने इन्कार किया।

हज़रत यूनस को जब उन की तरफ़ से मायूसी हुई तो वे क्रोधित हो कर वहाँ से निकल गए और संभवतः फ़लस्तीन का इरादा किया और समुद्र के रास्ते से याफ़ा पहुँचने का संकल्प किया। तट पर उन्हें एक भरी हुई नाव मिली और वे उस में सवार हो गए।

122. नाव बीच समुद्र में पहुँच कर ड़ाँवाँ डोल होने लगी हो सकता है किसी तूफ़ान का सामना भी करना पड़ा हो। नाव वालों ने बोझ को कम करना ज़रूरी समझा और इस के लिए कुआ (परची) डाला कि जिस का नाम निकल जाए उस को समुद्र के हवाले कर दिया जाए। संयोग वश हज़रत यूनस का नाम निकल आया और उन्हें समुद्र के हवाले कर दिया गया।

123. अल्लाह ने कुछ इस तरह के वातावरण बनाए कि एक बड़ी मछली ने उन्हें निगल लिया यह व्हील या शार्क जैसी कोई मछली रही होगी।

124. “मुलीम” का अर्थ मलामत करने वाले के हैं जिस प्रकार मुतीअ का अर्थ अनुपालन करने वाले और मुनीब का अर्थ पलटने वाले के हैं। मतलब यह है कि मछली ने जब हज़रत यूनस को निगल लिया तो वे अपनी ग़लती पर पछता रहे थे और अपने नफ़्स को मलामत कर रहे थे।

125. जैसा कि सूरह अम्बिया आयत ८८ में गुज़र चुका कि हज़रत यूनस ने मछली के पेट में तस्बीह (अल्लाह की पाकी बयान) की और यह तस्बीह थी

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ

(अर्थ :- तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, पाक है तू, मैं ही दोषी हूँ।”

इस तस्बीह की बरकत से उन के लिए मुक्ति का रास्ता खुल गया।

इस से यह रहनुमाई मिलती है कि आदमी किसी भारी मुसीबत में फंस गया हो तो इन बरकत वाले प्रवचन (तस्बीह) का पढ़ना उस की दुआ के स्वीकार्य होने का साधन बन सकता है।

ध्यान रहे कि हज़रत यूनस के “मुसब्बीहीन” (तस्बीह करने वाले) होने का मतलब केवल यह नहीं है कि उन्होंने मछली के पेट में तस्बीह की थी बल्कि यह है कि वे अल्लाह के उन बन्दों में से थे जो उसी की इबादत करने वाले और उस की पाकी बयान करने वाले हैं। इस ख़ासियत के साथ उन्होंने मछली के

पेट में तस्बीह के प्रवचन का पाठ किया था।

126. अर्थात् यह अल्लाह की तस्बीह की बरकत थी कि मछली ने उन्हें उगल दिया वरना क्रियामत तक के लिए मछली का पेट ही उन की क़ब्र बन जाता। आयत के शब्द इस भाव में स्पष्ट नहीं हैं कि वे क्रियामत तक मछली के पेट में ज़िन्दा रहते बल्कि केवल इस अर्थ में हैं कि वे क्रियामत तक मछली के पेट में रहते और अल्लाह ही अपने कलाम के भेदों को भली भाँत जानता है।

127. अर्थात् अल्लाह के आदेशनुसार मछली ने यूनस अलैहिस्सलाम को तट के पास उगल दिया। यह तटीय क्षेत्र एक चटियल मैदान था और वे बेहद कमज़ोर और निढाल हो गए थे।

128. अल्लाह ने उन की इस बेबसी को देखते हुए सहारा दिया। और उस चटियल मैदान में चमत्कारिक रूप से एक बेलदार वृक्ष उगाया जिस ने साये का काम दिया। इस प्रकार समय पर उन्हें सुकून और राहत मिली।

129. अर्थात् जब उन की तबीयत बहाल हुई तो अल्लाह ने उन्हें आदेश दिया कि जाओ उस बस्ती की तरफ़ जिस की आबादी एक लाख से भी अधिक है, तात्पर्य नैनवा शहर है जिस की आबादी इतनी अधिक थी वहाँ हज़रत यूनस को अपने दअवती मिशन की पूर्ति के लिए पुनः भेजा गया।

पता चला कि हज़रत यूनस से जो ग़लती हुई थी वह रिसालत के दायित्व से सम्बन्धित थी और उन्होंने सोच समझ कर कोई गुनाह नहीं किया था बल्कि एक चूक थी जो उन से हो गई और वह हक़ (सत्य) की ख़ातिर। परन्तु अल्लाह के नज़दीक रिसालत के दायित्व की अदायगी में यह कोताही कि अल्लाह के आदेश के बग़ैर बस्ती को छोड़ कर निकल जाना जिस पर तर्क प्रस्तुति को सिद्ध करने के लिए उस ने अपने रसूल को नियुक्त किया था कड़ाई के साथ पकड़ करने की बात थी। अतः उस ने उन्हें कड़ी परीक्षा में डाल दिया मगर ज्यों ही उन्हें अपनी चूक का आभास हुआ अपनी ग़लती स्वीकार करते हुए अल्लाह की तस्बीह में वे लीन हो गए। अल्लाह तआला ने उन्हें मुसीबत से मुक्ति दी और चमत्कारिक रूप से उन की मदद की। इस से यह बात भी स्पष्ट हुई कि रसूल यद्यपि मासूम होता है अर्थात् वह गुनाह नहीं करता परन्तु मनुष्य होने के कारण ग़लती और चूक उस से हो सकती है जिस की अल्लाह तआला तुरंत इस्लाह (सुधार) फ़रमा देता है। केवल अल्लाह ही की हस्ती है जिस से कोई ग़लती नहीं होती। वह पाक और निर्दोष है।

130. हज़रत यूनस जब वापस नैनवा चले गए तो उन की दअवत को समस्त जाति वालों ने स्वीकार कर लिया और जब पूरी जाति ईमान ले आई तो अल्लाह तआला ने उन्हें अपने

फ़ज़ल (अनुग्रह) से अलंकृत किया और दुनिया में उन्हें उभरने और प्रगति करने का अवसर प्रदान किया।

131. बहुदेववादी फ़रिश्तों के बारे में यह विश्वास रखते थे कि वे अल्लाह की बेटियाँ हैं। अल्लाह के लिए बेटे नियत किये जाएँ या बेटियाँ, दोनों ही सरासर नामाकूल और मूर्खता की बातें हैं परन्तु अरब के बहुदेववादियों का अल्लाह के लिए बेटियाँ नियत करना बड़ी ही भोड़ी बात थी क्योंकि वे लड़कियों को अपने लिए लज्जा एवं तुच्छता का कारण समझते हैं। उन के इसी भोंडेपन को उन पर स्पष्ट करने के लिए उन से पूछा जा

रहा है कि बताओ तुम जब अपने लिए बेटों को पसंद करते हो बेटियों को नहीं तो अल्लाह के लिए बेटियाँ क्यों नियत करते हो? जिस चिज़ को तुम घटिया समझते हो उस को अल्लाह की तरफ़ मन्सूब करने में तुम्हें कोई संकोच नहीं होता? यह एक कटाक्ष है जिस से उन की धारणा की अतार्किकता खुल कर सामने आ जाती है।

132. अर्थात् इन लोगों को आखिर मालूम कैसे हो गया कि फ़रिश्ते स्त्री हैं। क्या यह सब इन्होंने अपनी आँखों से देखा है?



तुम्हें क्या हो गया है, कैसा फैसला करते हो। क्या तुम सोचते समझते नहीं। या फिर तुम्हारे पास स्पष्ट हुज्जत है? तो पेश करो अपनी किताब अगर तुम सच्चे हो। इन्होंने अल्लाह और जिन्नों के बीच भी वंश का नाता जोड़ रखा है। और जिन्नों को मालूम है कि वे गिरफ्तार कर के पेश किये जाने वाले हैं। (अल-कुर्आन)

154. तुम्हें क्या हो गया है, कैसा फैसला करते हो।

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿١٥٣﴾

155. क्या तुम सोचते समझते नहीं।¹³³

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٤﴾

156. या फिर तुम्हारे पास स्पष्ट हुज्जत है?

أَمْ لَكُمْ سُلْطَنٌ مُّبِينٌ ﴿١٥٥﴾

157. तो पेश करो अपनी किताब अगर तुम सच्चे हो।¹³⁴

فَاتُوا بِكِتَابِكُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٥٦﴾

158. इन्होंने ने अल्लाह और जिन्नों के बीच भी वंश का नाता जोड़ रखा है। और जिन्नों को मालूम है कि वे गिरफ्तार कर के पेश किये जाने वाले हैं।¹³⁵

وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ نِصْبًا
وَلَقَدْ عَلِمَتْ الْجَنَّةُ أَنَّهُمْ كَاخِرُونَ ﴿١٥٧﴾

159. ---- अल्लाह पाक है उन बातों से जो ये बयान करते हैं ----¹³⁶

سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُصِفُونَ ﴿١٥٨﴾

160. सिवाय अल्लाह के ख़ास बन्दों के।¹³⁷

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٥٩﴾

161. अतः तुम और वे जिन की तुम पूजा करते हो।¹³⁸

فَاتُّمُوا مَا تَعْبُدُونَ ﴿١٦٠﴾

162. उस से किसी को फेर नहीं सकते।

مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفَتِنِينَ ﴿١٦١﴾

163. मगर उन्हीं को जो जहन्नम में जाने वाले हैं।¹³⁹

إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيمِ ﴿١٦٢﴾

164. और हम में से हर एक का स्थान सुनिश्चित है।¹⁴⁰

وَمَا مِمَّا إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ ﴿١٦٣﴾

165. और हम पंक्तिबद्ध रहने वाले हैं।¹⁴¹

وَأَنَا لَنَحْنُ الصَّافُونَ ﴿١٦٤﴾

166. और हम तस्बीह (पाकी बयान) करने वाले हैं।¹⁴²

وَأَنَا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ ﴿١٦٥﴾

167. ये लोग कहा करते थे।¹⁴³

وَأَن كَانُوا يَقُولُونَ ﴿١٦٦﴾

168. यदि हमारे पास अगले लोगों की शिक्षा होती।¹⁴⁴

لَوْ أَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِنَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٦٧﴾

169. तो हम अल्लाह के ख़ास बन्दे होते।¹⁴⁵

لَكِنَّا عِبَادُ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٨﴾

133. अर्थात् एक ऐसी बात जो सरासर नामाकूल और बुद्धि में समाने वाली नहीं है अल्लाह की तरफ़ किस तरह मंसूब करते हो? खुदा पर विश्वास के मामले में मनुष्य की अधिकांश गुमराहियाँ इस कारण हैं कि वह अल्लाह की प्रदान की हुई बुद्धि से काम नहीं लेता और ऐसी बातों को आँखें बन्द कर के स्वीकार कर लेता है जो बिल्कुल बुद्धि में समाने वाली नहीं होती। कुर्आन इस पर सख्ती से पकड़ करता है और कहता है कि खुदा पर विश्वास एवं आस्था के मामले में मनुष्य को होश से काम लेना चाहिए और कोई बात अल्लाह की तरफ़ मन्सूब करने से पहले उस की प्रदान की हुई बुद्धि की कसौटी पर उसे परखना चाहिए। धार्मिक लोग यदि अपनी बुद्धिमानता का परिचय देते तो वे अल्लाह के प्रति धारणा बनाने के मामले में गुमराही में न पड़ते।

134. अर्थात् तुम्हारे पास कोई रचनात्मक तर्क है तो प्रस्तुत करो। रचनात्मक तर्क यह कि आसमानी ग्रंथ में खुदा के बारे में कोई बात कही गई हो। मक्का के बहुदेववादियों के पास कोई आसमानी ग्रंथ नहीं था और न किसी आसमानी ग्रंथ में फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ कहा गया है अतः बहुदेववादियों की यह धारणा न तार्किकता की दलील पर आधारित है और न रचनात्मक दलील पर आधारित है बल्कि मात्र मन गढ़ंत बात थी जो अल्लाह की तरफ़ मंसूब कर दी गई थी। भारत के बहुदेववादियों का देवियों का अक़ीदा भी इसी तरह झूठ और ग़लत है क्योंकि कि इस के पक्ष में न कोई तार्किक दलील है न रचनात्मक।

135. अरबों के कुछ क़बीले जिन्नों के बारे में यह धारणा रखते थे कि खुदा से उन का वंशीय सम्बन्ध है। इस का खण्डन करते हुए यहाँ कहा गया है कि जिन्न (अर्थात् शैतान जिन्न) तो क्रियामत के दिन गिरफ़्तार कर के खुदा के समक्ष दण्ड के लिए प्रस्तुत किये जाने वाले हैं। और वे स्वयं अपनी इस हैसियत को अच्छी तरह जानते हैं किन्तु ये बहुदेववादी इन शैतान जिन्नों को ईश्वर का स्थान दे रहे हैं।

136. यह जुमला-ए मोतरिज़ा (व्यवादित वाक्य) है जो बहुदेववादियों के त्रुटिपूर्ण एवं दोषपूर्ण धारणा का खण्डन करता है।

137. इस का सम्बन्ध ऊपर की इस आयत से है जिस में जिन्नों के गिरफ़्तार कर के पेश किये जाने की बात कही गई है। यहाँ अल्लाह के ख़ास बन्दों को अलग करने का मतलब यह है कि जिन्नों में जो अल्लाह के सच्चे दास होंगे वे क्रियामत के दिन सज़ा के लिए पेश नहीं किये जाएंगे। जिन्नों में जहाँ

अधिकता शैतान जिन्नों की है वहाँ उन में अल्लाह के ऐसे दास भी हैं जो मोमिन और नेक हैं।

138. संबोधन बहुदेववादियों से है।

139. अर्थात् तुम उन ही लोगों को गुमराह कर सकते हो और तुम्हारे वे बुत भी उन ही की गुमराही का साधन बन सकते हैं जिन्होंने जहन्नम की राह अपना ली है। अल्लाह के सच्चे बन्दों पर इस का कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता।

140. यह फ़रिश्तों का बयान है जिसे अल्लाह तआला ने कुर्आन में अनुकरण किया है। सूरह की शुरुआत में जो बात फ़रिश्तों के बारे में बयान हुई थी वही बात उन की अपनी ज़बानी इन चन्द आयतों में बयान हुई है।

फ़रिश्ते कहते हैं हम में से हर एक का स्थान सुनिश्चित है। अर्थात् जिस को जिस सेवाकार्य पर नियुक्त किया गया है उस को वही काम अन्जाम देना है। इबादत के सिलसिले में भी और अन्य आदेशों के अनुपालन के सिलसिले में भी। मतलब यह है कि हम अल्लाह के अधीनस्थ दास हैं और हम में से जिस की जो ड्यूटी नियत कर दी गई है वह उस में लगा है।

फ़रिश्तों के इस बयान से बहुदेववादियों की इस धारणा का खण्डन होता है कि वे खुदा की बेटियाँ हैं उन्हें ईश्वरीय सत्ता में कोई अधिकार प्राप्त है।

141. अर्थात् हम अल्लाह की इबादत में पंक्तिबद्ध हो कर खड़े होने वाले हैं। इबादत में पंक्तिबद्धता फ़रिश्तों की विशेषता है जो अल्लाह को अति प्रिय है। इसी लिए इस्लाम ने जमाअत के साथ नमाज़ में जो पाँच वक्त अदा की जाती है पंक्तिबद्ध खड़े होने का आदेश दिया है।

142. अर्थात् हम अल्लाह की पाकी बयान करने में लगे हुए हैं। अल्लाह की पाकी बयान करना उच्च कोटि की इबादत है जिस में फ़रिश्ते लीन रहते हैं। यहाँ फ़रिश्तों का बयान समाप्त हुआ।

143. अर्थात् मक्का के बहुदेववादी कहा करते थे।

144. अर्थात् जिस प्रकार यहूदियों और ईसाइयों को आसमानी किताब मिली उसी तरह यदि हमें कोई आसमानी किताब मिली होती।

145. अर्थात् दावा तो उन का यह था कि यदि हमें कोई आसमानी किताब मिली होती तो हम अल्लाह के ख़ास बन्दे बन गए होते। लेकिन जब अल्लाह तआला ने उन के पास किताब (कुर्आन) भेजी तो वे उस के इन्कारी हो गए।

170. मगर इन्होंने ने उस का इन्कार कर दिया तो वे शीघ्र ही जान लेंगे।¹⁴⁶

فَكَفَرُوا بِهِ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿١٤٠﴾

171. और हमारा फ़रमान हमारे बन्दों के लिए पहले ही सादिर हो चुका है।¹⁴⁷

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِجِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ﴿١٤١﴾

172. कि निश्चय ही उन की सहायता की जाएगी।¹⁴⁸

إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ ﴿١٤٢﴾

173. और हमारा लश्कर ही विजयी (ग़ालिब) हो कर रहेगा।¹⁴⁹

وَرِئَانٌ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿١٤٣﴾

174. तो इन की ओर से अपना ध्यान हटा लो एक समय तक के लिए।¹⁵⁰

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٤٤﴾

175. और देखते रहो।¹⁵¹ वे भी शीघ्र ही देख लेंगे।¹⁵²

وَأَبْصُرُهُمْ فَسَوْفَ يُبْصَرُونَ ﴿١٤٥﴾

176. क्या वे हमारे अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं ?

أَفِعْدَا إِنَّا يَنْتَعِظُونَ ﴿١٤٦﴾

177. जब वह उन के आँगन में उतरेगा तो बहुत बुरी होगी उन लोगों की सुबह जिनको इस से ख़बरदार किया जा चुका है।¹⁵³

فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ ﴿١٤٧﴾

178. तो उन की ओर से ध्यान हटा लो एक समय तक के लिए।

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٤٨﴾

179. और देखते रहो, वे भी बहुत जल्द देख लेंगे।

وَأَبْصُرُهُمْ فَسَوْفَ يُبْصَرُونَ ﴿١٤٩﴾

180. पाक है तुम्हारा रब, रब्बुलइज़्ज़त ¹⁵⁴ उन बातों से जो ये लोग बयान करते हैं।¹⁵⁵

سُبْحَنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٥٠﴾

181. और सलाम है पैग़म्बरों पर।¹⁵⁶

وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ﴿١٥١﴾

182. और हम्द (सारी प्रशंसा) है अल्लाह रब्बुलआलमीन के लिए।¹⁵⁷

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٥٢﴾

146. अर्थात् बहुत जल्द उन्हें अपना अन्जाम मालूम हो जाएगा ।

147. अर्थात् रसूलों से अल्लाह का यह वादा पहले ही हो चुका है।

148. रसूल को कितनी ही आजमाइशों से गुजरना पड़े अल्लाह की मदद उसी के साथ होती है। अतः रसूल की बात हमेशा बुलन्द रहती है और उस को इज्जत हासिल होती है। उस की तर्क प्रस्तुति दिल और दिमाग को जीत लेती है और जब सत्य और असत्य का मुकाबला होता है तो सत्य जो हमेशा रसूल के साथ होता है, विजयी होता है।

149. रसूल का साथ देने वाले ईमान वालों को अल्लाह तआला ने अपना लश्कर कहा है और फ़रमाया है कि अंततः यही लश्कर विजयी होने वाला है। और नबियों का इतिहास इस का साक्ष है। अतः फ़िरऔन के मुकाबले में जीत बनी इस्राईल ही की हुई। अन्य रसूलों के मामले में भी यही हुआ कि उन के विरोधी विनष्ट कर दिये गए और ईमान वाले ही बचा लिए गए वा अन्ततः प्रभुत्व उन्हीं को प्राप्त हुआ। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में भी कुर्आन की यह बात शब्द शब्द पूरी हुई। ईमान वालों ही का लश्कर आखिरकार काफ़िरों पर विजय पा गया और अरब की पावन धरती पर इस्लाम का प्रभुत्व स्थापित हो गया।

150. अर्थात् वे जब इन्कार ही पर तुले हुए हैं तो इन को एक समय के लिए इन के हाल पर छोड़ दो।

151. अर्थात् अन्जाम का इन्तिज़ार करो।

152. अर्थात् इन को शीघ्र ही बुरे अन्जाम से दो चार होना पड़ेगा। सो इस के थोड़े ही समय बाद जंगों का सिलसिला शुरू

हो गया और ईमान वालों के हाथों काफ़िरों को मौत के घाट उतरना पड़ा यहाँ तक कि उन का बिलकुल ही उन्मूलन हो गया।

153. बद्र की जंग भी सुबह के समय हुई थी जिस में ईमान वालों की तलवार काफ़िरों पर प्रकोप बन कर टूटी थी और मक्का विजय भी सुबह के समय ही हुआ जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दस हजार लश्कर के साथ मक्का में प्रविष्ट हुए और काबा को अपने क़ब्जे में ले कर मस्जिदे-हराम (प्रतिष्ठित मस्जिद अर्थात् काबा शरीफ़) में जम गए और वहाँ से काफ़िरों को गिरफ़्तार करने और उन को क़त्ल करने के आदेश जारी किये। इस प्रकार अल्लाह का प्रकोप ईमान वालों की तलवार के रूप में मक्का के काफ़िरों पर नाज़िल हुआ और यह सुबह उन के लिए बहुत बुरी सिद्ध हुई। इस प्रकार कुर्आन की बात शब्द शब्द पूरी हुई।

154. रब्बुल इज्जत का अर्थ है प्रभुत्वशाली, सत्तावान और बुलन्दियो वाला।

155. अर्थात् उन तमाम दोषों, ऐबो, और कमज़ोरियों से जो बहुदेववादी उस से सम्बन्ध बताते हैं।

156. अर्थात् समस्त पैगम्बरों के लिए अल्लाह के पास अमन और सलामती है। वे हर आफ़त से सुरक्षित हैं और इस के योग्य पात्र हैं कि ईमान वालों की ज़बान पर उन के लिए सलाम के दुआ भरे शब्द हों। وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ सलामुन अललमुर्सलीन

157. इशारा है इस बात की तरफ़ कि अल्लाह ने अपने रसूलों की जिस प्रकार मदद की है और उन के लिए आजमाइशें जिस प्रकार बुलन्दी का माध्यम सिद्ध हुई हैं इस पर निश्चय ही वह प्रशंसा, एवं शुक्र का अधिकारी है।

हम्द की व्याख्या के लिए देखिए सूरह फ़ातिहा नोट २



सूरह सॉद

३८. सूरह सॉद

नाम :- सूरह की शुरुआत शब्द “सॉद” से हुई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम सॉद है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि नुबुव्वत के आठ दस वर्ष बाद नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- तज़कीर (याददेहानी और नसीहत) है इस पहलू से कि अल्लाह की ओर रुजू (पलटने) और विनम्र भाव उत्पन्न हो जाए। अतः इस में नबियों की जीवनी के इस पक्ष को उजागर किया गया है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ११ भूमिका की आयतें हैं जिन में कुआन के याददेहानी कराने वाली किताब के पहलू को उजागर करते हुए ख़बरदार किया गया है कि जो लोग इस याददेहानी का असर कुबूल नहीं करेंगे वे अपने को बुरे अंजाम तक पहुँचाएँगे।

आयत १२ से १६ में संक्षेप में उन जातियों के अन्जाम

से सज़ा किया गया है जिन्होंने रसूलों को झुठलाया था।

आयत १७ से ४८ में नबियों की जीवनी के वे पक्ष उभारे गये हैं जो अल्लाह की तरफ़ पलटने (रूजू करने) तथा विनम्रता के उत्तम उदाहरण हैं।

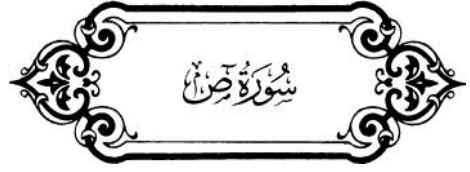
आयत ४९ से ६४ में अल्लाह से डरने वालों और उस से विद्रोह करने वालों का अलग अलग आख़िरत का अन्जाम बयान हुआ है।

आयत ६५ से ८५ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नज़ीर (ख़बरदार करने वाला) होने की हैसियत को स्पष्ट करते हुए इन्कार करने वालों को सचेत किया गया है कि वे याद रखें उन के घमण्ड का भी वही अन्जाम निकलेगा जो इब्लीस के अहं का निकला।

आयत ८६ से ८८ सूरह की समापन आयतें हैं जिन में पैग़म्बर की सर्वप्रिय एवं सच्चे व्यक्तित्व, कुआन की नसीहत भरी शिक्षा और उस की दी हुई ख़बर के निश्चित रूप से घटित होने की ओर संकेत किये गए हैं।

३८. सूरह साँद

आयतें : ८८



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. साँद ¹। याददेहानी से भरे कुर्आन की क्रसम ²
(यह अल्लाह का नाज़िल किया हुआ है।)

ص وَالْقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ ^①

2. मगर इन्कार करने वाले घमण्ड और हृद्दुर्मी में
मुब्तिला हैं।³

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ ^②

3. इन से पहले हम कितनी ही जातियों को विनष्ट
कर चुके हैं। वे उस समय चीख उठे जब बचने
की कोई सूरत बाक़ी नहीं रही थी।⁴

كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ
فَنَادَوْا وَآلَاتٍ حِينَ مَنَاصٍ ^③

4. इन लोगों को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि इन
के पास इन ही में से एक ख़बरदार करने वाला
आ गया। और काफ़िरो ने कहा यह जादूगर है
झूठा।

وَعَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ وَقَالَ الْكَافِرُونَ هَذَا سِحْرٌ
كَذَّابٍ ^④

5. क्या इस ने समस्त पूज्यों की जगह एक पूज्य
बना डाला? यह तो बड़ी अजीब बात है।⁵

أَجَعَلَ الْإِلَهَةَ الْهَاءَ وَاحِدَةً إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ^⑤

6. उन के सरदार निकल खड़े हुए कि चलो और
अपने पूज्यों पर जमे रहो। इस बात से (जो यह
व्यक्ति कह रहा है) वांछित कुछ और ही है।⁶

وَأُطْلِقَ السَّلَامَةُ أَنْ أَمْشُوا وَاصْبِرُوا عَلَى إِلَهَتِكُمْ إِنَّ هَذَا
لَشَيْءٌ يُرَادُ ^⑥

7. यह बात हम ने गुजरे हुए मज़हब वालों में नहीं
सुनी।⁷ यह बस एक मन गढ़ंत बात है।

مَا سَبَعْنَا بِهَذَا فِي الْإِلَهِ الْأُخْرَى إِنَّ هَذَا إِلَّا خِلَاقٌ ^⑦

8. क्या हमारे बीच इसी व्यक्ति पर याददेहानी
उतारी गई।⁸ असल बात यह है कि ये लोग मेरी
याददेहानी के बारे में शक में मुब्तिला हैं। इन्होंने
अभी मेरे अज़ाब (यातना) का मज़ा नहीं चखा।⁹

أُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِنْ
ذِكْرِي بَلْ لَمَّا يَدْعُونَ وَفَوَاعِدَابٍ ^⑧

9. क्या तुम्हारे प्रभुत्वशाली और कृपाली रब के
ख़ज़ाने इन के पास हैं ?¹⁰

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ^⑨

1. यह विभक्त अक्षरों (हुरुफ़े मुकत्तआत) में से है। व्याख्या के लिए देखिए सूरह बकर: नोट १ और सूरह यूनस नोट १ और सूरह अन्कबूत नोट १

इस सूरह में “सौद” का इशारा साफ़िनात (घोड़े) की तरफ़ है। यह शब्द आयत ३१ में हज़रत सुलैमान के घोड़े के लिए प्रयुक्त हुआ है। जो एक खास शब्द (Singnificant word) है। ये शब्द जिन सूरतों की शुरूआत में आए हैं व उन सूरतों के साथ न केवल गहरी मुनासिबत रखते हैं बल्कि आवाज़ की दृष्टि से भी उन से मेल खाते हैं जिन के कारण कलाम अत्याधिक सारगर्भित एवं प्रभावपूर्ण हो गया है। ये शब्द अपनी अपनी जगह इस तरह फिट बैठ रहे हैं कि यदि कोई व्यक्ति एक शब्द को दूसरे शब्दों से बदलना चाहे तो यह सागर्भिता, उचितता, यह ध्वनि प्रभाव बाक़ी नहीं रहेगा। मिसाल के तौर पर आयत “सौद वल कुर्आनि जिज़्ज़िकरि” وَالْقُرْآنُ ذِي الذِّكْرِ में “सौद” की जगह “काफ़” रखा जाए और सूरह “काफ़” की पहली आयत “काफ़” الْقُرْآنُ الْمَجِيد में “काफ़” की जगह “सौद” रखा जाए तो पढ़ने में तकल्लुफ़ भी महसूस होगा और ठीक भी नहीं बैठेगा। यह इस बात का सबूत है कि कुर्आन चमत्कारी कलाम है जिस का एक शब्द भी दूसरे शब्द से बदला नहीं जा सकता। फिर ये शब्द सम्बन्धित आयतों से इस तरह जुड़े हुए हैं कि यदि कोई व्यक्ति इन को काट कर के आयतों को पढ़ना चाहे जैसे “सौद” وَالْقُرْآنُ ذِي الذِّكْرِ “वलकुर्आनि जिज़्ज़िकरि” के बजाए “वलकुर्आनि जिज़्ज़िकरि” से सूरह की शुरूआत करना चाहे तो उसे बड़ा अटपटा और खाली खाली महसूस होगा। यह इस बात का प्रमाण है कि विभक्त अक्षर कुर्आन में यूँ ही नहीं आए बल्कि वे कुर्आन की चमत्कारिक शान को दर्शाते हैं।

2. कुर्आन की एक महत्पूर्ण विशेषता यह है कि वह याददेहानी से भरा हुआ है। याददेहानी इस बात की कि अल्लाह ही इन्सान का रब है, इस बात की भी कि रसूलों को झुठलाने वाले बुरे अन्जाम से दो चार हुए। इस बात की भी कि समस्त आसमानी ग्रंथों की शिक्षा एक अकेले ख़ुदा की बन्दगी और अपने सुधार एवं परहेज़गारी की शिक्षा थी। तथा उस पाठ की भी जो पहले दिन हज़रत आदम को पढ़ाया गया था कि शैतान इन्सान का दुश्मन है। उस की फ़रेब की बातों में न आना।

कुर्आन की यह याददेहानी सत्य एवं वास्तविकता पर आधारित है और अपने अन्दर संपूर्ण रूप से प्रभाव शक्ति रखती है। और उस की यह खास शान उस के अल्लाह के कलाम होने की स्पष्ट दलील है।

3. अर्थात् अल्लाह ने याददेहानी से भरी यह किताब इस लिए उतारी ताकि लोग याददेहानी हासिल करें। मगर ये इन्कार

करने वाले इस से कोई सबक़ हासिल नहीं कर रहे हैं। और सबक़ हासिल न करने का कारण यह है कि ये लोग घमण्ड और हठधर्मी में लिप्त हैं। एक ओर अन्दर का घमण्ड इन्हें सत्य स्वीकारने से रोके हुए हैं। दूसरी ओर वैमनस्य एवं पक्षपात और यही हाल आज कल के कुर्आन का इन्कार करने वालों का भी है। वे कुर्आन की शिक्षाओं से परिचित होने के बावजूद इस लिए टस से मस नहीं होते की उस की शिक्षा को स्वीकार करने में वे अपनी हैटी और अपनी तौहीन समझते हैं। और धार्मिक वैमनस्य एवं पक्षपात भी एक ऐसे दीन को स्वीकार करने में बाधक होता है जो उन के अपने वर्ग का दीन नहीं है।

4. अर्थात् उन विनष्ट हुई जातियों का हाल यह रहा कि पहले तो उन्होंने नसीहत को सुनी अनसुनी कर दिया लेकिन जब प्रकोप सामने आ गया तो लगे फ़रियाद करने। मगर मोहलत समाप्त हो जाने के बाद वे अज़ाब से कहाँ बच सकते थे।

5. अर्थात् समस्त पूज्यों को ग़लत और केवल एक अल्लाह को वास्तविक पूज्य बताया। बहुदेववादियों को इस पर आश्चर्य होता है कि ख़ुदा एक कैसे हो सकता है। ख़ुदा तो बहुत होने चाहिए। कम से कम तीन और अधिक से अधिक हज़ारों हालाँकि बुद्धि में न समाने वाली बात असंख्य पूज्यों की धारणा ही है।

6. यह चरित्र चित्रण है पैग़म्बर के पास से सरदारों के निकल खड़े होने का अपने साथियों से यह कहते हुए कि वे आप के पास से हट जाएँ और अपने पूज्यों पर जमे रहें क्यों कि बाह्य रूप से तो यह व्यक्ति अल्लाह को पूज्य मानने की दअवत दे रहा है लेकिन उद्देश्य कुछ और ही है अर्थात् अपने नेतृत्व का सिक्का जमाना।

7. अर्थात् हमारा जो धर्म गुज़रे हुए लोगों से चला आ रहा है वह वही बहुदेववादी धर्म है। अल्लाह को एक मात्र पूज्य ठहराने की बात तो हम ने उन लोगों से नहीं सुनी।

बहुदेववादियों की यह बात सरासर ग़लत थी क्योंकि तौहीद (एकेश्वरवाद) का स्पष्ट सबूत ख़ान-ए-काबा था जिस का निर्माण हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने किया था और कुरैश उन ही की नस्ल से थे। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी नियुक्त होने से पहले भी तौहीद को मानने वाले कुछ न कुछ लोग मौजूद रहे हैं।

8. अर्थात् यदि अल्लाह को किताब उतारनी थी तो उस ने हमारे में से उसी व्यक्ति का निर्वाचन क्यों किया और बड़े बड़े सरदारों को क्यों छोड़ दिया?

9. यह अल्लाह तआला का बयान है कि इन लोगों को वास्तव में इस बात का विश्वास ही नहीं हो रहा है कि अल्लाह की तरफ़ से कोई याददेहानी (किताब) अवतरित हो सकती है और जब तर्कों एवं साक्ष्यों के बावजूद ये शक में पड़े हुए हैं तो

इन का यह शक तभी दूर होगा जब वे अज़ाब की लपेट में आ जाएंगे।

10. यह उन के उस एतिराज़ भरे प्रश्न का उत्तर है कि हमारे बीच से इस व्यक्ति ही को रिसालत के लिए क्यों चुना। फ़रमाया क्या अल्लाह की दयालुता के ख़ज़ाने इन के पास हैं कि अल्लाह इन की मन्शा के अनुसार रसूल बनाने के लिए किसी का निर्वाचित करे। अगर वास्तविकता यह नहीं है कि

अल्लाह की दयालुता के ख़ज़ाने अल्लाह ही के हाथ में हैं तो फिर वह अपनी दयालुता से जिस को भी अलंकृत करे किसी को एतिराज़ का क्या हक़ है? वह प्रभुत्वशाली है इस लिए उस का हर फैसला लागू हो कर रहता है और इस में किसी की मज़ाल नहीं कि तनिक भी हस्तक्षेप कर सके। तथा वह कृपालु एवं दान शील है इस लिए अपने जिस बन्दे को चाहता है अपनी बख़्शिशों से मालामाल कर देता है।



इन से पहले नूह की क़ौम, और आद, और लश्करोँ वाले फ़िरऔन ने झुठलाया था। और समूद और लूत की क़ौम और ऐका वालों ने भी ये वे गिरोह थे, जिन में से हर एक ने रसूलों को झुठलाया तो मेरा अज़ाब उन पर लागू हो गया। ये लोग एक हौलनाक आवाज़ के प्रतिकीत हैं जिस के बाद तनिक भी अवकाश न होगा। और यह लोग कहते हैं ऐ हमारे रब ! हिसाब के दिन से पहले ही हमारा हिस्सा हमें शीघ्र दे दें। (अल-कुर्आन)

10. या ये आसमानों और ज़मीन और इन के बीच मौजूद वस्तुओं पर प्रभुत्व रखते हैं ? ऐसा है तो वे आसमानों में चढ़ जाएँ।¹¹

أَمْلَهُمْ مِّلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَكَيْفَ تَقُولُوا
فِي الْأَسْبَابِ ⑩

11. ये (काफ़िर) गिरोहों में से एक लश्कर है जो इसी जगह परास्त होगा।¹²

جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ ⑪

12. इन से पहले नूह की क्रौम, और आद, और लश्करों वाले फ़िरऔन ने झुठलाया था।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَارِ ⑫

13. और समूद और लूत की क्रौम और ऐका वालों ने भी¹³ ये वे गिरोह थे,

وَتَمُودٌ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ لَيْكَةِ أُولَٰئِكَ الْأَحْزَابُ ⑬

14. जिन में से हर एक ने रसूलों को झुठलाया तो मेरा अज़ाब उन पर लागू हो गया।

إِنْ كُلٌّ إِلَّا كَذَبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ⑭

15. ये लोग एक हौलनाक आवाज़ के प्रतिक्षीत हैं जिस के बाद तनिक भी अवकाश न होगा।¹⁴

وَمَا يَنْظُرُهُمْ إِلَّا الصَّيْحَةُ وَاحِدَةً مَّا لَهَا
مِنْ فَوَاقٍ ⑮

16. और ये लोग कहते हैं ऐ हमारे रब ! हिसाब के दिन से पहले ही हमारा हिस्सा हमें शीघ्र दे दे।¹⁵

وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّلْ لَنَا قِطْنَ قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ⑯

17. ऐ नबी इन की बातों पर सब्र करो और हमारे बन्दे दाऊद का हाल बयान करो जो शक्ति वाला था।¹⁶ वह अल्लाह की तरफ़ बड़ा ही रुजू करने वाला था।¹⁷

اصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَادْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُدَ
إِذْ أُوتِيَ آيَاتِنَا ⑰

18. हम ने पहाड़ों को वशीभूत कर दिया था कि उस के साथ वे शाम को और सुबह को तस्बीह (पाकि बयान) करते।¹⁸

إِنَّا سَخَرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعِشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ⑱

19. और परिन्दे भी जमा हो कर ।¹⁹ सब अल्लाह की तरफ़ रुजू करने वाले थे।²⁰

وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً كُلٌّ لَّهِ آوَابٌ ⑲

20. हम ने उस के राज्य को मज़बूत कर दिया था।²¹ और उस को हिकमत (तत्वज्ञान)²² और क्रौले-फैसल (निर्णायक बात कहने की क्षमता) प्रदान किया था।²³

وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَأَتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ وَفَصَّلَ الْخِطَابِ ⑳

11. अर्थात् यदि आसमान और ज़मीन की सत्ता इन को प्राप्त है तो ये आसमान में चढ़ कर जाते क्यों नहीं? और जो प्रकाशना (वह्य) ऐ पैग़म्बर वहाँ से तुम पर अवतरित हो रही है उस को रोकते क्यों नहीं? अगर यह बातें इन के बस में नहीं हैं और स्पष्ट है कि नहीं हैं तो फिर अल्लाह के इस फैसले के मुक़ाबले में जो उस ने रिसालत से सम्बन्धित किया है इन के अहं एवं घमण्ड में लिप्त होने का क्या औचित्य?

12. अर्थात् ये आज अल्लाह के रसूल के मुक़ाबले में घमण्डी बने हुए हैं परन्तु शीघ्र ही वह समय आएगा जब सत्य और असत्य की जंग का मैदान गर्म होगा। उस समय इन इन्कारियों का लश्कर बिलकुल निर्मूल होगा और उसी स्थान पर बुरी तरह परास्त होगा। अतः मक्का विजय के अवसर पर इन काफ़िरों का लश्कर बुरी तरह निर्मूल था। यहाँ तक कि ये लोग इस्लामी लश्कर का मुक़ाबला ही न कर सके। इस प्रकार कुर्आन की यह भविष्यवाणी पूरी हो कर रही कि रसूल के मुक़ाबले में काफ़िरों का यह लश्कर अंततः पराजित होगा ठीक उसी तरह जिस तरह काफ़िरों के दुसरे गिरोहों ने रसूलों के मुक़ाबले में मात खाई थी।

13. शुऐब की जाति मुराद है। व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिज़्र नोट ७७

14. सैहता “हौलनाक आवाज़” से तात्पर्य क्रियामत का दूसरा सूर है। यह हौलनाक आवाज़ ऐसी होगी कि तमाम मरे हुए लोग तुरंत ज़िन्दा उठ खड़े होंगे ताकि अपने रब के समक्ष अपने कर्मों की जवाबदेही करें। इस हौलनाक आवाज़ के बाद कोई मोहलत और कोई अवकाश उठ खड़े होने के लिए नहीं मिल सकेगा बल्कि उसी क्षण उपस्थित होना पड़ेगा।

15. हिसाब के दिन की बात जब इन इन्कारियों के बीच की जाती तो वे ग़ैर संजीदा हो जाते और कहते जो अज़ाब हमारे हिस्से में आने वाला है वह हमें दुनिया ही में नज़्द मिल जाए तो अच्छा है। क्रियामत तक कौन इन्तिज़ार करेगा।

16. अर्थात् हज़रत दाऊद का व्यक्तित्व बड़ा ही बलिष्ठ एवं शक्तिशाली था। शारीरिक दृष्टि से वे भारी भरकम थे। अतः जालूत जैसे लहीम शहीम आदमी को उन्होंने ने अकेले ढेर कर दिया था। (सूरह बक्रर: आयत २५१) और उन्होंने ने इस जंग में बहादुरी के जो जौहर दिखाए उस के फलस्वरूप उन्हें प्रसिद्धी

मिली। फिर उन के हाथ में लोहा नर्म कर दिया गया था और वे उस से कवच बनाते थे। इसी प्रकार वे राजनीतिक दृष्टि से भी काफ़ी शक्तिशाली थे क्योंकि उन का राज्य अत्यंत सुदृढ़ था।

17. अल्लाह की तरफ़ रज़ू करने (पलटने) का अर्थ उस के ध्यान में रहना है, हर मामले में उस की ओर पलटना, अपनी ग़लतियों पर उस के समक्ष प्रायश्चित करना और उस की इबादत तथा उस के अनुपालन का मार्ग अपनाना है।

हज़रत दाऊद के इन गुणों को बयान करने से अभिप्रेत यहाँ यह स्पष्ट करना है कि विनष्ट की गई जातियों आद, समूद और फ़िरऔन आदि को अल्लाह ने शक्तिशाली बनाया था किन्तु उन्होंने ने अपनी शक्ति के घमण्ड में अल्लाह से विद्रोह किया। इस के विपरीत दाऊद अलैहिस्सलाम का व्यक्तित्व ऐसा है कि अत्यंत शक्तिशाली होने के बावजूद वे अल्लाह की तरफ़ रज़ू करने (पलटने) वाले थे। ये लोग यदि उस अनुकरणीय व्यक्तित्व को सामने रखे तो अपनी भौतिक शक्ति पर इतराएँ नहीं बल्कि अल्लाह की तरफ़ रज़ू करें।

18. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अंबिया नोट १०६

19. दाऊद अलैहिस्सलाम जब अपने विशिष्ट सुन्दर कंठ के साथ तस्बीह में लीन होते तो पहाड़ों से भी यही आवाज़ बुलन्द होती और परिन्दों के झुंड के झुंड जमा हो कर अल्लाह के गुणगान में तल्लीन होते। इस प्रकार बड़ा ही सुन्दर एवं विस्मृत वातावरण बन जाता। यह अल्लाह की तरफ़ से हज़रत दाऊद के पक्ष में एक चमत्कार का प्रदर्शन था।

अर्थात् दाऊद ही नहीं उन के साथ पहाड़ और परिन्दे भी अल्लाह के ध्यान में लीन हो जाते थे।

21. बनी इस्राईल के पावन धरती (फ़लस्तीन) में प्रविष्ट होने के बाद उन्हें निरंतर जंगों का सामना करना पड़ा और क्रमवार वे फ़लस्तीन के क्षेत्र जीतते चले गए। यहाँ तक कि हज़रत दाऊद के हाथों एक मज़बूत शासन राज्य स्थापित हो गया और राज्य का क्षेत्र काफ़ी विस्तीर्ण हुआ।

22. अर्थात् सूझ बूझ एवं बुद्धिमत्ता।

23. अर्थात् उन्हें दो टूक और निर्णायक बात कहने की असाधारण क्षमता प्रदान की गई थी इस लिए उन के कलाम में बेपनाह तासीर होती और मुक़दमों के फैसलों में भी उन की यह विशेषता उजागर होती।

21. क्या तुम्हें मुकदमें वालों की खबर पहुँची है ? जो दीवार पर चढ़ कर एकान्त कक्ष में घुस आए थे।²⁴

وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْحُرَابَ ۖ (٢١)

22. जब वे दाऊद के पास पहुँचे तो वह उन्हें देख कर घबरा गया।²⁵ उन्होंने ने कहा डरिये नहीं हम मुकदमें के दो फ़रीक़ हैं। एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है। आप हमारे बीच हक़ के साथ फैसला कर دیجिए और अन्याय न किजिए और हमें सीधी राह दिखाइए।²⁶

إِذْ دَخَلُوا عَلَى دَاوُدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا لَا تَحْزَنْ خَصْمَانِ بَغَى بَعْضُنَا عَلَى بَعْضٍ فَاحْكُم بَيْنَنَا يَاحَيُّوهُ لَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَى سَوَاءِ الصِّرَاطِ ۖ (٢٢)

23. यह मेरा भाई है। इस के पास नित्यान्वे दुम्बियाँ हैं और मेरे पास एक ही दुम्बी है। उस ने कहा यह भी मेरे हवाले कर दे और बहस में इस ने मुझे दबा लिया।²⁷

إِنَّ هَذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْبَةً وَلِي نَعْبَةٌ وَاحِدَةٌ فَقَالَ أَكْفِلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ۖ (٢٣)

24. दाऊद ने कहा इस ने तुम्हारी दुम्बी को अपनी दुम्बी के साथ मिलाने का मुतालबा कर के निश्चय ही तुम पर ज़ुल्म किया²⁸ और अधिकतर साझी एक दूसरे पर ज़्यादती करते हैं।²⁹ बस वही लोग इस से बचे हुए हैं जो ईमान रखते और नेक कर्म करते हैं³⁰ और ऐसे लोग बहुत थोड़े हैं³¹ और दाऊद समझ गया कि हम ने उस की आजमाइश की है। और (यह खयाल आते ही) उस ने अपने रब से क्षमा याचना की और उस के आगे झुक पड़ा और रुजू किया।³²

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْبَتِكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْخُلَطَاءِ لِيَبْغِيَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَّا هُمْ وَظَنَّ دَاوُدُ أَنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ ۖ (٢٤)

25. तो हम ने उस का अपराध क्षमा कर दिया³³ और निस्संदेह उस के लिए हमारे पास सामीप्य का स्थान और बेहतरीन ठिकाना है।

فَغَفَرْنَا لَهُ ذَلِكَ وَإِنَّ لَهُ عِندَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَّآبٍ ۖ (٢٥)

26. ऐ दाऊद ! हम ने तुम्हें ज़मीन पर खलीफ़ा³⁴ बनाया है अतः लोगों के बीच हक़ के साथ फैसला करो और नफ़्स की इच्छाओं की पैरवी न करो कि वो तुम्हें अल्लाह की राह से भटका दे।³⁵ जो लोग अल्लाह की राह से भटकते हैं उन के लिए कड़ी सज़ा हैं, इस वजह से कि उन्होंने ने हिसाब के दिन को भुला दिया।³⁶

يَا دَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُم بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يُضِلُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا يَوْمَ الْحِسَابِ ۖ (٢٦)

24. यहाँ उन मुकदमे वालों का क्रिस्सा बयान किया जा रहा है जो यकायक दीवार फाँद कर दाऊद अलैहिस्सलाम के एकान्त कक्ष में घुस आए थे।

“मेहराब” का अर्थ एकान्त कक्ष है जो इबादत के लिए खास था। इस से अन्दाज़ा होता है कि जिस समय मुकदमे वाले अन्दर घुस आए उस समय हज़रत दाऊद इबादत में लगे हुए थे।

25. वे बेवक्त हज़रत दाऊद के पास पहुँचे थे और एकान्त कक्ष (मेहराब) का दरवाज़ा बन्द देख कर दीवार पर से अन्दर घुस आये थे। उन के इस तरह अचानक घुस आने से हज़रत दाऊद घबरा गए कि मालूम नहीं कि ये किस इरादे से आए हैं। उन की यह घबराहट बिल्कुल स्वाभाविक थी।

26. मुकदमे वालों ने हज़रत दाऊद को इत्मीनान दिलाया कि हमारे आने का उद्देश्य इस के सिवा कुछ नहीं है कि जो “नज़ाअ”(झगड़ा) हमारे आपस में उत्पन्न हुआ है उस का आप फैसला करें। मगर उन की बात चीत का ढंग अशोभनीय था अतः उन्होंने ने यह सख्त अल्फ़ाज़ अकारण इस्तेमाल किये कि अन्याय न कीजिए जब कि हज़रत दाऊद नबी थे और एक नबी के बारे में यह गुमान नहीं किया जा सकता कि वह अन्याय करेगा।

27. एक फ़रीक़ (वादी) ने मुकदमा इस तरह पेश किया कि वह दूसरा फ़रीक़ (प्रतिवादी) वास्तव में मेरा भाई है और निन्यान्वे दुम्बियों (भेड़ों) का मालिक है और मेरी केवल एक दुंबी है जिस के बारे में उस का मुतालबा यह है कि मैं इस को भी इस उस के हवाले कर दूँ। मुझे यह बात पसंद नहीं है परन्तु यह बहस में मुझे दबा लेता है और इस पर आपस में तकरार होती है अतः आप इन्साफ़ के साथ फैसला कीजिए कि क्या इस की यह माँग सही है ?

स्पष्ट रहे कि दूसरे फ़रीक़ (प्रतिवादी) ने पहले फ़रीक़ (वादी) से यह माँग नहीं की थी कि मुझे तू अपनी दुंबी भी दे दे बल्कि माँग यह की थी कि इस को मेरे हवाले कर दे ताकि मैं इस की देख रेख करूँ जैसा कि शब्द “अक्रिफ़लनीहा”(इस को मेरी निगरानी में दे दे) से स्पष्ट है। उस का इरादा तो उस दुंबी को हड़प करने का ही रहा होगा इसी लिए तो उस को इस बात पर हट रहा होगा कि वह दुंबी उस के हवाले कर दे ताकि वह अपनी निन्यान्वे दुंबी में उस को शामिल कर ले और सौ की संख्या पूरी हो जाए। मगर उस ने अपने इस लोभ की पूर्ति के लिए माँग कुछ इस तरह से की कि वह दुंबी की जो अकेली है, रखवाली करना चाहता है। वह चूँकि उस का भाई था इस लिए उस ने जोर दे कर कहा होगा कि तू अपनी एक दुंबी को चराने का और उस के संरक्षण का कहाँ प्रबन्ध कर सकता है। मेरी दुबियों के साथ

इस को मिला दे तो आसानी से यह प्रबन्ध हो जाएगा। मगर उस का भाई समझ गया कि उस की नियत बुरी है इस लिए वह अपनी दुंबी उस के हवाले करने से इन्कार करता रहा। किन्तु जब दूसरी ओर से हट बढ़ता गया और तकरार तक नौबत पहुँची तो दोनों फ़रीक़ फ़ैसले के लिए हज़रत दाऊद की शरण में उपस्थित हुए।

28. दूसरे फ़रीक़ (प्रतिवादी) की बात भी हज़रत दाऊद ने सुन ली होगी। क्यों कि किसी जज से यह आशा नहीं की जा सकती कि वह एक पक्ष की बात सुन कर फैसला कर देगा। परन्तु कुर्आन ने उस का बयान इस लिए उद्धृत नहीं किया कि उस के बयान से पहले फ़रीक़ (वादी) का दावा ग़लत सिद्ध नहीं हो रहा था। विशेष रूप से इस लिए भी कि दूसरे फ़रीक़ (प्रतिवादी) का दावा यह नहीं था कि यह दुंबी मेरी है जैसा कि ऊपर के नोट में स्पष्ट किया गया है।

हज़रत दाऊद ने फ़ैसला यह दिया कि इस व्यक्ति की एक दुंबी को अपनी दुंबियों में शामिल करने का प्रतिवादी (दूसरे फ़रीक़) की माँग सरासर ग़लत और वादी (पहले फ़रीक़) की हक़ तल्फ़ी है। जब पहला फ़रीक़ (वादी) अपनी दुंबी को दूसरे फ़रीक़ (प्रतिवादी) के हवाले करना नहीं चाहता तो उसे अपनी बात पर हट करने का कोई हक़ नहीं यह फ़ैसला अत्यंत उचित एवं न्यायकारक था।

29. साझे में काम करने वाले लोग सामान्य रूप से एक दूसरे पर जो ज़्यादाती करते हैं उन के सिलसिले में हज़रत दाऊद ने इस अदालती राय की अभिव्यक्ति की। इस में इस बात की ओर संकेत था कि उस ग़रीब की एक दुंबी को अपने माल में साझे के रूप में शामिल करने की माँग उस को हड़पकर जाने की एक चाल है।

30. मुकदमे वालों ने हज़रत दाऊद से यह भी अनुरोध किया था कि वे उन्हें सीधी राह दिखाएँ। अतः हज़रत दाऊद ने अपना फैसला सुनाते हुए यह रहनुमाई भी दी कि मोमिन जैसी नेक ज़िन्दगी ही इन्सानों को खुदा के बन्दों की हक़तल्फ़ी से बचाती है।

31. अर्थात् अल्लाह के ऐसे बन्दे जो अपने ईमान में सच्चे और अपने व्यवहारिक जीवन में नेक और सुलझे हुए हों बहुत कम हैं और यह सच्चाई है कि हर ज़माने में ऐसे लोग थोड़े ही रहे हैं। क्यों कि अपने अन्दर सदगुणों का पैदा करना सर्वाधिक मुश्किल काम है। और दुनिया में उच्च कोटि की वस्तुएँ कम ही पायी जाती हैं। हीरे जवाहरात दुर्लभ हैं जब कि पत्थर भारी मात्रा में उपलब्ध हैं। सोना कम पाया जाता है जब कि हर प्रकार की धातुएँ खूब पायी जाती हैं। सो अल्लाह जिसे तौफ़िक़ दे वही सच्चा मोमिन और सुचरित्र बन जाता है।

32. मुकदमे वालों ने बे वक्त और दीवार फाँद कर समय के खलीफ़ा के भवन में घुस आने का जो दुस्साहस किया था और बात चीत का जो गुस्ताखी भरा अन्दाज़ अपनाया था। इस पर हज़रत दाऊद ने अपनी पूरी सहिष्णुता एवं धैर्य से काम लिया और सत्य एवं न्याय के साथ मुकदमें का फैसला सुनाया। साथ ही उन का ज़ेहन इस ओर भी आकृष्ट हुआ कि मुकदमे वालों का यह दुस्साहस आप के लिए परीक्षा थी और जब एक सजग मनुष्य को कोई ठोकर लगती है तो उसे अपनी ग़लती, अपना अपराध याद आ जाता है, हज़रत दाऊद को भी इस अवसर पर अपनी ग़लती याद आ गई अतः वे तुरंत अल्लाह से क्षमायाचना करने लगे, उस के आगे झुक कर सज्दे में गिर पड़े और पूरे विनम्र भाव के साथ उस की ओर आकृष्ट हुए।

यह था हज़रत दाऊद का अनुकरणीय चरित्र। एक महान शासक होने के बावजूद उन की सत्यता, शुद्ध हृदयता, ईश भय, परहेज़गारी और विनम्र भाव का हाल यह था कि वे अपनी समीक्षा करते और अपनी ग़लती पर शर्मिन्दा हो कर अल्लाह से माफ़ी माँगते।

उन के शासन (ख़िलाफ़त काल) में ग़रीबों को इन्साफ़ मिलता और उन की शासन व्यवस्था न्याय एवं सत्यता पर आधारित शासन व्यवस्था थी।

यह आयत सज्दा है इस लिए इस को पढ़ने या सुनने पर सज्दा करना चाहिए ताकि पढ़ने या सुनने वाले पर विनम्रता एवं रुजू करने का भाव तारी हो। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस मौक़े पर सज्दा करना साबित है। (बुख़ारी अबबाब सुजूदल कुर्आन)

33. हज़रत दाऊद का अपराध क्या था इस की पुष्टि कुर्आन ने नहीं की परन्तु बाद वाली आयत से अन्दाज़ा होता है कि शासन कार्य को अन्जाम देने से संबद्ध उन से कोई ग़लती हुई थी जिस का एहसास उन को इस अवसर पर हो गया। कुर्आन ने जब उन के कुसूर पर परदा डाल दिया है तो उस को कुरैदने की ज़रूरत नहीं है। जिन मुफ़स्सिरिन ने इन को कुरैदने की कोशिश की उन्होंने ने इन आयतों का बड़े दूर दूर का मतलब निकाला और हज़रत दाऊद से ऐसी बातें संबद्ध की जो एक नबी की प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं हो सकती और मशहूर मुफ़स्सिरिन इब्ने जरीर तबरी ने तो उरिय्याह हित्ती की पत्नी से हज़रत दाऊद के निकाह का बेहूदा क्रिस्सा उद्धृत कर के अफ़सोसनाक ग़लती की है। अल्लाह तआला उन्हें माफ़ करे। उरिय्याह हित्ती की पत्नी से हज़रत दाऊद के निकाह का क्रिस्सा बाइबिल में बयान हुआ है (शमोएल की दूसरी पुस्तक अध्याय ११, १२) जो हज़रत दाऊद पर आरोपों एवं बोहतानों से भरी और ऐसी बेहूदा है कि उस को उद्धृत करने में हमारी लेखनी असमर्थ है।

سُبْحَانَكَ هَذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ

इसी क्रिस्से को थोड़े से रद्दोबदल के साथ उल्लेखकर्ताओं ने पेश कर दिया। और रिवायतों पर ज़रूरत से ज़्यादा भरोसा करने वालों ने इसे स्वीकार कर लिया मगर कई मुफ़स्सिरिन ने इस का जोरदार खण्डन भी किया। उदाहरण स्वरूप अल्लामा राज़ी ने अपनी तफ़्सीर में इस क्रिस्से को बेहद शर्मनाक बताते हुए इस का खण्डन तर्क सहित किया है। और अल्लामा इब्ने कसीर ने लिखा है :-

“इस अवसर पर मुफ़स्सिरिन ने एख़ क्रिस्सा बयान किया है जिस का अधिकांश भाग इस्त्राईलियात से उद्धृत है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस सिलसिले में कोई हदीस साबित नहीं है जिस का मानना वाजिब हो।” (तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द ४ पृष्ठ ३१)

और मौलाना हिफ़ज़ुर्रहमान साहब अपनी शोध पुस्तक क्रिससुल कुर्आन में लिखते हैं :-

“मगर अफ़सोस सद हज़ार अफ़सोस कि कुर्आन अज़ीज़ के इस मुक़द्दम एलान के बावजूद हित्ती उरिय्याह की पत्नी की इस ख़ुराफ़ी दास्तान को तौरात और इस्त्राईलियात से ले कर कुछ मुफ़स्सिरिन ने कुर्आन-अज़ीज़ की तफ़्सीर में नक़ल कर दिया है और इस्त्राईली हफ़्वात को बिना दलील एवं प्रमाण के इस्लामी रिवायत की हैसियत दी।

इन सीधे सादे बुजुर्गों ने यह क़तई नहीं सोचा कि जिन ख़ुराफ़ी दास्तानों को आज वे इस्त्राईली रिवायत की हैसियत से कुर्आन-अज़ीज़ में नक़ल कर रहे हैं कल वे कुर्आनी आयात की व्याख्या समझी जा कर उम्मत मरहूमा के लिए फ़ित्ना सामानी का कारण बनेंगी और उन की गुमराही की वजह साबित होगी। और हैरत हज़ार हैरत है कुछ उन नये एवं पुराने मुतकाल्लिमीन (वक्ता गणों) पर जिन्होंने इस प्रकार की बकवास को सख़्ती के साथ रद्द कर देने और इन आरोपों को मरदूद और ग़लत कहने के बजाए इन रिवायतों के औचित्यों को ढूँढ़ कर के इन को स्वीकार्य बनाने की कुचेष्टा की है और व्यर्थ के गुमान से काम ले कर इस हक़ीक़त को नज़रंदाज़ कर दिया कि यह व्याख्या जो इस ख़ुराफ़ी रिवायत के बारे में की जा रही है रेत की दीवार और मक्कड़ जाल हैं। और किसी न किसी ढंग से इसे स्वीकार करने पर “नबी की मासूमियत” जैसे महत्वपूर्ण और अहम बुनियादी इस्लामी धारणा पर करारी चोट लगती है। और यह कि नबी और रसूल की ओर इस प्रकार की बातें संबद्ध करने से जब कि कुर्आन मजीद का दामन पाक और शुद्ध है और वह इस प्रकार की रिवायतों को भारी बोहतान समझता है तो फिर किसी व्यक्ति को क्या हक़ पहुँचता है कि वह उस की व्याख्या में इस तरह

की खुराफात भरे।” (क़िससुल कुर्आन जिल्द २ पृष्ठ १७९)

मगर आश्चर्य है कि तफ़्हीमुल कुर्आन के टीकाकार ने बाइबिल के इस क्रिस्से को रिफाइन्ड (Refined) कर के प्रस्तुत किया है और औचित्य यूँ प्रस्तुत किया है कि :-

मालूम ऐसा होता है कि हज़रत दाऊद को उस इस्त्री की खूबियों का किसी माध्यम से ज्ञान हो गया था और उन के दिल में यह ख्याल पैदा हुआ था कि ऐसी योग्य स्त्री एक मामूली अफ़सर की पत्नी होने के बजाय देश की रानी होना चाहिए। इसी विचार से प्रेरित हो कर उन्होंने उस के पति से यह इच्छा प्रकट की कि वह उसे तलाक़ दे दे। इस में कोई आपत्ति उन्होंने ने इस लिए महसूस न की कि बनी इस्राईल के यहाँ यह कोई ऐब की बात न समझी जाती थी।” (तफ़्हीमुल कुर्आन जिल्द ४ पृष्ठ ३२८)

यह व्याख्या भी बिल्कुल ग़लत और बेबुनियाद है। यह बात कि दाऊद अलैहिस्सलाम के दिल में एक दूसरे आदमी की पत्नी से निकाह करने का विचार उत्पन्न हुआ और उन्होंने ने उस के पति के समक्ष अपनी यह इच्छा प्रकट की कि वह उसे तलाक़ दे दे, नैतिक दृष्टि से बहुत ही गिरी हुई बात है और एक नबी की तरफ़ ऐसी बात मन्सूब करने से नुबुव्वत की प्रतिष्ठा पर आँच आती है जब कि नबी नैतिकता के उच्च शिखर पर होता है। और यह बात कैसे मालूम हो गई कि हज़रत दाऊद के दिल में यह ग़लत ख्याल पैदा हो गया था शरीअी दृष्टि से भी यह बात आपत्तिजनक है कि किसी व्यक्ति से उस की पत्नी को तलाक़ देने के लिए कहा जाए ताकि उस के तलाक़ देने के बाद वह उस की विवाहिता हो जाए। यह तो पति पत्नी के बीच अलगाव कराने की प्रक्रिया हुई। जिस को शरीअत की ओर से वैधता का प्रमाण किस तरह मिल सकता है। फिर एक ऐसी बात जो न नैतिक दृष्टि से सही हो और न शरीअत की दृष्टि से, उसे एक नबी से किस प्रकार मन्सूब किया जा सकता है।

विद्वान, मुफ़स्सिर और अन्य मुफ़स्सिरीन को यह सब तकल्लुफ़ात इस लिए करना पड़े कि अल्लाह ने अपने नबी की एक ग़लती पर परदा डाला था उस को उठाने के उन्होंने असफल प्रयास किये। अल्लाह तआला उन को क्षमा करे और अपने नबी दाऊद को सलाम और रहमत से नवाज़े।

34. यहाँ ख़लीफ़ा का अर्थ प्रभुत्ववान एवं शासक के हैं। बनी इस्राईल को पावन धरती में क्रमवार जो प्रभुत्व प्राप्त होता चला गया उस ने हज़रत दाऊद के ज़माने में एक सुदृढ़ राज्य और मज़बूत शासन का रूप धार लिया। यह एक शुद्ध इस्लामी राज्य था जिस की बाग़डोर एक नबी के हाथ में थी। यह ख़िलाफ़त (इस्लामी शासन) उस शासन से बिल्कुल भिन्न थी जिस के सदगुणों में फ़ासिस्टवाद, ताना शाही और इच्छा परस्ती जैसी चीज़ें शामिल हैं। (ख़लीफ़ा शब्द की अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह फ़ातिर नोट ७१)

35. सत्ता पाकर मनुष्य न्याय और सच्चाई के तकाज़ों को पूरे नहीं करता बल्कि अपनी इच्छाओं के पीछे पड़कर मन मानी करने लगता है जिस का नतीजा गुमराही है। इस लिए अल्लाह तआला ने ताकीद फ़रमाई कि शासन से सम्बन्धित सारे फैसले सत्य की बुनियाद पर होने चाहिए। यह हज़रत दाऊद के माध्यम से बनी इस्राईल को स्थायी रूप से हिदायत थी कि जो शासन सत्ता उन को प्रदान की गई है कि वे सत्ता प्राप्त हो जाने के बाद अपने शासनिक अधिकारों को सत्य एवं न्याय की बुनियाद पर इस्तेमाल करें जिस में शरीअत का क्रियान्वयन निश्चित रूप से शामिल है।

36. स्पष्ट हुआ कि सत्य और न्याय पर स्थापित रखने वाली चीज़ क्रियामत के दिन अल्लाह के समक्ष जवाबदेही का दृढ़ विश्वास है। यदि यह बात दिल और दिमाग़ पर हावी न रही तो इच्छाएँ हावी हो जाती हैं और आदमी ग़लत फैसले करने लगता है। इस प्रकार हिदायत की राह उस पर गुम हो जाती है।



27. हम ने आसमान और ज़मीन और उन के बीच की समस्त वस्तुओं को निरुद्देश्य पैदा नहीं किया है।³⁷ यह उन लोगों का गुमान है जिन्होंने कुफ़्र किया है।³⁸ तो ऐसे काफ़िरों के लिए आग की तबाही है।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَبَيْنَهُمَا بِإِلَافٍ ذَلِكَ ظَنُّ
الَّذِينَ كَفَرُوا وَأَفْوِيلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ النَّارِ ۝

28. क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक काम किये उन लोगों की तरह कर देंगे? जो ज़मीन में फ़साद बरपा करते हैं। क्या हम परहेज़गारों को फ़ाजिरों (दुराचारियों) जैसा कर देंगे?³⁹

أَمْ يَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ
أَمْ يَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ۝

29. यह बड़ी मुबारक किताब है जो हम ने (ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारी तरफ़ उतारी है ताकि वे इस की आयतों में चिंतन मनन करें⁴⁰ और बुद्धि रखने वाले इस से याददेहानी हासिल करें।⁴¹

كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ
أُولُو الْأَلْبَابِ ۝

30. और हम ने दाऊद को सुलैमान प्रदान किया,⁴² बेहतरीन बन्दा,⁴³ (अल्लाह की तरफ़) बहुत रूजू करने वाला था।⁴⁴

وَوَهَبْنَا دَاوُدَ سُلَيْمَانَ نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۝

31. जब उस के सामने शाम के समय सधे हुए⁴⁵ तेज़ दौड़ने वाले घोड़े प्रस्तुत किये गये।⁴⁶

إِذْ عَرَضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصُّفُنُ الْجِيَادُ ۝

32. तो उस ने कहा मुझे इस माल से मुहब्बत अल्लाह की याद के कारण से हैं,⁴⁷ यहाँ तक कि वे ओट में छिप गए।⁴⁸

فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي حَتَّى
تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۝

33. (उस ने आदेश दिया) उन्हें मेरे पास वापस लाओ।⁴⁹ फिर वह उन की पिंडलियों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगा।⁵⁰

رُدُّوْهَا عَلَى فُطُوقٍ مَّسْحًا بِالسُّوقِ وَالْأَعْنَاقِ ۝

34. और हम ने सुलैमान की आजमाइश की और उस की कुर्सी पर एक धड़ डाल दिया। फिर उस ने रूजू किया।⁵¹

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَالْقَيْنَ عَلَى كُرْسِيِّهِ جَسَاسًا
أَنَّا بَ ۝

35. उस ने दुआ की मेरे रब! मुझे क्षमा कर दे और मुझे ऐसी सल्तनत प्रदान कर जो मेरे बाद किसी के लिए शोभनीय न हो।⁵² निस्संदेह तू बड़ा बख़्शाने वाला (दाता) है।

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَا يَنْبَغِي لِإِنْسٍ مِنْ
بَعْدِي إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۝

37. अर्थात् इस ब्रह्माण्ड को पैदा करने का एक उद्देश्य है और वह है कर्मानुसार बदला और इस के लिए क्रियामत के दिन अल्लाह की अदालत का बरपा होना।

38. अर्थात् जो लोग अल्लाह की निशानियों से जो इस कायनात को बनाने के महान उद्देश्य की ओर रहनुमाई करने वाली हैं, इन्कार करते हैं वही यह गुमान करते हैं कि इस के पीछे कोई तत्वपूर्ण योजना विनित नहीं है। बल्कि यह कायनात एक आकस्मिक घटना के तौर पर उत्पन्न हुई है या आदिकाल (हमेशा) से यूँ ही चली आ रही है। अल्लाह की वह्य (प्रकाशना) की रौशनी से वंचित होने के बाद वे इस कायनात के अस्तित्व का कोई तर्कसंगत औचित्य प्रस्तुत नहीं कर पाते।

39. अर्थात् आखिरत और कर्मफल के इन्कार का मतलब यह हुआ कि अल्लाह की नज़र में, ईमान वाले सदाचारी और दुराचारी सब बराबर हैं। और परहेज़गारी का जीवन गुज़ारने तथा अवज्ञा एवं पाप में लिप्त रहने में परिणाम की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है। अल्लाह न मज़लूम की फ़रियाद सुनने वाला है और न ज़ालिमों को सजा देने वाला। मगर क्या सामान्य बुद्धि और मानव स्वभाव इस विचार का अनुमोदन करते हैं? कदापि नहीं। न सदबुद्धि सदाचारी, तथा दुराचारी को समान ठहराती है और न मानव स्वभाव ज़ालिम और मज़लूम को एक ही स्तर पर रखता है। और यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि अल्लाह की प्रकाशना (वह्य) कर्मफल (बदले के दिन) की जो सूचना दे रही है वह बिल्कुल सच्ची है।

40. कुर्आन के मुबारक किताब होने का मतलब यह है कि वह ख़ैर और भलाई का स्रोत है और इस स्रोत का लाभ पहुँचाते रहना कभी समाप्त नहीं होगा। और जो भी इस में चिन्तन मनन करेगा अर्थात् सच्चे मन के साथ सोच विचार करेगा तो उस के लाभ से वंचित नहीं रहेगा। और जो व्यक्ति इस किताब में जितना चिन्तन करेगा उतना ही वह लाभन्वित होगा और जितनी गहराई में जाएगा उतने ही ज्ञान ध्यान के मोती चुन लेगा।

कुर्आन ने चिन्तन मनन का जो आवाहन किया है इस के बावजूद मुसलमानों की भारी संख्या ऐसी है जो तिलावत (कुर्आन पढ़ लेने) को काफ़ि समझती है और इस के अर्थ और भाव को समझने और उस पर विचार करने की आवश्यकता महसूस नहीं करती। परिणाम यह कि उन का सम्बन्ध इस किताब से बहुत कमजोर हो कर रह गया है और उस के अथाह लाभों से उन्होंने ने अपने को महरूम कर लिया है। अल्लामा शोकानी ने अपनी तफ़्सीर में कुर्आन को समझने

पर ज़ोर देते हुए लिखा है:

“इस आयत में इस बात की दलील है कि अल्लाह तआला ने कुर्आन इस लिए नाज़िल किया है कि इस के अर्थ में विचार और चिन्तन किया जाए। चिन्तन मनन के बग़ैर मात्र पढ़ने (तिलावत करने) के लिए नाज़िल नहीं किया है।” (फ़तहूल क़दीर जिल्द ४ पृष्ठ ४३०)

41. अर्थात् जो लोग अपनी बुद्धि और विवेक का इस्तेमाल करेंगे वे इस किताब के अध्ययन से याददेहानी और नसीहत हासिल करेंगे। और कुर्आन का पहला मक़सद यही है कि लोग इस किताब से नसीहत लें। यह लाभ एक साधारण आदमी भी इस का अध्ययन कर के प्राप्त कर सकता है बशर्ते कि वह साफ़ और खुले मन से अध्ययन करे।

42. अर्थात् दाऊद को सुलैमान जैसा बेटा प्रदान किया। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अम्बिया नोट १०४ और सूरह नमल नोट २१)

43. इस से बाइबिल के उन ग़लत कथनों का आप से आप खण्डन होता है जो हज़रत सुलैमान के बारे में पाया जाता है। और जिस से उन के चरित्र पर आँच आती है। जब अल्लाह ने उन्हें बेहतरीन बन्दा कहा तो नैतिकता एवं व्यवहारिकता की दृष्टि से जो निम्न स्तर की बातें उन से जोड़ दी गई हैं वे किस प्रकार सही हो सकती हैं।

44. अर्थात् अल्लाह की तरफ़ रुजू करने (पलटने) का गुण उन में पूरी तरह विद्यमान था (रुजू की व्याख्या ऊपर नोट १७ में गुज़र चुकी)

45. मूल अरबी (Text) में “الْصَّافَاتُ” अस्साफ़िनात” इस्तेमाल हुआ है जो उन घोड़ों के लिए बोला जाता है जो इस प्रकार खड़े हों कि उन का अगला एक पाँव उठा हुआ और मुड़ा हुआ हो। अर्थात् उस के शरीर का केवल एक भाग भूमि पर हो। इस तरह से घोड़ों का खड़ा होना इस बात का प्रतीक है कि वे एक इशारे पर दौड़ने के लिए तैयार हैं। ये घोड़े चूँकि जिहाद के लिए थे इस लिए उन को यह ट्रेनिंग दे दी गई थी। इसी मुनासिबत से हम ने अस्साफ़िनात का अनुवाद सधे हुए घोड़े किया है।

46. शाम के समय के उल्लेख से यह इशारा है कि ये घोड़े जिहाद के अभियान पर रवाना होने वाले थे क्योंकि बियाबान में सफ़र अधिकतर रात में किया जाता था और सुबह के समय धावा बोला जाता था।

فَالْمُغْرَاتِ صُبْحًا. (سورة غارات: ३)

अर्थ :- “ उन घोड़ों की क्रम जो सुबह के समय धावा कर देते हैं ” (सूरह आदियात ३)

आयत का मतलब यह है कि सुलैमान अलैहिस्सलाम के

पास अति उत्तम तेज़ रफ़्तार और सधे हुए घोड़े थे। और ये शाम के समय जब कि वे जिहाद के अभियान पर ख़ाना किये जाने वाले थे, हज़रत सुलैमान के समक्ष उपस्थित किये गए।

बाइबिल में यह विवरण तो नहीं है जो कुर्आन ने यहाँ बयान किया है। लेकिन हज़रत सुलैमान के घोड़े (Cav-alry) का विवरण है।

“और सुलैमान ने रथ और सवार इकट्ठे कर लिये तो उस के चौदह सौ रथ और बारह हज़ार सवार हुए..... और जो घोड़े सुलैमान रखता था वे मिस्र से आते थे और राजा के व्यपारी उन्हें झुण्ड कर के ठहराए हुए दाम पर लिया करते थे।” (राजा १०:२६ से २८)

47. हज़रत सुलैमान उन घोड़ों को जो अति उत्तम थे और जिन को जंग का प्रशिक्षण भी दिया गया था, देख कर बहुत खुश हुए। किन्तु इस सैन्य शक्ति पर जो उन्हें प्राप्त हुई थी, इतराए नहीं बल्कि अल्लाह को याद किया और फ़रमाया इस धन शक्ति से मेरा प्रेम सांसारिक वैभव पर गर्व करने के उद्देश्य से नहीं है बल्कि अल्लाह की याद, तथा उस के ज़िक्र की वजह से है कि यह माल और यह शक्ति उस की राह में जिहाद करने के कारणवश प्रदान की गई है। अर्थात् हज़रत सुलैमान की निगाह अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने जैसे महान सलतनत के मालिक का यही वह आदर्श चरित्र है जो उन के रुजू एवं विनम्रता का सबूत है। मतलब यह है कि सत्ता और संसाधन पा कर लोग घमण्ड में मुब्तिला हो जाते हैं। इस के विपरीत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने जो ख़ैया अपनाया वही ख़ैया बन्दों के अपनाने का है। अर्थात् अल्लाह को हर मौक़े पर याद करना और उस की तरफ़ रुजू होना।

कुछ मुफ़स्सिरीन ने عَنْ ذِكْرِ رَبِّي का अर्थ “मेरे रब के ज़िक्र से गाफ़िल कर दिया” लिए हैं। और फिर इन आयतों की व्याख्या में ऐसी बातें कही हैं जो न हज़रत सुलैमान के नबी होने की शान से मेल खाती हैं और न इन से वह उद्देश्य स्पष्ट होता है जो इस घटना में निहित है और जो ऊपर की पंक्तियों से बिलकुल जुड़ा हुआ है। अल्लामा राज़ी ने अपनी तफ़्सीर में इस व्याख्या का पूरी तरह खण्डन किया है और मौलाना मौदूदी ने भी तफ़्हीमुल कुर्आन में सुदृढ़ तर्कों से इस व्याख्या की बुनियाद पर कही जाने वाली अनुमानित बातों का खण्डन किया है।

मुफ़स्सिरीन में मूल मतभेद अरबी के शब्द “अन ” का अर्थ निर्धारण करने के बारे में हो रहा है। यह शब्द (इस कारण से) “मिन अजल” के अर्थ में भी आता है जैसा कि अरबी की प्रमाणिक शब्दकोष “लिसानुलअरब” (जिल्द १३ पृष्ठ २९६) में बयान हुआ है, तथा कुर्आन में भी सूरह तौबा

आयत ११४ में “अन” “इस कारण से” के अर्थ में इस्तेमाल हुआ है।

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ
الْأَعْنُ مَوْعِدَةً وَعَدَهَا يَأْهُ.

अर्थ :- और इब्राहीम ने अपने बाप के लिए जो क्षमा की प्रार्थना की थी वह उस के वादे के कारण से थी जो उस ने किया था।

इस प्रकार सूरह हूद आयत ५३ में भी इन ही कारणों से आयत का अनुवाद “मुझे इस माल से प्रेम अल्लाह की याद के कारण से है” किया है।

48. अर्थात् सुलैमान अलैहिस्सलाम उन घोड़ों को प्यार भरी नज़रों से देखते रहे यहाँ तक कि उन की दौड़ शुरू हुई और वह नज़रों से ओझल हो गए।

हिजाब का मतलब “ओट” है संभव है घोड़े दौड़ते हुए किसी पहाड़ की ओट में चले गए हों और इस कारण से नज़रों से ओझल हो गए हों।

49. जब घोड़े नज़रों से ओझल हो गए तो हज़रत सुलैमान ने फिर उन को वापस बुला लिया ताकि अपना मुबारक हाथ उन पर फेरें। यह बात बाद में उन के ज़ेहन में आई होगी।

50. जब घोड़े वापस लाए गए तो हज़रत सुलैमान (फ़र्ते मुहब्बत) प्रेम आवेग में आ कर उन की गर्दनोँ और पिंडलियों पर अपना हाथ फेरने लगे। चूँकि वे जंगी घोड़े थे और जिहाद के अभियान पर ख़ाना हो रहे थे इस लिए अपना मुबारक हाथ उन के शरीर के उन अंगों पर फेरा जो तलवार की ज़द में आते हैं। जंग में दुश्मन की फ़ौजें घोड़ों की गर्दन पर तलवार चलाती हैं या उन की कूँचें (टाँगें) काट देती हैं। हज़रत सुलैमान का इन की गर्दनोँ और पिंडलियों पर हाथ फेरना इस बात का द्योतक था कि वे उन को अल्लाह के संरक्षण में दे रहे हैं।

51. अल्लाह तआला नबियों को तरह तरह की आजमाइशों से गुज़ारता है ताकि उन के रुजू होने तथा विनम्रभाव में वृद्धि हो और उन का स्थान और बुलन्द हो जाए हज़रत सुलेमान को भी अल्लाह तआला ने एक ख़ास आजमाइश में डाला था जिस की तफ़्सील कुर्आन ने नहीं बतलाई बल्कि इशारा कर देने को काफ़ी समझा क्यों कि अभीष्ट उद्देश्य के लिए यह बात काफ़ी थी।

आयत का बाह्य अर्थ यह है कि अल्लाह तआला ने सुलेमान अलैहिस्सलाम की कुर्सी (सिंहासन) पर एक धड़ बिलकुल असाधरण तरीक़े से डाल दिया था। यह धड़ मनुष्य

का ही रहा होगा और जब हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने देखा होगा कि मेरे सिंहासन पर यह कौन आ कर बैठा है तो घबरा गए होंगे परन्तु जब उन्होंने समीप से देखा होगा तो एक बेजान मनुष्य के धड़ को देख कर उन्हें आश्चर्य हुआ होगा कि यह क्या मामला है। किन्तु वे बिलकुल जागरुक थे इस लिए उन का जेहन तुरंत उस बात की तरफ़ चला गया कि असाधारण तरीक़े से एक निर्जीव मनुष्य के धड़ का उन के सिंहासन पर गिरा होना अल्लाह की ओर से परीक्षा है और संभव है यह परीक्षा शासन कार्यों को अन्जाम देने के सिलसिले में किसी अपराध के चलते हुई हो और अल्लाह तआला ने उन्हें सचेत करना चाहा हो। इस लिए उन्होंने ने अल्लाह की ओर रुजू किया और क्षमा याचना की। उन के चरित्र की बुलन्दी का यही वह विशेष पक्ष है जिस को यहाँ प्रस्तुत करना अभिप्रेत है। एक विशाल राज्य के शासक होने के बावजूद उन की विनम्रता तथा अल्लाह के समक्ष गिड़गिड़ाने का हाल यह था कि वे अपनी गलतियों की अल्लाह से क्षमा चाहते हैं और हार्दिक विनम्रता के साथ अल्लाह की ओर आकर्षित होते ।

हम नहीं समझते कि आयत के इस बाह्य भावार्थ को छोड़ कर रव्वाह मरव्वाह की व्याख्या में पड़ने की क्या आवश्यकता है। मगर कुछ मुफ़स्सिरीन ने आयत की व्याख्या में बेसिर पैर के क्रिस्से उद्धृत किये हैं जो इस क्रूर बेहूदा हैं कि उन को हज़रत सुलैमान की तरफ़ मन्सूब करना बड़ा ही भोला पन बल्कि मूर्खता है। इस से अन्दाज़ा होता है कि हिकायतों और रिवायतों को कुबूल करने के मामले में तबरी जैसे मुफ़स्सिर का मेयार कितना घटिया रहा है। अल्लामा इब्ने कसीर ने इन क्रिस्सों को इस्त्राईलियात में से बताते हुए लिखा है :-

“ इब्ने ज़रीर और इब्ने अबी हातिम आदि मुफ़स्सिरीन ने

इस सिलसिले में सलफ़ (पिछले बुजुर्गों) के एक गिरोह से बहुतेरे क़ौल उद्धृत किये हैं जिन में से अधिकतर तमाम इस्त्राईलियात से उद्धृत हैं और उन में से अधिकांश क़ौल (कथनों) में सख़्त नकारत पाई जाती है।” (अलबिदाय: वन्निहाय: जिल्द २ पृष्ठ २६) और कुछ मुफ़स्सिरीन ने बुख़ारी और मुस्लिम की उस हदीस को इस आयत की तफ़्सीर बताया है जिस में हज़रत सुलैमान के एक मौक़े पर इन्शाअल्लाह न कहने और इस के फलस्वरूप उन की पत्नी से अपूर्ण बच्चा पैदा होने का क्रिस्सा बयान हुआ है। मगर यह हदीस नकारत (नामुनासिब बातों) पर आधारित होने के बावजूद अगर सही मान भी लिया जाए तो इस को इस आयत की तफ़्सीर नहीं क्ररार दिया जा सकता। क्यों कि इस में उस घटना की ओर कोई इशारा नहीं किया गया है जो इस आयत में बयान हुआ है। अब्दुल वहाब नज्जार ने इस हदीस को कुछ कारणवश अस्वीकार्य बताया है। (क्रिससुल कुर्आन पृष्ठ ३२९, ३३१)

52. अर्थात् ऐसी हुकूमत जो अपने आप में बिलकुल बेमिसाल हो। हज़रत सुलैमान की यह दुआ कुबूल हुई और हवा तथा जिन्नों को उन के वशीभूत कर दिया गया जैसा कि बाद वाली आयतों में बयान हुआ है। और यह बिलकुल सच्ची बात है कि संसार में बड़े बड़े राज्य स्थापित हुए परन्तु जो विशेषताएँ हज़रत सुलैमान के राज्य शासन की थी वह ही उन की प्रमुखता है।

हज़रत सुलैमान ने यह बेमिसाल हुकूमत किसी व्यक्तिगत लाभ अथवा स्वार्थ से प्रेरित हो कर नहीं माँगी थी बल्कि अतयन्त पवित्र भावनाओं के साथ अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने और इस्लामी राज्य की समस्त ग़ैर इस्लामी राज्यों पर वर्चस्वता एवं श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए थी तथा इस लिए भी कि अल्लाह की कुदरत के कारनामे एक नबी के पक्ष में प्रकट हों।



36. तो हम ने हवा को उस के वशीभूत कर दिया जो उस के हुक्म से नरमी के साथ चलती जिधर का वह इरादा करता।⁵³

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ ۝٣٦

37. और शैतानों को, उस के वशीभूत कर दिया।⁵⁴ हर प्रकार के निर्माता⁵⁵ और गोताखोर।⁵⁶

وَالشَّيْطِينَ كُلَّ بَنَّاءٍ وَعَوَّاصٍ ۝٣٧

38. और दूसरे जो ज़न्जीरों में जकड़े हुए थे।⁵⁷

وَالْآخَرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۝٣٨

39. यह हमारी बख्शिष है बेहिसाब।⁵⁸ तो एहसान करो या रोक लो।⁵⁹

هَذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝٣٩

40. और उस के लिए हमारे पास सामीप्य (तक्क़रूब) का स्थान और बेहतरीन ठिकाना है।⁶⁰

وَأَنَّ لَهُ عِنْدَنَا الرُّفْقَىٰ وَحُسْنَ مَّآبٍ ۝٤٠

41. और हमारे बन्दे अय्यूब⁶¹ को याद करो जब उस ने अपने रब को पुकारा कि शैतान ने मुझे सज़ा दुःख और तकलीफ़ में मुब्तिला किया है।⁶²

وَإِذْ كُرِعْنَا لِلْأَيْتِ ۖ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ ۝٤١

42. (हम ने उस से कहा) अपना पाँव ज़मीन पर मारो। यह ठंडा पानी है नहाने के लिए भी और पीने के लिए भी।⁶³

أَرْكُضْ بِرِجْلِكَ هَذَا غُغْسَلُ بَارِدٌ وَشَرَابٌ ۝٤٢

43. हम ने उस को उस की पत्नी और बच्चे प्रदान किये और उन के साथ उतने और भी।⁶⁴ अपनी रहमत के तौर पर⁶⁵ और बुद्धिमानों के लिए याददेहानी के तौर पर।⁶⁶

وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا وَذِكْرًا لِأُولَى الْأَلْبَابِ ۝٤٣

44. और (हम ने उस को हिदायत की कि) तिनकों का एक गुच्छा अपने हाथ में ले लो और उस से मारों और अपनी क्रसम न तोड़ो।⁶⁷ हम ने उसे धैर्यवान पाया। बड़ा अच्छा बन्दा। अपने रब की तरफ़ बड़ा ही रूजू करने वाला था।

وَخُذْ بِيَدِكَ ضُغْثًا فَاضْرِبْ بِهِ وَلَا تَحْنُثْ ۖ إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا نِّعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۝٤٤

45. और हमारे बन्दों, इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब को याद करो जो कार्य शक्ति⁶⁸ और दृष्टि रखने वाले थे।⁶⁹

وَإِذْ كُرِعْنَا لِلْإِبْرَاهِيمَ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ أُولَى الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ ۝٤٥

53. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अम्बिया नोट १०९ और सूरह सबा नोट २३

54. मुराद उद्दण्ड जिन्न हैं। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अम्बिया नोट ११० और सूरह नमल नोट २५

55. व्याख्या के लिए देखिए सूरह सबा नोट १२७

56. ऐसे जिन्न जो समुद्र में गोता लगा कर मोती आदि निकालते।

57. अर्थात् उद्दण्ड जिन्न सुलैमान अलैहिस्सलाम की क़ैद में रहते थे। जिन्न एक दिखाई न देने वाली सृष्टि है इस लिए उन को जकड़ने वाली ज़न्जीर भी विशेष प्रकार की रही होगी।

58. बेहिसाब बख़्शिश का मतलब यह नहीं है कि अल्लाह को उस का हिसाब देना नहीं है। एक नबी पर भी शासन से सम्बन्धित न्याय आदि की जो ज़िम्मेदारियाँ आयद होती हैं उन का ज़िक्र ऊपर आयत १६ में हुआ है इस लिए इस तरह के अर्थ लेने की यहाँ गुन्जाइश नहीं है बल्कि इस का मतलब यह है कि यह बख़्शिश अत्यंत अधिक एवं बाहुल्य मात्रा में है। कुर्आन में एक जगह फ़रमाया गया है।

وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ

अर्थ:- “अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है। (सूरह बक्रः आयत २१२)

इस आयत में भी बेहिसाब का मतलब अधिक रोज़ी है जो अनुमान और संभावनाओं से बढ़ कर हो न कि ऐसी रोज़ी जिस पर आखिरत में हिसाब होने वाला न हो।

59. अर्थात् उन जिन्नों में से जो तुम्हारे क़ाबू में कर दिये गए हैं जिन को चाहो एहसान कर के छोड़ दो और जिन को चाहो सेवा के लिए रोक रखो।

60. मुराद जन्नत है।

61. अय्यूब अलैहिस्सलाम के हालात के बारे में देखिए सूरह अम्बिया नोट १११ से ११३

62. अर्थात् मुझे दोनों तरह तकलीफ़ पहुँची है। बीमारी का दुःख भी और घर वालों के बिछड़ने का ग़म भी। ये तकलीफ़ें अल्लाह की मर्जी से ही पहुँची थीं क्योंकि अल्लाह ही लाभ और हानि पहुँचाने वाला है। इसी लिए हज़रत अय्यूब ने इन कष्टों के निवारण के लिए अल्लाह ही से फ़रियाद की। परन्तु इस को शैतान की तरफ़ इस लिए मँसूब किया गया कि इस आजमाइश में जो अल्लाह की तरफ़ से थी शैतान की शरारत के नतीजे में सामने आई थी। यह शरारत क्या थी हमें नहीं मालूम। हो सकता है शैतान के उकसाने पर किसी क़बीले ने लूटपाट और आतंक मचाया हो और उस में अय्यूब के घर वाले बिछड़ गए हों इस लिए उन्होंने ने अपने दुःख और हार्दिक कष्ट का कारण शैतान

को क़रार दिया हो और वास्तविकता का ज्ञान तो अल्लाह ही को है।

हज़रत अय्यूब यद्यपि बहुत बीमार पड़ गए थे जिस में उन के धैर्य का इम्तिहान हुआ लेकिन यह ख़याल करना सही नहीं कि उन को कोई ऐसी बीमारी हो गई थी जिस से घृणा पैदा होती है। नबी बीमार होता है किन्तु ऐसी किसी बीमारी में लिप्त नहीं किया जाता कि लोग उस के निकट आने न पाएँ क्योंकि ऐसी सूरत में न केवल नुबुव्वत की प्रतिष्ठा प्रभावित होती है बल्कि दअवत, (इस्लाम के प्रचार, प्रसार) तथा सुधार एवं प्रशिक्षण का काम भी प्रभावित हो जाता है जिस के लिए एक नबी की नियुक्ति होती है। बाइबिल में अय्यूब के नाम से पुस्तक शामिल है वह गद्य और पद्य का संग्रह है जिस में बड़े अतिशयोक्तिपूर्ण भाव से क्रिस्सा बयान किया गया है। उस के मज़मून से मालूम होता है कि हज़रत अय्यूब के वृत्तांत को बिल्कुल ग़लत तरीक़े पर और कहानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। बाइबिल का टीकाकार लिखता है कि इस के लेखक के बारे में कुछ मालूम नहीं कि वह कौन था।

“Despite our richer acquaintance with the background of Job the name of the author remains quite unknown to us.”

-(The Interpreters one-Vol commentary on the Bible, P. 239).

मगर अहले किताब से सुन कर रावियों ने भी हज़रत अय्यूब के बारे में विचित्र विचित्र क्रिस्से बयान किये जो तफ़्सीरों में जगह पा गए हैं। इन अविश्वस्नीय एवं अस्वीकारणीय क्रिस्सों का शैख़ मुहम्मद बिन अबू शहबा ने अपनी किताब “अलइस्साईलियात वल मौज़ूआत फी किताबित्तफ़सीर में बड़ा अच्छा मूल्यांकन किया है। लिखते हैं :-

“वास्तविकता यह है कि इस क्रिस्से के ताने बाने अत्याधिक कमज़ोर हैं और वह समालोचना के आगे टिक नहीं सकता। इस का समर्थन न सदबुद्धि करती है और न प्रमाणिक उद्धारण ।

हज़रत अय्यूब जिस रोग में लिप्त हुए थे वह घृणा और कराहिय्यत पैदा करने वाला नहीं था बल्कि ऐसा रोग था जिस का असर त्वचा पर ज़ाहिर नहीं होता, जैसे रोमेटिज़म और हड्डियों आदि का रोग) (उक्त उर्णित पुस्तक पृष्ठ २८१)

आश्चर्य है कि तदब्बुरे कुर्आन के मुफ़स्सिर ने भी बाइबिल की अय्यूब पर विश्वास करते हुए उन की बीमारी के बारे में कुछ अनुचित बातों का उल्लेख किया है।

63. अल्लाह तआला ने हज़रत अय्यूब की दुआ सुन ली और उन को स्वस्थ होने का यह तरीक़ा बताया कि वे अपना

पाँव जमीन पर मारें जिस से ठंडे पानी का स्रोत फुट कर बहेगा। उस पानी में नहा भी लो और पी भी लो। हज़रत अय्यूब ने इस हिदायत पर अमल किया और स्वस्थ हो गए। ठंडे पानी के स्रोत का इस तरह जारी होना अल्लाह की तरफ़ से अपने नबी के पक्ष में एक असाधारण चीज़ को दिखाना था।

इस से अन्दाज़ा होता है कि ठंडे पानी से नहाना कुछ बीमारियों में रोग मुक्ति का साधन बन सकता है।

64. अल्लाह तआला ने कुछ ऐसे साधन कर दिए कि उन का बिछड़ा हुआ परिवार भी उन के पास वापस आ गया तथा उन की पत्नी और बच्चों में अतिरिक्त वृद्धि हुई अर्थात् उन की संख्या दो गुनी हो गई।

65. हज़रत अय्यूब जब परीक्षा में सफल उतरे और धैर्य की उत्तम मिसाल रख दी तो अल्लाह तआला ने उन को अपनी रहमत से इस तरह अलंकृत किया कि उन्होंने न केवल अपनी खोई हुई चीज़ें पा लीं बल्कि अतिरिक्त नेमतें भी उन्हें हासिल हो गईं।

66. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अम्बिया नोट ११४

67. कुर्आन ने यह पुष्टि नहीं की कि यह आदेश किस को मारने के लिए दिया गया था। वैसे तो यह प्रतीत होता है कि रोग के दौरान हज़रत अय्यूब के धैर्य में कोई बाधक हो रहा था और वह उन ही के जानकारों में से था। हो सकता है वह उन का गुलाम रहा हो और जब उस ने अल्लाह के बारे में शिकवा शिकायत की बातें की हों तो हज़रत अय्यूब ने ईमानी ग़ैरत के कारण क्रसम खा कर कहा हो कि उस की प्रताड़ना के लिए वे उस को कोड़ों से मारेंगे लेकिन स्वस्थ होने के बाद उस गुलाम

ने माफ़ी माँग ली हो और बीमारी में उन की सेवा भी करता रहा हो, इस लिए हज़रत अय्यूब के लिए यह समस्या उतपन्न हो गई हो कि यदि वे गुलाम को मारते हैं तो बदली हुई परिस्थिति में एक अनुचित बात होगी और यदि वे ऐसा नहीं करते तो क्रसम तोड़ना होगी। इस मौक़े पर अल्लाह तआला ने अपनी रहमत से उन के लिए यह रियायत निकाल दी कि वे तिनकों का एक गुच्छा ले कर उस से मारें। इस तरह मार भी नहीं लगेगी और क्रसम भी पूरी हो जाएगी। यह विशेष परिस्थिति के चलते अल्लाह तआला की तरफ़ से उन के लिए नमी और आसानी का मामला था। इस से यह बात तो निकलती है कि अगर एक शरअी आदेश का अनुपालन किसी उचित कारणों के चलते पूरी तरह न हो सकता हो तो कम से कम उस की बाह्य स्थिति को ज़रूर बाक़ी रखा जाए ताकि आदेशानुपालन का एहसास बाक़ी रहे। परन्तु इस में हीले बहाने के लिए कोई तर्क नहीं है और अवैध को वैध ठहराने के लिए जो ख़राब क्रिस्म के बहाने शरअी हीलों के नाम से अपनाए जाते हैं वह शरीअत से विमुखता का बहुत भोंडा स्वरूप है। इस सम्बन्ध में बुखारी किताबुल हील का अध्ययन काफ़ी लाभदायक होगा। इमाम बुखारी ने उस में हदीसों के हवाले से बहाना बाज़ी करने वालों पर कड़ी पकड़ की है।

68. अर्थात् ये सब कर्मठ लोग थे। उन्होंने अपनी शक्ति अपनी क्षमता अल्लाह की इबादत और उस के अनुपालन, उस के दीन के प्रचार प्रसार तथा समझाने बुझाने एवं उस का बोल बाला करने में लगा दी।

69. अर्थात् वे दृष्टिवान थे। घटनाओं को सूझ बुझ की दृष्टि से देखते और ज्ञान एवं विवेक की रौशनी में चलते।



हम ने उन को ख़ालिस कर लिया था, उस घर की याद देहानी के लिए। निस्संदेह वे हमारे यहाँ चुने हुए नेक बन्दों में से हैं। और इस्माईल, अलयसब् और जुलकिफ़्ल को याद करो। ये सब नेक बन्दों में से थे। यह याददेहानी है और निस्संदेह परहेज़गारों के लिए बेहतरीन ठिकाना है। हमेशा हमेशा की जन्नतें जिन के दरवाज़े उन के लिए खुले होंगे। उन में वे तकिये लगाए बैठे होंगे। बहुत से मेवे और पेय तलब कर रहे होंगे। (अल-कुआन)

46. हम ने उन को ख़ालिस कर लिया था, उस घर की याद देहानी के लिए।⁷⁰

إِنَّا أَخْلَصْنَاهُمْ بِخَالِصَةٍ ذُكِّرَى الدَّارِ ﴿٣٩﴾

47. निस्संदेह वे हमारे यहाँ चुने हुए नेक बन्दों में से हैं।

وَأَنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْأَخْيَارِ ﴿٤٠﴾

48. और इस्माईल, अलयसब् ⁷¹ और जुलकिफ़्ल ⁷² को याद करो । ये सब नेक बन्दों में से थे।

وَاذْكُرْ إِسْمَاعِيلَ وَ الْيَسَعَ وَ الذِّكْرَ وَ كُلٌّ مِّنَ الْأَخْيَارِ ﴿٤١﴾

49. यह याददेहानी है ⁷³ और निस्संदेह परहेज़गारों के लिए बेहतरीन ठिकाना है।

هَذَا ذِكْرٌ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَّآبٍ ﴿٤٢﴾

50. हमेशा हमेशा की जन्नतें जिन के दरवाज़े उन के लिए खुले होंगे।⁷⁴

جَنَّاتٍ عَدْنٍ مُّفْتَحَةٌ لَّهُمْ الْبُيُوتُ ﴿٤٣﴾

51. उन में वे तकिये लगाए बैठे होंगे। बहुत से मेवे और पेय तलब कर रहे होंगे।

مُتَّكِبِينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ﴿٤٤﴾

52. और उन के पास नीची निगाहों वाली ⁷⁵ समायु औरतें होंगी।⁷⁶

وَعِنْدَهُمْ قَصِيرَاتُ الْطُّرُقِ أَرْوَاحٌ ﴿٤٥﴾

53. यह है वह चीज़ जिस का तुम से हिसाब के दिन के लिए वादा किया जा रहा था।

هَذَا مَا توعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٤٦﴾

54. यह हमारा रिज़्क (रोज़ी) है जो कभी समाप्त होने वाला नहीं।⁷⁷

إِنَّ هَذَا رِزْقُنَا مَا لَهُ مِنْ نَفَادٍ ﴿٤٧﴾

55. यह है (परहेज़गारों का अन्जाम) और उद्दंडों के लिए बहुत बुरा ठिकाना है।⁷⁸

هَذَا وَانَّ لِلظَّالِمِينَ لَشَرَّ مَآبٍ ﴿٤٨﴾

56. जहन्नम जिस में वे दाख़िल होंगे, तो क्या ही बुरी जगह है वह।

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَيُسَّ إِلَيْهَا ﴿٤٩﴾

57. ये है उन के लिए। तो वे इस का मज़ा चखें। अर्थात् खौलते हुए पानी और पीप का।

هَذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَبِيمٌ وَعَسَاقٌ ﴿٥٠﴾

58. और इसी प्रकार की दूसरी चीज़ों का।⁷⁹

وَآخَرُ مِنْ شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ ﴿٥١﴾

70. उस घर से तात्पर्य आखिरत का घर है। हजरत इब्राहीम और हजरत याकूब अलैहिस्सलाम जो नबियों में एक प्रसिद्धि प्राप्त नबी हैं, आखिरत की याददेहानी के लिए खास कर लिए गए थे। वे खुद भी आखिरत की चिन्ता में डूबे रहते और उन का मिशन भी यही था कि लोग आखिरत के बचाव की चिन्ता करें और आखिरत की सफलता को अपना लक्ष्य बनाएं।

आखिरत की याददेहानी नबियों की दअवत का अत्यंत महत्वपूर्ण एवं खास पहलू है किन्तु आजकल के ज़माने में जो लोग इस्लाम का आवाहन करते हैं तथा इस्लामी दअवत को ले कर उठे हैं वे आखिरत की याददेहानी का कुछ अधिक आयोजन करते दिखाई नहीं देते।

71. देखिए सूरह अनआम नोट १४८

72. देखिए सूरह अंबिया नोट ११६

73. अर्थात् इन नेक बन्दों का जो वर्णन हुआ और उन के जो हालात सुनाए गए वे याददेहानी के लिए हैं मात्र क्रिस्सा सुनाना अभिप्रेत नहीं है।

74. अर्थात् परहेज़गारों के स्वागत के लिए जन्नत के दरवाज़े खुले होंगे।

75. अर्थात् शर्मिली औरतें जो अपने पति के सिवा किसी की ओर निगाह उठाकर देखना पसंद नहीं करती।

76. अर्थात् सब एक सी आयु की जवान औरतें होंगी चाहे दुनिया में वे कितनी ही बड़ी आयु की रही हों। जन्नत में न कोई औरत बुढ़ी होगी और न कोई मर्द। दोनों समान रूप से जवान होंगे।

77. अर्थात् जन्नत की ये नेमतें उन को हमेशा मिलती रहेंगी। इन का सिलसिला कभी खत्म होने वाला नहीं।

78. ऊपर उन लोगों का अन्जाम बयान किया गया था जो अल्लाह से डरते हुए उस की बन्दगी में जीवन गुज़ारते हैं। अब ऐसे लोगों का अन्जाम बयान किया जा रहा है जो उस की इबादत और उस के अनुपालन से मुँह मोड़ कर विद्रोह का रवैया अपनाते हैं। इस प्रकार आखिरत के अन्जाम के दोनों पक्ष प्रस्तुत कर दिये गए ताकि कुर्आन का प्रत्येक पाठक सोच ले कि वह अपने लिए किस अन्जाम को पसन्द करता है।

79. अर्थात् इसी प्रकार के अन्य अज़ाबों (यातनाओं) का मज़ा उन्हें चखना होगा। मनुष्य यदि ग़ौर करे तो इस की कल्पना ही से काँप उठे।



59. ये लश्कर है जो तुम्हारे साथ (जहन्नम में) गिरने वाला है। इन लोगों के लिए शुभागमन नहीं ये आग में दाखिल होने वाले हैं।⁸⁰

هَذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ لَا مَرْجَا لَهُمْ أَنْ تُمْ صَالُوا النَّارَ ۝٥٩

60. वे जवाब देंगे बल्कि तुम्हारे लिए शुभागमन नहीं। तुम ही ने हमें इस अन्जाम को पहुँचाया⁸¹ तो बहुत बुरा है यह ठिकाना।

قَالُوا بَلْ أَنْتُمْ لَا مَرْجَا لَكُمْ أَنْتُمْ قَدْ مَتَمُّوهُ لَنَا قَيْسُ الْقَرَارُ ۝٦٠

61. वे कहेंगे, ऐ हमारे रब ! जिन लोगों ने हमें इस अन्जाम को पहुँचाया उन को दोज़ख़ (नर्क) में दोहरा अज़ाब दे।⁸²

قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هَذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ۝٦١

62. और वे कहेंगे क्या बात है हम उन लोगों को (यहाँ) नहीं देख रहे हैं जिन्हें हम शरारतियों में गिनते थे।⁸³

وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِنَ الْأَشْرَارِ ۝٦٢

63. हम ने उन को मज़ाक बना लिया था या निगाहें उन से चूक गई हैं।⁸⁴

أَتَخَذْنَاهُمْ سِحْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمْ الْأَبْصَارُ ۝٦٣

64. निस्संदेह दोज़ख़ियों (नर्क वासियों) की यह आपसी तकरार एक सच्ची बात है।⁸⁵

إِنَّ ذَلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ۝٦٤

65. कहो मैं तो ख़बरदार कर देने वाला हूँ। और अल्लाह यकता और कहहार (बलशाली)⁸⁶ के सिवा कोई पूज्य नहीं।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝٦٥

66. आसमानों और ज़मीन, और उन के बीच की समस्त वस्तुओं का मालिक, प्रभुत्वशाली और क्षमाशील।⁸⁷

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۝٦٦

67. कहो यह बहुत बड़ी ख़बर है।⁸⁸

قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ ۝٦٧

68. जिस से तुम विमुखता बरत रहे हो।⁸⁹

أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ۝٦٨

69. मुझे मला-ए-आला (सर्वोच्च दरबार वालों) की कोई ख़बर न थी जब वे झगड़ रहे थे।⁹⁰

مَا كَانَ لِي مِنْ عِلْمٍ بِأَلْمَلِ الْأَعْلَى إِذْ يَخْتَصِمُونَ ۝٦٩

70. मेरी तरफ़ वहय (प्रकाशना) केवल इस लिए की जाती है कि मैं खुला ख़बरदार करने वाला हूँ।⁹¹

إِنْ يُؤْمَرُ إِلَى إِلَّا أَنْتُمْ أَنْتُمْ أَنْتُمْ مُبِينٌ ۝٧٠

80. इन आयतों में जहन्नम में दाखिल होने वालों का एक दृश्य प्रस्तुत किया गया है। उदंड लिडर और पेशवा जब जहन्नम के क़रीब पहुँचाए जाएंगे तो देखेंगे कि उन के पीछे उन के अनुयायियों का लश्कर भी चला आ रहा है। वे लीडर वा पेशवा आपस में कहेंगे कि यह लश्कर भी तुम्हारे (अर्थात् हमारे) साथ जहन्नम में गिरने वाला है। इन के लिए स्वागत और शुभागमन नहीं मतलब यह कि बड़ी रूसवाई और अपमान का सामना है।

81. अनुयायी (साधारण जनता) अपने पेशवाओं और लीडरों को जवाब देंगे। अपमान और रूसवाई वास्तव में तुम्हारे लिए है क्यों कि तुम्ही ने हमें इस बुरे अन्जाम को पहुँचाया। अर्थात् जनता अपने गुमराह होने की ज़िम्मेदारी अपने लीडरों और धर्म गुरुओं पर डालेंगे।

82. फिर वे अपने रब से फ़रियाद करेंगे कि हमें जिन लोगों ने गुमराह किया था उन को दोहरी यातना दे। एक यातना स्वयं गुमराह होने की और दूसरी हमें गुमराह करने की।

83. तात्पर्य ईमान वाले हैं जिन को ये काफ़िर शरीर और उपद्रवी समझते रहे। क्यों कि उन के नज़दीक सत्य धर्म का आह्वान गुट बन्दी का आह्वान था और वे समझते थे कि बुत परस्ती एवं बहुदेववादी धारणा का विरोध समाज में फूट डालने का कारण है।

84. यह उन काफ़िरों की तरफ़ से आश्चर्याभिव्यक्ति है कि हम ने उन लोगों को मज़ाक बना लिया था जब कि वे नेक थे या वे कहीं और हैं तथा हमारी निगाहें उन्हें देख पाने में असमर्थ हैं। मतलब यह है कि उन जहन्नमियों को उस समय एहसास होगा कि जिन लोगों को हम उन के ईमान लाने के चलते शरीर ठहराते रहे वे वास्तव में शरीर न थे इसी लिए आज वे हमारे साथ इस अन्जाम को पहुँचने के लिए मौजूद नहीं हैं।

85. अर्थात् जहन्नम में दाखिल होने के अवसर पर गुमराह लीडरों और उन के पीछे चलने वाली भीड़ में जो बहस और तक्रार होगी वह बिलकुल सच्ची बात है जो निश्चित रूप से अस्तित्व में आएगी। कुर्आन इस से पेशगी आगाह कर रहा है

ताकि लोग होश में आएँ।

86. “क्रहहार” अर्थात् ज़बरदस्त और बलशाली जो हर चीज़ को अपने नियंत्रण में लिए हुए हैं और कोई भी उस के नियंत्रण से मुक्त नहीं और जिस के आदेश बलपूर्वक सब पर लागू होते हैं।

87. अल्लाह का यह परिचय कि वह क्रहहार अर्थात् बलशाली है, कायनात का मालिक है, और सब पर अपना अधिपत्य जमाए है, दिलों के अन्दर उस का भय और तक्रवा पैदा कर देती है। और उस का यह परिचय कि वह क्षमा करने वाला है, बन्दों को इस बात के लिए आमामा करता है कि वे अपने अपराधों और पापों की उस से क्षमा माँगे।

88. अर्थात् क्रियामत की खबर जब कि वे घटनाएँ सामने आएँगी जो ऊपर बयान की जा चुकी एक प्रचण्ड घटना की खबर है ऐसी खबर जिस को सुनते ही लोगों को चौंक जाना चाहिए।

89. अर्थात् तुम्हारा हाल बहुत अजीब है कि क्रियामत की इतनी दिल दहलाने वाली खबर सुन कर भी टस से मस नहीं होते और बचाव की चिन्ता तुम्हें कदापि नहीं होती।

90. इस से तात्पर्य वह घटना है जो आगे बयान हुई है। जब अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को और इब्लीस को आदेश दिया कि वे हज़रत आदम को सज़्दा करें तो फ़रिश्ते आदेशानुपालन के लिए तुरंत तैयार हो गए परन्तु इब्लीस पर यह आदेश भारी गुज़रा। इस लिए वह इस मामले में फ़रिश्तों से उलझने और अपनी मन्तिक्र तथा अपने व्यर्थ के तर्क चलाने लगा। यह घटना सर्वोच्च दरबार वालों (आलमे-बाला) की है जहाँ फ़रिश्तों के साथ उस समय इब्लीस भी मौजूद था और उन के बीच आदम को सज़्दा करने के मामले में तक्रार हुई थी।

91. अर्थात् सर्वोच्च दरबार वालों की ये खबरें मेरे पास वह्य के द्वारा पहुँच रही है, वरना मैं इन घटनाओं से अनभिज्ञ था। और मेरे पास वह्य (अल्लाह की प्रकाशना) इस लिए पहुँच रही है कि मैं लोगों को खबरदार करूँ।



71. जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा मैं मिट्टी से एक मनुष्य पैदा करने वाला हूँ।⁹² ④१
72. तो जब मैं उस को ठीक ठीक बना लूँ और उस में अपनी रूह फूँक दूँ⁹³ तो तुम उस के आगे सज्दे में गिर जाना। ④२
73. अतः सारे फ़रिश्तों ने सज्दा किया।⁹⁴ ④३
74. सिवाए इब्लीस के।⁹⁵ उस ने घमण्ड किया और काफ़िरी में से हो गया।⁹⁶ ④४
75. फ़रमाया ऐ इब्लीस। तुझे किस चीज़ ने इस को सज्दा करने से रोका, जिसे मैं ने अपने दोनों हाथों⁹⁷ से पैदा किया? तूने घमण्ड किया या तू उहड़ हो गया है। ④५
76. उस ने कहा मैं इस से बेहतर हूँ। तूने मुझे आग से पैदा किया और इस को मिट्टी से।⁹⁸ ④६
77. फ़रमाया यहाँ से निकल जा⁹⁹ तू मरदूद (तिरस्कृत) है। ④७
78. और तुझ पर मेरी लानत है बदले के दिन तक।¹⁰⁰ ④८
79. उस ने कहा ऐ मेरे रब ! मुझे उस दिन तक के लिए मोहलत दे जब लोग उठाए जाएंगे। ④९
80. फ़रमाया तुझे मोहलत दी गई।¹⁰¹ ⑤०
81. उस दिन तक के लिए जिस का समय निर्धारित है।¹⁰² ⑤१
82. उस ने कहा तेरी इज़्जत की क़सम¹⁰³ मैं इन सब को बहका कर रहूँगा।¹⁰⁴ ⑤२
83. सिवाय तेरे उन बन्दों के जिन को तूने ख़ालिस कर लिया हो।¹⁰⁵ ⑤३

92. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिम्र नोट २४
 93. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिम्र नोट २७
 94. यह सज्दा पूजा के लिए सज्दा किये जाने से बिल्कुल भिन्न आदम के सम्मान हेतु था जिस का आदेश अल्लाह तआला ही ने दिया था। इस से बुजुर्गों और कब्रों के आगे उन के आदर और सम्मान हेतु सज्दा करने के लिए कोई वैध औचित्य नहीं है। क्यों कि अल्लाह ने न तो बुजुर्गों के आदर और सम्मान के लिए सज्दा करने का आदेश दिया है और न वलियों की कब्रों के आगे सज्दा करने का। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह बकरः नोट ४७
 95. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बकरः नोट ४८
 96. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बकरः नोट ४९
 97. अल्लाह तआला का यह फ़रमान कि मैं ने आदम को अपने दोनों हाथों से पैदा किया है आदम की संरचना के महत्व को स्पष्ट करता है। अर्थात् यह अल्लाह की ख़ास रचना है जिस में उत्तम क्षमताएँ भर दी गई हैं और उसे ऐसी श्रेष्ठा प्रदान की गई है कि गोया वह अल्लाह की सृष्टि का शाहकार है।

यहाँ अल्लाह के हाथों का जो वर्णन हुआ है तो उस की कोई अपने मन से व्याख्या करना सही नहीं। अल्लाह ने अपना परिचय जिस तरह से कराया है उस को उसी तरह स्वीकार करना चाहिए सलफ़ (पुराने बुजुर्गों) का यही तरीका रहा है कि किसी बहस में पड़े बग़ैर इन बातों पर जैसी कि वे बयान हुई हैं ईमान लाते थे। और सलामती की राह यही है।

98. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १६
 99. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १७
 100. अर्थात् क्रियामत तक तुझ पर अल्लाह की फिटकार है और क्रियामत का दिन तो फ़ैसले का दिन है। उस दिन तु अपनी नियत सज़ा को पहुँचेगा।
 101. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट ८१
 102. अर्थात् क्रियामत के दिन तक।
 103. तेरी इज़्जत की क्रसम अर्थात् तेरी महानता की क्रसम।
 104. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिम्र नोट ३६
 105. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिम्र नोट ३७



84. फ़रमाया तो हक (सत्य) यह है और मैं हक़ ही कहता हूँ।¹⁰⁶

قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُولُ ﴿٨٢﴾

85. कि मैं जहन्नम को तुझ से और उन सब से भर दूँगा जो उन में से तेरा अनुपालन करेंगे।¹⁰⁷

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَتَّبِعُ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٥﴾

86. कहो मैं इस पर तुम से कोई मुआवज़ा (मज़दूरी) नहीं माँगता ¹⁰⁸ और न मैं बनावट करने वालों में से हूँ।¹⁰⁹

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ﴿٨٦﴾

87. यह तो एक याददेहानी है समस्त संसार वासियों के लिए।¹¹⁰

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٨٧﴾

88. और थोड़े ही समय बाद तुम को उस की (दी हुई) ख़बर मालूम हो जाएगी।¹¹¹

وَلَتَعْلَمَنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ﴿٨٨﴾

106. अर्थात् अल्लाह का हर इर्शाद सच्चा, यथार्थानुकूल और वास्तविकता का दर्पण होता है।

107. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट २२
यहाँ इस घटना को बयान करने से अभिप्रेत कुआन का इन्कार करने वालों को इस बात पर आगाह करना है कि वे शैतान के बहकावे में न आएं। वह नहीं चाहता कि मनुष्य हिदायत का मार्ग अपनाए और इन्कार करने वाले यह भी याद रखें कि जिस प्रकार शैतान घमण्ड करने के फ़लस्वरूप लानत का भागीदार हुआ उसी प्रकार वे भी घमण्ड में लिप्त हो कर लानत ही के भागीदार हो सकते हैं।

108. अर्थात् ग़ैब की ख़बरों पर आधारित अल्लाह का यह पैग़ाम जो मैं तुम्हें पहुँचा रहा हूँ इस पर न तुम से कोई मुआवज़ा और मज़दूरी चाहता हूँ और न इस के पीछे मेरा कोई सांसारिक स्वार्थ है बल्कि अपने दायित्व का निर्वाह और तुम्हारी भलाई के लिए निःस्वार्थ हो कर समझाने बुझाने की यह सेवा अन्जाम दे

रहा हूँ।

109. अर्थात् मेरी बातें बिल्कुल साफ़ और बेलाग़ हैं। बनावट कर के मैं ने कोई बात भी नहीं कही है इस लिए जिन बातों की मैं ख़बर दे रहा हूँ उन में शक और संदेह की तनिक भी गुन्जाइश नहीं।

110. अर्थात् यह कुआन संपूर्ण विश्व की समस्त जातियों के लिए अल्लाह की तरफ़ से याद देहानी और नसीहत के तौर पर अवतरित हुआ है। अतः किसी वर्गीय, जातीय और धार्मिक वैमनस्य एवं पक्षपात में लिप्त हुए बग़ैर इस की याददेहानी व नसीहत से लाभ उठाओ।

111. अर्थात् कुआन ग़ैब (परोक्ष) की जो ख़बरें दे रहा है उन की वास्तविकता शीघ्र ही तुम पर खुल जाएगी कुछ तो मौत के समय खुलेगी, और पूरी पूरी क्रियामत के दिन जो जल्द ही प्रकट होने वाली है।



सूरह अज़्ज़ुमर

३९. सूरह अज़्जुमर

नाम :- आयत ७१ में काफ़िरी को जहन्नम की तरफ़ “ज़ुमर” के रूप में गिरोह दर गिरोह हंकाए जाने और आयत ७३ में परहेज़गारों को जुमर के रूप में गिरोह दर गिरोह ले जाये जाने का वर्णन हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अज़्जुमर है।

नाज़िल होने का समय :- मक्के का मध्य दौर है।

केन्द्रीय विषय :- इबादत और अनुपालन को अल्लाह के लिए ख़ालिस करना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ८ में कुर्आन की इस मौलिक शिक्षा को तर्क सहित प्रस्तुत किया गया है कि दीन ख़ालिस अल्लाह ही के लिए है।

आयत ९ से २० में दोनों गिरोहों का अन्तर स्पष्ट किया गया है। एक वह जो शुद्ध रूप से दीन का अनुयायी और मात्र केवल अल्लाह का भक्त है और दूसरा वह जो ग़ैरुल्लाह का भक्त है।

आयत २१ से ३५ में कुर्आन की रहनुमाई को स्वीकार करने वालों की विशेषता और उन के इनाम बयान किये गए हैं तथा इस से विमुखता बरतने वालों को बुरे अन्जाम से आगाह किया गया है।

आयत ३६ से ५२ में इस तरह से समझाया गया है कि

तौहीद अर्थात् एक ही पूज्य का होना उभर कर सामने आए और ईमान लाने का जोश पैदा हो।

आयत ५३ से ६३ में उन ख़ुदा के बन्दों को जो गुमराही में पड़े हुए हैं अल्लाह की तरफ़ रुजू करने का निमंत्रण दिया गया है।

आयत ६४ से ७५ सूरह की समाप्ति की आयतें हैं जिन में यह स्पष्ट करते हुए कि तौहीद की धारणा ही सही और मज़बूत धारणा है, क्रियामत का एक दृश्य प्रस्तुत किया गया है और इन्कार करने वालों, तथा परहेज़गारों के गिरोहों व समूहों के रूप में अपनी अपनी मन्ज़िल की तरफ़ अलग अलग रवानगी तथा उन के आखिरी अन्जाम को बयान किया गया है।

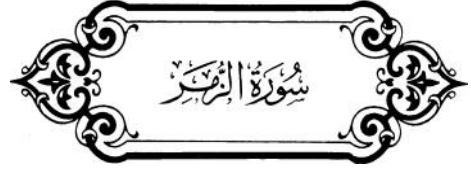
सोने से पहले इस सूरह की तिलावत करना :- तिर्मिज़ी में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि :-

كَانَ النَّبِيُّ ﷺ لَا يَنَامُ حَتَّى يَقْرَأَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَالزُّمَرِ - (ترمذی ابواب فضائل القرآن)

अर्थ :- “नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सोते न थे जब तक कि सूरह बनी इस्राईल और सूरह जुमर की तिलावत न करते” (तिर्मिज़ी अबवाब फ़ज़ाइलुल कुर्आन)

३९.सूरह अज़्जुमर

आयतें : ७५



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. इस किताब का उतारा जाना अल्लाह की तरफ़ से है ¹ जो प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।²

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ①

2. यह किताब हम ने तुम्हारी तरफ़ सत्य (के उद्देश्य) के साथ उतारी है ³ अतः तुम अल्लाह ही की इबादत (पूजा) करो। दीन (विनम्रता एवं दास्ता) को उस के लिए ख़ालिस करते हुए।⁴

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ②

3. सुनो ! ख़ालिस दीन (बन्दगी वा दास्ता) अल्लाह ही के लिए है।⁵ और जिन लोगों ने दूसरे संरक्षक (कर्ता धर्ता) बना रखे हैं (और कहते हैं) (हम उन की इबादत (पूजा) केवल इस लिए करते हैं कि वे हमें अल्लाह से निकट कर दें।⁶ अल्लाह निश्चय ही उन लोगों के बीच इस बात का फैसला कर देगा जिस में वे मतभेद कर रहे हैं।⁷ अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को मार्ग नहीं दिखाता जो झूठा और नाशुक्रा (कृतघ्न) हो।⁸

أَلِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ ③

4. यदि अल्लाह बेटा बनाना चाहता तो अपनी सृष्टि में से जिस को चाहता चुन लेता। वह पाक है (इस से कि उस का बेटा हो)⁹ वह अल्लाह एक है, सब पर मज़बूत पकड़ रखने वाला।¹⁰

لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَاصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ سُبْحَنَهُ هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ④

5. उस ने आसमानों और ज़मीन को सोद्देश्य पैदा किया है।¹¹ वह रात को दिन पर और दिन को रात पर लपेटता है। और उसी ने सूरज और चाँद को वशीभूत कर रखा है कि प्रत्येक नियत समय तक चला जा रहा है।¹² सुनो वह प्रभुत्वशाली है, क्षमा करने वाला।¹³

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ يَكُونُ اللَّيْلُ عَلَى النَّهَارِ وَيَكُونُ النَّهَارُ عَلَى اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ⑤

1. अर्थात् इस किताब का पैगम्बर पर नाज़िल किया जाना अल्लाह ही की तरफ़ से है। इस में किसी का कोई हाथ और कोई हस्तक्षेप नहीं, न शैतान का और न इन्सान का। यह आसमान से उतारी जा रही है, न कि पैगम्बर इस की रचना कर रहे हैं। यह कुर्आन का बड़ा दावा है जो उस ने बार बार दोहराया है ताकि इस किताब को लोग साधारण धार्मिक ग्रंथों में से एक ग्रंथ न समझ लें। बल्कि यह अच्छी तरह मन में बिठा लें कि इस का अवतरण अल्लाह के दरबार से हुआ है और इस कारण वह अत्यंत प्रमुखता वाली पुस्तक है। और यह वास्तविकता है कि आज विश्व की कोई धार्मिक पुस्तक सिवाय कुर्आन के अपने को दृढ़तापूर्वक इस हैसियत से प्रस्तुत नहीं करती कि उस का नाज़िल करने वाला अल्लाह संपूर्ण ब्रह्माण्ड का शासक है।

2. अल्लाह प्रभुत्वशाली है इस लिए उस की योजना और उस का आदेश लागू हो कर रहता है। और वह तत्वदर्शी है इस लिए उस की किताब भी तत्वपूर्ण है जिस की अनुभूति इस किताब में भली भाँति की जा सकती है।

3. सत्य के साथ नाज़िल की है का मतलब यह है कि यह किताब सत्य ले कर अवतरित हुई है। इस की शिक्षा सरासर सत्य है और असत्य का इस में मामूली समावेश भी नहीं है और न कोई बात निरुद्देश्य कही गई है।

4. “दीन को उस के लिए ख़ालिस करते हुए” इस वाक्य में दीन का शब्द दासता और विनम्रता के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है और इस का अनुमोदन कुर्आन की उन बहुतेरी आयतों से होता है जिन में बहुदेववादियों के उस ख़ैरे का वर्णन हुआ है कि जब वे किसी तूफ़ान आदि से दोचार होते हैं तो अल्लाह को पुकारते हैं दीन को उस के लिए ख़ालिस करते हुए।

وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللَّهَ

مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ - (القمان: ३२)

अर्थ :- “और जब मौज़ें साइबानों (छत्रों) की तरह उन पर छा जाती हैं तो वे अल्लाह को पुकारते हैं दीन (विनम्रता एवं दासता) को उस के लिए ख़ालिस करते हुए।” (लुक़मान ३२)

यहाँ “दीन” का अर्थ विनीत एवं दास्ता भाव ही हो सकता है और यह बहुदेववादियों की मानसिकता का चित्रण है जो तूफ़ान की ज़द में आ जाने के कारण उन में पैदा हो जाया करती थी। इस लिए आयत का मतलब यह है कि अल्लाह की इबादत इस तरह करो कि अन्तर्मान की विनम्रता, श्रद्धा तथा झुक जाने का भाव उसी के लिए हो। ऐसी पूजा नहीं जिस में दिल अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ झुका हुआ हो और विनम्रता, श्रद्धा एवं दासता की भेंट किसी और को भी अर्पित की जाए। अल्लाह

उसी इबादत को स्वीकार करता है जो सच्चे मन से विनीत और दास्ता भाव को उस के लिए ख़ालिस करते हुए की गई हो अर्थात् उस विनीत एवं दास्ता भाव में न दिखावा हो और न ग़ैरुल्लाह के लिए कोई हिस्सा।

ध्यान रहे कि शब्दकोष में दीन का अर्थ अनुपालन के हैं किन्तु मात्र शब्दकोष पर संतोष कर के कुर्आन की परिभाषाओं का व्यापक भावार्थ निर्धारित नहीं किया जा सकता बल्कि ज़रूरी है कि ऐसे शब्दों के बारे में इस बात को भी सामने रखा जाए कि स्वयं कुर्आन ने किन किन भावों की अभिव्यक्ति के लिए कौन कौन से शब्द इस्तेमाल किये हैं। और सार्थक भावार्थ का निर्धारण किया जाए।

5. अर्थात् ऐसी दास्ता और ऐसी बन्दगी जो हर प्रकार के शिर्क से پاک हो, अल्लाह ही के लिए ख़ास है और वही इस का एक मात्र अधिकारी है। और दीन (दासता) के भावार्थ में जैसा कि ऊपर के नोट में स्पष्ट किया गया, विनम्रता का वह भाव है जो दिल में उत्पन्न होता है तथा अपने गुलाम और दास होने का भाव शामिल है।

6. बहुदेववादियों ने फ़रिश्तों को अपना करता धर्ता (संरक्षक) बनाया था कि उन की पूजा करो वे हमारे काम बना देंगे। उन का ख़याल था कि अल्लाह का सामीप्य प्राप्त करने के लिए फ़रिश्तों को वसीला बनाना आवश्यक है। और फ़रिश्तों को वसीला बनाने के लिए वे उन बातों को उन के पक्ष में उचित ठहराते जो अल्लाह के लिए ख़ास हैं, जैसे उन से फ़रियाद करते, अपनी ज़रूरतों की उन से माँग करते, अपनी हाज़तें उन से तलब करते, मुसीबत में उन्हें पुकारते, हालाँकि यह सब बातें पूजा के भावार्थ में शामिल हैं। और वे उस का कारण यह बताते हैं कि हम फ़रिश्तों की पूजा इस लिए करते हैं ताकि वे हमें अल्लाह से निकट कर दें। अर्थात् फ़रिश्तों की पूजा अल्लाह के सामीप्य का माध्यम और वसीला है। इस आयत में उन के इस भ्रामक कारण को अनुचित एवं ग़लत क्रार दिया गया है। अल्लाह का सामीप्य प्राप्त करने के लिए किसी की पूजा करने की आवश्यकता नहीं है। एक मात्र अल्लाह की सच्चे मन और लगन के साथ उपासना कर के ही उस का सामीप्य प्राप्त किया जा सकता है।

मक्का के बहुदेववादी फ़रिश्तों की पूजा का जो कारण बताते थे, वही कारण क़ब्र परस्त वलीयों और पीरों के मामले में करते हैं कि हम इन की नज़्र और नियाज़ इस लिए करते हैं कि इन के वसीले से हम अल्लाह से कुछ निकट हो जाएंगे और वहाँ हमारी सुनी जायेगी। यदि वे कुर्आन की इन आयतों को ध्यानपूर्वक पढ़ते तो शैतान के फरेब में मुत्तिला न होते।

7. अर्थात् क्रियामत के दिन अल्लाह अपना फैसला लागू

कर देगा।

8. अर्थात् अल्लाह के बारे में झूठ बोलने वाले और उस के नाम से झूठी दीनदारी चलाने वालों और उस की नेमतों को पा कर किसी और का शुक्र करने वाले अल्लाह की हिदायत से महरूम रहते हैं जब तक कि वे अपने इस ग़लत रवैये को छोड़ने के लिए आमादा न हो जाएँ।

9. अर्थात् अल्लाह के लिए बेटे और बेटियाँ होने की अवधारणा सरासर ग़लत है। यदि यह मान लिया जाए कि वह बेटा बनाएगा भी तो उस की सूरत वही हो सकती थी कि वह अपनी सृष्टि में से जिस को चाहता बेटे की हैसियत से चुन लेता। मगर इस सूरत में बेटा उस का मम्लूक (प्रजा) और बन्दा ही रहता। क्योंकि उस की सारी सृष्टि उस की मम्लूक है और सब उस के बन्दे हैं। खुदा का अंग अथवा खुदा का अंश तो वह हो ही नहीं सकता था, क्यों कि खुदा का न कोई अंग होता है न उस से कोई वस्तु खारिज होती है। कोई भी उस जैसा नहीं है। अल्लाह ने अपनी सृष्टि में से भी किसी को बेटे की हैसियत से नहीं चुना क्यों कि किसी को बेटे की

हैसियत देना ईश्वरिय शान के विरुद्ध है। और इस से कमज़ोरी का पता चलता है। जब कि अल्लाह हर प्रकार की कमज़ोरीयों से پاک है। उस की शान इस निम्न स्तर की बातों से बहुत ऊँची है कि वह किसी को बेटा बना ले।

10. खुदा की यदि संतान होती तो खुदा की शक्ति और शासनाधिकार भी बट जाता। जब कि यह शक्ति और यह शासनाधिकार अविभाज्य है। वह अकेला है और सब पर उस की पकड़ मज़बूत है। इस लिए कोई सृष्टि उस की पकड़ से आज़ाद नहीं हो सकती फिर उस के लिए संतान होने की धारणा का क्या औचित्य रह जाता है?

11. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अनआम नोट १२४ और सूरह यूनस नोट ११५

12. व्याख्या के लिए देखिए सूरह रअद नोट ८

13. वह प्रभुत्वशाली है इस लिए उस की अवज्ञा से तुम्हें डरना चाहिए। और वह क्षमा करने वाला है इस लिए अपने गुनाहों पर उस से क्षमा माँगनी चाहिए।



उस ने तुम को एक जान से पैदा किया फिर उस से उस का जोड़ा बनाया। और उस ने तुम्हारे लिए मवेशियों की आठ क्रिस्में (नर और मादा) पैदा की वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेट में तीन अन्धकारों के बीच पैदा करता है। एक बनावट के बाद दूसरी बनावट में। वही अल्लाह तुम्हारा प्रभु है। उसी का राज्य (शासन) है, उस के सिवा कोई पूज्य नहीं। फिर तुम को कहाँ फेरा जा रहा है? (अल-कुर्आन)

6. उस ने तुम को एक जान से पैदा किया फिर उस से उस का जोड़ा बनाया ¹⁴। और उस ने तुम्हारे लिए मवेशियों की आठ क्रिस्में (नर और मादा) पैदा की ¹⁵ वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेट में तीन अन्धकारों के बीच पैदा करता है। ¹⁶ एक बनावट के बाद दूसरी बनावट में। ¹⁷ वही अल्लाह तुम्हारा प्रभु है। उसी का राज्य (शासन) है, उस के सिवा कोई पूज्य नहीं। ¹⁸ फिर तुम को कहाँ फेरा जा रहा है? ¹⁹

خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَآتَلَ لَكُمْ
مِّنَ الْأَنْعَامِ ثَمِينَةَ أَزْوَاجٍ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ خَلْقًا مِّنْ
بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلُمَاتٍ ثَلَاثٍ ذَٰلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْعَلِيمُ لَا إِلَهَ إِلَّا
هُوَ فَآلَىٰ تَصَرُّفُونَ ⑥

7. अगर तुम नाशुक्री करो तो अल्लाह तुम से बेनियाज है (तुम्हारा मोहताज नहीं) और अपने बन्दों के लिए नाशुक्री को पसन्द नहीं करता। और यदि तुम शुक्र करो तो वह उसे तुम्हारे लिए पसन्द करता है। ²⁰ कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। ²¹ फिर तुम्हारी वापसी तुम्हारे रब ही की तरफ़ है। वह तुम्हें बताएगा कि तुम क्या करते रहे हो। ²² वह दिलों का हाल जानता है। ²³

إِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ وَلَا يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ
وَإِنْ تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ثُمَّ إِلَىٰ
رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ إِنَّهُ
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ⑦

8. इन्सान को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह अपने रब की ओर रुजू हो कर उसे पुकारता है। ²⁴ फिर जब वह उसे अपनी नेमत प्रदान करता है तो वह उस चीज़ को भूल जाता है जिस के लिए वह पहले पुकार रहा था। ²⁵ और अल्लाह का समकक्ष (बराबरी का) ठहराने लगता है ²⁶ ताकि लोगों को उस की राह से भटका दे। ²⁷ (ऐसे व्यक्ति से) कहो अपने कुफ़्र से थोड़े दिन लाभ उठा ले, तू निश्चय ही नर्क वालों में से है। ²⁸

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ
نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُو إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ
أُنْدَادًا الْيُضِلُّ عَنْ سَبِيلِهِ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ بِكُفْرِكُمْ أَفَلَا تَعْلَمُونَ
إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ⑧

9. क्या वह व्यक्ति, जो रात की घड़ियों में सज्दा और क्रियाम की हालत में इबादत में लगा रहता है, ²⁹ आखिरत का भय रखता है और अपने रब की रहमत का उम्मीदवार है ³⁰ (और वह जो काफ़िर है दोनों बराबर हो सकते हैं? ³¹) इन से पूछो ³² क्या वे जो ज्ञान रखते हैं और वे जो ज्ञान नहीं रखते समान हो सकते हैं? ³³ याददेहानी (नसीहत) तो बुद्धिवाले ही हासिल करते हैं। ³⁴

أَمَّنْ هُوَ قَانَتْ أَنْاءُ الْبَيْتِ سَاجِدًا أَوْ قَانِمْ يَحْذَرُ الْآخِرَةَ
وَيَرْجُو رَحْمَةً رَبِّهِ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ
وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ⑨

14. इस आयत में “सुम्म” [۞] अर्थात् फिर का मतलब यह है कि फिर उस की कुदरत के इन चमत्कारों को भी देखो कि उस ने उसी एक जान से उस का जोड़ा बनाया। व्याख्या के लिए देखिए सूरह निसा नोट ३ और सूरह आराफ़ नोट २९२

15. अनआम अर्थात् मवेशी से तात्पर्य पालतू चौपाये, ऊँट, गाय, भेड़ और बकरी हैं और इन के नर और मादा मिल कर आठ क्रिस्में हुई। (अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह निसा नोट २६१)

इन मवेशियों की सृष्टि के लिए “अनज़लना” हम ने उतारा का शब्द प्रयुक्त हुआ है जो इस बात की तरफ़ इशारा करता है कि उन की रचना इस तरह हुई गोया वह एक नेमत है जो इन्सान के लिए आसमान से उतारी गई है।

16. तीन अन्धकारों से मुराद तीन परदे हैं। पेट, गर्भाशय और वह झिल्ली जिस में बच्चा लिपटा हुआ होता है। यह दलील है इस बात की, कि मनुष्य का पैदा करने वाला, खुली और छिपी, सपष्ट और अस्पष्ट, उज्ज्वल और अंधकार सब चीज़ों का जानने वाला है और उस की सृष्टि का काम अंधकार में भी अन्जाम पाता है।

17. अर्थात् इन तीन परदों के बीच भ्रूण को बनावट के विभिन्न चरणों से गुज़ारता रहता है और उस के रूप बदलते रहते हैं। अभी वह गोश्त का लोथड़ा था और अब उस ने इन्सानी रूप धार लिया।

18. यह सारा किया धरा जिस का अभी अभी वर्णन हुआ, अल्लाह ही का है। इन कामों में किसी का कोई हाथ नहीं। और यह इस बात का प्रमाण है कि वही तुम्हारा रब है और वही संपूर्ण ब्रह्माण्ड का शासक है। इस के बाद अल्लाह के सिवा किसी और के खुदा या पूज्य होने का प्रश्न ही कहाँ पैदा होता है।

19. अर्थात् अल्लाह का एक मात्र पूज्य होना एक खुली वास्तविकता है जिस की अनुभूति तुम रात दिन करते हो फिर क्या चीज़ है जो तुम्हें इस वास्तविकता से फेर देती है? यह इशारा है शैतान की तरफ़ जो मनुष्य को एकेश्वरवाद की राह से विमुख कर के शिर्क बहुदेववाद में फँसा देता है।

20. ना शुक्र की वास्तव में कुफ़्र है। जो व्यक्ति अल्लाह की दी हुई नेमतों से लाभ उठाता है लेकिन उस के दिल में उस के लिए कृतज्ञभाव नहीं उभरता या उन नेमतों को वह किसी और की देन समझ कर उस के समक्ष चढ़ावे और नज़्र नियाज़ पेश करने लगता है तो वह बहुत बड़ी कृतघ्नता का सबूत देता जो सरासर कुफ़्र है। कृतघ्नता अथवा नाशुक्र की रवयै अपना कर के मनुष्य अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ता बल्कि अपने लिए ही निराशा का प्रबंध करता है। अल्लाह इस बात का हरगिज़ मुहताज नहीं है कि बन्दे उस का शुक्र करें, उस का गुणगान करें।

अल्लाह को न बन्दों के शुक्र से लाभ पहुँचता है और न उन की नाशुक्र से हानि। यह हक़ीक़त एक हदीस-कुदसी में इस तरह बयान हुई है :-

अल्लाह तआला फ़रमाता है, ऐ मेरे बन्दों! अगर तुम्हारे अगले पिछले सारे इन्सान और जिन्न सब से अधिक नेक और परहेज़गार व्यक्ति के बराबर हो जाँएँ तो इस से मेरी सल्तनत में कोई वृद्धि नहीं होगी। और ऐ मेरे बन्दों ! अगर तुम्हारे अगले पिछले सारे इन्सान और जिन्न सब से अधिक उल्लंघनकारी व्यक्ति के बराबर हो जाँएँ तो इस से मेरी सल्तनत में कोई कमी न होगी।” (मुस्लिम किताबुलबर)

अलबत्ता जो व्यक्ति कृतज्ञता वा शुक्रगुजारी का रवैया अपनाता है वह हक़ीक़त पसन्द की सबूत देता है और अल्लाह को अपने बन्दों के लिए यही बात पसंद है। इस लिए उस की प्रसन्नता उन्हीं लोगों को प्राप्त होती है जो शुक्र गुज़ार हों। इस के विपरीत कृतघ्नता वा नाशुक्र अल्लाह को अत्यंत अप्रिय है और जो नाशुक्र होते हैं उन को अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त नहीं होती।

21. अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति को अपने गुनाह का बोझ उठाना है। कोई व्यक्ति भी दूसरे के गुनाह अपने सर नहीं लेगा। अतः हर व्यक्ति अपनी ज़िम्मेदारी महसूस करे और दूसरों के कहने पर गुनाह में न लिप्त हो।

22. अर्थात् क्रियामत के दिन प्रत्येक व्यक्ति के सामने उस के कर्मों का दफ़्तर खोल कर रख दिया जाएगा।

23. अल्लाह को हर हर व्यक्ति के दिल का हाल मालूम है कि अल्लाह के लिए उस के दिल में शुक्र की भावनाएँ हैं या ना शुक्र की। ईमान का जोश है या कुफ़्र और गुनाह का, मुहब्बत है या नफ़रत।

24. अर्थात् तकलीफ़ में हार्दिक झुकाव के साथ अपने सच्चे रब को पुकारता है और दुआ करता है।

25. अर्थात् जब अल्लाह उस की तकलीफ़ को दूर कर देता है और उसे सुख प्रदान करता है तो वह भूल जाता है कि कभी वह तकलीफ़ से पीड़ित था और उस से मुक्ति पाने के लिए उस ने अपने रब से दुआ की थी। यह है उस की नाशुक्र की मिसाल।

26. अल्लाह के सहक़क्ष ठहराने का मतलब यह है कि जो मामला अल्लाह ही के साथ किया जाना चाहिए वह मामला वह ग़ैरुल्लाह के साथ भी करने लगता है, जैसे ग़ैरुल्लाह के लिए नज़्र और नियाज़, भेट, बलिदान, के अन्य कर्म।

27. अर्थात् खुद तो भटक ही गया, दूसरों को भी भटका रहा है।

28. ऐसे व्यक्ति का ठिकाना आख़िरकार दोज़ख़ ही बनने

वाला है।

इस आयत के अनुसार ऐसे व्यक्ति को जो बुत परस्ती और खुले शिर्क व कुफ्र में लिप्त हों और एकेश्वरवाद स्वीकार करने के लिए आमादा न हो सावधान कर देना चाहिए कि वह जहन्नमी हैं ताकि उस पर हुज्जत पूरी तरह कायम हो जाए।

29. “क्रानितून” का अर्थ यहाँ इबादत में लगे रहने के हैं और रात की घड़ियों में अल्लाह की इबादत में लगना ईमान का उच्च गुण है। इस से यह भी स्पष्ट हुआ कि रात में आदमी अधिक से अधिक जितनी नमाज़ भी पढ़ ले लाभ ही की बात होगी। रकअतों की कोई क़ैद नहीं है। सूरह फुरक़ान में भी इस विशेषता को उजागर किया गया है।

وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا - (الفُرْقَان: १५)

अर्थ : “जो अपने रब के आगे सज्दे और क्रियाम में रातें गुज़ारते हैं।”

30. अर्थात् आखिरत में अल्लाह के समक्ष जबाबदेही से डरता भी है और उस की रहमत की आस भी रखता है। इस लिए न वह खुशफ़हमियों, सुन्दर भुलावों, और आरज़ुओं में जीता है और न निराशा का शिकार होता है बल्कि अपने आप को संतुलित रखता है।

31. यह वाक्य अरबी की तत्वपूर्ण शैली के अनुसार अन्तर्निहित है अर्थात् शब्दों में बयान नहीं हुआ है इस लिए हम ने उसे ब्रेकेट में खोल दिया है। प्रश्न यह है कि यदि अल्लाह के दो बन्दे जिन में से एक उस से डरता रहता है कि रात में अपनी नींद और अपने आराम को छोड़ कर अल्लाह की इबादत में सक्रिय हो जाता है और उस की रहमत का उम्मीदवार होता है। और दूसरा एक व्यक्ति जो अल्लाह से गाफ़िल है, उस की इबादत की उस को कोई प्रवाह नहीं, तथा निरंतर उस की नाशुक्री में लगा रहता है तो क्या दोनों अपने आचरण और अन्जाम की दृष्टि से समान हो सकते हैं? यदि नहीं तो फिर तुम उस की कृतघ्नता में लगे रहने पर इस भ्रम में कैसे लिप्त हो जाते हो कि किसी न किसी माध्यम या वसीले से तुम्हें अल्लाह का सामीप्य प्राप्त हो जाएगा?

32. अर्थात् इन इन्कार करने वालों से पूछो।

33. ज्ञान से तात्पर्य अल्लाह की पहचान, तथा उस तक पहुँचने का मार्ग, जीवन उद्देश्य का ज्ञान, अल्लाह के आदेशों की जानकारी और आखिरत के इनाम और सज़ा से आगाही हैं। जो व्यक्ति यह ज्ञान रखता है और जो व्यक्ति यह ज्ञान नहीं रखता दोनों किस प्रकार अपने गुणों एवं विशेषताओं और अपने अन्जाम की दृष्टि से बराबर हो सकते हैं? यह सच्चा और मौलिक ज्ञान जो मनुष्य के जीवन की दिशा को निर्धारित कर देता है प्रत्येक व्यक्ति के लिए इस की प्राप्ति आवश्यक है। जो लोग इस विद्या से बेपरवाह हो कर (मादी उलूम) भौतिक ज्ञान भी प्राप्त करते हैं जिहालत के अंधकार में ही रहते हैं। और अपने बुरे अन्जाम से बेख़बर रहते हैं।

34. अर्थात् इन बातों को समझने के लिए अपनी बुद्धि को चलाने की आवश्यकता है। बुद्धि को एक खँचे में बन्द रख कर इन वास्तविकताओं को नहीं समझा जा सकता।

35. इशारा है इस बात की तरफ़ कि यदि एक मात्र खुदा की इबादत करने और उस से डरते हुए जीवन गुज़ारने में काफ़िर लोग बाधक हो रहे हैं तो अपने दीन और ईमान की सुरक्षा के लिए किसी दूसरे क्षेत्र या किसी अन्य देश को हिजरत कर के जा सकते हो। उस की ज़मीन किसी एक देश तक सीमित नहीं है बल्कि अत्यंत विशाल और फैली हुई है। दीन की खातिर देश छोड़ा जा सकता है किन्तु देश की खातिर दीन नहीं छोड़ा जा सकता।

ध्यान रहे कि उस ज़माने में हिजरत की राहें खुली हुई थीं। और यदि आज कल के ज़माने में बन्द हैं तो हालत में बहुत बदलाव भी आया है। उस ज़माने में अपनी धारणा और अपने धर्म पर चलने की आज़ादी नहीं थी। क़बीला और क़ौम के धर्म को छोड़ देने पर अधिकतर लड़ाई झगड़े का सामना करना पड़ता था। लेकिन मौजूदा ज़माने में संवैधानिक रूप से अपनी धारणा और अपने धर्म पर चलने की स्वतंत्रता प्राप्त है और धर्म परिवर्तन पर निश्चित रूप से दंगों आदि का सामना नहीं करना पड़ता इस लिए हिजरत की ज़रूरत कम ही सामने आती है। विशेष रूप से सेक्यूलर राज्यों में जहाँ अपने अपने धर्म के प्रचार की भी स्वतंत्रता प्राप्त होती है।



और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं सब से पहले मुस्लिम बनूँ। कहो यदि मैं अपने रब की अवज्ञा करूँ तो मुझे एक सख्त दिन की यातना का डर है। कहो मैं तो अल्लाह ही की इबादत करता हूँ दीन (श्रद्धा और दासता) को उस के लिए खालिस कर के। तुम उस के सिवा जिस की चाहो इबादत करो। कहो असली घाटे में रहने वाले वही लोग हैं जिन्होंने क्रियामत के दिन अपने को और अपने परिवार वालों को घाटे में डाला। सुनो यही खुला घाटा है। (अल-कुर्आन)

10. कहो (अल्लाह फ़रमाता है) ऐ मेरे बन्दों ! जो ईमान लाए हो अपने रब से डरो। जो लोग इस दुनिया में नेक बन कर रहे उन के लिए नेक बदला है। और अल्लाह की ज़मीन फैली हुई है।³⁵ सब करने वालों को तो उन का बदला बेहिसाब दिया जाएगा।³⁶

قُلْ يٰۤعِبَادِ الدِّينِ اٰمِنُوْا اَتَقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا
فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّاَرْضُ اللّٰهِ وَاِسْعٰۤءَةُ اٰثِمٰۤیُوْٓقٍ
الضّٰیِرُوْنَ اَجْرُهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝۱۰

11. कहो मुझे आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह ही की इबादत करूँ। दीन (अनुपालन) और दासता) को उस के लिए ख़ास कर के।

قُلْ اِنِّیْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لِّهِ الدِّیْنَ ۝۱۱

12. और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं सब से पहले मुस्लिम बनूँ।³⁷

وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝۱۲

13. कहो यदि मैं अपने रब की अवज्ञा करूँ तो मुझे एक सज़ा दिन³⁸ की यातना का डर है।

قُلْ اِنِّیْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّیْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ۝۱۳

14. कहो मैं तो अल्लाह ही की इबादत करता हूँ दीन (श्रद्धा और दासता) को उस के लिए ख़ालिस कर के।³⁹

قُلْ اللّٰهُ اَعْبُدْ مُخْلِصًا لِّهِ دِیْنِیْ ۝۱۴

15. तुम उस के सिवा जिस की चाहो इबादत करो।⁴⁰ कहो असली घाटे में रहने वाले वही लोग हैं जिन्होंने ने क्रियामत के दिन अपने को और अपने परिवार वालों को घाटे में डाला। सुनो यही खुला घाटा है।⁴¹

فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ قُلْ اِنَّ الْخٰیِرَیْنَ الَّذِیْنَ
خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ یَوْمَ الْقِیَمَةِ اِلَّا ذٰلِكَ
هُوَ الْخَسِرَانِ الْبٰیِّن ۝۱۵

16. उन के लिए आग की तहें होगी, ऊपर से भी और नीचे से भी।⁴² यह है वह चीज़ जिस से अल्लाह अपने बन्दों को डराता है।⁴³ ऐ मेरे बन्दों ! मेरा तक्रवा (डर) अपनाओं।⁴⁴

لَهُمْ مِّنْ نّٰوۤیۡمٍ ظُلُّ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ عَذَابٍ ظُلُّ ذٰلِكَ یُخَوِّفُ
اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَةً یَّعْبَادُ فَاتَّقُوْنَ ۝۱۶

17. और जिन लोगों ने तागूत⁴⁵ की बन्दगी से अपने आप को बचाया और अल्लाह की तरफ़ रुजू कर लिया उन के लिए ख़ुशख़बरी है।⁴⁶ तो मेरे उन बन्दों को ख़ुशख़बरी दे दो।

وَالَّذِیْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ یَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْۤا اِلَی اللّٰهِ
لَهُمُ الْبَشْرِۤی فَبَشِّرْ عِبَاد ۝۱۷

36. सब्र करने वालों से तात्पर्य दीने-हक़ और जीवन प्रणाली पर जमे रहने वाले और इस सच्चे मार्ग की मुसीबतों और कष्टों को झेलने वाले लोग हैं। बेहिसाब इनाम से तात्पर्य इतना अधिक इनाम (प्रतिफल) कि जिस का अन्दाज़ा न किया जा सके। उर्दू में बेशुमार शब्द का प्रयोग इन्हीं अर्थों में होता है।

यह है सब्र की फ़जीलत तथा उस के लाभ। कुर्आन इसी प्रकार के गुणों को पैदा करने पर जोर देता है और इन को बहुत बड़ा लाभ बताता है। किन्तु कमज़ोर और गढ़ी हुई हदीसों ने छोटी छोटी नेकियों का इतना बड़ा इनाम बयान कर दिया है कि लोग उन नेकियों ही का आयोजन करने लगे और इन सदगुणों की ओर से बेपरवाह हो कर रह गए। परिणाम यह कि दीन के मामले में वह संतुलन बाक़ी नहीं रहा जो कुर्आन ने बताया था। कुर्आन के मुक़ाबले में कमज़ोर और गढ़ी हुई हदीसों से चिपक कर रहने का यह बहुत भारी नुक़सान है जो मिल्लते इस्लामिया को भुगतना पड़ रहा है।

37. अर्थात् मुझे आदेश मिला है कि कोई अपने को अल्लाह के हवाले करे या न करे मैं सब से पहले अपने को अल्लाह के हवाले करूँ अर्थात् पूर्ण रूप से समर्पित करूँ।

मुस्लिम अर्थात् वह जिस ने अल्लाह के दीन इस्लाम को स्वीकार कर के अपने को पूर्ण रूप से अल्लाह के हवाले कर दिया ।

38. मुराद क्रियामत का दिन है।

39. आयत ८ में अल्लाह की सच्चे मन से इबादत का आदेश नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिया गया था। इस आयत में उस के अनुपालन का ज़िक्र हुआ है।

40. अर्थात् यदि तुम अल्लाह की सच्चे मन से इबादत नहीं करना चाहते तो फिर जिस की चाहो करो और अपने बुरे अन्जाम के लिए तैयार रहो।

41. सांसारिक लाभ सामयिक हैं । जो लोग आखिरत को नज़रंदाज़ कर के सांसारिक लाभों की प्राप्ति में अपनी पूरी आयु खपा देते हैं वे बहुत बड़े घाटे का सौदा करते हैं। अर्थात् संसार

के क्षणिक एवं अस्थायी लाभों की खातिर आखिरत के हमेशा रहने वाले स्थायी लाभों से महरूम का। मगर ऐसे लोग इस फ़रेब में मुब्तिला होते हैं कि वे बड़ा ही सफल जीवन गुज़ार रहे हैं और मर जाने के बाद उन्हें किसी क्षति या हानि से दोचार होना नहीं है। वे अपने परिवारजनों को भी दुनिया परस्ती ही की राह दिखाते हैं और आम तौर से वे उन्हीं के पीछे चलते हैं इस लिए क्रियामत के दिन उन के साथ परिवार वाले भी तबाह होंगे।

42. आग की तहें ऊपर से भी होंगी और नीचे से भी। इस तरह वे आग में बिलकुल घिरे हुए होंगे।

43. अर्थात् इस अन्जाम से डराता है।

44. अर्थात् तुम यदि इस अन्जाम से दोचार होना नहीं चाहते तो फिर अल्लाह से डरने और उस की अवज्ञा से बचने का मार्ग अपनाओ।

45. तागूत का मतलब इमाम राग़िब ने जो कुर्आनी शब्द कोष के ईमाम हैं इस तरह बयान किये हैं

والتطاغوت عبارة عن كل متعدد وكل معبود

من دون الله سمى الساحر والكاهن

والمارد من الجن والصارف عن طريق

الخير طاغوتاً. (مفردات راغب ص ३०८)

अर्थ :- “तागूत से तात्पर्य हर वह व्यक्ति है जो सीमोल्लंघन करने वाला हो और हर वह पूज्य है जो अल्लाह के सिवा हो।..... जादूगर, ज्योतिषी, उद्दण्ड जिन और भलाई के मार्ग से हटाने वाले को तागूत कहा जाता है।” (मुफ़र्रदात राग़िब पृष्ठ ३०७)

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह नहल नोट ५५

46. खुशख़बरी उन लोगों को दी गई है जो अल्लाह की तरफ़ रुजू करें। ग़ैरुल्लाह की पूजा और दास्ता से उन्हीं ने अपने आप को बचा लिया है।



18. जो कलाम (बात) को ध्यान से सुनते हैं और बेहतरीन अर्थ का अनुपालन करते हैं। ये वे लोग हैं जिन को अल्लाह ने हिदायत प्रदान की है। और यही बुद्धिमान हैं।⁴⁷

الَّذِينَ يَسْمَعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ وَأُولَٰئِكَ هُمْ أُولُو الْأَلْبَابِ ۝١٨

19. क्या जिस पर अज़ाब का आदेश लागू हो गया हो (उसे कोई बचा सकता है?) क्या तुम उसे बचा सकते हो जो दोज़ख में जाने वाला हो?⁴⁸

أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ أَفَأَنْتَ تُقْدِرُ عَلَىٰ فِي النَّارِ ۝١٩

20. अलबत्ता जो लोग अपने रब से डरते हैं उन के लिए (ऐसी ऊँची इमारतें होंगी जिन में) मज्जिल पर मज्जिल बनी हुई होंगी। उन के नीचे नहरें बह रही होंगी। यह अल्लाह का वादा है। अल्लाह अपने वादे का उल्लंघन नहीं करता।

لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا أَمْهَاتٍ مِّنْ قَوْمٍ عِزٌّ مَّبِيتَةٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ وَعَدَ اللَّهُ لَا يَخْلِفُ اللَّهُ الْوَعْدَ ۝٢٠

21. क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह आसमान से पानी बरसाता है। फिर उस को ज़मीन के अन्दर स्रोतों के रूप में जारी कर देता है। फिर उस से विभिन्न प्रकार की खेतियाँ पैदा करता है। फिर वे सुख जाती हैं और तुम देखते हो कि पीली पड़ गई हैं। फिर वह उन को चूर्ण विचूर्ण कर देता है। निस्संदेह इस में याददेहानी है ⁴⁹ बुद्धि रखने वालों के लिए।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيمُ فَتَرَاهُ مُصْفًّراً ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرًا لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۝٢١

22. क्या वह व्यक्ति जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया और वह अपने रब की तरफ़ से रौशनी पर है उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जो अन्धकारों में भटक रहा हो ?⁵⁰ तो तबाही है उन के लिए जिन के दिल अल्लाह के ज़िक्र (याद) की तरफ़ से सज़्ज हो गए हैं।⁵¹ ये लोग खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।

أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّنْ رَبِّهِ فَوَيْلٌ لِّلْقَاسِيَةِ قُلُوبِهِمْ مِّنْ ذِكْرِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝٢٢

23. अल्लाह ने बेहतरीन कलाम नाज़िल फ़रमाया है।⁵² एक ऐसी किताब जिस की आयतें एक दूसरे से मिलती जुलती हैं ⁵³ और इस लायक हैं कि बार बार दोहराई जाएँ।⁵⁴ इस से उन लोगों के रौंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने रब से डरते हैं।⁵⁵ फिर उन के शरीर और उन के दिल नर्म हो कर अल्लाह के ज़िक्र की ओर उत्प्रेरित हो जाते हैं।⁵⁶ यह अल्लाह की हिदायत है ⁵⁷ जिस के द्वारा वह मार्ग दिखाता है जिसे चाहता है। और जिस पर अल्लाह राह गुम कर दे उस को कोई हिदायत देने वाला नहीं।

اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ذَٰلِكَ هُدَىٰ اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝٢٣

47. बुद्धिमानी यह है कि आदमी अल्लाह के कलाम को ध्यान से सुने और उस का अच्छे से अच्छा भावार्थ निकाल कर के उस का अनुपालन करे। हिदायत की राह ऐसे ही लोगों पर खुलती है और ऐसे ही लोगों को सफलता की शुभ सूचना दी गई है। इस के विपरीत जो लोग अल्लाह के कलाम को ध्यान से नहीं सुनते और उस के अच्छे भावार्थ को छोड़ कर उस को कुछ और अर्थ पहनाने की कोशिश करते हैं वे बहस में उलझ कर रह जाते हैं तथा नासमझी एवं मूर्खता का परिचय देते हैं जिस का नतीजा हिदायत से महरूमी है।

इस आयत से यह रहनुमाई मिलती है कि यदि एक शब्द के शब्दकोष में कई अर्थ हों तो सोचना चाहिए कि कुआन में जहाँ वह शब्द प्रयुक्त हुआ है किस बेहतरीन भावार्थ को अदा कर रहा है क्योंकि अल्लाह का कलाम अपने अर्थ और भावार्थ की दृष्टि से उच्च ही हो सकता।

48. अर्थात् काफ़िर जिस पर अल्लाह के अज़ाब का फैसला लागू हो गया हो उसे अज़ाब (यातना) से कौन बचा सकता है? अल्लाह का रसूल भी उसे नहीं बचा सकता। सलामती इसी में है कि लोग बुद्धि से काम लें और उस कलाम की पैरवी करें जो अल्लाह का रसूल उन के सामने प्रस्तुत कर रहा है।

49. याद देहानी इस बात की कि यह दुनिया सदा बहार नहीं है बल्कि निश्चित रूप से इस का पतन होने वाला है इस लिए बुद्धिमता का तक्राज़ा यही है कि आदमी दुनिया की चकाचौंध पर अपनी निगाहों को न जमाए और उस के आकर्षण पर आकृष्ट न हों बल्कि आखिरत को लक्ष्य बना कर दुनिया में दायित्वपूर्ण जीवन बिताए क्योंकि मूलभूत, वास्तविक, तथा अनंत नेमतें आखिरत ही की हैं।

50. सीना खोल देने से तात्पर्य संतुष्ट कर देना है। मतलब यह है कि जिस व्यक्ति का दिल अल्लाह की तौफ़ीक़ से इस्लाम पर संतुष्ट हो गया और वह इस दीन के बारे में किसी प्रकार की शंका, संदेह और कोई तंगी महसूस न करता हो उसे हिदायत की रौशनी प्राप्त होती है और वह उस रोशनी में अपने जीवन का सफर तय करता है। क्या ऐसा व्यक्ति उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जिस का दिल इस्लाम के बारे में पक्षपात और वैमनस्य के चलते कठोर हो गया हो और वह इस रौशनी से वंचित हो कर जिहालत के अंधकारों में भटक रहा हो जो न अपने ख को पहचानता हो और न यह जानता हो कि उस की ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं और कर्मों एवं आचरणों के क्या प्रभाव और परिणाम प्रकट होने वाले हैं। इन दोनों व्यक्तियों को यदि एक दूसरे से भिन्न विशेषताओं एवं भिन्न भिन्न गुणों और विपरीत रवैयों के चलते समान नहीं ठहराया जा सकता तो फिर दोनों का

अन्जाम समान कैसे हो सकता है।

51. कुफ़्र और पाप पर हट करने के फलस्वरूप दिल कठोर हो जाते हैं फिर न उन्हें अल्लाह की याद, और उस के जिक्र से कोई अभिरुचि होती है और न उन पर कोई नसीहत कारगर होती है। वे सत्य स्वीकारने की स्वभाविक क्षमता खो चुके होते हैं। जिस प्रकार पथरिली ज़मीन पर पानी का कोई असर नहीं होता उसी प्रकार पत्थर दिल लोगों पर कुआन की याददेहानी का भी कोई असर नहीं होता।

52. कुआन बेहतरीन कलाम है क्यों कि यह अपने अन्दर शब्द और अर्थ, बाह्य और आंतरिक हर प्रकार की विशेषताओं को लिये हुए है। इस में उत्तम शैली में उत्तम बात कही गई है। इस का अन्दाज़ा (अनुमान) इतना प्रभावपूर्ण है कि दिल में रुदन पैदा हो जाती है। इस की तिलावत विश्वास और साहस में दृढ़ता पैदा करती है। और उस की सरलता सहजता कंठ करना आसान बना देती है। इस कलाम की सब से बड़ी विशेषता यह है कि एक मोमिन इसे बार बार पढ़ते हुए भी नहीं थकता हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने खुब्तों में फ़रमाया करते थे।

فَإِنَّ خَيْرَ الْحَدِيثِ كِتَابُ اللَّهِ - (رياض الصالحين برواية مسلم)

अर्थ: “निस्संदेह बेहतरीन कलाम अल्लाह की किताब है” (रियाजुस स्वालिहीन मुस्लिम के हवाले से)

अतः इस किताब की तिलावत और इस के अध्ययन का अधिक से अधिक आयोजन किया जाना चाहिए और यह अच्छी तरह समझ लेने चाहिए कि दुनिया की कोई किताब इस के हम पल्ला नहीं हो सकती।

53. अर्थात् यह कलाम अल्लाह तआला ने एक ऐसी किताब के रूप में अवतरित किया है जिस के अंश एक दूसरे से मिलते जुलते हैं और इस के विषयों में आश्चर्यजनक समानता और तालमेल पाया जाता है। इस किताब का विषय बहुत ही फैला हुआ है। इस के बावजूद इस की बातों में कहीं विरोधाभास नहीं है और न इस का एक हिस्सा दूसरे हिस्से से अलग है। इस को जहाँ से भी पढ़ो कलाम की रूह एक ही होगी और सौंदर्य हर जगह स्पष्ट होगा।

54. इस किताब की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इस की आयतें मिसाली हैं अर्थात् इस लायक़ हैं कि बार बार दोहराई जाएँ। इन को जितनी बार भी पढ़ा जाए जी नहीं भरता, शौक और बढ़ जाता है। नमाज़ों में आयतें बार बार पढ़ी जाती हैं और हर समय उन के अच्छे प्रभाव दिल और दिमाग़ पर पड़ते रहते हैं।

55. अल्लाह से डरने वाले जब अल्लाह के कलाम को

सुनते या पढ़ते हैं तो अल्लाह के प्रताप और उस की महानता की कल्पना मात्र से उन पर ऐसी हैबत छा जाती है कि उन के शरीर के रौंगटे खड़े हो जाते हैं। अल्लाह के कलाम की यह ज़बरदस्त तासीर है जो दिलों में ईश-भय पैदा करती है और उसे परवान चढ़ाती है। और यह ईश-भय ही है जो मनुष्य को नेक, सुलझा हुआ और परहेज़गार बनाता है। ईश-भय तो मात्र कुआन की तिलावत से भी पैदा होता है जो कुआन की प्रमुखता है। किन्तु रौंगटे खड़े होने की दशा तब उत्पन्न होती है जब कि कुआन को समझ कर और उस के भावार्थ को अन्तर्मन में ग्रहण करते हुए पढ़ा जाए। अल्लाह की यातना से कुआन में डराया गया है और जहन्नम में दण्ड भुगतने वालों का जो हाल इस में बयान किया गया है वह निश्चय ही रौंगटे खड़े कर देने वाला है। परन्तु जो व्यक्ति इन आयतों को समझकर न पढ़े उस पर यह भाव कैसे हावी होगा? विचार कीजिए कुआन समझने से बेपरवाई कितनी बड़ी भलाई से महरूमी का कारण है।

आयत से यह बात स्पष्ट है कि ईश-भय का उच्चतम स्थान यही है कि शरीर के रौंगटे खड़े हो जाएं और यही कैफ़ियत वांछित है। रही वज्द की कैफ़ियत तो यह सरासर तकल्लुफ़ (संकोच) है और सूफ़ियों का मन गढ़ंत तरीका है। कुआन इस तरह की बातों से खाली है और रसूल का जीवन भी। सहाबा किराम जिन को कुआन से बेहद लगाव था वे भी वज्द आदि

के भावों से अपरिचित थे। सहाबा किराम के कुआन की तिलावत (पढ़ने) और सुनने के बारे में अल्लामा इब्ने कसीर फ़रमाते हैं:

“वे न चीखते थे और न तकल्लुफ़ (संकोच) से काम ले कर किसी बनावटी भावों की अभिव्यक्ति किया करते थे बल्कि वे ठहराव, सुकून अदब और ईश-भय में ऐसे प्रमुख थे कि कोई उन के स्थान को न पहुँच सका।” (तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द ४ पृष्ठ ५१)

56. कुआन में जहाँ अल्लाह की महानता तथा उस के प्रताप का वर्णन है वही उस के दयावान, और क्षमाशील होने के गुण भी बयान हुए हैं। इस लिए रौंगटे खड़े करने वाला भाव, सुकून में परिवर्तित हो जाता है। जब पढ़ने वाले के सामने अल्लाह के सौंदर्यगुणों का ज़िक्र आता है तो उस का दिल पसीज जाता है, वह अल्लाह के प्रति आशावान हो जाता है और उस के शरीर पर सुकून के भाव स्पष्टतः छाने लगते हैं। इस सुकून और शान्ति चित्त के साथ वह अल्लाह के ज़िक्र की ओर मुड़ जाता है और उसे अधिकता के साथ याद करने लगता है। गोया अल्लाह के ज़िक्र से लगाव कुआन से लगाव के फलस्वरूप पैदा होता है और बढ़ता है।

57. अल्लाह के कलाम की इस तासीर को हिदायत कहा गया है। जिस ने यह असर कुबूल किया उस पर हिदायत की राह खुल गई।



फिर क्या वह व्यक्ति जो क्रियामत के दिन बुरे अज़ाब से बचने के लिए अपने चेहरे को ढाल बनाएगा (और वह व्यक्ति जो यातना से बचा हुआ होगा दोनों समान होंगे ?) और ज़ालिमों से कहा जाएगा जो कमाई तुम करते रहे हो उस का मज़ा चखो।(अल-कुर्आन)

24. फिर क्या वह व्यक्ति जो क्रियामत के दिन बुरे अज़ाब से बचने के लिए अपने चेहरे को ढाल बनाएगा ⁵⁸ (और वह व्यक्ति जो यातना से बचा हुआ होगा दोनों समान होंगे ?) और ज़ालिमों से कहा जाएगा जो कमाई तुम करते रहे हो ⁵⁹ उस का मज़ा चखो।

أَفَمَنْ يَتَّبِعْ بِوَجْهِهِ سُوءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٢٣﴾

25. इन से पहले के लोग झुठला चुके हैं तो उन पर ऐसी दिशा से अज़ाब आया जिस का वे गुमान भी नहीं कर सकते थे।

كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتَتْهُمْ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٤﴾

26. तो अल्लाह ने उन को दुनिया के जीवन में भी अपमान का मज़ा चखाया ⁶⁰ और आखिरत का अज़ाब तो बहुत बड़ा है। काश यह लोग जानते।

فَإِذَا أَقْبَهُمُ اللَّهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٢٥﴾

27. और हम ने इस कुर्आन में लोगों के लिए हर तरह की मिसालें बयान कर दी हैं ⁶¹ ताकि वे याददेहानी (नसीहत) हासिल करें।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٦﴾

28. अरबी कुर्आन ⁶² जिस में कोई टेढ़ नहीं ⁶³ ताकि वे (अज़ाब से) बचें।

قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٧﴾

29. अल्लाह मिसाल बयान फ़रमाता है कि एक व्यक्ति (गुलाम) की जिस की संपत्ति में विवाद करने वाले कई स्वामी शरीक हैं, और दूसरा व्यक्ति जो पूरा एक ही स्वामी का दास है, क्या इन दोनों का हाल एक जैसा हो सकता है ? ⁶⁴ अल्लाह के लिए हम्द (प्रशंसा) है मगर अधिकतर लोग जानते नहीं हैं। ⁶⁵

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَجُلًا فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَاكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾

30. ऐ नबी, तुम को भी मरना है और इन लोगों को भी मरना है। ⁶⁶

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ ﴿٢٩﴾

31. फिर क्रियामत के दिन तुम लोग अपने रब के समक्ष अपना मुकदमा पेश करोगे। ⁶⁷

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ﴿٣٠﴾

32. फिर उस से बढ़ कर ज़ालिम और कौन होगा जिस ने अल्लाह पर झूठ बाँधा ⁶⁸ और सच्चाई ⁶⁹ जब उस के पास आई तो उसे झुठला दिया। क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है ?

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالْحَقِّ إِذْ جَاءَهُ الْبَيِّنَاتُ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْكَافِرِينَ ﴿٣١﴾

58. काफ़िर क्रियामत के दिन अज़ाब (यातना) की ज़द से अपने को बचाने के लिए अपने हाथों को बेड़ियों में जकड़ा हुआ पा कर अपने चेहरे को ढाल बनाने की कोशिश करेगा परन्तु वह यातना की ज़द से न बच सकेगा। उस की इसी बेबसी का यहाँ वर्णन हुआ है।

59. मनुष्य का प्रत्येक कर्म अपना एक प्रभाव और एक परिणाम रखता है। इस लिए कर्मों को कमाई कहा गया है। क्रियामत के दिन प्रत्येक व्यक्ति महसूस करेगा जो अच्छा या बुरा कर्म उस ने किया था वह उस की अच्छी या बुरी कमाई थी जो आज उस को पूरी पूरी मिल रही है।

60. अल्लाह तआला काफ़िरों और फ़ासिकों (उल्लंघन कारियों) को दुनिया में भी दण्ड देता रहता है। इस सिलसिले में कुछ लोगों के मन में यह प्रश्न पैदा होता है कि क्रियामत के दिन से पहले जो हिसाब किताब के लिए निर्धारित हैं, क्योंकि सज़ा दी जा सकती है? तो वास्तव में सज़ा देने का मामला हिसाब किताब पर टिका नहीं है। यह सब तो इस लिए है कि उसे पूर्ण रूप से दण्ड देने से पहले अल्लाह तआला उस के कर्मों के फल का औचित्य उस पर स्पष्ट करना चाहता है ताकि उस पर यह बात अच्छी तरह खुल जाए कि अल्लाह तआला ने उस के साथ कोई अन्याय नहीं किया है बल्कि जो कुछ वह करता रहा है उसी का वह फल पा रहा है। किन्तु इस का यह मतलब नहीं कि आखिरत की अदालत बरपा होने से पूर्व वह मुजरिमों को कोई दण्ड न देगा। चूँकि अल्लाह तआला को अच्छी तरह यह मालूम है कि वे काफ़िर और अपराधी हैं इस लिए वह अपने उस ज्ञान के आधार पर दुनिया में भी उन को अज़ाब का मज़ा चखाता रहता है जो अज़ाब (यातनाओं) की मात्र एक क्रिस्त होती है। इसी प्रकार उन की आत्माओं को यमलोक में जिस का दूसरा नाम क़ब्र है, अज़ाब में लिप्त रखता है। मगर जाहिल लोग क़ब्र के अज़ाब का इन्कार करते हैं और कहते हैं कि हिसाब किताब से पहले अज़ाब कैसा? परन्तु उन के इस संदेह एवं भ्रम के खण्डन के लिए यह बात काफ़ी है कि अल्लाह तआला काफ़िरों पर दुनिया में भी अज़ाब नाज़िल करता रहा है और अज़ाब की यह क्रिस्त उन के हिसाब किताब से पहले ही मिलती रहती है।

61. मिसालें बयान करने का मतलब केवल मिसालें बयान करना नहीं बल्कि घटनाएँ भी जिन में इब्रत की बातें बयान हुई हैं। जैसे उन उम्मतों का हाल जिन के कुफ़्र के कारण उन पर अज़ाब आया।

62. व्याख्या के लिए देखिए सूरह यूसुफ़ नोट ३

63. व्याख्या के लिए देखिए सूरह क़हफ़ नोट १

64. यह मिसाल है बहुदेववादी और एकेश्वरवादी की। यदि

एक गुलाम के स्वामी कई हो और उन के बीच विवाद हो तो उस गुलाम का क्या हाल होगा। वह किस किस की सेवा में लगेगा और किस किस को खुश करने में सफल होगा? इस के विपरीत यदि एक गुलाम का मालिक एक ही हो तो उस को केवल एक ही की सेवा करनी होगी और उसी को उसे खुश करना होगा। जब इन दोनों का हाल एक जैसा नहीं हो सकता तो असंख्य पूज्यों में आस्था रखने वाले व्यक्ति के लिए ज़रूरी होगा कि वह प्रत्येक खुदा की उपासना करे और उसे खुश करने के प्रयास करे जो स्पष्ट है बड़ी परेशान कर देने की बात है। क्यों कि सभी पूज्यों को खुश नहीं किया जा सकता। विशेष रूप से तब जब कि उन में से प्रत्येक अलग अलग विभाग का स्वामी और संचालक हो। उदाहरण स्वरूप यदि एक जंग की देवी है तो दूसरी शान्ति की देवी एक यदि विनाश करने वाला देवता है तो दूसरा बनाव का सामान करने वाला। यदि एक देवी माता बीमारी लाती है तो दूसरी सुख प्रदान करती है। यदि एक बारिश का देवता है तो दूसरा आग का। बताइए आदमी किस किस देवता की पूजा करे और किस किस को खुश करने का प्रयास करे। भारत के बहुदेववादी धर्म में तो असंख्य देवी देवता हैं। इस धर्म में आस्था व्यक्त करने वाले लोग जितने भी देवी देवताओं को पूजें कुछ न कुछ तो बाक़ी रह ही जाएंगे, वे न सब की पूजा कर सकते हैं और न सब को खुश कर सकते हैं फिर उन को मन की शान्ति और संतोष कहाँ से प्राप्त हो सकता है?

इस के विपरीत एकेश्वरवाद के मानने वाले को एक ही अल्लाह की इबादत करना है और उसी की प्रसन्नता का इच्छुक बनना है इस लिए वह मानसिक पीड़ा से बच जाता है। उस को एकाग्रचितता (यकसोई) प्राप्त होती है और दिल का सुकून और शान्ति संतोष प्राप्त होता है।

65. अर्थात् प्रशंसा का पात्र अल्लाह ही है जो बड़ी खूबियों वाला है मगर अधिकतर लोग इस खुली वास्तविकता को भी नहीं जानते और दूसरों में इस पूज्य के गुणों की धारणा रखते हैं और उन के गुन गाने लगते हैं।

66. मतलब यह है कि इस खुली हुज्जत के बाद भी ये लोग पैग़म्बर के एकेश्वरवाद की ओर बुलाने पर सजग नहीं होते तो न हों, उस की निमंत्रणा को स्वीकार नहीं करते तो न करें। मरना तो सब को है, फिर ये लोग मर कर कहाँ जाएंगे? उन्हें लौटना अल्लाह ही तरफ़ होगा।

आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित कर के फ़रमाया गया है कि “तुम को भी मरना है” जिस से स्पष्ट हुआ कि नबी का व्यक्तित्व भी मृत्यु से बचा नहीं है। आप पर भी मौत आने वाली थी और बाद में आई। मौत आत्मा का शरीर से अलग होने का नाम है इस लिए आप के शरीर में आत्मा नहीं

रही। अलबत्ता यमलोक (आलमे-बर्ज़ख) में आप की आत्मा निश्चित रूप से ज़िन्दा है और ज़िन्दगी भी अत्यंत उच्च कोटी की। क्यों कि जब शहीदों के बारे में कुर्आन कहता है कि वे ज़िन्दा हैं लेकिन तुम्हें उन के ज़िन्दा होने का एहसास नहीं होता। तो एक नबी जिस का दर्जा शहीदों से बहुत बुलंद है उस का आलमे-बर्ज़ख में ज़िन्दा रहना संदेह से परे है। मगर उस ज़िन्दगी को सांसारिक जीवन के आधार पर नहीं समझा जा सकता और न इस से यह नतीजा निकाला जा सकता है कि आप हर जगह हाज़िर और नाज़िर हैं अर्थात् यह नहीं समझा जा सकता कि आप हर जगह उपस्थित हैं और सब कुछ देख रहे हैं।

67. अर्थात् क्रियामत के दिन प्रत्येक व्यक्ति अपना अपना मुक़दमा अल्लाह के समक्ष प्रस्तुत करेगा। एकेश्वरवादी लोग बहुदेववादी और काफ़िर लोगों के विरुद्ध मुक़दमा पेश करेंगे,

और बहुदेववादी और काफ़िर अपने बचाव की नाकाम कोशिश करेंगे।

68. अल्लाह के बारे में कोई बात भी ऐसी कहना जो वास्तविकता से परे और सच्ची नहीं है, उस पर झूठ बाँधना है चाहे वह अल्लाह की हस्ती से सम्बन्धित हो अथवा उस के गुणों से अथवा उस की जीवन प्रणाली से। जैसे यह बात कहना कि खुदा के बेटा या बेटियाँ हैं, या यह कि समस्त धर्म उस के नज़दीक पसंदीदा हैं। या यह कि उस ने वलियों को तसरूफ़ (चमत्कार) के ऐसे अधिकार दिए हैं कि वे हाज़िर और नाज़िर भी हैं और फ़रियादें भी सुनते हैं। मतलब यह कि अल्लाह पर जो झूठ भी बाँधा जाए वह बड़े ही दुस्साहस की बात है और ऐसा व्यक्ति बड़ा ही ग़लतकार, दुष्कर्मी और सब से बड़ा ज़ालिम है।

69. सच्चाई से मुराद कुर्आन है।



ताकि अल्लाह दूर कर दे उन के बुरे से बुरे कर्मों को और जो बेहतरीन कर्म वे करते रहे उन का उन्हें बदला दें। क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं हैं ? ये लोग तुम्हें उन (पूज्यों) से डराते हैं जो इन्होंने उस (मालिक) को छोड़ कर बना रखे हैं। और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उस को हिदायत देने वाला कोई नहीं। और जिन को अल्लाह हिदायत दे उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता। क्या अल्लाह प्रभुत्वशाली और दण्ड देने वाला नहीं है ? (अल-कुर्आन)

33. और जो सच्चाई ले कर आया ⁷⁰ और जिस ने इस को सच माना ⁷¹ ऐसे ही लोग मुत्तकी (परहेजगार) हैं। ⁷²

وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿٣٣﴾

34. उन के लिए उन के रब के पास वह सब कुछ होगा जो वे चाहेंगे, यह बदला है सुकर्मियों का। ⁷³

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذَلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٤﴾

35. ताकि अल्लाह दूर कर दे उन के बुरे से बुरे कर्मों को और जो बेहतरीन कर्म वे करते रहे उन का उन्हें बदला दें। ⁷⁴

لِيَكْفِرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٥﴾

36. क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं हैं? ये लोग तुम्हें उन (पूज्यों) से डराते हैं जो इन्होंने उस (मालिक) को छोड़ कर बना रखे हैं। ⁷⁵ और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उस को हिदायत देने वाला कोई नहीं।

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ وَيُخَوِّتُكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٦﴾

37. और जिन को अल्लाह हिदायत दे उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता। ⁷⁶ क्या अल्लाह प्रभुत्वशाली और दण्ड देने वाला नहीं है? ⁷⁷

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُضِلٍّ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ﴿٣٧﴾

38. अगर तुम इन से पूछो आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया है तो वे कहेंगे अल्लाह ने कहो फिर तुम ने यह भी सोचा कि जिन को तुम पूजते हो, वे क्या उस कष्ट को जो अल्लाह मुझे पहुँचाना चाहे दूर कर सकते हैं? या यदि वह मुझ पर मेहरबानी करना चाहे तो क्या ये उस की रहमत को रोक सकते हैं? ⁷⁸ कहो मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है और भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं।

وَلَكِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّيَّهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَتُ رَحْمَتِهِ قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٣٨﴾

39. कहो ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! तुम अपनी जगह काम करो मैं अपनी जगह काम करता रहूँगा, बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जाएगा।

قُلْ يَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

40. (कि) किस पर वह अज़ाब आता है जो उसे अपमानित कर के रख देगा। और वह अज़ाब नाज़िल होता है जो उस पर क़ायम रहने वाला होगा।

مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٤٠﴾

70. अर्थात् अल्लाह का पैगम्बर जो कुर्आन ले कर आया।

71. तात्पर्य पैगम्बर के अनुयायी हैं जो कुर्आन और पैगम्बर को सच्चा मान कर उन पर ईमान ले आए।

72. अर्थात् यही लोग वास्तव में अल्लाह से डरने वाले हैं।

73. ईमान, परहेजगारी, और सत्कर्म के गुण जिन लोगों ने अपने अन्दर पैदा कर लिए हैं वे अल्लाह के यहाँ इस प्रकार अपने मकसद में कामयाब होंगे कि उन की तमाम इच्छाएँ व अभिलाषाएँ पूरी होंगी और वे जो चाहेंगे वह उन्हें मिलेगा। किसी भी चीज़ को प्राप्त करने के लिए उन्हें कष्ट और रुकावट का सामना नहीं करना पड़ेगा। इस लिए उन की ज़िन्दगी संतोष, सुकून, आराम और खुशहाली की ज़िन्दगी होगी।

74. यह सुकर्मियों (मोहसिनीन) का बदला अर्थात् उन का इनाम बयान हुआ है कि यदि ऐसे व्यक्ति से कोई बहुत बुरा कर्म भी हुआ था तो अल्लाह तआला उस को मिटा देगा और उस के अच्छे कर्मों का आदर करते हुए बेहतरीन बदला प्रदान करेगा। यह बात ऐसे व्यक्ति के लिए जो नेकी की ज़िन्दगी गुजारता हो। संयोग वश हो जाने वाले अपराधों के सिलसिले में उम्मीद का बड़ा सहारा है।

ध्यान रहे कि यह वादा उन लोगों से नहीं है जो मुसलमान हो कर उल्लंघनकारी जीवन व्यतीत करते हैं। आयत के शब्द इन उल्लंघनकारियों पर किसी तरह भी लागू नहीं होते।

75. अर्थात् उन्होंने ने जो झूठे पूज्य बना रखे हैं वे उन से तुम्हें डराते हैं कि कहीं वह तुम्हें आफ़त और मुसीबत में मुब्तिला

न कर दें। यह उन की मात्र भ्रमिक बातें हैं वरना अल्लाह के सिवा किसी के अधिकार में कुछ नहीं कि वह किसी का कुछ बिगाड़ सके। न बुतों के अधिकार में है और न देवी देवताओं के अधिकार में।

76. हिदायत और गुमराही के बारे में अल्लाह तआला ने जो नियम लागू कर रखा है उसी के अनुसार आदमी हिदायत पाता है या गुमराह हो जाता है। किसी गुमराह व्यक्ति को हिदायत देना किसी के बस की बात नहीं और न किसी हिदायत पाये व्यक्ति को गुमराह करना किसी के बस की बात है। शैतान गुमराही की तरफ़ बुला तो सकता है लेकिन ज़बरदस्ती किसी को गुमराह नहीं कर सकता।

77. अल्लाह प्रभुत्वशाली है इस लिए उस के आदेश लागू हो कर रहते हैं। और वह सज़ा देने वाला है इस लिए जहाँ सत्य और न्याय का तकाज़ा होता है उस की सज़ा का क़ानून हरकत में आता है। यह चेतावनी है काफ़िरों और बहुदेववादियों को कि वे यह न समझें कि अल्लाह उन के कुफ़्र शिर्क और उद्वेगता की सज़ा नहीं देगा।

78. अर्थात् जब तुम मानते हो कि आसमानों और ज़मीन का रचयिता अल्लाह ही है न कि बुत या देवी और देवता, फिर लाभ और हानि पहुँचाने वाला भी वही है। तुम ने जिन को पूज्य बना रखा है वे उस के संकल्प और इरादे को लागू होने से किस तरह रोक सकते हैं? फिर जो हस्ती वास्तव में लाभ और हानि पहुँचाने वाली है उस को छोड़ कर इन को लाभ और हानि पहुँचाने वाला समझना कैसी नामाकूल बात है।



41. और हम ने लोगों के लिए यह किताब तुम पर सत्य के साथ उतार दी है ⁷⁹ तो जो हिदायत हासिल करेगा वह अपने ही लिए करेगा और जो गुमराह होगा तो उस की गुमराही का वबाल उसी पर पड़ेगा ⁸⁰ और (ऐ पैगम्बर !) तुम इन पर ज़िम्मेदार नहीं निर्धारित किये गए हो। ⁸¹

إِنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ ضَلَّٰ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهِ ۖ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ﴿٣١﴾

42. अल्लाह ही प्राणों (रूहों) को क़ब्ज़ करता है, उन की मौत के समय और उन (प्राणों) को भी जिन को मौत नहीं आई नींद की हालत में। ⁸² फिर जिन की मौत का फैसला वह कर चुका होता है उन को वह रोक लेता है ⁸³ और दूसरे प्राणों (रूहों) को एक निर्धारित समय के लिए वापस भेज देता है। ⁸⁴ इस में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो चिंतन मनन करते हैं। ⁸⁵

اللَّهُ يَتَوَفَّى الْأَنفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا ۖ فَيُمْسِكُ الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأُخْرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٣٢﴾

43. क्या इन्होंने ने अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को (उन के समक्ष) सिफ़ारिशी बना रखा है। कहो क्या वे उस सूरत में भी सिफ़ारिश करेंगे जब कि वे न कोई अधिकार रखते हों और न समझते हों ? ⁸⁶

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ ۚ قُلْ أَوَلَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٣٣﴾

44. कहो शफ़ाअत (सिफ़ारिश) सारी की सारी अल्लाह के अधिकार में है। ⁸⁷ आसमानों और ज़मीन का राज्य अल्लाह ही के लिए है। फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।

قُلْ لِلَّهِ الشُّفَاعَةُ جَمِيعًا ۚ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٣٤﴾

45. जब केवल अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो आख़िरत पर ईमान न रखने वालों के दिल कुढ़ने लगते हैं और जब उस के सिवा दूसरों का ज़िक्र होता है तो वे खुश हो जाते हैं। ⁸⁸

وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۚ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٣٥﴾

46. कहो ⁸⁹ ऐ अल्लाह ! आसमानों और ज़मीनों के पैदा करने वाले, गायब और हाज़िर के जानने वाले, तू अपने बन्दों के बीच उन बातों का फैसला करेगा जिन के बारे में वे मतभेद कर रहे हैं। ⁹⁰

قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ عَلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٣٦﴾

79. अर्थात् इस किताब का अल्लाह की तरफ से अवतरित होना भी सत्य है और इस में जो कुछ प्रस्तुत किया गया है वह भी सत्य है। और यह इस लिए उतारी गई है ताकि सार्वजनिक रूप से इस का लाभ लोग उठा सकें और इस से हिदायत प्राप्त कर सकें।

80. कुर्आन जिस राह की तरफ बुला रहा है उस को जो व्यक्ति भी स्वीकार नहीं करेगा वह गुमराह है और उस गुमराही का भुगतान उसी को भुगतना होगा।

81. अर्थात् तुम उन के कर्मों के ज़िम्मेदार नहीं हो।

82. मौत की वास्तविकता तो यह है कि मानव प्राण जिस का दूसरा नाम रूह है शरीर से पूरी तरह अलग हो जाए। इसी से मिलती जुलती हालत नींद में भी होती है, जब कि समझने, पहचानने, महसूस करने की शक्ति या यूँ समझ लीजिए कि होश और हवास गुम हो जाते हैं इस लिए नींद की हालत को भी मौत कहा गया है।

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ. (النعام: १०)

अर्थ :- “और वही है जो रात के समय तुम्हें मौत देता है।”

मतलब यह कि विवेक का लुप्त हो जाना मानव प्राण का गायब हो जाना है यह किस तरह गायब होता है कहाँ जाता है इस से हम बिलकुल अन्जान हैं अलबत्ता कुर्आन हमें इस हकीकत से आगाह करता है कि अल्लाह इसे कब्ज़ करता है और अविवेक की यह दशा मौत जैसी दशा है।

83. अर्थात् नींद की हालत में जिन की मौत आती है उन को फिर होश और विवेक की दशा में वापस नहीं लाया जाता और यह सही बात है कि कितने ही लोग नींद की हालत में मर जाते हैं।

84. अर्थात् जिन की मौत का फैसला नहीं हो चुका होता उन का विवेक वापस लौट आता है और वे फिर होश में आ जाते हैं। होश और विवेक की यह वापसी गोया मानव प्राण की वापसी है जो अल्लाह की कुदरत का करिश्मा है।

85. निशानियाँ अल्लाह की संपूर्ण कुदरत की, उस के चमत्कारों की, मानव प्राण पर उस के प्रभुत्व की, उस के ज्ञान और उस की रहमत की तथा इस बात की कि ज़िन्दगी और मौत उसी के हाथ में है। और नींद के बाद होश में आना मौत के बाद ज़िन्दा होने का स्पष्ट उदाहरण भी है और दलील भी। किन्तु इन निशानियों से वही लोग लाभ उठाते हैं जो सोचने और विचार करने वाले अर्थात् जागृत मानसिकता वाले होते हैं। रहे अविवेक लोग तो वे सोते ही रहेंगे। उन को होश उस समय आएगा जब वे इस दुनिया से उठ चुके होंगे।

86. मुराद बुत हैं जिन की पूजा अर्चना का एक औचित्य उन के भक्त यह बताते हैं कि वे हमारी पूजा आदि से खुश हो कर अल्लाह के समक्ष हमारी सिफ़ारिश करेंगे और हमें मुसीबत और यातना (अज़ाब) से बचा लेंगे। और यदि आख़िरत बरपा हुई तो हमें मुक्ति पत्र दिला कर रहेंगे। गोया उन की पूजा माध्यम और वसीला की हैसियत रखती है। इस की अताकिंकता एवं नामाकूलियत उन पर स्पष्ट करने के लिए उन से पूछा जा रहा है कि वे सिफ़ारिश किस तरह करेंगे जब कि न उन को सिफ़ारिश का कोई अधिकार है और न वे बुद्धि रखते हैं कि किसी की पुकार सुन सकें और उस के पक्ष में सिफ़ारिश कर सकें। ये मिट्टी और पत्थर के बुत क्या खाक सिफ़ारिश करेंगे।

87. अर्थात् अल्लाह के अज़ाब से मुक्ति दिलाना किसी के अधिकार में नहीं। कोई नहीं जो उस के समक्ष किसी को अज़ाब से बचाने के लिए उस की आज्ञा के बग़ैर ज़बान खोल सके। यह तो बहुत दूर की बात है कि वह सिफ़ारिश मनवा कर रहे।

सिफ़ारिश (शफ़ाअत) की ग़लत धारणा ही है जो आदमी को बहुदेववाद के चक्कर में फँसा देती है और वह आख़िरत की मुक्ति के सिलसिले में बेपरवाह हो कर रह जाता है। कुर्आन ने जगह जगह पर इस बात का स्पष्टीकरण किया है कि सिफ़ारिश पर निर्भर हो जाना सही नहीं। मुक्ति का दारोमदार कर्म पर है। सिफ़ारिश अल्लाह की आज्ञा के बग़ैर नहीं होगी और वह जिन को आज्ञा देगा और जिस समय देगा वे उन के पक्ष में सिफ़ारिश कर सकेंगे जिन के लिए अल्लाह स्वयं सिफ़ारिश कराना चाहेगा। और बहुदेवादियों के लिए तो सिफ़ारिश का कोई प्रश्न पैदा ही नहीं होता। क्यों कि अल्लाह का साज़ी ठहराना अक्षम्य अपराध है।

88. यह है अल्लाह का साज़ी ठहराने वालों की मानसिकता। अल्लाह की बातों और उस के ज़िक्र से उन्हें दिलचस्पी नहीं होती। जब उस के एकेश्वर होने की बात की जाती है तो वे बुरा महसूस करने लगते हैं और जब उन के ठहराए हुए साज़ीदारों (शरीकों) का नाम उन के सामने आ जाता है तो खुशी से फूले नहीं समाते।

मुसलमानों में से भी वे लोग जिन्होंने ने नबियों और वलियों को खुदा का दर्जा दे रखा है। या रसूल, और या ग़ौस जैसे नारे लगाना और सुनना बहुत पसन्द करते हैं किन्तु एकेश्वर की बातें, कि अल्लाह के सिवा न कोई हाज़िर और नाज़िर है और न ग़ौस (अर्थात् फ़रियाद को पहुँचने वाला) सुनना तक ग़वारा नहीं करते।

89. संबोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से और आप के माध्यम से ईमान वालों से है।

90. यह दुआ एवं प्रार्थना की शैली में अल्लाह पर विश्वास की अभिव्यक्ति है।

47. और अगर इन ज़ालिमों के पास वह सब कुछ हो, जो ज़मीन में है और उसी के जितना और भी हो, तो यह क्रियामत के दिन बुरे अज़ाब से बचने के लिए सब कुछ फ़िदयः (मुक्ति प्रतिदान) में देने के लिए तैयार हो जाएंगे⁹¹ और अल्लाह की तरफ़ से वह कुछ उन के सामने आएगा जिस का उन को गुमान भी नहीं था।

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ وَبَدَّ اللَّهُ مِنْهُم مِّنَ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ﴿٩٤﴾

48. उन की कमाई के बुरे परिणाम उन के सामने आएंगे और जिस चीज़ का वे मज़ाक़ उड़ाते रहे हैं वह उन को घेर लेगी।⁹²

وَبَدَّ اللَّهُ لَهُمْ سَيِّئَاتِ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهٖ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٩٥﴾

49. जब मनुष्य को कोई दुख पहुँचता है तो हमें पुकारता है, फिर जब हम उसे अपनी तरफ़ से कोई नेमत प्रदान करते हैं तो कहता है कि यह तो मुझे (अपने) ज्ञान के चलते मिली है।⁹³ नहीं, बल्कि यह एक आज़माइश है किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं हैं।⁹⁴

فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنَاهُ نِعْمَةً مِنَّا قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ ۖ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾

50. यही बात इन से पहले के लोगों ने भी कही थी मगर उन्होंने जो कुछ कमाया था वह उन के कुछ काम न आया।⁹⁵

قَدْ قَالُوا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مَتَىٰ آغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٧﴾

51. और अपनी कमाई के बुरे परिणाम उन को भुगतना पड़े। और उन लोगों में से भी जो ज़ालिम हैं वे अपनी कमाई के बुरे परिणामों से शीघ्र ही दो चार होंगे। वे हमारे काबू से निकल जाने वाले नहीं हैं।

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِن هَٰؤُلَاءِ سَيَّصِبُ بِهِمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَنَاهُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٩٨﴾

52. क्या इन्हें नहीं मालूम कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है। और जिस के लिए चाहता है नपा तुला कर देता है। निस्संदेह इस में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं।⁹⁶

أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٩٩﴾

53. (ऐ नबी !) कह दो कि (अल्लाह फ़रमाता है) ऐ मेरे बन्दों,⁹⁷ जिन्होंने ने अपने नफ़्स (जान) पर ज़्यादती की है⁹⁸ अल्लाह की रहमत से मायूस न हों। अल्लाह सारे गुनाह क्षमा कर देगा⁹⁹ वह बड़ा क्षमा करने वाला, रहम फ़रमाने वाला है।

قُلْ يٰٓعِبَادِىَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِن رَّحْمَةِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٠﴾

91. व्याख्या के लिए देखिए सूरह माइदा नोट १२४

92. अर्थात् अज़ाब ।

93. अर्थात् अपनी योग्यता, प्रतिभा और हुनर आदि के बल पर, हालाँकि उसे कहना चाहिए था कि ये नेमत मुझे अल्लाह की कृपा एवं अनुकंपा से मिली है। परन्तु वह अपनी प्रतिभा के अहं में अपने परोपकारी को भूल जाता है। यदि योग्यता के आधार पर आदमी के लिए दुनिया की नेमतों को हासिल कर लेना संभव होता तो कितने ही योग्य एवं प्रतिभाशाली लोग वंचित न रह जाते और कितने ही ऐसे लोग जो ज्ञान और योग्यता नहीं रखते सांसारिक ऐश्वर्य से लाभलन्वित न होते।

94. अर्थात् बहुत से लोग इस वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं कि नेमतें अल्लाह ही के प्रदान करने से प्राप्त होती हैं और इस लिए प्रदान की जाती हैं ताकि वह परीक्षा का साधन बने और देख लिया जाए कि उन को पा लेने के बाद आदमी अल्लाह का एहसान मानता है या नहीं। और उस का शुक्र अदा करता है या नहीं।

95. अर्थात् गुजरी जातियाँ भी माल और दौलत की बहुतायत और अपनी प्रगति को अपने हुनर और विज्ञान का परिणाम बताती हैं तथा उन पर इतराती रही हैं किन्तु जब उन की करतूतों के कारण उन पर अल्लाह का अज़ाब आया तो ये चीज़ें उन के कुछ भी काम न आ सकीं ।

96. व्याख्या के लिए देखिए सूरह रोम नोट ६६

97. ऐ मेरे बन्दों ! से तात्पर्य अल्लाह के बन्दे हैं न कि रसूल, और यह बात वाक्य में कही गई बातों से भी स्पष्ट है और कुर्आन के दूसरी बहुत से जगहों से भी जहाँ अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को “**या इबादी**” अर्थात् ऐ मेरे बन्दो! कह कर संबोधन किया है, तथा इस लिए भी कि इस्लाम की मौलिक धारणा यही है कि सारे इन्सान अल्लाह ही के बन्दे हैं किसी और के नहीं, फिर इस आयत में रसूल के बन्दे समझने की क्या तुक है? परन्तु बिदअती तफ़्सीर में ऐसी बेतुकी बातें भी बयान हुई हैं और बड़े ही दुस्साहस के साथ कहा गया है कि सारे मुसलमान हुजूर के बन्दे हैं जब कि अरबी की प्रमाणिक तफ़्सीरों में से किसी में भी ये अर्थ बयान नहीं हुए हैं।

असल में कुर्आन की शैली संक्षिप्त और व्यापक रूप से बात कहने की है इस लिए वह उन शब्दों का इस्तेमाल नहीं करता जो वाक्य में स्पष्ट होते हैं। परन्तु जो लोग अपनी बिदआतों को

कुर्आन से साबित करना चाहते हैं वे शब्दों में उलझ कर रह जाते हैं। उन को ऊपर की सीप से मतलब होता है अन्दर की मोती से नहीं ।

अल्लाह के इर्शाद का मतलब बिल्कुल स्पष्ट है और वह यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को संबोधित कर के अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरे गुनाहगार बन्दो से कह दो कि अल्लाह तआला फ़रमाता है ऐ मेरे बन्दों ! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है अल्लाह की रहमत से मायूस न हों।

98. अर्थात् गुनाह किये हैं।

99. यह गुनाहगारों के लिए अत्यंत आशावादी संदेश है। गुनाह चाहे कैसे ही बड़े बड़े हो चुके हों अल्लाह की रहमत से निराशा का कोई औचित्य नहीं। प्रायश्चित्त का दरवाज़ा खुला है और सुधार कर लेने का अवसर बाक़ी है । अगर तौबा कर के अपने रवैये को ठीक कर लो, तो अल्लाह तुम्हारे वे सारे गुनाह जो तुम से हो चुके हैं क्षमा कर देगा अतः अपना रवैया बदलो और अल्लाह की रहमत और उस की क्षमा के अधिकारी बनो।

आयत का यह भावार्थ बाद वाली आयतों से भी मेल खाता है जिन में अल्लाह की तरफ़ रुजू करने, उस का फ़रमाँबरदार बनने और कुर्आन का अनुपालन करने की हिदायत की गई है और ऐसा न करने पर अज़ाब की चेतावनी सुनाई गई है। इस लिए संदर्भ में इस आयत का यह मतलब हो ही नहीं सकता कि जितने चाहो गुनाह करते रहो अल्लाह तआला सब को क्षमा कर देगा ।

आयत का मंशा गुनाहगार को गुनाह का लायसंस देना नहीं बल्कि उन को तौबा और सुधार की तरफ़ मोड़ना और उत्प्रेरित करना है विशेष रूप से काफ़िरों और बहुदेववादियों को जिन के जीवन गुनाहों से अटे पड़े हैं। अल्लामा इब्ने कसीर ने इस पर अच्छी रौशनी डाली है।

“यह आयते-करीमा काफ़िरों और अन्य समस्त गुनाहगारों को प्रायश्चित्त करने और पलट आने की दअवत देती है और ख़बर देती है कि अल्लाह तआला उन लोगों के सारे गुनाह माफ़ कर देगा जो गुनाहों से तौबा करेंगे और उन से बाज़ आएँगे चाहे वे कैसे ही हों और समुद्र के झाग से भी अधिक क्यों न हों। किन्तु इस आयत को तौबा न करे वालों के लिए समझना सही न होगा क्योंकि शिर्क बग़ैर तौबा के क्षमा नहीं किया जाएगा।”(तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द ४ पृष्ठ ५८)

54. और रूजू करो अपने रब की तरफ़, और उस के फ़रमाँबरदार बनो इस से पहले कि तुम पर अज़ाब आए, फिर तुम को कोई मदद मिल न सकेगी।¹⁰⁰

وَأَنِيبُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلُمُوا لَهُ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ
تُمْ لَا تُنصَرُونَ ﴿٥٠﴾

55. और तुम्हारे रब की तरफ़ से जो बेहतरीन चीज़ तुम्हारी तरफ़ नाज़िल हुई है ¹⁰¹ उस का अनुपालन करो इस से पहले कि तुम पर अचानक अज़ाब आए और तुम को इस की ख़बर भी न हो।

وَأَنِيبُوا أَحْسَنَ مِمَّا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ
يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ﴿٥١﴾

56. कहीं ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति कहने लगे अफ़सोस मेरी इस कोताही पर जो मैं अल्लाह के मामले में करता रहा और मैं मज़ाक उड़ाने वालों में से था।¹⁰²

أَنْ نَقُولَ نَفْسٌ يَحْسَرْتُ عَلَىٰ مَا فَرَّطْتُ فِي جَنْبِ اللَّهِ
وَإِنْ كُنْتُ لِمِنَ السَّخِرِينَ ﴿٥٢﴾

57. या कहने लगे अगर अल्लाह ने मुझे हिदायत दी होती तो मैं भी परहेज़गारों में से होता।¹⁰³

أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٥٣﴾

58. या जब अज़ाब को देख ले तो कहने लगे अगर मुझे (दुनिया में) लौटने का एक और मौक़ा मिल जाए तो मैं नेक अमल करने वालों में से बन जाऊँगा।¹⁰⁴

أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَىٰ الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَأَكُونَ
مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٤﴾

59. क्यों नहीं, मेरी आयतें तेरे पास आई थीं लेकिन तूने उन को झुठलाया और अहं किया और तू काफ़िरों में से था।¹⁰⁵

بَلَىٰ قَدْ جَاءَتْكَ آيَاتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ
وَكُنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٥٥﴾

60. और जिन लोगों ने अल्लाह पर झूठ बाँधा है क्रियामत के दिन तुम देखोगे कि उन के चेहरे स्याह (काले) हैं ¹⁰⁶ क्या इन अहं करने वालों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है ?¹⁰⁷

وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ تَرَىٰ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ اللَّهِ وُجُوهُهُمْ
مُسْوَدَّةٌ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٥٦﴾

61. और अल्लाह उन लोगों को नज़ात (मुक्ति) देगा ¹⁰⁸ जो मुत्तक़ी (परहेज़गार) बने रहे, उन के सफल होने के कारण। उन को न कोई तकलीफ़ पहुँचेगी और न वे शोकाकुल होंगे।

وَيُخَيِّرُ اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا مِمَّا زَيَّغُوا عَنْهُمْ لَا يَمَسُّهُمْ الشَّوْءُ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٥٧﴾

62. अल्लाह हर चीज़ का सृष्टा है और वह हर चीज़ पर निगेहबान है।¹⁰⁹

اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿٥٨﴾

100. आयत के मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि इस के सब से पहले संबोधी बहुदेववादी और काफ़िर हैं उन्हें तौबा कर के इस्लाम स्वीकार करने (अर्थात् अल्लाह का आज्ञा पालक बनने) का निमंत्रण दिया गया है।

101. मुराद कुर्आन है।

102. अर्थात् यदि तुम ने कुर्आन का अनुपालन नहीं किया तो क्रियामत के दिन पछताना पड़ेगा। अल्लाह के मामले में जिस ने भी कोताही की होगी अर्थात् अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा नहीं किया होगा वह उस पर अफ़सोस करेगा और उस समय उसे एहसास होगा कि कुर्आन और इस्लाम को मज़ाक़ बना लेना कितनी भारी ग़लती थी।

103. अल्लाह ने कुर्आन के द्वारा सारे इन्सानों की हिदायत का सामान कर दिया है ताकि क्रियामत के दिन कोई व्यक्ति यह न कहे कि अगर अल्लाह ने मुझे हिदायत दी होती तो मैं मुत्तकी और परहेज़गार बन गया होता।

104. अर्थात् अज़ाब को देख लेने के बाद इम्तिहान का मौक़ा बाक़ी नहीं रहेगा और दुनिया में लौटाए जाने की अभिलाषा हरगिज़ पूरी नहीं हो सकेगी। अतः चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति अल्लाह के प्रति अपना दायित्व महसूस करे और सत्य को स्वीकार करने तथा उस का अनुपालन करने में हिचकिचाए नहीं।

105. अर्थात् क्रियामत के दिन उन पछताने वालों से कहा जाएगा कि तुम ने हिदायत क्यों न ग्रहण की और नेक क्यों नहीं बने जब कि मेरी आयतें (आदेश) तुम्हारे पास पहुँच चुकी थीं, उन को स्वीकार करने में कौन सी परेशानी विघ्न डाल रही थी तुम ने तो उन को झुठला दिया था और घमंड करते रहे तथा अंत तक इन्कार (कुफ़्र) पर हट पकड़े रहे अतः तुम अपने किये के ज़िम्मेदार हो और अब तुम्हें अज़ाब ही भुगतना होगा।

106. झूठ और फिर वह अल्लाह पर बोला जाए, चेहरे की रौनक को ख़त्म कर देता है और क्रियामत के दिन इस गुनाह की स्याही चेहरे को बिलकुल काला कर के रख देगी।

107. अर्थात् जो लोग अल्लाह की बात मानने के बजाए अपनी बात पर अड़े रहते हैं वे अहं और घमंड में लिप्त होते हैं। और जो लोग अल्लाह के मुक़ाबले में अहं करे और अपनी बड़ाई झाड़ें उन का ठिकाना उचित रूप से जहन्नम ही में हो सकता है क्योंकि न्याय का तक्राज़ा यही है कि अल्लाह से बगावत और उदण्डता की सज़ा जहन्नम हो।

108. अर्थात् क्रियामत के दिन अज़ाब से बचा लेगा।

109. अर्थात् अल्लाह ने कायनात को पैदा कर के यूँहि छोड़ नहीं दिया है बल्कि वह एक एक चीज़ की निगेहबानी कर रहा है, एक एक व्यक्ति पर वह निगाह रखे हुए है।



63. आसमानों और ज़मीन की कुजियाँ उसी के पास हैं ¹¹⁰ और जिन्होंने अल्लाह की आयतों का ¹¹¹ इन्कार किया वही लोग घाटे में रहने वाले हैं।

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ أُولَئِكَ هُمُ الْخَسِرُونَ ﴿١٣﴾

64. कहो ऐ जाहिलो ! क्या तुम मुझे अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत करने का आदेश देते हो ? ¹¹²

قُلْ أَغَيَّرَ اللَّهُ تَأْمُرُونِي أَعْبُدُ أَيُّهَا الْجَاهِلُونَ ﴿١٤﴾

65. हालाँकि तुम्हारी तरफ़ भी और तुम से पहले गुज़रे हुए (नबियों) की तरफ़ भी यह प्रकाशना (वहय) भेजी जा चुकी है कि तुम ने शिर्क किया तो तुम्हारा कर्म नष्ट हो जाएगा और तुम घाटे में रहोगे। ¹¹³

وَلَقَدْ أَوْحَىٰ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿١٥﴾

66. (अतः ग़ैरुल्लाह की इबादत न करो) बल्कि अल्लाह ही की इबादत करो और उस के कृतज्ञ बनो। ¹¹⁴

بَلِ اللَّهِ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿١٦﴾

67. इन लोगों ने अल्लाह की क़द्र नहीं की जैसा कि उस की क़द्र करने का हक़ है। ¹¹⁵ क्रियामत के दिन पूरी ज़मीन उस की मुट्ठी में होगी और आसमान उस के दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे। ¹¹⁶ पवित्र और सर्वोच्च है वह उस शिर्क से जो ये करते हैं। ¹¹⁷

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَالشَّمُوتُ مَطْوِيَّتٌ بِيَمِينِهِ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٧﴾

68. और सूर फूँका जाएगा तो जो भी आसमानों और ज़मीन में हैं सब बेहोश हो कर गिर पड़ेंगे सिवाय उन के जिन को अल्लाह चाहे ¹¹⁸ (कि बेहोश न हों) फिर दूसरा सूर फूँका जाएगा तो यकायक लोग उठ खड़े होंगे और देखने लगेंगे ¹¹⁹।

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ ﴿١٨﴾

69. ज़मीन अपने रब के नूर (प्रकाश) से चमक उठेगी ¹²⁰। कर्मों का रेकार्ड रख दिया जाएगा ¹²¹ (सारे) नबी और गवाह हाज़िर कर दिये जाएंगे। ¹²² और लोगों के बीच हक़ के साथ फैसला कर दिया जाएगा ¹²³ और उन के साथ कोई अन्याय नहीं किया जाएगा।

وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتَابُ وَجِئَتْ بِالتَّائِبِينَ وَالشَّهَدَاءَ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٩﴾

70. प्रत्येक व्यक्ति को उस के कर्मों का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा। लोग जो कुछ करते हैं उस को वह ख़ूब जानता है।

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٠﴾

110. अर्थात् वही आसमानों और ज़मीन के खज़ानों का मालिक है और उस का संचालक अर्थात् अपने अधिकारों का इस्तेमाल करने वाला है। उस के सिवा कोई नहीं जिस का इन खज़ानों पर कोई अधिकार हो कि किसी को कुछ दिला सके। न बुत, न देवी देवता और न वली।

111. आयतों से तात्पर्य तौहीद अर्थात् एकेश्वरवाद की निशानियाँ भी हैं, अल्लाह के आदेश भी और कुआन की आयतें भी।

112. यह कड़ा जवाब है उन जाहिलों और मूर्खों को जो एकेश्वरवाद के तर्कों और प्रमाणों के स्पष्ट हो जाने के बावजूद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़िद कर रहे थे कि आप भी उन के बुतों की पूजा करें। ऐसे नादानों और मूर्खों पर सीधी सादी बातें निष्प्रभावी होती हैं इस लिए दअवत की हिकमत का तक्राज़ा है कि उन्हें कड़ी चेतावनी की जाए और जाहिल कह कर उन्हें संबोधित करने का लाभ यह है कि हो सकता है वे चौंक जाएँ और होश में आ जाएँ।

113. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से संबोधन है कि हम ने तुम पर भी वह्य अर्थात् अपनी प्रकाशना भेजी है और तुम से पहले जो नबी गुज़रे हैं उन पर भी वह प्रकाशना भेजी थी कि यदि तुम ने शिर्क किया अर्थात् मेरा साज़ी ठहराया तो तुम्हारे सारे कर्म नष्ट हो जाएंगे और तुम तबाह हो कर रह जाओगे प्रत्येक नबी को शिर्क से बचने की इस सख्ती के साथ जो ताकीद की गई है उस से स्पष्ट होता है कि शिर्क अर्थात् अल्लाह का साज़ी ठहराना ऐसा संगीन गुनाह है कि इस मामले में किसी के साथ कोई रियायत नहीं बरती जाएगी चाहे वह नबी ही क्यों न हो। इस का यह मतलब नहीं कि एक नबी से भी शिर्क हो जाने का भय होता है बल्कि इस लिए इशार्द होई है ताकि शिर्क की सज़ा के मामले में अल्लाह के क़ानून का बेलाग होना स्पष्ट हो जाए।

114. स्पष्ट हुआ कि अल्लाह का कृतज्ञ और शुक्र गुज़ार वही हो सकता है जो केवल उसी की इबादत करे। बुतपरस्त और बहुदेववादी अपने सृष्टा के प्रति कभी कृतज्ञ नहीं हो सकते।

115. अर्थात् अल्लाह की बड़ाई और महानता की सही कल्पना वे न कर सके और उस के पद को वे जान न सके।

116. इस से अल्लाह की बड़ाई और उसकी महानता का आभास होता है। क्रियामत के दिन ज़मीन का उस की मुट्ठी में होना और आसमानों का उस के हाथ में लिपटा हुआ होना उस की महान कुदरत, उस की असीम संचालन शक्ति और उस के सर्वाधिकार का धोतक होगा। क्रियामत के दिन जब लोग इस को अपनी आँखों से देख लेंगे तो उन्हें अल्लाह की बड़ाई और उस की महानता का सही अन्दाज़ा होगा। यहाँ यह बहस व्यर्थ की

है कि अल्लाह की मुट्ठी और हाथ से अभिप्रेत क्या है। व्यर्थ की व्याख्या के चक्कर में पड़े बग़ैर सार को समझने का प्रयास करना चाहिए और सार बिल्कुल स्पष्ट है। जहाँ तक सलफ़ (पूर्वजों) का सम्बन्ध है वे कहते हैं थे कि इस बात का मंशा लोगों को उस की बड़ाई, उस की महानता और उस के प्रताप से परिचित करना है लेकिन वे अल्लाह की मुट्ठी और हाथ को मात्र सांकेतिक नहीं समझते थे साथ ही अल्लाह को शरीर और आकार से पवित्र बताते थे। (देखिए तफ़्सीर रुहुल मआनी जुज़ २४ पृष्ठ २६) वास्तव में अल्लाह के गुणों वा उस की विशेषताओं के बारे में अक़ीदे अथवा धारणा का मामला बड़ा ही नाज़ुक है और बाद वालों ने उलझावी बहसों में पड़ कर मसले को बहुत उलझा दिया है इस लिए सीधी और सलामती की राह यही है कि आदमी सलफ़ (पूर्वजों) के तरीक़े को अपनाए और अल्लाह के लिए मुट्ठी हाथ आदि शब्द जो इस्तेमाल हुए हैं उन का कोई कारण अथवा कोई अर्थ न बताते हुए कलाम के मूल सार को समझने की कोशिश करे।

आयत के मूल सार को सही मुस्लिम की हदीस और स्पष्ट करती है जिस में बयान हुआ है कि “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक दिन इस आयत को मिम्बर पर पढ़ा। आप अपनी उंगलियों को बन्द करते और खोलते हुए फ़रमा रहे थे : “अल्लाह आसमानों और ज़मीन को अपने दोनों हाथ में लेगा और फ़रमाएगा मैं हूँ अल्लाह, मैं हूँ अल्लाह। अब्दुल्लाह बिन उमर फ़रमाते हैं कि मैं देख रहा था कि मिम्बर नीचे से हिल रहा था यहाँ तक कि मुझे भय हुआ कि कहीं मिम्बर आप के साथ गिर न पड़े।” (मुस्लिम किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन)

117. जब ज़मीन और आसमान अल्लाह के क़ब्ज़े में हैं तो फिर किसी अन्य पूज्य का अस्तित्व कहाँ रहा?

118. क्रियामत का पहला सूर (नरसिंहा) जब फूँका जाएगा तो ज़मीन और आसमान की सारी बुद्धि रखने वाले प्राणियों पर अतयंत भय और आतंक छाया होगा (जैसा कि सूरह नम्ल आयत ८७ में बयान हुआ है) और फिर सब बेहोश हो कर गिर पड़ेंगे और जो इन्सान ज़मीन पर होंगे वे सब मर जाएंगे। क्रियामत की बेहोशी से वही फ़रिश्ते और वही प्राणधारी बचेंगे जिन को अल्लाह बचाना चाहेगा और इस का ज्ञान अल्लाह ही को है कि वह किन को उस बेहोशी से अलग रखेगा।

119. दूसरे सूर (नरसिंहा) से सम्बन्धित इन्सान का हाल बयान किया जा रहा है कि जब वह फूँका जाएगा तो सारे इन्सान तुरंत जीवित हो कर क़ब्रों से उठ खड़े होंगे और आश्चर्य चकित हो कर देखने लगेंगे कि हम किस लोक में पहुँच गए हैं।

120. सूरज की बिसात तो पहले ही लपेटी जा चुकी होगी इस लिए हश्र के मैदान में नई रौशनी की व्यवस्था होगी और

वह यह कि अल्लाह के नूर (प्रकाश) से ज़मीन जगमगा उठेगी। यह प्रकाश अल्लाह से किस प्रकार से सम्बन्धित है इस का निर्धारण करना हमारे लिए कठिन है क्योंकि यह मात्र अनुमान की बात होगी जिस से बचना चाहिए। अलबत्ता यह बात भली भाँत स्पष्ट है कि जब ज़मीन इस रौशनी से जगमगा उठेगी तो हर चीज़ अपनी असली हालत में दिखाई देगी। कोई चीज़ भी ढकी, छिपी और अदृश्य नहीं रहेगी। इन्सान की निगाह भी बहुत तेज़ होगी और जो हकीकतें उस की निगाहों से ओझल रही हैं उन को वह अपनी आँखों से देख भी लेगा।

121. अर्थात् अल्लाह की अदालत बरपा होगी। सारे इन्सानों के कर्मों का रेकार्ड जो दुनिया में फ़रिश्ते तैयार करते

रहे हैं सामने रख दिया जाएगा ।

122. सारे नबी अल्लाह की अदालत में हाज़िर हो कर गवाही देंगे कि उन्होंने अल्लाह का पैग़ाम उस के बन्दों तक पहुँचाया था और उन्होंने यह और यह जवाब दिया। दूसरे गवाहों से मुराद नबियों के सच्चे अनुयायी लोग हैं जिन्होंने लोगों को सत्य धर्म की ओर निमंत्रणा दी थी। वे भी गवाही देंगे कि उन्होंने लोगों तक दअवत पहुँचाई थी।

123. अर्थात् कर्मों के रेकार्ड और गवाहों के बयान के बाद हर व्यक्ति के बारे में फैसला चुका दिया जाएगा और यह फैसला अल्लाह तआला सत्य और न्याय के साथ करेगा ।



और काफ़िरोँ को जहन्नम की तरफ़ गिरोह दर गिरोह हंकाते हुए ले जाया जाएगा यहाँ तक कि जब वे उस के पास पहुँचेंगे तो उस के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे। और उस के निगराँ (कार्यकर्ता) उन से पूछेंगे क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे जिन्होंने तुम्हारे रब की आयतें तुम्हें सुनाई हों और तुम्हारे इस दिन के पेश आने से तुम्हें डराया हो? वे कहेंगे, ज़रूर आए थे। लेकिन काफ़िरोँ पर अज़ाब का आदेश पूरा हो कर रहा। (अल-कुर्आन)

71. और काफ़िरो को जहन्नम की तरफ़ गिरोह दर गिरोह हंकाते हुए ले जाया जाएगा ¹²⁴ यहाँ तक कि जब वे उस के पास पहुँचेंगे तो उस के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे। ¹²⁵ और उस के निगराँ (कार्यकर्ता) उन से पूछेंगे क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे जिन्होंने तुम्हारे रब की आयतें तुम्हें सुनाई हों और तुम्हारे इस दिन के पेश आने से तुम्हें डराया हो? ¹²⁶ वे कहेंगे, ज़रूर आए थे। लेकिन काफ़िरो पर अज़ाब का आदेश पूरा हो कर रहा। ¹²⁷

وَسَيُتْلَىٰ ذَٰلِكَ عَلَىٰ الْكَافِرِينَ ۚ كُفِّرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا ۚ إِذَا جَاءَ وَهَآ فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا قَالُوا بَلَىٰ وَلَكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ④١

72. कहा जाएगा प्रवेश कर जाओ जहन्नम के दरवाज़ों में। इस में हमेशा रहोगे। तो क्या ही बुरा ठिकाना है अहंकारियों का। ¹²⁸

قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا فَبِئْسَ مَثْوًى الْمُتَكَبِّرِينَ ④٢

73. और जो लोग अल्लाह से डरते रहे, उन्हें गिरोह दर गिरोह जन्नत की तरफ़ ले जाया जाएगा ¹²⁹ यहाँ तक कि जब वे उस के पास पहुँचेंगे और उस के दरवाज़े खोल दिए गए होंगे ¹³⁰ तो उस के पासबान (कार्यकर्ता) उन से कहेंगे सलाम हो तुम पर, अच्छे हो तुम, दाखिल हो जाओ इस में हमेशा के लिए। ¹³¹

وَسَيُتْلَىٰ ذَٰلِكَ عَلَى الْكَافِرِينَ ۚ كُفِّرُوا إِلَىٰ الْجَنَّةِ زُمَرًا ۚ إِذَا جَاءَ وَهَآ فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوا خَالِدِينَ ④٣

74. वे कहेंगे शुक्र है अल्लाह का ¹³² जिस ने हमारे पक्ष में अपना वादा सच्चा कर दिखाया और हम को ज़मीन का वारिस बनाया ¹³³ कि हम जन्नत में जहाँ चाहें रहे। ¹³⁴ तो क्या ख़ूब इनाम (बदला) है (नेक) अमल करने वालों का। ¹³⁵

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ ۖ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ ۖ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ④٤

75. और तुम देखोगे कि फ़रिश्ते अर्श (सिंहासन) के चारों ओर घेरा बनाए हुए अपने रब की प्रशंसा और पाकी बयान कर रहे हैं ¹³⁶ और लोगों के बीच हक़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा ¹³⁷ और कहा जाएगा कि प्रशंसा है अल्लाह रब्बुलआलमीन (सारे जहान के रब) के लिए। ¹³⁸

وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ④٥

124. यह सूरह की अन्तिम आयतें हैं जिन में उस समय का चित्रण प्रस्तुत किया गया है जब अल्लाह की अदालत फैसला सुना चुकी होगी और काफ़िरों को जहन्नम की तरफ़ और सच्चे परहेज़गारों को जन्नत की तरफ़ ले जाया जाएगा। कुर्आन ने क्रियामत कि इस घटना का इस प्रकार चित्रण प्रस्तुत किया है कि गोया जन्नत और जहन्नम इस दुनिया ही में बेनिकाब हो कर सामने आ गए हैं। इस लिए विश्वास का जो भाव पैदा होता है वह मात्र तार्किकता से नहीं हो सकता।

सूरह की शुरुआत और इस के केन्द्रीय विषय के हिसाब से यहाँ काफ़िरों से मुराद वे लोग हैं जिन्होंने तौहीद को स्वीकार करने और एक अल्लाह की सच्चे मन से इबादत करने से इन्कार किया, कुर्आन और उस के पैगम्बर को झुटलाते रहे। आखिरत के अन्जाम की कोई परवाह नहीं की तथा शिर्क, बुत परस्ती और अल्लाह के प्रति ग़लत धारणाओं में लिप्त रहे।

125. जहन्नम कैद ख़ाना है जिस के दरवाज़े अपराधियों के वहाँ पहुँचने पर खोल दिए जाएंगे।

126. अर्थात् जहन्नम के दरवाज़ों पर जो फ़रिश्ते नियुक्त होंगे वे उन अपराधियों से कहेंगे कि क्या अल्लाह के प्रति तर्क और दलीलें उस के रसूलों के द्वारा तुम्हारे पास पहुँची न थी और क्या तुम्हें इस दिन की पेशी से आगाह नहीं किया गया था? फिर तुम क्यों काफ़िर बने रहे?

127. वे स्वीकार करेंगे कि अल्लाह के रसूलों के द्वारा हमारे सामने स्पष्ट रूप से तर्क और दलीलें आ गई थी लेकिन हम यातना के भागीदार थे इस लिए हम सत्य का इन्कार करते रहे। वे अपनी ग़लती और अपने अपराध का कोई कारण अथवा कोई औचित्य न प्रस्तुत कर सकेंगे। इस लिए अपनी क्रिस्मत ही को रोएंगे।

128. अल्लाह के मुकाबले में अहं करने वालों की सज़ा जहन्नम है और वह भी हमेशा के लिए। इतनी कड़ी सज़ा को सुन कर भी जो लोग टस से मस न हों वे अज़ाब को देख कर ही होश में आ सकते हैं।

129. काफ़िरों और अहंकारियों के मुकाबले में मुत्तक़ी परहेज़गारों का अन्जाम बयान हुआ है स्पष्ट हुआ है कि जो लोग अपने रब से डरते हैं उन का रवैया अहं करने वालों के रवैये से बिल्कुल भिन्न होता है। वे गुनाह के हर काम से बचने की कोशिश करते हैं। जब कि अहं करने वाले गुनाह की कोई परवाह नहीं करते।

मुत्तक़ियों, परहेज़गारों को कामयाबी का जब फैसला सुनाया जाएगा तो उन्हें फ़रिश्ते जन्नत की तरफ़ ले चलेंगे। उन की यह ख़ानगी बहुत ही शानदार तरीक़े पर समूह के रूप में होगी। गोया मुत्तक़ियों और परहेज़गारों के जुलूस फ़रिश्तों के साथ पूरे शाही

ठाट के साथ सदा सर्वदा की सफलता की मन्ज़िल की ओर ख़ाना होंगे। कितना सुन्दर दृश्य होगा वह।

130. अर्थात् जन्नत के दरवाज़े उन के स्वागत के लिए पहले ही से खोल दिए गए होंगे, जैसे जन्नत उन की प्रतीक्षा में होगी।

131. जन्नत के पासवान उन समूहों का पूरे आवेश के साथ स्वागत करेंगे। उन का स्वागत वे सलाम से करेंगे और उन की पाकीज़गी और अच्छाई का ज़िक्र कर के उन का सम्मान करेंगे। वे उन्हें जन्नत में दाख़िल होने के लिए कहेंगे इस ख़ुशख़बरी के साथ कि यहाँ तुम हमेशा रहोगे।

132. जन्नत में दाख़िल होने वालों की शान यह भी होगी कि वे उस में दाख़िल होते ही अल्लाह का शुक्र अदा करेंगे और उन की ज़बान पर अल्लाह के लिए प्रशंसा के प्रवचन होंगे।

133. ज़मीन से तात्पर्य जन्नत की ज़मीन है और इस का वारिस बनाने का मतलब उस का मालिक बना देना है।

134. अर्थात् जन्नत अत्यंत विशाल होगी। इस लिए अपने महल से बाहर सैर और तफ़रीह करने और ठहरने के पूरे अवसर प्राप्त होंगे।

135. जन्नत के बारे में अधिकांश लोग इस भ्रम में लिप्त हैं कि वह मुफ़्त में मिलेगी लेकिन यह आयत इस उसूली वास्तविकता को स्पष्ट करती है कि जन्नत नेक अमल करने वालों को इनाम में बदले के तौर पर दी जाएगी।

136. अर्थात् क्रियामत के दिन तुम अपने शरीर की आँखों से देखोगे कि फ़रिश्ते अल्लाह की इबादत में लगे हुए हैं। वे अल्लाह के सिंहासन के चारों ओर घेरा बनाकर सामूहिक रूप से अल्लाह की पाकी बयान करने और उस के गुणगान में लीन होंगे। अल्लाह की बड़ाई उस की महानता और उस के वैभव को जाहिर करने वाला यह दृश्य कितना आत्मविभोर कर देने वाला होगा।

137. अर्थात् सारे इन्सानों के बीच उन के अन्जाम से सम्बन्धित फैसला चुका दिया गया होगा और यह फैसला सत्य और न्याय के अधार पर कर दिया गया होगा। जो व्यक्ति अपने कर्म के अनुसार जिस चीज़ का हक़दार होगा वही चीज़ उस को बदले में दी जाएगी। अन्याय किसी के साथ भी नहीं होगा।

138. अर्थात् तमाम लोगों का फैसला चुका देने के बाद आवाज़ उठेगी कि अल्लाह रब्बुलआलमीन (सारे ज़हान के रब) के लिए प्रशंसा ही प्रशंसा है। क्यों कि प्रशंसा का वास्तविक अधिकारी अल्लाह ही है और इस लिए भी कि उस ने अपनी अदालत बरपा कर के जो फैसले चुका दिए वे पूरी तरह न्याय पर आधारित थे, तथा इस लिए भी कि इस अवसर पर उस के न्याय की ख़ूबी ही जाहिर नहीं हुई बल्कि उस की यह शान भी जाहिर हुई कि वह सर्वोच्च गुणों से सुसज्जित है।

सूरह अल्मोमिन

४०. सूरह अल्मोमिन

नाम :- आयत २८ में एक साहसी मोमिन मर्द का किस्सा बयान हुआ है जिस ने फ़िरऔन के दरबार में मूसा अलैहिस्सलाम की खुल कर हिमायत की थी। इसी मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल मोमिन” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह सूरह जुमर के फ़ौरन बाद नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- इस सूरह में उन लोगों की पकड़ की गई है जिन्होंने तौहीद के खिलाफ़ बहसें खड़ी कर दी थीं और जो रसूल के विरोध पर कमर कस चुके थे।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ३ भूमिका है जिन में इस किताब के नाज़िल करने वाले का परिचय दिया गया है।

आयत ४ से ६ में अल्लाह की आयतों में बहसें खड़ी करने वालों को बुरे अन्जाम से आगाह कर दिया गया है।

आयत ७ से ९ में ईमान वालों को खुश कर देने वाली खुशखबरी सुनाई गई है कि उन के लिए फ़रिश्ते क्षमा याचना करते हैं।

आयत १० से २२ में काफ़िरों और बहुदेववादियों को चेतावनी और नसीहत है।

आयत २३ से ४६ में हज़रत मूसा की दअवत के मुक़ाबले में फ़िरऔन ने जो कटहुज्जती की थी उस को बयान किया गया है और इसी संदर्भ में उस साहसी मोमिन की ईमानी साहस से भरी दअवत को तफ़सील के साथ प्रस्तुत किया गया है जो उस ने फ़िरऔन के भरे दरबार में पूरे साहस के साथ प्रस्तुत की थी और फिर फ़िरऔन वालों का अन्जाम भी बयान किया गया है।

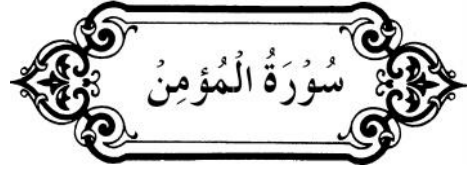
आयत ४७ से ५५ में उन लोगों को सावधान किया गया है जो आँखें बन्द कर के बड़े बनने वालों के पीछे चलते हैं साथ ईमान वालों का साहस बढ़ाया गया है कि वे इन लोगों के विरोध का कोई प्रभाव स्वीकार न करें बल्कि अपनी बात पर जमे रहें।

आयत ५६ से ८५ में अल्लाह के दीन के मामले में बहस और झगड़ा करने वालों के सामने अच्छे तरीके से तौहीद अर्थात् एकेश्वरवाद की स्पष्ट दलीलें पेश की गई हैं और साथ ही कुफ़्र और बहुदेववाद के बुरे अन्जाम से भी आगाह कर दिया गया है।

४०. सूरह अल-मोमिन

आयतें : ८५

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा - मीम ¹।
2. इस किताब का उतारा जाना अल्लाह की तरफ़ से है जो प्रभुत्वशाली और ज्ञान वाला है।²
3. गुनाह बख़्शने वाला, तौबा कुबूल करने वाला, सज़ा सज़ा देने वाला और बड़े फ़ज़ल (अनुग्रह) वाला है।³ उस के सिवा कोई पूज्य नहीं। उसी की तरफ़ लौटना है।
4. अल्लाह की आयतों में वही लोग बहसों खड़ी करते हैं जो काफ़िर हैं।⁴ बड़े बड़े शहरों में उन का आना जाना तुम्हें धोखे में न डाले।⁵
5. इस से पहले नूह की क़ौम ⁶ भी झुठला चुकी है और उन के बाद दूसरी क़ौमों भी। हर क़ौम ने अपने रसूल को अपनी गिरफ़्त में लेना चाहा।⁷ बातिल (असत्य) का सहारा ले कर वे बहसों करते रहे ताकि इस के द्वारा सत्य को मात दें परन्तु मैं ने उन को पकड़ लिया। तो देखो कैसा रहा मेरा अज़ाब।
6. इसी प्रकार तुम्हारे रब का आदेश उन लोगों पर लागू हो गया है जिन्होंने ने कुफ़्र किया कि वे जहन्नमी हैं।⁸
7. (वे फ़रिश्ते) जो अर्श (सिंहासन) को उठाए हुए हैं ⁹ और जो उस के चारों ओर हैं वे अपने रब की प्रशंसा के साथ पाकी बयान करते हैं ¹⁰ और उस पर ईमान रखते हैं ¹¹ और जो ईमान लाए हैं उन के लिए वे क्षमायाचना करते हैं कि ऐ हमारे रब ! तू अपनी रहमत और अपने ज्ञान के साथ हर चीज़ पर छाया हुआ है, तू उन लोगों को क्षमा कर दे जिन्होंने ने तौबा की और तेरे रास्ते पर चले और उन्हें जहन्नम के अज़ाब से बचा।¹²

لحم ①

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ②

غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ إِلَيْهِ الْمَصِيرُ ③

مَا يُجَادِلُ فِي آيَاتِ اللَّهِ إِلَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَا يَغْرُرُكَ
تَقْلَبُهُمْ فِي الْأَلْبَادِ ④

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَالْأَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ
وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوا وَجَادِلُوا
بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْنَاهُمْ فَكَيْفَ
كَانَ عِقَابِ ⑤

وَكَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ
أَصْحَابُ النَّارِ ⑥

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ
بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا
رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ
تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ⑦

1. “हा” ح और “मीम” م अलग अलग अक्षर हैं। ऐसे अक्षरों को विभक्त (हुरुफे मुकत्तआत) कहते हैं जिन की व्यख्या सूरह बकर: नोट १ और सूरह यूनस नोट १ में गुजर चुकी !

“हा” ح और “मीम” م का इशारा अल्लाह के हकीम (तत्त्वदर्शी) होने की तरफ है जिस का हवाला फ़रिश्तों ने अपनी दुआओं में दिया है और जिस का वर्णन इस सूरह की आयत ७ में हुआ है। हकीम शब्द का पहला अक्षर “हा” ح है अन्तिम अक्षर “मीम” م अर्थात् “म”। गोया ये अक्षर अल्लाह की पहचान के चिन्ह हैं और उस के तत्त्वदर्शी होने के गुण की ओर इशारा करते हैं।

इस सूरह के बाद छ लगातार सूरतों की शुरुआत भी इन ही अक्षरों “हा मीम” (هـم) से हुई है और इन सब सूरतों में उस की तत्त्वदर्शिता (हिकमत) के गुणों अथवा उस के तत्त्वपूर्ण फ़ैसलों का जिक्र हुआ है।

2. जब यह किताब उस हस्ती की तरफ से अवतारित हुई है जो सब कुछ जानने वाली है और जिस के ज्ञान की कोई सीमा नहीं है तो इस किताब में जो कुछ बयान किया गया है उस का सत्य और वास्तविकता पर होना अनिवार्य और निश्चित बात है।

3. इन विशेषताओं अथवा इन गुणों के जिक्र से अभिप्रेत इस बात का प्रोत्साहन देना है कि बन्दे अपने गुनाहों की उस से माफ़ी माँगें, क्योंकि वह तौबा कुबूल करता है, गुनाह के कामों से बाज़ रहें क्योंकि वह बड़ी सख्त सज़ा देता है। उस के फ़ज़ल (अनुग्रह) के उम्मीदवार बनें क्योंकि वह बड़े ही फ़ज़ल वाला है।

4. अर्थात् जिन लोगों ने कुर्आन के मामले में माकूल रवैया अपनाने के बजाय ग़ैर संजीदा रवैया अपना रखा है और इन्कार ही की ठान ली है वे उस की आयतों पर उल्टे सीधे एतिराज़ करते हैं और बहसें खड़ी करते हैं।

आज भी ऐसे लोगों की कमी नहीं जो कुर्आन को समझने की कोशिश तो नहीं करते अलबत्ता उस को अपने ऐतिराज़ आदि का निशाना बना लेते हैं।

5. अर्थात् इन काफ़िरों को जो भौतिक संसाधन प्राप्त हुए हैं और वे अपनी दुनिया को वैभवशाली बनाने के लिए जो सक्रियता दिखा रहे हैं उस से यह ग़लतफ़हमी नहीं होनी चाहिए कि ये लोग अल्लाह की नज़र में प्रिय हैं और वह उन के कुफ़्र, उदण्डता और अपराध का दण्ड उन्हें नहीं देगा।

6. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट ९५

7. अर्थात् अल्लाह की मदद हमेशा अपने रसूल के साथ

रहती है इस लिए इस के दुश्मन उस को अपनी गिरफ्त (क्राबू) में नहीं ले सके और अपनी साज़िशों में कामयाब नहीं हो सके। उसी तरह इस रसूल के मामले में भी इस के दुश्मन अपने मुँह की खाएंगे।

8. अर्थात् अपने कुफ़्र के कारण अंततः जहन्नम में पहुँचने वाले हैं।

9. इस की परिस्थिति हमें नहीं मालूम और चूँकि यह बात ग़ैब से सम्बन्ध रखती है इस लिए किसी बहस में पड़े बग़ैर इस पर ईमान लाना चाहिए।

10. अर्थात् अल्लाह के निकटस्थ फ़रिश्ते अल्लाह के गुणगान तथा उस की प्रशंसा में लगे रहते हैं। इस से अन्दाज़ा किया जा सकता है कि अल्लाह की पाकी बयान करना उस की प्रशंसा और उस का गुणगान किस शान की इबादत है। इस का जितना अधिक आयोजन किया जाए उतना ही अधिक अल्लाह में दिल लगेगा बशर्ते कि यह केवल ज़बान का विर्द न हो बल्कि दिल और दिमाग़ भी उस को समझ रहे हों और उस से प्रभावित हों।

11. बावजूद इस के कि फ़रिश्ते बहुत सी वास्तविकताओं और सच्चाइयों से परिचित हैं जैसे अल्लाह का सिंहासन आदि फिर भी अल्लाह की हस्ती और उस के गुणों के बारे में कितनी ही बातें उन के लिए भी रहस्य होंगी इस लिए उन के लिए भी आवश्यक है कि अल्लाह पर ईमान रखें और यह आयत पुष्टि करती है कि वे अल्लाह पर ईमान रखते हैं।

12. कितने बड़े सम्मान और सौभाग्य की बात है ईमान वालों के लिए कि फ़रिश्ते अल्लाह के सिंहासन के पास उन के लिए क्षमा याचना करते हैं।

स्पष्ट रहे कि वह क्षमायाचना नाम मात्र के मुसलमानों के लिए नहीं करते जो पाप, दुष्कर्म उल्लंघन कार्यों में लिप्त रहते हैं बल्कि जैसा कि आयत में सपष्ट रूप से बयान हुआ है, उन लोगों के लिए करते हैं जिन्होंने अपने गुनाहों से तौबा की और अल्लाह के रास्ते पर चले अर्थात् जिन्होंने अपना सुधार कर लिया और हिदयात के मार्ग पर चलते रहे।

यह भी स्पष्ट रहे कि यहाँ फ़रिश्तों की दुआ का जिक्र हुआ है न कि शफ़ाअत (सिफ़ारिश) का और ये दुआ भी मोमिन समूह के लिए है न कि ख़ास लोगों के लिए। शफ़ाअत (सिफ़ारिश) का मामला तो क्रियामत के दिन पेश आएगा और वह व्यक्ति से सम्बन्धित होगा और अल्लाह की अज्ञा के बग़ैर कोई भी शफ़ाअत के लिए ज़बान नहीं खोल सकेगा।

8. ऐ हमारे रब ! उन को हमेशा रहने वाली जन्नतों में दाखिल कर जिन का तूने उन से वादा किया है, और उन को भी जो उन के माता पिता, उन की पत्नियों और उन की संतान में से नेक हों¹³ निस्संदेह तू प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।¹⁴

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝۸

9. और उन्हें बुरे परिणामों से बचा । और जिन को तूने उस दिन बुरे परिणाम से बचाया उन पर तुने निश्चय ही रहम फ़रमाया।¹⁵ यही बड़ी कामयाबी हैं।

وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝۹

10. जिन लोगों ने कुफ़्र किया है उन को पुकार कर कहा जाएगा तुम अपने से जितने बेज़ार हो उस से कहीं अधिक बेज़ार तुम से अल्लाह था जब कि तुम को ईमान लाने की दअवत दी जाती थी और तुम कुफ़्र करते थे।¹⁶

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ينادُونَ لِمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِنْ مَقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ۝۱۰

11. वे कहेंगे ऐ हमारे रब ! तूने हमें दो बार मौत दी और दो बार ज़िन्दगी दी¹⁷ अब हम अपने गुनाहों को स्वीकार करते हैं, तो क्या यहाँ से निकलने का भी कोई मार्ग है ?

قَالُوا رَبَّنَا آمَنَّا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَى خُرُوجٍ مِنْ سَبِيلٍ ۝۱۱

12. तुम इस अन्जाम को इस लिए पहुँचे कि जब एक अल्लाह की तरफ़ बुलाया जाता था तो तुम इन्कार करते थे और जब उस के साझी ठहराये जाते तो तुम मानते थे।¹⁸ अब हुक्म (फ़ैसला) अल्लाह महान और सर्वोच्च का ही है।

ذَلِكَ بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ وَلِنْ يَسْأَلْكُم بِهِ تَوْثُوقًا فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ۝۱۲

13. वही है¹⁹ जो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता हैं और आसमान से तुम्हारे लिए रोज़ी उतारता है मगर याददेहानी वही हासिल करता है जो अल्लाह की तरफ़ रूजू करने वाला हो।

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ رِزْقًا وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَنْ يُنِيبُ ۝۱۳

14. तो अल्लाह ही को पुकारो दीन (बन्दगी) को उस के लिए ख़ालिस कर के²⁰ चाहे काफ़िरों को कितना ही अग्रिय (नागवार) हो।²¹

فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝۱۴

15. वह बुलन्द दर्जों वाला²² सिंहासन का मालिक है²³ अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपने हुक्म से रूह (वह्य) नाज़िल करता है²⁴ ताकि वह पेशी के दिन से ख़बरदार करे।

رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۝۱۵

13. व्याख्या के लिए देखिए सूरह रअद नोट ५५
“नेक हो” अलग से कहना इस बात को और अधिक स्पष्ट करता है कि फ़रिश्तों की यह दुआ ईमान वालों और सुकर्मियों के लिए है जिस से उन के खुलूस और चाह की अभिव्यक्ति होती है।

14. अल्लाह की इन विशेषताओं का ज़िक्र इस बात को जताने के लिए है कि फैसला तेरे ही अधिकार में है और तेरा कोई फैसला हिकमत और तत्वदर्शिता से खाली नहीं हो सकता।

15. अर्थात् तू इन पर रहम फ़रमा कि क्रियामत के दिन इन को बुरे परिणामों का सामना न करना पड़े और वे उस दिन की कठोरता से सुरक्षित रहें।

16. काफ़िर जहन्नम में दाखिल होने के बाद अपने आप से बेहद बेज़ारी महसूस करेंगे कि यह हम क्या कर बैठे कि हमें संगीन सज़ा भुगतनी पड़ रही है। उस समय उन्हें याद दिलाया जाएगा कि तुम्हें दुनिया में ईमान लाने की दअवत दी जाती थी मगर तुम इन्कार करते थे उस समय अल्लाह की तुम से बेज़ारी इस से अधिक थी जितनी आज तुम्हारी अपने आप से है और जब तुम ने ऐसा जुर्म किया जो अल्लाह की बेज़ारी और उस के क्रोध का कारण है तो अब अपने किये की सज़ा भुगतो।

17. दो बार की मौत से तात्पर्य एक तो वह शरीर है जो गर्भाशय में संरचना के आरम्भिक चरणों में होता है और अभी उस में जान नहीं पड़ी होती। यह शरीर चूँकि मुर्दा होता है इस लिए इस को मौत की संज्ञा से याद किया गया है। और दूसरी बार की मौत वह है जब उस की रुह क़ब्ज़ होती है और वह इस दुनिया से कूच कर जाता है। और दो बार की ज़िन्दगी से तात्पर्य एक तो दुनिया की ज़िन्दगी है और दूसरी क्रियामत के दिन की जब कि मुर्दा इन्सान कब्रों से उठ खड़े होंगे। सूरह बकर: की आयत २८ इस आयत की तफ़्सीर करती है उस में इर्शाद हुआ है :-

وَكُنْتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمَيِّتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ. (البقرة: २८)

अर्थ : “ तुम मुर्दा थे तो उस ने तुम्हें ज़िन्दगी प्रदान की

फिर वह तुम्हें मौत देगा फिर तुम को ज़िन्दा करेगा फिर उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।”

ध्यान रहे कि यहाँ केवल शारीरिक मौत और शारीरिक जीवन का वर्णन हो रहा है। रहा आलमे-बर्ज़ख़ (यमलोक) का जीवन तो उस का सम्बन्ध मात्र रूह से है क्यों कि शरीर तो फना हो जाता है इस लिए इस का हाल उस जीवन का सा नहीं है जो आत्मा के शरीर से मिल जाने की सूरत में होता है बल्कि वह एक ख़ास तरह का रूहानी जीवन है जिस में रूह पर या तो अज़ाब होता है या वह राहत और आराम से रहती है। अतः इस आयत में उन लोगों के लिए कोई दलील नहीं जो क़ब्र के अज़ाब से इन्कार करते हैं।

18. अर्थात् तुम्हें तौहीद से दिलचस्पी नहीं थी अलबत्ता शिर्क (बहुदेववाद) से बड़ी दिलचस्पी थी। ग़लत धारणाओं में लिप्त होने वालों का यही हाल होता है। उन के सामने ख़ालिस तौहीद (एकेश्वरवाद) पेश कीजिए तो वे उस का इन्कार करेंगे किन्तु यदि कोई गुमराह व्यक्ति उन के ठहराए हुए शरीकों का वर्णन करे तो वे श्रद्धाभाव व्यक्त करेंगे।

19. ऊपर शिर्क (बहुदेववाद) का अन्जाम बयान हुआ है अब तौहीद (एकेश्वरवाद) को स्वीकार करने की दअवत दी जा रही है।

20. अर्थात् अल्लाह ही के बन्दे बन कर उसी को हाजतों की पूर्ति के लिए पुकारो और उसी की इबादत करो।

21. अर्थात् ख़ालिस तौहीद को अपनाने में काफ़िरों और ग़ैर मुस्लिमों की नाराज़गी बाधक नहीं होना चाहिए। मामला वास्तव में अल्लाह से है इस लिए उस के प्रकोप (अज़ाब) से बचना चाहिए।

22. अर्थात् उस का दर्जा और उस की शान बहुत बुलन्द है अतः उस को सृष्टि जैसा समझना और उस का सहकक्ष ठहराना सरासर ग़लत और उस की शान में खुली गुस्ताख़ी है।

23. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट ८३

24. रूह (वहय) की व्याख्या के लिए देखिए सूरह नहल नोट ३.



16. वह दिन कि लोग निकल पड़ेंगे।²⁵ उन की कोई बात अल्लाह से छिपी नहीं होगी। आज बादशाही किस की है ? अल्लाह अकेले प्रभुत्वशाली की।²⁶

يَوْمَهُمْ بَارِزُونَ هَ لَا يَخْفَى عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ لِّلَّذِينَ
الْمُلْكُ الْيَوْمَ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ①

17. आज हर नफ़्स को उस की कमाई का बदला दिया जाएगा आज कोई ज़ुल्म न होगा। बेशक अल्लाह हिसाब चुकाने में तेज़ है।²⁷

الْيَوْمَ تُجْزَى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ إِنَّ اللَّهَ
سَرِيعُ الْحِسَابِ ②

18. और डराओ इन को इस दिन से जो निकट आ लगा है।²⁸ जब कलेजे मुँह को आ लगेंगे और वे ग़म से घुट रहे होंगे, ज़ालिमों का न कोई दोस्त होगा और न सिफ़ारिशी जिस की बात मानी जाए।²⁹

وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاطِبِينَ ه
مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَبيْمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ③

19. वह निगाहों की ख़यानत भी जानता है³⁰ और वह बातें भी जो सीनों ने छिपा रखी हैं।³¹

يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ④

20. अल्लाह बिलकुल सही फैसला फ़रमाएगा और जिन (पूज्यों) को ये अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज़ का भी फैसला करने वाले नहीं³² निस्संदेह अल्लाह ही सब कुछ देखने वाला और सुनने वाला हैं।³³

وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ
لَا يَقْضُونَ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ⑤

21. क्या ये लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि देख लेते उन लोगों का अन्जाम क्या हुआ जो इन से पहले गुजर चुके हैं। वे शक्ति में भी इन से कहीं बढ़ कर थे और ज़मीन पर चिन्ह छोड़ने की दृष्टि से भी³⁴ मगर अल्लाह ने उन को उन के गुनाहों के कारण पकड़ लिया और कोई न था जो उन को अल्लाह की पकड़ से बचाता।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِينَ كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً
وَأَنَارُوا فِي الْأَرْضِ فَاخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ
لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَّاقٍ ⑥

22. यह इस लिए हुआ कि उन के पास उन के रसूल स्पष्ट निशानियाँ ले कर आए थे परन्तु उन्होंने इन्कार किया, तो अल्लाह ने उन को पकड़ लिया। निस्संदेह वह बड़ी शक्तिवाला और कड़ा दण्ड देने वाला है।³⁵

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فكَفَرُوا
فَاخَذَهُمُ اللَّهُ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ⑦

25. अर्थात् क्रूरों से निकल पड़ेंगे।

26. दुनिया में अल्लाह तआला ने जिन को अमानत स्वरूप सत्ता प्रदान की थी उन में से अधिकतर लोग अपने को सत्ता का मालिक समझते रहे और अपनी बादशाही और संप्रभुता के दावेदार बने रहे। किन्तु क्रियामत के दिन जब सवालिया निशान बन कर यह आवाज़ बुलन्द होगी कि आज बादशाही किसी की है तो सत्ता और संप्रभुता के इन दावेदारों को साँप सूँघ जाएगा क्यों कि उस रोज किसी के पास कोई सत्ता न होगी। सब बेबस बन्दे की हैसियत से अल्लाह के समक्ष उपस्थित होंगे। उस समय आवाज़ बुलन्द होगी कि आज बादशाही अकेले अल्लाह की है जो ऐसा प्रभुत्वशाली है कि सब उस के आगे झुके हुए हैं।

क्रियामत के दिन तो यह हकीकत खुल कर सामने आएगी कि अल्लाह ही वास्तविक शासक है किन्तु दुनिया में भी उस को अंतर्दृष्टि से देखा जा सकता है। इस लिए इस्लाम का मुतालबा है कि एक अल्लाह को वास्तविक शासक स्वीकार करो।

27. अर्थात् यह न समझो कि अरबों खरबों इन्सानों का हिसाब चुकाने में अल्लाह को देर लगेगी। अल्लाह को इन्सानी राजाओं और शासकों जैसा समझना उचित नहीं। वह यदि प्रति दिन हजारों प्राणों को उत्पन्न करता है और हजारों प्राणों को मौत देता है और अरबों इन्सानों को एक साथ रोजी देता है तो अरबों और खरबों इन्सानों का हिसाब चुकाना उस के लिए क्या मुश्किल है। वह एक ही समय में एक साथ असंख्य मनुष्यों की ओर अलग अलग ध्यान दे सकता है और उन का अलग अलग हिसाब ले सकता है।

28. अर्थात् क्रियामत की घड़ी को दूर न समझो। वह बहुत जल्द आने वाली है।

29. यह उस विकृत धारणा का खण्डन है कि फ़लाँ और फ़लाँ हमारी सिफ़ारिश करेंगे और उन की सिफ़ारिश निश्चित रूप से मानी जाएगी। सिफ़ारिश की इस विकृत धारणा ही के चलते लोग आखिरत से बेपरवाह हो गए हैं।

30. निगाहों की ख़यानत यह है कि आदमी चोरी छिपे उन चीज़ों पर निगाह डाले जिन का देखना मना है। जैसे किसी अजनबी औरत को देखने के लिए ताक झाँक करना। छिप छिप पर किसी के गुप्तांगों पर निगाह डालना या अश्लील चित्र अथवा दृश्य देखना आदि। यदि आदमी अल्लाह से डरने वाला हो तो वह अपनी निगाहों को बचाएगा कि वह किसी ऐसी चीज़ पर न पड़ें जिस का देखना हराम है क्यों कि उसे मालूम है कि अल्लाह से कोई चीज़ भी छिपी नहीं रह सकती यहाँ तक कि आँखों का चोरी छिपे देख लेना भी।

31. अर्थात् दिलों का हाल, नीयत, इरादे, संकल्प आदि।

32. अर्थात् क्रियामत के दिन जो फ़ैसले का दिन होगा, अल्लाह के सिवा कोई न होगा जो मनुष्यों के कर्मों और उन के बीच के विवादों का फ़ैसला चुकाए।

ईसाई, हज़रत मसीह के बारे में यह धारणा रखते हैं कि वे क्रियामत के दिन इन्सानों के बीच उन के कर्मों के अनुसार फ़ैसला फ़रमाएँगे (देखिए मत्ती अध्याय २५:३१ से ४६) यह धारणा बिल्कुल ग़लत है और कुर्आन की यह एक आयत ही उस के खण्डन के लिए काफ़ी है।

33. यह दलील है इस बात की कि जब अल्लाह के सिवा कोई नहीं जो सब कुछ सुनने और देखने वाला हो, तो फ़ैसला करने का अधिकारी भी उस के सिवा कोई नहीं हो सकता।

34. अर्थात् सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नति के चिन्ह। इशारा है समूद और मदयन आदि की जाति वालों की ओर जिन की सांस्कृतिक उन्नति के चिन्ह आज भी खण्डहरों के रूप में मौजूद हैं।

35. जब यह वास्तविकता आँखों से देखी जा चुकी और इस बात के कई परीक्षण किये जा चुके कि अल्लाह इस दुनिया में मुजरिम क़ौमों को उन के जुर्म की सज़ा देता है तो आखिरत के बारे में इस भ्रम में रहना कैसे सही हो सकता है कि वहाँ बस क्षमा ही क्षमा होगी और आदमी कैसा ही संगीन जुर्म कर चुका हो उस की सज़ा उस को मिलने वाली नहीं।



23. हम ने मूसा को अपनी निशानियों और स्पष्ट प्रमाण (हुज्जत) के साथ भेजा।³⁶

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۝٣٦

24. फिरऔन हामान,³⁷ और क़ारून³⁸ की तरफ़ तो उन्होंने ने कहा यह जादूगर है झूठा।

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سِحْرٌ كَذَّابٌ ۝٣٧

25. और जब वह हमारे पास से हक ले कर उन के पास आया तो उन्होंने कहा कि क़त्ल करो इन लोगों के बेटों को जो इस के साथ ईमान लाए हैं और इन की लड़कियों को ज़िन्दा रहने दो।³⁹ मगर इन काफ़िरो की चाल अकारत गई।⁴⁰

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝٣٨

26. और फिरऔन ने कहा मुझे छोड़ दो कि मैं मूसा को क़त्ल करूँ और वह अपने रब को पुकारे।⁴¹ मुझे भय है कि वह कहीं तुम्हारा दीन न बदल डाले⁴² या ज़मीन में फ़साद न बरपा करे।⁴³

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ رَبَّهُ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ۝٣٩

27. मूसा ने कहा मैं ने हर अहंकारी (के शर और फ़ितने) से जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता अपने और तुम्हारे रब की पनाह ली।⁴⁴

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ مِنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝٤٠

28. और एक मोमिन पुरुष जो फिरऔन वालों में से था और अपने ईमान को छिपाये हुए था।⁴⁵ बोल उठा क्या तुम एक व्यक्ति को इस लिए क़त्ल करोगे कि वह कहता है, मेरा रब अल्लाह है, हालाँकि वह तुम्हारे रब की तरफ़ से स्पष्ट निशानियाँ ले कर आया है। अगर वह झूठा हुआ तो उस के झूठ का वबाल उसी पर पड़ेगा और अगर वह सच्चा हुआ तो जिस अज़ाब से वह तुम्हें डरा रहा है वह किसी न किसी हद तक ज़रूर तुम को पहुँच कर रहेगा।⁴⁶ अल्लाह उस व्यक्ति को हिदायत नहीं देता जो हद से गुजरने वाला और झूठा हो।⁴⁷

وَقَالَ رَجُلٌ مُؤْمِنٌ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ وَإِنْ يَكْذِبْكَ كَذِبُهُ فَإِنَّ يَكْ صَادِقًا يُصِيبُكُمْ بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ۝٤١

29. ऐ मेरी क़ौम के लोगो !आज तुम्हें हुकूमत हासिल है और तुम इस सरज़मीन में ग़ालिब हो किन्तु यदि अल्लाह का अज़ाब हम पर आ गया तो कौन है जो हमारी मदद करेगा?⁴⁸ फिरऔन ने कहा मैं तुम को वही बात बताता हूँ जो मेरी राय में दुरुस्त है और तुम्हारी रहनुमाई उसी राह की तरफ़ करता हूँ जो बिलकुल सही है।⁴⁹

يَقَوْمِ لَكُمْ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظَهَرْنَا فِي الْأَرْضِ فَمَنْ يَنْصُرُنَا مِنْ بَأْسِ اللَّهِ إِنْ جَاءَنَا قَالَ فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝٤٢

36. व्याख्या के लिए देखिए सूरह मोमिनून नोट ४४

37. विस्तार के लिए देखिए सूरह क्रसस नोट ११

38. विस्तार के लिए देखिए सूरह क्रसस नोट १४३

39. बनी इस्राईल की जनसंख्या घटाने के लिए बच्चों की पैदाइश पर लड़कों की हत्या करने का आदेश फिरऔन पहले भी जारी कर चुका था और हज़रत मूसा का जन्म ऐसे ही हालात में हुआ था। किन्तु अब जब कि हज़रत मूसा की दअवत से फिरऔन को ख़तरा महसूस हुआ तो उस ने बनी इस्राईल के नवजात शिशुओं की हत्या करने का पुनः आदेश दिया ताकि यह अल्पसंख्याक दब कर रह जाएँ और इन की संख्या भी घट जाए। यह था फिरऔन का कठोरतम वैमनस्य पक्षताप, तथा अन्यायपूर्ण रवैया। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १८१

40. फिरऔन की यह चाल कामयाब न हो सकी। बनी इस्राईल को कष्ट ज़रूर पहुँचा किन्तु ईमान वाले होने और रसूल का अनुपालन करने के आधार पर अल्लाह का समर्थन उन को प्राप्त हुआ और विनाश से फिरऔनियों को ही दो चार होना पड़ा।

41. फिरऔन ने यह बात अपने दरबारियों से कही। उस ने हज़रत मूसा को मार देने का इरादा जताया और साथ ही उन पर यह कटाक्ष भी किया कि वे अपने को बचाने के लिए अपने रब को पुकारें। इस तरह फिरऔन ने हज़रत मूसा और अपने रब का मज़ाक़ उड़ाया जिस से अन्दाज़ा होता है कि वह कितने बड़े घमण्ड और अहं में लिप्त था।

42. दीन बदलने से तात्पर्य धर्म और धारणा का परिवर्तन है। फिरऔन की क्रौम सितारों की भक्त थी। उन्होंने ने अल्लाह को छोड़ कर सितारों को देवी देवता बना रखा था और वह फिरऔन की भी पूजा करते थे जो सूर्य देवता का अवतार होने का दावेदार था। हज़रत मूसा की दअवत तौहीद, आख़िरत और रिसालत पर ईमान लाने और एक अल्लाह की इबादत करने और उस के अनुपालन में अपने आप को दे देने की दअवत थी। यह अल्लाह का दीन अर्थात् अल्लाह की ओर से मानव के लिए उतारी गई जीवन प्रणाली थी जिस को वे प्रस्तुत कर रहे थे। परन्तु फिरऔन इस को कब सहन कर सकता था कि उस की जाति हज़रत मूसा की प्रस्तुत की हुई जीवन प्रणाली -इस्लाम- को स्वीकार कर ले। इस लिए उस ने अपनी जाति को मूसा के विरुद्ध उकसाया।

अधिकांश मुफ़स्सिरिन ने भी दीन को बदलने से धर्म को बदलना ही मुराद लिया है न कि “राजनीतिक व्यवस्था” को बदलना और “क़शशाफ़” के लेखक ने तो कुर्आन से ही यह दलील भी पेश की है कि :

“वे फिरऔन की और उस के बुतों की पूजा करते थे और इस पर दलील अल्लाह तआला का यह इर्शाद है

وَيَذَرُكَ وَالْهَتَكَ (اعراف- १८८)

अर्थ :-“ वे तुझे और तेरे उपास्यों को छोड़ दें।”(सूरह आराफ़ आयत १८७) (क़शशाफ़ जिल्द ३ पृष्ठ ४३३)

इस लिए तफ़हीमुल कुर्आन के संकलनकर्ता का यह कहना है कि “यहाँ दीन से मुराद राज्य की व्यवस्था है” (तफ़हीमुल कुर्आन जिल्द ४ पृष्ठ ४०५) सरासर तकल्लुफ़ है। (अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १८०)

43. मूसा अलैहिस्सलाम की दअवत सरासर इस्लाह और सुधार की दअवत थी मगर फिरऔन ने उन पर यह झूठा आरोप लगाया कि वे देश में फ़साद बरपा करना चाहते हैं। वह समझता था कि हज़रत मूसा की दअवत उस की जाति के बीच विखण्डन का बीज बोने का कारण होगी। यदि एक गिरोह हज़रत मूसा के दीन को स्वीकार कर लेता है और दूसरा गिरोह अपने धर्म पर जमा रहता है तो दोनों में साम्प्रदायिक भावनाएँ पैदा होंगी जिस का नतीजा अशान्ति और खून खराबे के रूप में सामने आएगा।

आज के युग में भी ख़ुदा से विमुख शासकों तथा उस के सहयोगी दरबारियों के सोचने का अन्दाज़ यही है। वे किसी उभरती हुई इस्लामी दअवत को सहन करने के लिए तैयार नहीं होतीं। वे उस में साम्प्रदायिकता को महसूस करती हैं और उसे जन शान्ति के लिए ख़तरा बताती हैं। हालाँकि यह ख़तरा अगर सही भी हो तो इस की ज़िम्मेदारी उन लोगों पर आयद होती है जो इस्लामी दअवत के मुकाबले में शर और फ़साद पर आमादा हो जाते हैं। और यदि उन शासकों अथवा सत्ताधारियों के इस तर्क को सही स्वीकार कर लिया जाए तो दुनिया में कभी इस्लाह और सुधार का काम अन्जाम नहीं पा सकता। फिर क्या लोगों को छोड़ दिया जाए कि वे जहन्नम में जा गिरें और उन को उस से बचाने की कोई कोशिश न की जाए।

44. हज़रत मूसा ने उन फ़सादियों के उपद्रव से बचने के लिए अल्लाह की पनाह तलब की और अपने को उस के हवाले कर दिया यह है तवक्कुल अर्थात् अल्लाह पर विश्वास और आस्था का उच्च उदाहरण।

45. फिरऔन के परिवार में एक सदस्य ऐसा निकला जो हज़रत मूसा की दअवत से प्रभावित हो कर उन पर ईमान ले आया। वह भी अपने ईमान को छिपाये हुए था। किन्तु जब हज़रत मूसा की हत्या की बातें होने लगीं तो उस की ईमानी ग़ैरत जोश में आई और उस ने भरे दरबार में हज़रत मूसा का समर्थन किया और न केवल समर्थन किया बल्कि खुल कर सच्ची दअवत भी पेश कर दी और अपनी बात को प्रस्तुत करने का

ऐसा अन्दाज़ अपनाया कि फ़िरऔन और उस के दरबारियों पर उस की माकूलियत और उस की तार्किकता स्पष्ट हो जाए।

ध्यान रहे कि इस्लाम ईमान को छिपाने की अनुमति नहीं देता। इस्लाम का पहला स्तंभ ही कालिमा शहादत अदा करना है और इस का तक्राज़ा है कि इस्लाम स्वीकार करने का एलान और इज़हार हो और वह मुस्लिम समाज का सदस्य हो जाए। अलबत्ता अगर जान का ख़तरा लागू हो तो इस्लाम में इस बात की अनुमति है कि आदमी सामायिक रूप से अपने ईमान को छिपाये।

46. साहसी मोमिन पुरुष के कहने का मंशा फ़िरऔन को हत्या करने से रोकना था। इस सिलसिले में उस ने एक ऐसी बात कही जो आसानी से उन लोगों की समझ में आ सकती थी। वह यह कि हज़रत मूसा का अपने रसूल (ईश दूत) होने के दावे में झूठा होना साबित नहीं है जो तुम उन्हें सज़ा दो। और मात्र शक के आधार पर इतना बड़ा क्रदम उठाना सही नहीं। यदि मान लें कि वे झूठे हैं तो उन के झूठ का वबाल ज़रूर उन पर पड़ेगा लेकिन यदि वे सच्चे हैं तो सोचो फिर तुम्हारा इन की हत्या

करने का क्या परिणाम निकलेगा। तुम अल्लाह के प्रकोप को निमंत्रण दोगे और जिस अज़ाब की चेतावनी हज़रत मूसा तुम्हें सुना रहे हैं उस का एक हिस्सा तुम्हें इस दुनिया ही में मिलेगा।

47. यह इशारा हज़रत मूसा को झुठलाने वालों की तरफ़ था जो लोग प्राकृतिक एवं नैतिक सीमाओं को तोड़ने में बेबाक होते हैं और एक रसूल के द्वारा अल्लाह की निशानियों के स्पष्ट हो जाने के बाद भी शंकाओं वा संदेहों में पड़ते हैं वे अल्लाह की तौफ़ीक़ और उस की हिदायत से महरूम रहते हैं।

48. अर्थात् शासन और सत्ता के घमण्ड में न रहो। अल्लाह का प्रकोप तुम पर नाज़िल हो सकता है जिस के आगे तुम बिलकुल बेबस हो कर रह जाओगे।

49. फ़िरऔन ने उस मोमिन पुरुष की बात में हस्तक्षेप करते हुए कहा कि मेरी यह राय कि मूसा की हत्या करना आवश्यक है एक सोची समझी राय है और मुझ पर भरोसा करो कि मैं तुम्हारी सही रहनुमाई कर रहा हूँ। यह हस्तक्षेप फ़िरऔन ने इस लिए किया कि उसे भय महसूस हुआ कि इस व्यक्ति की बातें जो हज़रत मूसा का समर्थक हो गया है दरबार वालों को प्रभावित न कर दे।



ઈ અહીં તો તારા નામને તો ને તોયે મને
 કિંતુ તો મને તો કોઈ જાણ નહીં ! તોયે તો તોયે તોયે
 તો (તોયે તોયે તોયે તોયે) તો તોયે તોયે તોયે તોયે
 ,તોયે ,તોયે તોયે તોયે તોયે તોયે તોયે ! તોયે તોયે
 તોયે તોયે તોયે તોયે તોયે તોયે તોયે તોયે તોયે
 તોયે તોયે તોયે તોયે તોયે તોયે તોયે તોયે તોયે
 (નોંધતું-તોયે) ! તોયે તોયે તોયે તોયે

30. और उस व्यक्ति ने जो ईमान लाया था कहा ⁵⁰ऐ मेरी जाति के लोगो ! मुझे भय है कि तुम पर कहीं वह दिन न आ जाए जो (गुजरी हुई जातियों) पर आया था !

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَوْمَئِذٍ أَخَافُ عَلَيْكُمْ مِثْلَ
يَوْمِ الْأَحْزَابِ ۝

31. ऐसा अन्जाम जो नूह की जाति, आद, समूद और उन के बाद वाली जातियों का हुआ ⁵¹ और अल्लाह अपने बन्दों पर कोई अत्याचार करना नहीं चाहता !

مِثْلَ دَابِّ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ
مِنْ بَعْدِهِمْ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظَلَمًا لِلْعِبَادِ ۝

32. ऐ मेरी जाति के लोगो ! मुझे तुम्हारे बारे में पुकार के दिन का डर है। ⁵²

وَيَقَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ۝

33. जिस दिन तुम पीठ फेर कर भागोगे और तुम को अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा ⁵³ और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उस को हिदायत देने वाला कोई नहीं हो सकता।

يَوْمَ تَوَلَّوْنَ مُدْبِرِينَ مَا لَكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ وَمَنْ يُضِلِلِ
اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝

34. इस से पहले यूसुफ़ स्पष्ट निशानियों के साथ आए थे लेकिन तुम उन की लाई हुई शिक्षाओं के बारे में शक ही में रहे यहाँ तक कि जब उन का इत्काल हो गया तो तुम कहने लगे अब इन के बाद अल्लाह कोई रसूल हरगिज़ नहीं भेजेगा। ⁵⁴ इस तरह अल्लाह उन लोगों को गुमराह कर देता है जो हद से गुजरने वाले और शक में पड़ने वाले होते हैं।

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلِ الْبَيِّنَاتِ قَبَارِلُهُ
فِي شَكٍّ مِمَّا جَاءَكُمْ بِهِ حَتَّىٰ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَبْعَثَ اللَّهُ
مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَنْ هُوَ
مُسْرِفٌ مُّرْتَابٌ ۝

35. जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं बगैर किसी दलील के, जो उन के पास आई हो। ⁵⁵ यह बात अल्लाह और ईमान वालो के नज़्दीक अत्यन्त अप्रिय है। ⁵⁶ इसी प्रकार अल्लाह प्रत्येक अहंकारी और दमनशील के दिल पर ठप्पा लगा देता है। ⁵⁷

الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَتْهُمْ كِبْرُ مَقْتًا
عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ الَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ
قَلْبٍ مُنْكَرٍ جَبَّارٍ ۝

36. फिरऔन ने कहा ऐ हामान ! मेरे लिए एक ऊँची इमारत बना ताकि मैं उन राहों पर पहुँच जाऊँ।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ لِهَامَانَ ابْنِ لِي صَرْحًا لَعَلِّي أَبْلُغُ الْأَسْبَابَ ۝

37. जो आसमान की राहें हैं, और मूसा के रब को झाँक कर देखूँ। ⁵⁸ मैं तो समझता हूँ यह बिल्कुल झूठा है। इस तरह फिरऔन की निगाह में उस के बुरे काम शोभायमान बना दिए गए और उसे सीधी राह से रोक दिया गया। ⁵⁹ और फिरऔन की चाल तबाही में पड़ गई। ⁶⁰

أَسْبَابَ السَّمَوَاتِ فَأَطَّلِعَ إِلَىٰ إِلَهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَكْظَعُهُ كَإِذَا بَا
وَكَذَلِكَ زَيَّنَّ لِفِرْعَوْنَ سُوءَ عَمَلِهِ وَصَدَّ عَنِ السَّبِيلِ وَمَا
كَدُّ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ ۝

50. फिरऔन के हस्तक्षेप के बाद उस मोमिन पुरुष ने अपना बयान जारी रखते हुए कहा।

51. इस से स्पष्ट होता है कि नूह की जाति, आद, समूद, लूत और शुऐब की जातियों पर उन के कुफ्र के कारण जो अज़ाब आया उस को उस समय के लोग प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटनाओं की हैसियत से जानते थे।

52. पुकार के दिन से मुराद क्रियामत का दिन है जब कि एक पुकार पर सब लोग क़ब्रों से निकल पड़ेगे। सूरह काफ़ में इर्शाद हुआ है :-

وَأَسْمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ
يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذَٰلِكَ يَوْمُ
الْخُرُوجِ - (ن: ४१, ४२)

अर्थ: “और सुन लो जिस दिन पुकारने वाला करीबी जगह से पुकारेगा, जिस दिन लोग हौलनाक आवाज़ सुनेंगे हक़ के साथ। वह (क़ब्रों से) निकलने का दिन होगा।” (काफ़ ४१, ४२)

“यौमतनाद” का मतलब है वह दिन जब कि तमाम लोगों को पुकारा जाएगा कि उठो और जवाबदेही के लिए अल्लाह के समक्ष उपस्थित हो जाओ।

53. क्रियामत का होलनाक दृश्य देख कर अपराधी इधर उधर भागने की कोशिश करेंगे मगर फ़रिशते उन को पकड़ लेंगे और उन को अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाला कोई न होगा।

54. अर्थात् हज़रत यूसुफ़ की जीवनी, शिक्षा, और स्वप्नार्थ में रिसालत की स्पष्ट निशानियाँ थीं मगर तुम लोग (मुराद फिरऔन अर्थात् मिस्री शासक और उस की जाति) उन की रिसालत के बारे में शक ही में पड़े रहे। यहाँ तक कि जब वे इस दुनिया से विदा हुए तो तुम्हें यह एहसास हुआ कि हम ने उन की क़द्र नहीं की और जब हम ने ऐसे बुजुर्ग हस्ती की क़द्र नहीं की तो अब अल्लाह कोई रसूल नहीं भेजेगा। मगर अल्लाह ने मूसा को भेज कर तुम्हें संभलने का दूसरा मौक़ा दिया है। अतः तुम्हें चाहिए कि इन की क़द्र करो मगर तुम हो कि अल्लाह के रसूल को क़त्ल करने की सोच रहे हो।

55. अर्थात् कोई ऐसी दलील जो वह्य के द्वारा पहुँची हो। तात्पर्य यह है कि किसी नबी की शिक्षा या किसी आसमानी किताब का प्रमाण है। ऐसा कोई प्रमाण इन लोगों के पास मौजूद नहीं है जिस को ये कुआन की आयतों के खण्डन हेतु प्रस्तुत कर सके वे मात्र अटकलों और अंधविश्वासों के आधार पर बहसें

खड़ी कर रहे हैं।

56. अर्थात् यह झगड़े और इस तरह कटहुज्जती करने वाले अल्लाह की नज़र में अप्रिय हैं ही ईमानवाले भी इन से सख्त नफ़रत करते हैं।

यह है ईमान वालों का प्रशंसनीय गुण, किन्तु मौजूदा दौर में ऐसे मुसलमानों की कमी नहीं जो कुआन की शिक्षाओं पर आप ही आपत्ति व्यक्त करते हैं और उल्टी सीधी बहसें खड़ी कर देते हैं।

57. अहंकारी अर्थात् अल्लाह के मुक़ाबले अपने को बड़ा समझने वाला और दमनशील का मतलब है ज़बरदस्त, तथा कथित प्रभुत्वशाली, वह जो अल्लाह के बन्दों को अपनी मर्ज़ी के अनुसार चलाने के लिए ज़ोर ज़बरदस्ती करे। ऐसे लोग सत्य स्वीकार करने की स्वभाविक शक्ति को खो चुके होते हैं इस लिए सत्य कितना ही रौशन हो कर उन के सामने आ जाए उन के दिल में नहीं उतरता। यह सब कुछ उस नियम के अनुसार होता है जो अल्लाह ने गुमराही के लिए बना रखा है और इस को दिल पर ठप्पा लगाना कहा गया है।

58. इस तरह फिरऔन ने हज़रत मूसा की बातों का मज़ाक़ उड़ाया और उन के रब की शान में गुस्ताखी की जिस से उस का अहं पूरी तरह ज़ाहिर हो गया।

यह समझना सही नहीं कि फिरऔन ने हामान को इमारत निर्माण करने का सचमुच आदेश दिया था ताकि वह उस पर चढ़ कर मूसा के रब को झाँक कर देख ले। इस उद्देश्य के लिए पहाड़ों की क्या कमी थी जो इमारत बनवाने का वह आदेश देता। फिरऔन के एक एक शब्द से तो कटाक्ष का ही प्रदर्शन हो रहा है।

59. अर्थात् उस का कार्य ग़लत मतलब निर्धारण करने के कारण उस की दृष्टि में अच्छा कार्य बन गया। मानव स्वभाव दुष्कर्म करने के लिए आमादा नहीं होता किन्तु जब आदमी किसी बात का ग़लत मतलब ले कर बुराई को उचित ठहरा लेता है तो फिर बुरे काम उस की नज़र में अच्छे काम बन जाते हैं और वह शैतान के फ़रेब में आ जाता है। फिर शैतान ऐसी भ्रामक सैद्धान्तिक रुकावटें खड़ी कर देता है कि उस का सीधे मार्ग पर आना संभव नहीं रहता।

60. तात्पर्य फिरऔन के वे हथकण्डे हैं जिन को वह हज़रत मूसा के विरुद्ध इस्तेमाल करता रहा लेकिन उस की कोई चाल भी कामयाब न हो सकी बल्कि उल्टे उस के विनाश का कारण बनी !

38. और उस व्यक्ति ने जो ईमान लाया था कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगों! ⁶¹ मेरी बात मानो मैं तुम्हें हिदायत की राह बता रहा हूँ।

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَوْمَ اتَّبَعُونِ أَهْدِيكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝

39. ऐ मेरी जाति के लोगो ! यह दुनिया की ज़िन्दगी तो बस थोड़े लाभ के समान है और आखिरत ही स्थायी घर है।

يَقُولُ إِنَّمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَإِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ۝

40. जो बुराई करेगा वह उसी के जितना बदला पायेगा और जो नेक अमल करेगा चाहे वह मर्द हो या औरत बशर्ते कि, मोमिन हो तो ऐसे लोग जन्नत में दाखिल होंगे जहाँ वह बेहिसाब रिज़क पायेंगे।

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أَتَتْهُ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

41. ऐ मेरी जाति के लोगो ! यह क्या बात है कि मैं तुम्हें मुक्ति की ओर बुलाता हूँ और तुम मुझे आग की तरफ़ बुलाते हो। ⁶²

وَيَقُولُ مَا إِلَىٰ أَدْعُوكُمُ إِلَى الْجَنَّةِ وَتَدْعُونَنِي إِلَى النَّارِ ۝

42. तुम मुझे दअवत देते हो कि मैं अल्लाह से कुफ़्र करूँ और उस के साझीदार ठहराऊँ जिन को मैं नहीं जानता (कि वे अल्लाह के शरीक हैं ⁶³) और मैं तुम्हें उस हस्ती की ओर बुला रहा हूँ जो सब पर ग़ालिब और क्षमा करने वाली है। ⁶⁴

تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللَّهِ وَأُشْرِكَ بِهِ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَأَنَا أَدْعُوكُمُ إِلَى الْعَزِيزِ الْغَفَّارِ ۝

43. यह अटल हक़ीक़त है कि जिन (पूज्यों) की तरफ़ तुम मुझे बुला रहे हो वे न दुनिया में इस बात के अधिकारी हैं कि उन्हें पुकारा जाए और न आखिरत में। ⁶⁵ हम सब की वापसी अल्लाह ही की तरफ़ है और जो हद से गुज़रने वाले हैं ⁶⁶ वे जहन्नम में जाने वाले हैं।

لَا جَرَمَ أَنَّا تَدْعُونَنِي إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْآخِرَةِ وَأَن مَّوَدَّنَا إِلَى اللَّهِ وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۝

44. तो जल्द ही तुम याद करोगे उन बातों को जो मैं तुम से कह रहा हूँ ⁶⁷ और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ। ⁶⁸ वह अपने बन्दों को देख रहा है।

فَسَتَذْكُرُونَ مَا أَقُولُ لَكُمْ وَأَفَؤُصُّ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۝

45. तो अल्लाह ने उस को उन की बुरी चालों से बचा लिया ⁶⁹ और फिर औन वालों को बुरे अज़ाब ने अपनी लपेट में ले लिया। ⁷⁰

فَوَقَّعَهُ اللَّهُ سَيِّئَاتٍ مَا مَكَرُوا وَحَاقَ بِآلِ فِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ ۝

61. साहसी मोमिन पुरुष ने फ़िरऔन के दरबार में सत्यव्यक्ति करने पर संतोष नहीं किया बल्कि अपनी क्रौम के पास आ कर लोगों के सामने सत्य को स्वीकार करने का आहवान किया।

62. साहसी मोमिन पुरुष की वह निमंत्रणा और उस की यह दअवत कितनी सादा और दिल में उतर जाने वाली थी। उस ने अपनी दर्द भरी आवाज़ में जाति के सामने आखिरत को पेश किया कि प्रत्येक व्यक्ति को सब से पहले अपनी आखिरत के बचाव की चिन्ता करनी चाहिए।

63. अर्थात् जब मेरे ज्ञान और मेरी जानकारी में यह बात नहीं है कि अल्लाह का कोई शरीक (Partner) है तो क्या मात्र तुम्हारे कहने पर बिना तर्क और प्रमाण के मान लूँ?

साहसी मोमिन पुरुष के इस बयान से स्पष्ट होता है कि फ़िरऔन की जाति शिर्क में लिप्त थी और देवी देवताओं की पूजा करने वाली थी।

64. अर्थात् मैं तुम्हें उस पूज्य को मान लेने की निमंत्रणा दे रहा हूँ जो बड़ा ही प्रतापी और महान है और सब को अपनी पकड़ में लिए हुए है। साथ ही वह अपने बन्दों पर ऐसा मेहरबान है कि यदि वे ग़लत रवैये से बाज़ आ जाए तो वह उन के प्रायश्चित्त को स्वीकार करता है और उन्हें क्षमा कर देता है।

65. अर्थात् तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों को हाजतों को पूरा करने तथा फ़रियादों को सुनाने के लिए पुकारना एक निरर्थक बात है क्योंकि ये न तुम्हारी पुकार सुनते हैं और न तुम्हारी आवश्यकताओं को पूरी कर सकते हैं और न ही आखिरत में तुम्हारे लिए सिफ़ारिश कर सकेंगे।

66. इस की व्याख्या नोट ४७ में गुज़र चुकी।

67. अर्थात् क्रियामत के दिन तुम पछताओगे कि हम ने उस व्यक्ति की बात क्यों नहीं मानी जो हमें अल्लाह पर ईमान लाने और आखिरत के अज़ाब से बचने की दअवत दे रहा था। जो लोग भी सत्य की ओर बुलाने वालों की बातों पर ध्यान नहीं देते वे क्रियामत के दिन याद करेंगे कि फ़लाँ व्यक्ति हमें नसीहत कर रहा था किन्तु अफ़सोस कि हम ने उस की नसीहत स्वीकार नहीं की।

68. अर्थात् यदि फ़िरऔन मुझे सत्य कहने का कोई दण्ड देना चाहता है या समूची जाति मुझे कोई कष्ट पहुँचाना चाहती है तो मुझे इस की परवाह नहीं। मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया वह मुझे कामयाबी की मन्ज़िल पर पहुँचाएगा।

69. अर्थात् ये ज़ालिम उस साहसी मोमिन पुरुष का कुछ बिगाड़ न सके। उस ने अपने को अल्लाह के हवाले किया था। अल्लाह ने उन के फ़ितने से उसे सुरक्षित रखा।

सामान्य रूप से सत्य की ओर बुलाने के काम में भय और आशंकाएँ महसूस होती हैं किन्तु यदि आहवानकर्ता खतरों की परवाह नहीं करता और अल्लाह पर भरोसा कर के सत्य की निमंत्रणा सब के सामने रखता है तो ये भय और आशंकाएँ ग़लत साबित हो जाते हैं। और कष्ट तभी पहुँचता है जब कि अल्लाह ने लिख दिया हो।

70. अर्थात् जब परिणाम प्रकट होने का समय आया तो अल्लाह के अज़ाब की लपेट में फ़िरऔन और उस के इशारों पर चलने वाले लोग ही आ गए। ईमान वाले उस से बिलकुल सुरक्षित रहे।



46. वह आग है जिस पर वे सुबह और शाम पेश किये जाते हैं, और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी आदेश होगा कि फिरौन वालों को कठोरतम अज़ाब में दाख़िल करो।⁷¹

النَّارِ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ۖ ۞

47. और जब वे जहन्नम में एक दूसरे से झगड़ रहे होंगे तो जो लोग कमज़ोर थे वे उन लोगों से जो बड़े बन कर रहे थे कहेंगे कि हम तुम्हारे आज्ञापालक (अधीन) थे तो क्या तुम जहन्नम की यातना का एक हिस्सा हम से दूर करोगे?

وَإِذْ يَتَحَفَّضُونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضُّعْفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُعْتَنُونَ عَنَّا نَصِيبًا مِنَ النَّارِ ۖ ۞

48. जो बड़े बन कर रहे थे कहेंगे हम सब ही इस में हैं और अल्लाह अपने बन्दों के बीच फैसला कर चुका है।⁷²

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ فِيهَا إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ۖ ۞

49. और आग में पड़े हुए लोग जहन्नम की निगरानी करने वालों से कहेंगे अपने रब से दुआ करो कि हमारी यातना (अज़ाब) में एक दिन की कमी कर दे।

وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِنَ الْعَذَابِ ۖ ۞

50. वे कहेंगे क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल स्पष्ट दलीलें ले कर नहीं आते रहे ? वे उत्तर देंगे ज़रूर आते रहे। वे कहेंगे तो अब तुम ही दुआ करो।⁷³ और काफ़िरों की दुआ बिलकुल अकारत जाएगी।⁷⁴

قَالُوا أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمُ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا بَلَىٰ قَالُوا فَاذْعُوا وَمَا دَعَا الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۖ ۞

51. हम अपने रसूलों की और ईमान लाने वालों की दुनिया की ज़िन्दगी में भी मदद करते हैं⁷⁵ और उस रोज़ भी करेंगे जब गवाह खड़े होंगे।⁷⁶

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ۖ ۞

52. जिस दिन ज़ालिमों के लिए उन की (क्षमा हेतु) सफ़ाई प्रस्तुत करना बेलाभ होगा,⁷⁷ उन पर लानत होगी और उन के लिए बुरा ठिकाना होगा।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظَّالِمِينَ مَعَذَرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۖ ۞

53. हम ने मूसा को हिदायत प्रदान की और बनी इस्राईल को किताब का वारिस बनाया।⁷⁸

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَىٰ وَأَوْرَثْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ الْكِتَابَ ۖ ۞

54. जो रहनुमाई और याददेहानी थी बुद्धिमानों के लिए।

هُدًى وَذِكْرَىٰ لِأُولَى الْأَلْبَابِ ۖ ۞

71. इस आयत में फ़िरऔन वालों के लिए दो अज़ाबों का वर्णन हुआ है। एक वह जो उन्हें सुबह और शाम दिया जा रहा है और दूसरा वह जो उन्हें क़ियामत के दिन दिया जाएगा। पहला अज़ाब आलमे-बर्ज़ख़ (यमलोक) में उन की रूहों को दिया जा रहा है और वह आग का अज़ाब है। रहा दूसरा अज़ाब तो क़ियामत के दिन जब वे ज़िन्दा कर दिय जाएंगे तो आत्मा (रूह) और शरीर दोनों को अज़ाब का मज़ा चखना होगा। यह अज़ाब (यातना) आलमे-बर्ज़ख़ के अज़ाब से कहीं अधिक तीव्र और कठोर होगा।

सुबह और शाम से तात्पर्य आलमे-बर्ज़ख़ के सुबह और शाम हैं और मुहावरे में सुबह और शाम के शब्द नित्य और अनंत के अर्थ में भी प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण स्वरूप सूरह मरयम आयत ६२ में बयान हुआ है जन्नत वालों को उन का रिज़क़ सुबह और शाम मिलेगा और फ़िरऔन वालों में फ़िरऔन तथा उस का अत्याचारी परिवार जो शासक था, उस का ताग़ूती लश्कर और उस के पीछे चलने वाले सब शामिल हैं।

इस आयत से और कुर्आन की दूसरी असंख्य आयतों से यह बात साबित होती है कि आलमे-बर्ज़ख़ में काफ़िरों की रूहों को अज़ाब दिया जाता है। मिसाल के तौर पर सूरह अन्फ़ाल में है :-

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلَائِكَةُ
يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَذْبَارَهُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ
الْحَرِيقِ۔ (انفال- ५०)

अर्थ :- “और यदि तुम उस हालत को देख सकते जब फ़रिश्ते काफ़िरों की रूहों को क़ब्र करते हैं, वे उन के चेहरों और उन की पीठों पर चोटें लगाते हैं और कहते हैं चखो जलने के अज़ाब का मज़ा।” (अन्फ़ाल - ५०)

जब कि मरने वाले के शरीर पर हम यातना के कोई चिन्ह नहीं देखते। इसी को हदीस में क़ब्र का अज़ाब कहा गया है। किन्तु शाब्दिक बहसों में उलझ कर लोग क़ब्र के अज़ाब का इन्कार करते हैं। वे कहते हैं कि यह कुर्आन से साबित नहीं है। हालाँकि कुर्आन से आलमे-बर्ज़ख़ का अज़ाब साबित है और हदीस में इस को क़ब्र का अज़ाब इस लिए कहा गया है कि क़ब्र को देख कर इन्सान का मस्तिष्क आसानी से आलमे-बर्ज़ख़ की तरफ़ परिवर्तित हो जाता है और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से क़ब्र इबरत हासिल करने की जगह है।

क़ब्र के अज़ाब का यह मतलब नहीं कि क़ब्र में जो शरीर दफ़न किया गया है उस पर अज़ाब हो रहा है क्योंकि शरीर तो सड़ गल कर समाप्त हो जाता है। फिर जो लोग समुद्र में डूब

जाते हैं उन को मछलियाँ खा लेती हैं और उन की क़ब्र नहीं बनती। फ़िरऔन का लश्कर भी समुद्र में डूब गया था और उन लोगों की भी क़ब्र नहीं बनी लेकिन कुर्आन कहता है कि सुबह और शाम उन पर अज़ाब हो रहा है। इसी प्रकार जिन मुर्दों को जलाया जाता है उन की भी क़ब्रें नहीं बनती तो क्या वे क़ब्र की यातना से मुक्त हो गए? इन सब बातों का जवाब इस के सिवा कुछ नहीं कि अज़ाब आत्माओं पर होता है न कि मुर्दा शरीर पर और यह आलमे-बर्ज़ख़ (यमलोक) में होता है चाहे किसी की क़ब्र बनी हो या न बनी हो। हदीस में आता है:-

عَنْ إِبْنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا مَاتَ الرَّجُلُ عُرِضَ عَلَيْهِ مَقْعَدُهُ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ إِنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَالْجَنَّةُ وَإِنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَالنَّارُ۔ قَالَ ثُمَّ يُقَالُ هَذَا مَقْعَدُكَ
الَّذِي تُبْعَثُ إِلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ۔ (مسلم کتاب التوبه، بخاری کتاب التوبه)

अर्थ: “हज़रत इब्ने उमर का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :- आदमी जब मर जाता है तो उस को सुबह और शाम उस का ठिकाना दिखाया जाता है। अगर वह जन्नती है तो जन्नत की झलक दिखाई जाती है और अगर जहन्नमी है तो जहन्नम की झलक, फिर उस से कहा जाता है कि क़ियामत के दिन यही तेरा ठिकाना होगा।

(मुस्लिम किताबुततौबा, बुखारी किताबुज्जुहद)

और कई हदीसों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह दुआ बयान हुई है

وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ۔ (بخاری کتاب الدعوات)

अर्थ: “और मैं क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह माँगता हूँ।” (बुखारी किताबुद्दावात) अल्लामा इब्ने कसीर उक्त आयतों की व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं।

“उन की रूहें सुबह और शाम आग पर पेश की जाती हैं और यह सिलसिला क़ियामत तक जारी रहेगा। फिर जब क़ियामत का दिन होगा तो उन की रूहें उन के शरीर के साथ आग में दाखिल होंगी। इसी लिए फ़रमाया :-

يَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ۔ (تفسير ابن كثير ج ३ ص ८१)

“ऐसी यातना जो दुखदायिनी होने की दृष्टि से कठोरतम और सज़ा की दृष्टि से बड़ कर हो और यह आयत बहुत बड़ी

बुनियाद है उस विवेचन की जो अहले-सुन्नत क़ब्र में बर्ज़ख़ की यातना के बारे में करते हैं।” (तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द ४ पृष्ठ ८१)

यह समझना भी सही नहीं कि आयत में आग के सामने फ़िरऔन वालों को पेश करने का जो वर्णन हुआ है तो उस का लाज़मी मतलब अज़ाब नहीं है। अगर यह बात सही हो तो फिर सुबह और शाम आग पर पेश करने का क्या मतलब होगा? अगर यह मान लें कि उन्हें आग के सामने केवल पेश किया जा रहा हो और आग में उन्हें डाला न गया हो तब भी आग की यातना तो उन को पहुँचने ही वाली है और यह भी अज़ाब ही की एक सूरत हुई। हालाँकि अरबी मुहावरे के लिहाज़ से आग के सामने पेश करने का मतलब आग में जलाना ही है अतः कश्शाफ़ के टीकाकार ने इस का यही भावार्थ बयान किया है :-

وعرضهم عليها احراقهم بها - يقال عرض الامام

الاسارى على السيف اذا قتلهم - (تفسير كشاف ج ३

ص २३०)

अर्थ :- उन को आग पर पेश करने का मतलब आग से उन को जलाना है। कहा जाता है कि इमाम ने क़ैदियों को तलवार पर पेश किया जब कि उस ने उन को क़त्ल कर दिया हो” (तफ़सीर कश्शाफ़ जिल्द ३ पृष्ठ ३०)

रहा यह प्रश्न कि हिसाब से पहले अज़ाब कैसा तो इस का जवाब सूरह जुमर नोट ६० में गुज़र चुका। इस अवसर पर यह नोट भी सामने रहे।

72. बड़े बनने वालों से मुराद वे धार्मिक पेशवा और लीडर हैं जो स्वयं गुमराह थे और धारणाओं और कर्मों के प्रति लोगों की ग़लत रहनुमाई करते रहे। और कमज़ोर लोगों से मुराद उन के दबाव में आ कर उन के अधीन चलने वाले लोग हैं। ये लोग अपने पेशवाओं और लीडरों से जहन्नम में झगड़ेंगे कि तुम्हारे पीछे चल कर हम जहन्नम में पहुँच गए अब तुम हमारी यातना का कम से कम एक ही हिस्सा दूर कर दो ! वे जवाब देंगे कि हम स्वयं जहन्नम में सज़ा भुगत रहे हैं, तुम्हारी सज़ा को हम क्या दूर कर सकते हैं और अल्लाह हमारे लिए अनन्त यातना का निर्णय कर चुका है। इस प्रकार वे अपनी बेबसी का इज़हार करेंगे। कुर्आन उन की बेबसी को दुनिया ही में लोगों के सामने पेश कर रहा है, ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी ज़िम्मेदारी महसूस करे और गुमराह पेशवाओं एवं लीडरों का अंधानुकरण न करे।

73. जहन्नम में निरंतर काफ़िरों को अज़ाब भुगतना होगा

कोई अवकाश और कोई अन्तराल नहीं होगा जिस में वे इत्मीनान का साँस ले सकें, इस लिए वे जहन्नम के कार्यकर्ता फ़रिश्तों से कहेंगे कि वे अपने रब से दुआ करें कि वे कम से कम एक दिन के लिए उन के अज़ाब में कमी कर दे। मगर फ़रिश्तों की तरफ़ से उन को निराशाजनक जवाब मिलेगा। वे यह कह कर सिफ़ारिश करने पर अपनी विवशता प्रकट करेंगे कि रसूलों ने तुम्हारे सामने तर्क और हुज्जत पेश कर दी थी मगर तुम काफ़िर बने रहे और काफ़िरों के लिए कोई सिफ़ारिश नहीं की जा सकती। अतः अब तुम ही प्रार्थना करो।

74. अर्थात् ये काफ़िर जो दुआ भी करेंगे उस की कोई सुनवाई नहीं होगी।

75. अल्लाह तआला हमेशा काफ़िरों के मुकाबले में रसूलों और ईमान वालों की मदद करता रहा है जिस का स्पष्ट उदाहरण, हज़रत मूसा, हज़रत हारून और बनी इस्राईल का फ़िरऔन के शिकंजे से सलामती के साथ निकल जाना और सुरक्षा रूप से समुद्र को पार कर जाना है जब कि फ़िरऔन अपने लश्कर सहित समुद्र में डूब गया। अल्लाह की मदद रसूलों और उन के साथी ईमान वालों के पक्ष में विभिन्न रूपों में ज़ाहिर होती रही है, नूह, हूद स्वालेह अलैहिमुस्सलाम और अन्य कितने ही रसूलों को और उन पर ईमान लाने वालों को उस अज़ाब से बचा लिया गया जो उन की जातियों पर कुफ़्र के चलते आया और जिस ने उन को विनष्ट कर के रख दिया। उस के बाद ज़मीन में सत्ताधिकार ईमान वालों ही को प्राप्त हुआ। इसी प्रकार अल्लाह की मदद तलवार के रूप में भी ज़ाहिर हुई है। अतः हज़रत दाऊद ने जालूत को क़त्ल कर के उस की काफ़िर जाति पर विजय प्राप्त कर ली। हज़रत सुलैमान को कितनी ही काफ़िर जातियों पर विजय और प्रभुत्व प्राप्त हुआ और उन को ऐसा राज्य प्रदान हुआ जिस का कोई उदाहरण नहीं। इस आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप पर ईमान लाने वालों के लिए अल्लाह की सहायता की जो खुशख़बरी निहित है वह कुछ ही वर्ष बाद बद्र की जंग के मौक़े पर बिलकुल ज़ाहिर हो गई और फिर मक्का विजय ने इस का अतिरिक्त प्रमाण प्रस्तुत किया यहाँ तक कि पूरा अरब आप के अधीनस्थ हो गया।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में भी कोई ग़लतफ़हमी नहीं होनी चाहिए। वह अल्लाह की सहायता ही थी जिस ने उन को दुश्मनों के चंगुल से निकाल कर सही सलामत आसमान पर उठाया और दुश्मनों की साजिशें धरी की धरी रह गईं उन के अनुयायियों के लिए यद्यपि आजमाइशों का सिलसिला ज़रा लंबा खिंचा किन्तु उन की दअवत फैलती चली गई। उन के दुश्मन यहूदियों का ज़ोर अल्लाह ने रोमियों के द्वारा तोड़ा और अंततः हज़रत ईसा के अनुयायियों को ही विजय और प्रभुत्व

प्राप्त हुआ ।

76. अर्थात् क्रियामत के दिन जब कि अल्लाह की अदालत लगेगी और रसूल अपनी काफ़िर जातियों के विरुद्ध गवाही देने के लिए खड़े होंगे उस समय अल्लाह की सहायता पूरी तरह ईमान वालों के पक्ष में ज़ाहिर होगी, उन का रवैया उन का विचार ही सही ठहराया जाएगा और वे उस अदालत से

कामयाब हो कर बाहर निकलेगें ।

77. ज़ालिमों से मुराद काफ़िर हैं जो सत्य और न्याय से विमुखता बरत कर अपनी जानों पर स्वयं जुल्म करते रहे, उन की कोई बहानेबाज़ी वहाँ नहीं चलेगी इस लिए कि उन पर अल्लाह की हुज्जत क़ायम हो चुकी थी।

78. अर्थात् तौरात का वारिस बनाया।



55. तो सब करो। अल्लाह का वादा सच्चा है, और अपने कुसूरों के लिए क्षमायाचना करो ⁷⁹ और सुबह और शाम पाकी बयान करो अपने रब की प्रशंसा के साथ।

فَاَصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لَدُنْكَ وَسَبِّحْ
بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْاَبْكَارِ ⑤

56. जो लोग अल्लाह की आयतों में किसी प्रमाण के बगैर जो उन के पास आई हो बहसें खड़ी करते हैं उन के दिलों में अहं भरा हुआ है परन्तु वे उस बड़ाई को पहुँचने वाले नहीं हैं। ⁸⁰ तो तुम अल्लाह की पनाह माँगो। ⁸¹ निस्संदेह वह सब कुछ देखने वाला और सब कुछ सुनने वाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَجَادِلُوْنَ فِيْ اٰيَاتِ اللّٰهِ بَعِيْرُ سُلْطٰنٍ
اَتٰهُمْ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمُ الْاَكْبَرُ مَا هُمْ بِبَالِغِيْهِ
فَاَسْتَعِذْ بِاللّٰهِ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيْرُ ⑥

57. आसमानों और ज़मीन का पैदा करना इन्सानों के पैदा करने से अधिक बड़ा काम है किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। ⁸²

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْاَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ⑦

58. अंधा और दृष्टिवान समान नहीं हो सकते ⁸³ और न वे लोग जो ईमान लाए और नेक अमल किया बद अमल लोगों के बराबर हो सकते हैं। परन्तु तुम लोग कम ही समझते हो।

وَمَا يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
وَالَاٰلِْسُنٰى قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ⑧

59. क्रियामत की घड़ी निस्संदेह आने वाली है इस में कोई शक नहीं किन्तु अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते।

اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيْهَا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ⑨

60. तुम्हारा रब फ़रमाता है मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी दुआएँ कुबूल करूँगा। जो लोग मेरी इबादत से सरकशी ⁸⁴ करते हैं वे अवश्य अपमानित हो कर जहन्नम में दाखिल होंगे।

وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُوْنِىْ اَسْتَجِبْ لَكُمْ اِنَّ الَّذِيْنَ
يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِىْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دُخُوْرًا ⑩

61. वह अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उस में सुकून प्राप्त करो। और दिन को रौशन बनाया। ⁸⁵ अल्लाह लोगों पर बड़ा मेहरबान है परन्तु अधिकतर लोग शुक्र नहीं करते।

اللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمْ اٰیٰتٍ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ
مُبْصِرًا اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلٰى النَّاسِ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ⑪

62. वही अल्लाह तुम्हारा रब है। ⁸⁶ प्रत्येक वस्तु का सृष्टा। उस के सिवा कोई पूज्य नहीं। फिर तुम किधर बहकाए जाते हो। ⁸⁷

ذٰلِكُمْ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَّا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
فَاَنْتُمْ تُؤْفَكُوْنَ ⑫

79. रसूल भी अल्लाह का बन्दा होता है और एक बन्दे के शान की बात यही है कि वह अपने को तुच्छ और दोषी समझे तथा अपने कुसूरों के लिए क्षमा का इच्छुक हो चाहे उस के कुसूर उस के ज्ञान में हों या न हों। इस से बन्दा होने और बन्दगी का एहसास उभरता है और बन्दा अल्लाह की रहमत का और अधिक अधिकारी हो जाता है। इस लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिदायत हुई कि आप अपने कुसूरों की अल्लाह से माफी चाहें और आप के माध्यम से यही शिक्षा ईमान वालों को दी गई।

एक नबी जान बूझ कर गुनाह नहीं करता। वह तो लोगों के लिए अपने अमल से आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है। अमानत, सच्चाई, परहेजगारी, ईश-भय और चरित्र की पवित्रता नुबुव्वत के अनिवार्य सदगुण हैं जिसे परिभाषिक शब्द में नबी की इस्मत कहा जाता है किन्तु कभी कभी नुबुव्वत के दायित्व को अदा करते हुए मामूली चूक उन से हो जाती है जिस पर अल्लाह की वहय पकड़ करती है और वे तुरंत सतर्क हो जाते हैं। ऐसी ही कुछ चूक जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हुई थी उन पर कुर्आन में पकड़ की गई है। इन के अतिरिक्त यदि आप से कोई कुसूर हुआ था तो वह आप के और आप के रब के बीच का मामला है। हमें न इस का ज्ञान है और न इस बहस में पड़ने का कोई लाभ।

कुछ मुफस्सिरीन ने “अपने कुसूरों के लिए क्षमा याचना करो” का यह अर्थ बताया है कि यह आदेश वास्तव में आप के माध्यम से आप की उम्मत को दिया गया है परन्तु यह अर्थ इस दृष्टि से सही नहीं कि सूरह मुहम्मद में स्पष्ट रूप से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने और ईमान वालों के कुसूरों के लिए क्षमा याचना करने की हिदायत की गई है।

وَأَسْتَغْفِرُ لَدُنْكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ (حम: १९)

अर्थ :- “और अपने कुसूरों के लिए और मोमिन मर्दों और औरतों के लिए क्षमा याचना करो।”

80. होना तो यह चाहिए कि इन्सान के सामने जब उस के रब का कोई आदेश आ जाए तो वह उस के समक्ष आत्म समर्पण कर दे किन्तु जो लोग अहं अथवा अपनी बड़ाई के घमण्ड में लिप्त रहते हैं वे व्यर्थ की कटहुज्जती करने लगते हैं परन्तु उन को वह बड़ाई कदापि प्राप्त होने वाली नहीं जिस के सपने वे देख रहे हैं। उन को अतिशीघ्र अपमान का सामना करना पड़ेगा।

81. अर्थात् ऐसे लोगों के फितने से तुम अल्लाह की पनाह माँगो।

82. अर्थात् जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया

उस के लिए इन्सान को दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है। परन्तु अधिकतर लोग इतनी स्पष्ट बात भी नहीं समझते।

आधुनिक युग में विज्ञान ने ब्रह्माण्ड के बारे में आश्चर्यजनक रहस्योद्घाटन किये हैं। इन रहस्यमयी खोजों को देखते हुए ब्रह्माण्ड की विशालता का अंदाज़ा लगाना मुश्किल है। क्यों कि हम अपनी आकाश गंगा (Godaxy) में असंख्य सितारों को देखते हैं। और ऐसी कई आकाश गंगाएँ कितनी ही प्रकाश वर्ष की दूरी पर स्थित हैं। तो जिस हस्ती ने इतना विशाल ब्रह्माण्ड पैदा किया और इस को एक अत्यंत सुदृढ़ नियम में बाँध दिया, उस के सामर्थ्य से कोई बात भी असंभव नहीं। वह मुर्दा इन्सानों को भी उठा खड़ा कर सकता है और इस कायनात को नया स्वरूप भी प्रदान कर सकता है।

83. अंधा वह जो वास्तविकता को देख नहीं पाता और दृष्टिवान वह जो वास्तविकता को देख रहा है। दोनों की दशा समान कैसे हो सकती है?

84. दुआ का अर्थ पुकारने के हैं और विनती करने के भी। और दोनों ही यहाँ अभिप्रेत हैं। पुकारा भी जाये अल्लाह ही को और विनती भी की जाए अल्लाह ही से क्यों कि पुकार को सुनने वाला भी वही है और विनती एवं निवेदन को स्वीकार करने वाला भी वही।

यह आयत और भी पुष्टि करती है कि यह पुकारना और दुआएँ करना इबादत है, अतः यह बातें अल्लाह के लिए ख़ास होनी चाहिए। और यदि किसी और को इस तरह पुकारा गया जिस तरह अल्लाह को पुकारा जाता है या किसी अन्य से दुआएँ माँगी गईं तो वह उस की इबादत होगी और अल्लाह की इबादत से खुली बगावत होगी। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस आयत से तर्क प्रस्तुत करते हुए दुआ को इबादत की संज्ञा दी है।
الدُّعَا هُوَ الْعِبَادَةُ

अर्थ : “दुआ इबादत ही है।” (तिर्मिज़ी किताबुत्तप्सीर)

इस लिए जबान पर या अल्लाह, या रहमान, या रहीम जैसे कलिमात होने चाहिए किन्तु मौजूदा दौर के मुसलमानों में ऐसे लोगों की कमी नहीं जो या अली, या ग़ौस और या ख़्वाजा की रट लगाते हैं और शिर्क के अपराधी होते हैं। (अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रः नोट २४७, २४८)

85. ताकि दिन की रौशनी में दौड़ धूप कर सको।

86. अर्थात् जिस ने तुम्हारी परवरिश का यह सामान किया है वही तुम्हारा मालिक है।

87. अर्थात् जो सृष्टा और स्वामी है वही इस बात का अधिकारी है कि उस की इबादत की जाए। मगर तुम शैतान के बहकावे में आ कर इतनी स्पष्ट सच्चाई से भी विमुखता बरतते हो।

63. इसी प्रकार वे लोग भी बहकाए जाते रहे हैं जो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे।⁸⁸

64. वह अल्लाह ही है जिस ने ज़मीन को तुम्हारे लिए ठहरने की जगह⁸⁹ और आसमानों को छत बनाया⁹⁰ और तुम्हारे स्वरूप को बनाया तो अच्छे रूप बनाए।⁹¹ और तुम्हें पाकीजा चीज़ों का रिज़क़ दिया।⁹² वही अल्लाह तुम्हारा रब है। तो बड़ा ही बरकत वाला है अल्लाह रब्बुल आलमीन।

65. वही ज़िन्दा है।⁹³ उस के सिवा कोई पूज्य नहीं अतः उसी को पुकारो बन्दगी को उस के लिए ख़ालिस करते हुए। प्रशंसा सारे जहान के रब अल्लाह (रब्बुल आलमीन) के ही लिए है।

66. कहो मुझे इस बात से मना कर दिया गया है कि मैं उन की इबादत करूँ जिन को तुम अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हो जब कि मेरे पास मेरे रब की तरफ़ से स्पष्ट दलीलें आ चुकी हैं। मुझे आदेश दिया गया है कि मैं अपने को सारे जहान के रब अल्लाह (रब्बुल आलमीन) के हवाले कर दूँ।⁹⁴

67. वही है जिस ने तुम को मिट्टी से पैदा किया,⁹⁵ फिर वीर्य से,⁹⁶ फिर जमे हुए ख़ून से।⁹⁷ फिर वह तुम्हें बच्चे के रूप में बाहर लाता है,⁹⁸ फिर वह तुम्हें परवान चढ़ाता है ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो, फिर वह तुम्हें उमर (आयु) देता है कि तुम बुढ़ापे को पहुँचो⁹⁹ और तुम में से कुछ को इस से पहले ही मौत दी जाती है।¹⁰⁰ और यह इस लिए होता है कि तुम नियत समय को पहुँच जाओ¹⁰¹ और इस लिए कि तुम समझो।¹⁰²

68. वही जीवन प्रदान करता है और वही मौत देता है जब वह किसी काम का फ़ैसला कर लेता है तो बस आदेश देता है कि हो जा और वह हो जाता है।

69. तुम ने उन लोगों को देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं¹⁰³ उन्हें कहाँ फेरा जा रहा है ?¹⁰⁴

كَذَلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ

اللّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٩٣﴾

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً
وَصَوَّرَكُمُ فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ وَرَزَقَكُم مِّنَ
الطَّيِّبَاتِ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَتَبَرَّكُوا لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٩٤﴾

هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٩٥﴾

قُلْ إِنِّي نُهُيْتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِي الْبَيِّنَاتُ مِنْ رَبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ
أُسَلِّمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٩٦﴾

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ
ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِيَبْلُغُوا أَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا
وَمِنْكُمْ مَنْ يُتَوَفَّى مِنْ قَبْلُ وَلِيَبْلُغُوا أَجَلَ مُسَمًّى وَلَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ﴿٩٧﴾

هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ
كُنْ فَيَكُونُ ﴿٩٨﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ الَّتِي يُصَرِّفُونَ ﴿٩٩﴾

88. तात्पर्य गुजरी हुई काफ़िर क्रौमें (जातियाँ) हैं।
89. अर्थात् ज़मीन को इस काबिल बनाया कि उन में जुंबिश न हो और तुम इस पर आसानी से चल फिर सको और चैन के साथ रहो बसो।
90. आसमान के सिलसिले में देखिए सूरह इन्शिकाक़ नोट १
91. अर्थात् अन्य प्राणधारी सृष्टियों के मुक्राबले में मनुष्य को उत्तम रूप प्रदान किया।
92. जानवरों को कैसी घटिया चीज़ें खाने को मिलती हैं और कुछ जानदार तो गन्दगी ही में पलते हैं किन्तु इन्सान को कैसे साफ़ सुथरे पवित्र आहार मिलते हैं। यह अल्लाह का इन्सान पर कितना बड़ा एहसान है।
93. अर्थात् वही एक है जो हमेशा ज़िन्दा है और हमेशा ज़िन्दा रहेगा। रही उस की सृष्टि तो उस को जो जीवन मिला है उसी के प्रदान करने से मिला है।
94. अपने को अल्लाह के हवाले करने का मतलब यह है कि आदमी पूरे विवेक के साथ यह फैसला करे की मुझे अल्लाह के आज्ञानुपालक बन कर रहना और उस का पूरी तरह अनुपालन करना है। जो व्यक्ति सोच समझ कर यह फैसला करता है वह अल्लाह की, और केवल अल्लाह की इबादत करता है। क्योंकि जब अल्लाह ने किसी और की इबादत करने से मना कर दिया है तो वह इतने बड़े गुनाह का काम कैसे कर सकता है। अल्लाह

का अनुपालन और ग़ैरुल्लाह की उपासना दोनों एक साथ जमा नहीं हो सकते।

95. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हज्ज नोट ७
96. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हज्ज नोट ८
97. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हज्ज नोट ९
98. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हज्ज नोट १३
99. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हज्ज नोट १४, १६
100. अर्थात् किसी को जवानी से पहले और किसी को बुढ़ापे से पहले।
101. अर्थात् जिस के लिए जो आयु सुनिश्चित है वह उस को पूरा कर ले। दूसरे शब्दों में आदमी मरता तभी है जब कि वह उस अवधि को पूरा कर चुका हो जो अल्लाह ने उस के ज़िन्दा रहने के लिए नियत कर दी थी।
102. अर्थात् तुम्हें सरंचना के इन चरणों से और इस के बाद बचपन, जवानी और बुढ़ापे से इस लिए गुज़ारा जाता है कि तुम बुद्धि और विवेक से काम लो तथा अपने सृष्टा और प्रभु को पहचानो।
103. अर्थात् अल्लाह के कलाम और उस के आदेश के बारे में उलटी सीधी बहस करते हैं।
104. अर्थात् उन पर शैतान का जादू चल गया है। वे उन्हें सत्य से फेर कर इधर उधर भटका रहा है।



70. उन्होंने ने इस किताब को झुठलाया और उन चीज़ों को भी जो हम ने रसूलों के साथ भेजी थीं 105 अतिशीघ्र वे जान लेंगे। 106

الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَبِمَا أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا
فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿١٠٥﴾

71. जब तौक़ 107 उन की गर्दनो में होंगे और जंजीरें भी। (जिन से) उन को घसीटा जाएगा।

إِذَا الْأَغْلُلُ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلْسِلُ يُسْحَبُونَ ﴿١٠٦﴾

72. खौलते हुए पानी में फिर आग में झोंक दिए जाएंगे।

فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ﴿١٠٧﴾

73. फिर उन से पूछा जाएगा कहाँ हैं वे जिन को तुम साझी ठहराते थे।

ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿١٠٨﴾

74. अल्लाह को छोड़ कर ! वे कहेंगे खोए गए वे हम से बल्कि हम उस से पहले किसी चीज़ को भी नहीं पुकारते थे। 108 इस प्रकार अल्लाह काफ़िरों पर राह गुम कर देगा। 109

مَنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ لَمْ نَكُنْ نَدْعُوا مِنْ
قَبْلُ شَيْئًا كَذَلِكَ يَضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ﴿١٠٩﴾

75. यह इस लिए कि तुम ज़मीन पर नाहक इतराते और अकड़ते रहे। 110

ذَلِكَ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا
كُنْتُمْ تَمْرَحُونَ ﴿١١٠﴾

76. दाखिल हो जाओ, जहन्नम के दरवाज़ों में, इस में हमेशा रहने के लिए। क्या ही बुरा ठिकाना है बड़ाई का घमण्ड करने वालों का।

أَدْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا قَبَسَ مَثْوًى
الْمُتَكِبِّرِينَ ﴿١١١﴾

77. तो (ऐ नबी !) सब्र करो ! अल्लाह का वादा सच्चा है। 111 या तो हम तुम्हें इस (अज़ाब) का कुछ हिस्सा जिस का वादा हम इन से कर रहे हैं, दिखा दें या तुम्हें मौत दें, इन की वापसी तो हमारी ही तरफ़ है। 112

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَإِمَّا نُرَبِّيكَ بِعُصَّ الْذِي
نَعُدُّهُمْ أَوْ تَوَفِّيكَ فَإِنَّا يُرْجَعُونَ ﴿١١٢﴾

78. (ऐ नबी !) हम ने तुम से पहले रसूल भेजे थे जिन में से कुछ के हालात हम तुम्हें सुना चुके हैं और कुछ के हालात नहीं सुनाए। 113 किसी रसूल के भी बस की यह बात न थी कि वह अल्लाह के इज़्ज (मज़ी) के बग़ैर कोई निशानी (मोज़ा) ले आता। 114 जब अल्लाह का हुक्म आ जाएगा तो सत्य के साथ फैसला कर दिया जायेगा और उस समय असत्य को प्रिय रखने वाले तबाही में पड़ेंगे।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ
وَمِنْهُمْ مَنْ لَمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ
بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ فُتِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ
هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ﴿١١٥﴾

105. अर्थात् उन शिक्षाओं को जिन को ले कर रसूल आए थे।

106. अर्थात् वह समय दूर नहीं कि जब उन को मालूम हो जाएगा कि जिस चीज़ को उन्होंने झुठलाया था वह सत्य था।

107. तात्पर्य क्रियामत का दिन है।

108. अर्थात् हम जिन का नाम जपते थे और जिन को अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए पुकारते थे उन का कोई ईश्वरीय अस्तित्व नहीं था। फिर वे बदहवास हो कर इस बात को झुठलाएँगे कि हम सिरे से इन को पुकारते ही नहीं थे। इस प्रकार वे अपने पूज्यों से बिलकुल बेताअल्लुकी का इज़हार करेंगे।

109. अर्थात् बदहवासी में मुत्तिला करेगा।

110. अर्थात् इतना कठोर दण्ड तुम्हें इस लिए दिया जा रहा है कि दुनिया में तुम को जो नेमतें प्राप्त हुई थीं उन पर इतराते रहे जब कि उन के प्राप्त हो जाने पर तुम्हें अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए था। इसी प्रकार तुम अपने घमण्ड और अहं के कारण सत्य का विरोध करते रहे। हालाँकि उस के आगे तुम्हारी गर्दन झुक जाना चाहिए थी।

111. अर्थात् अल्लाह का यह वादा कि रसूल को झुठलाने वाली जाति अंततः अज़ाब में लिप्त होगी।

112. व्याख्या के लिए देखिए सूरह यूनस नोट ७५

स्पष्ट रहे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जाति में से एक बड़ी संख्या धीरे धीरे ईमान ले आई इस लिए उस पर कोई अज़ाब नहीं आया जैसा कि पिछली जातियों पर आया था बल्कि काफ़िरों को ईमान वालों की तलवार के द्वारा ही परास्त किया गया। यहाँ तक कि उन का जोर तोड़ दिया गया।

113. कुर्आन में जिन नबियों का वर्णन नामों के स्पष्टीकरण के साथ हुआ है वे हैं आदम, नूह, हूद, इदरीस, इब्राहीम, लूत, इस्माईल, इस्हाक़, याकूब, यूसुफ़, अय्युब, शुऐब, मूसा, हारून, युनुस, दाऊद, सुलैमान, इलयास, अलयसअ, जुलकिफ़्ल, ज़करिया, यहया, ईसा अलैहिस्सलाम और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। इन नबियों में अच्छी खासी तादाद रसूलों की है। रसूल नबी की बनिसबत ख़ास है। उसे किसी क़ौम की तरफ़

पैग़ाम दे कर भेजा जाता है जब कि नबी पर वहय तो नाज़िल होती है किन्तु उस के सुपुर्द कुछ ख़ास तरह के काम होते हैं। जैसे हज़रत आदम नबी थे जिन का काम अपनी संतानों का मार्ग दर्शन करने की हद तक सीमित था क्योंकि उस समय तक कोई जाति अस्तित्व में नहीं आई थी कि उन की तरफ़ रसूल भेजा जाता। इस प्रकार हज़रत ख़िब्र का जिन के नाम की कोई पुष्टि कुर्आन में नहीं बल्कि हदीस में हुई है उन के नबी होने का काम इस औचित्यपूर्ण जगत के कुछ रहस्यों पर से पर्दा उठाना था। यह भी ध्यान रहे कि प्रत्येक रसूल नबी होता है परन्तु हर नबी परिभाषिक शब्दों में रसूल नहीं होता।

कुर्आन ने अधिकतर उन ही पैग़म्बरों का वर्णन किया है जो अपना एक इतिहास रखते थे और हुज्जत क़ायम रखने के लिए उन ही के हालात बयान करना लाभप्रद हो सकता था। किन्तु कुर्आन पुष्टि करता है कि इन के अलावा भी पैग़म्बर भेजे गए जिन की नियुक्ति विभिन्न कालों और विभिन्न जातियों में हुई। उन समस्त पैग़म्बर पर ईमान लाना ज़रूरी है। रही बात उन की संख्या की तो संख्या का वर्णन न कुर्आन में है और न किसी सही हदीस में। जिन रिवायतों में नबियों और रसूलों की संख्या बयान हुई है उन में से कोई भी प्रमाणिकता की दृष्टि पर पूरी नहीं उतरती। इस सिलसिले की मशहूर रिवायत अबूज़र से है जिस को इब्ने मरदूया ने अपनी तफ़सीर में बयान किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान फ़रनाया एक लाख चौबीस हजार नबी हुए हैं जिन में से तीन सौ तेरह (३१३) रसूल थे। किन्तु इस का एक उल्लेखकर्ता (रावी) हिब्राहीम बिन हिशाम हैं जिस के बारे में परख करने वाले इमामों ने बहुत कुछ कहा और इब्ने जौज़ी ने इस हदीस को गढ़ी हुई हदीसों में शुमार किया है। (देखिए तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द १ पृष्ठ ५८७)

114. यहाँ “आयत” (अर्थात् निशानी) से तात्पर्य मोज़ज़ा है और मोज़ज़ा दिखाना किसी रसूल के बस की बात नहीं है बल्कि जब अल्लाह अपनी हिकमत के अनुसार आवश्यक समझता है तब वह अपने रसूलों के हाथ मोज़ज़े प्रकट करता है।



79. अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए चौपाये पैदा किये कि तुम कुछ को सवारी के काम में लाओ और कुछ तुम्हारे खाने के काम आते हैं।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِتَرْْكَبُوا مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٩﴾

80. इन में तुम्हारे लिए दूसरे लाभ भी हैं ¹¹⁶ और (पैदा इस लिए किये गए हैं) ताकि तुम इन के द्वारा उस आवश्यकता को पूरा करो जो तुम्हारे दिल में हो। ¹¹⁷ तुम्हें उन पर और नौकाओं पर उठाया जाता है। ¹¹⁸

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِي صُودُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٨٠﴾

81. वह अपनी निशानियाँ तुम्हें दिखा रहा है तो तुम अल्लाह की किन किन निशानियों का इन्कार करोगे? ¹¹⁹

وَيُرِيكُمُ الْآيَاتِ فَإِنِّي آيَاتِ اللَّهِ تُنْكِرُونَ ﴿٨١﴾

82. क्या ये लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि देख लेते उन लोगों का क्या अन्जाम हुआ जो इन से पहले गुजरे हैं। ¹²⁰ वे इन से संख्या में अधिक थे और शक्ति में और ज़मीन पर अपने निशान छोड़ने की दृष्टि से बढ़ कर थे परन्तु उन की यह कमाई उन के कुछ काम न आई।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا أَكْثَرُ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا آغَتْ عَنْهُمْ مَالَكُنُ الْإِنْسَانِ أَنْ يَسْأَلُونَ ﴿٨٢﴾

83. जब उन के रसूल उन के पास स्पष्ट दलीलें ले कर आये तो वे उस ज्ञान पर फूले रहे जो उन के पास था ¹²¹ और उस अज़ाब ने उन को घेर लिया जिस का वे मज़ाक़ उड़ाते थे।

فَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولُهُمْ بِبَيِّنَاتٍ مِنْ رَبِّهِمْ وَمِنْ عِلْمٍ وَحَقٍّ بِهِمْ مَالَكُنُ الْإِنْسَانِ أَنْ يَسْتَهْزِئُوا ﴿٨٣﴾

84. जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया तो बोल उठे हम एक अल्लाह पर ईमान लाए और उन का इन्कार करते हैं जिन को हम उस का साड़ी ठहराते थे। ¹²²

فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ﴿٨٤﴾

85. मगर उन का ईमान लाना कुछ भी लाभकारी नहीं हो सकता था जब कि उन्होंने ने हमारे अज़ाब को देख लिया। ¹²³ यही अल्लाह की सुन्नत (नियम) है जो उस के बन्दों में जारी रही है और उस समय काफ़िर तबाह हो कर रहे।

فَلَمْ يَكُنْ يَنْفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا سُنَّتُ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ وَخَسِرَ هُنَاكَ الْكَافِرُونَ ﴿٨٥﴾

115. हुक्म से तात्पर्य निर्णायक व अन्तिम आदेश है।

116. जैसे इन चौपायों से तुम्हें दूध और मखखन प्राप्त होता है। उन का चमड़ा और हड्डियाँ तुम्हारी अनेक आवश्यकताओं को पूरा करती हैं।

117. अर्थात् इन को सवारी, माल ढोने और खेत आदि जोतने के काम में ला सको और यह ऐसी महत्वपूर्ण आवश्यकताएँ हैं जिस को तुम स्वयं अपने अन्दर महसूस करते हो। और यह सच है कि मशीनी दौर से पहले ये सारे काम चौपायों ही से लिया जाता था। ज़मीन जोतने और सिंचाई करने का काम भी चौपायों से लिया जाता था।

118. अर्थात् तुम को चौपाये भी उठाए फिरते हैं और नौकाएँ भी।

119. अर्थात् ये चौपाये जिन से तुम्हारे भाँत भाँत के लाभ जुड़े हैं और ये नौकाएँ जो तुम्हें उठाए फिरती हैं क्या इस बात की निशानी नहीं है कि वे सब तुम्हारी परवरिश का सामान है जो अल्लाह ने किया है। उस की “रबूबिय्यत” तथा पालनहारी की इन स्पष्ट निशानियों को देखते हुए तुम उस के वास्तविक प्रभु और एक मात्र पूज्य होने का किस तरह इन्कार करते हो?

120. इशारा है उन विनष्ट हुई जातियों की तरफ जिन के इतिहास और जिन के चिन्हों एवं पुरातत्वों से इबरत हासिल की जा सकती है।

121. अर्थात् धर्म का जो दोषपूर्ण ज्ञान उन के पास था और सांसारिक ज्ञान और कला में उन को जो निपुणता प्राप्त हो गई थी उस पर वे नाज़ाँ (गर्वान्वित) हो गये तथा उस सच्चे ज्ञान

की क़द्र नहीं की जिस का स्रोत अल्लाह की वह्य है और जिस की शिक्षा समय का रसूल दे रहा है।

आधुनिक युग तो विज्ञान और टेकनोलाजी का युग है और आज का मनुष्य इन भौतिक ज्ञानों और कलाओं ही को सब कुछ समझता है और इस पर गर्व करता है जब कि इस ज्ञान से उन सच्चाईयों पर से परदा नहीं हटता जो नबी द्वारा प्रस्तुत किये गए ज्ञान से खुल कर सामने आती है। जिस ज्ञान को प्रगति का प्रतीक समझा जाता है उस की पहुँच इस दुनिया की परिधि से बाहर नहीं है। इस से न अब तक जीवन लक्ष्य का निर्धारण हो सका है और न यह मालूम हो सका है कि मरने के बाद मनुष्य के साथ क्या मामला पेश आता है। और न ही उस की रूहानी ज़रूरतों को पूरा करता है। अगर इन्सान में यह एहसास जाग उठे तो वह उस ज्ञान की तरफ बड़े जिस से सब गुत्थियाँ सुलझ जाती हैं, और कुर्आन का क़द्रदान बन जाए जो सत्य और ज्ञान का खज़ाना है।

122. अर्थात् जब अल्लाह का अज़ाब आया तो अपने बुतों और देवी देवताओं को भूल गए। उस समय उन्होंने ने अल्लाह के एक मात्र पूज्य और प्रभु होने का इक्कार किया और अपने ठहराए हुए साझियों का इन्कार किया।

123. अर्थात् अज़ाब को देख लेने के बाद मोहलत समाप्त हो जाती है और परीक्षा का समय बाक़ी नहीं रहता इस लिए उस समय ईमान लाना बेक्रार होता है। ईमान वही स्वीकार्य होगा जो अज़ाब को देख लेने से पहले या साधारणता मौत के आने से पहले लाया जाए ।



सूरह
हा मीम अस्सज्दा

४१. सूरह हा मीम-अस्सज्दा

नाम :- इस सूरह की शुरुआत “हा मीम” के अक्षरों से होती है और आयत ३७ में अल्लाह ही को सज्दा करने का हुक्म आया है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “हा मीम अस्सज्दा” है।

नाज़िल होने का समय :- मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह मक्का के मध्य दौर में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- कुर्आन का इन्कार करने वालों को सावधान करना और उस पर ईमान लाने वालों को खुशखबरी देना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ८ में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि कुर्आन की क़द्र पहचानें।

आयत ९ से १८ में इन्कार करने वालों को सोच विचार करने की दअवत दी गई है और अल्लाह की प्रकाशना (वह्य) और रिसालत को झुठलाने के परिणाम स्वरूप आने वाले अज़ाब से आगाह कर दिया है।

आयत १९ से २५ में अल्लाह के दुश्मनों का वह अन्जाम बयान हुआ है जिस से वे क्रियामत के दिन दोचार होंगे।

आयत २६ से २९ में कुर्आन के विरुद्ध हंगामा बरपा करने

वालो को जहन्नम की वर्द सुनाई गई है।

आयत ३० से ३६ में उन लोगों को जन्नत की खुशखबरी दी गई है जो काफ़िरों के इन हंगामों और तमाम विरोधों के बावजूद अपने ईमान पर डटे रहे। साथ ही उन्हें दअवत की राह में विरोधियों से दरगुज़र करने की हिदायत की गई है।

आयत ३७ से ४० में अल्लाह के एक मात्र पूज्य होने और मुर्दों के उठाये जाने पर समर्थ होने की निशानियाँ स्पष्ट की गई हैं।

आयत ४१ से ४६ में स्पष्ट किया गया है कि कुर्आन किस शान की किताब है और इन्कार करने वाले उस के साथ क्या सुलूक कर रहे हैं और इस के क्या परिणाम सामने आएँगे।

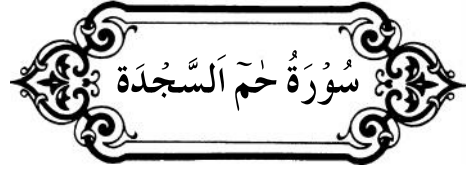
आयत ४७ से ५१ में इन्सान के बहुदेववादी रवैये और क्रियामत का इन्कारी होने पर पकड़ है।

आयत ५२ से ५४ सूरह की अन्तिम आयतें हैं जिन में कुर्आन के बारे में इन्कार करने वालों के संदेहों का उत्तर देते हुए भविष्यवाणी की गई है कि बहुत जल्द इस की सच्चाई की निशानियाँ इन्सान और कायनात में ज़ाहिर होंगी।

४९.सूरह हा मीम अस्सज्दा

आयतें : ५४

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा - मीम ¹।

حَمِّ ١

2. यह रहमान और रहीम की तरफ़ से नाज़िल हुई है।²

تَنْزِيلٌ مِّنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ٢

3. एक ऐसी किताब जिस की आयतें खोल कर बयान की गई हैं।³ अरबी कुआन ⁴ उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं।⁵

كِتَابٌ فَصَّلْتُ آيَاتُهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ٣

4. खुशख़बरी देने वाली और आगाह करने वाली ⁶ मगर इन में से अधिकतर लोगों ने मुँह फेरा, और वे इस को सुनते ही नहीं।

بَشِيرًا وَنَذِيرًا فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ٤

5. कहते हैं जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें बुला रहे हो, हमारे दिल उस की तरफ़ से परदे में है और हमारे कान बहरे हैं और हमारे और तुम्हारे बीच एक परदा ओट है, तो तुम अपना काम करो हम अपना काम करते रहेंगे।⁷

وَقَالُوا قُلُوبُنَا فِي الْكَفَّةِ مِمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ وَفِي آذَانِنَا وَقْرٌ
وَمِنْ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَأَعْمَلْ إِنَّا خَائِفُونَ ٥

6. कहो मैं तो तुम्हारी ही तरह एक मनुष्य (बशर) हूँ। मेरी तरफ़ वह्य की जाती है कि तुम्हारा इलाह (पूज्य) एक ही इलाह है।⁸ तो तुम सीधे उसी का रुख करो ⁹ और उस से माफ़ी चाहो।¹⁰ तबाही है बहुदेववादियों के लिए।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُ الْكَافِرِينَ وَاحِدٌ
فَاسْتَقِيمُوا إِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوا ۚ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِينَ ٦

7. जो ज़कात नहीं देते ¹¹ और आख़िरत का इन्कार करते हैं।

الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ٧

8. अलबत्ता जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उन के लिए ऐसा बदला है जो कभी समाप्त होने वाला नहीं।¹²

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ٨

1. इन अक्षरों की व्याख्या सूरह मोमिन नोट १ में गुजर चुकी।

इस सूरह में अल्लाह के हकीम (तत्वदर्शी) होने की विशेषता आयत ४२ में बयान हुई है जिस की ओर ये अक्षर इशारा करते हैं।

2. अल्लाह जिस की छत्र छाया में इन्सान परवरिश पा रहा है और जो अपने सच्चे बन्दों को अपनी खास दया से सुशोभित करता है, उस की रहमत इस किताब को उतारने का कारण हुई है। इस लिए यह किताब सरासर रहमत है।

3. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट ३

4. कुर्आन के पहले संबोधी अरबवासी थे इस लिए कुर्आन अरबी भाषा में नाज़िल किया गया। दूसरी जातियों के लिए अप्रत्यक्ष हुज्जत (तर्क) है। यह मतलब नहीं है कि अरबी में होने के कारण केवल अरबों पर हुज्जत क़ायम होती है और दूसरों पर नहीं। कैसर और किसरा (रोम और ईरान के शासकों) की भाषा अरबी नहीं थी किन्तु उन पर कुर्आन के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से उन पर हुज्जत क़ायम की गई है और इस ज़माने में मुस्लिम उम्मत के माध्यम से दुनिया की विभिन्न भाषाओं में कुर्आन मजीद के अनुवादों का प्रकाशन हो रहा है, अतः किसी के लिए यह कहने का अवसर नहीं है कि कुर्आन अरबी भाषा में है इस लिए ग़ैर अरबी लोगों के लिए किस प्रकार हुज्जत हो सकता है।

5. यह मतलब नहीं कि इस किताब से आलिम फ़ाज़िल लोग ही लाभ उठा सकते हैं बल्कि मतलब यह है कि जो लोग खुदा और मज़हब के मामले में जिहालत में लिप्त नहीं होते बल्कि ज्ञान को आधार बनाते हैं यह किताब उन पर हिदायत की राह खोल देती है और वे उस से लाभान्वित होते हैं।

6. अर्थात् यह किताब ईमान लाने और हिदायत की राह पर चलने वालों को हमेशा बाक़ी रहने वाली सफलता की खुशख़बरी देती है और इस को मानने से इन्कार करने वालों को अनंत यातना से आगाह करती है।

7. काफ़ि़रों का यह जवाब उन की ढिठाई और अहं को ज़ाहिर करता है। और आदमी जब कुर्आनी दअवत के मुकाबले में यह रवैया अपनाता है तो उसे सुनने समझने की तौफ़ीक़ नसीब नहीं होती।

8. अर्थात् तुम नहीं मानते तो न मानो मगर मेरी धारणा मेरा विचार तुम पर स्पष्ट रहे कि न मैं ने खुदा होने का दावा किया है और न फ़रिश्ता होने का। मैं तुम्हारी ही तरह गोश्त पोस्त का इन्सान हूँ। अलबत्ता अल्लाह ने जो प्रमुखता मुझे प्रदान की है वह यह है कि मुझ पर उस की प्रकाशना (वहय) अवतरित होती है ताकि मैं उस का संदेश तुम्हें पहुँचाऊँ और इस संदेश की सब

से पहली बात यह है कि तुम्हारा इष्ट पूज्य एक ही पूज्य है और वही मअबूद तुम्हारा अर्थात् इबादत के लायक है।

9. अर्थात् सच्चे मन के साथ उसी की इबादत करो। उस के आदेशानुपालक बन कर रहो। उसी से आशाएँ बाँधो और उसी की प्रसन्नता के चाहने वाले बनो।

10. अर्थात् अब तक जो ग़लत रवैया तुम्हारा रहा है और जिन गुनाहों को तुम करते रहे हो इस पर अल्लाह से माफ़ी चाहो।

11. बहुदेववादियों का एक बहुत बड़ा अपराध यह है कि वे ज़कात अदा नहीं करते जो इस्लाम का बहुत ही महत्वपूर्ण और बुनियादी स्तंभ है और पिछली शरीअत में भी इस की हैसियत एक अनिवार्य फ़र्ज़ की रही है। हज़रत इस्माईल ने भी जिन की नस्ल से अरब हैं ज़कात की अदायगी का अनिवार्य आदेश दिया था। (देखिए सूरह मरयम आयत ५५)

ध्यान रहे कि शरीअत सब पर समान रूप से लागू होती है। अर्थात् अल्लाह के आदेशों की पाबन्दी जिस तरह ईमान वालों पर लागू होती है उसी प्रकार बहुदेववादियों और काफ़ि़रों पर भी। अलबत्ता किसी भी कर्म और किसी भी अमल के कुबूल किये जाने के लिए मोमिन होना शर्त है। ईमान के बग़ैर बड़े से बड़ा नेक अमल भी अल्लाह के यहाँ बेवज़न और निर्मूल है। परन्तु बहुदेववादियों और काफ़ि़रों के शरअी आदेश का उल्लंघन करने के कारण उन के अपराध में और वृद्धि हो जाती है। और वे कठोरतम अज़ाब के भागीदार हो जाते हैं। ज़कात उसी तरह इबादत का एक रूप है जिस प्रकार कि कुर्बानी, तथा यह मोहताजों और मिस्कीनों का अधिकार भी है जो अल्लाह ने दौलत में निर्धारित किया है। यह अधिकार पिछली शरीआतों (संविधानों) में जाना जाता रहा है तथा सामान्यतः प्रचलित भी रहा है। और मक्का के शुरू के दौर में जो शरअी आदेश दिये गए उन में भी ज़कात अदा करने की ताकीद इस स्पष्टीकरण के साथ की गई थी कि यह एक तय शुदा हक़ है।

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ -

لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ - (معارف - २५: २२)

अर्थ:- “जिन के धन में हक़ निर्धारित है, माँगने वालों का भी और जो महरूम हैं उन का भी”। (मआरिज २४, २५)

बाद में जब मदीना में ज़कात की नियमबद्ध व्यवस्था स्थापित करने का अवसर आया तो तफ़सीली आदेश दिये गए।

12. अर्थात् उन के इनाम (बदले) का सिलसिला कभी नहीं टूटेगा बल्कि उन्हें हमेशा मिलता रहेगा।

9. कहो क्या तुम उस हस्ती का इन्कार करते हो और उस के सहकक्ष ठहराते हो जिसने दो दिन में ज़मीन बनाई? वही तो सारे जहान का रब (रब्बुल-आलमीन) है।¹³

قُلْ إِنكُمْ لَتَكْفُرُونَ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَندَادًا ذَلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ⑩

10. उस ने ज़मीन में ऊपर से पहाड़ गाड़ दिए और उस में बरकतें रखीं और गिज़ा के सामान रखे।¹⁴ यह चार दिनों में हुआ।¹⁵ (ये नेमतें) समान हैं सभी तलब करने वालों के लिए।¹⁶

وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبَرَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً لِلنَّاسِ لِيُنْزِلَ ⑪

11. फिर उसने आसमान की तरफ़ तवज्जोह की जो धुएँ के रूप में था।¹⁷ उस ने उस से और ज़मीन से कहा हुक्म की तामील करो, रज़ामन्दी से या बग़ैर रज़ामन्दी के। उन्होंने ने कहा हम ने तामील की रज़ामन्दी से।¹⁸

ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ⑫

12. तो उस ने सात आसमान बना दिए दो दिनों में¹⁹ और प्रत्येक आसमान में उस के एहकाम वह्य कर दिये।²⁰ हम ने दुनिया के आसमान को चिरागों से सजाया²¹ और उस को सुरक्षित कर दिया।²² यह उस हस्ती की मंसूबा बन्दी है जो प्रभुत्वशाली और अत्यंत ज्ञान वाला है।²³

فَقَضَاهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِصَابِرٍ وَحِطَّا ⑬
ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ⑭

13. अब अगर ये विमुखता बरतते हैं तो इन से कहो मैं तुम्हें उसी तरह के अज़ाब से डराता हूँ जिस तरह का अज़ाब आद और समूद पर टूट पड़ा था।²⁴

إِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنذَرْتُكُمْ ضِغْقَةً مِّثْلَ ضِغْقَةِ عَادٍ وَثَمُودَ ⑮

14. जब उन के रसूल उन के आगे और पीछे से आए²⁵ कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, तो उन्होंने कहा हमारा रब चाहता तो फ़रिश्ते नाज़िल करता। अतः हम इस पैग़ाम को नहीं मानते जिस के साथ तुम भेजे गए हो।

إِذْ جَاءَهُمُ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ قَالُوا لَوْ شَاءَ رَبُّنَا لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً فَإِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ⑯

15. आद की घटना यह है कि उन्होंने ने ज़मीन में घमण्ड किया जिस का उन्हें कोई हक़ नहीं था और कहने लगे कौन है हम से अधिक ज़ोरावर (बलिष्ठ)? उन्होंने ने यह न सोचा कि जिस ने इन को पैदा किया है वह उन से अधिक ज़ोरावर (बलिष्ठ) है।²⁶ वे हमारी आयतों का इन्कार ही करते रहे।

فَأَمَّا عَادُ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ⑰

13. दिन से तात्पर्य समय की वह मात्रा है जो अल्लाह ही के ज्ञान में है। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट ८२) ज़मीन को दो दिन में पैदा करने का मतलब यह समझ में आता है कि ज़मीन की रचना दो चरणों में हुई। संभव है एक चरण उस के पदार्थों की रचना तथा उस के तत्वों को ठीकठाक करने में गुज़रा हो और दूसरा चरण उस के परत बनने और एक खास आकार में ढालने में। कुछ भी हो यहाँ यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि पृथ्वी न अज़ली (अनादि कालवाला) है कि हमेशा से खुद बखुद चली आ रही हो और न आकस्मिक रूप से अस्तित्व में आई, बल्कि अस्तित्व प्रदान करने से वह अस्तित्व में आई है और इस को अस्तित्व में लाने वाली हस्ती अल्लाह रब्बुलआलमीन ही की है जिस ने सुनियोजित योजना के तहत इस को पैदा किया है। दो चरणों में इस को पैदा करना यह स्पष्ट करता है कि यह अत्यंत तत्वपूर्ण योजना थी जिस के फलस्वरूप ज़मीन का मादा (तत्व) प्रगति करता चला गया यहाँ तक कि उस ने भूमण्डल का रूप धार लिया। तो जिस हस्ती का यह चमत्कार है उस को एक मात्र इष्ट पूज्य मानने से इन्कार करना और दूसरों को उस का सहकक्ष ठहराना जब कि उन की इस कायनात की सृष्टि करने में कोई योगदान नहीं, कैसी नादानी की बात है और कितनी बड़ी ज़ालिमाना हरकत है।

इस अवसर पर यह बात भी अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि कुर्आन न भूगोल (Geology) की किताब है और न अंतरिक्ष एवं ज्योतिष (Astronomy) की और न ही भौतिक विज्ञान (Physical Science) की। बल्कि यह हिदायत अर्थात् सीधा रास्ता बताने तथा उस पर चलने के निर्देश देने वाली किताब है और हिदायत के लिए जिस हद तक और जिस ज्ञान की आवश्यकता थी कुर्आन ने उस को पूरा कर दिया है। कायनात के आरम्भ की बात हो या अंत की, कुर्आन ने इसी पहलू से रौशनी डाली है। इस लिए सम्बन्धित आयतों का अध्ययन इसी पहलू से करना चाहिए। मगर मौजूदा दौर में वैज्ञानिक और चिन्तक जो आधुनिक विज्ञान और वैज्ञानिक आविष्कारों से प्रभावित हैं वैज्ञानिक दृष्टिकोणों के पक्ष में कुर्आन की आयतों को प्रस्तुत करने लगते हैं चाहे इस में उन को कितनी ही खींचतान करनी पड़े। फिर इस वास्तविकता को भी नज़रंदाज़ नहीं करना चाहिए कि किसी आयत के अन्तर्गत मालूमात का ढेर लगाने से कुर्आन का अध्ययन करने वालों की नज़र से हिदायत और याददेहानी का पहलू ओझल हो जाता है और मास्तिष्क मालूमात में ही उलझ कर रह जाता है। भौतिक विज्ञानों के वर्चस्व के इस दौर में कुर्आन की दअवत पेश करने वालों के लिए तो इस मामले में सावधानी बरतना बहुत ही ज़रूरी है।

14. ज़मीन में अल्लाह ने ऐसी बरकतें रखी हैं कि मनुष्य

की समस्त सामाजिक आवश्यकताएँ इस से पूरी होती हैं। ज़मीन के अन्दर विभिन्न धातुओं आदि के ऐसे भण्डार पाए जाते हैं जिन को मनुष्य सदियों से निकाले जा रहा है और वे कभी समाप्त नहीं होते। मानव जीवन जिन वस्तुओं पर आश्रित है उन वस्तुओं को ज़मीन भरपूर मात्रा में उपलब्ध करती है। अतः देख लीजिए कि पानी के स्रोत जगह जगह से फूटे बह रहे हैं और भाँत भाँत के आहार वस्तुओं को ज़मीन निरंतर उगलती चली जा रही है। एक दाना डालो तो ज़मीन हजारों दाने वापस करती है। एक पौधा लगाओ तो ज़मीन तनावर वृक्ष खड़ा कर देती है और फलों के रूप में अपना तोहफ़ा पेश करने लगती है मानव जीवन की अर्थ व्यवस्था का यह सामान और ख़ैर के ये भण्डार ज़मीन में किस ने भर दिए हैं? यह असल सवाल है मनुष्य के सोचने का और इस के सही जवाब ही पर मनुष्य के हिदायत पाने का दारोमदार है।

15. अर्थात् दो दिन में ज़मीन की रचना हुई और दो दिन में पहाड़ खड़े किये जाने और ज़मीन में आहार वस्तुओं को पैदा करने की क्षमता भरने का काम अन्जाम पाया। इस प्रकार चार दिन अर्थात् चार दौर में ज़मीन की रचना पूरी हुई।

16. अर्थात् ज़मीन की ये नेमतें किसी विशेष मानव समूह के लिए अस्तित्व में नहीं लाई गई बल्कि सार्वजनिक रूप से सभी के लिए अस्तित्व में लाई गई है। यह मनुष्य की स्वाभाविक माँगों को पूरा करने के लिए है। हवा पानी और हर प्रकार की ज़मीनी पैदावार समस्त इन्सानों के लिए आर्थिक सामग्री है और हकीकत भी यही है कि इस से प्रत्येक व्यक्ति लाभ उठाता है। मगर जिस हस्ती ने इन्सान की तलब को पूरा करने का सामान किया उस को आम तौर से लोग भूल जाते हैं।

17. आसमान और ज़मीन का मादा (तत्व) तो एक साथ ही पैदा कर दिया गया था। जैसा कि सूरह अंबिया की आयत ३० में स्पष्ट है लेकिन ज़मीन की संरचना पहले की गई और आसमान की बाद में। जब ज़मीन की संरचना हुई तो आसमान एक धुएँ के रूप में मौजूद था। धुएँ से दिमाग गर्म गैस (Hot Gas) की ओर जाता है संभव है यह उसी की ताबीर अथवा उसी की बात हो।

18. ज़मीन और आसमान यद्यपि निश्चल पदार्थ हैं किन्तु निश्चल पदार्थों के बारे में यह समझना सही नहीं कि वे एहसास से बिलकुल खाली हैं। हम उन के एहसास की मनास्थिति को नहीं जानते लेकिन कुर्आन ने इस कायनात के जिन रहस्यों पर से परदा उठाया है उन से हमारे ज्ञान में यह वृद्धि हो गई कि कायनात की प्रत्येक वस्तु अपने सृष्टा को जो उस की देख रेख करने वाला भी है पहचानती है उस का हुक्म सुनती और उस का अनुपालन करती है और उस की प्रशंसा व उस का गुणगान

करने में तल्लीन है। इस के अलावा इस आयत से यह भी स्पष्ट होता है कि आसमान और ज़मीन अल्लाह के आदेशानुपालन मजबूरी के चलते नागवारी के साथ नहीं कर रहे हैं बल्कि खुशी खुशी स्वेच्छापूर्वक कर रहे हैं। इस से यह इशारा खुद ब खुद निकलता है कि मनुष्य को अपने रब का अनुपालन स्वेच्छापूर्व करना चाहिए।

19. हमारी दृष्टि की पहुँच दुनिया के आसमान तक ही है परन्तु यह समझना सही नहीं कि कायनात इस हद तक सीमित है। कुर्आन पुष्टि करता है कि आसमान के ऊपर और आसमान भी हैं। आसमान का जो आरम्भिक माद्दा । (तत्व) पैदा किया गया था उस से उस ने सात आसामान बनाए। इन सात आसमानों में क्या कुछ है अल्लाह ही को मालूम है। अलबत्ता अंतरिक्ष में असंख्य तारों व उपग्रहों का अस्तित्व देखने में आने वाली चीज़ हैं।

20. अर्थात् अल्लाह के जिन क़ानूनों की इन्हें पाबंदी करना है और जो काम उस की हिदायत के अनुसार अन्जाम देना है, उन के अन्दर उन्हें समाविष्ट कर दिया गया है।

21. अर्थात् तारे आसमान पर सुन्दरता का दृश्य प्रस्तुत करते हैं और देखने वालों को सोचने और विचार करने की दअवत देते हैं कि कैसी खूबियों वाली है वह हस्ती जिस ने इतनी सुन्दर महफ़िल सजाई है।

22. सितारे एक तो इस लिहाज़ से आसमान की सुरक्षा का साधन हैं कि उन से निकलने वाले तेज़ शोले शैतानों की

आसमानों में उड़ान को रोक देते हैं (देखिए सूरह हिज़्र आयत १८ नोट १६ और कुछ दूसरे पहलुओं से भी जो हमारे ज्ञान में नहीं।

संभव है सितारों के आकर्षण नियम के द्वारा आसमान की सुरक्षा का सामान कर दिया गया हो। सच्ची बात अल्लाह ही जानता है।

23. अर्थात् यह कायनात किसी योजना के बग़ैर न अस्तित्व में आई है और न उस के बग़ैर चल रही है। बल्कि इस के पीछे एक बेपनाह कुदरत रखने वाली और अत्यंत ज्ञान रखने वाली हस्ती की योजना काम कर रही है। यह योजना एक तत्वपूर्ण योजना और एक उद्देश्यपूर्ण व्यवस्था है जिस का एक लक्ष्य है। इस योजना को वह्य की रौशनी ही में समझा जा सकता है और वह है कुर्आन।

24. अर्थात् अगर ये बहुदेववादी इन हक़ीक़तों को कुबूल नहीं करते और तौहीद को मानने से इन्कार करते हैं तो उन्हें अज़ाब से आगाह कर दो।

25. रसूलों के आगे और पीछे से आने का मतलब यह है कि उन्होंने अपनी जातियों के सामने सत्य की दअवत हर तरह से पेश की और उन को समझाने के हर संभव प्रयास किये।

26. अर्थात् भौतिक साधनों की बोहतात और अपनी सामाजिक प्रगति का अहं उन्हें ऐसा रहा कि वे अल्लाह को भी भूल गए। यदि वे यह समझते कि हमारे ऊपर एक बेपनाह शक्ति रखने वाली हस्ती मौजूद है तो अल्लाह से डरते, घमण्ड में लिप्त न होते ।



आखिरकार हम ने उन पर मन्हूस दिनों में तेज़ हवा भेजी ताकि वे उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में अपमान की यातना का मज़ा चखाएँ और आखिरत का अज़ाब तो इस से भी अधिक अपमानजनक होगा वे कोई सहायता न पा सकेंगे। रहे समूद, तो हम ने उन को राह दिखाई। लेकिन उन्होंने हिदायत के मुक़ाबले में अंधेपन को पसंद किया तो उन की करतूतों की वजह से उन को अपमान के विनाशकारी अज़ाब ने पकड़ लिया। (अल-कुर्आन)

16. आखिरकार हम ने उन पर मन्हूस दिनों²⁷ में तेज़ हवा भेजी²⁸ ताकि वे उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में अपमान की यातना का मज़ा चखाएँ और आखिरत का अज़ाब तो इस से भी अधिक अपमानजनक होगा वे कोई सहायता न पा सकेंगे।

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي أَيَّامٍ مَّحْسَبَاتٍ لِّنُذِيقَهُمْ
عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَخْزَىٰ وَهُمْ
لَا يُبْصِرُونَ ⑮

17. रहे समूद, तो हम ने उन को राह दिखाई। लेकिन उन्होंने ने हिदायत के मुक्राबले में अंधेपन को पसंद किया²⁹ तो उन की करतूतों की वजह से उन को अपमान के विनाशकारी अज़ाब ने पकड़ लिया।³⁰

وَأَمَّا شُودُ فَهَدَيْنَاهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمَىٰ عَلَى الْهُدَىٰ فَآخَذَ اللَّهُ
صِيعَةَ الْعَذَابِ الْهُونِ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ⑯

18. और हम ने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए थे और अल्लाह से डरते थे।

وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ⑰

19. और वह दिन कि जब अल्लाह के दुश्मनों को जहन्नम की तरफ़ ले जाने के लिए इकट्ठा किया जाएगा और उन की दर्जा बन्दी की जाएगी।³¹

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ⑱

20. यहाँ तक कि जब वे वहाँ पहुँच जाएंगे³² तो उन के कान, उन की आँखें और उन की खालें (त्वचा) उन के विरुद्ध गवाही देंगी कि वे क्या कुछ करते रहे हैं।³³

حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءَهُمْ شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَعُودُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ
وَجُلُودُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑲

21. वे अपनी खालों से कहेंगे कि तुम ने हमारे विरुद्ध क्यों गवाही दी ? वे कहेंगी कि हमें उसी अल्लाह ने बोलने की शक्ति दी जिस ने हर चीज़ को बोलने की शक्ति दी³⁴ ----- उसी ने³⁵ तुम को पहली बार पैदा किया और अब तुम उसी की तरफ़ लौटाए जा रहे हो।³⁶

وَقَالُوا الْجُلُودُ هِيَ شَهِدَتْ عَلَيْنَا قَالُوا أَنْطَقَنَا اللَّهُ
الَّذِي أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَالْأُخْرَىٰ
تَرْجِعُونَ ⑳

22. और तुम यह भय न रखते थे कि तुम्हारे कान, तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें तुम्हारे विरुद्ध गवाही देंगी बल्कि तुम ने तो यह समझ रखा था कि अल्लाह भी इन बहुत सी बातों को नहीं जानता जो तुम करते हो।

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ
وَلَا أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ
لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِّمَّا تَعْمَلُونَ ㉑

23. अपने रब के बारे में तुम्हारा यही गुमान था जिस ने तुम को विनाश ग्रस्त किया और तुम घाटे में पड़ गए।³⁷

وَذَلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْدَاكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ
مِّنَ الْخَاسِرِينَ ㉒

27. मन्हूस दिनों से तात्पर्य वे दिन हैं जब कि उन के कुफ्र करने के बदले उन की शामत आई और वे विनष्ट हो गए। यह मतलब नहीं कि वे अपने आप में मन्हूस थे। यदि ऐसा होता तो ईमान वालों को भी यह अपशगुन लग जाता परन्तु वे बिलकुल सुरक्षित रहे। दिनों को मनहूस समझने का विचार अंधविश्वासी विचार है और इस्लाम में कोई दिन भी अपने आप में मन्हूस नहीं है। अल्बत्ता जिस दिन किसी की शामत उस के कुकर्मों के फलस्वरूप आए वह दिन उस के लिए इस दृष्टि से मन्हूस होगा कि उसे बुरा अन्जाम देखना पड़ा।

28. अत्यंत तेज़ हवा जिस ने सब कुछ तहस नहस कर के रख दिया।

29. अर्थात् समुद्र पर हिदायत की राह स्पष्ट कर दी थी परन्तु उन्होंने ने उस को अपनाया नहीं। बल्कि उस की तरफ से अपनी आँखें बन्द कर ली। इस प्रकार वे अन्धे बन कर भटकते रहे।

30. समुद्र की जाति पर जो अज़ाब आया उस की तफ़सील के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १२३, १२४

31. अर्थात् उन के अपराधों को देखते हुए उन को विभिन्न गिरोहों में अलग अलग रखा जाएगा।

32. अर्थात् जहन्नम के क़रीब पहुँच जाएँगे।

33. आँख और कान गवाही देंगे कि उन को गुनाह के किन कामों में इस्तेमाल किया गया था। अल्लाह की निशानियाँ देखने से आँखों को और नसीहत की बातें सुनने से कानों को बन्द कर लेना सब से बड़ा अपराध है। फिर भी जिन चीज़ों को देखना हaram है उन को देखना और जिन चीज़ों का सुनना हaram है उन का सुनना खुले गुनाह हैं। अतः जिन गुनाहों का अपराध आँखों और कानों के द्वारा किया गया था वे क्रियामत के दिन उन की गवाही देंगे। इतना ही नहीं बल्कि शरीर का रोआँ रोआँ गवाही देगा कि उस को किस प्रकार कुफ़्र और गुनाह के लिए प्रयोग किया गया था।

ज्ञात हुआ कि मनुष्य के शरीर की खाल बड़ी संवेदनशील होती है। जैसे कि वह टेप है जो आदमी की हरकत को रिकार्ड कर लेती है। और क्रियामत के दिन यह टेप अपना रिकार्ड सुनाएगा।

(अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह यासीन नोट ७०)

34. क्रियामत के दिन यह वास्तविकता भी खुल कर सामने आ जाएगी कि दुनिया में जो चीज़ें बोलती हुई दिखाई नहीं देतीं वे बोलने की शक्ति से बिलकुल वंचित नहीं हैं। उस रोज़ प्रत्येक वस्तु बोल रही होगी। ज़मीन अपनी आप बीती सुनाएगी (सूरह ज़िलज़ाल) और मनुष्य के अंग अंग भी बोल उठेंगे ताकि मनुष्य की करतूतों के बारे में पूरी तरह गवाहियाँ उपलब्ध हों जाएँ।

आजकल के इन्सान के लिए तो यह कल्पना कि उस की खाल बोल उठेगी और उन के करतूतों वा अपराधों की गवाहियाँ देगी कुछ भी विचित्र नहीं है क्योंकि आज वीडियो कैसेट के द्वारा वह किसी भी घटना की बोलती फ़िल्म तैयार कर लेता है।

35. यहाँ से फिर अल्लाह तआला का अपना बयान शुरू हो जाता है।

36. अर्थात् तुम्हें इस बात से इन्कार था कि तुम्हारी वापसी अल्लाह के समक्ष होगी। मगर अब तुम देख रहे हो कि जिस ने तुम को पहली बार पैदा किया था उसी की तरफ़ तुम लौट कर आ गए हो।

37. गुनाह करते हुए यह समझना कि यह अल्लाह की नज़रों से छिपा रहेगा, सरासर कुफ़्र है कोई गुनाह न अल्लाह की नज़र से ओझल रह सकता है न वह उस से बेख़बर होता है परन्तु जब आदमी गुनाह करना चाहता है तो वह अपनी आत्मा को धोखा देता है कि अल्लाह की नज़र से यह ओझल रहेगा। फिर जब यह ख़याल दिल में जम जाता है तो वह गुनाह पर गुनाह किये चला जाता है और वह आख़िरकार विनाश के खड्डे में जा गिरता है।



24. अब अगर वे सब करें तो जहन्नम ही उन का ठिकाना है और अगर वे क्षमा माँगें तो उन्हें क्षमा नहीं किया जाएगा।³⁸

فَإِنْ يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ وَإِنْ يَسْتَعِيبُوا فَمَا لَهُمْ مِنَ الْمُعْتَبِينَ ③

25. और हम ने उन पर ऐसे साथी मुसल्लत कर दिए थे जो उन के आगे और पीछे की हर चीज उन को शोभायमान (खुशनुमा) बनाकर दिखाते थे 38/A आखिरकार उन पर भी मेरा वह फ़रमान पूरा होकर रहा जो इन से पहले गुजरे हुए जिनों और इन्सानों के गिरोहों पर पूरा हुआ था।³⁹ वे तबाह हो कर रहे।

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُمْ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أَمْرِ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خُسرِينَ ④

26. जिन लोगों ने कुफ़्र किया वे कहते हैं इस कुर्आन को न सुनो, और इस (की तिलावत) में शोर शराबा मचाओ ताकि तुम हावी रहो।⁴⁰

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَعْلَبُونَ ⑤

27. इन काफ़िरो को हम कठोर यातना का मज़ा चखाएँगे और जो बदतरीन काम वे करते रहे हैं उन का बदला अवश्य उन्हें देंगे।

فَلَنَذِيقَنَ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَشْرَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑥

28. यह अल्लाह के दुश्मनों⁴¹ का बदला है अर्थात् जहन्नम। इसी में उन के लिए हमेशा रहने का घर होगा। यह सज़ा है इस बात की कि वे हमारी आयतों का इन्कार करते रहे।

ذَلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ الَّذِينَ كَانُوا فِيهَا دَارَ الْخُلْدِ جَزَاءً لِّمَا كَانُوا يَلْتَنَبِئُونَ بَإِيتِنَا يَجْحَدُونَ ⑦

29. और काफ़िर कहेंगे कि ऐ हमारे रब ! हमें उन जिनों और इन्सानों को दिखा दे जिन्होंने हमें गुमराह किया था। हम उन को अपने पाँव के नीचे रौंद डालेंगे ताकि व निचले बन कर रहें।⁴²

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذِينَ أَضَلْنَا مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ نَجْعَلُهُمُ تَحْتَهُ أَقْدَامَنَا لِيَكُونُوا مِنَ الْآسَفِينَ ⑧

30. जिन लोगों⁴³ ने कहा अल्लाह हमारा रब है फिर उस पर जम गए,⁴⁴ निश्चय ही उन पर फ़रिश्ते नाज़िल होते हैं कि न डरो और न ग़म करो और खुश हो जाओ जन्नत की खुशख़बरी से जिस का तुम से वादा किया जा रहा था।⁴⁵

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبَّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ⑨

31. हम दुनिया की ज़िन्दगी में भी तुम्हारे दोस्त थे, और आखिरत में भी हैं।⁴⁶ इस में तुम्हारा दिल जो चाहेगा वह तुम्हें मिलेगा और जो चीज़ भी तुम तलब करोगे तुम्हें मिलेगी।⁴⁷

نَحْنُ أَوْلَىٰ بِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهُى أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدْعُونَ ⑩

38. अर्थात् अब कुछ भी हो जहन्नम में उन्हें हर हाल में रहना है चाहे वे सहन करें या न करें। उन के लिए माफ़ी का कोई मौक़ा बाक़ी नहीं रहा।

38/A. तात्पर्य बुरे साथी हैं। मनुष्य जब बुद्धि और विवेक से काम नहीं लेता और इच्छाओं के पीछे चल पड़ता है तो शैतान उस का साथी बन जाता है और गुमराह लोग सहचर, मित्र और परामर्शदाता बन जाते हैं और उस के मस्तिष्क को ऐसा प्रभावित बल्कि प्रदूषित करते हैं कि ग़लत धारणाएँ और ग़लत सिद्धांत तथा बुरे आचार विचार उस के लिए आकर्षक एवं प्रिय बन जाते हैं।

आगे और पीछे की प्रत्येक वस्तु को शोभायमान बना कर दिखाने का मतलब यह है कि ये बुरे साथी अपनी भ्रमिक बातों से भविष्य को भी उज्ज्वल कर के दिखाते हैं और अतीत की गुमराहियों को भी उच्च आदर्श की हैसियत से प्रस्तुत करते हैं। और यह खुली सच्चाई है कि आज भी कितनी ही जातियाँ अपनी प्राचीन संस्कृति पर गर्व करती हैं हालाँकि उन की संस्कृति मूर्खता, अज्ञानता, अश्लीलता और अंधविश्वास की बदतरीन मिसाल होता है। इसी प्रकार वे अपने भौतिक उन्नति में और भव्य भविष्य को देख लेती हैं परन्तु उस की हैसियत मृगतृष्णा से अधिक कुछ नहीं होती।

39. अल्लाह का यह फ़रमान है कि :-

لَا مَلْئَيْنَ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ
مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ - (ص: ८५)

अर्थ :- “मैं तुझ से (अर्थात् इब्लीस से) और जो इन में से तेरा अनुकरण करेंगे उन सब से जहन्नम को भर दूँगा। (सॉद ८५)

40. काफ़िरों ने जब देखा कि कुआन दिलों को जीतता चला जा रहा है और कोई तर्क एवं दलील ऐसी नहीं जो इस के मुक़ाबले में टिक सके तो हंगामा करने पर उतर आए। उन के नेताओं ने जनता से कहा कि जब कुआन पढ़ा जाए तो उस को सुनो मत और ख़ूब शोर मचाओ ताकि तुम उस आवाज़ को दबा सको। परन्तु वह सत्य था, उस को जितना दबाने का प्रयास किया गया उतना ही वह उभरता चला गया। और आज दुनिया भर में उस को (कुआन को) इतनी अधिकता के साथ पढ़ा और सुना जाता है कि इस का कोई उदाहरण नहीं प्रस्तुत किया जा सकता।

41. स्पष्ट हुआ कि कुआन की राह में रुकावटे डालना ताकि वह जन सामान्य तक न पहुँचे या वे उस से लाभ न उठा सकें उन ही लोगों का काम है जो अल्लाह के दुश्मन हैं।

42. काफ़िर जब जहन्नम में दाख़िल होंगे तो उन्हें एहसास होगा कि गुमराह जिन्नों ने तथा हमारे पेशवाओं और लीडरों ने हमारी बहुत ग़लत रहनुमाई की थी। उन के गुमराह करने से हम गुमराह हुए। इस लिए वे उन के विरुद्ध कड़ा रोष ज़ाहिर करेंगे और अपने ख़ब से विन्ती करेंगे कि उन गुमराह करने वालों को हमें दिखादे ताकि हम उन्हें जहन्नम में पैरों तले रौंद डालें और ज़लील कर के रख दें।

दुनिया में तो काफ़िर अपने गुमराह पेशवाओं और लीडरों के प्रति बड़ी श्रद्धा और आस्था व्यक्त करते हैं तथा आँखें बन्द कर के उन के पीछे चलते हैं, परन्तु दोज़ख़ में पहुँचने के बाद वे उन पर लानत भेजेंगे और उन को कुचल देना चाहेंगे।

43. काफ़िरों का हाल ऊपर बयान हुआ है अब सच्चे मोमिनों का हाल बयान किया जा रहा है।

44. अल्लाह को अपना ख़ब कहने का अर्थ इस वास्तविकता को स्वीकार कर लेना है कि अल्लाह ही मेरा रचयिता, पालनहार, स्वामी, आक्रा, पूज्य, शासक और हिदायत देने वाला है। जो व्यक्ति पूरे विवेक के साथ इस वास्तविकता को स्वीकार करता है वह निश्चय ही अपनी उस हैसियत को भी स्वीकार करता है कि मैं उस की सृष्टि, उस की रचना, उस का पाला हुआ, उस का दास और उस का भक्त हूँ। मेरा काम उस की इबादत करना उस के आदेशों का अनुपालन करना और उस की हिदायत की पैरवी करना है।

और इस बात पर ज़म जाने का मतलब यह है कि मरते दम तक वह इस पर डटा रहे और अपने व्यवहारिक जीवन में सत्य और सीधा मार्ग अपनाए। आगे के मज़मून में जन्नत की खुशख़बरी दी गई है वह ऐसे ही लोगों के लिए है। कुआन ने जगह जगह पर जन्नत की खुशख़बरी उन लोगों को दी है जो ईमान लाएँ और अच्छे कर्म करें। इस आयत में भी जिन्होंने कहा “हमारा प्रभु अल्लाह है” से ईमान और “उस पर ज़म गए” से अच्छे कर्म ही तात्पर्य हैं परन्तु आवश्यकतानुसार उन के ख़ास पहलुओं पर जोर दिया गया है। हदीस में भी यह जो फ़रमाया गया है कि:-

مَا مِنْ عَبْدٍ قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ثُمَّ مَاتَ عَلَى ذَلِكَ إِلَّا دَخَلَ الْجَنَّةَ. (مسلم کتاب الايمان)

अर्थ :- “जो बन्दा भी अल्लाह अल्लाह कहता है और उस की मौत उसी पर होती है तो वह जन्नत में दाख़िल होगा।” (मुस्लिम किताबुलईमान)

तो वह भी इसी भावार्थ में है और अपने तमाम तकाज़ों को लिए हुए है। परन्तु जो लोग दिखावटी दीनदारी के कायल होते हैं वे ज़बानी जमा ख़र्च को काफ़ी समझते हैं और इस भुलावे में रहते हैं कि उन के कर्म कैसे ही हों मात्र कलिमा पढ़ लेने से उन्हें

जन्नत मिल जाएगी और जहन्नम से बिल्कुल सुरक्षित रहेंगे।

इमाम राजी अपनी तफ्सीर में

إِنَّ الدِّينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ

अर्थ :- “जिन लोगों ने कहा हमारा ख अल्लाह है।” की व्याख्या करते हुए कहते हैं।

“इस से मुराद मात्र ज़बान से कहना नहीं है, क्यों कि फिर इस्तिक्ामत (जमे रहने) का कोई अर्थ नहीं निकलता, किन्तु जब उन के यह कहने के बाद उन के जम जाने का ज़िक्र हुआ तो उस से यह बात स्पष्ट हो गई कि यह कथन (अर्थात् हमारा ख अल्लाह है का कहना) पूरे विश्वास और हक़ीक़ी मारिफ़त के साथ अदा करने के भावार्थ में है।” (तफ्सीर कबीर जिल्द २७ पृष्ठ १२१)

इमाम राजी ने आगे यह भी पुष्टि की है कि सहाबा और ताबिअीन की एक बड़ी संख्या ने इस्तिक्ामत अर्थात् जम जाने को अच्छे कर्म ही की संज्ञा दी है।

45. फ़रिश्तों का जन्नत की खुशख़बरी देने के लिए नाज़िल होना उन ईमान वालों ही पर हो सकता है जिन्होंने मरते दम तक इस्तिक्ामत इस्तियार की अर्थात् मरते दम तक अपने उस वचन पर जमे रहे। दुनिया में ज़िन्दगी भर इन्सान का इम्तिहान होता रहता है और इस में कामयाबी और नाकामी के परिणाम उसी समय निकलना शुरू हो जाते हैं जब कि इम्तिहान की घड़ी समाप्त हो जाती है। इस लिए जब नेक मोमिनों की रूह को निकालने के लिए फ़रिश्ते आते हैं तो वे जन्नत की खुशख़बरी भी सुनाते हैं।

मौत के फ़रिश्तों को देख कर इन्सान पर बेपनाह ख़ौफ़ और दहशत तारी होती होगी किन्तु नेक मोमिनों को फ़रिश्ते उसी क्षण संतुष्ट कर देते हैं कि तुम्हारे लिए डरने की कोई बात ही नहीं क्यों कि तुम्हारा भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है और दुनिया के छूट जाने का दुख भी तुम्हें नहीं हो सकता कि तुम मन्ज़िले-मक़सूद को पहुँच रहे हो। खुश हो जाओ कि हम तुम्हारे लिए जन्नत की, खुश कर देने वाली खुशख़बरी ले कर आए हैं।

इस आयत में मौत के समय की जो झलक दिखाई गई है वह ईमान वालों के लिए बड़ी ही आत्म विभोर कर देने वाली है।

46. नेक और सच्चे ईमान वालों की रूह निकालते हुए फ़रिश्ते अपना परिचय इस तरह करते हैं कि हम दुनिया में भी तुम्हारे दोस्त थे यह और बात है कि तुम हमें देख न सकते थे, और अख़िरत में भी तुम्हारे दोस्त हैं अतः तुम्हारे लिए घबराने की कोई बात नहीं। इम्तीनान रखो कि तुम अपने दोस्तों के बीच ही हो।

दुनिया में ईमान वाले सच्चे लोगों के दोस्त फ़रिश्ते होते हैं जब कि काफ़िरों और फ़ासिकों (उल्लंघनकारियों) के दोस्त शैतान होते हैं। फ़रिश्तों की सच्चे मोमिनों के साथ दोस्ती बड़ी ही ख़ैर और बरकत वाली होती है। वे उन के लिए रहमत की दुआ तो करते ही हैं इस के अलावा नाज़ुक क्षणों में विशेष रूप से सत्य और असत्य की कशमकश के अवसर पर जब कि क्रदमों के डगमगा जाने का ख़तरा होता है अल्लाह के इज़्ज से वे उन की ढारस बंधाने का काम करते हैं ताकि वे दृढ़ता पूर्वक जमे रहें (देखिए सूरह अन्फ़ाल आयत १२ नोट १९) और हदीस में आता है कि जो व्यक्ति शरीअत के फैसले करने (क्राज़ी) के पद पर उस की इच्छा के बग़ैर नियुक्त किया जाता है तो अल्लाह तआला एक फ़रिश्ते को भेज देता है जो उसे सही राह दिखाता है। (तिर्मिज़ी अबवाबुल एहक़ाम) और हदीस में यह भी आता है कि अल्लाह का ज़िक्र करने वालों के ईर्द गिर्द फ़रिश्ते जमा हो जाते हैं। (तिर्मिज़ी अबवाबुद्दावात)

और अख़िरत में फ़रिश्ते ईमान वालों का स्वागत सलाम से करेंगे, उन से स्वयं बात चीत करेंगे और जन्नत में उन का साथ उन को प्राप्त होगा।

47. जन्नत की इस प्रमुख विशेषता से उस की शान का अन्दाज़ा होता है। यह अमूल्य एवं अभीष्ट मोती जिस को प्राप्त हुई उस की समस्त इच्छाएँ वा अभिलाषाएँ पूरी हो गई। उस की प्रत्येक आशाएँ पूर्ण हुई। मनुष्य में स्वाभाविक रूप से यह मनोभाव पाया जाता है कि जो चीज़ वह चाहता है वह उसे मिले और उस की अभिलाषाएँ पूर्णतः को पहुँचे। परन्तु दुनिया में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिस की प्रत्येक इच्छा व हर प्रकार की अभिलाषा पूरी होती हो। यदि आदमी के पास दौलत का ढेर लगा हुआ हो या किसी बड़े राज्य का स्वामी हो तब भी उस को वह सब कुछ नहीं मिलता जो वह चाहता है। कभी उसे बीमारी परेशान करती है तो कभी किसी निकट सम्बन्धि के मरने का दुख और कभी युद्ध का ख़तरा मालूम हुआ कि यह दुनिया हरगिज़ वह जगह नहीं है जहाँ मनुष्य की समस्त इच्छाएँ और प्रत्येक अभिलाषाएँ पूरी हो सके। यदि ऐसा होता तो यह दुनिया ही जन्नत बन जाती किन्तु अल्लाह तआला ने मनुष्य के इस मनोभाव और इस चाह के पूरा करने का सामान अख़िरत में किया है। अर्थात् जन्नत जहाँ उस की यह स्वाभाविक चाह पूर्ण रूप से पूरी होगी।

मनुष्य की यह स्वाभाविक चाह कि उस की सारी इच्छाएँ पूरी हो, जन्नत की तलब अपने अन्दर निहित रखता है और यह इस बात की दलील है कि कुर्आन जिस जन्नत का वादा ईमान वालों से करता है उस की तलब मनुष्य के स्वभाव में विद्यमान है। अतः इन्कार करने वालों का जन्नत के प्रति यह फ़बती कसना कि दिल

को बहलाने के लिए यह ख्याल अच्छा है, सरासर जिहालत है। यदि मनुष्य अपने स्वभाव की तलब पर गौर करे और जन्नत को कुआन की रौशनी में देखे तो उन्हें अपनी गलती का एहसास होगा।

स्पष्ट रहे कि जन्नत में जाने वाले लोग सदगुणी, सदाचारी

और पवित्र विचार वाले होंगे इस लिए बुरी इच्छाओं, अनुचित माँगों तथा बेहूदा बातों का वहाँ कोई अस्तित्व ही नहीं होगा। फिर वहाँ मात्र शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति का सामान नहीं होगा बल्कि इस के साथ जो चीज़ भी वहाँ तलब की जाएगी, वह उपलब्ध की जाएगी इस लिए वहाँ रूहानी गिज़ा का भी भरपूर सामान होगा।



32. यह सत्कार सामाग्री है उस (हस्ती) की तरफ़ से जो क्षमाशील और दयावान है।⁴⁸

تُزَلُّوا مِنْ غَفُورٍ رَحِيمٍ ۝

33. और उस व्यक्ति से बेहतर बात किस की हो सकती है, जो अल्लाह की तरफ़ बुलाए, नेक अमल करे, और कहे कि मैं मुसलमानों में से हूँ।⁴⁹

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

34. भलाई और बुराई समान नहीं हो सकती। तुम बुराई को उस तरीके से दूर करो जो सब से बेहतर हो।⁵⁰ इस सूरत में तुम देखोगे कि तुम्हारे और जिस व्यक्ति के बीच शत्रुता थी वह गोया गहरा दोस्त बन गया है।⁵¹

وَلَا تَتَّبِعُوا الْحَسَنَةَ وَلَا السَّيِّئَةَ ادْفَعُوا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ۝

35. परन्तु इस की तौफ़ीक़ उन ही लोगों को मिलती है जो सब्र करते हैं और यह (सीख) उन ही को प्राप्त होती है जो बड़ी किस्मत वाले होते हैं।⁵²

وَمَا يُكَفِّرُهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا يُكَفِّرُهَا إِلَّا ذُو حِظٍّ عَظِيمٍ ۝

36. और अगर शैतान की तरफ़ से तुम्हारे दिल में कोई उकसाहट पैदा हो तो अल्लाह की पनाह माँगो। वह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।⁵³

وَأَمَّا يُزْغِيكَ مِنَ الشَّيْطَانِ تَرْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

37. उस की निशानियों में से हैं रात और दिन और सूरज और चाँद।⁵⁴ न सूरज को सज्दा करो और न चाँद को बल्कि अल्लाह ही को सज्दा करो जिस ने इन सब चीज़ों को पैदा किया है अगर तुम उसी की इबादत करने वाले हो।⁵⁵

وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۝

38. लेकिन अगर ये अहं करते हैं तो (इन पर स्पष्ट रहे कि) जो फ़रिश्ते उस के समक्ष हैं वे रात दिन उस की पाकी बयान करते हैं और कभी नहीं थकते।⁵⁶

إِنْ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ ۝

39. और उस की निशानियों में से यह है कि तुम देखते हो कि ज़मीन सूखी पड़ी है फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह हरकत में आ जाती है और फूल जाती है। निस्संदेह जिस ने इस को ज़िन्दा किया वह मुर्दों को भी ज़िन्दा करने वाला है।⁵⁷

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنَّكَ تَرَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ إِنَّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمُجِي الْمَوْتِ إِنَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

48. अर्थात् ईमान वालों को जन्नत की ये नेमतें उस मान सम्मान के साथ भेंट की जाएंगी कि जैसे वे शाही मेहमान हैं जिन के सत्कार के लिए जन्नत का दस्तरख्वान बिछा दिया गया है और यह जन्नत अल्लाह के क्षमाशील एवं दयावान का जीता जागता नमूना होगी।

जन्नत की इस कल्पना में आत्मविभोर कर देने वाली मनः स्थिति और जो आनन्द है उस को वही लोग महसूस कर सकते हैं जो ईमान के स्वाद को चख चुके हैं।

49. यह उन्हीं लोगों के गुण और उन्हीं की विशेषता बयान हो रही है जिन्होंने ईमान लाकर दृढ़ता अपनाई क्यों कि वे सत्य और असत्य की कशमकश से घबराते नहीं बल्कि खुले तौर पर अल्लाह की ओर लोगों को बुलाते हैं। स्वयं नेक अमल करते हैं और अपने मुस्लिम होने का इजहार करते हैं। दुनिया में अधिकांश लोग अपनी अपनी विचार धारा और धर्म की ओर दूसरों को बुलाते हैं तथा भौतिक वादी व व्यवसायिक धारणाओं के अन्तरगत आन्दोलन चलाते हैं। किन्तु अल्लाह की ओर बुलाने के आंदोलन की तुलना में ये सारे आन्दोलन निर्मूल एवं बेवज्रन हैं। अल्लाह की तरफ बुलाना वह बेहतरीन बात है जिस से बेहतर बात की कल्पना नहीं की जा सकती। इस लिए बड़े भाग्यशाली हैं वे लोग जो अल्लाह की ओर बुलाने के लिए इस हाल में उठ खड़े हों कि अपने आचरण को उन्होंने सँवार लिया हो। अर्थात् जिन का काम मात्र भाषण नहीं बल्कि अपने सुधार के साथ दूसरों का सुधार करना है। साथ ही वे अपने मुसलमान होने का एलान और इजहार भी करते हों।

स्पष्ट हुआ कि अपने मुसलमान होने की हैसियत को छिपाना सही नहीं बल्कि उस को जाहिर करते रहना चाहिए ताकि अपनी वास्तविक हैसियत का पता भी चले और दूसरों को भी मुसलमान बनने की प्रेरणा मिले। परन्तु आजकल अधिकांश मुसलमानों का हाल यह है कि वे मात्र सांसारिक मसलहतों की खातिर या आधुनिक विचारधारा से प्रभावित होने के फलस्वरूप इस बात को पसंद नहीं करते कि उन के मुसलमान होने का इजहार हो। अतः न उन के नाम से उन के मुसलमान होने का पता चलता है और न उन की वेषभूषा से और न उन की बातों से। अगर वे वास्तव में इस्लाम को सही समझते हैं तो उन में यह नैतिक साहस क्यों नहीं है कि वे मुसलमानों और गैर मुस्लिमों की नज़र में अपने को संदिग्ध न बना लें बल्कि खुले आम अपने मुसलमान होने का इजहार करें।

50. अर्थात् भलाई और बुराई अपने प्रभाव और परिणाम की दृष्टि से समान नहीं हैं। और जो व्यक्ति लोगों को अल्लाह की ओर बुलाने और उन का सुधार करने के लिए उठ खड़ा हुआ हो उस को इस बात का अत्याधिक ख्याल रखना चाहिए कि

नेकी, बदी को दूर करने का साधन है। जो लोग बुरा सुलूक करें उन के साथ भी वह अच्छा सुलूक करे। गालियों का जवाब गालियों से नहीं बल्कि दुआओं से दे। क्यों कि गन्दगी को गन्दगी से नहीं बल्कि پاک साफ़ पानी से ही दूर किया जा सकता है।

51. इस का उत्तम उदाहरण नबियों और नेक लोगों की जीवनी में देखा जा सकता है। हज़रत यूसुफ़ ने किस तरह उन लोगों के दिल जीत लिए जिन्होंने उन के साथ बुरा सुलूक किया था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दअवत के पीछे आप की ज़बरदस्त नैतिक छवि थी जिस ने उन लोगों को भी आप का दोस्त बना दिया जो आप के खून के प्यासे थे।

52. अर्थात् बुराई को भलाई से दूर करने का काम बड़ा ही धैर्य चाहता है इस लिए जो लोग धैर्य और संयम से काम लेना चाहते हैं उन ही को अल्लाह तआला इस की तौफ़ीक़ देता है और जिन को यह समझ मिलती है वे बड़े भाग्यशाली लोग होते हैं क्यों कि आखिरत उन का लक्ष्य और अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति उन की कामयाबी की ज़मानत होता है।

53. अर्थात् विरोधियों की उत्तेजक बातों से प्रभावित करने के लिए शैतान तुम्हारे अन्दर उकसाहट पैदा कर सकता है मगर तुम्हें ऐसे मौके पर चौकन्ना रहना चाहिए और ज्यों ही तुम अपने अन्दर उन का जवाब देने के लिए उत्तेजना महसूस करो, अल्लाह की पनाह माँगो वह तुम्हें शैतान की उकसाहटों और हर तरह की बुराइयों तथा उत्तेजनात्मक बातों से सुरक्षित रखेगा। वह सुनने वाला है इस लिए तुम्हारी दुआ सुन लेगा और वह जानने वाला है इस लिए उसे मालूम है कि कौन बुराई तथा उस की उकसाहटों से बचना चाहता है।

इस आयत का एक सामान्य पक्ष भी है जिस की ओर हदीस में ध्यानाकर्षित किया गया है और वह यह है कि आदमी जब कभी अपने को गुस्से की हालत में पाये तो कहे

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

अर्थ :- “मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ।” (बुखारी किताबुल अदब)

54. अब इस बात की ओर ध्यानाकर्षित किया जा रहा है कि तौहीद की निशानियाँ इस कायनात में बिलकुल स्पष्ट हैं। यह रात और दिन, तथा यह सूरज और चाँद सब एक खुदा के होने उस की कामिल कुदरत उस की संप्रभुता और उस के ब्रह्माण्ड का शासक वा प्रभु होने पर तर्क प्रस्तुत करते हैं। इन में से कोई चीज़ भी ऐसी नहीं जो स्वयं अपने ईश होने पर तर्क प्रस्तुत करती हो।

55. अर्थात् सज्दे का अधिकारी सृष्टा है न कि सृष्टि। सूरज चाँद सितारे सब बेबस सृष्टि हैं इस लिए इन को सजदा करना

एक व्यर्थ की बात है और जो ऐसा करता है वह सृष्टा के अधिकार में सृष्टि को साझी ठहराता है और यह सब से बड़ा अन्याय है।

सूरज के पुजारी प्राचीन काल में भी बहुत रहे हैं और आजकल भी बहुतायत के साथ हैं। खुद हमारे देश में सूरज के पूजने वालों और उस के आगे झुकने वालों की कमी नहीं। परन्तु यह सरासर जिहालत और खुली गुमराही है।

सज्दा इबादत का सब से ऊँचा और सब से उत्तम रूप है इस लिए वह अल्लाह ही के लिए ख़ास है। इस लिए फ़रमाया कि अगर तुम अल्लाह ही की इबादत करने वाले हो तो उसी को सज्दा करो। उस के सिवा कोई भी ऐसा नहीं है जिस के लिए सज्दा करना उचित एवं वैद्य हो क्योंकि सब ही सृष्टि हैं वे सूरज और चाँद हो या कोई इन्सान।

यह आयत इस बारे में पूरी और अन्तिम है कि किसी भी सृष्टि को सज्दा करना हराम है इस लिए धार्मिक गुरुओं, बुजुर्गों और वालियों की क़ब्रों को सज्दा करने के लिए कोई औचित्य नहीं।

रहा वह झुकना जो किसी के आदर सम्मान में झुका जाता है तो इस्लाम की समूची शरीअत इस की इजाज़त नहीं देती। अगर किसी बुजुर्ग व्यक्तित्व को सज्दा करना उचित होता तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बड़ा व्यक्तित्व किस का हो

सकता था। परन्तु आप ने इस बात से मना फ़रमाया कि कोई आप का सज्दा करे। (तिर्मिज़ी अबवाबुन्निकाह)

इस लिए सहाबा किराम आप को न आदर सम्मान का सज्दा करते थे और न आप के लिए झुकते थे।

ध्यान रहे कि हज़रत आदम को सज्दा करने का जो आदेश फ़रिशतों को दिया गया था उस की मनोदशा बिल्कुल भिन्न थी अर्थात् वह इबादत के तौर पर नहीं था और न किसी ऐसे सम्मान के लिए था जिस से शिर्क की राह खुलती हो बल्कि यह एक ख़ास परिवेष में दिया गया आदेश था जिस के पीछे महान नीति निहित थी। (व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रः नोट ४७)

56. यह आयते सज्दा है इस लिए इस की तिलावत पर सज्दा करना चाहिए। अगर ये बहुदेववादी अल्लाह के इस आदेश के मुकाबले में कि केवल अल्लाह ही को सज्दा करो, अहं करते हैं तो करें और अपना ठिकाना जहन्नम में बना लें। इस से उस की शान में कोई कमी नहीं आती। उस की शान तो यह है कि उस के समक्ष फ़रिशते हर समय उस की पाकी बयान करते रहते हैं और निरंतर बयान करते रहने से उन को कोई थकान नहीं होती। जिस प्रकार मनुष्य साँस लेते हुए नहीं थकता उसी प्रकार फ़रिशते पाकी बयान करते हुए नहीं थकते।

57. यह क्रियामत के दिन पुनः जीवित किये जाने पर तर्क है। व्याख्या के लिए देखिए सूरह रोम नोट ८३



जो लोग हमारी आयतों में टेढ़ निकालते हैं वे हम से छिपे हुए नहीं हैं। क्या वह व्यक्ति बेहतर है जो आग में डाला जाएगा या वह जो क्रियामत के दिन अमन की हालत में आएगा? तुम जो चाहो करो। तुम जो कुछ करते हो उसे वह देख रहा है। (अल-कुअनि)

40. जो लोग हमारी आयतों में टेढ़ा निकालते हैं⁵⁸ वे हम से छिपे हुए नहीं हैं।⁵⁹ क्या वह व्यक्ति बेहतर है जो आग में डाला जाएगा या वह जो क्रियामत के दिन अमन की हालत में आएगा? तुम जो चाहो करो।⁶⁰ तुम जो कुछ करते हो उसे वह देख रहा है।

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا أَفَمَنْ يُلْقَى
فِي النَّارِ خَيْرٌ أَمْ مَنْ يَأْتِيَ آمَنًا يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَعْلَمُوا مَا شُئِمُوا إِنَّهُ
بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

41. जिन लोगों ने याददेहानी का इन्कार किया जब कि उन के पास आई, वे इस हकीकत से अनभिज्ञ हैं कि यह एक ज़बरदस्त किताब है।⁶¹

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ وَإِنَّ لَهُمْ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ۝

42. असत्य इस में न इस के सामने से प्रवेश कर सकता है और न इस के पीछे से⁶² यह उस हस्ती की तरफ से नाज़िल हुई है जो हिकमत वाली और खूबियों वाली है।

لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ تَنْزِيلٌ مِنْ
حَكِيمٍ حَمِيدٍ ۝

43. (ऐ नबी!) तुम से वही बातें कही जा रही हैं जो तुम से पहले गुजरे हुए रसूलों से कही जा चुकी हैं।⁶³ निस्संदेह तुम्हारा रब क्षमा करने वाला भी है और दुखदायिनी सज़ा देने वाला भी।

مَا يَقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قَبِلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ إِنَّ رَبَّكَ
لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَذُوْ عِقَابٍ أَلِيمٍ ۝

44. अगर हम इस को अजमी (गैरअरबी) कुर्आन बना कर उतारते तो ये लोग कहते क्यों न इस की आयतें खोल कर बयान की गई? कलाम अजमी और संबोधी अरब।⁶⁴ कहो यह ईमान लाने वालों के लिए तो हिदायत और शिफा है।⁶⁵ और जो लोग ईमान नहीं लाते उन के कानों में बहरापन है और वह (कुर्आन) उन की आँखों के लिए ओट है।⁶⁶ (गोया) इन लोगों को दूर की जगह से पुकारा जा रहा है।⁶⁷

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا عَجَبِيًّا لَقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ
ءَا عَجَبِيٌّ وَعَرَبِيٌّ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ
وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي آذَانِهِمْ وَقُرْ وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى أُولَٰئِكَ
يُنَادُونَ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۝

45. हम ने मूसा को किताब प्रदान की थी तो उस में विभेद किया गया।⁶⁸ अगर तुम्हारे रब की तरफ से एक बात पहले से तय न हो चुकी होती तो उन के बीच फ़ैसला चुका दिया गया होता।⁶⁹ और यह लोग इस की तरफ से शक में पड़े हुए हैं जिस ने इन्हें उलझन में डाल दिया है।⁷⁰

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُضِيَ بَيْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ
لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ۝

58. अल्लाह की आयतों में टेढ़ निकालने का मतलब उन का उलटा मतलब बताना है। सही अर्थ से उन्हें फेरना, उन के भावार्थ को संदिग्ध करना और उन पर एतिराज जड़ना है।

59. अर्थात् उन के दिल का हाल अल्लाह को मालूम है।

60. यह चेतावनी है कि यदि नसीहत की इन बातों को समझने के लिए तैयार नहीं हो तो फिर जो चाहो कर गुजरो, अपने विनाश के स्वयं जिम्मेदार होगे।

61. अर्थात् इस किताब का इन्कार करने वालों ने इस को महत्वहीन किताब समझा और आदर की दृष्टि से नहीं देखा हालांकि यह कोई मामूली किताब नहीं है बल्कि एक जबरदस्त किताब है जो अपने तार्किक प्रमाणों, सच्चे बयानों, प्रभावकारी शैली से अन्तर्मन को अपील करने वाली बातों के द्वारा इन्सान की काया पलट देती है और कुछ ही समय बाद दुनिया ने देख लिया कि यह ऐसी शक्तिशाली किताब है कि इस ने कितनी ही जातियों को जीता और कितने ही देशों पर विजय पताका फहराए।

62. इस किताब में सामने से असत्य के प्रवेश न कर सकने का मतलब यह है कि शैतान जिन्न, इन्सान कोई भी इस का सामर्थ्य नहीं रखता कि इस में कोई शाब्दिक परिवर्तन करें। वह क्रियामत तक शब्द शब्द सुरक्षित रहने वाली किताब है। और पीछे से इस में असत्य के प्रवेश न कर सकने का अर्थ यह है कि इस किताब की तरकीब और इस का अनुशासन ऐसा है कि वह किसी भी आन्तरिक परिवर्तन को स्वीकार नहीं करता। इस की आयतों को उन के मूल अर्थों से हटाने के लाख प्रयास किये जाएं वे अपने भावार्थ और उद्देश्य में बिलकुल स्पष्ट हैं। चोर दरवाजे से असत्य की धारणा एवं सिद्धान्त को उस में प्रविष्ट करने के लिए कितना ही ज़ोर लगाया जाए, इस में कदापि सफलता होने वाली नहीं क्योंकि इस की प्रत्येक आयतें अपने भावार्थ में बिलकुल स्पष्ट और मुकम्मल हैं।

63. अर्थात् जिस प्रकार गुजरे हुए रसूलों को जादूगर, मजनु आदि कहा गया था उसी प्रकार तुम्हारे बारे में भी ऐ पैगम्बर इसी तरह की बातें कहीं जा रही हैं

64. यह काफ़िरों के उस एतिराज का जवाब है कि कुर्आन अरबी ज़बान ही में क्यों उतरा अजमी अर्थात् ग़ैर अरबी भाषा में क्यों नाज़िल नहीं हुआ जब कि तौरात इब्रानी भाषा में उतरी थी। इस के उत्तर में कहा गया कि अगर कुर्आन को किसी ग़ैर अरबी भाषा में नाज़िल किय जाता तो यही लोग एतिराज करते कि हमारी अपनी भाषा में क्यों नाज़िल नहीं किया गया कि इस की आयतों का भावार्थ हम पर स्पष्ट होता। यह अजीब बात है कि कलाम अजमी (ग़ैर अरबी) है जब कि वह जाति जिस से कि सम्बोधन है उस की भाषा अरबी है। मतलब यह है कि जिन

लोगों को मानना नहीं है वे हर सूत में एतिराज करते हैं।

आयत से यह इशारा भी निकलता है कि अरबी भाषा अल्लाह की वह्य के भावार्थ को अदा करने की दृष्टि से उच्चतम भाषा है जो लोग अरबी भाषा से परिचित हैं वे जानते हैं कि यह भाषा प्रमुख विशेषताएँ अपने अन्दर रखती हैं। जैसे यह कि वह एक सिस्टमेटिक भाषा है जिस में क्रिया, कर्ता, कारक और कर्म आदि को एक खास साँचे में ढाला जाता है। व्याकरण में बड़ी नियमितता होती है। इस के अधिकांश शब्द अपने मूल अर्थ (Root Word) की ओर इशारा करते हैं जिस से उस के सही भावार्थ को समझने में मदद मिलती है वह वास्तविकताओं और सत्य तक पहुँचाने वाले भावों को अदा करने की उत्तम क्षमता रखती हैं इस लिए अल्लाह की वह्य की बारिकीयों और उस के भावार्थ की गहराइयों को बयान करने की पूरी क्षमता रखती है। इस में व्यापक शब्द कहे जा सकते हैं और प्रभावी कलाम प्रस्तुत किया जा सकता है। ज़बानी याद (कंठ) करने की दृष्टि से यह अत्यंत अनुकूल भाषा है इस लिए कुर्आन अवतरण के लिए एक बेहतरीन और उचिततम भाषा का चुनाव हुआ ठीक उसी तरह जिस तरह कि आखिरी रसूल की नियुक्ति के लिए मक्का की मुकद्दस सरज़मीन का चुनाव हुआ।

65. व्याख्या के लिए देखिए सूरह यूनस नोट ८८

66. अर्थात् जो लोग कुर्आन पर ईमान लाने से इन्कार करते हैं वे कुर्आन की नसीहत को सुनने के लिए बहरे और उस की रहनुमाई को देखने के लिए अन्धे हो जाते हैं वे जिहालत की जिस बीमारी में लिप्त हैं उस के लिए कुर्आन शिफ़ा है परन्तु जब वे उस से शिफ़ा हासिल करना ही नहीं चाहते तो जिहालत अपना असर दिखा कर रहेगी।

67. अर्थात् इन का हाल यह है कि इन्हें कोई दूर से पुकार रहा हो जिस की आवाज़ इन्हें सुनाई न देती हो। कुर्आन की आवाज़ दिल लगती आवाज़ है मगर इन के लिए दूर की आवाज़ बन गई है।

68. हज़रत मूसा को तौरात प्रदान हुई थी जो सरासर हिदायत की किताब थी। किन्तु बाद में बनी इस्राईल के उन उलमा और धर्म शास्त्रीयों ने जो दुनिया परस्ती और परस्पर शत्रुता में लिप्त हो गए थे उस में भाँत भाँत के विभेद और मतभेद पैदा किये जब उन्होंने तौरात की अयतों का ग़लत मतलब निर्धारण करना शुरू किया तो नौबत शब्दों के परिवर्तन तक पहुँच गई। फिर उन्होंने ने याददेहानी कराने वाली और विशेष रूप से आखिरत की जज़ा और सज़ा से सम्बन्धित याददेहानी को तौरात के पन्नों से गायब कर दिया और अपनी तरफ़ से उस में बहुत सी बातें जोड़ दीं जैसे उस में बिदअतों अर्थात् धर्म के नाम पर नये प्रचलनों को दाखिल किया। फ़िक्ही अर्थात् शास्त्र

में नुक्ताचीनी को जगह दी और अपनी याददाश्त से सही, गलत ऐतिहासिक घटनाएँ भी उस में शामिल कर दीं। यहाँ तक कि वाहियात एवं बेहूदा क्रिस्से और नबियों की जीवनी को दागदार बनाने वाली बातें भी। उन के यही विभेद हैं जिन की ओर इस आयत में इशारा किया गया है।

69. अर्थात् बनी इस्राईल की यह हरकत तो ऐसी थी कि उस को दो टूक निर्णय दुनिया ही में किया जा सकता था किन्तु अल्लाह तआला ने समस्त धार्मिक विभेदों के आखिरी फैसले के लिए क्रियामत का दिन निर्धारित किया है। उस रोज़

खुदा की अदालत इन तमाम बातों का फैसला चुका देगी।

70. अर्थात् तौरात में अहले किताब (यहूदियों) ने शब्दों और अर्थों में परिवर्तन का संशोधन कर के जो विभेद उत्पन्न किये उस के कारण से वे स्वयं अपनी किताब ही के बारे में शक और संदेहों में लिप्त हो गए कि मालूम नहीं बात क्या थी और क्या बयान हुई है। कितनी ही विभेद एवं मतभेद की बातें हैं जिन के बारे में वे विश्वास और दृढ़ता के साथ कुछ नहीं कह सकते और इसी कारणवश वे बहुत ही उलझन में पड़ गए हैं।



जो नेक अमल करेगा तो अपने ही लिए करेगा,
और जो बुराई करेगा तो उस का वबाल भी
उसी पर पड़ेगा। तुम्हारा रब बन्दों पर हरगिज़
जुल्म करने वाला नहीं है। (अल-कुअर्नि)

46. जो नेक अमल करेगा तो अपने ही लिए करेगा, और जो बुराई करेगा तो उस का वबाल भी उसी पर पड़ेगा।⁷¹ तुम्हारा रब बन्दों पर हरगिज़ जुल्म करने वाला नहीं है।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِلْعَبِيدِ ۝۳۹

47. क्रियामत की घड़ी का ज्ञान उस की तरफ़ लौटता है।⁷² कोई फल अपने गिलाफ़ (शिगूफ़े) से बाहर नहीं निकलता और न कोई औरत गर्भवती होती तथा जनती है, मगर उस के ज्ञान में होता है।⁷³ और जिस दिन वह उन को पुकारेगा कि कहाँ है मेरे साझीदार?⁷⁴ वे कहेंगे, हम निवेदन कर चुके हैं हम में से कोई भी इस की गवाही देने वाला नहीं है।⁷⁵

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرَاتٍ مِنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ نَثَلٍ وَلَا تَصْرُخُ بِهِ ۖ وَيَوْمَ يَنَادِيهِمْ أَتَيْنَ شُرَكَاءُئِيَ قَالُوا أَلْذَلِكَ مَا مِثْلًا مِنْ شَهِيدٍ ۝۴۰

48. वे इस से पहले जिन को पुकारते रहे हैं वे सब उन से गुम हो जाएंगे⁷⁶ और वे जान लेंगे कि उन के लिए अब कोई पनाह की जगह नहीं है।

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَدْعُونَ مِنْ قَبْلُ وَظَلُّوا مَا لَهُمْ مِنَ الْحَيٰۤیٰصِ ۝۴۱

49. इन्सान भलाई की दुआ माँगने से नहीं थकता और अगर उस को कोई तकलीफ़ पहुँच जाती है तो निराश और दिल हार बैठता है।⁷⁷

لَا يَسْتُمِرُّ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِنْ مَسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ۝۴۲

50. और अगर इस तकलीफ़ के बाद जो उसे पहुँचती है हम उसे अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं तो कहता है कि मैं इसी का अधिकारी हूँ और मैं नहीं समझता कि क्रियामत क़ायम होगी। और अगर मैं अपने रब की तरफ़ लौटाया ही गया तो मेरे लिए वहाँ भी खुशहाली ही है।⁷⁸ तो हम इन काफ़िरों को ज़रूर बताएंगे कि उन्होंने ने क्या कर्म किये हैं और उन्हें हम ज़रूर कठोर यातना का मज़ा चखाएंगे।

وَلَئِنْ أَدْرَأْتَهُ رَحْمَةً مِنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَذَا إِلَىٰ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً ۖ وَلَئِنْ رُجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِيٰ عِنْدَهُ لَلْحُسْنٰی ۖ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآٰتِیِّنَا ۚ عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝۵۰

51. मनुष्य को जब हम नेमत से नवाज़ते हैं तो वह मुँह फेर लेता है पहलू बचाकर चलता है और जब तकलीफ़ पहुँचती है तो लंबी चौड़ी दुआएँ करने लगता है।⁷⁹

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأٰۤیِبًاۤیِۥهِ ۖ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَآءٍ عَرِيضٍ ۝۵۱

71. यह और इस तरह की अन्य बहुत सी आयतें आखिरत की जज़ा और सज़ा के बारे में इस मौलिक उसूल को प्रस्तुत करती हैं कि नेकी का बदला उसी व्यक्ति को मिलेगा जिस ने नेकी की होगी और बुराई का दण्ड भी वही व्यक्ति भोगेगा जिस ने बुराई की होगी। ऐसा नहीं होगा कि किसी कि नेकी अथवा बुराई किसी अन्य के खाते में जमाकर ली जाए। प्रत्येक व्यक्ति अपने किये का आप ज़िम्मेदार है और उसी के अनुसार उस को जज़ा या सज़ा पाना है।

कर्मों के प्रतिफल के सिलसिले में यह अत्यंत महत्वपूर्ण उसूल है जिस को कुआन ने जगह जगह स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया है। इस से दूसरों को सवाब पहुँचाने के उस तरीके का खण्डन होता है जो आम तौर से मुसलमानों में प्रचलित है। एक व्यक्ति नेकी का कोई काम करता है। और इस का सवाब अपने किसी निकटवर्ती अथवा संबन्धी या किसी बुजुर्ग को बख़्श देता है और समझता है कि फ़लाँ और फ़लाँ व्यक्ति को जो कि मर चुका है और जिस से मुझे लगाव रहा है या जिस बुजुर्ग में मेरी श्रद्धा है उसे सवाब पहुँचा रहा हूँ इस कल्पना के साथ मरने वालों के लिए कुआन ख़्वानी की जाती है। तीजा, चालिसवाँ आदि की रस्में अदा की जाती हैं। न्याज़ और फ़ातिहा ख़्वानी होती है। ग्यारहवीं शरीफ़ का आयोजन किया जाता है। देग आदि चढ़ाई जाती है और उत्तम खाने पकवा कर उन का सवाब किसी वली या पीर को बख़्शा जाता है। ये खाने खुद भी खाते हैं और अपने दोस्तों व सम्बन्धियों को भी खिलाते हैं। मुर्दों की ओर से सदक़ा और ख़ैरात भी करते हैं और मदरसे तथा अस्पताल आदि बनवा कर उन के नाम से वक़फ़ भी कर देते हैं ताकि ख़ैर और भलाई के इन कामों का सवाब उन को मिलता रहे।

मतलब यह कि सवाब पहुँचाने की धारणा ने इस्लामी शरीअत पर एक प्रकार की व्याख्या चढ़ाने का काम किया इस लिए इस को रूक कर समझना तथा इस की समीक्षा ज़रूरी है। हम यहाँ संक्षिप्त रूप से कुछ बातें प्रस्तुत करेंगे।

(A) सवाब पहुँचाने के पक्ष में कुआन की कोई आयत भी पेश नहीं की जा सकती है बल्कि बहुतेरी आयतों से जिन में जज़ा और सज़ा के उसूल को पेश किया गया है इस का खण्डन होता है जैसे:

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ - (آل عمران: २५)

अर्थ: “प्रत्येक व्यक्ति को उस की कमाई का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा।” (आले इमरान २५)

परन्तु सवाब दूसरों को पहुँचाने की सूरत में एक व्यक्ति के कर्मों का बदला दूसरे के खाते में गया तो उसे अपने कर्मों का पूरा पूरा बदला कहाँ मिला?

لَيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَى (النجم: ३९)

अर्थ :- “मनुष्य को वही मिलेगा जिस की उस ने कोशिश की होगी।” (अन्नज़म : ३९)

परन्तु दूसरों को सवाब पहुँचाने की सूरत में मनुष्य ने जो अच्छा कर्म नहीं किया उस का सवाब भी उसे मिल जाता है।

(B) सवाब अल्लाह तआला की ओर से इनाम है जो क्रियामत के दिन नेक कर्मों के बदले में मिलेगा जब कि वह अल्लाह की नज़र में स्वीकार्य ठहरेंगे किन्तु जो लोग दूसरों को सवाब पहुँचाने के क़ायल हैं वे पेशगी सवाब को अपना हक़ समझकर दूसरों को बख़्श देते हैं जब कि हमें निश्चित रूप से यही नहीं मालूम कि हमारे फ़लाँ कर्म पर अल्लाह की ओर से इनाम देने का फ़ैसला हो गया है और वह हमारे खाते में जमा हो गया है अतः हम यह पेशगी फ़ैसला कैसे कर सकते हैं कि उस इनामी बदले को दूसरे के खाते में जमा कर दें?

(C) अब्र (मेहनत का फल) और सवाब (भलाई का इनाम) किसी कर्म के फलस्वरूप अल्लाह की ओर से मिलने वाला इनाम है इस लिए यह एक ऐसी चीज़ है जो स्थानांतरित नहीं हो सकता। कोई व्यक्ति न अपनी नेकी का पारसल किसी को भेज सकता है और न अपनी बदी का। जिस प्रकार बुराई का ववाल किसी को बख़्शा नहीं जा सकता उस प्रकार नेकी का सवाब भी किसी को बख़्शा नहीं जा सकता।

(D) कोई हदीस ऐसी नहीं जिस में दूसरों को सवाब पहुँचाने का प्रोत्साहत दिया गया हो और जिन रिवायतों को सवाब पहुँचाने के सबूत में पेश किया गया है उन से सवाब पहुँचाने की बात सिद्ध नहीं होती बल्कि अधिक से अधिक जो बात सिद्ध होती है वह यह है कि यदि किसी व्यक्ति पर हज्ज फ़र्ज़ हुआ था और वह उस फ़र्ज़ को अदा करने का इरादा रखता था पर उस की मौत पहले ही आ गई। या कोई व्यक्ति बुढ़ापे आदि के कारण हज्ज का फ़र्ज़ अदा नहीं कर सकता और उस के निकटतम नातेदारों में से कोई व्यक्ति उस की ओर से प्रतिनिधित्व स्वरूप हज्ज करना चाहता है तो कर सकता है। प्रतिनिधित्व का भाव “अन्” शब्द से बिल्कुल स्पष्ट है जो इस बारे में हदीस में आया है आप ने फ़रमाया :-

حُجِّي عَنْهَا - (بخاری ابواب العمرة)

अर्थ :- “तुम उस की तरफ़ से हज्ज करो।” (बुखारी अबवाबुल उमरह)

और एक अन्य हदीस में है कि एक औरत ने हज्जतुलविदा के अवसर पर आपसे पूछा :-

يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ فَرِيضَةَ اللَّهِ عَلَى عِبَادِهِ فِي
الْحَجِّ أَذْرَكَتْ أَبِي شَيْخًا كَبِيرًا لَا يَسْتَطِيعُ
أَنْ يَسْتَوِيَ عَلَى الرَّاحِلَةِ فَهَلْ يَقْضَى عَنْهُ أَنْ
أَحُجَّ عَنْهُ؟ قَالَ نَعَمْ. (بخاری ابواب العمرة)

अर्थ : “ऐ अल्लाह के रसूल ! अल्लाह ने अपने बन्दों पर हज्ज का जो फ़रीज़ा आयद किया है वह मेरे पिता पर फ़र्ज़ हो गया है और वे बहुत बूढ़े हो गए हैं। सवारी पर भी सीधे बैठ नहीं सकते तो अगर मैं उन की तरफ़ से हज्ज करूँ तो उन की तरफ़ से अदा हो जाएगा? आप ने फ़रमाया “हाँ” (बुख़ारी अबवाबुल उमरह)

स्पष्ट है यह बात प्रतिनिधित्व की है और प्रतिनिधित्व हज्ज के फ़र्ज़ को अदा करने के सिलसिले में विवशता हो जाने की दशा में है और एक सशर्त अनुमति है। इस में सवाब पहुँचाने के लिए कोई दलील नहीं है क्योंकि हदीस में कहीं यह नहीं कहा गया है कि हज्ज करो और उस का सवाब बख़्शो और न किसी सवाल करने वाले ने यह सवाल किया था कि मैं फ़लों के लिए हज्ज करूँ या हज्ज कर के फ़लों को सवाब बख़्शूँ।

प्रतिनिधित्व स्वरूप हज्ज करने के सिलसिले में इमाम मालिक की राय यह है कि यह उसी दशा में किया जाए जब कि मरने वाले ने वसीयत की हो। अगर उस ने वसीयत नहीं की थी तो उस की ओर से हज्ज न किया जाए। (फ़िक्हुस्सुन्न: जिल्द १ पृष्ठ ६३७) और यही राय अधिक सही जान पड़ती है क्योंकि वसीयत की सूरत में मरने वाले की नीयत का भी पता चलता है और उस के माल में से हज्ज पर खर्च करने की सूरत भी निकल आती है।

अन्य रिवायतें जो सवाब पहुँचाने के पक्ष में प्रस्तुत की जाती हैं उन में से कुछ तो इस भावार्थ में हैं कि यदि किसी व्यक्ति ने किसी अच्छे काम की वसीयत की तो उस के उत्तराधिकारी उस को पूरा करें क्योंकि मरने वाले को अपने माल में एक तिहाई की हद तक वसीयत करने का हक़ है, और कुछ रिवायतें प्रमाण की दृष्टि से सही नहीं हैं और जो रिवायत कुर्आन के बयान किये हुए मौलिक उसूलों के विपरीत हो वह कदापि अनुकरणीय तर्क वा हुज्जत नहीं हो सकती।

(E) सवाब पहुँचाने का तरीक़ा सहाबा किराम में प्रचलित नहीं था। अतः उहद के शहीदों के लिए न कुर्आन ख़वानी की गई और न नियाज़ और फ़ातिहा।

(F) सवाब पहुँचाने को दुआ समझना भी सही नहीं इस

लिए कि दुआ तो अल्लाह तआला से किसी बन्दे के लिए क्षमा की प्रार्थना है न कि उस के किसी अमल के सवाब का इस खाते से उस खाते में स्थानांतरित होना। अगर दुआ को सवाब पहुँचाना कहा जाये तो फिर बददुआ को भी अज़ाब पहुँचाने का साधन मानना पड़ेगा जब कि इस का क़ायल कोई नहीं। काफ़िरों के लिए हिदायत की दुआ की जाती है फिर क्या सवाब पहुँचाना भी ज़िन्दा लोगों के लिए किया जाएगा?

(G) हदीस में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

إِذَا مَاتَ الْإِنْسَانُ انْقَطَعَ عَنْهُ عَمَلُهُ إِلَّا مِنْ
ثَلَاثَةٍ مِنْ صَدَقَةٍ جَارِيَةٍ أَوْ عِلْمٍ يُنْتَفَعُ بِهِ
وَوَلَدٍ صَالِحٍ يَدْعُو لَهُ. (مسلم کتاب الوصية)

अर्थ :- जब मनुष्य मर जाता है तो उस का अमल (कर्म) समाप्त हो जाता है सिवाय तीन चीज़ों के एक सदक़ा ज़ारिया (अर्थात् ऐसा सदक़ा फल जो उस के खाते में सदा जमा होता रहे) दूसरे ज्ञान जिस से लोग लाभ उठाएँ और तीसरे नेक औलाद जो उस के लिए दुआ करे।” (मुस्लिम किताबुल वसीयत)

ये तीनों वे चीज़ें हैं जिन में इन्सान के अपने अमल का दख़ल है। सदक़ा ज़ारिया तो वक्फ़ की सूरत में उसी का माल है। लाभदायक पुस्तकों के लेखन और इस प्रकार की अन्य वैज्ञानिक सेवाएँ भी उसी का कर्म है जिस से लोग उस के मरने के बाद भी लाभ उठाते हैं। और नेक औलाद का दुआ करना उस के हक़ में अज़्र मिलने का कारण है क्योंकि उस ने उन को दीन सिखाया था और उन की सही तरबियत की थी। इस हदीस में सवाब पहुँचाने का कोई उल्लेख नहीं है। यदि इस की कोई हक़ीक़त होती तो उस का इस में उल्लेख होता।

(H) जो बातें ख़ालिस इबादत से सम्बन्धित हैं उन में क्रियास, अनुमान और इज्तिहाद का सवाल पैदा नहीं होता और सवाब का सम्बन्ध चूँकि इबादती मामलों से है इस लिए सवाब पहुँचाने का मसला इज्तिहाद की परिधि में नहीं है।

इन कारणों से हम समझते हैं कि जिस कर्म में मनुष्य की अपनी नीयत और उस के प्रयासों का कोई हाथ न हो बल्कि वह दूसरे का कर्म हो तो उस का सवाब उस को नहीं बख़्शा जा सकता। कुर्आन और सुन्नत में किसी के कर्मों का सवाब किसी अन्य को बख़्शने के लिए कोई दलील नहीं है परन्तु आज कल के ज़माने में सवाब पहुँचाने की धारणा ने कितनी ही बिदअतों व नई बातों को प्रचलित कर दिया है। समझ में नहीं आता कि

इन लोगों के पास सवाब का इतना भण्डार कहाँ से आ गया कि उन्होंने दूसरों के खाते में जमा करना शुरू कर दिया और विशेष रूप से उन बुजुर्गों और वलियों को जिन के बारे में वे पहले ही से इस बात के दावेदार हैं कि वे जन्नती हैं। अगर इन लोगों में अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास होता तो वे स्वयं अपनी मुक्ति और बचाव की चिन्ता करते और अपने नेक आमाल के बारे में कभी ये ख्याल न करो की वह अधिक (Surplus) हो गये हैं। लिहाज़ा अपनी कुछ नेकियों का सवाब वे दूसरों को अलाट करते फिरें। सवाब पहुँचाने पर अतिरिक्त बहस के लिए देखिए सूरह नज्म नोट ४८

72. अर्थात् क्रियामत कब आएगी इस का ज्ञान अल्लाह ही को है। उस के सिवा कोई नहीं जिस को इस की खबर हो इस लिए अल्लाह का रसूल भी इस का समय नहीं बता सकता।

73. अर्थात् जिस प्रकार फल शिगूफ़े के गिलाफ़ को फाड़ कर निकल आता है और जिस प्रकार गर्भवती बच्चा जनती है उसी प्रकार क्रियामत भी दुनिया के खोल को फ़ाड़ कर प्रकट होगी और इस कायनात के गर्भ से प्रकट होगी। और जिस प्रकार अल्लाह ही के ज्ञान में यह बात होती है कि फल कब फूट निकलेगा और कौन सी स्त्री कब गर्भवती होगी और कब बच्चा जनेगी उसी प्रकार क्रियामत कब प्रकट होगी इस का ज्ञान भी अल्लाह ही को है। वह ठीक अपने समय पर प्रकट होगी।

74. अर्थात् ईश्वरत्व में मेरे जो साझीदार तुम ने ठहरा रखे थे वे कहाँ हैं?

75. अर्थात् आज हम में से कोई भी इस का दावेदार नहीं कि अल्लाह का उस के ईश्वरत्व में कोई साझीदार हैं।

76. अर्थात् जिन जिनको इन्होंने ने खुदा अथवा ईश्वर समझ रखा था और जिन जिन की पूजा वे करते थे उन में से कोई भी उन की सहायता को नहीं पहुँच सकेगा। सब हवा हो जाएंगे।

77. अर्थात् आम तौर से इन्सान का हाल यह है कि वह अपने रब से सांसारिक नेमतों को माँगता ही रहता है। और अपने लिए राहत और खुशहाली का अधिक से अधिक इच्छुक होता

है। धन दौलत और सांसारिक सामग्रियों में वृद्धि की दुआएँ करते हुए कभी नहीं थकता। परन्तु जब कोई कष्ट पहुँचता है या मुसीबत में मुब्तिला हो जाता है तो फिर बजाय इस के कि अल्लाह के समक्ष गिड़गिड़ा कर दुआएँ करता रहे और दुआ के देर से कुबूल होने के कारण थक हार कर बैठ न जाएँ, शीघ्र ही निराश हो जाता है और मन हार बैठने के आसार उस पर ज़ाहिर होने लगते हैं।

78. अर्थात् मनुष्य का यह हाल भी अजीब है कि जब अल्लाह तआला उस की तकलीफ़ को दूर कर के उस की राहत का सामान करता है तो वह उसे अल्लाह का एहसान नहीं समझता और न उसे परीक्षा सामाग्री समझता है, बल्कि उसे अपनी योग्यता का अहं होता है और समझता है कि मैं तो इस का उचित रूप से योग्य अधिकारी हूँ। क्रियामत के बारे में वह समझता है कि पहली बात तो यह कि वह आएगी ही नहीं और अगर प्रकट हुई तो मेरे रब के पास भी मुझे नेमतें ही मिलेंगी। मतलब यह कि कितने ही लोग इस भ्रम में लिप्त रहते हैं कि जब दुनिया में धन संसाधन की बाहुल्यता उन्हें प्राप्त हो गई है तो कोई कारण नहीं कि क्रियामत के दिन अगर वह प्रकट हो ही गई तो उन्हें ये सारी नेमतें प्राप्त नहीं होगी। वे जिस प्रकार दुनिया में आबाद रहे हैं उसी प्रकार आखिरत में भी आबाद रहेंगे। परन्तु क्रियामत का एक झटका ही उन के इन भ्रम को चूर चूर कर के रख देगा।

79. अर्थात् कैसा मूर्ख और नाक़दर है इन्सान कि जब अल्लाह तआला उस पर अपनी दया उंडेलता है तो अपने रब की ओर आकर्षित नहीं होता बल्कि उस से व्यवहारिक रूप से कट जाता है परन्तु मुसीबत में खुदा ज़रूर याद आता है और लंबी चौड़ी दुआएँ करने लगता है।

ध्यान रहे कि इन आयतों में मनुष्य के विभिन्न आचरण प्रस्तुत किये गये हैं अपने रब के प्रति किसी का एक आचरण होता है तो किसी का दूसरा और किसी का उस से भी अलग।



52. कहो तुम ने यह भी सोचा कि अगर यह अल्लाह की तरफ़ से हुआ और तुम ने इस का इन्कार किया, तो उस व्यक्ति से बढ़कर गुमराह और कौन होगा जो विरोध में बहुत दूर तक (आगे) निकल गया हो।⁸⁰

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهِ مَنْ
أَضَلُّ مِنْهُ هُوَ فِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ⑤२

53. शीघ्र ही हम इन को अपनी निशानियाँ आफ़ाक़ (बाह्य जगत) में भी दिखाएँगे और उन के अपने नफ़्स (ज़ात) में भी, यहाँ तक कि उन पर यह बात खुल जाएगी कि यह सत्य है।⁸¹ क्या यह बात काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब हर चीज़ का साक्षी है।

سَرُّهُمْ اِلْتِنَافِ الْاَفَاقِ وَفِي اَنْفُسِهِمْ حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ
اَنَّهُ الْحَقُّ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ⑤३

54. सुनो ! ये लोग अपने रब के समक्ष पेशी के बारे में शक में हैं। सुन लो वह हर चीज़ को अपने घेरे में लिए हुए है।⁸²

اَلَا اِنَّهُمْ فِي مَرِیةٍ مِّنْ لِّقَاءِ رَبِّهِمْ اَلَا اِنَّهُمْ بِكُلِّ
شَيْءٍ مُّحِيطٌ ⑤४

80. अर्थात् कुआन के विरोध में इतनी दूर तो न निकल जाओ कि संभावनाओं की हद तक भी इस पर विचार और चिन्तन करने के लिए तैयार न रहो, क्योंकि यह अगर अल्लाह की किताब हुई तो फिर इस का इन्कार हमें कितना महंगा पड़ेगा। हम अल्लाह के समक्ष उस के कलाम को रद्द करने का क्या औचित्य प्रस्तुत कर सकेंगे। और फिर इस इन्कार की कैसी कड़ी सजा हमें भुगतनी होगी। अतः समझदारी का तकाजा यह है कि संजीदगी से इस बात पर विचार किया जाए कि वास्तव में यह अल्लाह का कलाम है या नहीं।

81. यह बहुत बड़ी भविष्यवाणी है जो कुआन ने की है कि उस की सत्यता की निशानियाँ दुनिया (बहय जगत) में भी जाहिर होंगी और आदमी के अपने अन्दर भी। और सच्चाई यह है कि कुछ समय बाद कुआन का इन्कार करने वालों ने देख लिया कि कुआन ने रसूल और उस पर ईमान लाने वालों के पक्ष में अल्लाह की मदद की जो भविष्य वाणी की थी वह पूरी हुई। इस्लाम को विजय और संप्रभुता प्राप्त हुई। कुआन की रौशनी में चलने वालों की पाकीजा ज़िन्दगियों को देख कर लोग यह सोचने पर विवश हो गए कि यह न शायरी है और न दिवानेपन की बातें और न ही जादूगरी। जातियाँ इस्लाम की गोद में आती चली गईं और जो कट्टर काफ़िर थे उन का अन्जाम इस दुनिया ही में बहुत बुरा हुआ मगर आयत का भावार्थ इस हद तक सीमित नहीं। इस की सत्यता की निशानियाँ क्रियामत तक प्रकट होती रहेगी।

अतीत में कुआन की कितनी ही बातें मनुष्य को अजीब मालूम होती थी परन्तु मौजूदा दौर में इन्सान ने ऐसी आश्चर्यजनक चीज़ें ईजाद कर ली हैं कि कुआन की कोई बात भी विचित्र और आश्चर्यजनक नहीं रही। कुआन ने कहा था क्रियामत के दिन लोगों के कर्मों को तौला जाएगा। ऊपर से यह बात विचित्र सी मालूम हो रही थी किन्तु आज के आधुनिक युग में मनुष्य ने ताप मापी और भूकंप की तीव्रता मापने के यंत्र ईजाद कर के इस बात का सबूत उपलब्ध करा दिया है कि मनुष्य की मनःस्थितियाँ भी नापी और तौली जा सकती हैं। कुआन ने कहा था कि हर हर व्यक्ति के कर्मों का रिकार्ड तैयार किया जा रहा है जिस से कोई बात भी चाहे वह छोटी हो या बड़ी दर्ज होने से नहीं रहती। इस बात को भी उस ज़माने के लोगों को समझाना मुश्किल था परन्तु माइक्रो फिल्म (Microfilm) के आविष्कार ने इस मसले को हल कर दिया। कुआन ने कहा था, मनुष्य के हाथ पाँव और उस की खालें क्रियामत के दिन बोल उठेंगी और उस के कर्मों की गवाही देंगी। लोगों के लिए यह बात भी बड़ी ही विचित्र और चकित कर देने वाली थी। परन्तु बोलती फिल्मों और विडियो कैसेट के आविष्कार ने स्पष्ट कर दिया कि यह सब कुछ संभव

है।

कुआन ने कहा था सूरज, चाँद और सितारे देवता नहीं हैं बल्कि अल्लाह के पैदा किये हुए हैं जिन को विशेष प्रकार की सेवा में लगा दिया गया है। पुराने ज़माने के अंधःविश्वासी लोग इस वास्तविकता को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हुए किन्तु वैज्ञानिक खोजों ने इन सब की असलियत खोल दी। अब मनुष्य को मालूम हो गया की सूरज में कौन से पदार्थ और कौन से तत्व पाये जाते हैं यहाँ तक कि उस ने उस का तापमान भी मालूम कर लिया है और यह भी कि उस की गर्मी (Temperature) किस प्रकार ज़मीन तक पहुँचती है। सितारे उपग्रह किस चीज़ से बने हैं और वे क्यों रौशनी देते हैं इस की भी खोज लगा कर मनुष्य ने अपने ज्ञान में अत्याधिक वृद्धि कर ली है और चाँद पर आदमी ने पहुँच कर उस को अपनी आँखों से देख लिया कि यह मिट्टी और पत्थर ही से बना हुआ है। यहाँ तक कि वहाँ की मिट्टी ज़मीन पर अपने साथ ले आया ताकी अन्य लोग भी उस को देख लें। क्या यह सब वाहय जगत में प्रकट होने वाली अल्लाह की निशानियाँ नहीं हैं और क्या इन बातों से बहुदेववादी धारणाओं का खण्डन नहीं होता और एक अकेले खुदा की संपूर्ण कुदरत और उस के कायनात के शासक संचालक होने का प्रमाण नहीं मिलता?

इसी प्रकार मनुष्य के अन्दर (नफ़स में) भी वे निशानियाँ स्पष्ट हो गई हैं जो एकेश्वरवाद और परलोक के जीवन पर स्पष्ट रूप से तर्क प्रस्तुत करती हैं। जिव विज्ञान (Biology) और भ्रूण विज्ञान (Embryology) ने मनुष्य की पैदाइश के बारे में ऐसे ऐसे रहस्योद्घाटन किये हैं कि अक्ल दंग रह जाती है। मिसाल के तौर पर पुरुष के वीर्य में शुक्राणु (Spermatozoa) का होना और स्त्री के वीर्य में अण्डाणु (Ovum) का होना फिर दोनों के मिलाप से भ्रूण की संरचना की शुरुआत होना फिर उस शुक्राणु और उस अण्डाणु में जिन को सूक्ष्मदर्शी से ही देखा जा सकता है, पैतृक गुण सूत्र (Chromosomes) का मौजूद होना एक सृष्टा की सृजन शक्ति का कितना बड़ा सबूत है। उस की कुदरत और पालन पोषण के इन करिश्मों को देखते हुए दूसरे जीवन का दृढ़ विश्वास पैदा हो जाता है जिस की सूचना कुआन दे रहा है।

इस प्रकार कुआन की एक एक बात ज्ञान और विज्ञान की कसौटी पर पूरी उतर रही है। और उस की सत्यता और अधिक स्पष्ट होती चली जा रही है। कुआन की कुछ भविष्य वाणियाँ ऐसी भी हैं जो अपने आप को साकार करने के लिए समय का इन्तिज़ार कर रही हैं। जैसे याजूज माजूज की यलगार (सूरह अम्बिया आयत ९६) और ज़मीन से एक विचित्र जानवर का निकलना जो मनुष्य से बातें करेगा (सूरह नमल आयत ८२)

आदि। इन निशानियों को क्रियामत के करीबी ज़माने में पैदा होने वाली नसलें ही देख सकेंगी।

८२. इन सभी निशानियों के बावजूद जिन का ज़िक्र ऊपर हुआ, आज भी अधिकतर लोगों का हाल यह है कि वे अपने रब के समक्ष पेशी के बारे में शक में पड़े हुए हैं। वे यह समझते

हैं कि दुनिया में मनमानी करने के लिए उन्हें आज़ाद छोड़ दिया गया है, हालाँकि वह हस्ती जिस ने उन्हें पैदा किया है पूरी कायनात को अपने घेरे में लिए हुए हैं। उस के ज्ञान और उस के क़ाबू से कोई चीज़ भी बाहर नहीं। इस लिए उस के बन्दों की उस के समक्ष हाज़िरी ज़रूरी है। वे इस से किसी तरह बच नहीं सकते।



४२. सूरह अश-शूरा

नाम :- आयत ३८ में शूरा (परस्पर परामर्श) को ईमान वालों का तरीका बताया गया है इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अश-शूरा है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह सूरह “हा मीम अस्सज्दा” के बाद नाज़िल हुई होगी अर्थात् मक्का के मध्य काल में।

केन्द्रीय विषय :- खुदा और मज़हब के मामले में सत्य क्या है इस को जानने का एक मात्र साधन अल्लाह की वह्य है यह दीन (व्यवस्था) जिस को अल्लाह का रसूल कुर्आन के माध्यम से प्रस्तुत कर रहा है अल्लाह का निर्धारित किया हुआ दीन है जिस की वह्य (प्रकाशना) उस ने अपने रसूल पर की है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से १२ भूमिका है जिन में संक्षिप्त रूप से वे बातें प्रस्तुत की गई हैं जिन से अल्लाह की वह्य के विस्तृत विषयों को समझने में मदद मिलती है।

आयत १३ से २० में स्पष्ट किया गया है कि यह वही दीन है जिस की प्रकाशना नबियों की ओर की गई थी। नबी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिदायत की गई कि तुम इसी पर जमे रहो और इसी की ओर बुलाओ। जो लोग इस सिलसिले में बहस में उलझ रहे हैं उन के पास कोई तार्किक सत्य अथवा सत्य की कोई हुज्जत (दलील) नहीं है।

आयत २१ से ३५ में अपनी ओर से धर्म का गठन करने वालों और उस का अनुसरण करने वालों पर कड़ी पकड़ की गई है और उन लोगों को खुशखबरी सुनाई गई है जो अल्लाह के दीन पर ईमान ला कर नेक अमल करते हैं तथा इन्कार करने वालों के कुछ संदेहों का निवारण भी किया गया है।

आयत ३६ से ४३ में इस दीन को स्वीकार करने वालों के वे गुण बयान किये गए हैं जो कश्मकश के इस मरहले से सही सलामत गुज़ार सकते हैं और जो कामयाबी की ज़मानत हैं।

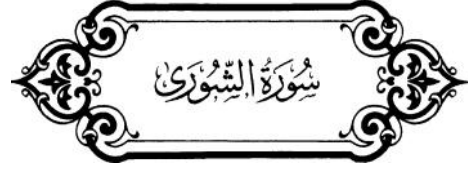
आयत ४४ से ५० में विरोधियों को उन की गुमराही पर सावधान करते हुए अपने रब की पुकार पर खड़े हो जाने की दअवत दी गई है।

आयत ५१ से ५३ सूरह की अन्तिम आयतें हैं जिन में उस मज़मून का अतिरिक्त स्पष्टीकरण है जिस से सूरह की शुरुआत हुई थी, अर्थात् अल्लाह की वह्य उस की प्रकाशना।

४२. सूरह अश्-शूरा

आयतें : ५३

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा - मीम ।

حَمْدٌ ①

2. ऐन, सीन, काफ़ ¹

عَسَق ②

3. इसी प्रकार अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी तुम्हारी तरफ़ व्हय (प्रकाशना) करता है। और तुम से पहले जो रसूल गुजरे हैं उन की तरफ़ भी व्हय करता रहा है।²

كَذَلِكَ يُوحِي إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ

اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ③

4. जो कुछ भी आसमानों में है और जो कुछ भी ज़मीन में है, सब उसी का है। वह अत्यन्त बुलन्द और महान है।³

لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ④

5. करीब है कि आसमान अपने ऊपर से फट पड़े।⁴ फ़रिश्ते अपने रब की प्रशंसा के साथ गुणगान करते हैं। और ज़मीन वालों के लिए क्षमा की प्रार्थना करते रहते हैं।⁵ सुनो अल्लाह ही क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।⁶

تَكَادُ السَّمَوَاتُ يَنْقَطِرْنَ مِنْ قُوتِهِنَّ وَالْمَلَائِكَةُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ

رَبِّهِنَّ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَنْ فِي الْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَفُورُ

الرَّحِيمُ ⑤

6. जिन लोगों ने उस को छोड़ कर दूसरे संरक्षक बना रखे हैं ⁷अल्लाह उन पर निगाह रखे हुए है ⁸और तुम को उन पर ज़िम्मेदार नियुक्त नहीं किया गया है।⁹

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ اللَّهُ حَفِظَ عَلَيْهِمْ وَمَا أَنْتَ

عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ⑥

7. और (ऐ नबी !) इस प्रकार हम ने तुम पर अरबी कुआन व्हय किया है ताकि तुम उम्मुलकुरा ¹⁰(मक्का) और उस के इर्द गिर्द रहने वालों को खबरदार करो ¹¹ और जमा होने के दिन से डराओ जिस के आने में कोई शक नहीं ¹² एक गिरोह जन्नत में जाएगा ¹³ और दूसरा गिरोह दोज़ख (भड़कती आग) में ¹⁴ ।

وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِتُنْذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ

وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ لِأَرْبَابٍ فِيهِ

فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ⑦

1. ये विभक्त अक्षर हैं जिन से कलाम की शुरूआत करने का फ़ायदा यह है कि उन की तिलावत आदमी को चौंका देती है और वह असल कलाम की ओर आकर्षित हो जाता है। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रर: नोट १)

इस सूरह में “हा मीम” का इशारा अल्लाह के हकीम अर्थात् तत्त्वदर्शी होने के गुण की ओर है जिस का वर्णन आयत ३ और ५१ में हुआ है। इसी प्रकार ऐन का इशारा अजीज़ (प्रभुत्वशाली) अली (बुलन्द) और अलीम (ज्ञान वाला) होने के गुणों की ओर है जिन का वर्णन आयत ३, ४, और ५० में हुआ है। सीन का इशारा अल्लाह के समी (सुनने वाला) होने के गुण की तरफ़ है जिस का वर्णन आयत ११ में हुआ है। और काफ़ का इशारा अल्लाह के क़दीर (कुदरत वाला) और क़वी (शक्तिशाली) होने की तरफ़ है जिन का वर्णन आयत ९ और १९ में हुआ है।

2. वह्य संदेश भिजवाने का वह गुप्त साधन है जो अल्लाह तआला अपने पैग़म्बरों के लिए अपनाता है। साधारण लोग इस साधन को नहीं पा सकते। इस लिए जो हक़ीक़त पसन्द नहीं होते उन्हें इस पर आश्चर्य होता है और वे इस का इन्कार कर बैठते हैं। कुआन के अल्लाह की वह्य होने को आश्चर्य दृष्टि से देखा जा रहा था इस लिए उस के वास्तव में होने का विश्वास दिलाते हुए फ़रमाया कि संदेश भिजवाने का यही तरीक़ा हम ने इस रसूल के मामले में भी अपनाया है और यही तरीक़ा इस से पहले भी रसूलों के बारे में अपनाया जाता रहा है। आयत में सम्बोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है किन्तु समझाना उन लोगों को अभिप्रेत है, जो वह्य को आश्चर्य की निगाह से देखते हैं।

आज का आधुनिक मानव भी खुदा और धर्म के मामले में पक्षपात और वैमनस्य के चलते वह्य को जो उस के बारे में ज्ञान का सर्वाधिक विश्वस्नीय साधन है, मानने के लिए तैयार नहीं है। जब कि स्वयं इन्सान ने आसमान के अन्तरिक्ष में ऐसे सेटलाइट दागे हैं जिन के सिग्नल वह सुनता और समझता है।

3. अली (बुलन्द) है पद की दृष्टि से और महान है प्रतिष्ठा एवं सम्मान की दृष्टि से।

4. अर्थात् अल्लाह की हैबत आसमानों पर ऐसी छायी है कि असंभव नहीं कि वे फट पड़ें और क्रियामत के दिन वे सचमुच फट पड़ेंगे।

5. ज़मीन वालों से तात्पर्य ज़मीन के वासी ईमान वाले हैं जैसा कि सूरह मोमिन आयत ७ में स्पष्ट रूप से बयान हुआ है। यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि फ़रिश्ते आसमान में रहते हुए

ज़मीन पर बसने वाले मोमिनीन से गहरा हार्दिक लगाव रखते हैं और सम्बन्ध रखते हैं और उन की हमदर्दी में उन की माफ़ी के लिए अल्लाह के हुज़ूर प्रार्थना करते हैं।

इस आयत में जो कुछ बयान हुआ इस से अन्दाज़ा होता है कि अल्लाह की क्या शान है और कैसा जलाल (प्रताप) है आसमानों में !

6. अर्थात् गुनाहों को क्षमा करना और दया करना अल्लाह ही का काम है। फ़रिश्ते केवल दुआ कर सकते हैं। इस लिए अपने पापों की क्षमायाचना अल्लाह ही से करनी चाहिए और उसी से दया की प्रार्थना करनी चाहिए।

इस से ईसाईयों की उस धारणा का आप से आप खण्डन होता है कि हज़रत मसीह क्रियामत के दिन अपने मानने वालों के गुनाह बख़्श देंगे उन्हें क्षमा प्रदान करेंगे।

7. वली (संरक्षक) की व्याख्या के लिए देखिए सूरह कहफ़ नोट १२८ तथा सूरह आराफ़ नोट ६

8. और जब अल्लाह उन पर निगाह रखे हुए है तो वह आवश्यक ही इन के इस अपराधी रवैये पर पकड़ करेगा।

9. अर्थात् उन के अमल के तुम ज़िम्मेदार नहीं हो। तुम्हारा यह काम नहीं कि अल्लाह के दिन का ज़बरदस्ती उन्हें क़ायल कराओ बल्कि तुम्हारा काम केवल पैग़ाम पहुँचा देना है।

10. उम्मुल कुरा का मतलब है बस्तियों का केन्द्र, मक्का न केवल अरब इलाक़े का केन्द्रीय नगर था बल्कि दीनी लिहाज़ से भी केन्द्रीय हैसियत रखता था। इस लिए उसे उम्मुलकुरा कहा गया।

11. चूँकि कुआन के पहले संबोधी मक्का और उस के इर्द गिर्द के लोग थे और उन की भाषा अरबी थी इसी लिए कुआन को भी अरबी भाषा में नाज़िल किया गया।

12. क्रियामत के दिन से ख़बरदार करना कुआन के नाज़िल होने का महत्वपूर्ण उद्देश्य है इस लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिदायत हुई कि आप क्रियामत के दिन से लोगों को डराएँ। कुआन की दअवत का यह महत्वपूर्ण पहलू है जिस का लिहाज़ उन लोगों को करना चाहिए जो दिन की दअवत देने के लिए उठें।

13. अर्थात् ईमान ला कर नेक अमल करने वालों का गिरोह।

14. अर्थात् काफ़िरों और बहुदेववादियों का गिरोह।

8. अगर अल्लाह चाहता तो सब को एक ही उम्मत बना देता ¹⁵ किन्तु वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाखिल करता है ¹⁶ और ज़ालिमों का न कोई संरक्षक है और न सहायक।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يَدْخُلُ مَنْ
يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ①

9. क्या उन्होंने ने उस को छोड़कर दूसरों को संरक्षक बना रखा है ? ¹⁷ संरक्षक तो अल्लाह ही है। और वह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा। वह हर चीज़ पर सामर्थ्यवान (क्रादिर) है।

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۚ قَالَ اللَّهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي
الْمَوْتَى وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ②

10. जिस चीज़ में भी तुम लोगों ने विभेद किया है उस का फैसला अल्लाह के सुपुर्द है। ¹⁸ वही अल्लाह मेरा रब है। उसी पर मैं ने भरोसा किया और उसी की तरफ़ मैं रूजू करता हूँ।

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ③

11. आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला। जिस ने तुम्ही में से तुम्हारे जोड़े बनाए और मवेशियों के भी जोड़े पैदा किये। वह तुम्हारी नस्लें इस में फैलाता है। ¹⁹ इस के जैसी कोई चीज़ नहीं ²⁰ वह सब कुछ सुनने और देखने वाला है।

فَاطْرُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا
وَمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا يَذُرُّكُمْ فِيهِ لَكُمْ كَيْفَ تَلْهَى شَيْءٌ وَهُوَ
السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ④

12. आसमानों और ज़मीन की कुन्जियाँ उसी के क़ब्ज़े में हैं। ²¹ वह जिसे चाहता है कुशादा रिज़क़ देता है और जिसे चाहता है नपा तुला देता है। ²² वह हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है।

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ⑤

13. उस ने तुम्हारे लिए वही दीन निर्धारित किया है जिस की हिदायत उस ने नूह को की थी और जिस की वहय (ऐ नबी !) हम ने तुम्हारी तरफ़ की है और जिस की हिदायत हम ने इब्राहीम और मूसा और ईसा को की थी कि दीन को क़ायम रखो और इस मामले में विभेद एवं विच्छेद में न पड़ो। ²³ बहुदेववादियों को वह चीज़ अप्रिय है जिस की ओर तुम उन्हें बुला रहे हो। ²⁴ अल्लाह जिसे चाहता है अपनी राह के लिए चुन लेता है और अपनी तरफ़ मार्गदर्शन उसी का करता है जो उस की तरफ़ रूजू करे। ²⁵

شَرَعَ لَكُمْ مِنَ الدِّينِ مَا وَصَّى بِهِ نُوحًا وَالَّذِي أَوْحَيْنَا
إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى أَنْ أَقِيمُوا
الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِينَ مَا
تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ اللَّهُ يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَنْ يَشَاءُ
وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ يُنِيبُ ⑥

15. अर्थात् अल्लाह चाहता तो बलपूर्वक सब को एक ही दीन इस्लाम का आज्ञापालक बना देता। किसी दूसरे धर्म का अस्तित्व ही नहीं हो सकता था। किन्तु अल्लाह की मर्जी यह हुई कि मनुष्य को चुनाव करने और अधिकार की स्वतंत्रता दे कर आजमाया जाए कि वह अपनी बुद्धि और विवेक का इस्तेमाल कर के उस जीवन प्रणाली को चुनता वा स्वीकार करता है जो अल्लाह ने वह्य के द्वारा और रसूलों के माध्यम से भेजा है या क़ौमों और सम्प्रदायों के मनगढ़न्त धर्मों में से किसी धर्म का आज्ञापालक बन कर रह जाता है। अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह माइदा नोट १५९

16. अर्थात् जिस को सत्य धर्म पर चलने की तौफ़ीक़ मिली वह अल्लाह की रहमत में दाखिल हुआ और यह तौफ़ीक़ उन्हीं को मिलती है जो इस की सच्ची तलब रखते हैं। अल्लाह की मर्जी उस की हिकमत के बिलकुल अनुरूप होती है।

17. यहाँ विशेष रूप से इशारा उन लोगों की तरफ़ है जिन्होंने ने अलग अलग धर्म बनाए और उन के संस्थापकों को उन के भक्तों वा श्रद्धालुओं ने अपना सरपरस्त और संरक्षक बना लिया और इन गुमराह पेशवाओं के पीछे चल कर गुमराह होते रहे।

18. यह और इस प्रकार की दूसरी आयतें पुष्टि करती हैं कि समस्त विवादित बातों में फ़ैसले का हक़ अल्लाह ही को है। अतः अल्लाह के दीन ने जिन बातों को भी अपनी परिधि क्षेत्र में ले लिया है उन में से किसी और के फ़ैसले को स्वीकार नहीं किया जा सकता चाहे उस का सम्बन्ध आस्था, एवं धारणा से हो, चाहे इबादतों से हो चाहे सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक मामलों से। इस आयत में अल्लाह की संप्रभुता को दो टूक अन्दाज़ में पेश किया गया है। इस से लाज़िम आता है कि :

प्रथम लोगों के बीच धर्म से सम्बन्धित जो मतभेद उत्पन्न हो गए हैं उन के सिलसिले में वे अल्लाह की किताब-कुर्आन को निर्णायक मानें।

द्वितीय वैध, अवैध, हलाल, हराम, परिवारिक, (निकाह, तलाक़, नुफ़्का आदि) सांस्कृतिक (कला आदि) सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं में अल्लाह ही के आदेशों की ओर रूजू करें और ऐसे क़ानून निर्मित न करें जो उस के क़ानून और उस के रसूल के तरीक़े (सुन्नत) के विरुद्ध हों।

तृतीय अल्लाह के दीन में न कोई संशोधन किया जाए और न काट छाँट। जो बिदअतें मुसलमानों के विभिन्न वर्गों ने ईजाद की हैं उन को रद्द कर दिया जाए तथा अल्लाह और उस के रसूल के आदेशों के आगे किसी की बात को कोई महत्व न दिया जाए और न किसी के अंधानुकरण (तक़लीद) का फंदा अपनी गर्दन में डाला जाए। खुले मन से हर उस बात को स्वीकार किया

जाए जिस का हुक्म अल्लाह ने दिया और जो उस के रसूल के तरीक़े (सुन्नत) से साबित है।

19. अर्थात् इसी पैदाइश में अल्लाह ने वह बरकत रखी कि नस्लें फैलती चली जा रही हैं।

20. यह बात कि अल्लाह के जैसी कोई हस्ती नहीं, कोई वस्तु नहीं, आस्थाओं और मान्यताओं के अध्याय में बहुत बड़ी हकीक़त का एलान है। इस का मतलब यह है कि अल्लाह अपने आप में और अपने गुणों में एक अकेला और अद्वितीय है। सृष्टि जैसा सृष्टा को नहीं समझा जा सकता और न सृष्टि से उस का मेल मिलाया जा सकता है। धर्माविलंबियों की गुमराही का मूल कारण यही है कि उन्होंने अपने सृष्टा और अपने प्रभु को सृष्टि और बन्दों ही जैसा समझा और फिर गुमराह करने वाले दार्शनिक गढ़े। मुसलमानों में भी जो कलामी बहसों उठ खड़ी हुई वह भी उस मूल से विमुखता ही का परिणाम थीं। धारणाओं, आस्थाओं एवं मान्यताओं को सही रखने के लिए आवश्यक है कि किसी प्रकार की उलझावी एवं फ़लसफ़ियाना बहस में पड़े बग़ैर इस सादा सी सच्चाई पर विश्वास किया जाए कि अल्लाह के जैसी कोई चीज़ नहीं।

21. इस की व्याख्या सूरह जुमर नोट ११० में गुज़र चुकी।

22. व्याख्या के लिए देखिए सूरह रअद नोट ५८

23. इस आयत के भावार्थ को समझने के लिए संदर्भ को समझना ज़रूरी है। सूरह की शुरुआत इस बात से हुई थी कि यह कुर्आन उसी प्रकार की प्रकाशना (वह्य) है जिस तरह की प्रकाशना वह रसूलों की तरफ़ भेजता रहा है। यह कोई निराली चीज़ नहीं है जिस से मनुष्य अनभिज्ञ हो। फिर उस हस्ती की पहचान प्रदान की गई जिस की ओर से वह्य उतरती है। और इस सिलसिले में तौहीद की निशानियों की तरफ़ ध्यानाकर्षित किया गया। इसी संदर्भ में यहाँ स्पष्ट किया जा रहा है कि जिस दीन का निमंत्रण कुर्आन और उस का संदेशवाहक प्रस्तुत कर रहा है वह एकेश्वरवादी जीवन पद्धति है और यह वही जीवन पद्धति है जो समस्त प्रतिष्ठित नबियों की जीवन पद्धति रही है अतः इसी दीने तौहीद अर्थात् एकेश्वरवादी जीवन पद्धति का सच्चे मन से अनुसरण करो और उस में नई राहें (बिदअतें) न निकालों कि सत्य धर्म का सिरा हाथ से छूट जाए और अलग अलग धार्मिक वर्गों एवं सम्प्रदायों में बंट कर रह जाओ।

हज़रत नूह पहले रसूल थे जो इन्सान की आबादी की तरफ़ भेजे गए थे। उन्हें जिस धर्म पर चलने का निर्देश अल्लाह तआला ने दिया था वही दीन उस ने इस रसूल पर भी अवतरित किया है और यही दीन उन महान प्रतापी नबियों का रहा है जिन से विभिन्न मिल्लतें (सम्प्रदाय) संबद्ध हैं। यह दीन अथवा यह जीवन प्रणाली- इस्लाम अपने मूल स्वरूप में एक ही है यद्यपि कि

शरीअतें भिन्न भिन्न रही हैं जैसा कि इर्शाद हुआ :-

لِكُلِّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا. (मائدة: ५८)

अर्थ :- “हम ने तुम में से प्रत्येक (गिरोह) के लिए एक शरीअत और एक मार्ग ठहरा दिया है।” (माइदा ५८)

शरीअतों की वह भिन्नता अमौलिक (फुरु) प्रकार की है जिन का दीन के मूल स्वभाव पर कोई असर नहीं पड़ता। दीन के मूल तत्व, अल्लाह को एक मानना, मरने के बाद मिलने वाले जीवन पर विश्वास रखना, सही मार्ग दिखाने वाले रसूलों पर ईमान लाना, एक अल्लाह की इबादत और अनुपालन, ईश, भय और परहेजगारी, हक़ की तल्कीन तथा न्याय एवं एहसान जैसी बुनियादी बातें हैं। और शरीअत तो अल्लाह के अनुपालन का स्वरूप और उस की तफ़सील है जो दीन की बुनियादें हैं। शरीअत को भी दीन समझा गया है जैसा कि आयत ।

الْيَوْمَ اكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ (मائدة: ३)

अर्थ :- “आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया” (माइदा-३) में आया है फिर भी यहाँ चूँकि नबियों के संयुक्त दीन (जीवन पद्धति) को पेश किया गया है इस लिए यहाँ दीन से तात्पर्य दीन के मूल तत्व (उसूले-दीन) ही हैं। परन्तु इस का यह मतलब लेना सही न होगा कि शरीअत दीन से बिल्कुल ख़ारिज है। क्योंकि उसूले दीन में जैसा कि हम ने ऊपर स्पष्ट किया कि अल्लाह की इबादत एवं अनुपालन शामिल है और उसी का व्यवहारिक स्वरूप तथा उस का विस्तृत व्यवहार शरीअत व्यवस्था है। कुर्आन में दीन का शब्द व्यापक भावार्थ में प्रयुक्त हुआ है और कभी उस के किसी ख़ास पहलू के लिए भी। जैसे :-

وَإِذْ اغْشِيَهُمْ مَوْجٌ كَالظُّلِيِّ دَعَا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ - (لقمان: ३२)

अर्थ :- और जब मौजें छत्रों की तरह उन पर छा जाती हैं तो वे अल्लाह को पुकारते हैं दीन (ईश-भय एवं दासता) को उस के लिए ख़ालिस करते हुए।” (लुक्मान - ३२)

इस आयत में दीन का शब्द ईश-भय और दासता के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है क्योंकि बहुदेववादियों का तूफ़ान से दोचार होने पर अल्लाह ही को पुकारना उस से विनय करने के भाव में है, न कि उस की शरीअत को पूरी तरह स्वीकार करने के अर्थ में। इस लिए यदि इस आयत में कि जिस की व्याख्या चल रही है, में दीन का शब्द उसूले दीन के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है तो यह प्रसंगानुसार हुआ है। अतः कोई कारण नहीं कि

तकल्लुफ़ और संकोच से काम ले कर शरीअत की तफ़सीलों को उस में शामिल करने की कोशिश की जाए। मुफ़स्सिर की अधिक तादाद ने भी इस आयत की तफ़सीर में दीन से तात्पर्य उसूले-दीन ही लिये हैं। इमाम राज़ी लिखते हैं :-

“तो ज़रूरी है कि दीन से मुराद वे बातें हो जो शरीअतों की भिन्नता के कारण अलग अलग नहीं होते, और वो हैं अल्लाह, उस के फ़रिशतों, उस की किताबों उस के रसूलों और आख़िरत के दिन पर ईमान। और ईमान से लाज़िम आता है कि आदमी दुनिया से परहेज़ करे, बचे, और आख़िरत की तरफ़ ध्यानाकर्षित करे, अच्छे चरित्र और अच्छे आचरण के लिए प्रयास करे और बुरी बातों से परहेज़ करे।” (तफ़सीरूलकबीर जिल्द २७ पृष्ठ १५६)

अल्लामा जन्हसरी फ़रमाते हैं :

“तात्पर्य दीने-इस्लाम की इक़ामत है जो अल्लाह की तौहीद और उस के अनुपालन और उस के रसूलों, उस की किताबों, और हिसाब के दिन पर ईमान तथा उन बातों पर आधारित है जिन को क़ायम करने से आदमी मुसलमान हो जाता है और मुराद शरीअतें नहीं हैं जो उम्मतों (समुदायों) की आवश्यकतानुसार मसलहतों पर आधारित होती हैं क्योंकि वे विभिन्न और परस्पर अलग अलग होती हैं।” (अलक़शशाफ़ जिल्द ३, पृष्ठ ४६३)

क़रीब क़रीब यही बात अल्लामा आलूसी ने भी अपनी तफ़सीर में लिखी है। (देखिए रुहुल मआनी जिल्द २ पृष्ठ २१)

अल्लामा इब्ने कसीर फ़रमाते हैं :-

“अर्थात् संयुक्त बात इन नबियों के बीच एक अल्लाह की इबादत है जिस का कोई साझी नहीं यद्यपि उन की शरीअतें और उन के रास्ते अलग हैं।” तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द ४ पृष्ठ १०९)

मौलाना अमीन अहसन इस्लाही साहब फ़रमाते हैं :-

“अल्लाह का दीन शुरू से इस्लाम है जैसा कि इर्शाद है।

إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ

(अर्थ :- “असल दीन अल्लाह के नज़्दीक इस्लाम है।”) इस दीन की बुनियाद ख़ालिस और कामिल तौहीद पर है यही दीन अल्लाह तआला ने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम बल्कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को भी दिया और यही दीन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी नाज़िल किया। इस के अक्रायद और इस के असासात शुरू से आख़िर तक बिल्कुल एक ही हैं। फ़र्क़ अगर हुआ है तो ज़ुज्याते-शरीअत में हुआ है जिस को कुर्आन ने शरीअत और रास्ते के अलफ़ाज़ से ताबीर फ़रमाया है।” (तदब्बुरे-कुर्आन जिल्द ६ पृष्ठ १५३)

लेकिन तफ़हीमुल कुर्आन के मुफ़स्सिर ने उन लोगों पर कड़ी

पकड़ की है जिन्होंने इस मौक़े पर दीन से तात्पर्य शरीअी अहकाम और शरीअी नियम नहीं लिए हैं बल्कि केवल उसूली बातें मुराद ली हैं जो तमाम नबियों के यहाँ एक रही हैं। विद्वान मुफ़स्सिर ने इस राय को ख़तरनाक बताते हुए लिखा है कि “अगर इस की इस्लाह न कर दी जाए तो आगे बढ़कर बात दीने-शरीअत की उस तफ़रीक़ (अलगाव) तक जा पहुँचेंगी जिस में मुब्तिला हो कर सेन्ट पाल ने दीन बिना शरीअत का नज़रिया पेश किया और सैयदना मसीह अलैहिस्सलाम की उम्मत को ख़राब कर दिया। इस लिए कि जब शरीअत दीन से अलग एक चीज़ है और हुक्म सिर्फ़ दीन को क़ायम करने का है न कि शरीअत को तो लामुहाला मुसलमान भी ईसाइयों की तरह शरीअत को ग़ैर अहम और उस की इक्रामत को ग़ैरमक़सूद बिज़्ज़ात समझ कर नज़रंदाज़ कर देंगे और सिर्फ़ इमानियात और मोटे अख़्लाक़ी उसूलों को ले कर बैठ जाएंगे।” (तफ़हीमुल कुर्आन जिल्द ४ पृष्ठ ४८४)

मगर यह खुला मुग़ालता है, किसी भी मुफ़स्सिर ने यह बात नहीं कही कि शरीअत दीन से ख़ारिज है या शरीअत पर दीन का भावार्थ नहीं लागू होता। और न किसी मुफ़स्सिर ने शरीअत की अहमियत घटा दी है। बात केवल यह है कि सूरह शूरा की इस आयत में जिस की व्याख्या चल रही है कई मुफ़स्सिर, शरीअत के अहकाम और नियम को शामिल नहीं समझते। उन के नज़्दीक इस का यह मतलब हरगिज़ नहीं कि कुर्आन में कहीं भी दीन का शब्द शरीअत के अर्थ में नहीं आया है। या दीन का शब्द जहाँ भी आया है उस में शरीअत शामिल नहीं है। कुर्आन में ऐसे कितने शब्द हैं जो एक जगह सीमित अर्थों में प्रयुक्त हुए हैं और दूसरी जगह अपने व्यापक अर्थों में। मिसाल के तौर पर तागूत का शब्द कहीं बुत के लिए इस्तेमाल हुआ है तो कहीं शैतान के लिए और कहीं गुमराह पेशवाओं और हाकिमों के लिए तो कहीं उदण्ड और उपद्रवी लोगों के लिए। अब अगर एक मुफ़स्सिर एक आयत में संदर्भ को ध्यान में रखते हुए तागूत से मुराद बुत लेता है तो उस पर यह आरोप कैसे लगाय जा सकता है कि वह दूसरी चीज़ों के तागूत होने का इन्कारी है?

वर्णित आयत में दीन के साथ “अक़्रीमू” का शब्द आया है जिस का मस्रर “इक्रामः” है और इक्रामा का अर्थ अरबी में किसी चीज़ का हक़ पूरी तरह अदा करने के हैं :-

إِقَامَةُ الشَّيْءِ تَوْفِيَةً حَقَّهُ - (مفردات راغب صفحہ ۲۲۹)

अर्थ :- “किसी चीज़ की इक्रामत उस के हक़ को पूरा पूरा अदा करना है।” (मुफ़रदात राग़िब पृष्ठ ४२९)

इमाम राग़िब ने आगे पुष्टि की है कि इक्रामत सलात से अभिप्रेत मात्र नमाज़ पढ़ना नहीं बल्कि नमाज़ को उस की समस्त

शर्तों के साथ अदा करना है। और (सूरह माइदा आयत ६८ में) तौरात और इन्जील को क़ायम करने से तात्पर्य ज्ञान और कर्म से उन के हक़ पूरे पूरे अदा करना है। और लिसानुल अरब में हैं :-

أَقَامَ الشَّيْءُ : أَدَامَهُ مِنْ قَوْلِهِ تَعَالَى : وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ - (لسان العرب ج ۱۲ ص ۲۹۸)

अर्थ :- “किसी चीज़ को क़ायम करना अर्थात् उस को हमेशा हमेशा करते रहना है। इसी अर्थ में है अल्लाह तआला का इर्शाद “वे नमाज़ को क़ायम करते हैं।” (लिसानुल अरब जिल्द १२ पृष्ठ ४९८)

और इक्रामत का अर्थ सीधा रखने के भी हैं। कुर्आन में इर्शाद हुआ है :-

وَأَنْ أَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا - (يونس: १०५)

अर्थ:- “अपना रुख़ दीने-हनीफ़ की तरफ़ सीधा रखो।” (सूरह यूनस - १०५)

وَأَقِيمُوا وَجُوهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ - (اعراف: २९)

अर्थ :- “और अपना रूख़ सीधा रखो हर इबादतगाह में” (आराफ़ - २९)

अतः अक़्रीमुद्दीन का अर्थ हुआ दीन को सीधा रखो। उस पर चल पड़ो और उस के हुकूक़ पूरी तरह अदा करो। और दीन का हक़ सब से पहले अपनी ज़ात से सम्बन्धित होता है इस के बाद दूसरों से सम्बन्धित। इस लिए संबोधन का रूख़ यहाँ व्यक्ति की अपनी आस्थाओं एवं मान्यताओं तथा कर्मों और उस के अपने सुधार की ओर है क्योंकि यही आरम्भिक बिन्दु है और दीन में इस को प्राथमिकता प्राप्त है। अल्लामा आलूसी ने इस की पुष्टि इस प्रकार की है :-

“उस की इक्रामत से मुराद उस के अरकान की तादील और इस बात से उस की हिफ़ाज़त करना है कि उस में कोई टेढ़ न पैदा हो जाए तथा उस पर हमेशा अमल पैरा (जमे) रहना है।” अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी लिखते हैं :-

अर्थात् सब नबियों और उन की उम्मतों को हुक्म हुआ कि अल्लाह के दीन को अपने क़ौल और अमल से क़ायम रखें और अस्ल दीन में किसी प्रकार की तफ़रीक़ व इख़िलाफ़ (विभेद एवं विच्छेद) को रवा न रखें।” (तफ़सीर मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी पृष्ठ ६२८)

और मौलाना अमीन अहसन साहब फ़रमाते हैं :-

“क़ायम रखने से तात्पर्य यह है कि उस की जो बातें मानने

की हैं वे सच्चाई के साथ मानी जाएं जो करने की हैं वे दयानतदारी और रास्तबाजी के साथ की जाएं नीज लोगों की बराबर निगरानी की जाए कि उस से गाफ़िल या मुन्हरिफ़ न होने पायें और इस बात का भी पूरा एहतिमाम किया जाए कि अहले बिदअत उस में कोई रखना (बाधा) न पैदा कर सकें।” (तदब्बुरे-कुर्आन जिल्द ६ पृष्ठ १५३)

और अल्लाह तआला ने यह जो फ़रमाया :-

“وَلَا تَفَرَّقُوا فِيهِ”

अर्थ :- “इस मामले में विभेद और विच्छेद में न पड़ो” तो विभेद और विच्छेद में पड़ना इक्रामते दीन की ज़िद है और इस का मतलब यह है कि अल्लाह के दीन के मामले में नई नई राहें न निकालों, उस पर अपनी ओर से कोई संशोधन न करो और न कमी। अपनी ओर से धर्म न गढ़ो। और न किसी धर्म का पेवन्द इस दीन से लगाओ। बिदअतें इस दीन में न समाविष्ट करो कि दीन के मूल राजमार्ग से हट जाओ और अलग अलग समूहों में बंट कर रह जाओ। अल्लाह का दीन एक स्वच्छ स्रोत है और यही मानवता के लिए अमृत है। अतः इस को हर प्रकार की मिलवटों से हमेशा पाक और शुद्ध रखो। उस में जो चीज़ भी मिलाई जाएगी वह अशुद्ध अथवा विष ही होगा।

यह है इक्रामते-दीन (दीन क़ायम करो) का सीधा सादा भावार्थ जिस का अनुमोदन अरबी शब्दकोष से भी होता है और मुफ़स्सिरिन की बड़ी तादाद की व्याख्याओं से भी, लेकिन मौजूदा दौर की इस्लामी तहरीकें इक्रामते-दीन को एक व्यापक परिभाषा के तौर पर मुसलमानों के उद्देश्य तथा मुख्य लक्ष्य की हैसियत से प्रस्तुत कर रही हैं जिस का असर दीन के मिजाज़ पर भी पड़ रहा है और दअवत के मिजाज़ पर भी। सूरह शूरा की यह आयत इक्रामते-दीन को फ़रीज़े (अनिवार्य कर्तव्य) की हैसियत से पेश करती है न कि नसबुलऐन (प्रमुख उद्देश्य) की हैसियत से। फ़रीज़ा तो बन्दे की ज़िम्मेदारी होती है जिसे लामुहाला उसे अदा करना ही होता है जब कि नसबुलऐन अभीष्ट एवं वांछित मन्ज़िलों और प्रयासों के फलस्वरूप प्राप्त होने वाली चीज़ है। कुर्आन ने आख़िरत की सफलता तथा वहाँ बच जाने को नसबुलऐन की हैसियत से पेश किया है। अतः आप देखें कि मक्की सूरह जितनी भी हैं सभी आख़िरत और उस की सफलता पर ही निगाहों को केन्द्रित करती हैं और मदनी सूरतों में भी इसी को अभीष्ट एवं वांछित लक्ष्य की हैसियत से पेश किया गया है।

फिर इक्रामते-दीन को व्यापक परिभाषा बताकर उस की व्याख्या इस तरह की जा रही है कि दीन के वह तकाज़े जो सामाजिक जीवन से सम्बन्धित हैं, उभर कर सामने आ जाते हैं। इस्लाम के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था की

स्थापना को प्रधानता प्राप्त हो जाती है और अक़्रीदा व इबादत का पहलू जिसे कुर्आन ने यहाँ उभारा है, दब जाता है यहाँ तक कि अक़्रीमुद्दीन का अनुवाद “इस्लामी जीवन व्यवस्था क़ायम करो” किया जाता है और क़ायम करो से “ज़मीन पर क़ायम करो” मुराद लिया जाता है और ज़ोर इस बात पर दिया जाता है कि सत्ता प्राप्त कर के इस्लाम की राजनीतिक व्यवस्था को क़ायम कर दो और उस के क़ानून लागू कर दो। इन में से कोई बात भी अपने आप में ग़लत नहीं है। क्योंकि कुर्आन में इन सब बातों की हिदयात की गई है। लेकिन हर बात का अपना एक स्थान है। सूरह शूरा की यह आयत इस का स्थान नहीं इस लिए इस्लाम के सामाजिक तकाज़ों को यहाँ फिट करना सरासर तकल्लुफ़ है। इस तकल्लुफ़ से अरबी की प्रमाणिक तफ़्सीरें पाक हैं। परन्तु मौजूदा ज़माने में राजनीतिक वा आर्थिक व्यवस्थाओं की कशमकश ने विचारों एवं मास्तिष्क को प्रभावित किया है और इस से प्रभावित इस्लामी तहरीकें दीन को नई शैली प्रस्तुत कर रही हैं जिस में आधारशिला स्थापित करने से पहले ही इमारत को निर्माण करने की योजना बनाई जाती है। मतलब यह कि जो चीज़ दीन में प्राथमिक थी उस के महत्व को पूरी तरह ध्यान में नहीं रखा गया और जो चीज़ बाद के मरहले की थी उस को शुरू ही में ध्यान का केन्द्र बना दिया गया। परिणाम यह कि जो दीन दिलों पर क़ायम होता है वह बहुत कम बहस में आता है और जो दीन ज़मीन पर स्थापित होता है वह बहस का मूल विषय बन जाता है।

जिन नबियों का इस आयत में वर्णन हुआ है उन का उस्वा और उन का व्यवहारिक जीवन भी इक्रामते-दीन के भावार्थ को सुनिश्चित करने के समय सामने रहना चाहिए। हज़रत नूह ने अपनी लम्बी ज़िन्दगी क़ौम को दअवत देने में गुज़ारी। यह दावत बुत परस्ती और शिर्क (बहुदेववादी) को छोड़ देने तथा तौहीद एकेश्वरवाद को स्वीकार कर लेने की थी। अलबत्ता जब क़ौम पर अज़ाब आया तो उस की तबाही के बाद ईमान वालों को सत्ता मिली और इस्लाम सामाजिक स्वरूप में उभर कर सामने आ गया। दूसरी हस्ती इब्राहीम अलैहिस्सलाम की है। आप ने भी अपनी बुत परस्त क़ौम को झूठे उपास्यों को छोड़ने और एकेश्वरवाद को स्वीकार करने की दअवत दी और सत्य एवं असत्य की इसी कशमकश में आप को अन्ततः हिज़रत करनी पड़ी अर्थात् अपने देश को छोड़ना पड़ा। हिज़रत के बाद आप ने अपनी औलाद को आज़ाद माहौल में बसाया ताकि उन पर अल्लाह ही के दीन की सत्ता क़ायम हो और वे इस्लाम के प्रचार एवं प्रसार का काम अन्जाम दें। इस मक़सद के लिए उन्होंने फ़लस्तीन और मक्का दोनों का चुनाव किया। तीसरी हस्ती मूसा अलैहिस्सलाम की है आप ने फ़िरऔन और उस की जाति के

सामने तौहीद की दअवत पेश की और बनी इस्राईल को जो पहले से मुसलमान थे, सब्र के साथ इस्लाम के मूल आदेशों पर अमल करने का हुक्म दिया यहाँ तक कि मिस्र को छोड़ कर आप बनी इस्राईल के साथ निकल गए और जब तूर पर्वत के अंचलों में आप को शरीअत प्रदान हुई तो उस सवतंत्र माहौल में उस के आदेश बनी इस्राईल पर लागू किये गए। चौथी हस्ती ईसा अलैहिस्सलाम की है। आप बनी इस्राईल की तरफ़ रसूल बना कर भेजे गए थे और बनी इस्राईल पर रोमियों की हुकूमत थी। चूँकि उस समय बनी इस्राईल में बिगाड़ आम हो गया था। उन की उद्वेगता अपनी सीमा को पार कर चुकी थी और दीनदारी एवं धार्मिकता मात्र दिखावे की हैसियत से बाक़ी रह गई थी इस लिए आपने दीन की मूल वास्तविकता को उजागर किया और अल्लाह के अनुपालन एवं बन्दगी की दअवत दी। एक मुसलमान क्रौम के मौजूद होते हुए आप ने यह नहीं कहा कि क्रैसर की हुकूमत को हटाओ और इस्लामी शासन व्यवस्था स्थापित कर दो। और ऐसा न कहने का कारण यह न था कि आप के दीन का राजनीति से कोई सम्बन्ध न था। और आप समय की राजनीतिक व्यवस्था में उन्हें फिट करना चाहते थे बल्कि इस लिए कि मुसलमानों का समाज बिलकुल खोखला हो गया था और अभी वह मरहला नहीं आया था कि कोई राजनीतिक पहल की जाती। वरना तौरात में राजनीति से सम्बन्धित आदेश तो उस समय भी मौजूद था जो इस्लाम के लिए सत्ता की माँग करते थे। आखिरी हस्ती नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की है। आपने तेरह साल तक मक्के में जो दअवत दी वह शिर्क और बुत परस्ती को छोड़ देने और तौहीद एवं आखिरत, रिसालत जैसी सच्चाईयों को स्वीकार करने की दअवत थी और ईमान वालों का जो समूह तैयार हुआ उस के लिए तक्रवा (ईश-भय और परहेज़ागरी) की बुनियादें उपलब्ध की ताकि हर हर व्यक्ति का जीवन संवर जाए। यहाँ तक कि हिजरत का मरहला सामने आ गया और आप को मदीना में आज़ाद इस्लामी राज्य स्थापित करने का मौक़ा मिल गया और इसी दौरान शरीअत के वे आदेश भी नाज़िल हुए जिन का सम्बन्ध इस्लाम के वर्चस्व तथा उस की राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करने से है। निस्संदेह आपने इस्लाम की राजनीतिक व्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करके तथा परिपालन द्वारा उसे लागू कर के दिखाया किन्तु प्रश्न यह है कि जिस समय सूरह शूरा की आयत

أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ

(दीन को क़ामय करो) अवतरित हुई तो क्या आप ने उसी समय मुसलामानों को इस्लाम की राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करने की दअवत दी या आप उस के लिए वातावरण तैयार करते रहे। अगर वातावरण बनाते रहे तो यही काम मौजूदा दौर में भी विषम

एवं विवश परिस्थितियों में किया जा सकता है। अर्थात् ऐसे हालात में जहाँ मुसलमानों को वर्चस्व अथवा सत्ता प्राप्त न हो या उस की प्राप्ति की राहें बन्द दिखती हों। अतः इस सिलसिले में जो भी ख़िदमत अन्जाम दी जाएगी वह इक़ामते-दीन ही का काम होगा। परन्तु मौजूदा इस्लामी तहरीकें इक़ामते-दीन को अपनी प्रमुख पहचान समझती हैं और दूसरों की दीनी सेवाओं तथा उन के दअवती प्रयासों को इक़ामते-दीन कहने के लिए तैयार नहीं हैं। यह ग़लत मानसिकता इस लिए पैदा हो गई है कि उन्होंने ने कुर्आन के इस सीधे सादे आदेश को कि दीन क़ायम करो, इस्लामी व्यावस्था और इस प्रकार की दूसरी तरकीबें अधिकता के साथ इस्तेमाल कर के एक ख़ास परिभाषा की हैसियत दे दी और फिर उस मेयार पर दूसरों के काम को जाँचना शुरू किया तो उन को अपने सिवा कोई भी इक़ामते-दीन का झंडा उठाने वाला नज़र नहीं आया। वे समझते हैं कि सब छोटे छोटे काम (जुर्ई काम) कर रहे हैं और दीन की पूरी ख़िदमत उन ही के हिस्से में आई है।

स्पष्ट रहे कि **أَقِيمُوا الدِّينَ** (दीन को क़ायम रखो) का वाक्य पूरे कुर्आन में केवल एक ही जगह आया है और वह है सूरह शूरा की यह आयत। जब कि कुर्आन ने इस आदेश को जो इन शब्दों में यहाँ बयान हुआ है दूसरे शब्दों और दूसरी तरकीबों में कई जगहों पर बयान कर दिया है। फिर इक़ामते दीन के शब्द ही को नसबुल-ऐन (अभीष्ट एवं वांछित लक्ष्य) कहने के लिए क्यों आवश्यक ठहराया जाए?

(इक़ामते-दीन के विषय पर मेरे वे लेख जो तफ़्सीर दअवतुल कुर्आन से पहले के हैं और आयत की इस व्याख्या से मेल नहीं खाते उन से मैं रूजू करता हूँ।)

ग़लत फ़हमी पूरी तरह से दूर हो जाए इस के लिए कुछ और बातें अतिरिक्त स्पष्टीकरण हेतु प्रस्तुत की जा रही हैं।

1) दीन के विस्तृत भावार्थ में निश्चित रूप से शरीअत शामिल है परन्तु सूरह शूरा की इस आयत में दीन के उसूल ही अभिप्रेत हैं। क्यों कि इस आयत में इक़ामते-दीन अर्थात् दीन की स्थापना का आदेश नबियों द्वारा प्रस्तुत किये गए दीन की समरूपता समानता एवं एकता को उजागर करते हुए दिया गया है। और स्पष्ट है कि समरूपता एवं समानता दीन के उसूलों में ही हो सकती है। शरीअतें तो कुछ भिन्न रहीं हैं अलबत्ता अल्लाह का पूर्ण रूप से आज्ञापालन दीन के उसूलों में शामिल है और इस आज्ञापालन का व्यवहारिक रूप शरीअत का अनुपालन ही है। जो लोग इस आयत के अन्तर्गत दीन के भावार्थ में शरीअत को शामिल करने पर बल देते हैं उन की व्याख्या के अनुसार तो आयत का अर्थ यह होगा कि “उस ने तुम्हारे लिए वही शरीअत मुकर्रर की है जिस की हिदायत उस ने नूह को की थी।”

स्पष्ट है यह अर्थ यहाँ किसी तरह उचित नहीं बैठता है।

2) यह आवश्यक नहीं कि यदि एक शब्द का भावार्थ कुछ अधिक विस्तृत हो तो हर जगह वही विस्तृत भावार्थ ही अभिप्रेत लिया जाए। उदाहरण के तौर पर इस्लाम के विस्तृत भावार्थ में ईमान भी दाखिल है लेकिन सूरह हुजूरत की आयत २ में इस्लाम का शब्द फ़रमाँबरदारी कुबूल कर लेने के अर्थ में ही इस्तेमाल हुआ है।”

“बहु कहते हैं कि हम ईमान लाए, इन से कहो कि तुम ईमान नहीं लाए बल्कि कहो हम ने फ़रमाँबरदारी कुबूल कर ली (अथवा आज्ञा पालन स्वीकार कर लिया) ईमान अभी तुम्हारे दिलों के अन्दर दाखिल नहीं हुआ है।”

स्पष्ट हुआ कि संदर्भ ने एक शब्द के भावार्थ को भी सीमित

कर दिया। अतः यह बात कि संदर्भ को नज़रंदाज़ कर के शब्द के विस्तृत भावार्थ को हर स्थान पर फिट करते चले जाएँ, यह सही नहीं। ऐसा करने से वे पक्ष दब जाते हैं जिस को कुर्आन मौक़े के लिहाज़ से उभारना चाहता है।

24. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तौहीद की दअवत दे रहे थे और यही बात बहुदेववादियों को बेहद अप्रिय थी।

25. अल्लाह की मर्जी उस की हिकमत के अनुसार होती है। जो व्यक्ति उस की ओर रुजू करता है अल्लाह तआला ज़रूर उस की रहनुमाई का साधन करता है और तौफ़ीक़ देता है कि वह अल्लाह की राह पर चले। सच्चे दीन को स्वीकार कर के उस की रौशनी में चलने की खुशानसीबी उन्हीं लोगों को नसीब होती है जिन को अल्लाह तआला इस महान कार्य के लिए चुन लेता है।



और लोग जो विभेद एवं विच्छेद में इस के बाद पड़े कि उन के पास इल्म (ज्ञान) आ चुका था, मात्र आपस की ज़िद के चलते। और अगर तुम्हारे रब का फ़रमान एक निश्चित अवधि के लिए सादिर न हो चुका होता तो उन के बीच फ़ैसला चुका दिया गया होता। और उन (गुजरे हुए) लोगों के बाद जो लोग किताब के वारिस बनाए गए वे इस की तरफ़ से शक में पड़े हुए हैं जिस ने उन्हें उलझन में डाल दिया है। (अल-कुर्आन)

14. और लोग जो विभेद एवं विच्छेद में इस के बाद पड़े कि उन के पास इल्म (ज्ञान) आ चुका था, मात्र आपस की ज़िद के चलते।²⁶ और अगर तुम्हारे रब का फ़रमान²⁷ एक निश्चित अवधि के लिए सादिर न हो चुका होता तो उन के बीच फ़ैसला चुका दिया गया होता।²⁸ और उन (गुजरे हुए) लोगों के बाद जो लोग किताब के वारिस बनाए गए वे इस की तरफ़ से शक में पड़े हुए हैं जिस ने उन्हें उलझन में डाल दिया है।²⁹

وَمَا تَفَرَّقُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَعِيًّا بَيْنَهُمْ
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى لَفُضِّى
بَيْنَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ
مِّنْهُ مُرِيبٍ ۝۱۴

15. अतः तुम इसी दीन की दअवत दो और इस पर क़ायम रहो जैसा कि तुम्हें आदेश दिया गया है³⁰ और इन लोगों की इच्छाओं के पीछे न चलो।³¹ और कहो अल्लाह ने जो किताब उतारी है उस पर मैं ईमान लाया।³² मुझे आदेश दिया गया है कि तुम्हारे बीच न्याय करूँ।³³ अल्लाह हमारा रब भी है और तुम्हारा रब भी। हमारे आमाल हमारे लिए हैं और तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए। हमारे और तुम्हारे बीच कोई बहस नहीं।³⁴ अल्लाह हम सब को जमा करेगा और उसी की तरफ़ सब को जाना है।

فَإِلَٰكَ فَادْعُ وَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ هُمْ
وَقُلْ أَمِنْتُ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنْ كِتَابٍ وَأُمِرْتُ لِإِعْدَالٍ
بَيْنَكُمْ اللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ
لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اللَّهُ
يَجْمَعُ بَيْنَنَا وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ۝۱۵

16. जो लोग अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं बाद इस के कि उस की पुकार पर लब्बैक कहा जा चुका है,³⁵ उन की हुज्जत (तर्क) उन के रब के नज़दीक़ बातिल (ग़लत) है³⁶ और उन पर प्रकोप है और उन के लिए कठोर यातना है।

وَالَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتَجِيبَ لَهُ حُجَّتُهُمْ
دَٰخِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝۱۶

17. अल्लाह ही है जिस ने किताब सत्य के साथ उतारी है और मीज़ान (तुला) भी।³⁷ और तुम्हें क्या ख़बर शायद क़ियामत की घड़ी करीब आ लगी हो।³⁸

اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَالْمِيزَانَ وَمَا يُدْرِيكُ
لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيبٌ ۝۱۷

18. इस के लिए जल्दी वही लोग मचाते हैं जो उस पर ईमान नहीं रखते।³⁹ ईमान रखने वाले तो उस से डरते हैं⁴⁰ और जानते हैं कि वह एक हक़ीक़त है। सुनो ! जो लोग उस घड़ी के बारे में बहस में उलझ रहे हैं वे गुमराही में दूर जा पड़े हैं।⁴¹

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا وَالَّذِينَ آمَنُوا
مُسْفِقُونَ مِنْهَا وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ الْأَنَّ الَّذِينَ
يُتَارُونَ فِي السَّاعَةِ لَفِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝۱۸

26. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बकरः नोट ३०९ और सूरह आले-इमरान नोट २८ सूरह हा मीम अस्सज्दा नोट २८

27. अर्थात् दुनिया में अमल की मोहलत देने का फ़रमान।

28. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हामीम अस्सज्दा नोट ६९

29. अर्थात् अहले-किताब ने जो संशोधित एवं कटी छटी किताबें तौरात और इन्जील आदि उत्तराधिकार स्वरूप पाई हैं उन के बारे में वे स्वयं शक और उलझन में लिप्त हो गए हैं उन्हें विश्वास एवं सुदृढ़ता प्राप्त नहीं है कि मौजूदा किताबों में जो बातें बयान हुई हैं वे ठीक ठीक वही हैं जो असल किताब में मौजूद थीं। इस शक से निकलने का साधन कुर्आन है जो अल्लाह का सुरक्षित कलाम है।

30. अर्थात् जब हालत यह है कि लोगों ने अपने अलग अलग धर्म बना लिए हैं और फ़िर्कों (वर्गों) में बँट गए हैं तो तुम्हारा काम इन सब को सत्य धर्म की ओर बुलाना और स्वयं उस पर जमे रहना है।

यहाँ भी इक्रामते-दीन का यह पहलू बिलकुल स्पष्ट है कि सच्चे दीन पर ख़ुद भी क़ायम रहो और दूसरों को भी इस की दअवत दो।

31. अर्थात् दीन के मामले में अल्लाह की वही का ही अनुपालन होना चाहिए न कि लोगों की इच्छाओं का। लोगों ने जब अपनी इच्छाओं को दीन में दाख़िल किया तो उस में तरह तरह की बिदअतों (नई नई बातों) ने राह पाई यहाँ तक कि दीन का हुलिया ही बिगाड़ कर रह गया और नित नये धर्म अस्तित्व में आ गए। इस का अनिवार्य परिणाम यह निकला कि लोग फ़िर्कों और वर्गों में बट कर रह गए।

32. अर्थात् इस शान की किताब कि वह सत्य को दो टूक अन्दाज़ा में पेश करती है।

33. अर्थात् किसी व्यक्ति या समूह के साथ पक्षपात न बरतो और न किसी व्यक्ति या धर्म के विरुद्ध ऐसी बात कहो जो न्याय और समानता के विरुद्ध हो। बेलाग़ इन्साफ़ की बात कहना मेरा परम कर्तव्य है। बल्कि इसी कार्य के लिए मैं नियुक्त किया गया हूँ।

34. अर्थात् दलीलें स्पष्ट हो जाने के बाद अगर तुम नहीं मानते तो बहस की समाप्ति हो जानी चाहिए। मामला अल्लाह की अदालत के सुपुर्द है। वहाँ इस विवाद का फैसला हो जाएगा।

35. अर्थात् जब कि मनुष्य का स्वाभाव अपने ख़ब की

पुकार पर उठ चुका है। मानव स्वभाव एक ईष्ट पूज्य से जो उस का सृष्टा है परिचित है और दुनिया में आने से पहले प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा अपने वास्तविक प्रभु का इक्रार कर चुकी है। (सूरह आराफ़ आयत १७२ नोट २६५)

36. अर्थात् अल्लाह के बारे में ऐसे तर्क और ऐसी दलीलें प्रस्तुत करना जो मानव स्वभाव के प्रतिकूल हैं तथा उस की अंतरात्मा की आवाज़ के विरुद्ध हैं, कटहुज्जती के सिवा कुछ नहीं। और अल्लाह के बारे में कटहुज्जती और मन्तिक छाँटना बिलकुल ग़लत है।

37. मीज़ान अर्थात् न्याय और समानता को स्थापित करने वाली वस्तु। अल्लाह की किताब ईश्वरीय तुला (Divine Balance) है जो मानव स्वभाव के लिए न्याय की स्थापना का साधन है। यह ऐसे उसूल और ऐसे आदेशों एवं नियमों पर आधारित है जिन को परिपालन करने और जिन के अनुसार विवादित मामलों का फैसला करने से मनुष्य के व्यक्तिगत एवं सामूहिक जीवन में न्याय की धारा फूट बहती है। यह तुला (मीज़ान) प्रत्येक वस्तु का मुल्य निर्धारण करती है कि कौन सा कर्म क्या महत्व एवं कितनी श्रेष्ठता रखता है और किन बातों को दीन में प्राथमिकता प्राप्त है। यह तुला ख़ुदा के बन्दों के पारस्परिक अधिकार भी तौल कर रख देता है। ताकि किसी के साथ कोई अन्याय न हो।

स्पष्ट रहे कि मीज़ान का क्रियान्वयन शरीअत पर भी होता है जिस के आदेश कुर्आन और सुन्नत दोनों में बयान हुए हैं क्यों कि वह एक न्यायिक व्यवस्था है।

38. अल्लाह ने किताब और मीज़ान इस लिए नहीं उतारा है कि लोगों के लिए उस का मानना और न मानना एक समान हो बल्कि इस लिए उतारा है ताकि उस को मानने और न मानने के अलग अलग परिणाम ज़ाहिर हों जिस के लिए अल्लाह तआला ने क्रियामत का दिन निर्धारित किया है जो असंभव नहीं कि क़रीब ही आ लगा हो।

39. मतलब यह कि वे कहते हैं कि क्रियामत को यदि आना है तो वह आ क्यों नहीं जाती। इस तरह वे उस का मज़ाक उड़ाते हैं।

40. अर्थात् अल्लाह की अदालत में हाज़िर होने और उस के समक्ष जवाबदेही से वे भयभीत रहते हैं।

41. क्रियामत का इन्कार खुली गुमराही है। और इस के बारे में बहस में उलझना गुमराही में दूर निकल आना है।

19. अल्लाह अपने बन्दों पर बड़ा मेहरबान है वह जिसे चाहता है रिज़क़ (रोज़ी) देता है। और वह बड़ा शक्तिशाली और प्रभुत्वशाली है।⁴²

اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ
الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ①

20. जो कोई आखिरत की खेती का इच्छुक होता है हम उस की खेती को बढ़ाते हैं⁴³ और जो दुनिया की खेती का इच्छुक होता है हम उस को इसी में से देते हैं। परन्तु आखिरत में उस का कोई हिस्सा नहीं।⁴⁴

مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ وَمَنْ
كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ
مِنْ نَصِيبٍ ②

21. क्या इन के कुछ ऐसे साझीदार (शरीक) हैं जिन्होंने इन के लिए धार्मिक तरीके ईजाद किये हैं जिस की अल्लाह ने इजाज़त नहीं दी।⁴⁵ अगर फैसले की बात (कि नियत समय पर किया जाएगा) तय न पा चुकी होती तो इन का फैसला चुका दिया गया होता⁴⁶ निस्संदेह, इन ज़ालिमों के लिए दुखदायिनी यातना है।

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ اشْرَعُوا لَهُمْ مِنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنْ
بِهِ اللَّهُ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَفُضِيَ بَيْنَهُمْ
وَأَنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ③

22. तुम देखोगे कि ज़ालिम अपनी कमाई के वबाल से डर रहे होंगे और वह उन पर आ कर रहेगा अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने ने अच्छे कर्म किये वे जन्नतों के बागीचों⁴⁷ में होंगे वे जो कुछ चाहेंगे उन को उन के रब के पास मिलेगा। यही है बहुत बड़ा फ़ज़ल।

تَرَى الظَّالِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا وَهُمْ وَاقِعٌ
بِهِمْ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي رَوْضَةٍ
الْجَنَّتِ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذَلِكَ
هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ④

23. यही वह चीज़ है जिस की खुशखबरी देता है अल्लाह अपने उन बन्दों को, जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे। ऐ नबी इन से कहो मैं इस पर कोई बदला नहीं माँगता, मगर कुराबत (समीपता) की मुहब्बत है (जिस का तक्राज़ा पूरा कर रहा हूँ)⁴⁸ जो कोई नेकी करेगा हम उस के लिए उस की नेकी में खूबी को बढ़ाएंगे। अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला और बड़ा क्रदर दान है।⁴⁹

ذَلِكَ الَّذِي يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ وَمَنْ يَقْتَرِفْ
حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُ فِيهَا حَسَنًا إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ شَكُورٌ ⑤

24. क्या ये लोग कहते हैं कि इस व्यक्ति ने अल्लाह पर झूठ बाँधा है। अगर अल्लाह चाहे तो (ऐ नबी) तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे।⁵⁰ वह असत्य को मिटाता है और सत्य को अपने कलिमों (आदेशों) से सत्य कर दिखाता है।⁵¹ निस्संदेह वह दिलों के भेद जानता है।⁵²

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنَّ يَسِّرَ اللَّهُ يَخْتَصِمَ عَلَى
قَلْبِكَ وَيَمْحُ اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ إِنَّهُ
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ⑥

42. यह उस संदेश का निवारण है कि जब हकीकत वह है जो ऊपर बयान हुई, तो अल्लाह काफ़िरों को रिज़क क्यों देता है? फ़रमाया अल्लाह अपने बन्दों पर मेहरबान है इस लिए वह काफ़िरों को भी रोज़ी देता है। रोज़ी का मामला उस की मर्ज़ी पर आश्रित है वह जिस को चाहे रोज़ी दे, और उस की मर्ज़ी पूरी हो कर रहती है। उस को रोकने वाला कोई नहीं। अल्लाह अगर अपने बन्दों पर मेहरबान न होता तो कुफ़र करने पर उन का दाना पानी तुरन्त बन्द कर देता। परन्तु वह उन्हें कर्म करने की मोहलत देता है ताकि उन में अपने रब के मेहरबान होने का एहसास पैदा हो और वे उस की ओर पलटें।

43. अर्थात् जो आख़िरत के लिए बीज बोएगा और उस की सिंचाई करेगा अल्लाह उस को बढ़ाए फ़लाए गा और जब वह आख़िरत में पहुँचेगा तो अपनी फ़सल को बिलकुल तैयार पाएगा।

यह आयत और कुर्आन की दूसरी कितनी ही आयतें आख़िरत को नसबुलएन, लक्ष्य, और उद्देश्य की हैसियत से प्रस्तुत करती हैं। इस लिए आख़िरत को कर्म के लिए मात्र उत्प्रेरक वस्तु समझना सही नहीं। वह उत्प्रेरक भी है और लक्ष्य भी। अतः निगाहें आख़िरत की सफलता पर ही केन्द्रित रहनी चाहिए।

44. अर्थात् जो व्यक्ति आख़िरत को लक्ष्य बनाने के बजाय दुनिया को लक्ष्य बनाता है उस को दुनिया की सारी चीज़ें तो नहीं मिलती अलबत्ता जितना अल्लाह चाहता है उसे दुनिया ही में दे देता है लेकिन उस का आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं होता। क्यों कि जब उस ने आख़िरत को लक्ष्य नहीं बनाया तो उस को आख़िरत की नेमतें क्यों मिलने लगीं। जब उस ने यहाँ के लिए कुछ बोया ही नहीं तो फ़सल किस तरह उगेगी?

45. अर्थात् क्या उन्होंने अपने धार्मिक पेशवाओं और लीडरों को खुदा का साझी की हैसियत दी है कि उन्होंने ने उन के लिए धर्म ईजाद कर दिए जिन की अल्लाह ने हरगिज़ इजाज़त नहीं दी। इस सवाल में कई महत्वपूर्ण वास्तविकताएँ निहित हैं।

एक यह कि जिन धार्मिक पेशवाओं ने अपनी ओर से धर्म गढ़े, या जिन लीडरों ने अपनी ओर से धार्मिक तौर तरीक़े प्रचालित किये या अल्लाह के क़ानून के मुक़ाबले में अपनी मर्ज़ी से क़ानून बनाए उन्होंने ने अपने को अल्लाह के अधिकारों एवं शक्ति में साझीदार समझा, वरना अल्लाह ने उन को यह इजाज़त हरगिज़ नहीं दी कि वे लोगों के लिए धर्म ईजाद करें या धार्मिक रीति का गठन एवं प्रचलन करें या अपनी मर्ज़ी से शरीअत (संविधान) बनाएँ या क़ानून बनाएँ चाहे वह अल्लाह की शरीअत और उस के क़ानून के ख़िलाफ़ ही क्यों न पड़ती

हो।

दूसरी यह कि जो लोग अपने धार्मिक पेशवाओं और लीडरों के पीछे चल रहे हैं और अल्लाह के दीन तथा उस की शरीअत के मुक़ाबले में उन के निर्धारित किये हुए तौर तरीक़ों या गढ़े हुए क़ानूनों का अनुपालन कर रहे हैं उन्होंने ने वास्तव में उन को खुदा के साझीदार की हैसियत दे रखी है। चाहे वह ज़बान से उन को खुदा का साझीदार कहें या न कहें। क्यों कि बन्दों के लिए धार्मिक तौर तरीक़े निर्धारित करना या जीवन सम्बन्धित क़ानून बनाना अल्लाह ही का हक़ है। उस के हक़ में दूसरों को शरीक करना उन को खुदा का शरीक ठहराने के समानार्थ है।

तीसरी यह कि अल्लाह के स्वीकृत दीने-इस्लाम के सिवा जो धर्म भी बनाए गए हैं उन में से किसी के अनुपालन के लिए वैध प्रमाण अथवा औचित्य नहीं है अतः जिस धर्म का भी अनुपालन किया जाएगा वह अल्लाह का इन्कारी और अवज्ञाकारी ठहरेगा।

चौथी यह कि अल्लाह के दीन ने जिन बातों को अपने परिधि क्षेत्र में लिया है उन में से किसी के मुक़ाबले में कोई रीति प्रचलित करने या क़ानून गढ़ने का किसी को अधिकार नहीं है। जो व्यक्ति यह हरकत करता है वह शिर्क का अपराध करता है।

46. अर्थात् आख़िरी फ़ैसले के लिए क्रियामत का दिन निर्धारित न किया गया होता तो दुनिया ही में फ़ैसला चुका दिया गया होता।

47. रौज़ात अर्थात् बागीचे, इस से तात्पर्य जन्नत की हरी भरी जगहें हैं। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह रूम नोट २१

48. यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कुरैश से सम्बोधन है जिन से आप की निकटता नातेदारी थी। सार यह है कि मैं अल्लाह का जो संदेश तुम्हें पहुँचा रहा हूँ उस पर तुम से मैं किसी भी सिले और बदले की माँग नहीं कर रहा हूँ बल्कि यह तुम्हारी नातेदारी की मुहब्बत है जिस के तक्राज़े को पूरा कर रहा हूँ ताकि तुम उस पैग़ाम को जिस को ले कर मैं आया हूँ स्वीकार करो। इस तरह तुम जहन्नम की यातना से बचोगे और तुम्हें सदा सर्वदा की सफलता एवं मुक्ति प्राप्त होगी।

आयत में इल्ला (मगर) अपवादिक स्थिति का दृष्टिगोचर है जो लेकिन और बल्कि का अर्थ दे रहा है। और यह ऐसी ही अपवादिक स्थिति है जैसा कि सूरह फ़ुरक़ान की आयत ५७ में है :-

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ شَاءَ
أَنْ يَتَّخِذَ إِلَهِي رَبًّا سَبِيلًا۔ (الفُرْقَان: ५८)

अर्थ :- “कहो मैं तुम से इस पर कोई मुआवज़ा नहीं माँग

रहा हूँ मगर यह कि जो चाहे अपने रब की राह स्वीकार करे।”

जाहिर है यहाँ किसी का अपने रब की राह स्वीकार करना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए तब्लीग का मुआवज़ा नहीं है। इसी प्रकार इस सिलसिले में कुरैश की नातेदारी के लगाव का हवाला मुआवज़ा और सिले के अर्थ में नहीं है बल्कि इस के तक्राज़े को पूरा करने के अर्थ में है। एक रसूल तब्लीग का काम एक अनिवार्य कर्तव्य की हैसियत से अन्जाम देता है और कर्तव्य भी ऐसा जो उस का परम कर्तव्य होता है किन्तु जिस क़ौम से उस का कुल का सम्बन्ध होता है उस का स्वाभाविक लगाव उसे इस सूरत में और अधिक बेचैन कर देता है जब वह कुफ़्र की राह अपना कर के अल्लाह के प्रकोप को निमंत्रण देती है।

कुछ मुफ़स्सिरीन ने आयत की यह व्याख्या की है कि मैं तुम से इस काम पर कोई सिला नहीं माँगता मगर चाहता हूँ कि तुम कम से कम रिश्तेदारी की मुहब्बत का लिहाज़ करो। मगर यह बात एक नबी के पद से निम्न स्तर की बात है कि वह अपने विरोधियों से रिश्तेदारी की मुहब्बत का मुतालबा करे। कुर्आन में हर रसूल की ज़बान से यही बात अदा हुई कि :-

مَا سَأَلْكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجَرِيَ
الْأَعْلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ (شعراء: १०९)

अर्थ :- “मैं इस पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता। मेरा बदला सारे जहान के रब (रब्बुलआलमीन) के ज़िम्मे है।” (शुअरा - १०९)

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिदयात की, कि फ़रमाएं

قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ
إِنْ أَجَرِيَ الْأَعْلَىٰ اللَّهُ (سبا - २८)

अर्थ :- “कहो अगर मैं ने तुम से कोई बदला माँगा है तो वह तुम्हारे ही लिए है। मेरा बदला तो अल्लाह ही के ज़िम्मे है।” (सबा - ४७)

और मुसलमानों के एक वर्ग ने जो हज़रत अली की इमामत और उन के बारे में अपने अतिशयोक्तिपूर्ण धारणा को कुर्आन से सिद्ध करना चाहता है 'الْمَوْدَّةُ فِي الْقُرْبَىٰ' से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रिश्तेदार हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन की मुहब्बत मुराद ली। हालाँकि

जिस समय यह सूरह नाज़िल हुई थी उस समय न हज़रत हसन का अस्तित्व था और न हज़रत हुसैन का। और आप के अधिकतर नातेदार बहुदेववादी थे इस लिए इस वाक्य का यह अर्थ लेना किसी तरह सही नहीं कि मैं इस तब्लीग के काम पर यह चाहता हूँ कि तुम मेरे नातेदारों से मुहब्बत करो। कुर्आन में नबियों की निःस्वार्थ सेवा के बारे में जो कुछ इर्शाद हुआ है और जिन आयतों का हम ने ऊपर हवाला दिया है उन को देखते हुए ऐसे अर्थ लेने की कोई गुन्जाइश नहीं है।

49. यह अल्लाह की तरफ़ से सम्मान बढ़ाना है कि बन्दा जब उस की ओर बढ़ता है और नेकी करता है तो वह उस में कुछ और ख़ूबी व भलाई पैदा कर देता है। यदि एक व्यक्ति के बनाए हुए महल को चाँदनी रात चार चाँद लगा देती है तो अल्लाह जब किसी व्यक्ति की नेकी को सुसज्जित करेगा तो उस के निखार और उस के सौंदर्य का कौन अन्दाज़ा कर सकता है।

50. अर्थात् जो वहय तुम्हारे ऊपर नाज़िल होती है उस का सिलसिला बन्द कर दे। यह ऐसी ही बात है जैसी सूरह बनी इस्राईल में इर्शाद हुई है :-

وَلَوْ شِئْنَا لَنَذَّهَبَنَّ بِالَّذِي
أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ (بنی اسرائیل - ८६)

अर्थ :- “और अगर हम चाहें तो जो वहय हम ने तुम पर की है उस को छीन लें।” (बनी इस्राईल ८६)

और अभिप्रेत इस से यह स्पष्ट करना है कि यह कलाम अल्लाह की वहय है जो अल्लाह के नाज़िल करने से नाज़िल हुई है। और वह चाहे तो इस वहय को ले भी सकता है। इस में पैगम्बर का अपना कोई हाथ नहीं है। अतः यह आरोप बिलकुल निराधार है कि कुर्आन को पैगम्बर ने गढ़ा है।

51. अर्थात् आँखें खोल कर देखो कि इस कलाम के द्वारा सत्य साबित हो रहा है या नहीं। अगर सत्य साबित हो रहा है और वास्तव में साबित हो रहा है तो यह उस के अल्लाह की ओर से नाज़िल होने का खुला सबूत है।

52. इशारा है उन लोगों की तरफ़ जो दिल में महसूस करते हैं कि यह कलाम सत्य है लेकिन वैमनस्यपूर्ण पक्षापात और नाज़ायज़ मसलहतों के चलते उस के सत्य होने को स्वीकार नहीं करते और उन का यह रवैया उन के ज़मीर उन की अन्तरात्मा के विरुद्ध होता है। मगर अल्लाह दिल के भेद जानता है इस लिए एक दिन आएगा जब वह उन्हें बताएगा कि उन्होंने अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ को किस तरह दबा कर रखा था।

वही है जो अपने बन्दों की तौबा स्वीकार करता है और बुराइयों से दरगुज़र फ़रमाता है। और जानता है जो कुछ तुम करते हो। वह उन लोगों की दुआ कुबूल करता है जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किये और अपने फ़ज़ल (उदार अनुग्रह) से उन्हें और प्रदान करता है। रहे काफ़िर तो उन के लिए कठोर यातना है। (अल-कुआन)

25. वही है जो अपने बन्दों की तौबा स्वीकार करता है और बुराइयों से दरगुज़र फ़रमाता है।⁵³ और जानता है जो कुछ तुम करते हो।

وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ
وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٢٥﴾

26. वह उन लोगों की दुआ कुबूल करता है जो ईमान लाए और जिन्होंने ने नेक अमल किये⁵⁴ और अपने फ़ज़ल (उदार अनुग्रह) से उन्हें और प्रदान करता है। रहे काफ़िर तो उन के लिए कठोर यातना है।

وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ
فَضْلِهِ ۖ وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿٢٦﴾

27. अगर अल्लाह अपने बन्दों को सम्पन्नता के साथ रोज़ी दे देता तो वे ज़मीन में ज़्यादाती पर उतर आते मगर वह एक ख़ास मात्रा में जिस तरह चाहता है उतारता है।⁵⁵ वह अपने बन्दों से बाख़बर है और उन्हें देख रहा है।

وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلَكِنْ يُنْزِلُ
بِقَدَرٍ مَّا يَشَاءُ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٢٧﴾

28. वही है जो लोगों के मायूस हो जाने के बाद बारिश भेजता है⁵⁶ और अपनी रहमत फैला देता है। वही संरक्षक है, प्रशंसा योग्य।⁵⁷

وَهُوَ الَّذِي يُنْزِلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ
وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٨﴾

29. और उस की निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन की पैदाइश⁵⁸ और जानदार जो उस ने इन में फैलाए हैं⁵⁹ और वह उन को जब चाहे एकत्र करने पर सामर्थ है।

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
مِنْ دَابَّةٍ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾

30. जो मुसीबत भी तुम को पहुँचती है तुम्हारे अपने करतूतों के कारण पहुँचती है⁶⁰ और बहुत सी बुराइयों से वह दरगुज़र भी फ़रमाता है।

وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا
عَنْ كَثِيرٍ ﴿٣٠﴾

31. तुम ज़मीन में उस के क़ाबू से नहीं निकल सकते और न अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारा कोई संरक्षक एवं सहायक है।⁶¹

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ
مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٣١﴾

32. उस की निशानियों में से समुद्र में चलने वाले जहाज़ हैं गोया पहाड़।⁶²

وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٣٢﴾

33. अगर वह चाहे तो हवा को ठहरा दे तो वे उस की सतह पर ठहरे ही रह जाएँ।⁶³ निस्संदेह इस में निशानियाँ हैं हर उस व्यक्ति के लिए जो सब्र और शुक्र करने वाला हो।⁶⁴

إِنْ يَشَأْ يُسْكِنِ الرِّيحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلَى ظَهْرِهِ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿٣٣﴾

53. यह तौबा पर उकसाना है कि गुनहगारों के लिए अब भी मौका है कि वे संभल जाएं और अल्लाह के समक्ष तौबा करें। जो व्यक्ति भी सच्चे मन से अल्लाह के समक्ष प्रायश्चित्त करता है अल्लाह तआला उसे धुत्कारता नहीं है बल्कि उस की तौबा को स्वीकार करता है और गुनाहों को क्षमा करता है।

54. अर्थात् ईमान लाओ और नेक अमल करो तो अल्लाह तुम्हारी दुआएं जरूर सुनेगा कि नेक लोगों की दुआएं अल्लाह के यहाँ स्वीकार की जाती है।

ध्यान रहे कि नेक बन्दों की दुआएं सांसारिक नेमतों की प्राप्ति से अधिक जहन्नम के अज़ाब से बचने और आखिरत की कामयाबी की प्राप्ति के लिए होती है और अल्लाह उन की दुआओं को जरूर स्वीकार करता है।

55. इस आयत में एक बहुत बड़ी वास्तविकता पर से परदा उठाया गया है। दुनिया में किसी को कुशादा रोज़ी मिलती है और किसी को नपी तुली। ऐसा क्यों नहीं हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति को अधिक मात्रा में रोज़ी मिलती यहाँ तक कि वह अपनी आर्थिक आवश्यकताओं के लिए दूसरों का मोहताज न रहता। ऐसा करना निश्चय ही अल्लाह के लिए कुछ भी मुश्किल न था और इस से अल्लाह के खज़ानों में हरगिज़ कोई कमी न आती लेकिन बन्दों की मसलहत तक्राज़ा करती थी कि एक खास मात्रा ही में इन्हें रोज़ी दी जाए क्यों कि रोज़ी को भारी मात्रा में पा कर मनुष्य घमण्ड और बड़ाई में लिप्त हो जाता है और यह घमण्ड एवं बड़ाई उसे उद्वण्ड बना देती तथा इस बात पर आमादा करती कि दूसरे लोगों पर वर्चस्वता प्राप्त करे जिस के लिए वह जुल्म और ज़्यादती पर उतर आता। इस प्रकार मानव समाज में बड़े पैमाने पर खून खराबा होता और ऊधम मच जाता। जिन लोगों पर रोज़ी के दरवाज़े पूरी तरह खोल दिए गए हैं उन की मानसिकता और उन का रवैया ऐसा ही है और इस से निश्चय ही इन्सानी सोसाइटी में जुल्म और ज़्यादती की अति हो गई है। फिर भी यह सूरत एक खास हद तक ही पाई जाती है। लेकिन अगर रोज़ी के दरवाज़े सब के लिए पूरी तरह खुल जाते तो जुल्म और ज़्यादती चारों ओर छा जाती। और मानव समाज में बहुत बड़े पैमाने पर फ़साद फूट पड़ता।

मौजूदा दौर में जो आर्थिक प्रगति हुई है और उस के नतीजे में खुशहाली जो फैलती जा रही है उस के औसत से अशान्ति, अनारकी, आतंकवाद, और मारकाट में भी वृद्धि होती जा रही है। जो दिन निकलता है फ़ितने और फ़साद की भयावह ख़बरें सुनाता है और जंग में इन्सानों को मारने के लिए ऐसे विनाशकारी हथियार इस्तेमाल किये जाते हैं कि इन्सानियत काँप उठे। इन्सानों को मारने वाले रसायनिक

हथियारों पर बेशुमार दौलत लुटाई जाती है इस से अन्दाज़ा किया जा सकता है कि अगर अल्लाह तआला लोगों को और अधिक खुशहाल बना दे तो वे फ़साद और जुल्म ज़्यादती का कैसा तूफ़ान ज़मीन पर बरपा करेंगे।

56. व्याख्या के लिए देखिए सूरह रूम नोट ८६

57. अर्थात् यह सारा किया धरा सब उसी का है और वही है प्रशंसा योग्य और शुक्र का पात्र। उस के सिवा न किसी का इस औचित्यपूर्ण जगत पर कन्ट्रोल है और न कोई हस्ती बन्दों पर परोपकार करने वाली है कि प्रशंसा के योग्य ठहरे।

58. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रर: नोट १९६

59. ज़मीन पर तो जीवधारी प्राणी फैले हुए हैं आसमान में भी परिन्दे उड़ते हैं। ये जीवधारी तो अपने प्राणों के भी मालिक नहीं। फिर कौन है जो इन का मालिक और रब है? इस का जवाब उस के सिवा और क्या हो सकता है कि वही जिस ने इन को पैदा किया और इन को ज़मीन और आसमान में फैला रहा है।

आयत के इन शब्दों में कि **وَبَتْ فِيهِمَا** “इन दोनों में (अर्थात् ज़मीन और आसमान में) जानदार फैला दिये” इस बात की तरफ़ इशारा पाया जाता है कि आसमानी दुनिया में भी जानदार सृष्टि मौजूद है।

60. आयत में सम्बोधन काफ़िरों और नाफ़रमानों से है। उन से कहा जा रहा है कि यह तुम्हारे करतूत ही हैं जो तुम्हारे लिए एक न एक मुसीबत लाते ही रहते हैं। एक व्यक्ति जो बुराइयाँ कमाता है उस के फलस्वरूप उस पर कोई न कोई विपदा टूटती रहती है और जो सोसाइटी बुराइयाँ समेट लेती है वह सामूहिक रूप से मुसीबत का शिकार हो जाती है। आयत का सार इसी वास्तविकता को स्पष्ट करता है वरना मुसीबतें तो नेक लोगों पर भी आती रहती हैं जिस से उन की आजमाइश अभिप्रेत होती है परन्तु यहाँ यह पहलू बहस में नहीं है।

61. अर्थात् अल्लाह जब चाहे तुम्हारी आज्ञादी छीन सकता है और तुम उस के अज़ाब (प्रकोप) की चपेट में आ सकते हो। न तुम्हारा अपना बल बूता है कि तुम उस की चपेट में आने से अपने को बचा सको। और न तुम्हारा कोई संरक्षक या सहायक हो सकता है जो तुम्हें उस से बचा सके।

62. अर्थात् बड़े बड़े जहाज़ जो पहाड़ों की तरह समुद्र में खड़े रहते हैं।

63. उस ज़माने में केवल हवा के जोर से चलने वाले जहाज़ थे जो हवा के बग़ैर चल नहीं सकते थे। और हवाएँ अल्लाह ही चलाता है। अगर वह हवाओं को रोक दे तो इन

जहाज़ों का चलना बन्द हो जाए। और मौजूदा ज़माने में हवाई जहाज़ ईजाद हुए हैं। जिन का चलना हवा ही पर निर्भर है यह इस बात की स्पष्ट निशानी है कि इस औचित्यपूर्ण जगत पर अधिकार रखने वाली और कन्ट्रोल करने वाली हस्ती केवल

अल्लाह की हस्ती है। फिर किसी और को अधिकार रखने तथा कन्ट्रोल करने वाला मान कर उस को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पुकारने का क्या औचित्य है?

64. व्याख्या के लिए देखिए सूरह लुक़मान नोट ५३



या (वह चाहे) तो उन के करतूतों की पादाश में उन जहाजों को तबाह कर दे। और चाहे तो बहुत सी बातों से दरगुजर फ़रमाए। और (अगर तबाह कर दे तो इस लिए ताकि) वे लोग जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं जान लें कि उन के लिए कोई भागने की जगह नहीं है। तुम्हें जो कुछ भी दिया गया है वह मात्र सांसारिक जीवन की सामग्री है, और जो कुछ अल्लाह के यहाँ है वह कहीं बेहतर और पायेदार है, उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (अल-कुआन)

34. या (वह चाहे) तो उन के करतूतों की पादाश में उन जहाज़ों को तबाह कर दे। और (चाहे तो) बहुत सी बातों से दरगुजर फ़रमाए।

أَوْ يُوقِفَهُنَّ بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيرٍ ۝

35. और (अगर तबाह कर दे तो इस लिए ताकि) वे लोग जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं जान लें कि उन के लिए कोई भागने की जगह नहीं है।

وَيَعْلَمَ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُمْ مِنْ مَّخِصٍ ۝

36. तुम्हें जो कुछ भी दिया गया है वह मात्र सांसारिक जीवन की सामग्री है, और जो कुछ अल्लाह के यहाँ है वह कहीं बेहतर और पायेदार है, ⁶⁵ उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं।⁶⁶

فَمَا أُوتِيتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝

37. जो बड़े गुनाहों ⁶⁷ और बेहयाई के कामों ⁶⁸ से बचते हैं और जब गुस्सा आ जाता है तो क्षमा करते हैं।⁶⁹

وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ ۝

38. जो अपने रब की पुकार पर लब्बैक कहते हैं ⁷⁰ और नमाज़ क़ायम करते हैं, ⁷¹ और अपने मामले आपस के परामर्श से चलाते हैं। ⁷² और जो हमारे दिए हुए रिज़क़ (रोज़ी) में से खर्च करते हैं।⁷³

وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۝

39. और जब उन पर ज़ुल्म होता है तो वे अपना बचाव करते हैं।⁷⁴

وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُونَ ۝

40. और बुराई का बदला वैसी ही बुराई है, ⁷⁵ फिर जो कोई दरगुजर करे और इस्लाह करे तो उस का बदला अल्लाह के ज़िम्मे है। ⁷⁶ अल्लाह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता।⁷⁷

وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝

41. और जिन्होंने ने अपने ऊपर ज़ुल्म होने के बाद बदला लिया उन पर कोई इज़्ज़ाम नहीं।⁷⁸

وَلَمَنِ انتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَٰئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِنْ سَبِيلٍ ۝

42. इज़्ज़ाम तो उन लोगों पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ सरकशी करते हैं।⁷⁹ ऐसे लोगों के लिए दुखदायिनी यातना है।

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

43. अलबत्ता जिस ने सब्र किया और क्षमा किया तो यह बड़ा ही साहसपूर्ण काम है।⁸⁰

وَلَكِنْ صَبْرٌ وَعَفْوٌ إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۝

65. संसार में जो धन दौलत वा सामग्री मनुष्य को मिलती है वह यहाँ के अल्प जीवन ही के लिए होते हैं। जब मौत आती है तो आदमी सब कुछ यहाँ छोड़ कर कूच कर जाता है और कोई चीज़ भी उस के साथ नहीं जाती कि मौत के बाद वाले जीवन में उस के काम आए। इस के विपरीत आखिरत की नेमतें दुनिया की नेमतों के मुकाबले में कई गुना बेहतर हैं और हमेशा बाक़ी रहने वाली भी। अब यह मनुष्य की अपनी योग्यता है कि वह अपने लिए कम स्तर के और अस्थायी सामग्री जुटाता है या उच्च कोटी की स्थायी सामग्री। यदि वह पहली चीज़ का चुनाव करता है और उसे जुटाने में जुट जाता है तो दुनिया ही उस का लक्ष्य बनेगी किन्तु यदि वह दूसरी चीज़ का चुनाव करता है तो उस के विचार और चिन्तन पर आखिरत ही छाया होगी और वह आखिरत ही को लक्ष्य बना कर ज़िन्दगी गुज़ारेगा।

66. यहाँ उन लोगों के गुण बयान किये जा रहे हैं जो आखिरत की नेमतों से मालामाल होंगे उन की पहली ख़ूबी यह है कि वे उन बातों पर ईमान लाए जिन पर ईमान लाने की दअवत कुर्आन देता है। फिर इस ईमान ही का असर है कि उन के अन्दर अल्लाह पर भरोसा करने के गुण पैदा हो गए अतः उन का विश्वास संसार और उस की भौतिक सामग्रियों पर नहीं बल्कि जो इस भौतिक जगत का मूल कारण है अर्थात् अल्लाह पर होता है।

तवक्कुल (भरोसा) यह है कि आदमी बेहतर से बेहतर तदबीर करे किन्तु सब कुछ तदबीर ही को न समझे बल्कि इस विश्वास के सात मामले को अल्लाह के प्रति समर्पित करे कि होता वही है जो अल्लाह को मन्ज़ूर होता है। और यह सच है कि कोई तदबीर भी कारगर उस समय होती है जब अल्लाह उस के लिए साजगारी पैदा करना चाहता है।

ध्यान रहे कि इस्लाम और कुफ़्र की कशमकश में तवक्कुल (भरोसा) ईमान वालों के लिए अति आवश्यक है और इसी मुनासिबत से यहाँ इन का गुण स्पष्ट किया गया है।

67. कबीरा गुनाहों की व्याख्या के लिए देखिए सूरह निसा नोट ७९।

68. बेहयाई के कामों की व्याख्या के लिए देखिए सूरह अनआम नोट २७७।

69. किसी व्यक्ति की ओर से कष्ट पहुँचने पर गुस्सा आना बिल्कुल स्वाभाविक बात है परन्तु दरगुज़र से काम लेना और क्षमा करना एक मोमिन का उच्च गुण है। यह गुण भावनाओं पर कन्ट्रोल, खुदा के बन्दों के साथ अच्छा बर्ताव तथा न्याय और समानता पर आमादा करती है। गुस्से को पी जाना निश्चय ही बहुत बड़ी ख़ूबी है किन्तु इस से बड़ी ख़ूबी यह है कि गुस्सा आने पर दोषी को क्षमा कर दिया जाए। मगर जो लोग खुदा से निर्भय

होते हैं वे गुस्से में बेक्राबू हो जाते हैं तथा जुल्म और ज़्यादती पर उतर आते हैं।

70. अर्थात् अपने रब का प्रत्येक आदेश अनुपालन की भावना के साथ सुनते हैं और उसे स्वीकार करते हैं इस के विपरीत नाम मात्र के मुसलमानों का हाल यह होता है कि वे अपने रब की दअवत पर कान धरने के लिए तैयार नहीं होते और न उन को उस के आदेश सुनने से कोई दिलचस्पी होती है।

71. अर्थात् नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और इस अनिवार्य कर्तव्य को बड़ी तैयारी के साथ अदा करते हैं जिस में अल्लाह के प्रति हार्दिक लगाव भी शामिल होता है और प्रतिष्ठा एवं शान्ति भी तथा उन बातों का लिहाज़ भी जिन का लिहाज़ करना शरीअत ने अनिवार्य ठहराया है।

इक्रामते-सलात (नमाज़ कायम करना) एक व्यापक परिभाषा है जिस में जमाअत के साथ नमाज़ अदा करना और उस के लिए पंक्ति बनाना और पंक्ति में रहना भी शामिल है। हदीस में आता है :-

سَوُواصْفُوكُمْ فَإِنَّ تَسْوِيَةَ الصُّفُوفِ
مِنْ إِقَامَةِ الصَّلَاةِ. (بخاری کتاب الصلوة)

अर्थ :- “पंक्तियों को दुरुस्त रखें कि पंक्तियों को दुरुस्त रखना इक्रामते-सलात में से है।” (बुख़ारी किताबुससलात)

तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है।

صَلُّوا كَمَا رَأَيْتُمُونِي أَصَلِّي.

(بلوغ المرام برواية البخاری)

अर्थ :- “उसी तरह नमाज़ पढ़ो जिस तरह तुम मुझे नमाज़ पढ़ते हुए देखते हो।” (बलूगुलमराम, बुख़ारी की रिवायत से) इस लिए किताब और सुन्नत में नमाज़ का जो तरीक़ा बताया गया है उस के अनुसार नमाज़ अदा करने ही से इक्रामते-सलात का मंशा पूरा हो सकता है।

72. अम्र से मुराद सामाजिक अथवा सामूहिक मामले हैं जो एक अनुशासन या एक व्यवस्था का तक्राज़ा करते हैं। इसी मुनासिबत से उन लोगों को जिन के हाथ में सामाजिक मामलों की बागडोर होती है, “उलिल अम्र” कहा जाता है। यहाँ ईमान वालों के एक महत्वपूर्ण गुण के तौर पर यह बात बयान हुई है कि उन के मामले परस्पर परामर्श से तय पाते हैं।

ध्यान रहे कि यह सूरह मक्की है और मक्की दौर में मुसलमान इस पोजीशन में नहीं थे कि अपनी राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करें। इस के बावजूद शूरा (परामर्श) के द्वारा मामलों को तय करने का निर्देश दिया गया है जिस का मतलब

यह था कि काफ़िरों के वर्चस्व के बावजूद मुसलमान अपने जिन सामाजिक मामलों के बारे में कोई फैसला और कोई क़दम उठा सकते हैं उन के लिए वे शूराई (परस्पर परामर्श का) तरीक़ा अपनाए। यह बहुत बड़ी रहनुमाई है उन मुसलमानों के लिए भी जो किसी ग़ैर इस्लामी देश में रहते हैं। उन को दीनी मसलों में मिल्ली सतह पर अर्थात् पूरे समुदाय की स्तर पर शूराई व्यवस्था का आयोजन करना चाहिए ताकि मिल्लमत का सही प्रतिनिधित्व हो और उस के फैसलों को पूरी मिल्लत अमली जामा पहना सके।

इस आयत में शूराइयत को जितने महत्व के साथ प्रस्तुत किया गया है वह इस्लाम की राजनीतिक व्यवस्था की बहुत बड़ी बुनियाद है। अर्थात् मुसलमानों में सत्ता वही लोग संभालेंगे जिन को वे इस काम के लिए चुनेंगे। मनमानी करने वाले लोगों का इस पर अधिपत्य जमा लेना बड़ी ज़्यादती की बात है। यह शूराइयत (Dictatorship) और मलूकियत (जिस में राजा ही को सारे अधिकार प्राप्त होते हैं की जड़ काट देती है। फिर मौजूदा दौर का लोकतंत्र और इस्लाम की शूराइयत में स्पष्ट अन्तर यह है कि लोकतंत्र बिन नकेल के ऊँट की भाँति बिलकुल स्वतंत्र होता है। यदि वह पाबन्द होता है तो अपने ही बनाए हुए संविधान का। इस लिए उस के फैसले सत्य विरोधी, न्याय विरुद्ध, बुराइयों को बढ़ावा देने वाले और जुल्म, ज़्यादती पर आधारित होते हैं। इस के विपरीत इस्लामी शूराइयत अल्लाह के आदेश और उस के रसूल की हिदायत की पाबन्द होती है। वह इस बात की अधिकारी नहीं होती कि शरीअत के विरुद्ध कोई फैसला करे या शरीअत की सामीओं का उल्लंघन करे। वह किताब और सुन्नत की रौशनी में उभरने वाले मसलों पर गौर करती है तथा उन ही की रौशनी में फैसले करती है।

शूरा का फैसला उसी को कहा जा सकता है जिस पर सहमति हुई हो या जिस के पक्ष में शूरा का बहुमत हो। अकेले अध्यक्ष (अमीर) या ख़लीफ़ा की राय को शूरा का फैसला नहीं ठहराया जा सकता और न शूरा के अल्पमत को शूरा का फैसला कहा जा सकता है क्योंकि किसी भी मामले में आदेश ग़ालिब चीज़ का ही होता है और अगर अमीर शूरा की बहुमत के फैसले का पाबन्द न हो तो शूरा बेवज़न हो कर रह जाती है।

शूरा या परामर्श के लिए वह लोग उचित हो सकते हैं, जो अल्लाह का डर रखने वाले, परहेज़गार, राय देने में दक्ष और विश्वासपात्र हों। झूठे, उल्लंघनकारी, अपराधी मानसिकताग्रस्त तथा सतही लोग मामले को सुलझाने के बजाए उलटा उलझा देते हैं।

आयत में नमाज़ के फ़ौरन बाद शूरा का वर्णन हुआ है। यह इस बात की तरफ़ इशारा है कि शूराइयत नमाज़ का लाभांश

(फ़ैज़ान) है और वही शूरा ख़ैर और बरकत वाली हो सकती है जो नमाज़ को क़ायम करने वाली हो। बेनमाज़ी लोग शूरा के लिए कदापि उचित नहीं हैं। इस मौक़े पर सूरह आले-इमरान की आयत १५९ (آية: ١٥٩) *وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ* के नोट नम्बर ९१ को सामने रखा जाए।

73. मुराद अल्लाह की राह में खर्च करना है जिस में ज़कात सदका और दीनी मक़सद के लिए खर्च करना शामिल है। (देखिए सूरह बक्रर: आयत २६२ सूरह अनफ़ाल आयत ६०, सूरह तौबा आयत ३३)

74. “इन्तिसार” का अर्थ अरबी में बचाव करने, रक्षा करने और बदला लेने के भी हैं। इस्लाम की शिक्षा हरगिज़ यह नहीं है कि जो जुल्म भी हो सहते रहो और जवाबी कारवाई करने का तुम को कोई हक़ नहीं है। यह दीन एक कर्म व्यवस्था का कार्य प्रणाली है न कि ख़्याली बातों और अमल में न ला सकने वाली बातों का संग्रह। इस लिए इस को न अहिंसा से कोई लगाव है और न ईसाईयत की इस शिक्षा से कि अगर कोई तुम्हारे एक गाल पर तमाचा मारे तो तुम अपना दूसरा गाल उस के आगे कर दो। वह हिंसा का जवाब हिंसा से देने और दुश्मन के दाँत खट्टे करने की अनुमति देता है मगर इस शर्त के साथ कि न्याय और इन्साफ़ का दामन हाथ से न छूटने पाये जैसा कि बाद की आयत से स्पष्ट है। वास्तव में इस्लाम ने हर तरह के हालात का लिहाज़ किया है और विभिन्न मानसिकताओं की रियायत की है। कभी हालात इस बात का तकाज़ा करते हैं कि हिंसा का जवाब हिंसा से दिया जाए ताकि ज़ालिम का जोर टूटे और कुछ लोग भी ऐसे होते हैं जो हर समय सहिष्णुता और दरगुज़र से काम नहीं ले सकते। इस लिए इस्लाम ने जो शिक्षा दी है वह बहुत ही संतुलित तथा न्याय पर आधारित है। उस ने बदला लेने की भावना की निन्दा नहीं की बल्कि इस की अनुमति दे दी साथ ही सब्र और सहिष्णुता से काम लेने को उत्प्रेरित किया तथा इस का साहस बढ़ाया।

रहा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का वह कथन जो बाइबिल में उन से संबद्ध किया गया है :-

“तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि बुरे का सामना न करना। परन्तु जो कोई तेरे दहिने गाल पर थप्पड़ मारे उस की ओर दूसरा भी फेर दे। और यदि कोई तुझ पर नालिश कर के तेरा कुर्ता लेना चाहे तो उसे चोगा भी ले लेने दे।” (मत्ती ५: ३८, ३९, ४०, ४१)

तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का मंशा तौरात के उस आदेश को जो बदला (प्रतिकार) से सम्बन्धित है, निरस्त करना नहीं था। बल्कि उस समय के हालात में उन्होंने ने अपने

अनुयायियों को जो गिनती के थोड़े थे और इस पोजीशन में नहीं थे कि कोई जवाबी कार्रवाई कर सकें, सब्र की तल्कीन की और सांकेतिक शब्दों में फ़रमाया कि कोई तुम्हारे एक ग़ाल पर तमाचा मारे तो दूसरा भी उस की तरफ़ फेर देना। मतलब यह था कि रोमी राज्य और असमाजिक तत्व तुम पर जुल्म करेंगे और तुम्हारे पास अपने बचाव और अपनी रक्षा का कोई सामान नहीं होगा। ऐसी सूरत में तुम्हें इस बात के लिए तैयार रहना चाहिए कि एक तमाचे के बाद दूसरा तमाचा भी खाना पड़ेगा। यह एक नैतिक निर्देश था न कि शरअी क़ानून की बात। और इस नैतिक बात का भी वह मतलब नहीं था जो ईसाइयों ने समझा बल्कि एक संकेतिक व्यंजना है जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया और लूका की इन्जील में भी यह हिदायत इस तरह बयान हुई है कि तौरात के इस आदेश का कि आँख के बदले आँख का कोई हवाला नहीं है। और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तौरात के आदेश को निरस्त करने के लिए नहीं आए थे अतः उन की ओर किसी ऐसी बात को मंसूब करना जो तौरात के शरअी आदेश को निरस्त करने के समानार्थ हो, सही नहीं हो सकता।

75. अर्थात् जितनी तकलीफ़ किसी ने पहुँचाई है उस को उतनी ही तकलीफ़ पहुँचाई जा सकती है और जितनी क्षति किसी ने पहुँचाई है उस से उसी क्षति भर की आपूर्ति का मुतालबा किया जा सकता है। किसी ने यदि एक व्यक्ति का ग़लास तोड़ दिया

है तो उस के जवाब में उस व्यक्ति द्वारा उस के घर में आग लगा देना सरासर जुल्म होगा।

76. दरगुज़र करने, सुलह सफ़ाई की बात करने और सुधार कार्य करने ही पर उकसाना है और इस अमल पर अल्लाह तआला ने इनाम का वादा कर रखा है।

77. इस में चेतावनी है कि अगर तुम ने बदला लेने में सीमोल्लंघन किया, हद से आगे बढ़े तो याद रखो यह जुल्म होगा और अल्लाह ज़ालिमों को हरगिज़ पसंद नहीं करता।

78. अर्थात् मज़लूम को हक़ पहुँचता है कि वह ज़ालिम से बदला ले। अतः यदि कोई मज़लूम ज़ालिम से बराबरी का बदला लेता है तो कोई कारण नहीं कि उस की निन्दा की जाए। उस से कोई पूछ ताछ नहीं होगी।

79. अर्थात् निन्दा के पात्र वे लोग हैं जो खुदा के बन्दों पर जुल्म करते हैं और अल्लाह के विद्रोही बन कर रहते हैं और सोसाइटी में फ़साद फैलाते हैं। पूछ ताछ ऐसे ही लोगों से होगी।

80. अर्थात् कोई व्यक्ति ज़्यादती कर ही बैठा तो इस पर सब्र करना और दरगुज़र से काम लेना और अपने दुश्मनों को क्षमा करना बहुत बड़ी बड़ाई और भलाई की बात है। यह वह गुण है जो मनुष्य के आचरण तथा उस के चरित्र को मज़बूत बनाता है और उस के हौसलों को बुलन्द करता है। यह साहस और दृढ़ व्यक्ति का काम है जो इन्सान को महान बनाता है।



44. जिस को अल्लाह गुमराह कर दे तो उस के बाद उस का कोई संरक्षक नहीं।⁸¹ तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वे अज़ाब को देख लेंगे तो कहेंगे, है कोई वापसी की राह ?⁸²

وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ وَدَّيٍّ مِّنْ بَعْدِهِ وَتَرَى الظَّالِمِينَ لَمَّا رَأَوْا الْعَذَابَ يَقُولُونَ هَلْ إِلَىٰ مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيلٍ ۖ ﴿٣٣﴾

45. और तुम देखोगे कि वे जहन्नम के सामने इस तरह पेश किये जाएंगे कि अपमान से झुके हुए कन आँखियों से देख रहे होंगे।⁸³ उस समय ईमान वाले कहेंगे कि असली घाटे में रहने वाले वही हैं जिन्होंने क्रियामत के दिन अपने आप को और अपने सम्बन्धियों को घाटे में डाला।⁸⁴ खबरदार ! ये ज़ालिम स्थिर रहने वाली यातना में होंगे।⁸⁵

وَتَرَاهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهِمْ خَشِيعِينَ مِنَ الدِّالِّ يَنْظُرُونَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ وَقَالَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ الْخَبِيرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَاهْلَكُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ الْإِنَّا الظَّالِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّقِيمٍ ۖ ﴿٣٤﴾

46. और उन के कोई दोस्त न होंगे जो अल्लाह के मुकाबले में उन की मदद कर सकें। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे, उस के लिए कोई राह नहीं।

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ أَوْلِيَاءَ يَنْصُرُونَهُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ سَبِيلٍ ۖ ﴿٣٥﴾

47. अपने रब की दअवत स्वीकार कर लो इस से पहले कि अल्लाह की तरफ़ से एक ऐसा दिन आए जिस को टाला न जा सकेगा।⁸⁶ उस दिन तुम्हारे लिए पनाह की कोई जगह न होगी और न तुम (यातना को) दफ़ा कर सकोगे।⁸⁷

إِسْتَجِيبُوا لِلرَّبِّ كَمَا مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ مَا لَكُم مِّنْ مَّجَالٍ تَوْمِيدٍ وَمَا لَكُم مِّنْ يَّكْبُرٍ ۖ ﴿٣٦﴾

48. लेकिन अगर मुँह फेर लेते हैं तो (ऐ नबी !) हम ने तुम्हें इन पर निगेहबान बनाकर नहीं भेजा है।⁸⁸ तुम पर केवल पहुँचाने की ज़िम्मेदारी है। और मनुष्य को जब हम अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं तो इस पर इतराने लगता है और अगर उस की करतूतों के कारण कोई मुसीबत उस पर आती है तो वह नाशुक्रा (कृतघ्न) बन जाता है।⁸⁹

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا إِلَّا أَلْبَلَعُوا وَأَنَّىٰ إِذَا ذُكِّرْنَا الْإِنْسَانَ مِثْلَ خِثْلٍ خَفِيٍّ فَإِنْ يَصْبِرْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّمَّا قَدَّ مَتَّ أَيْدِيهِمْ فَإِنَّ الْإِنْسَانَ كَفُورٌ ۖ ﴿٣٧﴾

49. आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही के लिए है जो चाहता है पैदा करता है। जिस को चाहता है लड़कियाँ देता है और जिसे चाहता है लड़के देता है।

بَلَلَهُ مَلِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ يَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ إِنَاثًا وَيَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ الذَّكَورَ ۖ ﴿٣٨﴾

81. अर्थात् कोई नहीं जो उस को हिदायत दे सकता हो और उस के प्रयासों को सही दिशा पर लगा सकता हो। उस का कोई दोस्त ऐसा नहीं हो सकता जो उस की तदबीरों को कारगर और उस के कामों को फलदायक बनाए।

82. अर्थात् दुनिया में वापसी की कोई सूरत है कि वहाँ जा कर ईमान लाएँ और नेक बनें।

83. अर्थात् जिस प्रकार एक अपराधी दिये जाने वाले दण्ड से नज़रें बचाने की कोशिश करता है वही हाल उन लोगों का होगा। वे जहन्नम को देखने से नज़रें चुराएँगे। यह उन अपराधियों के अपमान और विवशता का चित्रण है।

84. अर्थात् उस दिन ईमान वाले बरमला कहेंगे कि असल घाटा दुनिया का घाटा न था बल्कि आखिरत का घाटा है। अतः जिन लोगों ने आखिरत को नज़रंदाज कर रखा था वे आज हमेशा हमेशा के घाटे से दोचार हैं तथा उन के घर वाले भी जिन की उन्होंने ने गलत रहनुमाई की थी और वे उन के पीछे चल कर गुमराह हुए थे।

85. अर्थात् आखिरत की स्थायी यातना तथा हमेशा रहने वाला अज़ाब ।

86. बात कहने की शैली मानव मन को बड़ी ही अपील करने वाली है। कुर्आन की दअवत प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपने रब की दअवत है अतः तुम अपने रब की पुकार पर लम्बैक कहो और उस की दअवत (निर्मंत्रणा) को स्वीकार कर के अपनी आखिरत की मुक्ति का सामान करो क्रियामत का दिन तो अनिवार्य रूप से आना है। कोई नहीं जो उस को टाल सके।

87. अर्थात् तुम्हारे बस में नहीं होगा कि यातना को अपने से अलग कर सको, उसे दफ़ा कर सको, या जो फ़रिश्ते तुम को गिरफ़्तार करना चाहेंगे उन को गिरफ़्तारी से रोक सको।

88. पैग़म्बर से संबोधन है कि तुम उन लोगों के कर्मों के ज़िम्मेदार नहीं हो कि उन को ज़बरदस्ती हिदायत की राह पर चलाओ।

89. व्याख्या के लिए देखिए सूरह रूम नोट ६४, ६५



50. या उन को लड़के और लड़कियाँ दोनों प्रदान करता है और जिस को चाहता है बेऔलाद रखता है। वह जानने वाला कुदरत वाला है।⁹⁰

أَوْبَرِّوْهُمْ ذُرِّيَّةً ذَكَرًا وَأُنْثَىٰ وَيَجْعَلُ مَنْ يَشَاءُ عَقِيمًا إِنَّهُ عَلِيمٌ
قَدِيرٌ ﴿٥٠﴾

51. किसी बशर (मनुष्य) की यह शान नहीं कि अल्लाह से कलाम करे मगर वहय की सूरत में या परदे के पीछे से या यह कि किसी फ़रिश्ते को भेज दे जो उस के आदेश से वहय करे जो वह चाहे।⁹¹ वह सर्वोच्च और तत्वदर्शी है।⁹²

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِنْ وَرَآئِ حِجَابٍ
أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بِأُذُنِهِ مَا يَشَاءُ إِنَّهُ عَلَىٰ حَكِيمٍ ﴿٥١﴾

52. और इसी तरह (ऐ नबी !) हम ने तुम्हारी तरफ़ एक रूह अपने फ़रमान से वहय की है।⁹³ तुम नहीं जानते थे कि किताब क्या है और ईमान क्या।⁹⁴ मगर हम ने उस को एक नूर बना दिया⁹⁵ जिस के द्वारा हम हिदायत देते हैं अपने बन्दों में से जिसे चाहते हैं। और निस्संदेह तुम सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई कर रहे हो।⁹⁶

وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِنْ أَمْرِنَا مَا كُنْتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ
وَلَا الْإِيمَانُ وَلَكِنْ جَعَلْنَاهُ نُورًا نَهْدِي بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا
وَإِنَّكَ لَتَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٢﴾

53. अल्लाह के रास्ते की तरफ़, जो आसमानों और ज़मीन की सारी चीज़ों का मालिक है। ख़बरदार हो जाओ ! सारे मामले अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं।⁹⁷

صِرَاطِ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ اِلَآ اِلَىٰ
اللَّهِ تَصِيرُ الْأُمُورُ ﴿٥٣﴾

90. आसमानों और ज़मीन का शासक अल्लाह ही है और उस के शासन संचालन की शान यह है कि जो चाहे पैदा करे और जिस को चाहे लड़कियाँ दे और जिस को चाहे लड़के दे और जिस को चाहे लड़के और लड़कियाँ दोनों दे तथा जिस को चाहे बेऔलाद रखे। वह पूरे ज्ञान और पूरे समर्थ के साथ शासन कर रहा है। उस के सिवा कोई नहीं जो इस बात का अधिकार रखता हो कि किसी को औलाद प्रदान करे।

इस से जहाँ बहुदेववादियों की इस धारणा का खण्डन होता है कि फ़लाँ देवी और देवता औलाद देते हैं वहाँ जाहिल मुसलमानों की भी इस धारणा का खण्डन होता है कि फ़लाँ पीर और फ़लाँ वली औलाद दिया करते हैं। इस बदअक़ीदगी अथवा कुधारणा के चलते औरतें दरगाहों के चक्कर काटती हैं और औलाद के लिए पीरों के नाम से मन्त्रों मानती हैं। यह अक़ीदा बिलकुल ग़लत और यह कर्म बिलकुल मुश्रिकाना अर्थात् बहुदेववादियों वाला कर्म है। मगर जाहिल मुसलमानों ने इस्लाम के साथ इस का जोड़ लगा दिया है।

91. अर्थात् कोई मनुष्य भी अपनी मानवीय कमज़ोरी के कारण इस बात की ताब नहीं ला सकता कि अल्लाह उस के रूबरू कलाम करे। उस का प्रताप और उस की बुलन्दी ऐसी है कि मनुष्य उस को देखने का साहस नहीं जुटा सकता। अतः हज़रत मूसा की प्रार्थना पर जब अल्लाह तआला ने पहाड़ा पर तजल्ली फ़रमाई थी तो वह चूर्ण विचूर्ण हो गया था और हज़रत मूसा बेहोश हो कर गिर पड़े थे। (देखिए सूरह आराफ़ आयत १४३) इस लिए अल्लाह तआला ने अपने नबियों और रसूलों से कलाम करने का जो तरीक़ा अपनाया उस की तीन सूत्रें रही हैं:-

एक यह कि अल्लाह अपने रसूल के अन्तर्मन में सीधे अपना संदेश उतारे अर्थात् वहय करे। वहय का मतलब जैसा कि नोट २ में स्पष्ट किया जा चुका इशारा करने या अदृश्य तरीके से बात करने के हैं। अल्लाह तआला अपने नबी या रसूल से अदृश्य तरीके से बात करता है और उसे अपने संदेश और आदेश एवं निर्देश से आगाह करता है जिसे दूसरा कोई व्यक्ति सुनने नहीं पाता। संदेश पहुँचाने के इस अप्रत्यक्ष माध्यम का नाम कुर्आन की परिभाषा में वहय है।

दूसरी सूत्र यह है कि अल्लाह तआला अपने रसूल को परस्पर वार्तालाप का सौभाग्य प्रदान करे परन्तु वह उस को दिखाई न दे। अर्थात् रसूल, अल्लाह की आवाज़ और उस का कलाम सुन ले। उस से स्वयं बात भी कर ले किन्तु स्वयं अल्लाह उस के सामन प्रकट न हो। हज़रत मूसा अलैहिसस्लाम के साथ यह सूत्र अपनाई गई थी अतः उन को रिसालत के पद पर नियुक्त करते समय भी परस्पर वार्तालाप का सौभाग्य प्रदान

किया गया (सूरह ताहा आयत ११, १२) और तूर पर्वत पर शरीअत प्रदान करते समय भी।

तीसरी सूत्र यह है कि अल्लाह तआला फ़रिश्ते को दूत बना कर भेज दे जो उस के संदेश को रसूल तक गुप्त रूप से पहुँचाए। इन में से पहली और तीसरी सूत्र में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वहय का अवतरण होता रहा है। हदीस में उन दोनों सूत्रों का वर्णन इस प्रकार हुआ है :-

“उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हारिस बिन हिशाम ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल ? आप पर वहय किस तरह आती है ? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कभी तो घंटी की आवाज़ की तरह आती है और यह सूत्र मुझ पर बहुत भारी होती है। फिर जब मैं उसे सुरक्षित कर लेता हूँ तो यह मनःस्थिति समाप्त हो जाती है। और कभी यह सूत्र होती है कि फ़रिश्ता इन्सान के रूप में मेरे सामने आ जाता है और मुझ से कलाम करता है तो मैं उसे याद कर लेता हूँ। हज़रत आइशा फ़रमाती हैं कि मैं ने कड़ाके की सर्दी में वहय नाज़िल होते हुए देखी है। इधर वहय समाप्त होती और उधर आप का यह हाल होता कि माथे से पसीना बहने लगता।” (बुख़ारी किताबुलवहय)

ध्यान रहे कि पैग़म्बरों पर अल्लाह के कलाम के नाज़िल होने का वर्णन तौरात ज़बूर और इन्जील तीनों में अधिकता के साथ मौजूद है। मिसाल के तौर पर तौरात में है :-

“इन बातों के पश्चात यहोवा का वह वचन दर्शन में अब्राम के पास पहुँचा (उत्पत्ति - १५:१)

“तब परमेश्वर ने झाड़ी के बीच से उस को पुकारा, कि हे मूसा, हे मूसा, मूसा ने कहा क्या आज्ञा।” (निर्गमन ३:४)

“फिर यहोवा ने मूसा से कहा, फ़िरऔन के पास जा कर कह कि इब्रियों का परमेश्वर यहोवा तुझ से इस प्रकार कहता है कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे, कि मेरी उपासना करें।” (निर्गमन ९:१) ज़बूर अर्थात् भजन संहिता में है :-

“तेरा वचन मेरे पाँव के लिए दीपक और मेरे मार्ग के लिए उजियाला है।” (भजन संहिता ११९:१०५)

और इन्जील में है :-

“फिर यीशु पवित्रत्मा से भरा हुआ यरदन से लौटा।” (लूका ४:१)

“जब भीड़ उस पर गिरी पड़ती थी और खुदा का कलाम सुनती थी।” (लूका - ५:१)

इस प्रकार अल्लाह के कलाम और “वहय” की जो कल्पना आसमानी ग्रंथों के माध्यम से पहले से चला आ रहा था उस को कुर्आन ने पूरे स्पष्टीकरण के साथ प्रस्तुत कर दिया ताकि ज्ञान के इस संसाधन पर लोग विश्वास करें। यह भी स्पष्ट रहे कि

“वह” और इल्हाम में बहुत बड़ा अन्तर है। वहय बहुत स्पष्ट होती है और उस के अल्लाह की ओर से होने में कोई संदेह नहीं होता और कुर्आन तो शब्द शब्द वहय और अल्लाह का कलाम है शब्द और अर्थ दोनों की दृष्टि से।

और जहाँ तक हिन्दू धर्म का सम्बन्ध है उस में इल्हाम की धुंधली सी कल्पना मौजूद है जिस को वे “श्रुति” कहते हैं।

92. अल्लाह “अलिय्युन” (सर्वोच्च). है इस लिए इन्सान की यह हैसियत नहीं कि वह उस के रूबरू हो कर उस से बात करे। और वह तत्वदर्शी (हिकमत वाला) है इस लिए उस की हिकमत ने इस बात का तकाज़ा किया कि वह अपना कलाम अपने पैगम्बरों पर नाज़िल कर के इन्सान की हिदायत का सामान करे।

93. इस आयत में रूह से मुराद कुर्आन है और इस को रूह इस लिए कहा गया है कि वह मनुष्य को वास्तविक जीवन प्रदान करता है। वह मनुष्य के लिए अमृत है और ऐसी सुन्दर और सुक्ष्म वाणी है कि अन्तर्मन को एक खास रूह से भर देता है।

94. अर्थात् तुम ईमान और किताब से इस तरह परिचित नहीं थे जिस तरह कि अब हुए हो इस से अभिप्रेत रिसालत के चमत्कारिक पक्ष को उजागर करना है कि जिस व्यक्ति की अच्छी खासी आयु इस प्रकार गुज़री हो कि न उसे ईमान का विस्तृत ज्ञान प्राप्त हुआ हो और न अल्लाह की किताब का। वह यकायक ईमान की हकीकत किस तरह बयान करने लगा। यह उस की रिसालत का स्पष्ट सबूत है। आयत का यह मतलब नहीं है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नुबुव्वत से पहले ईमान और इस के विस्तार से बिल्कुल अनभिज्ञ थे और यह भी नहीं जानते थे कि अल्लाह ने कोई किताब भी उतारी थी। सच्ची बात यह है कि एक नबी स्वाभाविक मनोवृत्ति पर क़ायम होता है और

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी नुबुव्वता से पहले अपनी स्वाभाविक मनोवृत्ति पर क़ायम थे। तौहीद (एकेश्वरवाद) आप का बुनियादि अक़ीदा था। बुत परस्ती और शिर्क से बिल्कुल दूर रहे। यहाँ तक कि बुतों के नाम की भेंट और प्रसाद खाने से भी परहेज़ करते थे। इब्राहीमी दीन जिस रूप में भी बाक़ी था उस के अनुयायी थे जिस का एक महत्वपूर्ण स्तंभ हज्ज था। और आप का हिरा की गुफ़ा में जाकर इबादत में लीन रहना भी साबित है। इस लिए यह किस तरह कहा जा सकता है कि आप ईमान से बिल्कुल अनभिज्ञ थे। इसी तरह अल्लाह की किताब के बारे में भी यह नहीं कहा जा सकता कि आप को इस के बारे में कोई बात भी मालूम नहीं थी। यहूदी और ईसाई मक्का के आस पास आबाद थे और उन का अहले किताब होना सब को मालूम था इस लिए आप इस बात से अनभिज्ञ किस तरह रह सकते थे कि हज़रत मूसा पर तौरात और हज़रत ईसा पर इन्ज़ील नाज़िल हुई थी लेकिन चूँकि आप उम्मी (अनपढ़) थे इस लिए न आप ने इन किताबों को पढ़ा था और न आप को इस बारे में कोई खास मालूमात थीं परन्तु कुर्आन के अवतरण ने न केवल आप के ज्ञान में वृद्धि की बल्कि आप को वह रौशनी प्रदान की कि ईमान की हकीकत खोल कर बयान करें और अल्लाह की किताब की आयतें सुनाएँ और उन का पाठ दें।

95. अर्थात् कुर्आन को नूर बना दिया है कि वह हिदायत की राह रौशन करता और ज्ञान की रौशनी प्रदान करता है।

96. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस रास्ते की तरफ़ रहनुमाई की है वही सीधा रास्ता है जो अल्लाह तक पहुँचाता है और इसी का नाम इस्लाम है।

97. अर्थात् आगाह हो जाओ कि जिस ने खुदा और मज़हब के प्रति जो रवैया भी अपनाया होगा आखिरकार उसे अल्लाह के समक्ष उन की जवाबदेही करनी होगी क्योंकि सारे मामले, फैसले के लिए उसी के दरबार में पेश होने वाले हैं।



४३. सूरह अज़-ज़ुख़रफ़

नाम :- आयत ३५ में “ज़ुख़रफ़” (सोने) का वर्णन सांसारिक वस्तु की हैसियत से हुआ है। इस मुनासिबत से सूरह का नाम “अज़-ज़ुख़रफ़” है।

नाज़िल होने का समय :- मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह सूरह मक्का के मध्य काल में अवतरीत हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- शिर्क (बहुदेववाद) की नामाकूलियत तथा उस की अतार्किकता को स्पष्ट करते हुए तौहीद (एकेश्वरवाद) के सत्य होने का विश्वास जगाना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ४ भूमिका की आयतें हैं जो कुर्आन के महत्व तथा उस की बुलन्दी को उजागर करती हैं।

आयत ५ से १४ में उन निशानियों की ओर ध्यानकर्षित किया गया है जिन पर चिन्तन करने से अल्लाह के एक होने का विश्वास पैदा हो जाता है।

आयत १५ से २५ में बहुदेववादी धारणाओं का तर्क विरुद्ध होना तथा उस की नामाकूलियत को स्पष्ट किया गया है। खास तौर से फ़रिश्तों के ख़ुदा का साझी होने का!

आयत २६ से ३२ में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के उस ऐतिहासिक एलान को प्रस्तुत किया गया जो उन्होंने ने

ग़ैरुल्लाह की परस्तिश से बेतअल्लुकी के सिलसिले में किया था और जो यादगार कलिमे की हैसियत से बाक़ी रहा। परन्तु कुरैश जो उन्हीं की नस्ल से हैं इस ऐतिहासिक वास्तविकता को नज़रंदाज़ कर के शिर्क और बुत परस्ती की हिमायत में उठ खड़े हुए। और अल्लाह के रसूल का मात्र इस कारण विरोध कर रहे हैं कि वे तौहीद (एकेश्वरवाद) की ओर बुला रहे हैं।

आयत ३३ से ४५ में दुनिया के तुच्छ लाभों की ख़ातिर आख़िरत को नज़रंदाज़ करने और वहय और रिसालत का इन्कार करने का अन्जाम बयान किया गया है।

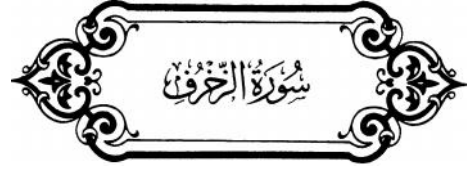
आयत ४६ से ६५ में हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के कुछ हालात बयान किये गए हैं जिन से स्पष्ट होता है कि उन की दअवत भी तौहीद ही की दअवत थी और उन का विरोध करने वाले उद्दण्ड लोग थे जो अपने स्वाभाविक बुरे अन्जाम को पहुँच कर रहे।

आयत ६६ से ८९ सूरह की आख़िर की आयतें हैं जिन में इन्कार करने वालों को चेतावनी भी है और अल्लाह से डरने वालों को खुशख़बरी भी तथा अपराधियों को उन के बुरे अन्जाम से भी आगाह किया गया है। और कुछ संदेहों का निवारण भी किया गया है।

४३. सूरह अज-ज़ुक्फ़

आयतें : ८९

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा - मीम ¹।

حَمِّ ①

2. क़सम है रौशन किताब की ²।

وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ②

3. हम ने इस को अरबी कुर्आन बनाया है, ताकि तुम लोग इसे समझो ³।

إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ③

4. और वास्तव में यह उम्मुल किताब में हमारे पास है, उच्च कोटि की और तत्व दर्शिता से परिपूर्ण ⁴।

وَاللَّهُ فِي أُمِّ الْكِتَابِ لَدَيْنَا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ④

5. क्या हम तुम्हारी याददेहानी से इस लिए नजर फेर लें कि तुम सीमा का उल्लंघन करने वाले लोग हो ?⁵

أَفَنَضْرِبُ عَنْكُمْ الذِّكْرَ صَفْحًا أَن كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ⑤

6. हम ने गुजरे हुए लोगों में भी कितने ही नबी भेजे थे।⁶

وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِنْ نَبِيِّ فِي الْأَوَّلِينَ ⑥

7. जो नबी भी उन के पास आता वे उस का मज़ाक़ उड़ाते।

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ نَبِيِّ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ⑦

8. तो हम ने उन लोगों को विनष्ट कर दिया जो इन से अधिक शक्तिशाली थे।⁷ और पिछली क़ौमों की मिसालें गुजर चुकी हैं।

فَأَهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَمَضَى مَثَلُ الْأَوَّلِينَ ⑧

9. अगर तुम उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया है तो वे यही कहेंगे कि इन को उस हस्ती ने पैदा किया है जो प्रभुत्वशाली और सर्वज्ञ है।⁸

وَلَيْنِ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ⑨

10. वही है ⁹ जिस ने ज़मीन को तुम्हारे लिए पालना बनाया और उस में तुम्हारे लिए रास्ते बना दिए ¹⁰ ताकि तुम राह पा सको।¹¹

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ⑩

1. ये विभक्त अक्षर (हुरूफ़े-मुक़तआत) हैं जिन की व्याख्या इस से पहले गुज़र चुकी। इस सूरह में हा, मीम का इशारा अल्लाह के गुण “हकीम” अर्थात् तत्वदर्शी की ओर है जो आयत ८४ में बयान हुआ है। तथा कुर्आन के हकीम होने के गुण की तरफ़ भी जो आयत ४ में बयान हुआ है।

2. कुर्आन के रौशन किताब होने की व्याख्या सूरह यूसुफ़ नोट २ और सूरह नमल नोट २ में गुज़र चुकी।

यहाँ रौशन किताब की क़सम ख़ाने का मतलब यह है कि यह किताब जिन अदृश्य सच्चाइयों पर से परदा उठा रही है और बुद्धि तथा दिल को अपील करने वाली जो बातें प्रस्तुत कर रही है और जिस स्पष्टीकरण के साथ प्रस्तुत कर रही है वह इस बात का खुला सबूत है कि यह किताब अल्लाह ही की तरफ़ से अवतरित हुई है और उस ने हिदायत की राह खोल दी है।

3. व्याख्या के लिए देखिए सूरह यूसुफ़ नोट ३

4. उम्मुल किताब से मुराद लौहे-महफूज़ (सुरक्षित पट्टिका) जैसा कि सूरह बुरुज में इर्शाद हुआ है:-

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ - (बुरुज: २४)

अर्थ: “बल्कि यह उच्च कोटि का कुर्आन है जो लौहे-महफूज़ (सुरक्षित पट्टिका) में (अंकित) है।” (बुरुज - २४)

अर्थात् अल्लाह तआला ने आसमान पर अपने कलाम अथवा अपनी वाणी को लिखित रूप में लाने का जो आयोजन कर रखा है उस में अल्लाह का यह कलाम अंकित है और वहाँ उस की शान अत्यंत बुलन्द है इस विशेषता के साथ कि वह ज्ञान और तत्वदर्शिता का ख़जाना है। अगर तुम इस की क़द्र न करो तो यह तुम्हारी आयोग्यता का परिचायक होगा वरना आसमान में इस को उच्चकोटि की और मूल्यवान किताब होने का गौरव प्राप्त है। इस कीमती हीरे को वही लोग पत्थर समझते हैं जिन की अक़ल पर पत्थर पड़े हैं।

कुर्आन शैतानी हस्तक्षेप से भी सुरक्षित है और मनुष्य की पहुँच से भी बाहर। इस का स्रोत ऐसी बुलन्दी पर है जहाँ किसी की पहुँच नहीं।

आयत से यह इशारा भी निकलता है कि जो लोग इस उच्च

कोटि के कलाम की क़द्र करेंगे उन का दर्जा बुलन्द होगा और वे अपने दामन को ज्ञान और तत्वदर्शिता से भर लेंगे।

5. संबोधन कुर्आन का इन्कार करने वालों से है। उन से कहा जा रहा है कि तुम अपनी उदण्डता के कारण चाहते हो कि नसीहत और डरावे की बातें तुम्हारे सामने न आएँ? लेकिन अल्लाह तआला तुम्हें सुधार कर अवसर देना चाहता है और तुम पर अपनी हुज्जत क़ायम करना चाहता है अर्थात् अपने तर्क प्रस्तुत करना चाहता है। इस लिए वह कुर्आन नाज़िल कर के तुम्हारी याददेहानी का सामान कर रहा है तुम्हारी ग़लत इच्छाओं के चलते इस सिलसिले को रोका नहीं जा सकता।

6. अर्थात् यह कोई पहला नबी नहीं है जो अल्लाह की तरफ़ से याददेहानी ले कर आया हो बल्कि इस से पहले भी कितने ही नबी गुज़रे हैं जो विभिन्न जातियों में अल्लाह की तरफ़ से नसीहत का पैग़ाम ले कर आए थे।

7. अर्थात् फिरऔन जैसे बालिष्ठ ज़ालिमों एवं दामनकारियों को जो कुरैश के सरदारों के मुकाबले में कहीं अधिक शक्तिशाली तथा प्रभुत्वशाली थे।

8. यह तौहीद (एकेश्वरवाद) के पक्ष में तर्क है कि जब तुम इतनी बड़ी हक़ीक़त को स्वीकार करते हो कि आसमानों और ज़मीन को अल्लाह ही ने पैदा किया है जिस के वश में यह पूरी कायनात है और जो अत्यंत ज्ञान रखने वाली हस्ती है। तो फिर किसी और के ख़ुदा और पूज्य होने के लिए गुन्जाइश कहाँ से निकल आई? तुम ने कैसी विपरीत बातों को जमा कर लिया है। एक तरफ़ सत्य को स्वीकारते भी हो और दूसरी तरफ़ उस का इन्कार भी करते हो। अल्लाह का इक्कार भी और उस के मात्र पूज्य होने से इन्कार भी।

9. यह अल्लाह की तरफ़ से तौहीद के बारे में अतिरिक्त स्पष्टीकरण है ताकि इस पर विश्वास पैदा हो।

10. मुराद कुदरती रास्ते हैं जो पहाड़ों आदि के बीच में होते हैं।

11. अर्थात् इन कुदरती रास्तों के द्वारा अपनी मन्ज़िल को पहुँच सको तथा इन रास्तों को देख कर तुम्हारा मन अल्लाह के रास्ते की ओर चला जाए और तुम हिदायत की राह पा सको।

11. और जिस ने आसमान से एक ख़ास मात्रा में पानी उतारा और इस से मुर्दा ज़मीन को जिला उठाया। इसी तरह तुम (क़ब्रों से) निकाले जाओगे।¹²

وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً يَقْدَرُ فَأَنْشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيِّتًا
كَذَلِكَ نُخْرِجُكُمْ ۝

12. जिस ने हर प्रकार के जोड़े पैदा किये¹³ और तुम्हारे लिए नौकाओं और चौपायों को सवारी बनाया।

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ
مَا تَرْكَبُونَ ۝

13. ताकि तुम उन की पीठ पर सवार हो और जब तुम उन पर सवार हो तो अपने रब की नेमत को याद करो¹⁴ और कहो “पाक है वह हस्ती जिस ने इन चीज़ों को हमारे लिए वशीभूत कर दिया वरना हमारे बस में न था कि इन को क़ाबू में कर लेते।”

لِتَسْتَوُوا عَلَى ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ
عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَنَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا
لَهُ مُقْرِنِينَ ۝

14. और हम अपने रब की ओर लौटने वाले हैं।¹⁵

وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ۝

15. इन लोगों ने उस के कुछ बन्दों को उस का हिस्सा बना दिया।¹⁶ निस्संदेह, मनुष्य खुला नाशुक्रा है।¹⁷

وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ۝

16. क्या उस ने (अल्लाह ने) अपनी सृष्टि में से अपने लिए बेटियाँ रख लीं और तुम्हारे लिए बेटे ख़ास कर दिए?¹⁸

أَمْ اتَّخَذَ مِنَّا مَخْلُقًا بَنَاتٍ وَأَصْفَاكُمْ بِالْبَنِينَ ۝

17. और जब इन में से किसी को इस चीज़ की ख़ुशख़बरी दी जाती है जो रहमान के लिए वह तजवीज़ करता है तो उस का चेहरा काला पड़ जाता है और वह ग़म से घुटने लगता है।¹⁹

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَنِ مَثَلًا
ظَلَّ وَجْهُهُ مُسَوِّدًا وَهُوَ كَظِيمٌ ۝

18. क्या वह सिन्फ़ (लिंग) जो ज़ेवरों में पलती है और वाद विवाद में स्पष्ट बात नहीं कर पाती।²⁰

أَوْ مَن يُنَشِّئُ فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ۝

19. इन्होंने ने फ़रिश्तों को जो रहमान के बन्दें हैं लड़कियाँ बना दिया है। क्या वे इन की पैदाइश के समय मौजूद थे?²¹ इन की गवाही लिख ली जाएगी और इन से पूछ गछ होगी।

وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبْدُ الرَّحْمَنِ إِنَاثًا أَشْهَدُوا
خَلَقَهُمْ سَتَتَبَّ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ۝

12. यह क्रियामत के दिन उठाये जाने पर तर्क है कि जिस प्रकार मुर्दा ज़मीन बारिश के पानी से ज़िन्दा हो जाती है और हरी भरी हो कर लहलहाने लगती है उसी प्रकार अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा कर के क़ब्रों से उठाएगा।

13. व्याख्या के लिए देखिए सूरह यासीन नोट ३९

14. अर्थात् अल्लाह की इस नेमत को कि उस ने थल और जल में तुम्हारी सवारी का प्रबन्ध कर दिया। सवारी के लिए उस ज़माने में या तो जानवर होते थे। या नौकाएँ। इस लिए आयत में इन चीज़ों का वर्णन हुआ है। मौजूदा ज़माने में सवारी के लिए जो नई चीज़ें ईजाद हुई हैं, जैसे मोटर, रेल, जहाज़, हवाई जहाज़ आदि वे यद्यपि मनुष्य का आविष्कार हैं मगर वास्तव में अल्लाह ही की नेमत हैं क्योंकि जिस शक्ति के बूते पर ये चलते हैं वे उसी की पैदा की हुई हैं और उसी ने इन्सान के लिए इस को अनुकूल बना दिया है अतः सवारी चाहे कोई हो उस का उपयोग करते समय यह एहसास होना चाहिए कि यह अल्लाह का बहुत बड़ा उपकार है कि उस ने इस नेमत को प्रदान किया।

15. इन दो आयतों (१३ और १४) में सवारी से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण बातें इर्शाद हुई हैं।

एक यह कि आदमी किसी भी सवारी पर सवार होते समय पूरे विवेक के साथ अल्लाह के इस उपकार को याद करे कि उस ने ये शक्तियाँ उस के लिए वशीभूत कर दीं।

दूसरी यह कि वह ज़बान से भी अल्लाह की पाकी और उस के शुक्र के ये कलिमे अदा करे

سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرْنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ

مُقَرَّنِينَ - وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ -

अर्थ :- “ पाक है वह हस्ती जिस ने हमारे लिए इन चीज़ों को वशीभूत कर दिया वरना हमारे बस में न था कि इन को क़ाबू में कर लेते। और हम अपने ख ही की तरफ लौटने वाले हैं।”

इस दुआ का पढ़ना सवार होते समय ज़रूरी है और इस का मस्नून होना हदीस से भी सिद्ध है।

तीसरी बात यह कि किसी भी सवारी पर सवार हो कर घमण्ड और बड़ाई कि नहीं, बल्कि बन्दगी की शान झलकनी चाहिए। और दुआ के ये प्रवचन अल्लाह की बन्दगी का एहसास पैदा करते हैं।

चौथी बात यह कि सफ़र करते समय आदमी आखिरत के सफ़र को न भूले और अपनी आखिरी मन्ज़िल को, अल्लाह के समक्ष लौटना है याद रखे।

सवारी जानवर की हो या नौकाओं की, मोटर की हो या हवाई जहाज़ की, ख़तरों से ख़ाली नहीं हो सकती, क्या मालूम

कब कैसी घटना घट जाए। इस लिए चौकन्ना हो कर अल्लाह को याद करते हुए और आखिरत को सामने रखते हुए सफ़र शुरू करना चाहिए। आए दिन की विनाशकारी दुर्घटना आँखें खोल देने के लिए काफ़ी हैं।

16. मुराद अल्लाह के ख़ास बन्दे हैं जैसे फ़रिश्ते, नबी आदि और इन को अल्लाह का अंश अथवा हिस्सा बनाने का अर्थ यह है कि इन को उस की हस्ती का एक हिस्सा समझ लिया हालाँकि अल्लाह की हस्ती अविभक्त है। उस की हस्ती से न कोई चीज़ ख़ारिज होती है और न उस के अन्दर कोई चीज़ समाती है। वह यकता है और बेमिसाल है (व्याख्या के लिए देखिए सूरह इख़लास नोट ३, ४ और ७) अरब के बहुदेववादियों ने फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ ठहराकर उन को अल्लाह की हस्ती का हिस्सा बना दिया। इसी प्रकार ईसाइयों ने भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का बेटा ठहराया जब कि बेटा और बेटा बाप के अंश होते हैं। और यह ज्ञान सत्यता है कि फ़रिश्ते हों, नबी हों या वली हों सब अल्लाह की सृष्टी और उस के बन्दे हैं। फिर वे अपने सृष्टा का अंश कैसे हो सकते हैं?

रहा हिन्दुवाद तो वह पूरे ब्रह्माण्ड को ख़ुदा का अंश बताता है:

“He both is and is not the Created Universe, for while the created universe, is a part of his being, it is not the whole of it.”

-(Spiritual Heritage of India by Swami Prabhavanands P. 32).

अर्थात् ख़ुदा ने कायनात (ब्रह्माण्ड) को पैदा किया भी है और नहीं भी क्योंकि यह रचा गया ब्रह्माण्ड उस एक हस्ती का अंश है संपूर्ण रूप से उस की हस्ती नहीं। कैसी विपरीत, उलझी हुई और गुमराह करने वाली बातें हैं ये जिन को एक दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अल्लाह की पनाह ऐसी बातों से।

इसी हिन्दुत्वाना दर्शन का असर है कि कुछ सूफी लोग वहदतुलवजूद के क़ायल हो गए। उन्होंने सृष्टि के अन्तर को मिटा दिया और ख़ुदा तथा कायनात को एक ही हस्ती बताया। यह गुमराही मुसलमानों में तसव्वुफ़ के रास्ते से आई। अगर मुसलमान आँखें खोल कर कुर्आन का अध्ययन करते तो वे ख़ालिस तौहीद को पाते और गुमराह सूफ़ियों के चक्कर में न आते।

17. यह खुली नाशुक्री (कृतघ्नता है कि मनुष्य लाभ उठाए अल्लाह की नेमतों से मगर इबादत करे गैरुल्लाह की अर्थात् अल्लाह को छोड़ कर अन्य लोगों की।

18. अरब के बहुदेववादी कहते थे कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं। उन के उसी दावे के खोखले पन एवं अतार्किकता को

यहाँ स्पष्ट किया गया है। वे बेटों पर गर्व करते थे और बेटियों को अपने लिए आपत्तिजनक एवं अपमानजनक समझते थे। उन की इसी मानसिकता के चलते उन के दावे के खोखलेपन को उन पर स्पष्ट किया जा रहा है। कहने का सार यह है कि पहली बात तो अल्लाह की सन्तान होने की कल्पना ही सिरे से ग़लत है इस पर यह अतिरिक्त ज़्यादाती है कि तुम ने फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ करार दिया है जब कि बेटियों को तुम अपने लिए पसंद नहीं करते बल्कि उसे आपत्तिजनक समझते हो। तो जिस चीज़ को अपमान जनक समझते हो वह अल्लाह के लिए निर्धारित करना कहाँ की तार्किकता है? इस एक पहलू ही से अगर ग़ौर करो तो तुम यह महसूस किये बग़ैर नहीं रहोगे कि बड़ी मूर्खता की बात है जो तुम्हारे मुँह से निकल रही है।

19. व्याख्या के लिए देखिए सूरह नहल नोट ८०

20. यह लड़कियों के बारे में बहुदेववादियों के मास्तिष्क का उभरता हुआ प्रश्न है जो उन ही पर उलट दिया गया है। वे लड़की की पैदाइश को अपने लिए दोष की बात समझते थे क्योंकि कबीलाई व्यवस्था में जनशक्ति का बड़ा महत्व था और उस की शक्ती पुरुषों पर निर्भर थी। दुश्मन से मुकाबला पुरुष करते थे न कि स्त्रियाँ। फिर किसी विवादित मसले में भी अपनी बात को पुरुष ही पूरे स्पष्टीकरण के साथ प्रस्तुत कर सकते थे। स्त्रियाँ साधारणतया ऐसे मौक़े पर भावुक हो जाती हैं और अपनी बात को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत नहीं कर पाती। इस लिए लड़की की पैदाइश की ख़बर सुन कर उन के दिमाग़ में प्रश्न कौंधता था कि यह स्त्री जो ज़ेवरों की झन्कार में परवरिश पाती है दुश्मन से मुकाबले के लिए और जंग के मौक़े पर हमारे लिए क्या काम आ सकती है। इस के विपरीत पुरुष शक्तिशाली है और तलवारों के साये में परवरिश पाता है इस लिए दुश्मन से मुकाबले की शक्ति रखता है और लड़ाई के लिए उचित है। इसी तरह उन के मास्तिष्क में यह प्रश्न भी उत्पन्न होता था कि कबीलों के बीच जो विवाद पैदा होते रहते हैं उन में लड़की क्या भूमिका निभा सकेगी जब कि वह ऐसे मौक़े पर भावुक हो जाती हैं। उन की इसी मानसिकता को उन पर उलट दिया गया है कि जब तुम इन कारणों से लड़कियों को अपने लिए महत्वहीन और अपमान जनक समझते हो तो फिर अल्लाह के लिए बेटियाँ किस तरह

निर्धारित करते हो? पहली बात तो अल्लाह के लिए संतान निर्धारित करना ही मूर्खता की बात है इस पर अतिरिक्त मूर्खता यह कि कमज़ोर लिंग को उस की संतान ठहराया जाए। इस का मतलब तो यह हुआ कि अल्लाह ने अपनी व्यवस्था को चलाने और अपनी सत्ता को स्थापित करने के लिए जिस का चुनाव किया वह कमज़ोर और नाज़ुक हस्ती है। वह एक ऐसा दावा है जिस का भोंडापन और जिस का अनर्थ होना बिल्कुल स्पष्ट है। फिर अल्लाह के बारे में ऐसी भोंडी बात कहते हुए तुम्हें शर्म महसूस नहीं होती। आयत में ऐसी कोई बात नहीं है जिस से औरतों की बुराई या उन की तुच्छता का कोई पहलू निकलता हो। अल्लाह तआला ने मर्दों की तरह औरतों को भी उत्तम संरचना के अनुसार पैदा किया है इस लिए उन की प्रकृति में भी कोई दोष नहीं है। अलबत्ता मर्दों की विशेषता और औरतों की विशेषता में थोड़ा अन्तर है। मर्द शक्ति का प्रतीक है तो औरतें शोभा का। और जहाँ तक ईश्वरीय व्यवस्था की बात है उस में न तो पुरुषों का कोई हस्तक्षेप है और न औरतों का। और किसी के भी तनिक हस्तक्षेप होने की धारणा सिरे से ग़लत है परन्तु औरतों का हस्तक्षेप है ऐसा समझना बड़ी भोंडी बात है। सूरह नज्म में यही बात इर्शाद हुई है :-

اَلْكُمُ الذِّكْرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى تَلٰك

اِذَا قِسْمَةٌ ضِيزٰى۔ (نज़्म: २१, २२)

अर्थ : “क्या तुम्हारे लिए बेटे हैं और अल्लाह के लिए बेटियाँ? यह बाँट तो बहुत भोंडी हुई।” (नज़्म - २१, २२)

21. अर्थात् आखिर इन्हें कैसे मालूम हुआ कि फ़रिश्ते लड़कियाँ हैं। फ़रिश्ते ग़ैब (परोक्ष) में से हैं। और ग़ैब की हक़ीक़तों को जानने का एक मात्र साधन वह्य है जिस के ये लोग मानने वाले नहीं हैं। फिर क्या ये उन की पैदाइश के समय मौजूद थे जो इन्हें फ़रिश्तों का लिंग मालूम हो गया?

यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि फ़रिश्तों के लिंग के बारे में उन का दावा ग़लत है। दूसरे यह कि वे ख़ुदा का अंश नहीं हैं कि बेटियाँ सुनिश्चित हो जाएँ। वास्तविकता यह है कि वे दयावान ख़ुदा के ख़ास बन्दे हैं जिन को किसी भी लिंग से सम्बन्ध नहीं बताया जा सकता।

कहते हैं अगर रहमान चाहता तो हम इन की इबादत न करते । इन को इस का कोई ज्ञान नहीं, ये बस अटकल की बातें करते हैं। क्या हम ने इस से पहले इन को कोई किताब दी थी जिस की सनद (प्रमाण) वे पकड़ रहे हों? नहीं, बल्कि वे कहते हैं हम ने अपने बाप दादा को एक तरीके पर पाया है और हम उन ही के पदचिन्हों पर चल कर ठीक राह पर जा रहे हैं। (अल-कुआन)

20. कहते हैं अगर रहमान चाहता तो हम इन की इबादत न करते।²² इन को इस का कोई ज्ञान नहीं, ये बस अटकल की बातें करते हैं।²³

وَقَالُوا الْوَسْءَاءُ الرَّحْمَنُ مَاعْبَدْنَاهُمْ مَا لَهُم بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ
إِنَّهُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٢٠﴾

21. क्या हम ने इस से पहले इन को कोई किताब दी थी जिस की सनद (प्रमाण) वे पकड़ रहे हों ?²⁴

أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ﴿٢١﴾

22. नहीं, बल्कि वे कहते हैं हम ने अपने बाप दादा को एक तरीके पर पाया है और हम उन ही के पदचिन्हों पर चल कर ठीक राह पर जा रहे हैं।²⁵

بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَرِهِمْ
مُهْتَدُونَ ﴿٢٢﴾

23. इसी प्रकार तुम से पहले जिस बस्ती में भी हम ने कोई ख़बरदार करने वाला भेजा उस के ख़ुशहाल लोगों ने यही कहा कि हम ने अपने बाप दादा को एक तरीके पर पाया है और हम उन के पदचिन्हों पर चल रहे हैं।

وَكَذَلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَذِيرٍ إِلَّا قَالَ
مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَرِهِمْ
مُقْتَدُونَ ﴿٢٣﴾

24. उस ख़बरदार करने वाले ने कहा अगर मैं उस तरीके के मुकाबले में जिस पर तुम ने अपने बाप दादा को पाया है, बेतरीन हिदायत ले कर तुम्हारे पास आया हूँ तो क्या इस सूरत में भी तुम उन्हीं के पदचिन्हों पर चलोगे? उन्हीं ने जवाब दिया तुम जो संदेश दे कर भेजे गए हो हम उस के इन्कारी हैं।²⁶

قُلْ أَوْ لَوْ جِئْتُمْ بِأَهْدَىٰ مِمَّا وَجَدْتُمْ عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ
قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ﴿٢٤﴾

25. आखिरकार हम ने उन को सज़ा दी तो देखो कैसा अन्जाम हुआ झुठलाने वालों का।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَنْظَرُ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٥﴾

26. और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा था मैं उन चीज़ों से बिलकुल बेतअल्लुक हूँ जिन की तुम परस्तिश करते हो।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي بَرَاءٌ مِمَّا تَعْبُدُونَ ﴿٢٦﴾

27. मैं केवल उसी की परस्तिश करता हूँ जिस ने मुझे पैदा किया है। वही मेरी रहनुमाई फ़रमाएगा।

إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ﴿٢٧﴾

28. और उस ने उस को बाक़ी रहने वाले कलिमे की हैसियत से अपनी औलाद में छोड़ा ताकि वे उस की तरफ़ रूजू करें।²⁷

وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾

22. यह कटहुज्जती है। जब आदमी बहस पर उतर आता है तो अल्लाह के ऊपर सारी जिम्मेदारी डालता है जैसे कि वह तक्रदीर के हाथों मजबूर है और बिल्कुल बेइख्तियार है। मगर मनुष्य दूसरों के साथ मामला करने में यह रवैया नहीं अपनाता। अगर कोई व्यक्ति उस का माल चुराता है या उस को मारता है या उस पर अन्याय करता है तो वह यह क्यों नहीं मसझता कि वह ऐसा करने के लिए तक्रदीर के हाथों मजबूर है इस लिए वह दण्ड का पात्र नहीं है।

23. अक्रीदा और इबादत का मामला ज्ञान पर आधारित होना चाहिए न कि अटकल और अनुमान पर। बहुदेववादियों का फ़रिश्तों को अल्लाह की सत्ता में साझीदार और पूज्य समझना किसी रिसर्च पर आधारित नहीं था बल्कि मात्र अटकल की बात थी जो बहुत बड़ी गुमराही है।

24. अर्थात् फ़रिश्तों को उन्होंने ने जो पूज्य देवियाँ बना रखा है तो इस के पक्ष में आसमानी किताब की कोई हुज्जत (तर्क एवं प्रमाण) उन के पास मौजूद नहीं है क्यों कि अरबों (बनी इस्माईल) में अल्लाह तआला ने कुर्आन से पहले कोई किताब नाज़िल नहीं की थी। फिर यह किस दलील के आधार पर यह दावा कर रहे हैं?

स्पष्ट रहे कि अल्लाह के रसूल विभिन्न जातियों और देशों में आते रहे। मगर अल्लाह तआला ने प्रत्येक जाति को किताब प्रदान नहीं की क्यों कि उस ज़माने में पढ़ने लिखने का प्रचलन कम होने के कारण हर जाति इस की भारवाहक नहीं हो सकती थी। अरब एक अनपढ़ जाति थी इस लिए हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने जो कुछ प्रभाव चिन्ह छोड़े वे उन की रहनुमाई का साधन थे। इसी तरह का मामला दुनिया की विभिन्न जातियों के सात रहा होगा। उन के नबियों की हिदायत का सामान किया जाता रहा। अलबत्ता बनी इस्माईल में रसूल भी आए और किताबें भी नाज़िल हुईं।

25. अर्थात् जिस शिर्क और बुतपरस्ती में वे लिप्त हैं उस के लिए उन के पास कोई दलील नहीं है बल्कि अपने गुमराह बाप दादा का अंधानुसरण कर रहे हैं और इस भ्रम में लिप्त हैं कि बाप दादा के धर्म पर चलना राह पा जाना है।

अक्रीदा और मज़हब के मामले में मनुष्य की सबसे बड़ी गुमराही यही रही है कि वह अल्लाह की हुज्जत (तर्क एवं प्रमाण) के मुक़ाबले में अंधानुसरण को वरीयता देता रहा है चाहे वह कुल के पूर्वजों का अंधानुसरण हो या धर्मगुरुओं का या नेताओं का। मगर कुर्आन हर तरह के अंधानुसरण की जड़ काट देता है और अल्लाह की वहय (प्रकाशना) की राह रौशन करता है जो ज्ञान का मार्ग है। इमाम राज़ी तक्रलीद (अन्धानुकरण) की गुमराही को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं :-

“अगर अल्लाह की किताब में सिर्फ़ यही आयतें होती तो वह तक्रलीद (अंधानुसरण) को बातिल करार देने के लिए काफ़ी होती क्यों कि अल्लाह तआला ने स्पष्ट फ़रमाया है कि इन काफ़िरों के पास अपने मसलक की ताईद में न कोई अक़ली दलील है और न नक़ली (अर्थात् लिखित) जिस को ये पकड़े हुए हों बल्कि महज तक्रलीद है अपने आबा व अजदाद (पूर्वजों) और गुजरे हुए लोगों की।” (अत्तप्सीरुल कबीर जिल्द २७ पृष्ठ २०६)

और अल्लामा शौकानी ने इस आयत के अन्तर्गत मुसलमानों में पाये जाने वाले तक्रलीदी ज़ेहन (अन्धानुकरण की मानसिकता) पर कड़ी पकड़ करते हुए लिखा है।

“यह बहुत बड़ी दलील है तक्रलीद के बातिल और उस के बुरा होने की मगर इस्लाम में रहते हुए यह मुक़ल्लिदीन (अंधानुसरण करने वाले लोग) अपने गुजरे हुए लोगों की बात पर अमल करते हैं, उन के नक़शे-क़दम पर चलते हैं और उन की पैरवी करते हैं। जब हक़ की तरफ़ दअवत देने वाला उन्हें गुमराही से निकालना या उस बिदअत से बचाना चाहता है जिस को उन्होंने मज़बूत पकड़ रखा है और अपने बुजुर्गों से किसी रौशन दलील और वाज़ेह हुज्जत के बग़ैर वरसे में (उत्तराधिकार स्वरूप) पाया है और जो ग़लत शुबहात, बोदे दलाएल और बातिल अक़वाल पर मबनी होने की वजह से महज क़ील और क़ाल की हैसियत रखते हैं तो ये लोग वही जवाब देते हैं जो उन मज़ाहिब के ख़ुशहाल लोगों ने दिया था कि हम ने अपने बाप दादा को एक मसलक (तरीक़े) पर पाया है और स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि हम उन के नक़शे-क़दम की पैरवी में राहयाब हैं या इन मायनों में कोई बात कह देते हैं।” (फ़तहूलक़दीर जिल्द ४ पृष्ठ ५५२)

26. उन का यह जवाब सरासर हठधर्मी को ज़ाहिर करने वाला था।

27. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तरीक़े को प्रस्तुत कर के अरब के बहुदेववादियों को समझाया गया है कि तुम ने अपने गुमराह पूर्वजों के अन्धानुकरण द्वारा शिर्क और बुत परस्ती अपना ली किन्तु अपने सच्चे पूर्वज इब्राहीम के तरीक़े को जो कि अल्लाह के रसूल थे, छोड़ दिया हालाँकि अनुकरणीय तरीक़ा तो रसूल का होता है न कि बाप दादा का तरीक़ा।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बाप और अपनी क़ौम का अंधानुसरण नहीं किया था। बल्कि उन की बहुदेववादी धारणाओं तथा बुतों की पूजा से विमुखता का एलान किया था और तौहीद (एकेश्वरवाद) को अपने अन्तर्मन की स्वाभाविक पुकार पर और तर्क के आधार पर स्वीकार किया था। तौहीद का यह कलिमा उन्होंने अपनी औलाद और अपने अनुयायियों में एक यादगार कलिमे की हैसियत से छोड़ा ताकि अगर समाज

में गुमराही पैदा हो जाए तो लोग इस ऐतिहासिक कलिमे की ओर पलटें, उस की ओर रूजू करें। वह कलिमा इस लिए यादगार कलिमा करार पाया कि इस के पीछे ज़बरदस्त कुर्बानियाँ थीं जो उन्होंने ने दीं। तथा एक एतिहास था जो उन्होंने ने बनाया। और इसी

कलिमे का यह असर था कि जब अरबों में बुत परस्ती प्रचलित हुई तो जो लोग अपने मूल स्वभाव पर जमे थे वे बुत परस्ती से दूर रहे। अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नबी नियुक्त होने से पहले हिरा की गुफ़ा में केवल अल्लाह की इबादत करना साबित है।



वास्तविकता यह है कि मैं ने उन को और उन के बाप दादा को जीवन सामाग्री प्रदान की यहाँ तक कि उन के पास सत्य और एक आशिकारा (खोल खोल कर बयान करने वाला)रसूल आ गया। और जब सत्य उन के पास आ गया तो उन्होंने ने कहा यह जादू है और हम इस के काफ़िर हैं। और उन्होंने ने कहा यह कुर्आन इन दो शहरों के बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतारा गया? (अल-कुर्आन)

29. वास्तविकता यह है कि मैं ने उन को और उन के बाप दादा को जीवन सामाग्री प्रदान की यहाँ तक कि उन के पास सत्य और एक आशिकारा (खोल खोल कर बयान करने वाला)रसूल आ गया।²⁸

بَلْ مَتَّعْتُ هَؤُلَاءَ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْحَقُّ
وَرَسُولٌ مُّبِينٌ ①

30. और जब सत्य उन के पास आ गया तो उन्होंने ने कहा यह जादू है और हम इस के काफ़िर हैं।²⁹

وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ ②

31. और उन्होंने ने कहा यह कुर्आन इन दो शहरों के बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतारा गया?³⁰

وَقَالُوا لَوْلَا نَزَلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ
مِّنَ الْقَرِيبَيْنِ عَظِيمٍ ③

32. क्या तुम्हारे रब की रहमत को ये लोग बाँटते हैं ?³¹ दुनिया की ज़िन्दगी में उन की अर्थ सामग्री हम ने उन के बीच बाँट दी है।³² और इन में से कुछ के दर्जे कुछ पर बुलंद कर दिए हैं ताकि वे एक दूसरे से खिदमत लें ³³ और तुम्हारे रब की रहमत इस (दौलत) से कई गुना बेहतर है जो ये लोग जमा कर रहे हैं।³⁴

أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ
نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ
فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُلُوفًا وَرَحْمَتُ
رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ④

33. और इस की संभावना न होती कि लोग एक ही तरीके पर चल पड़ेंगे तो हम रहमान से कुफ़र करने वालों के घरों की छतें और ज़िने जिन पर वे चढ़ते हैं चाँदी के बना देते।

وَلَوْلَا أَن يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَن
يَكْفُرُ بِالرَّحْمَنِ لِبُيُوتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَمَعَارِجَ
عَلَيْهَا يَظْهَرُونَ ⑤

34. तथा उन के घरों के दरवाज़े और उन के तख्त भी जिन पर वे तकिये लगा कर बैठते हैं।

وَلِبُيُوتِهِمْ أَبْوَابٌ وَسُرُرٌ عَلَيْهَا يَتَكَبَّرُونَ ⑥

35. और सोने से भी उन्हें मालामाल करते। ये सब दुनिया की ज़िन्दगी ही का सामान है और आखिरत तुम्हारे रब के यहाँ केवल मुत्तकियों (परहेज़गारों) के लिए है।³⁵

وَنُحْرُقًا وَإِن كُنتُمْ فِي شَكٍّ مِّنْ ذَلِكَ لَمَنَّا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةُ
عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ⑦

36. और जो रहमान के ज़िक्र से बेपरवाह हो जाता है हम उस पर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं और वह उस का साथी बन जाता है।³⁶

وَمَنْ يَعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمَنِ نُقَيِّضْ لَهُ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ ⑧

37. वे (शैतान) उन को अल्लाह की राह से रोकते हैं, और ये लोग समझते हैं कि हम सीधे मार्ग पर हैं।

وَأَنَّهُمْ لِيَصُدُّوهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ⑨

28. अर्थात् अल्लाह तआला ने इब्राहीम की औलाद (अरबों) को जो धन संसाधन दिया उस में वे मगन रहे और खुदा व आखिरत से बिलकुल बेपरवाह हो गए। एक मुद्दत से उन का यही हाल रहा। यहाँ तक कि हक़ की रौशनी फैल गई और एक ऐसा रसूल उन में आया जिस का रसूल होना बिलकुल स्पष्ट है।

29. अर्थात् कुर्आन के द्वारा जब सत्य प्रकट हो गया तो उन्होंने उस के प्रभाव को देख कर उसे जादू कहा और मानने से इन्कार कर दिया।

30. दो शहरों से तात्पर्य मक्का और ताइफ़ हैं जो केन्द्रीय नगर थे। मक्का के बहुदेववादियों का एतिराज़ यह था कि कुर्आन यदि वास्तव में अल्लाह की ओर से उतारी गई किताब है तो वह मक्का या ताइफ़ के किसी धनी पर नाज़िल की जानी चाहिए थी। एक ऐसा व्यक्ति इस के लिए किस तरह उचित हो सकता है जो न धनी हो और न किसी बड़े पद पर प्रतिष्ठित ?

31. यह उन के एतिराज़ का जवाब है कि नुबुव्वत अल्लाह की रहमत है और अल्लाह की रहमत को बाँटना अल्लाह का काम है या इन का? अगर यह अल्लाह ही का काम है तो अल्लाह बेहतर जानता है कि उस की रहमत के लिए कौन व्यक्ति फिट है। तुम को क्या हक़ कि किसी के उचित होने न होने का फैसला कर बैठो।

32. अर्थात् नुबुव्वत तो बड़ी बात है लोगों के बीच धन आदि का बंटवारा भी तो अल्लाह ही की मर्ज़ी से हो रहा है। वह जिस को चाहता है अमीर बनाता है और जिस को चाहता है ग़रीब। और किसी को एतिराज़ करने का अधिकार नहीं कि फ़लाँ व्यक्ति को अमीर क्यों बनाया और फ़लाँ व्यक्ति को ग़रीब क्यों। बन्दों की मसलहतों को अल्लाह बेहतर जानता है और उस की नीती वा उस की हिकमत जैसा तकाज़ा करती है, वह अपने बन्दों के साथ मामला करता है।

33. अर्थात् अल्लाह ने अर्थ विभाजन में जो अन्तर रखा है कि किसी को अधिक साधन प्रदान किये हैं और किसी को कम। कोई धनी परिवार में पैदा हुआ और उत्तराधिकार स्वरूप बड़ी दौलत पाई तथा कोई निर्धन परिवार में पैदा हुआ और उत्तराधिकार के नाम पर कुछ नहीं पाया। किसी को व्यापार के संसाधन प्राप्त हैं और कोई मेहनत मज़दूरी ही कर सकता है तो यह अन्तर एक तरह से दर्जों का अन्तर अवश्य है मगर इस का कोई नाता सम्मान एवं अपमान से नहीं है और न इस कारण अल्लाह के यहाँ किसी का दर्जा घटता या बढ़ता है। इस लिए नबी के व्यक्तित्व को इस नज़र से देखना कि उस के पास धन संसाधन अधिक मात्रा में नहीं है अतः वह इस पद के लिए उचित नहीं हो सकता निरी जिहालत है।

फिर जब बात आर्थिक दृष्टि के दर्जों के अन्तर की आई तो

इस की मसलहत भी खोल दी और वह यह कि लोग एक दूसरे से ख़िदमत ले सकें। अगर सब लोग समान क्षमता ले कर आते और समान रूप से संसाधन पाते तो कोई किसी को न पूछता और मानव समाज की व्यवस्था सहयोग पर न चलती। अगर सब प्लैटो जैसा दिमाग़ ले कर आते तो सब ही दार्शनिक बन कर रह जाते। किसान व्यापारी, मिस्त्री और कारीगर कहाँ से आते। और अगर सब पैदाइशी तौर पर अमीर ही अमीर, या ग़रीब ही ग़रीब होते तो न अमीर किसी के सहयोग का इच्छुक होता और न ग़रीब से कोई सरोकार रखता। इस प्रकार मानव सोसाइटी की व्यवस्था में परस्पर सहयोग का भाव लुप्त होता।

इस का यह मतलब हरगिज़ नहीं कि इन्सानी सोसाइटी में धन के अन्तर को कम करने के लिए जायज़ तथा न्याय संगत माध्यम न अपनाए जाएँ और उन को वर्गों में विभाजित कर दिया जाए। कुर्आन के स्पष्ट आदेश इस का खण्डन करते हैं जैसा यह आदेश कि धन तुम्हारे धनवानों के बीच न घूमती रहे (सूरह हश्-७) इसी प्रकार संपत्ति विभाजन की व्यवस्था, ज़कात की अदायगी का आदेश आदि।

34. अर्थात् दुनिया की जो दौलत ये लोग समेट रहे हैं उस के मुकाबले में वह दौलत जिस से अल्लाह तआला ने तुम्हें अलंकृत किया है हर दृष्टि से बेहतर है क्यों कि यह दौलत (नुबुव्वत) अल्लाह की ख़ास रहमत है जिस से वह अपने ख़ास बन्दे ही को नवाज़ता है।

35. यहाँ इस संदेह का निवारण किया गया है जो आम तौर से काफ़िरों को ख़ुश हाल देख कर स्तरीय मास्तिष्क में पैदा होता है। वे यह समझते हैं कि जब अल्लाह ने इन को ख़ुशहाल और दौलतमंद बनाया है तो वह ज़रूर इन से ख़ुश होगा। और यदि आखिरत बरपा हुई तो वहाँ भी इन्हें सब नेमतें प्राप्त होंगी। यहाँ इस का खण्डन करते हुए कहा गया है कि काफ़िरों का ख़ुशहाल और धनवान होना इस बात का प्रतीक नहीं है कि अल्लाह उन से ख़ुश है और आखिरत में भी वे ख़ुशहाल होंगे। दुनिया में इन्हें जो कुछ भी दिया जा रहा है वह दुनिया की ज़िन्दगी तक ही सीमित रहने वाला धन संसाधन है और इन्हें इस लिए दिया जा रहा है ताकि वे कुफ़्र में जितना आगे निकलना चाहें निकल जाएँ और अपना पैमाना ख़ूब भर लें। इस के बाद आखिरत की नेमतों में इन का कोई हिस्सा नहीं होगा। अल्लाह के नज़दीक सांसारिक धन सामग्री का कोई मूल्य नहीं है और जिस बाहुल्यता के साथ काफ़िरों को दिया जाता है उस से कहीं अधिक बाहुल्यता के साथ उन्हें दिया जाता मगर इस सूरत में लोग सोने चाँदी की चमक दमक से प्रभावित हो कर कुफ़्र की राह पर जा पड़ते। प्रत्येक व्यक्ति दुनिया बटोरने के लिए आगे बढ़ता और पूरी मानवता कुफ़्र के प्लेटफ़ॉर्म पर एकत्रित हो जाती।

यह ऐसी कड़ी परीक्षा होती कि फिर बहुत थोड़े ही लोग ऐसे निकलते जो अपने मूल स्वभाव पर जमे रहते और संसार की वैभव सामग्री की परवाह न करते हुए अल्लाह पर ईमान लाते और परहेजगारी का जीवन बिताते। मगर अल्लाह तआला ने इन्सानियत पर रहम फ़रमाया और इसे इतनी कड़ी परीक्षा में नहीं डाला।

अल्लाह के इस इशार्द से यह बात आप से आप स्पष्ट होती है कि काफ़िरों को अल्लाह तआला सांसारिक ऐश्वर्य की सामग्री कुछ अधिक ही देता है और सांसारिक प्रगति के संसाधन आमतौर से उन के लिए अधिक उपलब्ध कर देता है। मगर ईमान वालों के लिए वे चीज़ें गर्व करने की नहीं हैं क्योंकि ये तो छोटी सी ज़िन्दगी की तुच्छ सामग्रीयाँ हैं। आखिरत की बेहतरीन कभी न मिटने वाली नेमतें मुत्तकियों (परहेजगारों) ही के हिस्से में आने वाली हैं।

आज मुसलमानों में ऐसे लोग बहुत कम हैं जिन्होंने ने साफ़ ज़ेहन से इस सत्य को स्वीकार कर लिया हो और जो सांसारिक ऐश्वर्य की वस्तुओं सोने चाँदी आदि की परवाह न करते हुए तक्रवा और परहेजगारी की ज़िन्दगी को अपना सौभाग्य समझते हों।

36. जिस संदर्भ में बात चल रही है उस से स्पष्ट है कि जो लोग धन दौलत रखते हैं और सांसारिक वैभव एवं ऐश्वर्य के इच्छुक बन जाते हैं वे अल्लाह के ज़िक्र और उस की याद से ग़ाफ़िल हो जाते हैं और अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल होने का नतीजा यह निकलता है कि शैतान उन पर मुसल्लत हो जाता है और वह उन का साथी बन कर उन को गुमराह करता है।

यहाँ अल्लाह के ज़िक्र से मुराद पूरे विवेक के साथ अपने रब को याद करना और याद रखना अर्थात् दिल और दिमाग़ का अल्लाह की ओर आकृष्ट रहना। ज़बान से अल्लाह को याद करना इस में बड़ा सहायक है और इस लिहाज़ से इस का बड़ा महत्व है।

इस अवसर पर सूरह ताहा नोट १५२ भी सामने रहे।

शैतान का मुसल्लत होना और उस का साथी बन कर रहना शरीर की आँखों से दिखाई न देने वाली चीज़ है परन्तु इस के प्रभाव विचारों एवं धारणाओं तथा नैतिक एवं व्यवहारिक जीवन में महसूस किये जा सकते हैं और कुर्आन हमें उन चीज़ों से आगाह करता है जो यद्यपि हमारी नज़रों से ओझल हैं किन्तु हमारी धारणाओं, कर्मों एवं व्यवहारिक जीवन पर प्रभाव डाल सकती हैं।



और जब तुम ज़ुल्म कर चुके हो तो यह बात तुम्हारे लिए कुछ भी लाभकारी न होगा कि तुम अज़ाब (यातना) में एक दूसरे के शरीक हो। (ऐ नबी) क्या तुम बहरों को सुनाओगे या अन्धों और खुली गुमराही में पड़े हुए लोगों को राह दिखाओगे ? अगर हम तुम्हें उठा लेते हैं तो (इस के बाद) इन्हें दण्ड अवश्य देंगे। (अल-कुआन)

38. यहाँ तक कि जब ऐसा व्यक्ति हमारे पास पहुँचेगा तो (अपने शैतान से) कहेगा काश मेरे और तेरे बीच पूरब और पच्छिम की दूरी होती।³⁷ तो क्या ही बुरा साथी हुआ।

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ يَلَيْتَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ
فِي سَاعَةٍ ۚ

39. और जब तुम जुल्म कर चुके हो तो यह बात तुम्हारे लिए कुछ भी लाभकारी न होगी कि तुम अज़ाब (यातना) में एक दूसरे के शरीक हो।³⁸

وَلَنْ يَنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ إِذ ظَلَمْتُمْ أَنْتُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ۖ

40. (ऐ नबी !) क्या तुम बहरों को सुनाओगे या अन्धों और खुली गुमराही में पड़े हुए लोगों को राह दिखाओगे ?³⁹

أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمْى وَمَنْ كَانَ
فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۖ

41. अगर हम तुम्हें उठा लेते हैं तो (इस के बाद) इन्हें दण्ड अवश्य देंगे।⁴⁰

فَأَمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَإِنَّا مِنْهُمْ مُنْتَقِمُونَ ۚ

42. या यह होगा कि तुम को इन का अन्जाम दिखा देंगे जिस का हम ने इन से वादा किया है।⁴¹ ऐसा करने पर हम पूरी तरह समर्थ हैं।

أَوَلَمْ يَكُنْ لَكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُونَ ۖ

43. तो जो वहय तुम्हारी तरफ़ की गई है उस को मज़बूती के साथ थाम लो।⁴² निश्चय ही तुम सीधे मार्ग पर हो।

فَأَسْمِكْ بِالَّذِي أُوْحِيَ إِلَيْكَ إِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ

44. और बेशक तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए नसीहत है। बहुत जल्द तुम से पूछ गछ होगी।⁴³

وَأِنَّهُ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ ۖ

45. तुम से पहले हम ने जो रसूल भेजे थे उन से पूछ देखो क्या हम ने रहमान के सिवा दूसरे माबूद (पूज्य) निर्धारित किए थे कि उन की परस्तिश की जाए?⁴⁴

وَسُئِلَ مَنْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُسُلِنَا أَجَعَلْنَا مِنْ
دُونِ الرَّحْمَنِ إِلَهًا يُعْبَدُونَ ۚ

46. हम ने मूसा ⁴⁵ को अपनी निशानियों के साथ फिरऔन और उस के राज्य प्रमुखों के पास भेजा तो उस ने कहा मैं सारे जहान के रब (रब्बुल आलमीन) का रसूल हूँ ।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ
فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ

37. असल में “बोअदलमशिरकैन” शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस के शाब्दिक अर्थ हैं दो मशिरकों (दो पूरबों) के बीच की दूरी। किन्तु अरबी मुहावरे में मशिरक और मगरिब (अर्थात् पूरब और पश्चिम) के लिए मशिरकैन (दो पूरब) कहा जाता है जैसा कि शम्स और क्रमर (अर्थात् सूरज और चाँद) के लिए “कमरान” (दो चाँद) बोलने का मुहावरा है। इसी लिए “बोअदलमशिरकैन” का अनुवाद पूरब और पश्चिम की दूरी किया गया है।

आयत का मतलब यह है कि आज तो ये काफ़िर शैतान को अपना साथी बनाए हुए हैं किन्तु क्रियामत के दिन वे अपने इस साथी से नफ़रत करेंगे और उस से उस के मुँह पर कह देंगे कि काश मेरे और तेरे बीच बेपनाह दूरी होती।

38. अर्थात् जब दुनिया में तुम अपने आप पर जुल्म ढा कर आए हो तो आज तुम अपने शैतानों के साथ अज़ाब (यातना) में शरीक हो और तुम्हारी यह साझेदारी तुम्हारी यातना में किसी रियायत व कमी का कारण नहीं हो सकती। अर्थात् ये शैतान तुम्हारा बोझ हल्का नहीं कर सकते। और तुम्हारा दोज़ख़ में एकत्र होना यातना और पीड़ा में कमी का कारण नहीं हो सकता।

39. अर्थात् जिन्होंने सत्य को सुनने और सत्यमार्ग को देखने की शक्ति खो दी है उन पर न कोई नसीहत प्रभावित हो सकती है और न उन को मार्गदर्शन किया जा सकता है।

40. अर्थात् ऐ पैग़म्बर ये लोग तुम्हारी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन अगर हम ने तुम्हें दुनिया से उठा भी लिया तो ये लोग अल्लाह के अज़ाब से जो कुफ़्र की पादाश में इन पर आना है हरगिज़ बचने वाले नहीं।

इस अवसर पर सूरह यूनस नोट ७५ भी सामने रहे।

41. और यही दूसरी सूरत पेश आई। काफ़िरों का अन्जाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आप के जीवन में ही दिखा दिया गया।

42. तात्पर्य कुर्आन है जिस को मज़बूती से थाम लेने का

अर्थ उस को दिल की गहराइयों में जगह देना और एकाग्रता के साथ उस राह पर चलना है जो वह दिखा रहा है।

43. पूज़ ताछ इस बात की कि तुम ने कुर्आन के साथ क्या व्यवहार किया।

44. रसूलों से पूछने का मतलब उन की किताबों और उन की शिक्षाओं में यह बात तलाश करना है कि क्या वास्तव में उन्होंने ने एक खुदा के सिवा किसी अन्य की इबादत का आदेश दिया था। इस के सबूत में कोई प्रमाणिक उदाहरण प्रस्तुत नहीं किया जा सकता और जब सच्चाई यह है कि नबियों में से किसी ने भी ग़ैरुल्लाह की इबादत का आदेश नहीं दिया था तो शिर्क (बहुदेववाद) तथा बुतपरस्ती के लिए कौन सी बुनियाद रह जाती है।

यह अन्दाज़ कि रसूलों से पूछ देखो तत्त्वपूर्ण रचना की शैली है और यह उसी भावार्थ में है जिस भावार्थ में कि आयत

فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ

अर्थ:- “अगर तुम्हारे बीच कोई मतभेद हो जाए तो उसे अल्लाह और रसूल की तरफ़ फेर दो” (निसा - ५९) स्पष्ट है यहाँ भी किताब और सुन्नत मुराद हैं न कि अल्लाह के पास पहुँच कर और रसूल के पास पहुँच कर जब कि आप दुनिया से कूच कर गए किसी मसले की शर्ई हैसियत मालूम करना।

45. मूसा अलैहिस्सलाम का क्रिस्सा इस से पहले कई सूरतों में तप्सील से गुज़र चुका। यहाँ उस क्रिस्से के कुछ उभरे पहलू उजागर किये गए हैं और अभिप्रेत यह स्पष्ट करना है कि अल्लाह तआला नुबुव्वत के कार्य भार के लिए जिस को चुन लेता है वह कोई संपन्न और सांसारिक शान शौकत रखने वाली हस्ती नहीं होती बल्कि वह अपने गुणों के लिहाज़ से महान हस्ती होती है मूसा को फ़िरऔन की तरफ़ जो कि एक वैभवशाली राज्य का संचालक था रसूल बनाकर भेजा गया था किन्तु उन के साथ सांसारिक वैभव की सामग्रियाँ नहीं हैं तो इस से उन के रसूल होने पर कौन सी आँच आती है?



47. और जब वह उन के पास हमारी निशानियों के साथ आया तो वे उन का मज़ाक़ उड़ाने लगे।

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا إِذْ هُمْ مِنْهَا يَضْحَكُونَ ﴿٣٧﴾

48. हम उन को एक से बढ़कर एक निशानी दिखाते रहे ⁴⁶ और हम ने उन को अज़ाब की गिरफ्त में ले लिया ताकि वे रूजू करें।⁴⁷

وَمَا نُرِيهِمْ مِنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا
وَأَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٣٨﴾

49. मगर वे कहते ऐ जादूगर ! अपने रब से उस प्रतिज्ञा के आधार पर जो उस ने तुम से कर रखी है, हमारे लिए दुआ करो। हम ज़रूर हिदायत कुबूल करेंगे।⁴⁸

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا السَّاحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ
إِنَّا لَمُهْتَدُونَ ﴿٣٩﴾

50. और जब हम उन पर से अज़ाब हटा देते तो वे अपनी प्रतिज्ञा तोड़ देते।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِذْ هُمْ يُنْكثُونَ ﴿٤٠﴾

51. और फिरऔन ने अपनी जाति को पुकार कर कहा ऐ मेरी जाति के लोगो ! क्या मिस्र की बादशाही मेरी नहीं है ? और क्या ये नहरें मेरे नीचे नहीं बह रही हैं। क्या तुम लोग देखते नहीं हो !⁴⁹

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يُقَوْمُ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ
وَهَذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِي أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٤١﴾

52. तो मैं बेहतर हूँ या यह व्यक्ति जो तुच्छ है ⁵⁰ और अपनी बात खुल कर कह भी नहीं सकता ?⁵¹

أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ مِثْلُكَ لَا يَكَادُيبُ ﴿٤٢﴾

53. क्यों न इस पर सोने के कंगन उतारे गए या फ़रिश्ते उस के साथ परे बाँधे हुए आए।⁵²

فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَايِكَةُ
مُقَرَّرِينَ ﴿٤٣﴾

54. उस ने अपनी जाति को बेवकूफ़ बनाया और उन्होंने ने उस का अनुपालन किया। वे थे ही अवज्ञाकारी लोग ?⁵³

فَاسْتَحَفَّ قَوْمَهُ فَاطَاعُوهُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٤٤﴾

55. जब उन्होंने ने हमारे प्रकोप को निमंत्रण दिया तो हम ने उन को सज़ा दी और उन सब को डुबो दिया।⁵⁴

فَلَمَّا أَسْفَوْا نَأْتَيْنَاهُم مِّنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٥﴾

56. और उन को ऐसा बना दिया कि वे गये गुजरे हो गए। और बाद वालों के लिए इबरत का नमूना बन कर रह गए।⁵⁵

فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِّلْآخِرِينَ ﴿٤٦﴾

46. मुराद मोज़े अर्थात् चमत्कार हैं।

47. तात्पर्य यही अज़ाब हैं अर्थात् ऐसी आफ़तें और मुसीबतें जिन से इस बात का अनुमोदन होता था कि मूसा अल्लाह के रसूल हैं और ये अज़ाब इस लिए आते रहे ताकि वे होश में आएँ और उन्हें अपने ग़लत रवैये का एहसास हो। (तफ़सील के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १८७ से १९२)

48. इस से अन्दाज़ा होता है कि कितने ग़ैर संजीदा थे ये लोग, वे लोग मूसा से दुआ के लिए विनती भी करते और साथ ही उन्हें जादूगर भी कहते। उन की नज़र में हज़रत मूसा के मोज़े मात्र उन की जादूगरी थी मगर जो आसमानी आफ़तें उन पर नाज़िल हो रही थी उन से बचने के लिए वे हज़रत मूसा की दुआ को प्रभावकारी समझते थे। इस प्रकार उन्होंने ने दो विपरीत बातों को जमा कर लिया था। एक तरफ़ वे हज़रत मूसा को नेक और अल्लाह का प्रिय बन्दा भी समझते थे और दूसरी तरफ़ जादूगर भी।

49. यह था फिरऔन का अपनी फिरऔनियत का दावा कि जब मैं मिस्र का बादशाह हूँ और ऐसे राज्य का स्वामी हूँ जिस में धरती को लहलहा देने वाली नहरे बहती हो तो कौन है जो मुझ से बड़ा हो। हुकूमत का यह घमण्ड ऐसा था कि वह अपने रब को भूल गया।

50. हज़रत मूसा को फिरऔन ने तुच्छ समझा केवल इस कारण कि उन के पास वैभवशाली राज्य न था और न दौलत। कुरैश भी इसी ऐनक से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख रहे थे। और जब उन की मत ही मारी गई तो उन को क्या मालूम कि नुबुव्वत का स्थान कितना बुलन्द है।

51. यह फिरऔन का आरोप था न कि सच्चाई ! क्यों

कि हज़रत मूसा की वह दुआ जो उन्होंने ने नबी नियुक्त किये जाने पर अपनी ज़बान की गिरह खोल देने के लिए की थी, स्वीकार्य हुई थी और कुर्आन ने उन की जो तक्ररीरें उद्धृत की हैं वे अपनी बात कहने में पूरी तरह स्पष्ट हैं। मालूम होता है फिरऔन ने पुरानी बात को जब कि हज़रत मूसा में अपनी बात रखने के सिलसिले में कुछ कमी थी दोहरा कर उन के बारे में ग़लतफ़हमी पैदा करने की कोशिश की थी।

52. उस ज़माने में बादशाह सोने के कंगन पहनते थे और उन के इर्द गिर्द फ़ौज रहती थी। इसी के चलते फिरऔन का एतिराज़ यह था कि अगर वास्तव में मूसा को कायनात के रब ने रसूल बना कर भेजा है तो उन को शाही शान व शौकत क्यों नहीं प्रदान की गई। होना तो यह चाहिए था कि उन के लिए आसमान से सोने के कंगन नाज़िल किये जाते और फ़रिश्तों का समूह उन के इर्द गिर्द होता। उस ने नुबुव्वत के पद को बादशाहत की सतह पर रखा। हालाँकि यह पद उस से कई दर्जे बुलन्द है।

53. अर्थात् फिरऔन ने अपनी क्रौम को बेवज़न समझकर ख़ूब बेवकूफ़ बनाया। उन को ऐसा रोब में लिया कि वे अपनी अक्ल से काम न ले सके और उस की फ़रेबी बातों में आ गए। फिरऔन उन को बेवकूफ़ बनाने में इस लिए सफल हो गया था कि वे थे ही फ़ासिक (उल्लंघनकारी) लोग। और फ़ासिक लोग फ़ासिक नेतृत्व को ही पसन्द करते हैं।

54. व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट ९३

55. गुज़रे हुए अर्थात् अतीत की कहानी बनाकर रख दिया और बाद वालों के लिए इब्रत का नमूना बना दिया कि होशमंद लोग इस घटना से सबक लें।



57. और जब इब्ने मरयम का हाल बयान किया जाता है तो तुम्हारी जाति के लोग शोर मचाने लगते हैं।⁵⁶

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ﴿٥٦﴾

58. और कहते हैं हमारे माबूद (पूज्य) अच्छे हैं या वह ? यह बात मात्र कटहुज्जती के लिए वे पेश करते हैं।⁵⁷ वास्तव में ये लोग हैं ही झगड़ालू।

وَقَالُوا الْهَيْئَتَا خَيْرٌ أَمْ هُوَ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصَمُونَ ﴿٥٨﴾

59. वह तो बस हमारा एक बन्दा था जिस को हम ने इनाम से नवाज़ा और बनी इस्राईल के लिए एक मिसाल बनाया।⁵⁸

إِنَّ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٥٩﴾

60. हम चाहें तो तुम्हारे अन्दर से फ़रिश्ते बनाएँ जो ज़मीन में ख़लीफ़ा हों।⁵⁹

وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَلَائِكَةً فِي الْأَرْضِ يَخْلُقُونَ ﴿٦٠﴾

61. और यह निश्चय ही क्रियामत की बहुत बड़ी दलील है ⁶⁰ अतः उस में शक न करो और मेरी पैरवी करो।⁶¹ यही सीधी राह है।

وَأِنَّهُ لَعَلُّكُمْ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُونَ بِهَا وَأَتَّبِعُونَ هَذَا صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٦١﴾

62. शैतान तुम्हें इस से रोकने न पाये। निस्संदेह वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

وَلَا يَصِدُّكُمْ الشَّيْطَانُ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٦٢﴾

63. और जब ईसा स्पष्ट निशानियों के साथ आया था तो उस ने कहा था कि मैं तुम लोगों के पास हिकमत ले कर आया हूँ।⁶² और इस लिए आया हूँ ताकि तुम पर कुछ वे बातें स्पष्ट कर दूँ जिन के बारे में तुम मतभेद में पड़ गए हो।⁶³ अतः तुम अल्लाह से डरो और मेरा अनुपालन करो।

وَلَمَّا جَاءَ عِيسَى بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلَفُونَ فِيهِ فَأَتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا مُّسْتَقِيمًا ﴿٦٣﴾

64. अल्लाह ही मेरा रब है और तुम्हारा रब भी। अतः उसी की इबादत करो। यही सीधी राह है।⁶⁴

إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَأَعْبُدُوا اللَّهَ هَذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦٤﴾

65. मगर उन के विभिन्न गिरोहों ने इख़िलाफ़ बरपा किया ⁶⁵ तो तबाही है उन लोगों के लिए जिन्होंने ज़ुल्म किया ⁶⁶ एक दुखदायिनी दिन की यातना से।

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ قَوْلٌ لِّلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابٍ يَوْمَ إِلَيْهِمْ ﴿٦٥﴾

66. क्या ये लोग इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि उन पर क्रियामत आ जाए और उन्हें इस की ख़बर भी न हो?⁶⁷

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٦﴾

56. इब्ने मरयम से तात्पर्य जैसा कि जाहिर है ईसा (अलैहिस्सलाम) हैं, उन को माँ कि तरफ़ मन्सूब करना उन के बगैर बाप के पैदा होने पर प्रमाण प्रस्तुत करता है तथा इस बात पर भी कि वे खुदा के बेटे नहीं थे बल्कि मरयम के बेटे थे। कुआन में हज़रत ईसा को इस हैसियत से पेश किया गया है कि वह अल्लाह के बन्दे और रसूल थे अतः सूरह मरयम में जो इस सूरह से पहले नाज़िल हुई थी उन के जन्म की घटना को विस्तार के साथ प्रस्तुत किया गया है ताकि उन के खुदा का बेटा होने तथा पूज्य होने का पूरी तरह खण्डन हो जाए किन्तु मक्का के बहुदेववादी हक़ीक़त पर परदा डालने का असफल प्रयास करते और लोगों को ये कह कर उकसाते कि ईसाई तो उन्हें अल्लाह का बेटा मानते हैं अतः अगर हम फ़रिश्तों के बारे में यह धारणा और यह विश्वास रखते हैं कि वे अल्लाह की बेटियाँ हैं तो क्या ग़लत है?

57. अर्थात् हम ने तो फ़रिश्तों को पूज्य बनाया है जब कि ईसाइयों ने ईसा को पूज्य बनाया जो बहरहाल मनुष्य थे। अतः हमारे पूज्य ईसाइयों के पूज्य से अच्छे हुए। यह बात वे बस कट हुज्जती के लिए पेश करते थे। वरना उन पर यह बात अच्छी तरह स्पष्ट थी कि कुआन हज़रत ईसा को न अल्लाह का बेटा क़रार देता है और न माबूद। वह सिर्फ़ स्पष्ट करता है कि ईसा भी अल्लाह के बन्दे हैं और फ़रिश्ते भी उस के बन्दे।

58. अर्थात् ईसा थे तो अल्लाह के बन्दे ही मगर अल्लाह ने उन्हें अपने विशेष अनुग्रह से अलंकृत किया था इस लिए उन के माध्यम से तरह तरह के मोज़े सामने आए। और उन का प्रकट होना बनी इस्राईल में मिसाली हस्ती का प्रकट होना था ताकि जाहिरी दीनदारी के मुकाबले में हक़ीक़ी दीनदारी का उच्च नमूना उन के सामने आए।

59. अर्थात् फ़रिश्तों को इस कारण पूज्य समझना सही नहीं कि वे मनुष्य से अलग एक जाति हैं। वे अलग जाति के बावजूद अल्लाह की सृष्टि हैं और अगर अल्लाह चाहे तो इन्सानों में से भी फ़रिश्ते पैदा कर सकता है जो ज़मीन में खिलाफ़त का (प्रतिनिधित्व) का काम अन्जाम दें। अल्लाह की कुदरत से कोई चीज़ असंभव नहीं। अतः उस की किसी सृष्टि और किसी रचना को उस की प्रमुख विशेषता के आधार पर पूज्य बना लेने के लिए न्याय संगत औचित्य (Justification) नहीं है।

60. हज़रत ईसा की पैदाइश असाधरण तरीके पर अर्थात् बिना बाप के हुई थी जो अल्लाह तआला का बहुत बड़ा चमत्कार था। तथा अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा

अलैहिस्सलाम को बड़े ही आश्चर्यजनक चमत्कार प्रदान किये थे। जैसे मिट्टी के परिन्दे बना कर उन में फूँकना कि वह सचमुच परिन्दा बन जाए। पैदाइशी कोढ़ियों और अन्धों को अच्छा करना, मुर्दों को ज़िन्दा करना आदि। उन का यह चमत्कार से भरा हुआ जीवन अल्लाह की कुदरत के करिश्मों को प्रकट करता है। इस से इस बात का विश्वास पैदा हो जाता है कि क्रियामत के आने और उस दिन मुर्दा इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा किये जाने की जो ख़बर अल्लाह तआला ने दी है वह सच्ची है। असल चीज़ अल्लाह का हुक्म है न कि भौतिक नियम। वह जब चाहे (अपने बनाए हुए) भौतिक नियम को बदल सकता है और इस भौतिक जगत को पूरी तरह नष्ट कर सकता है।

यह तो है आयत का उभरा हुआ भावार्थ जो काफ़िरों के लिए हुज्जत है किन्तु इस के भावार्थ में क्रियामत के क़रीबी ज़माने में हज़रत ईसा का नाज़िल होना भी शामिल है जिस की पुष्टि हदीस में हुई है। उन का दोबारा दुनिया में आना और उसी शरीर के साथ आना जिस शरीर के साथ वह एक बड़ी मुद्दत पहले दुनिया से उठा लिये गए थे। उन का उस यलगाँव का मुकाबला करना जो इस्लाम दुश्मनों की तरफ़ से पूरे इस्लामी जगत पर हो रही होगी, दज़्जाल को जो अपनी अथाह शक्ति के साथ प्रकट हो कर दुनिया को बिगाड़ और विध्वंस की आग में झोंक रहा होगा, समाप्त कर देना। यहूदियों को पूरी तरह विनष्ट कर देना और ईसाइयों का सलीब को तोड़ कर उन पर सही तौर से ईमान लाना और मिल्लते इस्लामिया का एक मिल्लत और दुनिया कि सब से बड़ी ताक़त बन कर उभरना तथा इस्लाम का दुनिया पर छा जाना सांसारिक इतिहास की सब से बड़ी क्रान्ति होगी। और यह क्रान्ति क्रियामत प्रकट होने की निशानी होगी क्योंकि हज़रत ईसा का यह चमत्कारिक कारनामा अल्लाह की तरफ़ से इन्सानियत के लिए आखिरी हुज्जत (अन्तिम तर्क) होगा। इस के बाद भी जो लोग बिगाड़ और उपद्रव पर आमादा होंगे वे बदतर लोग होंगे और उन ही पर क्रियामत कायम होगी। इस अवसर पर सूरह निसा का नोट २६१ सामने रहे।

61. यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बानी कहलवाई गई है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में जो वास्तविकताएँ कुआन में प्रस्तुत की गई हैं उन में शक और संदेह की कोई गुन्जाइश नहीं। अतः उन पर विश्वास रखो और एकाग्रता के साथ मेरा अनुपालन करो।

62. बनी इस्राईल ने दीन की रूह खो दी थी और केवल दिखावटी दीनदारी को लेकर बैठ गए थे। हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) ने उन पर दीन की हिकमतों (तत्वों) को

स्पष्ट किया तथा दीन की रूह (Spirit) को उजागर किया ताकि वे समझ लें कि सच्ची दीनदारी क्या है। मौजूदा इन्जील में भी इस की झलक देखी जा सकती है।

63. बनी इस्राईल में मतभेद और विवाद तो बहुत से पैदा हो गए थे किन्तु उन में से जो मतभेद मौलिक थे और जिन के कारण वे फ़िरकों (वर्गों) में बंट गए थे उन की हक़ीक़त उन्होंने ने उन पर खोल दी। नबियों का तरीक़ा यही होता है कि वे सिरों को पकड़ लेते हैं। जिस के बाद गुत्थियाँ

आप से आप सुलझने लगती हैं।

64. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आले इमरान नोट ७६

65. व्याख्या के लिए देखिए सूरह मरयम नोट ५५

66. अर्थात् शिर्क और कुफ़्र किया। हज़रत ईसा के बारे में ईसाईयों का यह अक़ीदा कि वे अल्लाह के बेटे हैं शिर्क भी है कुफ़्र भी और बहुत बड़ी ज़ालिमाना हरकत भी।

67. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट २८७



उस दिन दोस्त एक दूसरे के दुश्मन हो जाएंगे सिवाय मुत्तकियों (परहेजगारों) के। ऐ मेरे बन्दों ! आज तुम्हारे लिए न कोई भय है और न तुम शोकाकुल होंगे। जो हमारी आयतों पर ईमान लाए थे और मुस्लिम (आज्ञापालक) बन कर रहे थे। दाखिल हो जाओ जन्नत में तुम और तुम्हारी पत्नियाँ तुम्हें खुश व खुर्रम रखा जाएगा। (अल-कुर्आन)

67. उस दिन दोस्त एक दूसरे के दुश्मन हो जाएंगे सिवाय मुत्तकियों (परहेज़गारों) के।⁶⁸

الْأَحْلَاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ ٦٨

68. ऐ मेरे बन्दों ! आज तुम्हारे लिए न कोई भय है और न तुम शोकाकुल होंगे।

يُعْبَادُ لَخَوْفٍ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ٦٩

69. जो हमारी आयतों पर ईमान लाए थे और मुस्लिम (आज्ञापालक) बन कर रहे थे।⁶⁹

الَّذِينَ آمَنُوا بِالْآيَاتِ وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ٧٠

70. दाखिल हो जाओ जन्नत में तुम और तुम्हारी पत्नियाँ⁷⁰ तुम्हें खुश व खुर्रम रखा जाएगा।

ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَآزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ٧١

71. उन के आगे सोने की थालियाँ और प्याले गर्दिश करेंगे⁷¹ और उस में वह कुछ होगा जो दिल को पसंद और आँखों के लिए स्वाद प्रदान करने वाला होगा⁷² और तुम उस में हमेशा रहोगे।

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ وَفِيهَا مَآثِرُهُنَّ وَالأَنْفُسُ وَتَلَذُّ الأَعْيُنُ وَأَنْتُمْ فِيهَا تَخْلَدُونَ ٧٢

72. यह वह जन्नत है जिस के उत्तराधिकारी तुम अपने कर्मों के सिले में बनाए गए हो।⁷³

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ٧٣

73. तुम्हारे लिए उस में बहुत सारे मेवे होंगे जिन को तुम खाओगे।⁷⁴

لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِنْهَا تَأْكُلُونَ ٧٤

74. निस्संदेह अपराधी⁷⁵ हमेशा जहन्नम में रहेंगे।

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّهِينٍ ٧٥

75. उन की यातना में कमी न होगी और वे उस में निराश पड़े रहेंगे।

لَا يَفْرَغُونَ مِنْهُمْ فِيهِ مُبِلْسُونَ ٧٦

76. हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वे स्वयं अपने ऊपर ज़ुल्म करते रहे।⁷⁶

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ٧٧

77. वे पुकारेंगे, हे अधिकारी ! तुम्हारा रब हमारा ख़ात्मा ही कर दे।⁷⁷ वे जवाब देंगे तुम को इसी हाल में रहना है।

وَنَادُوا لِبَلَدِكُمْ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ قَالَ إِنَّكُمْ مَكِيدُونَ ٧٨

78. हम ने तुम्हारे सामने हक़ पेश किया था मगर तुम में से अधिकतर लोगों को हक़ नागवार था।⁷⁸

لَقَدْ جِئْتُمْ بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَرِهُونَ ٧٩

79. क्या इन लोगों ने कतई फैसला कर लिया है (ऐसा है) तो हम भी क़तई फैसले कर लेंगे।⁷⁹

أَمْ أَمْرُكُمْ أَمْ أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ٨٠

68. दुनिया में काफ़िर गुमराहों को अपना दोस्त बना लेते हैं मगर क्रियामत के दिन वे एक दूसरे के दुश्मन हो जाएंगे क्यों कि वह महसूस करेंगे कि वह दोस्ती उन की गुमराही का कारण बनी। अलबत्ता अल्लाह का डर रखने वाले परहेज़गारों की आपसी दोस्ती क्रियामत के दिन भी बरकरार रहेगी क्यों कि वे महसूस करेंगे कि वे एक दूसरे को हक़ की तल्क़ीन करते रहे।

कुर्आन की यह आयत आगाह करती है कि प्रत्येक व्यक्ति देख ले कि उस ने किस व्यक्ति के साथ दोस्ती कर ली है और वह उस को किधर ले जा रहा है।

69. यह आयत पुष्टि करती है कि जन्नत की खुशख़बरी उन लोगों के लिए है जो ईमान ला कर अल्लाह के फ़रमाबरदार (आज़ापालक अथवा मुस्लिम) बन कर रहे अर्थात् जिन के जीवन में इस्लाम रच बस गया।

70. मुराद मोमिन पत्नियाँ हैं। ईमान वालों के लिए यह खुशख़बरी भी है कि उन के साथ उन की मोमिन पत्नियाँ भी जन्नत में दाखिल होंगी।

71. अर्थात् जन्नत के बरतन भी अत्यंत उच्च कोटि के होंगे। अल्लाह के ख़ज़ाने में सोने की कोई कमी नहीं है इस लिए वह जन्नतियों के लिए सोने के बरतन बना देगा और जब प्याले (सागर) सोने के होंगे तो

“या रब उस सागरे-लबरेज़ की मय क्या होगी।”

72. अर्थात् जन्नत की ख़ूबसूरती ऐसी होगी कि दिल और

आँखों के लिए आनन्द एवं स्वाद प्रदान करने वाली होगी। जन्नत की हर चीज़ आर्ट का ऐसा नमूना पेश करेगी जो दर्शनीय होगा।

73. ईमान वालों से कहा जाएगा कि तुम अपने कर्मों के सिले में जन्नत के उत्तराधिकारी बनाए गए हो ताकि उन्हें इस बात से खुशी हो कि हमारे प्रयास सफल एवं स्वीकार्य हुए और हमें अपनी मेहनत का फल मिला।

74. जन्नत की खुशख़बरी देते हुए मेवों का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है क्यों कि मेवे एक उत्तम, स्वादिष्ट एवं शक्तिदायक आहार हैं तथा प्रफुल्लता प्रदान करने वाला भी।

75. मुराद काफ़िर और मुश्रिक हैं।

76. या'नी काफ़िर के लिए इतनी कड़ी सज़ा अल्लाह की तरफ़ से जुल्म नहीं बल्कि उस के न्याय का तक्राज़ा होगा। कुदरत का क़ानून यही है कि जो आग में कूद पड़ता है आग उसे जला देती है और जो ज़हर खाता है अपने जीवन को समाप्त कर लेता है।

77. अर्थात् हमारा वजूद ही न रहे तो बेहतर है।

78. यह अल्लाह तआला की तरफ़ से उन दोज़खियों को जवाब होगा कि हम ने जब अपने रसूलों के माध्यम से सत्य को तुम्हारे सामने प्रस्तुत किया था तो तुम को उस का सुनना भी ग़वारा न था। अब सत्य को नकारने की सज़ा भुगतो।

79. अर्थात् इन लोगों ने यदि सत्य का इन्कार करने का अन्तिम निर्णय कर लिया है तो हम भी उन्हें दण्डित करने का अन्तिम निर्णय कर लेंगे।

80. क्या इन्होंने ने यह गुमान कर रखा है कि हम इन की राज की बातों और इन की कानाफूसियों को सुनते नहीं हैं ?⁸⁰ हम ज़रूर सुन रहे हैं और हमारे दूत (फ़रिश्ते) इन के पास ही लिख रहे हैं।⁸¹

أَمْ يَحْسِبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ﴿٨٠﴾

81. कहो अगर रहमान के कोई औलाद होती तो सब से पहला इबादत करने वाला मैं हूँ।⁸²

قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَنِ وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعِبَادِينَ ﴿٨١﴾

82. पाक है आसमानों और ज़मीन का रब अर्श (सिंहासन) का मालिक उन बातों से जो ये बयान करते हैं।⁸³

سُبْحَنَ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٨٢﴾

83. तो इन को छोड़ दो कि बहस में उलझे रहें और खेल में लगे रहें, यहाँ तक कि उस दिन को देख लें जिस से उन को डराया जा रहा है।⁸⁴

فَذَرْهُمْ يُخَاوِضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٨٣﴾

84. वही आसमान में भी इलाह (पूज्य) है और ज़मीन में भी इलाह और वही हिकमत वाला ज्ञान वाला है।

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَهٌُ وَفِي الْأَرْضِ إِلَهٌُ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٨٤﴾

85. बड़ा बरकत वाला है वह जिस के क़ब्जे में आसमानों और ज़मीन और उन के बीच की समस्त चीज़ों की बादशाही है। उसी के पास क्रियामत की घड़ी का ज्ञान है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।

وَتَبَرَّكَ الَّذِي لَهُ مَلِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٥﴾

86. उस को छोड़ कर ये लोग जिन को पुकारते हैं वे शफ़ाअत (सिफ़ारिश) का अधिकार नहीं रखते मगर वे जो ज्ञान के आधार पर सत्य की गवाही देंगे।⁸⁵

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾

87. अगर तुम इन से पूछो इन्हें किस ने पैदा किया है तो कहेंगे अल्लाह ने। फिर ये किस तरह फ़रेब में आते हैं।⁸⁶

وَلَكِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَنَّى يُؤْفَكُونَ ﴿٨٧﴾

88. और उस की (अर्थात् रसूल की) ये फ़रियाद कि ऐ मेरे रब ! ये वे लोग हैं जो ईमान नहीं लाते।⁸⁷

وَقِيلَ لَهُ يَرْبِّ إِنَّ هَؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾

89. तो इन से दरगुरज़र करो और कहो सलाम।⁸⁸ बहुत जल्द इन्हें मालूम हो जाएगा।⁸⁹

فَاصْفَعْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

80. इशारा है उन गुप्त षडयंत्रों की ओर जो इस्लाम और उस के पैगम्बर के विरुद्ध किये जा रहे थे।

81. अर्थात् अल्लाह तो गुप्त से गुप्त बात को जानता और सुनता ही है। उस ने ऐसी व्यवस्था बना रखी है कि फ़रिश्ते उन बातों का रिकार्ड तैयार करें ताकि वे क्रियामत के दिन गवाही का काम दे सकें।

82. अर्थात् यदि खुदा की कोई संतान होती तो मैं किस तरह इन्कार कर सकता था जब कि मैं उस की इबादत में पहल करने वाला और सब से आगे रहने वाला हूँ। तुम्हें सोचना चाहिए कि एक ऐसा व्यक्ति जो अल्लाह के प्रति सच्ची श्रद्धा रखता है और उस की इबादत भी सच्चे मन से करता है तथा सब से ज्यादा सक्रिय भी है वह आखिर अल्लाह के औलाद होने से क्यों इन्कार करता है।

“فَأَنذَرْتُكَ الْيَوْمَ” “फअना अव्वलुल आबिदीन” का मतलब हमारे नज़दीक यही है कि “तो मैं सब से पहले अल्लाह की इबादत करने वाला हूँ।” मैं इस से इन्कार क्यों करने लगता। आयत की शाब्दिक तरकीब की दृष्टि से वाक्य सशर्त है और उस के उत्तर में ये शब्द कि “मैं इस का इन्कार कैसे करता” छिपे हैं। किन्तु प्रसंग से स्पष्ट हैं। इस का उदाहरण सूरह यूनस की यह आयत है :-

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنتُمْ فِي شَكٍّ مِنْ دِينِي فَلَا
عَبْدَ إِلَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ عِبَادُ اللَّهِ
الَّذِي يَتَوَفَّكُم (يونس- १०३)

अर्थ :- “कहो ऐ लोगो ! यदि तुम मेरे दीन के बारे में शक में हो तो (सुन लो) मैं उन की परस्तिश नहीं करता जिन की तुम अल्लाह के सिवा परस्तिश करते हो बल्कि मैं अल्लाह की परस्तिश करता हूँ जो तुम को मौत देता है।” (यूनस - १०४)

इस आयत में भी शर्त के उत्तर में “सुन लो” या इस तरह के अन्य शब्द छिपे हैं जो अपने प्रसंग से स्पष्ट हैं।

सार यह कि इस आयत में अल्लाह के लिए संतान होने की जो बात मान (Suppose) कर के कही गई है वह उस के खण्डन की एक तत्त्वपूर्ण शैली है। किसी बात के खण्डन के उद्देश्य से यह कहना कि चलो मान लो यह बात सही होती उस के सही होने का प्रमाण नहीं है। इस का उदाहरण सूरह अम्बिया की यह आयत है :-

لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا. (سورة انبياء: २२)

अर्थ :- “यदि इन में अल्लाह के सिवा और खुदा भी होते

तो ये छिन्न भिन्न हो कर रह जाते। (सूरह अम्बिया - २२)

इस आयत में भी जो बात Suppose मान कर के कही गई है बहुदेववादियों के दावे के खण्डन के लिए है और इस से एक से अधिक खुदाओं (पूज्यों) के अस्तित्व की कोई संभावना सिद्ध नहीं होती।

83. अर्थात् अल्लाह उन तमाम बातों से पाक है जो उस की शान के खिलाफ़ है और उस के लिए संतान की कल्पना पूरी तरह उस की शान के खिलाफ़ ही है।

84. अर्थात् ये लोग जब इन बातों को समझने के लिए तैयार नहीं हैं और बहस में उलझना तथा अल्लाह की आयतों से खेलना ही चाहते हैं तो उन को हाल पर छोड़ दो। क्रियामत के दिन उन को पता चलेगा कि उन्होंने ने कितनी ग़लत धारणा और कितना ग़लत रवैया अपनाया था और इस के फलस्वरूप उन्हें क्या कुछ भुगतना पड़ रहा है।

85. अर्थात् सिफ़ारिश का इस्तिहार तो किसी को नहीं अलबत्ता अल्लाह जिन को इज़ाज़त देगा वे सिफ़ारिश करेंगे और उन की सिफ़ारिश अंधाधुंध नहीं होगी बल्कि ज्ञान के आधार पर होगी और वे सत्य बात ही कहेंगे। जहाँ तक काफ़िरों और बहुदेववादियों की बात है उन के लिए कोई भी सिफ़ारिश नहीं करेगा, न फ़रिश्ते और न नबी क्यों कि उन के लिए सिफ़ारिश मना होगी। रहे दूसरे गुनहगार बन्दे तो उन में से भी किसी के बारे में सिफ़ारिश करने से पहले वे यह मालूम करेंगे कि वह अल्लाह के नज़दीक सिफ़ारिश के योग्य है भी यह नहीं। यदि वह सिफ़ारिश के लायक होगा तो वे सिफ़ारिश करेंगे वरना नहीं। अतः ग़लती करने वाले दोषी लोगों का सिफ़ारिश पर आस लगा कर बैठ रहना सही नहीं। असल चीज़ कर्म को सुधारने की चिन्ता करनी चाहिए। (अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह मरयम नोट १११)

86. अर्थात् ये लोग शैतान के उकसाने तथा उस के बहकाने में कैसे आते हैं कि फ़रिश्ते अल्लाह के समक्ष सिफ़ारिश के लिए वसीला (माध्यम) हैं अतः उन की इबादत करो। वे तुम्हारी इबादत से खुश हो कर अल्लाह के समक्ष तुम्हारे लिए सिफ़ारिश करेंगे और तुम्हें हर तरह के अज़ाब, यातना और मुसीबत से मुक्ति दिला कर रहेंगे। सिफ़ारिश की यह धारणा ही है जिस ने फ़रिश्तों के पूज्य होने की धारणा पैदा कर दी है वरना वास्तविकता बिल्कुल स्पष्ट है कि पैदा करने वाला अल्लाह ही है और जब सृष्टा अल्लाह ही है तो पूज्य भी वही है। फ़रिश्ते जब सृष्टा नहीं हैं तो पूज्य कैसे हुए ?

87. यह हठधर्म लोगों के बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अपने रब से फ़रियाद है कि ये लोग गुमराही में इतने दूर निकल गए हैं कि कुआन के स्पष्ट तर्क भी इन पर असर

नहीं कर रहे हैं और इन्हें इस बात पर हट है कि ईमान नहीं लाएंगे।

प्रसंग से स्पष्ट है कि अल्लाह ने अपने रसूल की यह फ़रियाद सुन ली और अब इन के साथ वह मामला किया जाए जिस की हिदायत आगे दी जा रही है।

व्याकरण की दृष्टि से संभवतः आयत में वाव के बाद “लक्रद समेअना” لَقَدْ سَمِعْنَا (अर्थात् हम ने सुनली) गुप्त है और “क़ीलिही” قِيلَ में लाम का ज़ेर ज़बर की जगह है और इस तरह का परिवर्तन कुछ मौक़ों पर कलाम में प्रवाह पैदा करने के लिए किया जाता है जिस की मिसाल सूरह फ़तह आयत १०

में “अलैहुल्लाह” اَللّٰهُمَّ में हे का पेश है।

88. यह सलाम आदरस्वरूप नहीं है जो मुसलामानों के आपसी मुलाकात के लिए इस्लामी तरीक़े की हैसियत रखता है बल्कि कटहुज्जती करने वालों से उन पर तर्क प्रस्तुति के बाद ख़ूबसूरती के साथ उन से अलग होने का सलाम है।

आयत का मतलब यह है कि ऐ नबी तुम्हारी फ़रियाद हम ने सुन ली, ये नहीं मानते तो इन को इन के हाल पर छोड़ दो। इन से दरगुज़र करो। और सलाम कह कर ख़ूबसूरती के साथ इन से अलग हो जाओ।

89. अर्थात् शीघ्र ही वे अपना अन्जाम देख लेंगे।

४४. सूरह अद्-दुखान

नाम :- आयत १० में आसमान से दुखान (धुएँ) के निकलने का वर्णन हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अद्-दुखान” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि सूरह जु़रुफ़ के बाद नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- कुर्ऑन की क्रद्र न करने वालों और कुर्ऑन के पैग़म्बर का इन्कार करने वालों को इस बात से आगाह करना है कि उन के लिए दुखदायिनी यातना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ६ में कुर्ऑन की उच्चता और उस की क्रद्र बयान की गई है।

आयत ७ और ८ में कुर्ऑन नाज़िल करने वाले की पहचान (मारिफ़त) प्रदान की गई है।

आयत ९ से ३३ में फ़िरऔन की जाति की तबाही और बनी इस्राईल की सफलता को एक ऐतिहासिक उदाहरण की हैसियत से प्रस्तुत किया गया है कि रसूल का विरोध करने वाले किस अन्जाम को पहुँचे और उस का अनुपालन करने वाले किस तरह सफल एवं प्रतिष्ठित हुए।

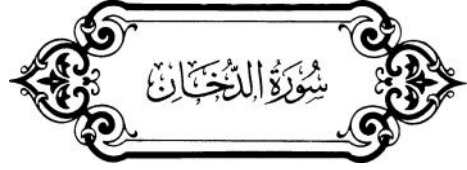
आयत ३४ से ५७ में दूसरे जीवन का इन्कार करने वालों तथा उस पर विश्वास बाँध कर ईश-भय से जीवन व्यतीत करने वालों का अलग अलग अंजाम बयान किया गया है जो क्रियामत के दिन उन के सामने आएगा।

आयत ५८ और ५९ सूरह के ख़ात्मे की आयतें हैं जिन में कुर्ऑन की क्रद्र न करने वालों को सचेत किया गया है अर्थात् जिस मज़मून से सूरह की शुरूआत हुई थी उसी पर उस को ख़त्म कर दिया गया है।

४४. सूरह अद्-दुखान

आयतें : ५९

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा - मीम ¹।

حَمِّ

2. क़सम है रौशन किताब की ।²

وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ

3. हम ने इसे एक मुबारक रात में नाज़िल किया।³
निस्संदेह हम लोगों को ख़बरदार करने वाले थे।⁴

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ مُبَرَّكَةٍ إِنَّا كُنَّا مُنْذِرِينَ

4. उस रात में हर तरह के तत्वपूर्ण मामले तय किये जा रहे थे।⁵

فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ

5. हमारी तरफ़ से एक आदेश की हैसियत से।⁶
निस्संदेह हम रसूल भेजने वाले थे।⁷

أَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ

6. तुम्हारे रब की रहमत के तौर पर।⁸ निस्संदेह वह सुनने वाला जानने वाला है।⁹

رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

7. आसमानों और ज़मीन का तथा उन के बीच की समस्त चीज़ों का रब। अगर तुम को यकीन करना है।¹⁰

رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنَّ كُنْتُمْ مُّؤَقِنِينَ

8. उस के सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं। वही ज़िन्दा करता और मौत देता है। तुम्हारा रब और तुम्हारे गुज़रे हुए बाप दादों का रब।

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ

9. मगर ये शक में पड़े हुए खेल रहे हैं।¹¹

بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ يَلْعَبُونَ

10. तो इन्तिज़ार करो उस दिन का जब आसमान से खुला हुआ धुवाँ प्रकट होगा।¹²

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ

11. जो लोगों पर छा जाएगा। यह है दुखदायी अज़ाब।

يَغْشَى النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ

1. इन विभक्त अक्षरों की व्याख्या सूरह मोमिन नोट १ में गुजर चुकी ।

इस सूरह की आयत ४ में अल्लाह के हकीमाना फैसलों अर्थात् तत्वपूर्ण निर्णयों का वर्णन हुआ है और इन अक्षरों का इशारा उसी मजमून (अम्रिन हकीम) की तरफ है। और अल्लाह के तत्वपूर्ण निर्णय उस के तत्वदर्शी (हकीम) होने पर प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

2. इस की व्याख्या सूरह जुम्हुर नोट २ में गुजर चुकी।

3. अर्थात् हिदायत की रौशनी रात के अंधकार में प्रस्फुटित हुई। मतलब यह कि वह जिहालत के अंधकार को चीरते हुए प्रकट हुई थी और वह घड़ी बड़ी ख़ैर और बरकत तथा बड़े ही भाग्य की घड़ी थी जब कुर्आन नाज़िल होने की शुरुआत हुई क्योंकि कुर्आन के अवतरण से ख़ैर और भलाई के स्रोत फूट बहे और रूहानी बरकतों से वातावरण भर गया। यह रात अपने इसी गुण के कारण कि इस में कुर्आन के उतरने की शुरुआत हुई मुबारक रात और प्रतिष्ठित तथा क़द्र एवं उच्चता वाली रात (लैलतुल क़द्र) क़रार पाई। आम तौर से मुफ़स्सिरन (कुर्आन के टीकाकारों) ने इस का यह मतलब लिया है कि जिस को कुर्आन के उतरने के लिए चुना गया मगर इस के पक्ष में न कोई दलील है और न कोई सही हदीस। हज़रत मूसा को नुबुव्वत से अलंकृत करते समय जिस जगह से अल्लाह तआला ने पुकारा था उसे “बुकअतु, मुबारक:” (मुबारक जगह सूरह क़सस ३०) कहा गया है। ज़ाहिर है इस का यह मतलब नहीं कि यह जगह पहले से मुबारक चली आ रही थी बल्कि मतलब यह है कि इस जगह को अल्लाह की वाणी के लिए चुने जाने का गौरव प्राप्त हो रहा है इस लिए यह जगह मुबारक क़रार पाई। इसी प्रकार कुर्आन को मुबारक रात में नाज़िल करने का मतलब भी यही है कि यह रात कुर्आन नाज़िल होने की बरकतों के कारण मुबारक क़रार पाई है। (देखिए सूरह क़द्र नोट २)

यह वही रात है जिसे सूरह क़द्र में लैलतुल क़द्र (क़द्र की रात) कहा गया है और कुर्आन के नाज़िल होने की शुरुआत रमज़ान में हुई थी।

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ - (بقره: १८५)

अर्थ :- “रमज़ान का महीना जिस में कुर्आन नाज़िल किया गया” (बक्र: १८५)

इस लिए यह मुबारक रात रमज़ान की एक रात थी और हदीस के स्पष्टीकरण के अनुसार यह रमज़ान की ताक रातों (विषम रातों) में से एक रात है। कुछ टीकाकारों ने मुबारक रात से मुराद शाबान की पन्द्रहवीं रात ली है जिसे “शबे बराअत” कहा जाता है मगर यह भावार्थ कुर्आन के कहने के बिल्कुल

विरुद्ध है इस लिए यह मत पूरी तरह अस्वीकरणीय है। अल्लामा इब्ने कसीर इस मत का खण्डन करते हुए फ़रमाते हैं:-

“जिन्होंने कहा यह निस्फ़ शाबान (अर्द्ध शाबान) की शब है जैसे कि इकरिमा से मरवी (उल्लिखित) है तो उन्होंने बहुत दूर की बात कही। क्यों कि कुर्आन पुष्टि करता है कि वह रमज़ान की रात है। रही वह हदीस जो अब्दुल्लाह बिन स्वालेह ने, लैस, अक़ील और जुहरी के वास्ते से उस्मान बिन मुहम्मद बिन नसीरुलअख़नस से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अजल पूरी हो जाने (अर्थात् मौत) का फैसला शाबान से शाबान तक के लिए किया जाता है। यहाँ तक कि एक व्यक्ति निकाह कर लेता है और उसे औलाद होने वाली होती है परन्तु उस का नाम मुर्दों में शामिल हो चुका होता है। तो यह हदीस मुर्सल है (अर्थात् ताबअी ने सहाबी के वास्ते के बग़ैर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ मंसूब की है) और इस तरह की रिवायतें नुसूस (कुर्आन के स्पष्टीकरण) के मुकाबले में पेश नहीं की जा सकती” (तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द ४ पृष्ठ १३७)

असल में शबे-बराअत (शाबान की पन्द्रहवीं रात) की फ़ज़ीलत न कुर्आन से साबित है और न हदीस से। जो रिवायतें उस की फ़ज़ीलत में प्रस्तुत की जाती हैं वे या तो कमज़ोर हैं या गढ़ी हुई। ऐसी रिवायतों से दीन में हज़्जत कायम नहीं होती। अगर शबे-बराअत की कोई असल होती तो यह बात सहाबा किराम में मशहूर होती। परन्तु अजीब बात यह है कि इतनी महत्वपूर्ण बात को उद्धृत करने वाले या तो कमज़ोर उल्लेखकर्ता हैं या वे जिन्होंने फ़ज़ाइल के सिलसिले में हदीसों गढ़ने का कारखाना खोल रखा था।

4. अर्थात् ग़फ़लत में पड़ी हुई और अपने अन्जाम से बेख़बर इन्सानियत को चौंका देना और ख़बरदार करना वह महत्वपूर्ण उद्देश्य है जिस के लिए कुर्आन का अवतरण हुआ।

5. अर्थात् उस रात में अति महत्वपूर्ण एवं तत्वपूर्ण फैसले किये गए। जैसा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नुबुव्वत से अलंकृत करने का फैसला, एक चमत्कारी ग्रंथ प्रदान करने का फैसला, उस ग्रंथ की रक्षा का फैसला, दीन को पूरा करने और उस को ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) करने का फैसला, मुस्लिम उम्मत को बरपा करने, उस को इमामत के पद पर नियुक्त करने और ख़ाना-ए-काबा को उस की निगरानी में देने का फैसला और जन्नत के लिए उन लोगों के चुनाव का फैसला जो इन्सानी चमन के चहकते महकते फूल हों। यह और इस तरह के फैसले अल्लाह के तत्वदर्शी शान के द्योतक थे।

6. अर्थात् कुर्आन का अवतरण कायनात के शासक की ओर से अनिवार्य रूप से पालन करने वाले आदेश (आज्ञप्ति

Decree) की हैसियत से हुआ है जिस से इन्कार की सूरत में दण्ड अनिवार्य है। कोई व्यक्ति इस ग़लत फ़हमी में न रहे कि इस किताब को मानना और न मानना एक ही जैसा है।

7. अर्थात् हमारा यह फैसला था कि एक रसूल भेजना है इस लिए हम ने रिसालत के लिए मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का चुनाव कर के उन पर वहय नाज़िल की।

8. अर्थात् यह किताब तुम्हारे रब की तरफ से रहमत बन कर नाज़िल हुई है। इसे अपने लिए मुसीबत न समझो। अगर स्वीकार करोगे तो तुम पर उस की रहमतों की बारिश होगी।

9. अल्लाह की इन दो विशेषताओं का वर्णन इस बात से आगाह करने के लिए है कि इस महान ग्रंथ के बारे में कौन क्या कहता है कि उस को वह सुन लेगा और उस के साथ कौन क्या सुलूक करता है उस को वह देख लेगा।

10. अर्थात् अल्लाह का कायनात का रब होना एक हकीक़त है मगर तुम्हें इस का विश्वास नहीं अगर तुम्हें इस का विश्वास होता तो ग़ैरुल्लाह को पूज्य न बनाते।

11. अर्थात् खुदा के बारे में तरह तरह के संदेहों में लिप्त हैं और जो सत्य उन के समक्ष प्रस्तुत किये जा रहे हैं उन पर वे गंभीरतापूर्वक विचार करने के लिए तैयार नहीं हैं बल्कि उन के साथ खेल रहे हैं।

12. मुराद क्रियामत का धुँवा है जो काफ़िरों पर छा जाएगा जैसा कि बाद की आयतों से स्पष्ट है। परन्तु बुखारी में अब्दुल्लाह बिन मसऊद से उल्लिखित है कि इस से तात्पर्य वह धुँवा है जो मक्का में लोगों को अकाल के भारी कष्ट में लिप्त होने के कारण से आसमान पर दिखाई दे रहा था।

आम तौर से मुफ़स्सिरीन (कुआन के टीकाकार) इस आयत की तफ़्सीर में यही मत प्रस्तुत करते हैं। परन्तु अल्लामा इब्ने

कसीर ने इस से मतभेद करते हुए लिखा है कि कुआन ने जो “दुखानिम्मुबीन” कहा है तो इस का अर्थ खुले हुए और स्पष्ट धुँएँ के हैं जिस को प्रत्येक व्यक्ति देख सकेगा। परन्तु अब्दुल्लाह बिन मसऊद की तफ़्सीर के अनुसार धुँवाँ मात्र खयाली था। जो भूक की अधिकता के कारण लोगों को दिखाई दे रहा था। और अगर वास्तव में यह मात्र काल्पनिक धुँवा होता तो कुआन यह न कहता कि “वह लोगों पर छा जाएगा।” (देखिए तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द ४ पृष्ठ १३९)

हम समझते हैं कि किसी रिवायत को ध्यान में रख कर कुआन की किसी आयत की ऐसी व्याख्या करना जो उस के ज़ाहिरी पहलू और उस के मज़मून से मेल न खाती हो सही नहीं। अलबत्ता रिवायत का यह अर्थ निकाला जा सकता है कि रिवायत उद्धृत करने में उल्लेखकर्ताओं से ग़लती हुई है और जहाँ तक क्रियामत के दिन काफ़िरों पर धुँवा छोड़े जाने की बात है सूरह रहमान में भी इस का वर्णन हुआ है :-

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شَوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ
وَنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرَانِ - (رُح: ३५)

अर्थ :- “तुम पर आग के शोले और धुँवा छोड़ा जाएगा तो तुम अपनी रक्षा न कर सकोगे। (रहमान-३५)

रही बात उस हदीस की जिस में क्रियामत के निकट आने में धुँएँ (दुखान) के ज़ाहिर होने की भविष्यवाणी की गई है (मुस्लिम किताबुल फितन) तो वह दुसरा धुँवाँ है जो क्रियामत के चिन्हों में से है और हदीस में उस धुँएँ को इस आयात की तफ़्सीर नहीं कहा गया है।

ऐ हमारे रब ! हम से अज़ाब दूर कर दे। हम ईमान लाते हैं। अब उन के लिए नसीहत हासिल करने का क्या अवसर रहा जब कि उन के पास रसूल खुले तौर पर आ गया था। किन्तु उन्होंने उस से मुँह मोड़ा था और कहा था, यह तो एक सिखाया पढ़ाया ख़ब्ती है। हम कुछ देर के लिए अज़ाब को दूर कर भी दें तो तुम वही करोगे जो पहले कर रहे थे। जिस दिन हम बड़ी पकड़ में लेंगे उस दिन हम सज़ा दे कर रहेंगे । (अल-कुआन)

12. ऐ हमारे रब ! हम से अज़ाब दूर कर दे। हम ईमान लाते हैं। رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ﴿١٢﴾
13. अब उन के लिए नसीहत हासिल करने का क्या अवसर रहा जब कि उन के पास रसूल खुले तौर पर आ गया था।¹³ أَلَيْسَ لَهُمُ الذِّكْرَى وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ﴿١٣﴾
14. किन्तु उन्होंने उस से मुँह मोड़ा था और कहा था, यह तो एक सिखाया पढ़ाया ख़बली है।¹⁴ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ ﴿١٤﴾
15. हम कुछ देर के लिए अज़ाब को दूर कर भी दें तो तुम वही करोगे जो पहले कर रहे थे।¹⁵ إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ قَلِيلًا إِنَّكُمْ عَائِدُونَ ﴿١٥﴾
16. जिस दिन हम बड़ी पकड़ में लेंगे¹⁶ उस दिन हम सज़ा दे कर रहेंगे । يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى إِنَّا مُنتَقِمُونَ ﴿١٦﴾
17. हम ने¹⁷ इस से पहले फ़िरऔन की क्रौम को आजमाइश में डाला था।¹⁸ उन के पास एक प्रतिष्ठित रसूल आया। وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ ﴿١٧﴾
18. कि अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले करो।¹⁹ मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ।²⁰ أَنْ أَدُّوْا إِلَىٰ عِبَادِ اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٨﴾
19. और अल्लाह के मुक़ाबले में उद्दण्डता न बरतो मैं तुम्हारे सामने खुली हज्जत पेश करता हूँ।²¹ وَأَنْ لَا تَعْلَوْا عَلَى اللَّهِ إِنِّي آتِيكُمْ بِسُلْطَنِ مُّبِينٍ ﴿١٩﴾
20. और मैं ने अपने और तुम्हारे रब की पनाह माँगी इस से कि तुम मुझे संगसार करो।²² وَإِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُمُونِ ﴿٢٠﴾
21. अगर तुम मेरी बात नहीं मानते तो मुझे छोड़ दो।²³ وَإِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوا لِي فَأَعْتَزَلُونِ ﴿٢١﴾
22. अन्ततः उस ने अपने रब से दुआ की कि ये लोग अपराधी हैं।²⁴ فَذَعَارَبْتَهُ أَنْ هُوَ لَكُمْ قَوْمٌ مَّجْرُمُونَ ﴿٢٢﴾
23. (हुक्म हुआ) मेरे बन्दों को ले कर रातों रात निकल जाओ।²⁵ तुम लोगों का पीछा किया जाएगा।²⁶ فَاسْرِبْ عِبَادِي لَيْلًا إِنَّكُمْ مُّتَّبِعُونَ ﴿٢٣﴾

13. नसीहत हासिल करने का अवसर स्पष्ट है क्रियामत के दिन बाकी नहीं रहेगा। और यह दलील है इस बात की कि कुर्आन जिस धुँएँ के अज़ाब का ज़िक्र कर रहा है वह क्रियामत के दिन का धुँवाँ है।

14. काफ़िरों का यह आरोप बिलकुल निराधार था। अगर पैग़म्बर के बारे में सचमुच वे यह समझ रहे थे कि कोई व्यक्ति उन्हें सिखा पड़ा रहा है तो उन्होंने उस व्यक्ति की निशानदेही क्यों नहीं की? और वह व्यक्ति आख़िर कैसा था जो आख़िरी समय तक छिपा रहा और यह ज़ाहिर नहीं किया कि इस महान ग्रंथ का लेखक मैं हूँ? रहा ख़बती होने का आरोप तो कुर्आन का अध्ययन करने वाला प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि इस में कितनी सच्चाई है। यह किसी दीवाने की बड़ है या हक़ीमाना कलाम?

15. यह वैसी ही बात है जैसी सूरह अनआम आयत २८ में इर्शाद हुई है।

وَلَوْ رَدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَانَّهُمْ لَكَاذِبُوْنَ-

अर्थ :- “अगर इन्हें (दुनिया की तरफ़) वापस भेज दिया जाए तो वे फिर वही करेंगे जिस से उन को मना किया गया था। वे निश्चय ही झूठे हैं।”

16. मुराद क्रियामत के दिन की पकड़ है और इस का समर्थन इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के उस मत से होता है जो तबरी ने उन से उद्धृत किया है।

“इकरिमा से रिवायत (उल्लिखित) है कि इब्ने अब्बास ने फ़रमाया इब्ने मसऊद कहते हैं *الْبَطْنَةُ الْكُبْرَى* से मुराद यौमे-बद्र (बद्र का दिन) है लेकिन मैं कहता हूँ कि मुराद क्रियामत का दिन है।” (तप्सीर तबरी जिल्द २५ पृष्ठ ७०)

17. फ़िरऔन की जाति का क्रिस्सा इस से पहले कई जगहों पर गुज़र चुका है। यहाँ उस के कुछ पहलू हालात की अनुकूलता को देखते हुए पेश किये गए हैं।

18. आजमाइश इस बात की कि सत्ता पा कर तुम कमज़ोरों के साथ क्या सुलूक करते हो तथा इस बात की कि

अल्लाह की तरफ़ से रसूल आ जाने और मोज़्ज़ों को देख लेने के बाद तुम उस के साथ क्या रवैया अपनाते हो।

19. अर्थात् बनी इस्राईल को मेरे साथ भेज दो कि मिस्त्र से चले जाएँ। वे अल्लाह के बन्दे हैं न कि फ़िरऔन के बन्दे और अल्लाह ने हुक्म दिया है कि इन को तुम मेरे हवाले कर दो ताकि इन्हें अल्लाह के आदेशनुपालन के लिए स्वतंत्र माहौल मिल जाए।

20. अमानतदार रसूल हूँ अर्थात् अल्लाह का संदेश तथा आदेश ठीक ठीक तुम्हें पहुँचा रहा हूँ। मेरे बारे में इस बात की आशंका नहीं हो सकती कि मैं कोई बात अपनी तरफ़ से अल्लाह की तरफ़ मंसूब कर के बयान करूँगा।

21. अर्थात् अपने रसूल होने की हुज्जत तात्पर्य मोज़्ज़ा (चमत्कार) है।

22. इस से अन्दाज़ा होता है कि फ़िरऔन की जाति ने हज़रत मूसा को संगसार करने का इरादा किया था और इस से यह भी अन्दाज़ा होता है कि हज़रत मूसा ने किस दृढ़ संकल्प और साहस का परिचय दिया था।

इस आयत में यह रहनुमाई भी है कि एक मोमिन को जब दुश्मन की तरफ़ से अत्याधिक खतरे की आशंका हो तो वह उस शर (खतरे) से अल्लाह की पनाह माँगे।

23. अर्थात् अगर तुम मेरी बात नहीं मानना चाहते तो न मानो लेकिन मेरी राह न रोको बल्कि मुझे अपने हाल पर छोड़ दो। परन्तु इतनी माकूल बात भी फ़िरऔन और उस की जाति के लिए स्वीकार्य नहीं हुई और वे हज़रत मूसा के विरुद्ध कार्रवाई करते रहे।

24. यह दुआ हज़रत मूसा ने उस समय की जब कि वे सुधार के निरंतर प्रयासों के बाद उन लोगों की ओर से निराश हो गए और उन्हें विश्वास हो गया था कि वे लोग अब ईमान लाने वाले नहीं ।

25. इशारा है इस बात की तरफ़ की फ़िरऔन की जाति के विनाश का फैसला हो चुका है। अतः तुम मेरे बन्दों अर्थात् बनी इस्राईल को ले कर रातों रात मिस्त्र से निकल जाओ।

26. व्याख्या के लिए देखिए सूरह “शुअरा” नोट ४९



24. और समुद्र को स्थिर छोड़ दो। ये लोग डूब जाने वाला लश्कर हैं।²⁷

وَأَتْرَكَ الْبَحْرَ رَهْوًا إِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّعْرِفُونَ ﴿٢٢﴾

25. उन्होंने ने कितने ही बाग और स्रोत छोड़े।

كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٢٥﴾

26. और खेत और उम्दा ठिकाने।

وَزُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٢٦﴾

27. और ऐश्वर्य सामग्री जिस में वे मजे कर रहे थे।²⁸

وَنَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَاكِهِينَ ﴿٢٧﴾

28. इस तरह हम ने उन के साथ मामला किया और इन चीजों का उत्तराधिकारी हम ने दूसरों को बनाया।²⁹

كَذَلِكَ وَأَوْرَثْنَاهَا قَوْمًا آخَرِينَ ﴿٢٨﴾

29. तो न आसमान उन पर रोया और न ज़मीन³⁰ और न उन को कोई मोहलत दी गई।

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ﴿٢٩﴾

30. और हम ने बनी इस्राईल को अपमानजनक अजाब से मुक्ति दी।

وَلَقَدْ بَعَثْنَا نَبِيَّ إِسْرَءِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿٣٠﴾

31. फिरऔन से³¹ जो हृद से गुज़र जाने वाले लोगों में से था³² और बड़ा ही उद्दण्ड था।³³

مِنْ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ كَانَ عَلِيًّا مِنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾

32. और हम ने उन को (बनी इस्राईल को) जानते हुए दुनिया वालों पर वरीयता दी।³⁴

وَلَقَدْ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٢﴾

33. और उन्हें ऐसी निशानियाँ प्रदान की जिन में खुली आजमाइश थी।³⁵

وَاتَيْنَاهُمْ مِنَ الْآيَاتِ مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُبِينٌ ﴿٣٣﴾

34. वे लोग³⁶ बड़ी दृढ़ता से कहते हैं

إِنَّ هَؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ﴿٣٤﴾

35. कि बस यह हमारी पहली मौत है³⁷ और इस के बाद हम उठाए जाने वाले नहीं हैं।

إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ﴿٣٥﴾

36. अगर तुम सच्चे हो तो ले आओ हमारे बाप दादा को।³⁸

فَأْتُوا بِآبَائِنَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٦﴾

37. (शक्ति और वैभव में) ये लोग बेहतर हैं या 'तुब्बअ' की जाति³⁹ और वे जातियाँ जो इन से पहले गुज़री⁴⁰ हम ने उन को विनष्ट कर दिया। वे बड़े अपराधी थे।

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ أَهْلَكْنَاهُمْ

إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾

27. हजरत मूसा द्वारा समुद्र पर लाठी मारने से समुद्र फट गया था और बनी इस्राईल के लिए चमत्कारिक रूप से रास्ता बन गया था ताकि वे समुद्र को पार कर सकें। इस मौके पर हजरत मूसा को हिदायत हुई कि वे जब बनी इस्राईल के साथ समुद्र पार कर चुकें तो इस को इसी हाल में रहने दें और दोबारा लाठी मार कर उस को मिलाने का इरादा न करें क्योंकि अल्लाह योजना यह है कि फिरऔन राह खुली देख कर अपने लश्कर के साथ उस में दाखिल हो और जब बीच समुद्र में पहुँच जाए तो अल्लाह तआला समुद्र के दोनों भागों को मिला दे (अर्थात् बीच के रास्ते को समाप्त कर दे) और ये सब डूब जाएँ!

28. व्याख्या के लिए देखिए सूरह “शुअरा” नोट ५२

29. व्याख्या के लिए देखिए सूरह “शुअरा” नोट ५३

30. अर्थात् फिरऔन और उस की जाति के विनाश पर न आसमान वालों को कोई अफसोस हुआ और न ज़मीन वालों को क्योंकि वे ज़ालिम थे और अपने विनाश के स्वयं जिम्मेदार।

31. अर्थात् फिरऔन बनी इस्राईल के लिए अज़ाब (स्थायी यातना का कारण) बन कर रह गया था और अज़ाब भी ऐसा जो अपमानित कर देने वाला था। परन्तु अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल पर जो एक मोमिन समूह था कृपा की और फिरऔन की जकड़बन्दियों से उन्हें मुक्त कर दिया।

इस घटना में ईमान वालों के लिए यह सबक है कि अगर वह किसी कारणवश ज़ालिम सत्ता की जकड़बन्दियों में फँस गए हों तो धैर्य और संयम के साथ ईमान के तक्राजों को पूरा करें। अल्लाह तआला उन के लिए बचाव एवं मुक्ति की राह खोल देगा।

32. अर्थात् नैतिक सीमाओं का उल्लंघन करने वाला था। दूसरे शब्दों में कदाचारी और ज़ालिम था।

33. अर्थात् जहाँ वह बन्दों के प्रति ज़ालिम था वहाँ वह अल्लाह का अवज्ञाकारी तथा बागी भी था।

34. अर्थात् दुनिया वालों की दीनी रहनुमाई और नेतृत्व के लिए बनी इस्राईल का जो चुनाव किया तो वह अल्लाह तआला ने अपने ज्ञान के आधार पर किया था अर्थात् उस को बनी

इस्राईल की सामर्थ्य शक्ति का ज्ञान था और संसार की जातियों में से उस जाति का चुनाव उचिततम चुनाव था।

35. तात्पर्य वे मोज़े हैं जो बनी इस्राईल के लिए इनाम की हैसियत रखते थे। जैसे उन के लिए समुद्र का फट जाना, बियाबान में बादलों का छाया बन जाना, खेतों का फूट बहना, मन्न और सलवा का उतरना आदि मगर इस में उन के धैर्य और संयम का इम्तिहान भी थी।

36. तात्पर्य मक्का के बहुदेववादी हैं।

37. अर्थात् पहली बार जो मौत आएगी वह ज़िन्दगी का आखिरी मरहला है और इस के बाद जीवन और मृत्यु का क्रम समाप्त हो जाता है।

38. अर्थात् अगर दूसरे जीवन की कोई वास्तविकता है तो इस के सबूत में गुजरे हुए लोगों को ज़िन्दा कर दिखाओ। जब हम अपनी आँखों से गुजरे हुए लोगों को अपने सामने जीवित देख लेंगे तो मरणोपरांत दूसरे जीवन पर विश्वास करेंगे।

उन की यह माँग बड़ी नादानी की माँग थी क्योंकि जिस चीज़ का ज्ञान मनुष्य को प्रत्यक्ष अनुभव के द्वारा हो गया वह चीज़ न ग़ैब (परोक्ष) की रह जाती है और न उस पर ईमान लाने का प्रश्न उठता है। फिर परीक्षा का क्या औचित्य रहा जब कि यह जीवन केवल परीक्षा का जीवन है।

39. “तुब्बअ” यमन के बादशाहों का लक़ब था जो सबा जाति के एक क़बीला “हिमैर” से सम्बन्धित थे और जिन का काल ईसा पूर्व का काल रहा है।

“क़त्बात में मलूक मुअीन और सबा के अहद (काल) में अर्थात् कम से कम हजार साल क़ब्ले मसीह (ईसा पूर्व) में लफ़ज़ “तुब्बअ” नज़र आता है (अर्जुलकुर्आन जिल्द १ पृष्ठ २९३)

उन के युग का ठीक ठीक निर्धारण करना मुश्किल है और उन के विस्तृत हालात जानने के लिए भी कोई प्रमाणित साधन नहीं है। अलबत्ता सूरह क़ाफ़ आयत १४ से स्पष्ट होता है कि “तुब्बअ” की जाति की तरफ़ भी रसूल भेजा गया था जिन को उस ने झुठलाया और अन्ततः अज़ाब से दोचार हुई।

40. अर्थात् आद, समूद जैसी गुमराह जातियाँ।



38. हम ने आसमान और ज़मीन और इन के बीच की चीज़ों को खेल के तौर पर नहीं बनाया है।⁴¹

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَإِیِّنٍ ۝۳۸

39. हम ने इन को सत्य (उद्देश्य) के साथ पैदा किया है मगर अधिकतर लोग जानते नहीं हैं।⁴²

مَا خَلَقْنَاهُمْ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَکِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا یَعْلَمُونَ ۝۳۹

40. फैसले का दिन,⁴³ इन सब के लिए निर्धारित समय है।

إِنَّ یَوْمَ الْفَصْلِ مِیقَاتُهُمْ أَجْبَعِیْنَ ۝۴۰

41. जिस दिन कोई निकटस्थ सम्बन्धी किसी निकटतम सम्बन्धी के काम न आएगा और न उन की कोई मदद की जाएगी।

یَوْمَ لَا یُنْفَعُ مَوْلًی عَنْ مَوْلًی شَیْئًا وَلَا هُمْ یُنصَرُونَ ۝۴۱

42. सिवाए इस के कि अल्लाह ही किसी पर रहम करे।⁴⁴ निस्संदेह वह बड़ा ज़बरदस्त रहम फ़रमाने वाला है।⁴⁵

إِلَّا مَنْ رَحِمَ اللَّهُ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِیزُ الرَّحِیْمُ ۝۴۲

43. निस्संदेह ज़क्रूम⁴⁶ (थूहड़) का वृक्ष।

إِنَّ شَجَرَتَ الرَّقُومِ ۝۴۳

44. गुनहगारों⁴⁷ का खाना होगा।

طَعَامُ الْآثِمِ ۝۴۴

45. गोया पिघली हुई धातु, वह पेट में खौलेगा।⁴⁸

كَالْمُهْلِ یَغْلِیْ فِی الْبُطُونِ ۝۴۵

46. जैसे गर्म पानी खौलता है।⁴⁹

کَغَلَى الْحَبِیْمِ ۝۴۶

47. पकड़ो इस को⁵⁰ और घसीटते हुए जहन्नम के बीचो बीच ले जाओ।

خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَى سَوَاءِ الْحَحِیْمِ ۝۴۷

48. फिर इस के सर पर खौलते पानी का अज़ाब उंडेल दो।

ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَبِیْمِ ۝۴۸

49. चखो इस का मज़ा, तू बड़ा ज़बरदस्त और प्रतिष्ठा वाला आदमी है।⁵¹

ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِیزُ الْکَرِیْمُ ۝۴۹

50. यह वही चीज़ है जिस के बारे में तुम शक में पड़े हुए थे।⁵²

إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۝۵۰

51. अलबत्ता अल्लाह से डरने वाले⁵³ शान्ति स्थल में होंगे।⁵⁴

إِنَّ الْمُتَّقِیْنَ فِی مَقَامٍ أَمِیْنٍ ۝۵۱

41. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अम्बिया नोट १६
42. अर्थात् इस कायनात के पैदा करने का एक उद्देश्य और एक लक्ष्य है और वह है इनाम और दण्ड का मामला तथा मानवता की क्रीम को छोट कर उसे सदा सर्वदा की सफलता और जन्नत की कभी न खत्म होने वाली नेमतों से अलंकृत करना। परन्तु अधिकांश लोगों का हाल यह है कि वे अपने पैदाइश के मकसद ही से बेखबर हैं और उन्हें इस बात की कोई चिन्ता नहीं कि अपने जीवन के उद्देश्य को मालूम करें।
43. अर्थात् क्रियामत का दिन ।
44. क्रियामत के दिन न रिशते काम आएंगे और न दोस्ती बल्कि बच जाने का सारा मामला अल्लाह की दया और कृपा पर आश्रित होगा और अल्लाह का यह फैसला है कि वह काफ़िरों पर दया नहीं करेगा इस लिए कोई व्यक्ति कुफ़र करते हुए अल्लाह से दया की आशा न रखे ।
45. अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त है इस लिए जिस को वह अपने अज़ाब की पकड़ में लेना चाहे वह उस से बच नहीं सकता। और वह दयावान है इस लिए जिस पर वह दया करना चाहे तो कोई नहीं है जो उस को दया करने से रोक सके।
46. व्याख्या के लिए देखिए सूरह साफ़ात नोट ५१
47. मुराद काफ़िर हैं जैसा कि आगे आयत ५० से स्पष्ट है।
48. अर्थात् ज़क्रूम खाने के बाद उन का हाल ऐसा होगा जैसे पेट में पिघली हुई धातू उबल रही हो।
49. अर्थात् ज़क्रूम पेट में गरम पनी की तरह जोश खा रहा होगा।
50. यह आदेश फ़रिश्तों को होगा।
51. यह कटाक्ष है कि तू अपने को बड़ा शक्तिशाली और प्रतिष्ठावान आदमी समझता था हालाँकि तूने उदण्ड बन कर

नीच हरकतें की थी। अब चख अपने करतूतों का मज़ा। और देख आज तू कैसा बेबस और ज़लील है।

52. क्रियामत और कर्मफल का इन्कार करना ही नहीं बल्कि इस के बारे में शक करना भी बहुत बड़ा अपराध है क्यों कि शक में पड़ कर भी आदमी दुनिया ही को अपना जीवन लक्ष्य बना लेता है और अल्लाह का नाफ़रमान अवज्ञाकारी बन कर मनमानी करने लगता है इस लिए कर्म की दृष्टि से आखिरत के इन्कारी और इस में शक करने वालों के बीच कोई अन्तर नहीं रहता अतः दोनों उचित रूप से जहन्नम की सज़ा के हक़दार हैं।

53. गुनहगारों और आखिरत के बारे में संदेह करने वालों की तुलना में अल्लाह पर विश्वास करने तथा उस से डरने वालों का अन्जाम बयान किया जा रहा है। जिस से यह बात आप से आप स्पष्ट हो जाती है कि मुत्तकी अर्थात् अल्लाह का डर रखने वाले लोग हैं जो आखिरत के आने का दृढ़ विश्वास रखते हैं और जिन के जीवन अल्लाह के अनुपालन में व्यतीत होते हैं।

54. अर्थात् जहाँ किसी भी तरह का भय और ख़तरा नहीं होगा। मुराद जन्नत है। हदीस में आता है कि जन्नत में यह एलान कर दिया जाएगा कि :-

أَنَّ لَكُمْ أَنْ تَصْحُوا فَلَا تَسْقُمُوا أَبَدًا وَأَنَّ لَكُمْ أَنْ تَحْيُوا فَلَا تَمُوتُوا أَبَدًا، وَأَنَّ لَكُمْ أَنْ تَشْبُوا فَلَا تَهْرُؤُوا أَبَدًا. وَأَنَّ لَكُمْ أَنْ تَنْعَمُوا فَلَا تَبَاسُوا أَبَدًا. (مسلم کتاب الجنة)

अर्थ:- “तुम्हारे लिए यह बात बिलकुल तय है कि तुम स्वस्थ रहोगे, कभी बीमार न पड़ोगे, तुम ज़िन्दा रहोगे, कभी न मरोगे, तुम जवान रहोगे कभी बूढ़े न होगे और तुम ऐश में रहोगे कभी तुम्हें तकलीफ़ नहीं पहुँचेगी।” (मुस्लिम किताबुल जन्नह)



52. बाग़ों और ख़ेतों में।

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٢﴾

53. बारीक और मोटे रेशम के लिबास पहने आमने सामने बैठे होंगे।

يَلْبَسُونَ مِنْ سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾

54. इस तरह वे सरफ़राज़ किये जाएंगे, और सुन्दर आँखों वाली हूरों से हम उन का विवाह कर देंगे।⁵⁵

كَذَلِكَ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾

55. वहाँ वे इत्मीनान से हर तरह के मेवे तलब करेंगे।

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾

56. पहली मौत के बाद वे किसी मौत का मज़ा नहीं चखेंगे,⁵⁶ और अल्लाह उन्हें जहन्नम की यातना से सुरक्षित रखेगा।

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ وَوَقَّاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾

57. यह तुम्हारे रब के उदार अनुग्रह (फ़ज़ल) से होगा।⁵⁷ यही है बड़ी कामयाबी।⁵⁸

فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٥٧﴾

58. हम ने (ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारी भाषा में इसे आसान बना दिया है ताकि लोग नसीहत हासिल करें।⁵⁹

وَأَنَّمَا يَسَّرْنَاهُ لِبَلْسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

59. अब तुम भी इन्तिज़ार करो। वे भी इन्तिज़ार करते हैं।⁶⁰

فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُونَ ﴿٥٩﴾

55. हूर अरबी में गोरी रंगत वाली मृगनयन स्त्रियों अर्थात् हिरनों जैसी आँखों वाली औरतों को कहा जाता है। यहाँ जन्नत की हसीन और सुन्दर औरतें अभिप्रेत हैं जो मुत्तकियों से ब्याह दी जाएगी। कुर्आन में यह कहीं नहीं कहा गया है कि यह कोई और तरह की सृष्टि होगी इस लिए इस का ज़ाहिरी भावार्थ यही है कि ये इन्सानों में से होंगी। और असंभव नहीं कि जो कुँवारी लड़कियाँ मृत्यु पा गई उन को हूर बना कर मुत्तकियों से ब्याह दिया जाए। कुर्आन के बयान से यह भी मालूम होता है कि ईमान वालों को उन की मोमिन पत्नियाँ तो जन्नत में मिलेंगी ही अतिरिक्त यह कि हूरों से भी उन का ब्याह कर दिया जाएगा। बेहतर ज्ञान अल्लाह ही को है।

रह गई बात उस आम ख्याल की कि जन्नत में एक एक आदमी को सत्तर सत्तर बल्कि उन से भी अधिक संख्या में हूरें मिलेंगी तो इस की कोई असल नहीं, कोई प्रमाणिकता नहीं। न कुर्आन में कही यह बात कही गई है और न किसी सही हदीस से यह साबित है। ऐसी बातें कहानीकार लोग बयान करते हैं और जन्नत का मज़ाक उड़ाने वाले इस को बहस का मुद्दा बना लेते हैं।

56. अर्थात् दुनिया में जो पहली मौत होगी उस के बाद उन के लिए अबदी (हमेशा) जीवन है। मृत्यु का इन्हें कभी सामना करना नहीं पड़ेगा।

57. जहन्नम के अज़ाब से सुरक्षित होने यद्यपि ईश-भय और परहेज़गारी के आधार पर होगा। परन्तु यह सरासर अल्लाह ही के फ़ज़ल (उदार अनुग्रह) से होगा। उस के फ़ज़ल के बग़ैर जन्नत में पहुँचना किसी के बस की बात नहीं।

58. जहन्नम के अज़ाब से बचना और जन्नत में दाखिल होना सब से बड़ी सफलता है। जो लोग इस को वास्तविक सफलता समझते हैं वे इस की प्राप्ति के लिए हर तरह का बलिदान देने के लिए तैयार हो जाते हैं।

59. अर्थात् कुर्आन को अरबी भाषा में उतारा गया है जो कुर्आन के पैग़म्बर और उन की जाति की अपनी भाषा है तथा

उसे अत्यधिक सरल और सब के समझ में आने वाली शैली में प्रस्तुत किया गया है ताकि लोग नसीहत का लाभ उठा सकें। कुर्आन की यह प्रमुख विशेषता है कि वह गूढ़ विषयों को जो कायनात के रहस्यों, मनुष्य की आन्तरिक मनःस्थितियों, रूहानी मामलों और क्रियामत के हालात से सम्बन्धित होते हैं, इतने सरल और सुगम ढंग से प्रस्तुत करता है कि उन का मूल भाव एक साधारण मनुष्य के लिए भी (यदि वह साफ़ ज़ेहन का हो) समझना और उस से नसीहत हासिल करना जो कुर्आन का पहला मन्शा है, कुछ भी मुश्किल नहीं। नसीहत का यह लाभ अरबी न जानने वाले कुर्आन के अनुवाद से भी बशर्ते कि अनुवाद सही हो, प्राप्त कर सकते हैं।

وَلَقَدْ يَسْرَنَ الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ

مِنْ مُدْكِرٍ - (मू. २२)

अर्थ:- “ हम ने कुर्आन को ज़िक्र (नसीहत प्राप्त करने) के लिए आसान कर दिया है। तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला ? ” (सूरह क्रम २२)

यह आयत सूरह क्रम की आयत की तफ़्सीर (व्याख्या) करती है और इस से “ज़िक्र” का यह अर्थ कि नसीहत और याददेहानी हासिल करना है सुनिश्चित हो जाता है। अतः जिन आलिमों ने इस सरल, सुगम और सुबोध अर्थ को छोड़कर मात्र शाब्दिक अर्थ के सहारे इस का अर्थ हिफ़ज़ अर्थात् ज़बानी याद (कंठ) करना लिया है अर्थात् कुर्आन हिफ़ज़ (कंठ) करने के लिए आसान बना दिया गया है तो इस आयत से इस व्याख्या का खण्डन हो जाता है।

60. अर्थात् इस नसीहत के बाद भी अगर ये लोग आखिरी अन्जाम के ही प्रतीक्षित हैं तो तुम भी उन को इन के हाल पर छोड़ दो और प्रतीक्षा करो, हालात खुद बता देंगे कि कुर्आन और पैग़म्बर ने जो कुछ कहा था वह किस तरह सच साबित हुआ।



सूरह अल्-जासिया

४५. सूरह अल्-जासिया

नाम :- आयत २८ में क्रियामत के दिन प्रत्येक समूह के जासिया अर्थात् घुटनों के बल गिरे हुए होने का वर्णन हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल्-जासिया है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि सूरह दुखान के बाद करीबी ज़माने में अवतरित हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- तौहीद और आखिरत की निशानियों की तरफ़ ध्यानकर्षित करते हुए इन्कार करने के परिणाम से सावधान करना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ६ में तौहीद की निशानियों की ओर ध्यानकर्षित किया गया है, जिन की ओर कुर्आन बुला रहा है।

आयत ७ से १५ में अल्लाह की आयतों को सुनने से इन्कार करने वालों को उस के आखिरत में प्रकट होने वाले अन्तिम परिणाम से सावधान कर दिया गया है और ईमान वालों को हिदायत की गई है कि वे उन से दरगुज़र करें।

आयत १६ से २० में बनी इस्राईल को चेतावनी कि उन्होंने ने दीन (जीवन प्रणाली) की नेमत पाने के बाद उस में विभेद किया और यह हिदायत कि अब जो शरीअत उतारी जा रही है उस का अनुपालन किया जाए।

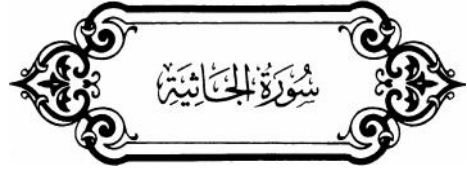
आयत २१ से ३५ में हिसाब के दिन के बारे में कुछ एतिराज़ों का जवाब और संदेहों का निदान रखा गया है।

आयत ३६ और ३७ सूरह की आखिर की आयतें हैं जिन में अल्लाह की प्रशंसा बयान हुई है।

४५. सूरह अल-जासिया

आयतें : ३७

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा - मीम ¹।

حَمْدٌ

2. इस किताब का अवतरण अल्लाह की तरफ़ से है, ² जो प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ②

3. आसमानों और ज़मीन में बड़ी निशानियाँ हैं ईमान लाने वालों के लिए।³

إِنَّ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّلْمُؤْمِنِينَ ③

4. और तुम्हारी पैदाइश में और इन जानवरों में जो उस ने फैला रखे हैं निशानियाँ हैं विश्वास करने वालों के लिए।⁴

وَفِي خُلُقِكُمْ وَمَا يَدُتُّ مِنْ دَابَّةٍ آيَاتٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ④

5. और रात और दिन के आने जाने में तथा उस रिज़क़ (रोज़ी) में जिसे अल्लाह आसमान से उतारता है फिर उस से ज़मीन को उस के निर्जीव हो जाने के बाद जीवित कर देता है, और हवाओं की गर्दिश में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लें।⁵

وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ رِّزْقٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيفِ الرِّيحِ آيَاتٌ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ⑤

6. ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम्हें सत्य के साथ सुना रहे हैं।⁶ अब अल्लाह और उस की आयतों के बाद वह कौन सी बात है जिस पर ये लोग ईमान लाएंगे।⁷

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ تَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَ اللَّهِ وَآيَاتِهِ يُؤْمِنُونَ ⑥

7. तबाही है प्रत्येक झूठे गुनहगार व्यक्ति के लिए।⁸

وَيْلٌ لِّكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ⑦

8. जो अल्लाह की आयतों को जो कि उस के सामने पढ़ी जाती हैं सुनता है फिर अहं के साथ (अपने कुफ़्र) पर हट करता है, जैसे कि उस ने उन को सुना ही नहीं तो ऐसे व्यक्ति को दुखदायिनी यातना की ख़ुशख़बरी दे दो।⁹

يَسْمَعُ آيَاتُ اللَّهِ تَتْلَى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا ⑧
كَأَنَّمْ يَسْمَعُهَا فَبَشِيرَةٌ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ⑨

1. इन अक्षरों की व्याख्या के लिए देखिए सूरह मोमिन नोट. १

इस सूरह में “ह” “मीम” का इशारा अल्लाह के हकीम (हिकमत वाला) होने की तरफ़ है जिस का जिक्र आयत २ में हुआ है।

2. कुर्आन बार बार पुष्टि करता है कि यह किताब अल्लाह ने अपने पैगम्बर (संदेशवाहक) पर नाज़िल की है ताकि लोगों के लिए शक की गुन्जाइश बाकी न रहे और वे इस किताब के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी महसूस करें।

3. अर्थात् जो लोग अल्लाह की ओर आकर्षित करने वाली निशानियों को देख कर ईमान लाने के लिए तैयार हों उन के लिए आसमान और ज़मीन में बड़ी बड़ी निशानियाँ मौजूद हैं। कुर्आन उन निशानियों को विस्तार के साथ बयान करता है ताकि लोग सोचें और विचार करें। आगे कुछ निशानियों का जिक्र हुआ है।

आयत से यह इशारा भी निकलता है कि ईमान अन्तर्मन से उठने वाली एक भावना है जो आसमान और ज़मीन की सृष्टि पर विचार करने तथा उस की विचित्रता को अनुभूत करने से मनुष्य के अन्दर उत्पन्न हो जाती है। यदि मनुष्य अपने स्वभाविक प्राकृति पर जमा हो तो आसमान और ज़मीन को देख कर उस का अन्तर्मन स्वयं पुकार उठेगा कि यह एक

खुदा (सृष्टा) की कारीगरी है और वही सच्चा पूज्य है।

4. इन निशानियों पर चिन्तन करने से अल्लाह के परिचय का वह मार्ग प्रशस्त होता है जो उस के एक मात्र पूज्य होने का दृढ़ विश्वास पैदा करता है।

5. अर्थात् इन निशानियों पर विचार करने से जहाँ ईमान और विश्वास पैदा होता है वहाँ मन और मस्तिष्क भी अल्लाह के एकमात्र होने पर संतुष्ट हो जाता है।

6. अर्थात् अल्लाह की ये आयतें तुम्हें इस तरह सुनाई जा रही हैं कि वे हर प्रकार की मिलावट से पाक हैं। इन का एक एक शब्द अल्लाह तआला का अपना कलाम है और इस के द्वारा सत्य बिलकुल स्पष्ट हो कर सामने आ रहा है।

7. अर्थात् जब अल्लाह का अस्तित्व एक खुली वास्तविकता है और उस की आयतों ने उस के अस्तित्व और उस के एकमात्र होने को और स्पष्ट कर दिया है तो इन के ईमान लाने के लिए अतिरिक्त किस दलील की आवश्यकता शेष रह जाती है।

8. खुदा के बारे में जो व्यक्ति झूठ बोलता है उस का जीवन निश्चित रूप से गुनाह का जीवन होता है।

9. दुखदायिनी यातना कोई खुशखबरी नहीं है किन्तु इस को खुशखबरी इस लिए कहा गया है ताकि काफ़िर चौंक पड़े और होश में आ जाए।



9. हमारी बातों में से कोई बात उस के ज्ञान में आती है तो वह उस को मज़ाक बना लेता है। ऐसे लोगों के लिए अपमान की यातना है।

وَإِذَا عَلِمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَهَا هُزُوًا أُولَٰئِكَ لَهُمْ
عَذَابٌ مُّهِينٌ ④

10. उन के आगे नरक है।¹⁰ जो कुछ उन्होंने कमाया है ¹¹ वह उन के कुछ भी काम आने वाला नहीं और न वे उन के काम आएंगे जिन को उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर संरक्षक बना रखा है।¹² उन के लिए बहुत बड़ी यातना है।

مِنْ دُونِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَسْبُهُمْ شَيْئًا وَلَا مَا اتَّخَذُوا
مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ⑤

11. यह सरासर हिदायत है।¹³ और जिन लोगों ने अपने रब की आयतों का इन्कार किया उन के लिए कठोर दुखदायिनी यातना है।

هَٰذَا هُدًى وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ
عَذَابٌ مِّن رَّحْمَةِ اللَّهِ ⑥

12. अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए समुद्र को वशीभूत कर दिया ¹⁴ ताकि उस के हुक्म से उस में नौकाएँ चलें और तुम उस का फ़ज़ल तलाश करो ¹⁵ और ताकि तुम उस के शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) हो।

اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لَتَجْرَىٰ الْفُلُكُ فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا
مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ⑦

13. और उस ने आसमानों और ज़मीन की समस्त वस्तुओं को अपनी ओर से तुम्हारी सेवा में लगा रखा है।¹⁶ इस में निस्संदेह निशानियाँ हैं ¹⁷ उन लोगों के लिए जो चिन्तन मनन करें।

وَسَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِّنْهُ إِنَّ
فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ⑧

14. ईमान लाने वालों से कहो कि वे उन लोगों से दरगुज़र करें जो अल्लाह की तरफ़ से प्रकट होने वाले इबरतनाक दिनों का भय नहीं रखते। ताकि अल्लाह एक समूह को उस की कमाई का जो वह करती रही है बदला दे।¹⁸

قُلْ لِلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُ اللَّهُ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ⑨

15. जो कोई नेक अमल करेगा वह अपने ही लिए करेगा और जो बुराई करेगा उस का वबाल उसी पर होगा।¹⁹ फिर तुम अपने प्रभु की ओर ही लौटाए जाओगे।²⁰

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ
وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ⑩

16. हम ने बनी इस्राईल को किताब, और हिकमत (तत्वदर्शिता) और नुबुव्वत प्रदान की थी।²¹ उन को हम ने पाक रोज़ी प्रदान की थी ²² और दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) प्रदान की थी।²³

وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَٰءِيلَ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَاهُمْ
مِّنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ⑪

10. अर्थात् भविष्य के जीवन में उन को नरक से पाला पड़ने वाला है।

11. कमाने में धन दौलत भी शामिल है और कर्म भी।

12. चाहे वे बुत हों देवी देवता हों, फ़रिश्ते हों या बुजुर्ग हस्तियाँ जिन की श्रद्धा में वे इस प्रकार लिप्त हैं जिस तरह अल्लाह से श्रद्धा होनी चाहिए और जिन से वे ऐसी आशाएँ बाँधे हुए हैं जो अल्लाह ही से बाँधी जा सकती हैं।

13. अर्थात् यह कुर्आन।

14. वशीभूत कर दिया अर्थात् तुम्हारी सेवा में लगा दिया। यह उसी का बनाया हुआ भौतिक नियम है कि समुद्र में नौकाएँ और बड़े बड़े जहाज़ खड़े होते हैं और डूबते नहीं वरना एक पत्थर भी फेंका जाए तो डूब जाता है।

15. तात्पर्य व्यापारिक सफ़र हैं जो कमाई का साधन हैं। आजीविका उपार्जन अर्थात् कमाई को अल्लाह का फ़ज़ल कहा गया है क्योंकि यह अल्लाह की रूबूबियत (पालनकारी) ही है जो मनुष्य को कमाई की सामग्री प्रदान करती है जिस पर उस का शुक्र वा उस का आभार अनिवार्य है।

व्यापार और कारोबार एक मोमिन भी करता है और एक काफ़िर भी किन्तु दोनों के सोचने का अन्दाज़ मौलिक रूप से अलग होता है। एक मोमिन समझता है कि मेरी दौड़ धूप अल्लाह के फ़ज़ल की तलाश में है कि उस ने अपने फ़ज़ल से जो रोज़ी उपलब्ध की है उसे मैं प्राप्त कर के उस की नेमत का क्रद्रदान बन जाऊँ। इस के विपरीत एक काफ़िर समझता है कि मुझे अपनी रोज़ी अपनी योग्यता के आधार पर प्राप्त करना है। फिर जो कुछ प्राप्त होता है उस को वह बस अपनी मेहनत का नतीजा समझता है।

16. अर्थात् सब चीज़ें उसी की पैदा की हुई हैं और तुम्हारी सेवा में भी उसी ने लगा रखी हैं। उस के सिवा न कोई किसी चीज़ का पैदा करने वाला है और न काम में लगाने वाला।

17. ये निशानियाँ जिन की ओर मनुष्य का ध्यान खींचा गया है खुदा की पहचान (मारिफ़त) प्रदान करने और उस से सही सम्बन्ध पैदा करने का उत्तम महत्वपूर्ण साधन हैं और प्रत्येक व्यक्ति कुर्आन की रहनुमाई में इन निशानियों में चिन्तन मनन कर के उन परिणामों तक पहुँच सकता है जो कुर्आन उस के सामने प्रस्तुत कर रहा है। ये निशानियाँ प्रत्येक साधारण व असाधारण की समझ में आने वाली तथा दिल को अपील करने वाली हैं। इन के मुकाबले में खुदा के अस्तित्व आदि पर तार्किक प्रमाण छोटे और बड़े गढ़ कर प्रस्तुत किये जाते हैं वे न साधारण मनुष्यों की समझ में आने वाले होते हैं और न वे इतने प्रभावकारी होते हैं।

18. “अय्यामुल्लाह” से मुराद वे ऐतिहासिक दिन हैं

जिन में अल्लाह तआला ने अपराधी जातियों को इबरतनाक सजाएँ दीं। ऐसी सजाएँ आगे भी उन लोगों को मिल सकती हैं जो अपराधी जातियों के पदचिन्हों पर चलें। परन्तु जो लोग अपनी अपराधिक गति विधियों के बावजूद इस प्रकार का कोई भय नहीं रखते और ईमान वालों को कष्ट पहुँचाते रहते हैं उन की कष्टदायक हरकतों से दरगुज़र करने की हिदायत की गई है। ताकि अल्लाह तआला स्वयं उन को उन के किये की सज़ा दे।

एक तरफ़ कुर्आन की यह हिदायत है और दूसरी तरफ़ मौजूदा मुसलमानों का यह रवैया है कि वे काफ़िरों द्वारा पहुँचाए जाने वाले हर कष्ट पर झुंझलाहट में लिप्त हो जाते हैं और विरोध स्वरूप आंदोलन चलाने को तैयार हो जाते हैं।

ध्यान रहे कि दरगुज़र की इस हिदायत पर अमल करने का भी एक मौका होता है। और काफ़िरों से युद्ध करने का भी एक समय होता है। दोनों में कोई विरोधाभास नहीं और कोई कारण नहीं कि इस आयत को उन आयतों से जिन में युद्ध द्वारा उन्हें मारने का आदेश दिया गया है। निरस्त माना जाए।

19. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हा मीम अस्सज्दा नोट ७।

20. अर्थात् जहाँ से तुम्हारी शुरुआत हुई थी, वहीं तुम लौटाए भी जाओगे। तुम्हारी पैदाइश की शुरुआत तुम्हारे रब की तरफ़ से हुई थी अतः तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे। न किसी और ने तुम्हें पैदा किया है और न किसी और की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे।

21. बनी इस्राईल को तौरात, ज़बूर और इन्जील जैसी किताब प्रदान की गई। साथ ही हिकमत (तत्त्वदर्शिता) अर्थात् अल्लाह की किताब की समझ और सीख प्रदान की गई ताकि वे व्यवहारिक जीवन में उस से रहनुमाई प्राप्त करें और उन में नबियों का सिलसिला चलाया।

22. अर्थात् पाक़ीज़ा और हलाल रोज़ी के दरवाज़े उन पर खोल दिए थे। मिस्र में तो उन्हें मज़लूम जीवन बिताना पड़ा था किन्तु उस माहौल से निकलने के बाद जो स्वतंत्र वातावरण उन को मिला और फिर फ़लस्तीन में उन्हें सत्ता प्राप्त हुई तो हराम में लिप्त होने के लिए उन्हें कोई विवशता नहीं रही। शरीअत की सीमा में रह कर पाक रोज़ी की प्राप्ति उन के लिए आसान हो गई थी।

23. अर्थात् दूसरी जातियों की तुलना में इस जाति को सत्य धर्म की ओर दअवत देने और दुनिया वालों की रहनुमाई के लिए चुना गया। यह बहुत बड़ा सम्मान था जो बनी इस्राईल को प्रदान किया गया और इस उद्देश्य के लिए बैतुल मुक़द़स को इस्लामी दअवत का केन्द्र बनाया गया।

17. उन्हें दीन के मामले में स्पष्ट आदेश दिए तो उन्होंने ने जो विभेद किया वह ज्ञान आ जाने के बाद किया, केवल आपस में एक दूसरे के विरुद्ध ज़्यादाती के आधार पर, निस्संदेह तुम्हारा रब क्रियामत के दिन उन के बीच उन बातों का फैसला कर देगा जिन में वे विभेद करते रहे हैं।²⁴

وَأَيُّهُمْ يَتَذَكَّرُ مِنَ الْأَمْرِ فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ
الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ①

18. फिर हम ने तुम को एक स्पष्ट शरीअत पर क़ायम किया अतः तुम उस का अनुपालन करो और उन लोगों की इच्छाओं के पीछे न चलो जो ज्ञान नहीं रखते।²⁵

ثُمَّ جَعَلْنَاكَ عَلَىٰ شَرِيعَةٍ مِنَ الْأَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ
الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ②

19. यह लोग अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे कुछ भी काम आने वाले नहीं हैं।²⁶ ये ज़ालिम एक दूसरे के साथी हैं और अल्लाह मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) का साथी है।

إِنَّهُمْ لَنْ يَنْفَعُوا عَنكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَإِنَّ الظَّالِمِينَ بَعْضُهُمْ
أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ③

20. ये लोगों के लिए बसीरत (सूझ बूझ) की बातें हैं।²⁷ और हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो यक़ीन करें।

هَذَا ابْصَارُ الْبَشَرِ لَهْدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ④

21. क्या वे लोग जिन्होंने ने बुराइयां की हैं यह समझते हैं कि हम उन्हें उन लोगों के जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और जिन्होंने ने सुकर्म किये कि उन का जीना और मरना एक जैसा हो जाए? ²⁸ बहुत बुरा फैसला है जो वे कर रहे हैं।²⁹

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ
أَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
سَوَاءً عَمَلُهُمْ وَمِمَّا أَمْسَأَهُمْ مَا يُحْكُمُونَ ⑤

22. अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को (उद्देश्य) सत्य के साथ पैदा किया है।³⁰ और इस लिए पैदा किया है ताकि प्रत्येक व्यक्ति को उस की कमाई का बदला दिया जाए ³¹ और उन के साथ नाइन्साफ़ी कदापि नहीं की जाएगी।³²

وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
بِالْحَقِّ وَلِيُخْرِجَ كُلَّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ⑥

23. क्या तुम ने उस व्यक्ति को देखा जिस ने अपनी इच्छा को अपना पूज्य बना लिया है? ³³ और अल्लाह ने उसे जानते हुए गुमराह कर दिया ³⁴ और उस के कान और दिल पर मुहर लगा दि और उस की आँखों पर परदा डाल दिया।³⁵ अब कौन है जो अल्लाह के बाद उसे हिदायत दे? ³⁶ फिर क्या तुम लोग होश में नहीं आते? ³⁷

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ اللَّهُ عَلَىٰ عِلْمٍ وَخَتَمَ عَلَىٰ
سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِ عَشْرَةَ غَشَاهٍ مَنْ يَهْدِيهِ
بَعْدَ اللَّهِ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ⑦

24. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आले इमरान नोट २७, २८ और सूरह हा मीम अस्सज्दा नोट ६८ और सूरह यूनस नोट १४४

बनी इस्राईल के जिस विभेद का उल्लेख कुर्आन करता है वह कुर्आन का अनुपालन करने वालों के लिए इब्रत का पाठ है परन्तु इस के बावजूद मुसलमानों ने बनी इस्राईल का सा रवैया अपना रखा है। उन के सामने कुर्आन के स्पष्ट आदेश और उस के रसूल का प्रामाणिक तरीका मौजूद है फिर भी वे वर्गों एवं समूहों में बंट गए हैं और एक दूसरे के विरोध में दीन की मनमानी व्याख्या कर रहे हैं। अन्धानुकरण एवं आस्था के बन्धनों से मुक्त और वर्गीय वैमनस्य से पाक हो कर कुर्आन और सुन्नत का अध्ययन करने वाले और उस की रौशनी में चलने वाले मुसलमान मुश्किल से नज़र आते हैं वरना मुसलमानों की सोसाइटी में बहुतेरी बिदअतें प्रचालित हो गई हैं और वे बुरी तरह इच्छाओं के पीछे चलने में अन्धे हुए हैं।

25. अर्थात् जो शरीअत अब तुम्हें कुर्आन के माध्यम से दी जा रही है उस का अनुपालन करो और इस को छोड़कर अहले-किताब के तौर तरीकों का अनुपालन न करो जो उन्होंने ने अपनी इच्छाओं से गढ़ रखे हैं और जो दीन में बिदअत की हैसियत रखते हैं।

26. यह चेतावनी है कि यदि तुम ने कुर्आन की शरीअत (संविधान) को छोड़ कर अहले किताब (यहूदियों और ईसाईयों) की मनगढ़ंत बातों का अनुपालन किया तो क्रियामत के दिन वे तुम्हें अल्लाह की पकड़ से बचा न सकेंगे।

27. बसीरत (सूझ बूझ) की बातें हैं अर्थात् ज्ञान की रौशनी में लाने वाली बातें हैं।

28. व्याख्या के लिए देखिए सूरह सौद नोट ३९

29. यह बड़ी नामाकूल और अन्याय की बात है कि कुकर्मियों को सुकर्मियों के स्तर पर रखा जाए और यह समझा जाए कि जो रवैया भी आदमी अपनाए अल्लाह की नज़र में एक जैसा है। वह न तो बुराई और ज़ुल्म करने वालों का कोई नोटिस लेता है और न नेकी और भलाई करने वालों से खुश होता है। और न उन्हें उन के कर्मानुसार अच्छा या बुरा बदला देता है।

30. इस की व्याख्या सूरह दुखान नोट ४२ में गुजर चुकी।

31. यह है वह सच्चा मक़सद जिस के लिए कायनात को पैदा किया गया है। अगर कर्मानुसार बदले का मामला पेश आने वाला न होता तो फिर इस कायनात का कोई उद्देश्य बाक़ी न रहता। जो लोग कर्मफल के इस दिन का इन्कार करते हैं वे इस कायनात का कोई उद्देश्य वा कोई औचित्य सुनिश्चित नहीं कर

पाते। यह कितने दुख की बात है कि मनुष्य अपनी और कायनात की सृष्टि ही के बारे में अंधेरे में रहे और इस तरह जीवन बिताए कि उसे कुछ ख़बर नहीं कि आगे क्या पेश आने वाला है और उस के लिए क्या तैयारी करना है। उस व्यक्ति की असफलता में क्यों संदेह रह जाता है जो परीक्षा स्थल को क्रीड़ा स्थल व मनोरंजन स्थल समझता है ?

32. स्पष्ट हुआ कि काफ़िरों को जो कड़ी और सदा सर्वदा की सज़ा दी जाएगी वह बिलकुल न्याय पर आधारित होगी। इसे अन्याय वही लोग कहेंगे जो उस संतुलित एवं उचित न्याय व्यवस्था से अनभिज्ञ हैं जो इस कायनात में स्थापित कर दी गई है।

وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ. (الرحمن: ८)

अर्थ :- “आसमान को उस ने बुलन्द किया और तुला स्थापित की।” (अर-रहमान-७)

33. व्याख्या के लिए देखिए सूरह फ़ुर्क़ान नोट ५७

ज्ञान और बुद्धि तथा अल्लाह की वहुय (प्रकाशना) को छोड़ कर अपनी इच्छाओं के पीछे चलना यह बिलकुल ऐसा ही है जैसे कि उन की पूजा करना। इस लिए उन्हें पूज्य बनाना कहा गया है वरना अपनी इच्छाओं की पूजा कोई नहीं करता। अल्लामा आलूसी ने इस आयत की तफ़सीर इस तरह की है :-

“यह इज़हारे-तअज्जुब है उस व्यक्ति के हाल पर जो हिदायत की पैरवी करने के बजाए अपनी ख़्वाहिशात का ताबे बन कर रह जाता है, गोया वह उन की परस्तिश कर रहा है। तो यह कलाम बलीग़ तशबीह या इस्तिआरा के तौर पर है।” (रुहुलमआनी जिल्द २५ पृष्ठ १५२)

34. अर्थात् उसे अल्लाह ने यूँ ही गुमराह नहीं किया बल्कि उस की हालत को जानते हुए गुमराह किया कि वह हिदायत को स्वीकार करने के लिए आमादा नहीं हैं। उस के दिल का यह हाल अल्लाह को मालूम था इस लिए अल्लाह तआला ने उस को भटकने के लिए छोड़ दिया।

35. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रर: नोट १५

36. अर्थात् जो व्यक्ति अल्लाह के गुमराह कर देने वाले नियम की ज़द में आ गया। उस को न कोई व्यक्ति समझा सकता है और न हिदायत दे सकता है।

37. यह कुर्आन सुनने वालों को चेतावनी है कि तुम होश से काम लो और उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने ने इच्छा परस्ती की राह अपनाई।

24. ये लोग कहते हैं, हमारी ज़िन्दगी तो बस दुनिया की ज़िन्दगी है। यहीं हमें मरना और जीना है, और हमें बस ज़माने की गर्दिश विनष्ट करती है।³⁸ (वास्तव में) इन को इस बारे में कोई ज्ञान नहीं। वे बस अटकल पच्चू बातें करते हैं।³⁹

وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ وَمَا لَهُم بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ۝٢٤

25. और जब इन को हमारी स्पष्ट आयतें सुनाई जाती हैं तो इन की हुज्जत बस यह होती है कि लाओ हमारे बाप दाद को, अगर तुम सच्चे हो।⁴⁰

وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمُ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٌ مَا كَانَ حُجَّتُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا ائْتُوا بِآبَائِنَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝٢٥

26. इन से कहो अल्लाह ही तुम्हें जीवन प्रदान करता है, फिर तुम्हें मौत देता है, फिर वही तुम को क्रियामत के दिन जमा करेगा। जिस के आने में कोई संदेह नहीं परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं।⁴¹

قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمَيِّتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝٢٦

27. आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है और जिस दिन क्रियामत क़ायम होगी उस दिन असत्य के पुजारी घाटे में पड़ेंगे।

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُومِذِيحُشُرُ الْمُبْطِلُونَ ۝٢٧

28. और तुम प्रत्येक गिरोह को घुटनों के बल गिरा हुआ देखोगे।⁴² प्रत्येक गिरोह को उस के कर्म पत्र (आमाल नामे) की ओर बुलाया जाएगा। जो तुम करते रहे उस का आज तुम्हें बदला दिया जाएगा।

وَتَرَى كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعَى إِلَى كِتَابِهَا الْيَوْمَ تُحْزَرُونَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝٢٨

29. यह हमारा दफ़्तर है जो तुम्हारे बारे में ठीक ठीक बोल रहा है।⁴³ जो कुछ तुम करते थे हम उसे लिखवाते जाते थे।⁴⁴

هَذَا كِتَابُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ إِنْ كُنْتُمْ أَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝٢٩

30. तो जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उन को उन का रब अपनी रहमत में दाखिल करेगा यह खुली कामयाबी है।⁴⁵

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ۝٣٠

31. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया (उन से कहा जाएगा) क्या मेरी आयतें तुम को पढ़कर सुनाई नहीं जाती थीं? मगर तुम ने अहं किया और तुम अपराधी लोग थे।

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ أَفْلَهُمْ تَكُنْ إِلَيْنَا تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ۝٣١

38. आयत में शब्द “दहर” प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ है जमाना और इस से तात्पर्य जमाने की गर्दिश है अर्थात् दिनों के आने जाने का विधान। मक्का के बहुदेववादी खुदा के इन्कारी नहीं थे बल्कि उस के अस्तित्व को स्वीकारते हुए दूसरी हस्तियों को लाभ और हानि पहुँचाने वाला समझते थे और उन ही में एक समूह ऐसा भी था जो मौत का कारण अल्लाह को नहीं बल्कि जमाने की गर्दिश को बताता था। उन का मत था कि मौत ईश्वरीय योजना का हिस्सा नहीं है और न इस जीवन के बाद कोई दूसरा जीवन है इस लिए वे अपने मरने अथवा अपने विनाश का कारण काल चक्र को बताते थे कि समय आता है और आदमी मर जाता है जिस प्रकार आदमी समय के साथ जवान और बूढ़ा होता है। इसी कारण वे किसी प्रकोप के आने पर अथवा किसी यातना के पहुँच जाने पर जमाने को बुरा भला कहते थे जिस की मनाही हदीस में आई है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

قَالَ اللَّهُ يَسُبُّ بَنُو آدَمَ الدَّهْرَ وَأَنَا الدَّهْرُ
بِيَدِي اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ - (صحیح البخاری کتاب الادب)

अर्थ :- “अल्लाह फ़रमाता है आदम की औलाद जमाने को बुरा भला कहती है हालाँकि जमाना मैं हूँ, रात और दिन मेरे क़ब्जे में है।” (सही बुखारी किताबुल अदब)

“जमाना मैं हूँ” का मतलब यह नहीं कि अल्लाह जमाने के रूप में अपना कोई भौतिक अस्तित्व रखता है। भौतिक अस्तित्व रखने वाली समस्त वस्तुएँ अल्लाह की सृष्टि हैं जब कि अल्लाह इन सब का सृष्टा हैं, इस लिए जमाना भी सृष्टि है न कि सृष्टा। इस हदीस कुदसी में जो बात इर्शाद हुई है उस का मतलब यह है कि आदमी को जब तकलीफ़ पहुँचती है तो वह जमाने की गर्दिश की ओर उसे मंसूब कर के जमाने को बुरा भला कहने लगता है। लेकिन वास्तव में जमाने का उलट फेर करने वाला अल्लाह है इस लिए जो तकलीफ़ भी पहुँचती है वह अल्लाह की तकदीर के तहत पहुँचती है। इस पर जमाने को बुरा भला कहना वास्तव में खुदा को बुरा भला कहना है। क्यों कि जमाना अपनी तरफ से कोई मुसीबत नहीं लाता।

ध्यान रहे कि “दहरिया” (नास्तिक) प्रचलित परिभाषा में उस व्यक्ति को कहा जाता है जो खुदा का बिलकुल इन्कारी हो और जमाने की गर्दिश को ही सम्पूर्ण जगत का विधान समझता हो। मगर आयत में जो बात बयान हुई है वह बहुदेववादियों के बारे में है यद्यपि यह आयत अनीश्वरवादियों पर भी फिट हो जाती है।

39. अर्थात् उन की यह बात किसी वैज्ञानिक प्रमाण पर आधारित नहीं है बल्कि अटकल से वे ऐसी बातें करते हैं वरना उन्हें कैसे मालूम हो गया कि मरने के बाद न आत्मा (रूह) के साथ कोई मामला पेश आता है और न दोबारा जीवित होना है।

40. उन की यह हुज्जत वास्तव में कोई दलील नहीं है बल्कि वे इसे अपने तौर पर दलील समझकर प्रस्तुत करते हैं और वह यह कि यदि मुर्दे ज़िन्दा किये जाने वाले हैं तो हमारे बाप दादा को ज़िन्दा कर के हमारे सामने क्यों नहीं लाते। उन की यह माँग बिलकुल अनुचित थी क्यों कि कुर्आन दूसरे जीवन की जो सूचना दे रहा है यह क्रियामत के दिन सामने आ जाने वाली बात है न कि दुनिया में घटित होने वाली। अगर यह कुछ दुनिया में सामने आ जाता तो ईमान लाने का प्रश्न ही क्या बाक़ी रहता और परिक्षा का क्या अवसर रहता।

41. यह उन के एतिराज का सकारात्मक जवाब है कि जमाने की गर्दिश से न किसी को जीवन मिलता है और न मौत। बल्कि अल्लाह के जीवन प्रदान करने से जीवन मिलता है और उस के मौत देने से आदमी मरता है और दूसरे जीवन के लिए उस ने क्रियामत का दिन निर्धारित कर रखा है मगर लोगों में से अधिकतर इतनी बड़ी वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं।

42. अर्थात् क्रियामत के दिन अल्लाह के समक्ष प्रत्येक मानव समूह की पेशी इस तरह होगी कि वह घुटनों के बल गिरा हुआ होगा। घुटनों के बल गिरना विनीत भाव को प्रकट करना है। बड़े अहंकारी भी उस रोज़ घुटने टेक देने पर विवश होंगे और सामूहिक रूप से वे जातियाँ भी जो गर्व से अपना सर ऊँचा करती रही हैं, हश्र के मैदान में बड़ी ही विनम्र दशा में उपस्थित होंगी।

इस आयत में हश्र के दिन की जो झलक दिखाई गई है वह मन के अहं को तोड़ने और जातियों की उद्दण्डता को समाप्त करने के लिए काफ़ी हैं बशर्ते कि वे खुले दिमाग से इस का अध्ययन करें।

43. यह दफ़्तर एक तरह से कर्मों का टेप रिकार्ड होगा और प्रत्येक व्यक्ति अपना रिकार्ड सुन लेगा। कुर्आन का यह बयान कि कर्मों का दफ़्तर बोलने वाला होगा मनुष्य के लिए आश्चर्य की बात नहीं रही जब कि वह टेप रिकार्ड का आविष्कार कर चुका है। नये नये आविष्कारों के साथ कुर्आन की सत्यता और अधिक स्पष्ट होती जा रही है।

44. अर्थात् हमारे फ़रिश्ते उसे लिख लेते हैं।

45. आदमी हमेशा हमेशा के लिए अल्लाह की रहमत में दाखिल हो जाए इस से अधिक स्पष्ट सफलता क्या हो सकती है।

32. और जब कहा जाता था कि अल्लाह का वादा सच्चा है और क़ियामत के बारे में कोई शक नहीं तो तुम कहते थे कि हम नहीं जानते क़ियामत क्या है। हम तो एक गुमान रखते हैं। और हम इस का यक़ीन करने वाले नहीं हैं।⁴⁶

وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيهَا قُلْتُمْ مَا نَدْرِي مَا السَّاعَةُ إِنْ نُظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ بِمُتَّقِينَ ۝۳۲

33. और उन पर उन के कर्मों की बुराइयाँ स्पष्ट हो जाएगी⁴⁷ और जिस चीज़ का वे मज़ाक उड़ाते रहे हैं वह उन को घेर लेगी।⁴⁸

وَبَدَأَ لَهُمْ سَيِّئَاتِ مَا عَمِلُوا حَقًّا بِهَمَّ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝۳۳

34. और उन से कहा जाएगा आज हम तुम्हें भुलाए देते हैं।⁴⁹ जिस तरह तुम ने अपनी पेशी के इस दिन को भुला दिया था। तुम्हारा ठिकाना नरक है और तुम्हारा कोई मददगार नहीं है।

وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنْسِكُمْ كَمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَذَا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّنْ نَّصِيرِينَ ۝۳۴

35. यह इस लिए कि तुम ने अल्लाह की आयतों को मज़ाक बना लिया था और तुम्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोखे में डाल दिया था।⁵⁰ तो आज इन को न इस से निकाला जाएगा और न तौबा (प्रायश्चित्त) का मौक़ा दिया जाएगा।⁵¹

ذَلِكُمْ بِأَنكُمْ أَخَذْتُمْ آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا وَعَرَوْتُمْ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝۳۵

36. अतः प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है।⁵² जो आसमानों का भी रब है और ज़मीन का भी रब, सारे जहान का रब !

فَلِلَّهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمُوتِ وَرَبِّ الْأَرْضِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝۳۶

37. और उसी के लिए है बड़ाई, आसमानों और ज़मीन में, और वह प्रभुत्वशाली है, तत्वदर्शी।

وَلَهُ الْكِبَرُ يَوْمَ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝۳۷

46. लोगों में ऐसे भी हैं जो क्रियामत के बिलकुल इन्कारी हैं और ऐसे भी जिन को क्रियामत के बारे में संदेह है और वे विश्वास करने को तैयार नहीं हैं कि क्रियामत निश्चित रूप से आएगी। ये दोनों प्रकार के लोग काफ़िर और अपराधी हैं। क्यों कि दोनों आख़िरत को नज़रंदाज़ कर के जीवन बिताते हैं इस लिए दोनों का अन्जाम एक जैसा है।

47. अर्थात् उस रोज़ अपने कर्मों के फल को देख कर उन्हें एहसास हो जाएगा कि उन्होंने ने आख़िरत का इन्कार कर के कितने ग़लत और कितने बुरे काम किये।

48. अर्थात् जहन्नम का अज़ाब जिस का वे दुनिया में मज़ाक़ उड़ाते रहे।

49. अर्थात् तुम को नज़रंदाज़ कर देते हैं कि तुम दया के पात्र नहीं हो।

50. दुनिया की रौनक को देख कर मनुष्य उस पर ऐसा

लट्टू हो जाता है कि उस के बाद जीवन के बारे में कुछ सोचने के लिए आमादा नहीं होता। उसे बस यही चिन्ता रहती है कि दुनिया के लाभ अधिक से अधिक प्राप्त करूँ। रही आख़िरत तो अगर वह बरपा हो ही गई तो देखा जाएगा। यह बहुत बड़ा धोखा है परन्तु आज भी अधिकतर लोग इस धोखे में पड़े हुए हैं। और वह कुर्आन ही है जो उन्हें इस धोखे से निकालना चाहता है। काश वे कुर्आन का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करते।

51. क्यों कि तौबा (प्रायश्चित) की जगह दुनिया है, न कि आख़िरत। दुनिया के इम्तिहान में फेल हो जाने के बाद दोबारा इम्तिहान देने का कोई अवसर नहीं।

52. ये सूरह की आख़िरी आयतें हैं जो अल्लाह की प्रशंसा तथा उस के गुणगान पर समाप्त हो रही हैं, और इस बात का एहसास दिला रही हैं कि इस सूरह में जो तत्त्वपूर्ण बातें इर्शाद हुई हैं उस पर अल्लाह प्रशंसा और शुक्र का अधिकारी है।



**सूरह
अल्-अहक्राफ़**

४६. सूरह अल्-अहक्राफ़

नाम :- आयत २१ में आद नामक जाति के निवास स्थल “अहक्राफ़” का वर्णन हुआ है जो यमन के करीब एक रेगिस्तानी इलाका है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल्-अहक्राफ़” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि बीच के दौर में नाज़िल हुई होगी। कुछ मुफ़स्सिरीन ने यह मत व्यक्त किया है कि यह सूरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ताइफ़ के सफ़र से वापसी पर नाज़िल हुई थी। परन्तु ताइफ़ में आप की दअवत का जिस तरह मज़ाक़ उड़ाया गया था और जो बेपनाह तकलीफ़ें आप को पहुँचाई गईं उन की तरफ़ इस सूरह में कोई इशारा नहीं मिलता, रही बात नख़्खा के स्थान पर जिन्नों के कुर्आन सुनने की तो इस सिलसिले में आयत २९ के अन्तर्गत व्यख्या कर दी जाएगी। इन्शाअल्लाह ।

केन्द्रीय विषय :- इस बात से ख़बरदार करना है कि तौहीद आख़िरत और रिसालत का इन्कार वास्तव में उस सच्चे उद्देश्य का इन्कार है जिस के लिए इस कायनात की रचना हुई है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से १२ में कुर्आन के अल्लाह का कलाम होने के दावे को पेश करते हुए शिर्क की नामाकूलियत स्पष्ट की गई है और रिसालत के बारे में संदेहों को दूर किया गया है।

आयत १३ से १६ में ईमान वालों के लिए तसल्ली और ख़ुशख़बरी है।

आयत १७ से २० में काफ़िरों को बुरे अन्जाम से ख़बरदार कर दिया गया है।

आयत २१ से २८ में आद नामक जाति के अन्जाम से इबरत दिलाई गई है।

आयत २९ से ३२ में जिन्नों के कुर्आन सुनने और उस से प्रभावित हो कर ईमान लाने का वर्णन हुआ है।

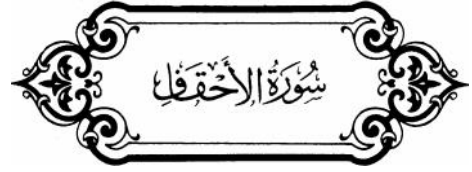
आयत ३३ और ३४ में मरणोपरांत जीवन से सम्बन्धित संदेहों का निदान भी है और जहन्नम की यातना से ख़बरदार भी कर दिया गया है।

आयत ३५ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सत्र की नसीहत और तसल्ली है।

४६. सूरह अल्-अहक्राफ़

आयतें : ३५

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा - मीम ¹।

حَمْدٌ ٥

2. यह किताब अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हुई है। जो प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।²

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ٢

3. हम ने आसमानों और ज़मीन को और उन के बीच की चीज़ों को (उद्देश्य) सत्य के साथ ³ और एक निश्चित अवधि के लिए पैदा किया है।⁴ मगर ये काफ़िर उस चीज़ से मुँह फेरे हुए हैं जिस से इन्हें ख़बरदार किया गया है।⁵

مَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى وَالَّذِينَ كَفَرُوا عَمَّا أُنذِرُوا مُعْرِضُونَ ٣

4. कहो, तुम ने उन पर ग़ौर किया, जिन को तुम अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हो? बताओ ज़मीन की कौन सी चीज़ उन्होंने पैदा की है या आसमानों की सृष्टि में उन का क्या हिस्सा है? इस से पहले की कोई किताब या कोई इल्मी (वैज्ञानिक) सबूत (जो इस के पक्ष में हो) मेरे पास ले आओ अगर तुम सच्चे हो।⁶

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَوَاتِ إِيَّانِي يُكْتَبُ مِنْ قَبْلُ هَذَا أَوْ أَثَرَةٌ مِنْ عَلَمٍ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ٤

5. और इन से बढ़कर गुमराह कौन हो सकते हैं ? जो अल्लाह को छोड़ कर उन को पुकारें जो क़ियामत तक उन को जवाब नहीं दे सकते और वे उन की पुकार से बेख़बर हैं।⁷

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَنْ لَا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَائِهِمْ غَفْلُونَ ٥

6. और जब तमाम लोग जमा किये जाएंगे तो वे उन के दुश्मन होंगे और उन की इबादत का इन्कार करेंगे।⁸

وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِينَ ٦

7. इन लोगों को जब हमारी स्पष्ट आयतें सुनाई जाती हैं तो ये काफ़िर सत्य के बारे में जो इन के पास आ गया है, कहते हैं कि यह खुला जादू है।⁹

وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالْحَقُّ لَمَّا جَاءَهُمْ هَذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ٧

1. इन अक्षरों की व्याख्या के लिए देखिए सूरह मोमिन नोट १.

इस सूरह की आयत २ में अल्लाह के हकीम (तत्वदर्शी) होने का जिक्र हुआ है और ये अक्षर उस के इसी गुण की ओर इशारा करते हैं।

2. व्याख्या के लिए देखिए सूरह जासिया नोट २

3. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट १२४ और सूरह यूनस नोट १५

4. व्याख्या के लिए देखिए सूरह रूम नोट १४

5. अर्थात् क्रियामत और कर्म फल (इनाम और दण्ड) से।

6. अर्थात् इबादत का अधिकारी वही हो सकता है जो सृष्टि हो। बहुदेववादी बताएँ कि वे अल्लाह के सिवा जिन को पूज्य ठहराते हैं उन्होंने ने क्या चीज़ पैदा की है। इस कायनात की रचना में उन का कोई हिस्सा है? अगर नहीं है तो फिर वे पूज्य किस प्रकार हुए? और अगर किसी का यह दावा है कि अल्लाह के सिवा और हस्तियों ने भी कोई चीज़ पैदा की है और वे खुदा के साझीदार हैं तो यह बात किस स्रोत से ज्ञात हुई। इस के जानने का माध्यम अल्लाह की किताब हो सकती है या नबियों के निर्देश जो इस तरह क्रमबद्ध उद्धृत हो कि पूर्ण विश्वास हो जाए। अब अगर इस का सबूत न कुर्आन से पहले की किसी आसमानी किताब में मिल रहा है और न नबियों के निर्देश में जो हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल से उद्धृत है तो इतने बड़े दावे के लिए कौन सा आधार रह जाता है?

स्पष्ट रहे कि कुर्आन का चैलैन्ज उन किताबों के बारे में है जो वास्तव में आसमानी किताबें हैं। और जिन का रसूलों पर नाज़िल होना एक ऐतिहासिक सत्य है। तौरात, ज़बूर और इन्जील में यद्यपि बहुत कुछ परिवर्तन हुआ है किन्तु उन में अल्लाह के कलाम का अंश मौजूद है। इन किताबों में कही भी यह नहीं कहा गया है कि एक खुदा के सिवा किसी और की भी परस्तिश करनी चाहिए। रही वे किताबें जिन को विभिन्न धार्मिक समूहों ने अपने अपने धर्म का पवित्र ग्रंथ समझ रखा है तो उन के आसमानी किताब होने का न ऐतिहासिक सबूत है और न उन किताबों का यह दावा है कि वे अल्लाह का कलाम हैं और न उन के विषयों एवं मज़मून से उन के अल्लाह के कलाम होने का सबूत मिलता है। इस लिए उन धार्मिक ग्रंथों में यदि विभिन्न देवी देवताओं की धारणा पाई जाती है तो ये कोई दलील नहीं बल्कि वे उन किताबों को संकलित करने वालों की विकृत धारणाएँ हैं जिन की उन्होंने अपने धर्म की पवित्र ग्रंथ की हैसियत दे रखी है यह अल्लाह पर मिथ्यारोप और बोहतान है न कि उस की कही हुई बात।

इसी प्रकार अक्कीदे (जीवन की मौलिक धारणाओं) के बारे

में नबियों से सम्बन्ध नहीं रिवायतें तर्क और हुज्जत की हैसियत रखती हैं जो वैज्ञानिक और विश्वस्नीय हों। मिसाल के तौर पर हज़रत इब्राहीम का बैतुल्लाह का निर्माण और हज्ज का सिलसिला जारी करना ताकि तौहीद के चिन्ह हर ज़माने में स्पष्ट होते रहे हैं। इस लिए कुर्आन ने “असारितन” के साथ “मिन इल्म” की क़ैद लगाई है। अर्थात् वे बातें जिन का किसी रसूल का मत होना इल्म और यक्कीन की हद तक दुरुस्त हो।

7. आयत में “मन” (जो Whom) का शब्द प्रयुक्त हुआ है जो अरबी में बुद्धि रखने वालों के लिए प्रयुक्त होता है इस लिए इस से तात्पर्य फ़रिश्ते, ज़िन्न, नबी और बुजुर्ग हस्तियाँ ही हो सकती हैं। कुर्आन पुष्टि करता है कि इन को आवश्यकताओं की पूर्ति, कष्टों के निवारण तथा फ़रियादों के लिए पुकारना बहुत बड़ी गुमराही और बिलकुल व्यर्थ की बात है। उन को पुकारने का न कोई औचित्य है और न वे किसी की पुकार सुनते हैं।

कुर्आन की इस पुष्टि के बावजूद मुसलमानों की भारी संख्या इस गुमराही में लिप्त है। वे वलियों और पीरों को मदद के लिए पुकारते हैं और समझते हैं कि क़ब्रों में दफन होने के बावजूद वे हमारी पुकार सुन लेते हैं हालाँकि वे उन की पुकार से बिलकुल बेखबर रहते हैं। यह धारणा ही विकृत है कि जो क़ब्रों में दफन हैं वे पुकारने वाले की पुकार सुनते हैं। जब वे अपनी ज़िन्दगी में दूर से पुकारने वाले की आवाज़ नहीं सुन सकते थे तो मरने के बाद उन को यह सामर्थ्य शक्ति कहाँ से प्राप्त हो गई है कि आल्मे-बरज़ख़ (यमलोक) में रहते हुए दुनिया वालों से संपर्क बनाएँ और अपने प्रत्येक श्रद्धालु की चाहे वह दुनिया के किसी कोने में रहता हो पुकार सुने? यह सरासर बिना सिर पैर की बात है मगर ऐसी व्यर्थ बातों को “जाहिल आलिमों” ने इस्लामी अक्कीदे की हैसियत दे दी है और इन आयतों की व्याख्या यह करते हैं कि ये बुतपरस्तों के बारे में हैं। इस ग़लत व्याख्या के फलस्वरूप मुसलमानों की भारी संख्या शिर्क में लिप्त है। यदि वे खुले मन से कुर्आन का अध्ययन करते तो उन को हिदायत नसीब होती।

8. अर्थात् यह न समझो कि जिन के प्रति श्रद्धा में हद से गुज़र कर उन्हें अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए पुकार रहे हो वे क्रियामत के दिन तुम से खुश होंगे नहीं बल्कि वे तुम्हारे दुश्मन होंगे कि तुम ने उन के साथ वह मामला क्यों किया जो खुदा ही के साथ करने का था और तुम्हारी उस पुकार का जो इबादत की हैसियत रखती है साफ़ इन्कार करेंगे कि हमें इस की कोई ख़बर न थी।

9. अर्थात् अल्लाह के कलाम की तासीर देख कर उसे जादू करार देते हैं।

8. क्या ये लोग कहते हैं कि इस व्यक्ति ने इस को गढ़ लिया है? कहो अगर मैं ने गढ़ लिया है तो तुम लोग मुझे अल्लाह से जरा भी न बचा सकोगे। और तुम जो बातें बनाते हो उन को वह खूब जानता है। मेरे और तुम्हारे बीच वह गवाही के लिए काफ़ी है। वह बड़ा क्षमा करने वाला रहम फ़रमाने वाला है।¹⁰

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ
لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفْعِلُونَ فَبِئْسَ الْكُفَىٰ بِهِ
شَهِيدٌ ابْتِئْنِي وَبَيْنَكُمْ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ⑩

9. कहो मैं कोई निराला रसूल तो नहीं हूँ¹¹ और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या मामला किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या मामला।¹² मैं तो केवल उस प्रकाशना (वह्य) का अनुपालन करता हूँ जो मेरी तरफ़ भेजी जाती है और मैं तो बस खुला ख़बरदार करने वाला हूँ।¹³

قُلْ مَا كُنْتُ بِدَاعٍ مِنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ
إِنْ أَتَيْتُمُ إِلَّا مَائُوتًا إِلَىٰ آلِي وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ⑪

10. कहो तुम ने यह भी सोचा कि अगर यह अल्लाह की तरफ़ से हुआ, और तुम ने इस का इन्कार किया जब कि बनी इस्राईल के एक गवाह ने इस जैसी किताब पर गवाही दी है अतः वह ईमान ले आया और तुम ने अहं किया।¹⁴ (तो यह कितना बड़ा अपराध होगा?) अल्लाह ऐसे ज़ालिम लोगों को राह पर नहीं लगाता।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنَ عِنْدِ اللَّهِ وَكَفَرْتُمْ بِهِ وَشَهِدَ شَاهِدٌ
مِّنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ فَأَمَنَ وَاسْتَكْبَرُوا ثُمَّ إِنَّ
اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ⑫

11. काफ़िर, ईमान लाने वालों के बारे में कहते हैं कि अगर यह (कुर्आन) ख़ैर होता तो यह लोग हम से पहले इस को न पा लेते।¹⁵ और चूँकि उन्होंने इस से हिदायत नहीं पाई इस लिए कहेंगे कि यह पुराना झूठ है।¹⁶

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا الَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَا
إِلَيْهِ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ هَذَا أَفْكٌ قَدِيمٌ ⑬

12. हालाँकि इस से पहले मूसा की किताब रहनुमा और रहमत बन कर आ चुकी है।¹⁷ और यह किताब उस की पुष्टि करने वाली है,¹⁸ अरबी भाषा में, ताकि ज़ुल्म करने वालों¹⁹ (ग़लत लोगों) को ख़बरदार कर दे। और यह खुशख़बरी है सुकर्मियों के लिए।

وَمِن قَبْلِهِ كَتَبَ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً وَهَذَا كِتَابٌ مُّصَدِّقٌ
لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّنَذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَوْبُرِي لِلْمُحْسِنِينَ ⑭

13. जिन लोगों ने कहा अल्लाह हमारा रब है फिर उस पर जमे रहे उन के लिए न कोई भय है और न वे शोकाकुल होंगे।²⁰

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ⑮

10. अर्थात् तुम्हें मौक़ा दे रहा है कि तौबा और इस्लाह कर के उस की क्षमा और उस की दया के पात्र हो जाओ।

11. अर्थात् ऐसा तो नहीं है कि मानव इतिहास रसूलों से ख़ाली रहा हो और अब मेरी रिसालत के दावे को सुन कर लोगों को अश्चर्य हो कि एक निराली बात है जो हमारे सामने आ रही है। जब इतिहासिक घटनाएँ इस पर साक्ष्य हैं कि इस से पहले भी रसूल आते रहे हैं तो फिर मेरा रसूल होना कोई निराली बात नहीं हुई। इस लिए तुम्हें विचार करना चाहिए कि वास्तव में मेरा यह दावा है या एक ऐसी वास्तविकता जो ऐसे तर्कों पर आधारित है जिस का कोई इन्कार नहीं कर सकता।

12. अर्थात् मुझे नहीं मालूम कि रसूल होने की हैसियत से आगे चल कर किन मरहलों से गुज़रना होगा अथवा किन हालात से जूझना होगा और न मुझे यह मालूम है कि तुम्हारे बारे में कब फैसला किया जाने वाला है, तुम्हें क्षमा का सौभाग्य प्राप्त होगा या तुम्हें भी उसी तरह विनष्ट कर दिया जाएगा जिस तरह मुझ से पहले की जातियों को विनष्ट किया जा चुका है। इन बातों का विस्तृत ज्ञान मुझे नहीं है। अलबत्ता अल्लाह की वहीय के द्वारा जो ज्ञान मुझे प्राप्त है उस पर मैं विश्वास करता हूँ।

यह आयत पुष्टि करती है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भविष्य की बातों का ज्ञान उसी हद तक होता था जिस हद तक कि अल्लाह की वहीय आप को उस का ज्ञान प्रदान करती थी वरना ग़ैब (परोक्ष जगत) का जानने वाला केवल अल्लाह तआला है। अल्लामा आलूसी इस आयत की तफ़सीर में लिखते हैं।

“ मैं कहने वाले के इस क़ौल (मत) को अच्छा नहीं समझता कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ैब जानते थे। इस के बजाए यह कहना बेहतर होगा कि आप को अल्लाह तआला ने ग़ैब पर मुत्तला फ़रमाया (सूचित किया) था और आप को इस का इल्म बख़्शा था। (रुहूल मआनी जिल्द २६ पृष्ठ १०)

13. अर्थात् इस के बाद उस पर ईमान लाना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है। मेरी यह ज़िम्मेदारी नहीं है कि ईमान लाने के लिए विवश करूँ।

14. बनी इस्राईल के एक गवाह से तात्पर्य उन में का एक व्यक्ति है जो तौरात का ज्ञान रखता था और इन आयतों के अवतरण के समय ईमान लाय ता। इस के बाद मक्का में अहले-किताब में से और लोग भी ईमान ले आए जिन का वर्णन सूरह बनी इस्राईल आयत १०७ और १०८ में हुआ है :-

إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ يَخِرُّونَ
لِلْآذْقَانِ سُجَّدًا وَيَقُولُونَ سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنْ كَانَ وَعْدُ
رَبِّنَا لَمَفْعُولًا۔ (بنی اسرائیل: 107, 108)

अर्थ :- और “जिन लोगों को इस से पहले ज्ञान दिया गया है उन्हें जब यह सुनाया जाता है तो वे टोड़ियों के बल सज्दे में गिर जाते हैं और पुकार उठते हैं कि पाक है हमारा रब। हमारे रब का वादा इसी लिए था कि पूरा हो कर रहे।”

तो जिस तरह सूरह बनी इस्राईल की इस आयत में कोई व्यक्ति विशेष अभिप्रेत नहीं है। उसी तरह उक्त आयत में भी गवाह से कोई व्यक्ति विशेष अभिप्रेत नहीं है। बल्कि वह व्यक्ति मुराद है जो तौरात का ज्ञान रखते हुए कुर्आन पर ईमान लाया था। और अल्लामा इब्ने कसीर ने आयत की यही व्याख्या की है। जिन मुफ़स्सरीन ने मदीना के यहूदी विद्वान अब्दुल्लाह बिन सलाम को इस से मुराद लिया है उन्होंने ने इस आयत को मदनी क्रार दिया है हालाँकि पूरी सूरह मक्की है। यह तकल्लुफ़ उन्हें इस लिए करना पड़ा कि अब्दुल्लाह बिन सलाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदीना हिजरत कर जाने के बाद ईमान लाए थे इस लिए इस आयत के अवतरण के समय वे इस के कारण नहीं हो सकते थे। तदब्बुरे कुर्आन के संकलनकर्ता ने एक और बात लिखी है और वह यह है कि इस गवाह से तात्पर्य हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम हैं जिन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने की भविष्य वाणी की थी। परन्तु आयत के ये शब्द कि वह उस जैसी चीज़ पर ईमान ले आया, उन पर लागू नहीं होते।

इस आयत का सार कुर्आन का इन्कार करने वालों को इस बात की ओर आकर्षित करना है कि जब बनी इस्राईल का एक व्यक्ति जो अल्लाह की किताब का ज्ञान रखता है यह गवाही देते हुए कि कुर्आन की शिक्षा तौरात की शिक्षा के बिल्कुल अनुरूप है, उस पर ईमान लाया है तो तुम्हारा इस को एक निराली शिक्षा समझ कर रद्द कर देना कितनी बड़ी ग़ैर ज़िम्मेदाराना बात है।

15. यह काफ़िरों के सरदारों और संसार में हैसियत रखने वालों का मत है। वे समझते थे कि यह शान व शौकत हमें इसी लिए प्राप्त है कि अल्लाह हम से खुश है अतः अगर कुर्आन अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हुआ होता तो इतने बड़े ख़ैर से वह सर्व प्रथम हमें अलंकृत करता। मगर जब इस की तौफ़ीक़ हमें नहीं मिली और ऐसे लोगों ने इसे स्वीकार किया जो ग़रीब ग़ैर और अपना कोई महत्व एवं प्रभाव नहीं रखते तो यह अल्लाह की तरफ़ से उतारा हुआ ख़ैर कैसे हो सकता है? उन की यही विकृत मानसिकता थी जिस के चलते वे हिदायत से वंचित रहे।

16. अर्थात् कुर्आन क्रियामत और कर्मानुसार फल की जो बातें करता है वे बिल्कुल झूठ हैं और इस झूठ का इतिहास बहुत पुराना है क्योंकि कि गुजरी हुई जातियों को भी ऐसी बातें कह कर डराया जाता रहा है।

17. अर्थात् जिस चीज़ को वे झूठ बता रहे हैं वह झूठ

किस तरह हो सकता है जब कि वह चीज़ लोगों का सही मार्गदर्शन करती है अतः तौरात से लोग हिदायत प्राप्त करते रहे हैं और इसी कारण उन पर अल्लाह की रहमत छायी रही है।

18. अर्थात् कुर्आन मौलिक रूप से वही शिक्षा पेश कर रहा है जो तौरात की शिक्षा थी। यह कोई ऐसी किताब नहीं है

जो निराली शिक्षा प्रस्तुत करती हो।

19. जुल्म करने वालों से तात्पर्य वे लोग हैं जो शिर्क (बहुदेववाद) जैसे अपराध में लिप्त हो कर अपनी जानों पर जुल्म करते हैं।

20. व्याख्या के लिए देखिए सूरह “हा मीम अस्सज्दा” नोट ४४ और ४५



हम ने इन्सान को हिदायत की कि अपने माता पिता के साथ अच्छा सुलूक करे। उस की माँ ने कष्ट के साथ उस को पेट में रखा और कष्ट के साथ उस को जन्म दिया। उस के गर्भ और दूध छुड़ाने में तीस महीने लग गए। यहाँ तक कि जब वह अपनी जवानी को पहुँचा और पहुँचा चालिस वर्ष की आयु को। तो उस ने दुआ की कि ऐ मेरे रब ! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरे इस एहसान का शुक्र अदा करूँ जो तू ने मुझ पर और मेरे माता पिता पर किए हैं। और वह नेक कर्म करूँ जो तुझे पसंद है। और मेरी औलाद को भी मेरे लिए नेक बना दे। मैं ने तेरी तरफ़ रूजू किया और मैं मुसलमीन (तेरे आज्ञाकारियों) में से हूँ। (अल-कुर्आन)

14. ये जन्नत वाले हैं जहाँ वे हमेशा रहेंगे। यह बदला होगा उन कर्मों का जो वे करते रहें हैं।²¹ ①

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ①

15. हम ने इन्सान को हिदायत की, कि अपने माता पिता के साथ अच्छा सुलूक करे।²² उस की माँ ने कष्ट के साथ उस को पेट में रखा और कष्ट के साथ उस को जन्म दिया।²³ उस के गर्भ और दूध छुड़ाने में तीस महीने लग गए।²⁴ यहाँ तक कि जब वह अपनी जवानी को पहुँचा और पहुँचा चालिस वर्ष की आयु को।²⁵ तो उस ने दुआ की कि ऐ मेरे रब ! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरे इस एहसान का शुक्र अदा करूँ जो तू ने मुझ पर और मेरे माता पिता पर किए हैं। और वह नेक कर्म करूँ जो तुझे पसंद है। और मेरी औलाद को भी मेरे लिए नेक बना दे। मैं ने तेरी तरफ़ रूजू किया और मैं मुसलमीन (तेरे आज्ञाकारियों) में से हूँ।²⁶

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا وَحَمْلُهُ وَفِصْلُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ اشدَّهُ وَبَلَغَ اربعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ اوزعني اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَاَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي اِنِّي تبتُّ اِلَيْكَ وَاِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ②

16. ऐसे लोगों के बेहतरीन कर्मों को हम स्वीकार करेंगे²⁷ और उन की बुराइयों से दरगुजर करेंगे। वे जन्नत वालों में शामिल होंगे, सच्चा वादा जो उन से किया जाता रहा है।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ تَقْبَلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَتَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ فِي اَصْحَابِ الْجَنَّةِ وَعَدَ الصّٰدِقُ الَّذِي كَانُوا يَعِدُوْنَ ③

17. और जिस व्यक्ति ने अपने माता पिता से कहा तुम पर उफ़ है ! क्या तुम मुझे इस से डराते हो कि मैं क्रब्र से निकाला जाऊँगा हालाँकि मुझ से पहले कितनी ही जातियाँ गुजर चुकी हैं।²⁸ और वे दोनों अल्लाह से फ़रियाद करते हुए उस से कहते हैं कि अफ़सोस तुझ पर ! ईमान ला। अल्लाह का वादा सच्चा है। परन्तु वह कहता है ये गुजरे हुए लोगों की कहानियाँ हैं।²⁹

وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ اِفْ لَكُمْ اَاعِدَنِيْ اَنْ اُخْرَجَ وَقَدْ خَلَيْتِ الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِيْ ۚ وَهُمَا يَسْتَعْجِلُنِ اللّٰهَ وَيْلَكَ اِمِنْ اَنْ وَعَدَ اللّٰهُ حَقًّا ۚ فَيَقُوْلُ مَا هَذَا اِلَّا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ④

18. ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह (के अज़ाब) का फ़रमान लागू हुआ, उन गिरोहों में जो जिन्यों और इन्सानों में से उन से पहले गुजरे।³⁰ निस्संदेह ये तबाह होने वाले हैं।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْ اَمْرِ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ⑤

19. और हर एक के लिए उन के कर्मों के अनुसार दर्जे होंगे।³¹ और (यह इस लिए होगा कि) वह उन के कर्मों का पूरा पूरा बदला दे। और उन पर ज़ुल्म हरगिज़ न किया जाएगा ।

وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا وَلِيُوْفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ⑥

21. अर्थात् जन्नत मुफ्त में मिलने की चीज नहीं है बल्कि वह कर्मों के (बदले में) फलस्वरूप प्रदान की जाएगी। अतः जो व्यक्ति भी जन्नत प्राप्त करना चाहता है वह अपने व्यवहारिक जीवन से जन्नत का अधिकारी होना सिद्ध कर दिखाए।

22. बन्दों के अधिकारों में से सब से बड़ा अधिकार माँ बाप का है। इस लिए अल्लाह तआला ने उन के साथ अच्छा बर्ताव करने के कड़े निर्देश दिए हैं। अच्छे बर्ताव में उन का अदब, आदर, सम्मान, उन की सेवा, उन की सहायता उन को खुश रखने के प्रयास, उन के लिए त्याग व बलिदान और उन के लिए अच्छी दुआएँ सब शामिल हैं। यह उन से स्वाभाविक लगाव का तक्राजा है इस लिए शरीअत ने इस को बड़ा महत्व दिया है और बहुत बड़ी नेकी करार दिया है। परन्तु पश्चिमी समाज जो नैतिकता से खाली हो गया है इस सत्य को नहीं मानता। सन्तान माता पिता से बिल्कुल बेपरवाह रहती है और उन के प्रति अपना कोई दायित्व नहीं महसूस करती और जो लोग खुदा का अधिकार न पहचानते हो वे बन्दों के अधिकार क्या पहचानेंगे।

अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह लुकमान नोट १७, २० और २१ तथा सूरह बनी इस्राईल नोट २८

23. इसी कारण बाप की बनिस्बत माँ अच्छे व्यवहार की अधिक अधिकारी है। आयत के इस इशारे को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खोल कर बयान फ़रमाया है। हदीस में आता है कि :-

“एक व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और कहा ऐ अल्लाह के रसूल मेरे अच्छे सुलूक का सर्वाधिक हक़दार कौन है? फ़रमाया तुम्हारी माँ, उस ने पूछा फिर कौन फ़रमाया तुम्हारी माँ, उस ने पूछा फिर कौन फ़रमाया तुम्हारी माँ, उस ने पूछा फिर कौन फ़रमाया तुम्हारा बाप।” (बुखारी किताबुल अदब)

24. इस आयत में गर्भ और दूध छुड़ाने की अवधि तीस महीने बयान हुई है जब कि सूरह लुकमान में दूध छुड़ाने की अवधि २ साल बयान हुई है।

وَفَصْلُهُ فِي عَامَيْنِ (القمان: 14)

अर्थ :- “और दो वर्ष उस के दूध छुड़ाने में लगे।” (लुकमान - १४)

तथा सूरह बक्रर: में दूध पीने की अवधि पूरे २ वर्ष बयान हुई है (सूरह बक्रर: आयत - २३३) इस लिए फ़ुक़हा (इस्लामी धर्म शास्त्रियों) ने सूरह अहक़ाफ़ की इस आयत से यह नियम उद्धृत किया है कि गर्भ की कम से कम अवधि ६ महीने हैं। अर्थात् अगर निकाह के ६ माह बाद बच्चे का जन्म होता है तो

वह जायज़ औलाद समझी जाएगी।

25. जवानी की आयु होश संभालने और चालीस वर्ष की आयु बुद्धि की परिपक्वता की आयु है।

26. इस आयत में उस व्यक्ति का चरित्र बयान हुआ है जो अल्लाह से डरने और उस के समक्ष उत्तरदायी होने का एहसास रखने वाला है। वह होश संभालते ही अल्लाह के एहसान को याद करता है। और विशेष रूप से इस एहसान को कि उस ने उस के माँ बाप को संतान प्रदान की और उस की परवरीश के क़ाबिल उन्हें बनाया। जब वह चालीस वर्ष का होता है तो यह एहसास उस में और तीव्रता से उभरता है और वह कृतज्ञ एवं नेक बनने की तौफ़ीक़ तलब करता है तथा यह दुआ करता है कि मेरी संतान को भी नेक बना दे।

स्पष्ट हुआ कि नेक आदमी अपनी संतान को भी नेक ही देखना पसंद करता है। ऐसा व्यक्ति निश्चित रूप से अपनी संतान को दीन की शिक्षा देगा और उस की सही तरबियत करेगा।

आयत में “वह नेक कर्म करूँ जो तुझे पसंद है” का इशारा इस बात की तरफ़ है कि नेकी वही सच्ची और मान्य है जो ख़ालिस अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के उद्देश्य से की गई हो जो दिखावा और नुमाइश आदि से पाक हो।

27. अर्थात् ऐसे लोगों के अच्छे कर्म न केवल अच्छे हैं बल्कि वे चूँकि सच्चे मन के साथ सही स्पिरिट में अदा किए गए हैं इस लिए अल्लाह की नज़र में वे अच्छे कर्म हैं इस लिए वे स्वीकार्य होंगे।

28. अर्थात् जो जातियाँ गुज़र चुकी हैं वे दोबारा ज़िन्दा हो कर नहीं आईं।

29. यह उस व्यक्ति का चरित्र है जो आख़िरत का इन्कारी है। और जब उस के मोमिन माता पिता उस को ईमान लाने के लिए कहते हैं तो वह दूसरे जीवन को कहानी बताने लगता है अर्थात् उस को सही नहीं मानता। माता पिता के उपदेश को स्वीकार करने के बजाय उन के साथ निरादर के साथ पेश आता है।

इन आयतों का खुला इशारा उस समय के हालात की ओर है जब यह सूरह नाज़िल हुई। उस समय दोनों ही चरित्र जिन का इन आयतों में वर्णन हुआ है उभर कर सामने आ गए थे।

30. अर्थात् इस चरित्र के लोग यातना के हक़दार हैं और जितने एवं इन्सानों के उस ग़िरोह में शामिल हैं जो इस से पहले अज़ाब (यातना) का हक़दार हो चुका है।

31. अर्थात् जो व्यक्ति जितना नेक होगा उसी हिसाब से जन्नत में उस का दर्जा होगा। और जो व्यक्ति जितना बुरा होगा उसी हिसाब से जहन्नम में उस की जगह निर्धारित होगी।

और यदि आदमी आख़िरत में ऊँचा दर्जा चाहता है तो उच्च कोटि के कर्म करे।

20. और जिस दिन काफ़िर आग के सामने पेश किये जाएंगे (तो उन से कहा जाएगा) तुम अपने हिस्से की अच्छी चीज़ें दुनिया की ज़िन्दगी में ले चुके, और उन से लाभ उठाया।³² तो आज तुम्हें अपमानयुक्त अज़ाब दिया जाएगा। उस बात की पादाश में कि तुम ज़मीन में बिना किसी हक़ के अहं करते रहे और इस लिए कि तुम नाफ़रमानी करते रहे।³³

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَدْهَبْتُمْ طِبَابَكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ ①

21. याद करो आद के भाई को ³⁴ जब उस ने “अहकाफ़” ³⁵ में अपनी जाति को ख़बरदार किया----और ख़बरदार करने वाले उस के आगे भी आये थे और उस के पीछे भी आये ³⁶ - ---कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। मुझे तुम पर एक हौलनाक दिन के अज़ाब का भय है।³⁷

وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَّتِ السُّدُورُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ②

22. उन्होंने कहा क्या तुम इस लिए आए हो कि हमें हमारे उपास्यों से विमुख कर दो।³⁸ अगर तुम सच्चे हो तो लाओ वह अज़ाब जिस से हमें डरा रहे हो।

قَالُوا أَجِئْنَا لِنَتَأَفَّكَ عَنْ إِلَهِنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ③

23. उस ने कहा इस का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। मैं तो वह संदेश तुम्हें पहुँचा रहा हूँ जिस के साथ मुझे भेजा गया है किन्तु मैं देख रहा हूँ कि तुम लोग जिहालत बरत रहे हो।

قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَكِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ④

24. फिर जब उन्होंने ने उस को ³⁹ बादल के रूप में अपनी वादियों की तरफ़ आते देखा तो कहने लगे यह बादल है जो हम पर बारिश बरसाएगा। नहीं बल्कि यह वह चीज़ है जिस के लिए तुम ने जल्दी मचा रखी थी। यह हवा (का तूफ़ान) है जिस में दुखदायिनी यातना है।⁴⁰

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَّتِهِمْ قَالُوا هَذَا عَارِضٌ مُّسْطَرٌّ ۖ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑤

25. यह प्रत्येक वस्तु को तबाह कर देगी अपने रब के आदेश से। अतः उन का हाल यह हुआ कि उन के घरों के सिवा कुछ नज़र न आता था।⁴¹ हम अपराधियों को इसी प्रकार दण्ड दिया करते हैं।⁴²

تَدْمِرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَاصْبِرْ ۚ أَلَا يَرَىٰ إِلَّا مَسَٰكِنُهُمْ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ⑥

32. अर्थात् दुनिया में जो नेमतें अल्लाह तआला ने तुम्हें प्रदान की थी उन में तुम ऐसे मगन रहे कि न तुम्हें खुदा याद आया और न आखिरत। दुनिया की नेमतें तो इस लिए हैं कि आदमी अपने रब का कृतज्ञ (शुक्रगुजार) हो और उन को इस तरह इस्तेमाल करे कि आखिरत में इस का अच्छा बदला मिले इस लिए नहीं कि वह बस दुनिया बटोरे और भौतिकवादी बन कर रह जाए।

33. अहं से दिल के घमण्ड की तरफ और फ़िस्क (नाफ़रमान) से बुरे कर्मों की तरफ़ इशारा है।

34. अभिप्रेत हूद अलैहिस्सलाम हैं जो “आद” नामक जाति के एक सदस्य थे और उन की तरफ़ रसूल बनाकर भेजे गए थे। उन का वृत्तांत सूरह आराफ़ और सूरह हूद में गुज़र चुका।

35. अहकाफ़ का अर्थ है रेत का टीला। इस से तात्पर्य वह क्षेत्र है जो “हज़र मौत” के करीब यमन के पूरब में स्थित है। यहाँ आद की जाति आबाद थी जिस का युग इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पहले का है। यह क्षेत्र उस ज़माने का सब से बड़ा सभ्य एवं विकसित क्षेत्र था किन्तु अब एक निर्जन रेगिस्तान है जहाँ रेत के ऐसे टीले हैं कि सफ़र करना मुश्किल है। भूगोल में इस क्षेत्र का नाम “अरुबउल ख़ाली” है (देखिए सूरह फ़ज्र की तफ़्सीर के अन्तर्गत पृष्ठ पर मान चित्र)

36. अर्थात् हज़रत हूद कोई नए रसूल नहीं थे। उन से पहले भी रसूल आए थे और उन के बाद भी रसूल आते रहे।

37. तात्पर्य अज़ाब (प्रकोप) अवतरित होने का दिन है जिस की तबाही अतयंत भयावह होगी।

38. वह बुत परस्त जाति थी और अपने बुतों को छोड़ कर अल्लाह को एक मात्र उपास्य मान लेने के लिए कदापि आमादा नहीं थी।

39. अर्थात् अज़ाब को।

40. वे बादल देख कर खुश हो रहे थे कि बारिश होगी और उन्हें सुकून मिलेगा। परन्तु हज़रत हूद ने जैसा कि प्रसंग से स्पष्ट है उन को सावधान किया कि यह तुम्हारे लिए अच्छा नहीं बल्कि बहुत बुरा है। और यह अल्लाह का प्रकोप है जो तुम्हारे सरो पर मंडरा रहा है।

41. अर्थात् तूफ़ानी हवा ने उन को इस तरह विनष्ट किया कि उन का अस्तित्व ही मिट गया और उन की शानदार संस्कृति, सभ्यता और समस्त प्रकार की उन्नति ख़ाक में मिल गई।

42. अर्थात् अपराधी जातियों को अल्लाह तआला जिस तरह संसार में दण्डित करता है उस का एक उदाहरण यह अज़ाब (प्रकोप) है जो हूद की जाति पर आया।



26. हम ने उन को वह सत्ता प्रदान की थी जो तुम को नहीं प्रदान की।⁴³ हम ने उन को कान, आँखें और दिल दिए थे। मगर न उन के कान उन के कुछ काम आए, न उन की आँखें और न उन के दिल, इस कारण कि वे अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे।⁴⁴ और उन को घेर लिया उस चीज़ ने जिस का वे मज़ाक उड़ाते थे।⁴⁵

وَلَقَدْ مَكَّنَّهُمْ فِيمَا آتَيْنَاهُمْ مَقَاتِلَهُمْ فَجَعَلْنَاهُمْ
سَمْعًا وَابْصَارًا وَافْهَدَةً فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ
وَلَا أَبْصَارُهُمْ وَلَا أَفْهَادُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ إِذْ كَانُوا
يَجْحَدُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٢٦﴾

27. हम तुम्हारे इर्द गिर्द की बस्तियों को विनष्ट कर चुके हैं।⁴⁶ हम ने अपनी आयतें तरह तरह से पेश कि थीं ताकि वे रूजू करें।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حولَكُم مِّنَ الْقُرَىٰ وَصَرَّفْنَا الْآيَاتِ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٧﴾

28. तो क्यों न उन की मदद की उन हस्तियों ने जिनको उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर निकटता के लिए उपास्य बना रखा था।⁴⁷ बल्कि वे सब उन से खोए गए। यह उन का झूठ और उन की गढ़ी हुई बातें थीं।

فَلَوْلَا نَصْرُهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ قُرْبَانًا
إِلَٰهَةً بَلْ ضَلُّوا عَنْهُمْ وَذَٰلِكَ أَفْكَهُم مَّا كَانُوا
يَفْتَرُونَ ﴿٢٨﴾

29. और जब हम ने जिन्नों⁴⁸ के एक गिरोह को तुम्हारी तरफ़ फेर दिया ताकि वे कुर्आन सुनें।⁴⁹ जब वे वहाँ पहुँचे तो उन्होंने (आपस में) कहा चुप हो जाओ (और सुनो) जब उस की तिलावत पूरी हो गई तो वे अपनी जाति की ओर ख़बरदार करने वाले बन कर लौटे।

وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمْعُونَ الْقُرْآنَ
فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا أَنصِتُوا فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ
مُنذِرِينَ ﴿٢٩﴾

30. उन्होंने कहा : ऐ हमारी जाति के लोगो ! हम ने एक ऐसी किताब सुनी है जो मूसा के बाद उतारी गई है।⁵⁰ पुष्टि करती है उस किताब की जो पहले आ चुकी है।⁵¹ यह सत्य और सीधे मार्ग की ओर रहनुमाई करती है।⁵²

قَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا كِتَابًا أُنزِلَ مِن بَعْدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ وَإِلَى طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٣٠﴾

31. ऐ हमारी जाति के लोगो ! अल्लाह की ओर बुलाने वाले⁵³ की दअवत कुबूल करो और उस पर ईमान ले आओ⁵⁴ अल्लाह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा।⁵⁵ और तुम्हें दुखदायिनी यातना से बचाएगा।⁵⁶

يَقَوْمًا اجْبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ يَغْفِرَ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ
وَيُجْزِكُمْ مِّنْ عَذَابِ آلِيمٍ ﴿٣١﴾

43. संबोधित कुरैश हैं।

44. स्पष्ट हुआ कि कान, आँख और दिल एवं दिमाग की क्षमताएँ उसी सूरत में लाभदायक सिद्ध होती हैं जब कि अल्लाह की निशानियों को देखने और उस की आयतों (Revelations) को पढ़ने और सुनने के लिए उन को इस्तेमाल किया जाए। फिर जो हक्रीकत उभर कर सामने आए उस को स्वीकार किया जाए।

45. अर्थात् अल्लाह के अज़ाब ने जिस का वे मज़ाक़ उड़ाते थे।

46. अर्थात् आद, समूद, मदन आदि की बस्तियाँ जो अरब क्षेत्र में थीं।

47. अर्थात् उन के ये उपास्य जिन के बारे में उन की धारणा यही थी कि वे अल्लाह से निकटता प्राप्त करने का माध्यम हैं इस समय उन की मदद को क्यों न आए जब उन पर अल्लाह का अज़ाब टूट पड़ा। जब ये उपास्य अपने भक्तों को अल्लाह के प्रकोप से नहीं बचा पाए तो यह सच्चाई सिद्ध हुई कि अल्लाह के सिवा कोई नहीं जो फ़रियादों को सुन कर उसे पूरा करने वाला (ग़ौस) मुश्किल कुशा और मददगार हो और उस के सिवा कोई नहीं जो इबादत का हक़ रखता हो। किसी को अल्लाह की निकटता का माध्यम समझ कर उस के साथ वह मामला करना जो अल्लाह ही के साथ किया जा सकता है सरासर गुमराही और अल्लाह पर झूठ बाँधना है।

48. जिन्न (Ginee) अल्लाह ही की पैदा की हुई सृष्टि है जो हमें दिखाई नहीं देती किन्तु अल्लाह की वहय ने हमें इस से अवगत किया है। उन की सृष्टि (रचना) के बारे में देखिए सूरह हिज़्र नोट २५

49. अल्लाह तआला ने जिन्नों के एक गिरोह को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर ध्यानकर्षित कर दिया ताकि वे आप से कुर्आन सुनें। जब उन्होंने ने कुर्आन सुना तो उन्हें यह पहचानने में कोई कठिनाई नहीं हुई कि यह अल्लाह की वहय है अतः बात तुरंत उन के दिल में उतर गई और वे ईमान ले आए। फिर न केवल स्वयं ईमान ले आए बल्कि उस के प्रचारक बन कर अपनी जाति की ओर लौटे और उन्हें ख़बरदार किया। यहाँ इस घटना का उल्लेख प्रस्तुत कर के अभिप्रेत यह स्पष्ट करना है कि कुर्आन का अल्लाह का कलाम होना एक खुली हक्रीकत है। इस को पहचानने में न सदबुद्धि रखने वाले इन्सानों को कोई दिक्कत पेश आती है और न सदबुद्धि रखने वाले जिन्नों को। यह उस का चमत्कारी पहलू है।

सूरह जिन्न में भी जिन्नों के एक गिरोह के कुर्आन के सुनने और उस पर ईमान लाने का वर्णन हुआ है मगर सूरह अहक्राफ़ की इन आयतों में उन को प्रचारक बन कर अपनी जाति को

ख़बरदार करने का भी वर्णन है इस लिए मालूम होता है कि ये दो अलग अलग घटनाएँ हैं। सूरह जिन्न की घटना मक्का के आरम्भिक काल की मालूम होती है और सूरह अहक्राफ़ में बयान की हुई घटना उस के बाद की अर्थात् मक्का के मध्यकाल की। आम तौर से मुफ़स्सिरीन ने इब्ने हिशाम की रिवायत को माना है जिस के अनुसार यह घटना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ताइफ़ के सफ़र से वापसी में नख़ला के स्थान पर घटी थी। परन्तु बुख़ारी और मुस्लिम की हदीसों नख़ला की घटना को सूरह जिन्न के नाज़िल होने से सम्बन्धित बताती हैं और यही बात सही मालूम होती है। (देखिए बुख़ारी किताबुत्तप्सिरी, तप्सिरी सूरह जिन्न और मुस्लिम किताबुस्सलात बाबुलजेहर बिल कुर्आन फ़िस्सुब्बह)

इस लिए सूरह अहक्राफ़ में उल्लिखित घटना को नख़ला की घटना समझना सही नहीं मालूम होता। यह किसी और जगह पर घटी होगी।

ध्यान रहे कि कुर्आन ने कहीं भी यह स्पष्ट नहीं किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिन्नों को देख लिया था और आप की उन से परस्पर बातचीत हुई बल्कि यह पुष्टि करता है कि आप को उन के कुर्आन सुनने की ख़बर वहय के द्वारा दी गई। और बुख़ारी मुस्लिम की हदीसों में भी जो सूरह जिन्न के अवतरण से सम्बन्धित हैं, यही बात बयान हुई है। (अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट २४१)

50. हज़रत मूसा का उल्लेख जिन्नों ने इस लिए किया कि उन को एक व्यापक ग्रंथ तौरात प्रदान हुआ था। ज़बूर और इन्ज़ील का अवतरण इस मूल ग्रंथ के नवीनकरण के लिए हुआ था तथा इस लिए भी कि हज़रत सुलैमान हज़रत मूसा की उम्मत में से थे और जिन्नों को हज़रत सुलैमान के अधीन कर दिया गया था।

51. अर्थात् वह पुष्टि करती है कि तौरात अल्लाह की किताब थी तथा उस की शिक्षा भी वही है जो तौरात की थी।

52. अर्थात् यह सही और सच्ची धारणा प्रस्तुत करती है तथा वह राह दिखाती है जो अल्लाह तक पहुँचने वाली है।

53. मुराद अल्लाह का रसूल है। उस की दअवत को स्वीकार करने में कुर्आन पर ईमान लाना भी शामिल है।

54. अर्थात् रसूल पर ईमान ले आओ।

55. जिस प्रकार मनुष्य गुनाह के काम करता है इसी प्रकार जिन्न भी गुनाह के काम करते हैं। तथा जिस प्रकार ईमान लाने से मनुष्य के वे गुनाह जो वह कर चुका है धुल जाते हैं उसी प्रकार किसी जिन्न के ईमान लाने से उस के गुनाह भी क्षमा कर दिए जाते हैं।

स्पष्ट हुआ कि जिन्न भी अल्लाह के रसूलों और उस की किताबों पर ईमान लाने तथा एक अल्लाह ही की इबादत करने

और अच्छे कर्म करने के ज़िम्मेदार बनाए गए हैं। उन के लिए भी यह जगत उसी तरह परीक्षा स्थल है जिस तरह इन्सानों के लिए। अलबत्ता ज़मीन का खलीफ़ा (प्रतिनिधि अथवा शासक) इन्सान को बनाया गया है न कि जिन्न को। इस लिए दोनों के कर्मक्षेत्र अलग अलग हैं। अतः संभव है कि उन के लिए किसी विस्तृत संविधान (शरीअत) की आवश्यकता न हो और दीन की मौलिक बातों पर अमल करना उन के लिए काफ़ी हो। जैसे अक़ीदा, इबादत, अख़लाक़, हक़ और नेकी की तल्क़ीन और बुराईयों से रोकना आदि। चूँकि जिन्नों का मामला ग़ैब (परोक्ष) से सम्बन्धित है इस लिए उन के बारे में हमें उसी ज्ञान पर संतोष करना चाहिए जो कुर्आन और सही हदीसों के माध्यम से प्राप्त

हो। और अतिरिक्त खोजबीन नहीं करना चाहिए।

56. अल्लाह की दुखदायिनी यातना से मुक्ति अपने आप में बहुत बड़ी सफलता है। रही बात जन्नत की तो जैसा कि सूरह रहमान में जिन्नों और इन्सानों को सम्बोधित करते हुए इर्शाद हुआ है:-

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّاتٌ - (सूरह रूम: ४६)

अर्थ :- “और जो कोई अपने رب के समक्ष खड़ा होने से डरा उस के लिए दो जन्नतें हैं।” (अर्रहमान - ४६)

नेक जिन्नों को भी इनाम स्वरूप जन्नत उसी तरह मिलेगी जिस तरह इन्सानों को मिलेगी और वहाँ दोनों में से प्रत्येक के लिए उस के स्वभावानुकूल ऐश्वर्य का सामान होगा।



और जो अल्लाह की ओर बुलाने वाले की दअवत स्वीकार नहीं करेगा तो उस के बस में नहीं है कि ज़मीन में अल्लाह के क़ाबू से निकल जाए। और न अल्लाह के मुक़ाबले में उस का कोई सहायक होगा। ये लोग खुली गुमराही में पड़े हुए हैं। क्या इन्होंने इस बात पर विचार नहीं किया कि अल्लाह जिस ने आसमान और ज़मीन पैदा किये और जिन के पैदा करने से वह थका नहीं। वह मुर्दों को ज़िन्दा करने पर (पूरी तरह) समर्थ हैं। क्यों नहीं वह हर चीज़ का समर्थ रखता है। (अल-कुर्आन)

32. और जो अल्लाह की ओर बुलाने वाले की दअवत स्वीकार नहीं करेगा तो उस के बस में नहीं है कि ज़मीन में अल्लाह के क़ाबू से निकल जाए।⁵⁷ और न अल्लाह के मुक़ाबले में उस का कोई सहायक होगा। ये लोग खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।⁵⁸

وَمَنْ لَا يُحِبِّ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعِجِرٍ فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ
مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءُ أُولَئِكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٣٢﴾

33. क्या इन्होंने ने इस बात पर विचार नहीं किया कि अल्लाह जिस ने आसमान और ज़मीन पैदा किये और जिन के पैदा करने से वह थका नहीं। वह मुर्दों को ज़िन्दा करने पर (पूरी तरह) समर्थ है। क्यों नहीं वह हर चीज़ का समर्थ रखता है।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ
بِخَلْقِهِنَّ بِقَدِيرٍ عَلَى أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَى بَلَى إِنَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٣﴾

34. जिस दिन⁵⁹ काफ़िर जहन्नम की आग पर पेश किए जाएंगे (उन से पूछा जाएगा) क्या यह सत्य नहीं है ?⁶⁰ वे कहेंगे हाँ, हमारे रब की क़सम (यह निश्चय ही सत्य है) फ़रमाएगा तो चखो अज़ाब का मज़ा अपने कुफ़्र (न मानने) की पादाश में।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ قَالُوا
بَلَى وَرَبِّنَا قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٤﴾

35. इस लिए (ऐ नबी !)सब्र करो जिस तरह दृढ़संकल्प और साहस वाले रसूलो ने सब्र किया और इन के लिए जल्दी न करो।⁶¹ जिस दिन ये लोग उस चीज़ को देख लेंगे जिस का इन से वादा किया जा रहा है तो वे महसूस करेंगे कि जैसे (वे दुनिया में) दिन की एक घड़ी से अधिक नहीं रहे थे।⁶² यह संदेश है। तो नाफ़रमान (उल्लंघनकारी) लोगों के सिवा और कौन तबाह होगा ?⁶³

فَأَصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَأَمْرٍ
كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنْ
نَّهَارٍ بَلَّغْ فَبَلَّغْ يَهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٣٥﴾

57. जिन्नो का मूल ठिकाना ज़मीन ही है। इस लिए फ़रमाया “उस के बस में नहीं कि ज़मीन में अल्लाह के क़ाबू से निकल जाए।”

58. यहाँ जिन्नो का बयान समाप्त हुआ।

59. अर्थात् क्रियामत के दिन।

60. अर्थात् नरक की यातना का तुम इन्कार करते रहे, अब क्या यह तुम्हारे सामने हकीक़त के रूप में मौजूद नहीं है?

61. यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए तथा आप के माध्यम से दीन की दअवत पेश करने वालों को ढारस भी है और उपदेश भी कि जब तुम ने दीन की दअवत को सही

तौर से पेश कर दिया और इस के बाद भी इन्कार करने वाले विरोध पर डटे हुए हैं और ऐसी दुखदायी बातें करते हैं तो तुम इस पर सब्र करो और उन पर अज़ाब (यातना) के लिए जल्दी न करो।

62. व्याख्या के लिए देखिए सूरह यूनुस नोट ७४ और सूरह नाज़िआत नोट ३२

63. अर्थात् यह अल्लाह का पैग़ाम है जो उस के रसूल ने तुम को पहुँचा दिया है। अब जो लोग नाफ़रमान (अवज्ञाकारी तथा उल्लंघनकारी) बन कर रहेंगे वही तबाह होने वाले हैं। इस को स्वीकार करने वाले निश्चित रूप से तबाही और विनाश से बचेंगे।



सूरह मुहम्मद

४७. सूरह मुहम्मद

नाम :- आयत २ में पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का मुबारक नाम आया है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “मुहम्मद” है।

नाज़िल होने का समय :- मदीना में हिज़रत के पहले साल नाज़िल हुई।

केन्द्रीय विषय :- जंग का एलान है उन काफ़ि़रों के विरुद्ध जो अल्लाह की राह से रोकते हैं। उन से मुकाबले के लिए ईमान वालों को आमादा करना और इस सिलसिले में उन को ज़रूरी हिदायतें देना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ३ में इशार्द हुआ है कि काफ़ि़रों और ईमान वालों की कार्य पद्धति और ख़ैया मौलिक रूप से भिन्न है। इस लिए अल्लाह तआला भी उन के साथ अलग अलग मामला करेगा, काफ़ि़रों के कामों को

असफल बना देगा और ईमान वालों का हाल दुरुस्त कर देगा।

आयत ४ से १५ में ईमान वालों को जंग के बारे में निर्देश दिये गए हैं और जान की बाज़ी लगाने वालों का साहस बढ़ाया गया है तथा अपनी आखिरत के बेहतरीन अन्जाम की ख़ुशख़बरी दी गई है।

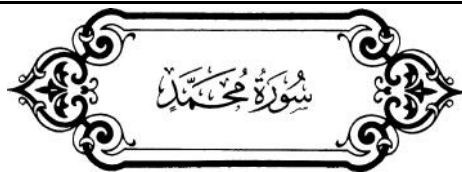
आयत १६ से ३२ में मुनाफ़ि़कों (इस्लाम का ढोंग करने वाले मुसलमानों) का हाल बयान हुआ है जिन पर जिहाद का हुक्म बिजली बन कर गिर रहा था और जो ईमान वालों के मुकाबले में काफ़ि़रों से हमदर्दी रखते थे तथा उन से साँठ गाँठ करते थे।

आयत ३३ से ३८ में आम मुसलमानों को जिहाद की और अल्लाह की राह में ख़र्च करने का प्रोत्साहन दिया गया है।

४७. सूरह मुहम्मद

आयतें : ३८

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जिन लोगों ने कुफ्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका उन के कर्मों को उस ने नष्ट कर दिये।¹

الَّذِينَ كَفَرُوا وَاصْذَوْا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ أَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ①
2. और जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किये और उस (हिदायत) पर ईमान लाए जो मुहम्मद पर नाज़िल की गई है,²---- और वह सत्य है उन के रब की तरफ़ से ---- अल्लाह ने उन की बुराइयाँ उन से दूर कर दीं और उन का हाल दुरुस्त कर दिया।³

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآمَنُوا بِمَا نُزِّلَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ كَفَرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ ②
3. यह इस लिए कि जिन लोगों ने कुफ्र किया उन्होंने ने बातिल (असत्य) का अनुपालन किया⁴ और जो ईमान लाए उन्होंने अपने रब की तरफ़ से आए हुए सत्य का अनुपालन किया। इस तरह अल्लाह लोगों के लिए उन का हाल बयान फ़रमाता है।⁵

ذَلِكَ بِأَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَأَنَّ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَبِّهِمْ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ لِلنَّاسِ أَمْثَالَهُمْ ③
4. अतः जब तुम्हारा मुकाबला काफ़िरों से हो तो उन की गर्दन उड़ा दो, यहाँ तक कि जब ख़ूब क़त्ल कर चुको तो उन को मज़बूत बाँध लो।⁶ इस के बाद या तो एहसान करना है या फ़िदयः (प्राणमूल्य) का मामला करना है।⁷ यहाँ तक कि लड़ाई अपने हथियार डाल दे।⁸ यह है तुम्हारी ज़िम्मेदारी, और अगर अल्लाह चाहता तो ख़ुद ही उन को सजा देता, लेकिन (उस ने यह हिदायत इस लिए दी ताकि) तुम्हें एक दूसरे के द्वारा आजमाए⁹ और जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल हुए उन के कर्मों को वह हरगिज़ नष्ट न करेगा।¹⁰

فَإِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتَّىٰ إِذَا أَتَخْتَرَقْتَهُمْ فَشُدُّوا الْوُثَاقَ فَمَا مَتَّابِعِدُوا وَإِنَّا فِدَاءٌ حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا ۚ ذَٰلِكَ وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَنتَصَّرَ مِنْهُمْ ۚ وَلَٰكِنْ لِّيَبْلُوَ بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَنْ يُضِلَّ أَعْمَالَهُمْ ④
5. वह उन को मार्ग पर लगाएगा और उन की हालत संवारेगा।¹¹

سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ⑤
6. और उन को जन्नत में दाखिल करेगा जिस की पहचान उन को करा दी गई है।¹²

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ⑥

1. यह जिहाद की सूरह है इस लिए सूरह अन्फ़ाल की तरह बिना किसी भूमिका के शुरू हुई है। मतलब यह कि यह काफ़िरों के वास्ते प्रकोप बन कर अवतारित हुई है।

अल्लाह के रास्ते से रोकने का मतलब लोगों को इस्लाम स्वीकार करने से रोकना, दअवत और तब्लीग़ (प्रचार एवं प्रसार) के काम में रुकावट खड़ी करना, मुसलमानों को इस बात के लिए विवश करना कि वे इस्लाम के आदेशों पर अमल न करें। मक्का के काफ़िरों ने इस्लाम दुश्मनी ही में मुसलमानों को मक्का छोड़ने पर विवश किया था और उन के मदीना हिजरात कर जाने के बाद उन के विरुद्ध जंग की आग भड़का रहे थे। कुर्आन ने बतलाया कि काफ़िरों के सारे कर्म अकारत जाने वाले हैं अर्थात् न तो उन की ये साजिशें कामयाब होने वाली हैं और न उन का कोई कर्म अल्लाह के यहाँ स्वीकृत होने वाला है। अतः कुर्आन की यह भविष्यवाणी पूरी हुई और उन की वे सारी तदबीर उलटी पड़ीं जो वे अल्लाह के रसूल और उस के लिए हुए हक़ (सत्य) के विरुद्ध कर रहे थे।

ध्यान रहे कि जिस बात का घटित होना भविष्य में सुनिश्चित होता है उस को कुर्आन इस तरह बयान करता है कि जैसे वह अतीत की घटना हो। इसी लिए यहाँ फ़रमाया “उन के कर्मों को उस ने नष्ट (अकारथ) कर दिये” अर्थात् निश्चित रूप से वे अकारथ हो जाने वाले हैं।

2. अर्थात् ईमान और अच्छे कर्म उसी अवस्था में स्वीकार्य हैं जब कि अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर जो हिदायत नाज़िल हुई है उस पर भी ईमान लाया जाए। आप के नबी नियुक्त हो जाने के बाद आप पर ईमान न लाना और उस हिदायत को स्वीकार न करना जो कुर्आन के रूप में आप पर नाज़िल हुई है, कुफ़्र है, और कुफ़्र के साथ न तो ईमान स्वीकृत होगा और न अच्छे कर्म।

3. अर्थात् अल्लाह उन सच्चे मोमिनों के गुनाहों को क्षमा कर देगा और उन की दीनी, अख़लाक़ी, और दुनियावी हालात दुरुस्त कर देगा।

कुर्आन की यह भविष्यवाणी भी पूरी हुई। कुर्आन पर ईमान लाने वालों के जीवन सँवर गए और उन के हालात बेहतर से बेहतर होते चले गए।

4. कुर्आन सत्य है, अर्थात् अल्लाह की सच्ची हिदायत है इस लिए उस को छोड़ कर किसी भी चीज़ का अनुपालन करना असत्य का अनुपालन करना है।

5. अर्थात् प्रत्येक गिरोह का हाल अलग अलग बयान फ़रमाता है ताकि लोग काफ़िरों और मोमिनों में अन्तर करें और दोनों को एक जैसा न समझें।

6. यह आदेश जंग (युद्ध) से सम्बन्धित है तथा यह जंग

जैसा कि ऊपर की आयतों से स्पष्ट है सत्य का अनुपालन करने वालों की अल्लाह की राह में जंग है, उन असत्य प्रेमियों के विरुद्ध जो अल्लाह की राह (इस्लाम) से लोगों को रोकते हैं और उस के दीन के विरुद्ध षडयंत्र रचते हैं तथा उपद्रव पैदा करते हैं। इस जंग का पारिभाषिक नाम जिहाद है जो इस्लाम में एक पवित्र एवं अनिवार्य दायित्व है उन शर्तों के साथ जो शरीअत ने बयान की हैं।

इस आयत में हिदायत दी गई है कि जब काफ़िरों से जंग करना पड़े और उन से मुठभेड़ हो जाए तो उन को निःसंकोच क़त्ल कर दो यहाँ तक कि ख़ूब लोग मार दिए जाएँ। यहाँ ख़ून बहाना उन का जोर तोड़ने और उन के प्रताप एवं महिमा को समाप्त करने के लिए आवश्यक है। इस लिए इस मामले में नमीं बरतने का सवाल पैदा ही नहीं होता। जब अच्छी तरह उन्हें मार चुको तो फिर उन्हें गिरफ़्तार करना तथा बंधक बनाना शुरू करो।

यह हिदायत बद्र की जंग से पहले दी जा चुकी थी किन्तु बद्र की जंग में मुसलमानों के एक गिरोह से यह ग़लती हो गई कि उस ने काफ़िरों को अच्छी तरह कुचल देने से पहले ही गिरफ़्तारी का सिलसिला शुरू किया जिस पर सख़्ती से पकड़ हुई। देखिए सूरह अन्फ़ाल आयत ६७, ६८ और नोट १०२

7. अर्थात् बाद में जंगी कैदियों के साथ दो में से एक मामला किया जाए। या तो उन को एहसान के तौर पर रिहा कर दिया जाए या फ़िदयः ले कर उन की रिहाई कर दी जाए। इस्लामी शासन दोनों में से जिस तरीक़े को उचित समझे अपना सकती है। अगर एहसान के तौर पर रिहा करने में यह मसलहत नज़र आती हो कि वे इस का अच्छा प्रभाव स्वीकार करेंगे और इस्लाम से करीब होंगे तो यह सूरत प्राथमिक है। बनी अलमुस्तलक की जंग शाबान सन ६ हिजरी के बाद उस क़बीले के समस्त कैदियों को मुसलमानों ने आज़ाद कर दिया था। (सीरत इब्ने हिशाम जिल्द ३ पृष्ठ ३४०) हुनैन की जंग के बाद हवाज़न क़बीला के ६ हज़ार कैदी बिनी किसी मुआवज़े (प्राणमूल्य) के वापस कर दिये गए। (किताबुलअमवाल अबू उबैदा पृष्ठ ११७) यमामा का सरदार सुमामा बिन उसाल जब बिरफ़्तार हो कर आया तो मस्जिदे नबवी में उसे कैद कर दिया गया ताकि वह इस्लाम से परिचित हो। वह फ़िदयः (प्राण-मूल्य) देने के लिए तैयार था किन्तु आप ने कुछ दिनों बाद उसे बिना प्राण मूल्य (फ़िदयः) के रिहा कर दिया। इस व्यवहार से प्रभावित हो कर उस ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। (बुख़ारी किताबुलमग़ाज़ी) किन्तु यदि दुश्मन ने मुसलमानों को कैदी बना लिया हो और उन का आदान प्रदान उन जंगी कैदियों के साथ हो सकता हो या उन जंगी कैदियों से कोई ख़ास ख़िदमत ले कर या मुआवज़ा ले कर उन को रिहा करना अधिक उचित हो तो यह सूरत भी

अपनाई जा सकती है। बद्र के जंगी कैदियों को मुआवज़ा ले कर या लिखना पढ़ना सिखाने की खिदमत ले कर रिहा कर दिया गया था। (सीरत इब्ने हिशाम जिल्द २ पृष्ठ ३०६ किताबुल अमवाल पृष्ठ ११६)

कुर्आन की इस हिदायत से स्पष्ट हुआ कि इस्लाम जंगी कैदियों को लंबी मुद्दत तक कैद रखना या उन्हें उम्र कैद की सज़ा देना पसंद नहीं करता। उसी प्रकार यह बात भी पसंदीदा नहीं है कि कैदियों को क़त्ल कर दिया जाए। कुछ अपवादिक स्थितियाँ ऐसी हो सकती हैं जिस में ऐसा करने की गुन्जाइश है अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बद्र के जंगी कैदियों में से उक्बा बिन अबी मुएत और नज़्र बिन हारिस को जो काफ़िरों के लीडर और भयावह क्रिस्म के उपद्रवी थे क़त्ल कर दिया था। (सीरत इब्ने हिशाम जिल्द २ पृष्ठ २८६) इसी प्रकार बनी कुर्आज़ा के मर्दों को क़त्ल कर दिया गया था क्योंकि उन्होंने गद्दारी की थी और मदीना के आस पास रहते हुए वे साजिशें रच रहे थे।

रही बात जंगी कैदियों को गुलाम बनाने (इस्तिस्काक़) का मामला तो कुर्आन ने इस का आदेश नहीं दिया और इस आयत में जो दो सूरतें पेश की गई हैं कि या तो एहसान के तौर पर रिहा कर दो या प्राण मूल्य (फ़िदयः) के बदले, तो इस से स्पष्ट होता है कि इस्लाम का सामान्य नियम यही है और लौंडी, गुलाम बनाने का जो सबूत रिवायतों से मिलता है वह एक अपवादिक स्थिति के अनुसार किया गया मामला था। जिस की गुन्जाइश विशेष परिस्थितियों में रखी गई थी, और जहाँ तक अरब वासियों का सम्बन्ध है उन के किसी पुरुष को गुलाम नहीं बनाया गया था अतः अबू उबैदा लिखते हैं।

“ये जंगी कैदियों के अहकाम हैं या’नी एहसान के तौर पर या मुआवज़ा ले कर रिहा करना, या क़त्ल करना, और यह अरबों के लिए ख़ास है, क्योंकि उन के मर्दों को गुलाम नहीं बनाया जा सकता। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत यही रही है। आप ने उन के किसी मर्द को गुलाम नहीं बनाया। इसी तरह हज़रत उमर ने भी उन के मामले में यही फ़ैसला फ़रमाया” (किताबुलअमवाल पृष्ठ १३३)

और अब जब कि दुनिया से गुलामी का प्रचलन समाप्त हो गया है, जिस को समाप्त करना इस्लाम के महत्वपूर्ण उद्देश्यों में शामिल था तो यह गुन्जाइश भी बाक़ी नहीं रही। इस मसले पर अस्सय्यद साबिक़ ने फ़िक्हुसुन्नः में बड़ी अच्छी रौशनी डाली है लिखते हैं :-

“कुर्आन करीम में कोई नस (स्पष्ट आदेश) ऐसी वारिद नहीं हुई है जो गुलामी को जायज़ करार देती हो। अलबत्ता इस में गुलामों को आज़ाद करने की दअवत ज़रूर दी गई है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी यह साबित नहीं है कि आप

ने किसी कैदी को गुलाम बनाया हो। और यह वाक़िआ है कि आपने मक्का के गुलामों, बनी अलमुस्तलक़ के गुलामों और हुनैन के गुलामों को आज़ाद कर दिया था और यह भी साबित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़माना-ए-जाहिलिय्यत के उन गुलामों को जो आप के पास थे आज़ाद कर दिया था, इसी तरह उन को भी आज़ाद कर दिया था जो आप के लिए हदयतन (उपहार स्वरूप) भेजे गए थे। अलबत्ता खुलफ़ा-ए-राशिदीन से साबित है कि उन्होंने ने कुछ जंगी कैदियों को गुलाम बनाया था जो बराबरी का मामला करने के क़ायदे के मुताबिक़ था। तो उन्होंने ने गुलामी की तमाम सूरतों को जायज़ नहीं रखा जैसा कि मज़हबी और रिवाजी क़वानीन में अमल दरामद हो रहा था बल्कि इस को जंग की हद तक महदूद कर दिया था, जो मुसलमानों की तरफ़ से शरअी तरीक़े पर एलान के साथ काफ़िर दुश्मनों के खिलाफ़ लड़ी गई हो और दूसरी तमाम सूरतों को उन्होंने ने साक़ित कर दिया और उन को शरअन हराम करार दिया कि किसी हाल में जायज़ नहीं। (फ़िक्हु सुन्नः जिल्द २ पृष्ठ ६८८)

सैय्यद कुत्ब ने भी गुलाम बनाने को उस समय की विशेष परिस्थितियों ही के अन्तर्गत समझा है और स्पष्ट किया है कि यह इस्लाम का कोई सामान्य नियम नहीं है। लिखते हैं :-

“जब नई सूरत यह पैदा हो गई है कि जंग लड़ने वाले सब लोग कैदियों को गुलाम न बनाने पर मुत्तफ़िक़ हो गए हैं तो इस्लाम अपने ईजाबी क़ायदे की तरफ़ औद कर आया (अर्थात् पलट आया) और वह है

فَإِمَّا مِّنَّا بَعْدَ وَ إِمَّا فِدَاءً

(फिर या तो एहसान रख कर छोड़ देना है या फ़िदयः ले कर) लिहाज़ा गुलाम बनाना (इस्तिस्काक़) न लाज़िम है और न उन क़वायद में से है जो इस्लाम में कैदियों के साथ मामला करने से मुत्तआल्लिक़ है” (फ़ी ज़िलालिल कुर्आन जिल्द ६ पृष्ठ ३२८५) ध्यान रहे कि आयत में जंग की सूरत में काफ़िरों को कैद करने और फिर एहसान के तौर पर या फ़िदयः (प्राण मूल्य) ले कर रिहा करने का जो आदेश दिया गया है वह हर प्रकार के काफ़िरों के लिए है चाहे वे बहुदेववादी हों या अहले किताब। किन्तु बाद में अरब के बहुदेववादियों के सिलसिले में जिन के अन्दर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नियुक्त हुए थे यह आदेश आया कि :-

فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرْمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُواهُمْ وَأَحْضَرُواهُمْ وَأَقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصِدٍ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ. (التوبة: ५)

अर्थ :- “फिर जब हुर्मत वाले महीने गुज़र जाएं तो इन बहुदेववादियों को जहाँ पाओ क़त्ल करो और उन्हें पकड़ो और घेरो और घात में उन की ताक में बैठे रहो, अलबत्ता अगर वे तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो उन्हें छोड़ दो ।” (सूरह तौबा - ५)

व्याख्या के लिए देखिए सूरह तौबा नोट. ९

यह आदेश अरब के बहुदेववादियों के लिए ख़ास था इस लिए कोई कारण नहीं कि सूरह मुहम्मद की इस आयत को जिस में सामान्य नियम बयान हुआ है निरस्त समझा जाए। जिन मुफ़स्सिरीन ने इसे मन्सूख (निरस्त) कहा है उन के मत से सहमति व्यक्त नहीं की जा सकती।

8. अर्थात् उन को गिरफ़्तार करने का सिलसिला जारी रखो जब तक कि जंग समाप्त न हो जाए।

9. अर्थात् अल्लाह चाहता तो काफ़िरों को कोई आफ़त नाज़िल कर के तबाह कर सकता था किन्तु उस की मसलहत यह हुई कि ईमान वालों के हाथों काफ़िरों को कुचल दिया जाए ताकि ईमान वाले इस आजमाइश में पड़कर ऊँचे दर्जे प्राप्त कर सकें

और काफ़िरों को या तो तौबा का मौक़ा मिले या फिर वे अपना बुरा अन्जाम दुनिया ही में देख लें।

10. अर्थात् जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल हों उन की मेहनत अकारथ जाने वाली नहीं । वे खोएँगे नहीं बल्कि पाएँगे। उन के कर्म स्वीकार्य ठहरेंगे और उन्हें उन का अच्छा सिला मिलेगा ।

11. अर्थात् जब उन्होंने ने अल्लाह की राह में जान दे दी तो मर खप नहीं गए बल्कि अमर हो गए। अल्लाह उन को सफलता की मन्ज़िल तक पहुँचाएगा और उन को सम्मान और बुलन्दी प्रदान करेगा।

12. अर्थात् कुर्आन ने जन्नत का जिस तरह परिचय कराया है उन ही विशेषताओं भरी जन्नत में उन्हें दाख़िल करेगा। कुर्आन ने जन्नत का जो नक्शा खींचा है वे न स्वप्नलोक की बातें हैं न कल्पनालोक की और न उस में ऐसी कोई अतिशयोक्ति है बल्कि वह सरासर हक़ीक़त है इस लिए जिन लोगों से इस का वादा किया गया है वे इस को एक हक़ीक़त के रूप में पायेंगे और ठीक उस तरह पायेंगे जिस तरह दुनिया में उन्हें उस का परिचय दे दिया गया था।



7. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो ! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे ¹³ तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा। ¹⁴

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَصُرُوا اللَّهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُخْلِثَكُمْ
أَقْدَامَكُمْ ④

8. जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए विनाश है और उस ने (अल्लाह ने) उन के कर्म नष्ट कर दिए। ¹⁵

وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعْسًا لَهُمْ وَأَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ⑤

9. यह इस लिए कि उन्होंने ने उस (हिदायत) को नापसंद किया जो अल्लाह ने नाज़िल की है। अतः उस ने उन के कर्म अकारथ कर दिए। ¹⁶

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أُنْزِلَ اللَّهُ فَاحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ⑥

10. क्या ये लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि देखते क्या अन्जाम हुआ उन लोगों का जो उन से पहले गुजर चुके हैं। उल्लाह ने उन को तबाह कर के रख दिया। और काफ़िरो के लिए ऐसी ही सजाएँ हैं। ¹⁷

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ دَمَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلِلْكَافِرِينَ أَمْثَالُهَا ⑦

11. यह इस लिए कि अल्लाह ईमान लाने वालों का संरक्षक (कर्ता धर्ता) है और काफ़िरो का संरक्षक कोई नहीं। ¹⁸

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَّ الْكَافِرِينَ
لَا مَوْلَى لَهُمْ ⑧

12. निस्संदेह उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किये, जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी। और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वे (दुनिया के) मज़े उठा रहे हैं और इस तरह खा रहे हैं जिस तरह जानवर खाते हैं। ¹⁹ उन का ठिकाना जहन्नम है।

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَنَبَّهُونَ وَيَأْكُلُونَ
كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ⑨

13. और कितनी ही बस्तियाँ हैं जो ताक़त में तुम्हारी इस बस्ती से बढ़कर थीं जिस ने तुम को (ऐ नबी !) निकाला है। ²⁰ हम ने उन को विनष्ट कर दिया तो कोई उन को बचाने वाला न हुआ।

وَكَايْنٍ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجْتَكُ
أَهْلَكْنَاهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ⑩

14. क्या वे लोग जो अपने रब की ओर से खुली दलील पर हैं ²¹ उन लोगों की तरह हो जाएंगे जिन का बुरा कर्म उन की दृष्टि में शोभायमान बना दिया गया है और वे अपनी इच्छाओं के पीछे चल रहे हैं ?

أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّهِ كَذَّبَ لَهُ سُلُوكُهُ
وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ⑪

13. अल्लाह की मदद करने से तात्पर्य अल्लाह के दीन की मदद करना और उस के कलिमे को बुलन्द करने के लिए सर धड़ की बाज़ी लगाना है। यह अल्लाह की ओर से मनुष्य का सम्मान है कि वह इस सेवा को अपनी सहायता बताता है वरना जाहिर है अल्लाह किसी की मदद का मोहताज नहीं और सब बन्दे उस की मदद के मोहताज हैं।

14. अर्थात् दीन की सहायता हेतु तुम जो क्रदम भी उठाओगे अल्लाह की सहायता साथ होगी। वह तुम्हारे हौसले बढ़ाएगा और तुम्हें दृढ़ता पूर्वक जमे रहने की तौफ़ीक़ प्रदान करेगा।

15. अर्थात् उन के प्रयास निष्फल रहे और उन का किया कराया सब अकारथ गया।

16. अर्थात् यदि उन्होंने ने कुछ अच्छे काम किये थे तो कुफ़्र के चलते निष्फल हो कर रह गए। नेकी की स्वीकृति के लिए ईमान शर्त है।

17. अर्थात् इन काफ़िरों को भी अगर वे कुफ़्र से बाज़ नहीं आए ऐसे ही किसी अज़ाब का सामना करना होगा जो फ़ुक्र करने वाली पिछली जातियों पर आए थे।

18. उहद की जंग में जो इस सूरह के नाज़िल होने के

लगभग दो वर्ष बाद नाज़िल हुई, काफ़िरों ने जब अपने बुत उज़्ज़ा की जय लगाई कि لَنَا الْعَزَىٰ وَلَا عَزَىٰ لَكُمْ (हमारे लिए उज़्ज़ा है और तुम्हारे लिए कोई उज़्ज़ा नहीं) तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब में फ़रमाया

اللَّهُ مَوْلَانَا وَلَا مَوْلَىٰ لَكُمْ

अर्थ :- “ अल्लाह हमारा मौला है और तुम्हारा कोई मौला (स्वामी) नहीं ।”

19. अर्थात् केवल पेट के जानवर बन कर रह गए हैं कि खाएँ पियें और मर खप जाएँ। उन्हें इस बात का कोई एहसास नहीं कि जीवन का एक उच्च उद्देश्य है और खाना पीना तो बस जीवन शक्ति प्राप्त करने के लिए है।

20. अर्थात् मक्का वालों ने तुम्हें वहाँ से हिज़रत करने पर मजबूर किया। यह मज़मून बता रहा है कि ये सूरह हिज़रत के बाद नाज़िल हुई है।

21. अर्थात् जिन्होंने ने अपना रास्ता और अपना विचार, ज्ञान और सूझ बूझ के आधार पर निर्धारित किया है और यह ज्ञान और सूझ बूझ की रौशनी उन्हें अपने स्वभाव से भी प्राप्त हुई है और अल्लाह की उतारी हुई किताब से भी ।



15. उस जन्नत की विशेषता जिस का मुत्तक्रियों (परहेजगारों) से वादा किया गया है यह है कि उस में ऐसे पानी की नहरें बह रही होंगी जिस में कोई बदलाव न होगा ²² और नहरें दूध की जिस का स्वाद नहीं बदलेगा ²³ और नहरें ऐसी शराब की जो पीने वालों के लिए अत्यंत स्वादिष्ट होगी। ²⁴ और नहरें साफ़, स्वच्छ शहद की। ²⁵ वहाँ उन के लिए हर प्रकार के फल होंगे ²⁶ और उन के रब की ओर से क्षमा! ²⁷ क्या ऐसे लोग उन लोगों की तरह होंगे जो हमेशा जहन्नम में रहने वाले हैं और जिन को ऐसा गर्म पानी पिलाया जाएगा जो उन की आँतें काट कर रख देगा। ²⁸

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِنْ مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِنْ خَمْرٍ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِنْ عَسَلٍ مُصَفًّى وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفُورَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ⑮

16. इन में कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं किन्तु जब तुम्हारे पास से निकलते हैं तो उन लोगों से जिन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ है पूछते हैं कि (रसूल ने) अभी अभी क्या फ़रमाया ²⁹? ये वे लोग हैं जिन के दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है ³⁰ और ये अपनी इच्छाओं के पीछे चल रहे हैं। ³¹

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ حَتَّى إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِندِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ الْأِنْفَاءُ أُولَئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ⑯

17. और जिन लोगों ने हिदायत की राह अपनाई अल्लाह ने उन की हिदायत में वृद्धि कर दी ³² और उन्हें उन के हिस्से का तक्रवा (ईश-भय) प्रदान किया। ³³

وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَآتَاهُمْ تَقْوَاهُمْ ⑭

18. अब क्या ये लोग क्रियामत की प्रतीक्षा में हैं कि उन पर अचानक आ जाए? उस के चिन्ह तो ज़ाहिर हो चुके हैं। ³⁴ जब वह आ जाएगी तो उन के लिए नसीहत हासिल करने का मौक़ा कहाँ बाक़ी रह जाएगा।

فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا فَأَنَّى لَهُمْ إِذَا جَاءَتْهُمْ ذِكْرُهُمْ ⑰

19. तो जान लो ³⁵ कि अल्लाह के सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं। और अपनी ग़लतियों के लिए माफ़ी माँगो ³⁶ और मोमिन मर्दों और औरतों के लिए भी। अल्लाह तुम्हारे चलने फिरने को जानता है और तुम्हारे ठिकाने को भी। ³⁷

فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوَاكُمْ ⑱

22. दुनिया के पानी में मिट्टी और वनस्पति आदि पदार्थों की मिलावट से किरकिराहट भी पैदा होती है और गंध भी किन्तु जन्नत में ऐसे पानी की नहरें होंगी जिस में कभी कोई खराबी पैदा होने वाली नहीं।

23. दुनिया में दूध जानवरों के थनों से निकलता है और कुछ देर बाद खराब होने लगता है लेकिन जन्नत में तो दूध की नहरें बह रही होंगी और वह भी ऐसे दूध की जिन में कभी कोई खराबी पैदा होने वाली नहीं। उस का स्वाद हमेशा अच्छा ही रहेगा।

24. दुनिया की शराब में सड़ने की गंध भी होती है और कड़वाहट भी किन्तु जन्नत की शराब इतनी उम्दा और अच्छी होगी कि पीने वालों के लिए स्वाद ही स्वाद और आनन्द ही आनन्द। उस की मात्रा भी कम नहीं होगी क्यों कि उस की नहरें बह रही होंगी।

25. दुनिया में शहद मक्खियों से प्राप्त किया जाता है जिस में मोम आदि की मिलावट होती है किन्तु जन्नत में ऐसा शहद मिलेगा जो हर प्रकार की मिलावट से पाक और बिलकुल साफ और स्वच्छ होगा तथा उस की मात्रा भी कम न होगी क्यों कि उस की नहरें बह रही होंगी। जिस हस्ती ने यह चीजें पैदा की हैं उस के लिए उस की नहरें बहा देना कुछ भी मुश्किल नहीं और न यह बात मुश्किल है कि उन को पाक साफ़, अपरिवर्तनीय उत्तम और अत्यंत स्वादिष्ट बनाया जाए। यह बात बुद्धि को अपील करती है, स्वाभाव इस की माँग करता है और दिल इस खुशखबरी पर बाग बाग हो जाता है।

26. अर्थात् जहाँ पीने के लिए उत्तम और स्वादिष्ट चीजें मिलेंगी वहाँ खाने के लिए भी हर प्रकार के उत्तम फल मिलेंगे।

27. अर्थात् अल्लाह की तरफ़ से क्षमा उस की सब से बड़ी कृपा होगी। ज़ाहिर है अज़ाब से मुक्ति पाना उस की समस्त नेमतों की प्राप्ति पर भारी है।

28. अर्थात् मुत्तकियों (परहेज़गारों) को तो खाने पीने की बेहतरीन नेमतें मिल जाएंगी किन्तु काफ़िरों को खौलता हुआ पानी मिलेगा जिस से उन की आँतें कट जाएंगी। दोनों का अन्जाम बिलकुल अलग अलग है। खुदा से डरते हुए जीवन गुज़ारने वाले न अपने आचरण एवं गुण की दृष्टि से समान हैं और न अपने अन्जाम की दृष्टि से।

29. यह हाल मदीने के मुसलमानों का बयान हुआ है जो यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस में शरीक होते थे किन्तु रसूल के कहने तथा उन के आदेशों से उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी। उन्होंने ने बे सोचे समझे किसी न किसी मसलहत से इस्लाम स्वीकार किया था इस लिए वे न अपने ईमान में सच्चे थे और न उन्हें मुसलमानों से सच्ची हमदर्दी थी।

उन के दिलों में कुफ़्र था और वे काफ़िरों से साँट गाँठ रखते थे। ऐसे लोगों को मुनाफ़िक़ कहा जाता है। वे नबी की मजलिस से निकलते तो जानने (ज्ञान रखने) वालों से पूछते कि क्या बात कही गई है। उन का यह सवाल बात के समझने के लिए नहीं बल्कि आश्चर्य जताने के लिए होता था कि आप क्या फ़रमा रहे हैं हमारी समझ से परे है।

आयत में ज्ञान से तात्पर्य कुआन और अल्लाह के रसूल के कथनों का ज्ञान है। और जिस को यह ज्ञान प्राप्त हुआ उस को बहुत बड़ी दौलत प्राप्त हुई।

30. अर्थात् वे अल्लाह के उस क़ानून की पकड़ में आ गए जो उस ने गुमराही पर हट करने वालों के लिए निर्धारित कर रखा है। अब उन में सत्य स्वीकार करने की क्षमता बाक़ी नहीं रही।

31. अल्लाह तआला दिल पर मुहर तभी लगाता है जब कि आदमी बुद्धि और सूझ बूझ से काम लेने और ज्ञान की रौशनी में चलने के लिए आमादा नहीं होता और अपने अन्तर्मन की बागडोर अपनी इच्छाओं के हाथ में दे देता है।

32. अर्थात् जिन लोगों ने अपनी इच्छाओं के पीछे न चलते हुए अल्लाह की हिदायत को स्वीकार कर लिया अल्लाह उन की हर हर क़दम पर रहनुमाई करता रहा है और उन की सूझ बूझ बढ़ती ही रहती है।

33. अर्थात् उन को उन के प्रयासों के हिसाब से तक्रवा (ईश-भय) की तौफ़ीक़ प्रदान हुई है।

34. क्रियामत के जो चिन्ह ज़ाहिर हो चुके हैं उन में सब से बड़ा चिन्ह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अन्तिम संदेश की हैसियत से नियुक्ति है। हदीस में आता है कि :-

قَالَ بِأُصْبَعَيْهِ هَكَذَا بِالْوُسْطَىٰ وَالَّتِي تَلَيْهَا: بُعِثْتُ أَنَا
وَالسَّاعَةُ كَهَاتَيْنِ. (تفسير ابن كثير ج ٢ ص ٤٤٤ برواية البخاري)

अर्थ :- “आप ने अपनी दो उंगलियों (बीच की उंगली और उस के साथ वाली उंगली) से इशारा करते हुए फ़रमाया कि मैं और क्रियामत इस तरह साथ साथ भेजे गए हैं। (तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द ४ पृष्ठ ७७ बुखारी के हवाले से)

अर्थात् मेरे बाद अब क्रियामत ही है, कोई और नबी आने वाला नहीं। मतलब यह कि आप के रूप में दुनिया को अन्तिम चेतावनी दी गई। दूसरा बड़ा चिन्ह कुआन का अवतरण है। अल्लाह की तरफ़ से मनुष्य की हिदायत के लिए एक संपूर्ण ग्रंथ आ जाने के बाद जिस की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी भी अल्लाह तआला ने ले रखी है, लोगों पर अल्लाह की हुज्जत पूरी तरह क़ायम हो जाती है। इस के बाद अगर कोई चीज़ बाक़ी रह जाती

है तो वह फ़ैसले की घड़ी है जिस का नाम क्रियामत है।

तीसरा बड़ा चिन्ह इन्सानी सोसाइटी का आम बिगाड़ है जो रोज़ बरोज़ बढ़ता ही जा रहा है और उन ऐतिहासिक घटनाओं से लोगों ने कोई सबक नहीं लिया जो बिगाड़ फैलाने वाली क्रौमों के बुरे अन्जाम का चित्रण प्रस्तुत करती हैं। बिगाड़ का यह तूफ़ान जब अपनी चरमसीमा (इन्तिहा) को पहुँचेगा तो दुनिया का मिटना सुनिश्चित है क्योंकि कि इन्सानी सोसाइटी जब ख़ैर और भलाई से बिल्कुल ख़ाली हो जाएगी तो शर (बुराई) रह जाएगा और अल्लाह का प्रकोप क्रियामत के रूप में बुरे लोगों पर ही भड़कने वाला है।

चौथा बड़ा चिन्ह ज़मीन का अन्याय और अत्याचार से भर जाना है। मज़लूमों की आहें फ़रियाद करती हैं कि अल्लाह की अदालत जल्द बरपा हो इस लिए अदालत का दिन निकट से निकटतम होता जा रहा है।

इन के अलावा कितने चिन्ह और लक्षण हैं जो क्रियामत के बिल्कुल करीबी ज़माने में प्रकट होंगे और जिन की भविष्यवाणी कुर्आन और सही हदीसों में की गई है जैसे याजूज माजूज की

यलगार, दाब्बतुल अर्ज का निकलना, ईसा अलैहिस्सलाम का उतरना पश्चिम से सूरज का उदय होना आदि।

35. अर्थात् अच्छी तरह मन में बिठा लो।

36. यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से संबोधन है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने कूसूरों पर क्षमायाचना करने की जो हिदायत हुई है उस की व्याख्या सूरह मोमिन नोट ७९ में गुजर चुकी है हदीस में आता है कि आप दिन में सौ बार क्षमा याचना किया करते थे।

قَالَ إِنَّهُ لَيُفَانُ عَلَى قَلْبِي وَإِنِّي لَا سَتَغْفِرُ اللَّهُ

فِي الْيَوْمِ مِائَةً مَرَّةً. (مسلم کتاب الذکر)

अर्थ : “आपने फ़रमाया मेरे दिल पर ग़फ़लत तारी हो जाती है और मैं दिन में सौ बार अल्लाह से क्षमा याचना करता हूँ।” (मुस्लिम किताबुज्जिक्र)

37. अर्थात् अल्लाह की नज़र तुम्हारी हरकतों पर भी है और वह तुम्हारी मन्ज़िल को भी जानता है। अतः उस से डरते रहो।



ईमान लाने वाले कह रहे थे कि एक सूरह (जिस में जिहाद का आदेश दिया गया हो) क्यों नहीं उतारी जाती? परन्तु जब एक क्रतई आदेश वाली सूरह उतारी गई जिस में क्रिताल (जंग) का ज़िक्र है तो तुम ने देखा कि जिन के दिलों में रोग है वे तुम्हारी तरफ़ इस तरह देख रहे हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी छायी हो। तो अफ़सोस है उन पर । (अल-कुआन)

20. ईमान लाने वाले कह रहे थे कि एक सूरह (जिस में जिहाद का आदेश दिया गया हो) क्यों नहीं उतारी जाती ? परन्तु जब एक क़तई आदेश वाली सूरह उतारी गई जिस में क़िताल (जंग) का ज़िक्र है तो तुम ने देखा कि जिन के दिलों में रोग है वे तुम्हारी तरफ़ इस तरह देख रहे हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी छायी हो।³⁸ तो अफ़सोस है उन पर ।

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نَزَّلَتْ سُورَةٌ فَإِذَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ مُحْكَمَةٌ وَذُكِرَ فِيهَا الْقِتَالُ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ ۞

21. (उन के लिए सही रवैया) अनुपालन करना और उच्छी बात कहना था। और जब कतई आदेश दिया गया तो अगर वे अल्लाह के प्रति सच्चे होने का सबूत देते तो उन्ही के हक़ में बेहतर होता।³⁹

طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ فَلَوْصَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ ۞

22. और अगर तुम मुँह फेरते हो तो इस के सिवा तुम से क्या आशा की जा सकती है कि ज़मीन में फ़साद बरपा करोगे और ख़ूनी रिश्तों को काट डालोगे।⁴⁰

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتَقَطَّعُوا أَرْحَامَكُمْ ۞

23. यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, और उन को बहरा तथा उन की आँखों को अंधा कर दिया।⁴¹

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعَمَّى أَبْصَارَهُمْ ۞

24. क्या ये लोग कुर्आन पर ग़ौर नहीं करते ? या दिलों पर इन के ताले पड़े हुए हैं ?⁴²

أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ۞

25. जो लोग हिदायत (सीधा मार्ग) स्पष्ट हो जाने के बाद फिर गए, शैतान ने उन को पट्टी पढ़ाई और उन के लिए उम्मीदों का सिलसिला लम्बा कर दिया।⁴³

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ۞

26. यह इस लिए हुआ कि उन्होंने ने अल्लाह की नाज़िल की हुई हिदायत को नापसंद करने वालों से कहा कि कुछ मामलों में हम तुम्हारी बात मानेंगे।⁴⁴ अल्लाह उन की राज़दारी को जानता है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأُمْرِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَسْرَارَهُمْ ۞

38. अर्थात् जिहाद का आदेश सुन कर मुनाफ़िकों पर मौत की बेहोशी छा गई। अल्लाह की राह में जान की बाज़ी वह व्यक्ति लगा सकता है जो अपने ईमान में सच्चा हो। जिस को अपनी जान प्यारी हो वह क्यों जान न्योछावर करने की तमन्ना करेगा?

39. अर्थात् जब जंग का कतई आदेश (Final Order) दिया गया तो उन लोगों के लिए ज़रूरी था कि उस को दिल से स्वीकार करते और उस के लिए कोई क़दम उठाते। अगर वे ऐसा करते तो यह उन ही के लिए बेहतर होता।

40. अर्थात् तुम से अल्लाह और उस के रसूल के अनुपालन का मुतालबा किया जा रहा है जो तुम्हें अप्रिय है हालाँकि ख़ैर और भलाई का काम इस के अनुपालन ही के द्वारा अन्जाम पा सकता है। अवज्ञा एवं उल्लंघन करने की स्थिति में आदमी बुराई और फ़ितने का काम भलाई समझ कर करने लगता है। अपने स्वार्थ के चलते नातेदारों के साथ बुरा सुलूक करता है और इन्सानी भाइचारे के संबन्धों को काट कर रख देता है।

अल्लाह और उस के रसूल के अनुपालन में मुँह फेरने का ही यह परिणाम है कि आज दुनिया में फ़साद बरपा है। भाई भाई का गला काट रहा है और इन्सानी भाईचारा के सम्बन्ध को तोड़ा जा रहा है। अशान्ति और युद्ध ने इन्सानों का सुकून ग़ारत कर दिया है। सार यह कि हालात कुर्आन की एक एक बात को सच्चा सिद्ध कर दिखा रहे हैं किन्तु मनुष्य होश में आने को तैयार नहीं।

41. जब अल्लाह की फिटकार पड़ती है तो हज़रत बात सुनने के लिए आदमी बहरा हो जाता है और सत्य देखने के लिए अंधा।

42. अर्थात् ये लोग अगर कुर्आन पर ग़ौर करते तो उन्हें हिदायत मिल जाती परन्तु कुर्आन की तरफ़ उन्होंने ने कोई ध्यान न दिया और अपने ग़लत रवैये पर अड़े रहे। इस पर उन के हट का परिणाम यह निकला कि उन के दिल के दरवाज़े सत्य को स्वीकार करने के लिए बन्द हो गए।

यह आयत भी दूसरी आयतों की तरह काफ़िरों और

मुनाफ़िकों को कुर्आन में चिन्तन करने का न्योता देती है जिस का मतलब यह है कि कुर्आन प्रत्येक व्यक्ति के समझने के लिए है। अब जो लोग अरबी नहीं जानते वे किसी ऐसे अनुवाद से जो कि विश्वस्नीय हो लाभ उठा सकते हैं परन्तु मुसलमानों में एक ग़िरोह ऐसा भी पाया जाता है जिस के नज़दीक कुर्आन केवल आलिमों के समझने के लिए है। वह आम मुसलमानों को न केवल यह कि कुर्आन समझ कर पढ़ने को प्रोत्साहित नहीं करता बल्कि उन को अनुवाद की सहायता से पढ़ने से रोकता और कहता है कि अनुवाद पढ़कर उन के गुमराह होने की आशंका है। हालाँकि कितने की मुसलमान ऐसे हैं जिन्होंने ने कुर्आन को अनुवाद के साथ पढ़ा तो उन की आँखें खुल गईं और वे उस से निरन्तर लाभान्वित हो रहे हैं तथा कितने ग़ैर मुस्लिमों को कुर्आन का अनुवाद पढ़ने से ईमान की दौलत नसीब हुई।

सच्चाई यह है कि जो व्यक्ति भी कुर्आन का खुले मन से अध्ययन करेगा वह उस से हिदायत ही पायेगा और जितना अध्ययन करेगा उस की सूझ बूझ में वृद्धि ही होती रहेगी। अलबत्ता जिस व्यक्ति के दिल के दरवाज़े ही सत्य स्वीकार करने के लिए बन्द हो चुके हों वह इतने बड़े ख़ैर (भलाई) से महरूम ही रहेगा।

43. अर्थात् जो लोग मुसलमान होने के बाद काफ़िर हुए अभिप्रेत मुनाफ़िक हैं जिन्होंने ने इस्लाम स्वीकार किया उस के बाद उस से फिर गए। हिदायत अर्थात् सीधा मार्ग स्पष्ट हो जाने के बाद कुफ़्र (असत्य) की राह पर वे इस लिए चल पड़े कि शैतान ने उन्हें हरे हरे बाग़ दिखाए और वे उस के फरेब में आ गए। उस ने उन्हें आशान्वित किया और कहा कि अपने बाप दादा की रीति (धर्म) की ओर पलट कर तुम यह और यह नक़द लाभ प्राप्त कर सकते हो।

44. अर्थात् काफ़िरों से उन्होंने ने साँठ गाँठ की और कहा कि अगर तुम्हारे और मुसलमानों के बीच जंग हुई तो हम तुम्हारा साथ देंगे। ये बातें उन्होंने ने रहस्यमय ढंग से उन काफ़िरों से कही थीं ।



27. तो उस समय उन का क्या हाल होगा जब फ़रिश्ते उन के चेहरों और उन की पीठों पर मारते हुए उन के प्राण निकालेंगे।⁴⁵ فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ۖ
28. यह इस लिए कि उन्होंने उस नियम का अनुपालन किया जो अल्लाह को क्रोधित करने वाला था और उस की प्रसन्नता को नापसंद किया। अतः उस ने उन के कर्म नष्ट कर दिए।⁴⁶ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ اتَّبَعُوا مَا اسَخَطَ اللَّهُ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ۖ
29. क्या उन लोगों ने जिन के दिलों में रोग है⁴⁷ यह समझ रखा है कि अल्लाह उन के कपट को ज़ाहिर नहीं करेगा ?⁴⁸ أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ أَن لَّنْ يُخْرِجَهُ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ۖ
30. (ऐ नबी !) अगर हम चाहते तो तुम्हें इन को दिखा देते और तुम इन के लक्षणों से इन्हें पहचान लेते और इन की बोल चाल से तो तुम इन्हें पहचान ही लोगे।⁴⁹ अल्लाह तुम लोगों के कर्मों को जानता है। وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيمَاهُمْ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ۖ
31. हम ज़रूर तुम्हारी आजमाइश करेंगे ताकि देख लें कि तुम में कौन जिहाद करने और सब्र करने वाले हैं ? और तुम्हारे हालात की जाँच कर लें।⁵⁰ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّى نَعْلَمَ الْمُجْتَهِدِينَ مِنْكُمْ وَالصَّابِرِينَ ۖ وَنَبْلُوَنَّكُمْ أَعْمَالَكُمْ ۖ
32. जिन लोगों ने कुफ़्र किया⁵¹ और अल्लाह की राह से रोका और रसूलों का विरोध किया इस के बाद कि उन पर हिदायत स्पष्ट हो चुकी थी, वे अल्लाह को कुछ भी नुकसान पहुँचाने वाले नहीं । और अल्लाह उन के सारे कर्म ढा देगा। إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَسَافَأُوا الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ لَنُيَضِّرَنَّ اللَّهُ شَيْئًا وَسَيَحْطِطُ أَعْمَالَهُمْ ۖ
33. ऐ लोगो जो इमान लाए हो ! अल्लाह का अनुपालन करो और रसूल का अनुपालन करो और अपने कर्म नष्ट न करो ।⁵² يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تَبْطُلُوا أَعْمَالَكُمْ ۖ
34. जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका फिर कुफ़्र की हालत में मर गए अल्लाह उन्हें कभी क्षमा नहीं करेगा।⁵³ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۖ

45. अर्थात् अब तो ये अपने जीवन को जिहाद के खतरे से बचाने के लिए काफ़िरों के साथ साँठ गाँठ कर रहे हैं किन्तु उन को एक दिन मरना तो हर हाल में है तो जब उन की मौत कुफ़्र की हालत में होगी और फ़रिश्ते उन को मारते पीटते हुए उन के प्राण निकालेंगे तो उन का क्या हाल होगा। अगर उन्हें इस का एहसास होता तो वे जिहाद से जी चुराने के लिए काफ़िर न बनते।

यह आयत भी पुष्टि करती है कि आलमे-बर्ज़ख़ (यमलोक) में काफ़िरों की रुहों अर्थात् उन की आत्माओं को यातना भोगनी पड़ती है जिस को हदीस में क़ब्र का अज़ाब कहा गया है। मरने वाले के शरीर पर उस यातना (अज़ाब) का कोई असर दिखाई नहीं देता इस लिए इस का साफ़ मतलब यही है कि अज़ाब आत्मा (रूह) पर होता है। चेहरे और पीठ से मुराद रूह का चेहरा और पीठ है जिन पर फ़रिश्ते चोट लगाते हैं। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह मोमिन नोट ७१)

46. अर्थात् मुनाफ़िक़ों की इबादतें और उन के वे कर्म जो देखने में अच्छे थे उन के कुफ़्र के चलते अल्लाह के यहाँ स्वीकार्य नहीं। इस लिए सब अकारथ गए।

47. मुराद निफ़ाक़ (कपट) का रोग है।

48. अर्थात् ये मुनाफ़िक़ (पाखण्डी) जो कपट और वैमनस्य इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध रखते हैं क्या उस को वह ज़ाहिर नहीं करेगा?

49. अर्थात् हम चाहते तो ऐ नबी ! इन पाखण्डियों (मुनाफ़िक़ों) का हाल तुम्हें व्यक्तिगत रूप से एक एक का दिखा देते इस तरह से कि उन के चेहरों को देख कर उन के अन्दर का हाल तुम पर ज़ाहिर हो जाता।

ध्यान रहे कि यह बात उन लोगों के बारे में कही जा रही है जो दिखने में मुसलमान थे किन्तु अपने अन्दर कुफ़्र को छिपाये हुए थे। यही असल मुनाफ़िक़ हैं और काफ़िरों से बदतर

हैं। क्यों कि ये इस्लामी सोसाइटी में रह कर जो सोसाइटी को दीमक की तरह चाटते हैं अर्थात् अन्दर से खोखला करने के षडयंत्र करते हैं वे इस्लाम और मुसलमानों के लिए खुले काफ़िरों से अधिक ख़तरनाक होते हैं।

जिस समय यह सूरह नाज़िल हुई है, उस समय मुनाफ़िक़ों का हाल ज़ाहिर होने लगा था। परन्तु दृढ़तापूर्वक किसी पर उस के मुनाफ़िक़ होने का आदेश नहीं लगाया जा सकता था। अलबत्ता उन के लहजे और उन की बात चीत से उन की पहचान की जा सकती थी। किन्तु बाद के मरहलों में उन के रवैये को देखते हुए उन के मुनाफ़िक़ (कपटी एवं पाखण्डी) होने के बारे में किसी शक और संदेह की गुन्जाइश बाक़ी नहीं रही अतः सूरह तौबा में उन से जिहाद करने और उन पर सख़्ती करने का आदेश नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिया गया।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ
وَاعْلُظْ عَلَيْهِمْ. (التوبة: ८३)

अर्थ :- “ऐ नबी काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करो और उन के साथ सख़्ती से पेश आओ।” (तौबा - ७३)

50. अर्थात् यह देख लें कि तुम्हारे ज़ाहिरी हालात कहाँ तक तुम्हारे अन्दरूनी हालात से मेल खाते हैं और तुम अपने ईमान के दावे में कहाँ तक सच्चे हो।

51. चाहे उस का कुफ़्र छिपा हुआ हो या ज़ाहिर हो।

52. यह चेतावनी है मुसलमानों को कि अगर तुम ने अल्लाह के अनुपालन और उस के रसूल के अनुपालन को अपना स्वभाव न बनाया तो तुम्हारे कर्म अकारथ जाएंगे।

53. क्षमा के लिए वह दशा मान्य एवं स्वीकार्य होगी जिस में उस व्यक्ति की मौत हो गई। अगर किसी की मौत कुफ़्र की अवस्था में हुई है तो उस के लिए क्षमा के दरवाजे बन्द हैं।



35. तो तुम कमज़ोर न पड़ो और सुलह की दअवत न दो, ⁵⁴ तुम्ही विजयी रहोगे। ⁵⁵ अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह तुम्हारे कर्मों को नष्ट न करेगा। ⁵⁶

فَلَا تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلَامِ وَأَنْتُمْ الْآعِلُونَ وَاللَّهُ
مَعَكُمْ وَلَنْ يَتْرُكَكُمْ أَعْمَالَكُمْ ③⑤

36. दुनिया की ज़िन्दगी तो बस खेल तमाशा है। और अगर तुम ईमान लाओगे और तक्रवा अपनाओगे तो वह तुम्हें तुम्हारा बदला देगा। ⁵⁷ और तुम से तुम्हारा माल तलब न करेगा। ⁵⁸

إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُوَ إِنْ تَوَمَّنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ
أُجُورَكُمْ وَلَا يَسْأَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ③⑥

37. अगर वह तुम से माल माँगे और सब माल तलब करे तो तुम कंजूसी करोगे और वह तुम्हारा खोट ज़ाहिर करेगा। ⁵⁹

إِنْ يَسْأَلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخُلُوا وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ ③⑦

38. ये तुम लोग हो ⁶⁰ कि अल्लाह की राह में खर्च करने की तुम्हें दअवत दी जा रही है, तो तुम में ऐसे लोग भी हैं जो कन्जूसी करते हैं ⁶¹। हालाँकि जो कन्जूसी करता है वह अपने साथ ही कन्जूसी करता है। ⁶² अल्लाह ग़नी है और तुम मोहताज हो। और अगर तुम मुँह फेरोगे तो अल्लाह तुम्हारी जगह दूसरे लोगों को ले आएगा और वे तुम्हारी तरह न होंगे। ⁶³

هَآأَنْتُمْ هَآؤَآءُ تَدْعُونَ لِنُفَقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَمِنْكُمْ مَنْ
يَبْخُلُ وَمَنْ يَبْخُلْ فَإِنَّمَا يَحْمِلْ عَنْ نَفْسِهِ وَاللَّهُ الْغَنِيُّ
وَأَنْتُمْ الْفُقَرَاءُ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ
لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُمْ ③⑧

54. काफ़िर जब कि जंग पर आमादा हों, सुलह का निमंत्रण देना बुजदिली की पहचान है इस लिए इस से मना किया गया है। अलबत्ता जब काफ़िर खुद सुलह की पेशकश करें तो इस निमंत्रण को स्वीकार किया जा सकता है। कुर्आन में है

فَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ
عَلَى اللَّهِ - (انفال: ११)

अर्थ :- “और अगर वे सुलह के लिए झुके तो तुम भी इस के लिए झुक जाओ और अल्लाह पर तवक्कल (भरोसा) करो।” (अन्फाल - ६१)

55. और यह सच्चाई है कि ईमान वालों का पलड़ा हर जंग के मौक़े पर भारी रहा और वे काफ़िरों पर विजयी हुए।

56. अर्थात् तुम्हारी वे कोशिशें जो तुम ने अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने के लिए की होगी, वे न दुनिया में बे असर होंगी और न आख़िरत में बे नतीजा।

57. इस से यह बात आप से आप स्पष्ट है कि ईमान ला कर तक्रवा अपनाने वालों के जीवन खेल तमाशा नहीं होते बल्कि संजीदा और उद्देश्यपूर्ण होते हैं। अलबत्ता दुनिया की ज़िन्दगी उन लोगों के लिए खेल तमाशे से अधिक कोई हैसियत नहीं रखती जो इस को अपना लक्ष्य बनाते हैं और खुदा तथा आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाते हैं।

58. अर्थात् तुम्हारा सारा माल तलब नहीं करेगा जैसा कि आगे बयान हुआ है।

59. अर्थात् अगर वह तुम से यह मुतालबा करता कि तुम अपना सारा माल अल्लाह की राह में खर्च करो और अपने लिए कुछ न छोड़ो तो तुम कन्जूसी करते और यह बात बिल्कुल खुल कर सामने आती है कि कुफ़्र और इस्लाम की जंग के मौक़े पर भी तुम को अपना माल प्यारा है। परन्तु अल्लाह तआला ने तुम

को इतनी कड़ी आजमाइश में नहीं डाला और अपने माल का एक हिस्सा अल्लाह की राह में खर्च करने का आदेश दिया ताकि तुम्हें अपने सुधार का मौक़ा मिले और तुम्हारे दिल पाक हों।

ध्यान रहे कि इस आयत में संबोधन मुनाफ़िकों से है जो अल्लाह की राह में खर्च करने से जी चुराते थे।

60. यहाँ संबोधन साधारण मुसलमानों से है।

61. ये कपटी अथवा अनिष्ट मुसलमान थे जो अल्लाह की राह में खर्च करने से कंजूसी बरतते थे।

62. अर्थात् वह कंजूसी कर के अपना ही नुक़सान करता है।

63. अर्थात् तुम्हें अल्लाह के दीन की खातिर कुर्बानियाँ देने का जो मौक़ा मिल रहा है वह वास्तव में तुम्हारे लिए बड़े सौभाग्य की बात है। अगर तुम इस की क़द्र न करो तो अल्लाह अपना कलिमा बुलन्द करने के लिए किसी दूसरे समूह को मैदान में ले आएगा और वे तुम्हारी तरह कम्ज़ोर आचरण के न होंगे।

इस आयत की तफ़सीर सूरह माइदा ५४ करती है :-

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهَ بِقَوْمٍ - يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٌ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ
أَعَزَّةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ - (مائدة: ५४)

अर्थ :- “ऐ ईमान वालो ! तुम में से जो कोई अपने दीन से फिर जाएगा तो अल्लाह ऐसे लोगों को ले आएगा जिन से अल्लाह मुहब्बत रखता होगा और जो अल्लाह से मुहब्बत रखते होंगे। मोमिनों के प्रति नर्म और काफ़िरों के मुकाबले में सख़्त होंगे। अल्लाह की राह में ज़िहाद करेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरेंगे।”



सूरह अल-फ़तह

४८. सूरह अल-फ़तह

नाम :- पहली आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खुली फ़तह (स्पष्ट विजय) की खुशख़बरी सुनाई गई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अलफ़तह” है।

नाज़िल होने का समय :- ज़ी क़ादा सन ६ हिजरी तदनुसार सन ६२८ ई. हुदैबिया की संधि के बाद वापसी के सफ़र में हुदैबिया और मदीना के बीच नाज़िल हुई।

केन्द्रीय विषय :- रसूल और रसूल के अनुयायियों को खुशख़बरी कि इस्लाम के लिए विजयों का आरम्भ हो गया है और उन हालात पर टिप्पणी जो हुदैबिया संधि के अवसर पर पेश आए थे।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ७ में विजय की खुशख़बरी देते हुए रसूल और उस के अनुयायियों के लिए उन इनामों का वर्णन किया गया है जिन को यह विजय अपने साथ लाई है। और मुनाफ़िकों एवं बहुदेववादियों को ख़बरदार किया गया है कि यह विजय उन के लिए अज़ाब का कारण होगी।

आयत ८ से १० में रिसालत के दायित्वपूर्ण पद को स्पष्ट किया गया है और रसूल के हाथ पर बैअत (भक्ति-प्रतिज्ञा) को अल्लाह के हाथ पर बैअत अर्थात् वचन बद्धता कहा गया है।

आयत ११ से १७ में मुनाफ़िकों को समझाया गया है तथा चेतावनी है जो रसूल की दअवत पर आप के साथ नहीं निकले क्यों कि उन्हें अपने माल और अपने घर वालों की चिंता थी। और रसूल के इस अमल को कि मक्का जा कर उमरा करें, ख़तरनाक समझते रहे। अलबत्ता जो लोग वास्तव में असहाय और बेबस थे उन को निर्दोष बताया गया।

आयत १८ से २६ में सच्चे मोमिनों को जिन्होंने ने इस मौके पर जिहाद के लिए बैअत (प्रतिज्ञा) की और रसूल के आदेश पर जान की बाज़ी लगाने के लिए तैयार हो गए, अल्लाह की प्रसन्नता की खुशख़बरी दी गई है। और वादा किया गया है कि वे भविष्य में अधिकता के साथ माले-गनीमत (परिहार) हासिल करेंगे। अल्लाह की मदद उन के साथ होगी इस लिए काफ़िर उन के मुक़ाबले में टिक नहीं सकेंगे।

आयत २७ से २९ में ईमान वालों को यह खुशख़बरी सुनाई गई है कि रसूल ने मस्जिदे-हराम (प्रतिष्ठित मस्जिद अर्थात् काबा) में दाख़िल होने का जो स्वप्न देखा था वह सच्चा था और वह पूरा हो कर रहेगा। रसूल के लिए प्रभुत्व एवं विजय

सुनिश्चित है और उस को ऐसे सच्चे सहयोगी मिल गए हैं जिन की छवि तौरात और इन्ज़ील में देखी जा सकती है।

हुदैबिया संधि क्यों और कैसे ? हिजरात के बाद मुसलमानों पर मक्का के कुरैश ने मस्जिदे-हराम (काबा शरीफ़) की ज़ियारत की राह रोक दी थी। वे न उमरा कर सकते थे और न हज्ज। जब कि ख़ाना-ए-काबा जो मस्जिद हराम में स्थित है का निर्माण हज़रत इब्राहीम ने अल्लाह के आदेश से किया था और इस लिए किया था ताकि वह लोगों के लिए केन्द्रीय इबादतगाह क़रार पाए और वे तवाफ़ उमरा, एवं हज्ज कर सकें इस पर कुरैश की बपौती और वह भी बुत परस्ती के रूप में एक ऐसी बात थी जिस से उस के निर्माण का उद्देश ही लुप्त हो रहा था तथा यह मुसलमानों पर बहुत बड़ा ज़ुल्म था कि वे अपने असल केन्द्र से कट कर रह जाए। इस लिए मुसलमानों का यह हक़ था कि वे मस्जिदे-हराम की ज़ियारत करें।

मुसलमानों और मक्का के काफ़िरों के बीच बद्र की जंग, उहद की जंग और खंदक की जंग लड़ी जा चुकी थी और मक्का के काफ़िर थे कि लड़ने पर उतारू ही थे। तभी सन ६ हिजरी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक ख़ाब देखा कि आप अपने सहाबा के साथ मस्जिदे हराम में दाख़िल हो गए हैं। चूँकि नबी का ख़ाब सच्चा और अल्लाह की तरफ़ से होता है इस लिए आप ने अल्लाह की तरफ़ से यह इशारा पाते ही उमरा (अर्थात् अल्लाह के घर की ज़ियारत) का इरादा किया और इस की सार्वजनिक घोषणा कर दी ताकि लोग अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित हों और काफ़िरों को उन पर हाथ उठाने का साहस न हो। आप की इस निमंत्रणा पर मदीना के चौदह सौ मुसलमान इस अभियान में हिस्सा लेने के लिए उठ खड़े हुए और ज़ीक़ादा की पहली तारीख़ को यह काफ़िला मक्का की ओर रवाना हुआ। मदीना से ६ मील की दूरी पर जुलहलीफ़ा में उमरा का एहराम बाँधा। कुर्बानी के लिए ऊँट साथ लिए थे जिन की गर्दनो में चिन्ह स्वरूप पट्टे पड़े हुए थे ताकि कोई व्यक्ति भी उन को देख कर पहचान ले कि ये कुर्बानी के ऊँट हैं और इस कारण कोई हाथ न डालेगा। जंग का चूँकि कोई इरादा नहीं था इस लिए युद्ध का सामान भी नहीं लिया था। साधारण रीति के अनुसार केवल तलवारों साथ थीं और वह भी म्यानों के अन्दर जब आप कुराउलगुमैम पहुँचे जहाँ से मक्के का फासला लगभग सौ

किलोमीटर है तो मालूम हुआ कि मक्का के काफ़िरों की तरफ़ से ख़ालिद बिन वलीद के नेतृत्व में तीन सौ घुड़सवारों की एक टुकड़ी आप के मुकाबले के लिए पहुँच गई है। चूँकि आप जंग के इरादे से नहीं निकले थे इस लिए आप ने इस करीब के रास्ते को छोड़ कर दूर का रास्ता मक्का जाने के लिए अपनाया और हुदैबिया के स्थान पर पहुँच गए जहाँ से हरम की सीमाएँ शुरू हो जाती हैं तथा मक्का का फ़ासला केवल २२ किलोमीटर रह जाता है। अब इस स्थान को “शुमैसिय्यह” कहते हैं।

आप ने हज़रत उस्मान बिन अफ़फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु को यह संदेश दे कर भेजा कि वे कुरैश से कहें कि हम जंग के लिए नहीं आए हैं बल्कि अभिप्रेत केवल उमरह करना है, तथा उन्हें इस्लाम स्वीकार कर लेने का न्योता भी दें। हज़रत उस्मान जब मक्का पहुँचे तो उन के क़बीले वाले इज़ज़त के साथ पेश आए और कुरैश ने भी उन को तवाफ़ करने का प्रस्ताव दिया किन्तु उन्होंने ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले तवाफ़ करने से इन्कार कर दिया। कुरैश किसी तरह इस बात के लिए आमादा नहीं हुए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा के साथ उमरा के लिए मक्का में दाख़िल हों। इस बहस में हज़रत उस्मान की वापसी में कुछ देर हो गई। इधर मुसलमानों को चिन्ता हुई और ऐसी परिस्थिति बनी कि लगने लगा कि अब बल पूर्वक ही मक्का में प्रवेश करना पड़ेगा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मौक़े की नज़ाकत को देखते हुए सहाबा को जिहाद की प्रतिज्ञा (बैअत) करने की दअवत दी अतः सहाबा किराम ने आप के हाथ पर निस्संकोच प्रतिज्ञा (बैअत) की जो इस बात की प्रतिज्ञा थी कि अगर मक्का के बहुदेववादी उमरा करने से रोकते हैं तो वे बिना किसी युद्ध सामग्री के भी मात्र अपनी तलवारों से उन का मुकाबला करने के लिए तैयार हैं। यह एक ऐतिहासिक बैअत (प्रतिज्ञा) थी जो बैअत-रिज़वान के नाम से प्रसिद्ध हुई। जब कुरैश को इस की सूचना मिली तो वे भी दबे और उन्होंने ने सुहैल बिन अम्र के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल (वफ़्द) सुलह की बात चीत के लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजा। बात चीत के बाद जो समझौता तय पाया अर्थात् जो संधि हुई उस की प्रमुख धाराएँ ये थीं :-

१. इस साल मुसलमान मदीना लौट जाएँ और अगले वर्ष

मक्का आ कर उमरा करें। उस अवसर पर कुरैश उन से छेड़ छाड़ न करेंगे।

२. मुसलमान अपने साथ केवल तलवारें ला सकेंगे और वह म्यान में होगी।

३. वे मक्का में केवल ३ दिन ठहरेंगे।

४. मुसलमान और कुरैश के बीच अब जंग की हालत बाक़ी नहीं रहेगी और यह संधि दस वर्ष के लिए है।

५. कुरैश का कोई आदमी अगर मदीना आ जाए तो उसे वापस करना होगा और अगर कोई मुसलमान कुरैश के पास आए तो उसे वापस करना ज़रूरी न होगा।

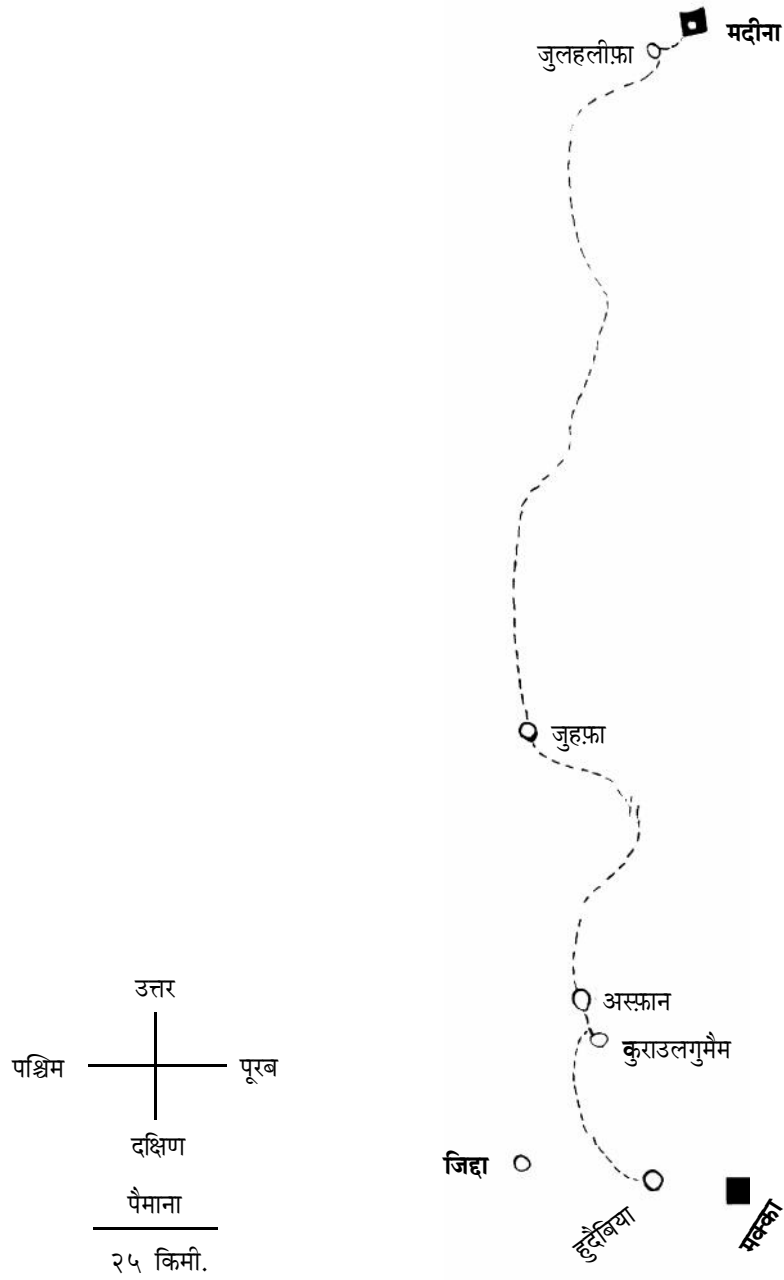
६. हरम के आस पास रहने वाले क़बीलों को इस बात की आज़ादी होगी कि वे दोनों में से जिस ग़िरोह के साथ होना चाहें हो जाएँ। इस के बाद उस क़बीले की भी वही ज़िम्मेदारी होगी जो संधि के अनुसार उस ग़िरोह पर लागू होता है। इसी तरह उस के भी वही अधिकार होंगे जो संधि के अनुसार उस ग़िरोह के होते हैं।

७. इन क़बीलों में अगर किसी क़बीले से छेड़ छाड़ की गई तो इसे सम्बन्धित ग़िरोह के विरुद्ध ज़्यादाती समझा जाएगा और इस से संधि टूट जाएगी। (सुलह अल हुदैबिया-मुहम्मद अहमद बाशमील पृष्ठ २५२ से २५४)

इस संधि का बाह्य पक्ष ऐसा था कि लगता था जैसे मुसलमानों ने दब कर समझौता कर लिया है किन्तु वास्तव में इस से मुसलमानों की पोजीशन काफ़ी मज़बूत हो गई थी। क्यों कि पहली बात तो यह कि इस से मस्जिदे-हराम की ज़ियारत की राह खुल रही थी दूसरे इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध जंगी तनाव समाप्त हो रहा था जो इस्लाम के प्रसार में बाधक था तथा लोगों को इस्लाम के बारे में स्वतंत्रता पूर्वक सोचने और विचार करने का अवसर मिल रहा था।

संधि से फ़ुर्सत पाने के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के साथियों ने हुदैबिया में ही कुर्बानी के ऊँट ज़ब्ह किये और उमरा का एहराम उतारा। इस के बाद मदीना के लिए रवाना हो गए। अगले साल ज़ीक्रादा ही में आप अपने सहाबा के साथ मक्का तशरीफ़ ले गए और स्वतंत्र माहौल में उमरा अदा किया। इस प्रकार वह ख़्वाब सच्चा सिद्ध हुआ जो आपने देखा था।

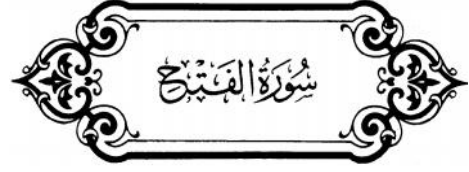
मदीना और हुदैबिया के बीच मार्ग



४८. सूरह अल-फ़तह

आयतें : २९

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (ऐ नबी !) हम ने तुम को निश्चित रूप से खुली
“फ़तह” (विजय) प्रदान की।¹

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا ①

2. ताकि अल्लाह तुम्हारे अगले पिछले कुसूरों को
माफ़ कर दे² और तुम पर अपनी नेमत पूरी³ करे
और तुम को सीधी राह चलाए।⁴

لِيُغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ
وَيَهْدِيكَ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ②

3. और ज़बरदस्त सहायता से अल्लाह तुम्हारी मदद
फ़रमाएगा।⁵

وَيَنْصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَظِيمًا ③

4. उसी ने मोमिनों के दिलों में सकीनत (परितोष)
उतारी⁶ ताकि अपने ईमान के साथ उन्हें अतिरिक्त
ईमान हासिल हो।⁷ आसमानों और ज़मीन के
तमाम लश्करों का मालिक अल्लाह ही है⁸ और
अल्लाह ज्ञान वाला और तत्वदर्शी है।⁹

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ
لِيَزِدَّهُمْ إِيمَانًا مَعَ إِيمَانِهِمْ وَاللَّهُ جُنُودُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ④

5. (उसने यह विजय इस लिए प्रदान की) ताकि
वह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को जन्नतों में
दाखिल करे जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी। वे
उन में हमेशा रहेंगे। और ताकि उन से उन की
बुराइयाँ दूर कर दे। अल्लाह के निकट यही बड़ी
सफलता है।¹⁰

لِيَدْخُلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَيُغْفَرُ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَكَانَ ذَلِكَ
عِنْدَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا ⑤

6. और मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और
मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को सजा दे।¹¹ जो
अल्लाह के बारे में बुरा गुमान रखते हैं बुराई की
गरदिश (कालचक्र) उन ही पर है। अल्लाह का उन
पर प्रकोप हुआ, और उस ने उन पर लानत की।
उन के लिए उस ने जहन्नम तैयार कर रखी है और
वह बहुत बुरा ठिकाना है।

وَيُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ
الظَّالِمِينَ بِاللَّهِ ظَنُّ السَّوْءِ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ وَغَضَبَ
اللَّهِ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ⑥

7. आसमानों और ज़मीन के लश्कर अल्लाह ही
के क़ब्जे में हैं और वह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी
है।

وَاللَّهُ جُنُودُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ⑦

1. तात्पर्य मक्का विजय है जिस की भूमिका हुदैबिया की संधि थी। इस संधि के दो वर्ष के अन्दर (रजमान सन ८ हिजरी) में मक्का विजय हुआ। और कुर्आन की यह भविष्यवाणी कि “हम ने तुम्हें खुली विजय प्रदान की है” सच्ची साबित हुई। हुदैबिया संधि का बाह्य पक्ष मुसलमानों को अप्रिय था। इस पर वे बहुत रुष्ट थे क्योंकि उन्हें उस साल उमरा के बगैर वापस लौटना पड़ रहा था। किन्तु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दूर दृष्टि उस के सुखद परिणामों को देख रही थी और सच्चाई यह है कि इस्लाम के विजय अभियानों का सिलसिला सुलह हुदैबिया के बाद ही से शुरू हो जाता है। अल्लामा इब्ने क़य्यीम इस की मसलहतों को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं :-

“यह तम्हीद (भूमिका) थी अजीम तरीन फ़तह की जिस के ज़रीए अल्लाह ने अपने रसूल और अपने लश्कर को इज़्जत बख़शी और लोग अल्लाह के दीन में फ़ौज़ दर फ़ौज़ दाख़िल हुए। तो यह सुलह उस फ़तह का बाब और उस की क़लीद (अर्थात् दरवाज़ा और उस की कुन्जी) थी। तथा उस का पेशगी एलान था यह सुलह फ़तहे अजीम थी क्योंकि इस से लोगों को अमन मयस्सर आया और मुसलमानों को काफ़िरों से मिलने जुलने, उन के सामने दअवत पेश करने, उन को कुर्आन सुनाने और बेख़ौफ़ हो कर उन से इस्लाम पर ऐलानिया मुजाकरा (संगोष्ठी) करने का मौक़ा मिला। जो लोग अपने इस्लाम को छिपाये हुए थे वे ज़ाहिर हो गए और सुलह की मुद्दत के दौरान अल्लाह ने जिन को तौफ़ीक़ दी वे इस्लाम में दाख़िल हो गए। इसी लिए अल्लाह ने इसे फ़तह-मुबीन (खुली विजय) करार दिया बज़ाहिर यह सुलह (संधी) मुसलमानों के लिए हक़तल्फ़ी की वजह थी लेकिन इस के बातिन (अन्दर) में इज़्जत, फ़तह और नुसरत (विजय एवं सहयोग) थी।” (जादुल मआद जिल्द २ पृष्ठ १३०)

ध्यान रहे कि मौजूदा ज़माने में कुछ लोग अपनी ग़लत धारणाओं के लिए हुदैबिया संधि का सहारा लेते हैं। जिस से जिहाद की स्पिरिट प्रभावित हो जाती है। वे इस्लाम की ऐसी व्याख्या करते हैं कि जैसे वह इस्लाम दुश्मनों के लिए लोच है और मुसलमानों को उन के लिए नर्म चारा बन जाना चाहिए हालाँकि इस्लाम में जंग भी है और सुलह भी। हुदैबिया संधि तो एक ख़ास मौक़े पर की गई थी जो काफ़िरों की ओर से प्रस्तावित की गई थी न कि मुसलमानों ने। मुसलमानों को तो सूरह मुहम्मद में पहले ही यह निर्देश दिया जा चुका था कि वे सुलह के लिए पहल न करें :-

فَلَا تَهْنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلَامِ - (محمد: ३५)

अर्थ :- “हिम्मत न हारो और सुलह के लिए न बुलाओ।” फिर यह भी हक़ीक़त है कि हुदैबिया संधि से पहले बद्र की जंग (सन २ हिजरी) और उहद की जंग (सन ३ हिजरी) में लड़ी गई थी और खंदक़ (सन ५ हिजरी) की जंग भी लड़ी जा चुकी थी। इसी प्रकार हुदैबिया संधि के समाप्त होने पर बलपूर्वक मक्का जीता गया और हुनैन में जंग का बाज़ार गर्म हुआ और तबूक में तो रोमन एम्पायर (साम्राज्य) को चैलेन्ज किया गया तो क्या इन सब घटनाओं को नज़रंदाज़ कर के हुदैबिया संधि को बेमौक़ा पेश करना और इस बुनियाद पर एक ख़ास विचार धारा को बढ़ावा देना संतुलन बिगाड़ना और एक ही रुख़ को देखना नहीं है।

2. इशारा है इस बात की तरफ़ कि मक्का विजय के बाद रसूल के मिशन की पूर्ति हो जाती है और उस के नियुक्ति का लक्ष्य पूरा हो जाता है क्योंकि आख़िरी नबी के द्वारा एकेश्वरवाद के केन्द्र को बहुदेववादियों से पाक कर के मुस्लिम उम्मत के हवाले करना और इस्लाम को इस तरह सरबुलन्द करना कि समस्त धर्मों एवं धारणाओं पर उस का वर्चस्व हो वह अन्तिम लक्ष्य (Goal) या जिस के लिए आप को नियुक्त किया गया था। इस अन्तिम लक्ष्य के प्राप्त हो जाने के बाद दुनिया से आप की रुख़सत का समय निकट आ जाता है इस लिए आप को खुशख़बरी सुनाई गई कि मक्का विजय अपने साथ क्षमादान लाई है आप से जो कूसूर भी हुए हैं या आगे होंगे उन सब के लिए आप के रब की ओर से क्षमा का पेशगी एलान है। यह खुशख़बरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रयासों एवं कोशिशों की स्वीकृति प्रदान करने वाली और रिसालत की ज़िम्मेदारी अदा करने पर आप के सम्मान का कारण थी। इस खुशख़बरी के बाद भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इबादत में लगे रहने का हाल यह था कि आप के पाँव में रातों की नमाज़ में खड़े रहने के कारण वरम पड़ जाते थे। जब सहाबा ने आप से पूछा क्या आप के अगले पिछले कुसूर माफ़ नहीं कर दिए गए हैं तो आपने फ़रमाया :-

أَفَلَا أَكُونُ عَبْدًا شَكُورًا - (بخاری کتاب التفسیر)

अर्थ :- “क्या मैं शुक्र गुज़ार बन्दा न बन जाऊँ?” (बुख़ारी किताबुतफ़सीर) रहा यह प्रश्न कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कुसूर हुए थे या नहीं इस की तफ़सील सूरह मोमिन के नोट ७९ में की जा चुकी है उस को सामने रखा जाए।

नबियों के सम्बन्ध में यह बात सर्व मान्य है कि वे गुनाह नहीं करते। उन के पूर्ण अनुपालन का आदेश दिया गया है और बिना कुछ कहे सुने और बिना किसी शर्त के अनुपालन उसी की कि जा सकती है जो पाक साफ़ और मासूम हो। इस से नबियों का

मासूम होना आप से आप स्पष्ट हो जाता है किन्तु इस का यह मतलब नहीं कि उन से कभी कोई कुसूर ही नहीं हुआ। कुसूर का होना आदमी होने का तकाज़ा है। अनजाने में किसी कुसूर के होने और जान बूझ कर किसी गुनाह को करने में ज़मीन और आसमान का अन्तर है। फिर अल्लाह की वही उन के कुसूरों पर उन को सचेत कर देती है और वे तुरन्त रुजू कर लेते हैं। इस लिए लोगों के सामने किसी ग़लत मिसाल के पेश होने का सवाल पैदा नहीं होता। कुर्आन ने स्वयं कुछ नबियों के कुछ कुसूरों का ज़िक्र इस तौर से किया है कि उन्हें उन पर सचेत किया गया और वे तुरन्त अल्लाह की तरफ़ पूरे बन्दगी की भावना के साथ रुजू हो गए। नबी अपने कुसूरों की माफ़ी के लिए दुआ भी करते हैं। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ थी :-

وَالَّذِي أَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي
يَوْمَ الدِّينِ - (شعراء: ८२)

अर्थ :- “और जिस से मैं उम्मीद रखता हूँ कि बदले के दिन वह मेरी ख़ताएँ माफ़ कर देगा।” (शुअरा - ८२)

और नबी सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम रोज़ाना सत्तर बार से अधिक क्षमा याचना (इस्तिग़फ़ार) किया करते थे। (बुख़ारी किताबुदावात)

3. नेमत पूरी करने से तात्पर्य ख़ैर एवं भलाई से माला माल करना इज़्जत और बुलन्दी प्रदान करना और दर्जे को ऊँचा उठाना है।

4. अर्थात् विजय पा जाने के बाद भी अल्लाह आप को सीधी राह पर चलाएगा। यह इशारा इस बात की तरफ़ है कि विजय प्राप्ति के बाद एक लीडर बड़ाई और घमण्ड में लिप्त हो जाता है और ग़लत रवैया बरतने लगता है परन्तु आप का मामला ऐसा नहीं है। आप अल्लाह के रसूल हैं और उस की तौफ़ीक़ तथा उस की रहनुमाई में सारे मरहले तय कर रहे हैं। इस लिए विजय प्राप्ति के बाद भी आप हिदायत की राह पर ही चलते रहेंगे। और घटनाओ ने इस की पुष्टि की। मक्का विजय के बाद आप ने जिस तरह ज़िन्दगी गुजारी और सत्ता पा कर जिस दायित्व बोध के साथ उस को इस्तेमाल किया वह आप का एक अनुपम कारनामा है। मक्का में आप विजेता बन कर दाख़िल हुए थे मगर अल्लाह के समक्ष सर झुका हुआ था और अपने दुश्मनों के विरुद्ध कोई बदले की कार्रवाई नहीं की बल्कि फ़रमाया :-

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمْ الْيَوْمَ

आज तुम पर कोई गिरिफ़्त नहीं।

5. अर्थात् अल्लाह की तरफ़ से ऐसी मदद कि जो भी तुम से टकराएगा, वह चकना चूर हो कर रह जाएगा। इन्जील में भी इस की भविष्य वाणी मौजूद है :-

“इस लिए मैं तुम से कहता हूँ कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा और ऐसी जाति को जो उस का फल लाए, दिया जाएगा। जो इस पत्थर पर गिरेगा वह चकनाचूर हो जाएगा और जिस पर वह गिरेगा, उस को पीस डालेगा।”

(मत्ती, २१: ४३, ४४)

और हदीस में इर्शाद हुआ है :-

نُصِرْتُ بِالرُّعْبِ - (مسلم کتاب المساجد)

अर्थ :- “रोब से मेरी मदद की गई है।” (मुस्लिम किताबुल मसाजिद)

6. अर्थात् हुदैबिया के मौक़े पर जब कि मुसलमान “एहराम” की हालत में थे और जंग की नौबत आ गई थी मुसलमान बेहद बेचैनी की हालात से दो चार हो सकते थे किन्तु अल्लाह तआला ने उन की मदद सकीनत (आत्मपरितोष) उतार कर की इस लिए वे परितुष्ट थे और जान हातों में ले कर मक्का में दाख़िल होने के लिए तैयार हो गए थे। उन्होंने उस मौक़े पर कोई क्रमज़ोरी नहीं दिखाई यहाँ तक कि उन्हें सुलह की संधि स्वीकार करने में भी संकोच हुआ जिस से उन के हौसले और उन के जान लगाने की भावना का अन्दाज़ा होता है।

7. अर्थात् उन के ईमान में वृद्धि हो।

जहाँ तक अक़ीदे का तअल्लुक है हर सही अक़ीदे के मुसलमान की धारणा एक सी रहती है किन्तु ईमान की हालत में अच्छे कर्म और उन कुर्बानियों के कारण जो वह दीन के लिए देता है, बेहतर होती रहती है। (देखिए सूरह अन्फ़ाल आयत २ नोट ३ और सूरह तौबा आयत १२४ नोट २२६)

8. इस लिए वह जिस पर विजय अर्जित करना चाहे उसे कोई रोक नहीं सकता।

9. इस लिए उस का हर फैसला ज्ञान और तत्त्वदर्शिता पर आधारित होता है।

10. अर्थात् यह विजय अपने साथ साथ ईमान वालों के लिए आख़िरत की सफलता की शुभ सूचना भी लाई कि उन की मेहनत ठिकाने लगी, उन के प्रयास सफल हुए और उन को जन्नत का परवाना मिल गया।

मोमिन औरतों का ज़िक्र विशेष रूप से किया गया है क्यों कि इस अभियान की विजय प्राप्ति में वे मर्दों की सहायक हुईं और उन के हौसलों को बढ़ाती रहीं।

हदीस में आता है कि सहाबा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम से पूछा ऐ अल्लाह के रसूल आप को तो इस सूरह में अपने अगले पिछले गुनाह बख्शा दिए जाने की ख़ुशख़बरी सुनाई गई है परन्तु हमारे लिए क्या है? आप ने यह आयत तिलावत फ़रमाई अर्थात् तुम्हारे लिए जन्नत है। (तिर्मिज़ी अबवाबुत्तफ़सीर)

11. अर्थात् मक्का विजय जहाँ ईमान वालों के लिए कृपा और अनुकम्पा का कारण होगी वहाँ मुनफ़िकों (कपटियों, पाखण्डियों) और बहुदेववादियों के लिए अज़ाब का कारण होगी। अतः मक्का विजय के बाद उन के दमन का क्रम निरंतर जारी रहा।



8. (ऐ नबी !) हम ने तुम को गवाही देने वाला,¹² खुशखबरी देने वाला,¹³ और खबरदार करने वाला¹⁴ बनाकर भेजा है।

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝۸

9. ताकि तुम लोग अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान ले आओ, उस की हिमायत करो और उस का आदर करो¹⁵ और अल्लाह की पाकी बयान (तस्बीह) करो सुबह और शाम।¹⁶

لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ وَتُسَبِّحُوهُ
بِكُرَّةٍ وَأَصِيلًا ۝۹

10. (ऐ नबी !) जो लोग तुम से बैअत (प्रतिज्ञा) कर रहे थे वे वास्तव में अल्लाह से बैअत कर रहे थे। उन के हाथ पर अल्लाह का हाथ था।¹⁷ तो जो व्यक्ति प्रतिज्ञा तोड़ेगा वह अपनी प्रतिज्ञा तोड़ने का वबाल अपने ही ऊपर लेगा। और जो उस वचन को पूरा करेगा जो उस ने अल्लाह से किया है।¹⁸ उस को बड़ा बदला प्रदान करेगा।

إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ
فَمَنْ نَكَثَ فَإِنَّمَا يَنْكُثُ عَلَى نَفْسِهِ وَمَنْ أَوْفَى بِمَا عَاهَدَ
عَلَيْهِ اللَّهُ فَسَيُؤْتِيَهُ أَجْرًا عَظِيمًا ۝۱۰

11. देहाती अरबों में से जो लोग पीछे छोड़ दिये गए थे¹⁹ वे तुम से ज़रूर कहेंगे कि हम को अपने माल और बाल बच्चों ने व्यस्त कर रखा था अतः आप हमारे लिए क्षमा की दुआ करें। ये अपने ज़बान से वे बातें कहते हैं जो इन के दिलों में नहीं हैं।²⁰ कहो कौन है जो अल्लाह के मुकाबले में तुम्हारे लिए कुछ अधिकार रखता हो अगर वह तुम्हें नुकसान या लाभ पहुँचाना चाहे ? और यह हकीकत है कि अल्लाह तुम्हारे कर्मों से वाकीफ़ है।

سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلْفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا
وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْنَا يَقُولُونَ يَا لَسْتِهِمْ مَا لَيْسَ فِي
قُلُوبِهِمْ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ
ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝۱۱

12. मगर तुम ने यह गुमान किया कि रसूल और ईमान वाले अब कभी अपने घरवालों में पलट कर न आ सकेंगे²¹ और यह बात तुम्हारे दिलों को अच्छी मालूम हुई।²² और तुम ने बुरे गुमान किये²³ और तुम हलाक़ (विनष्ट) होने वाले बने।

بَلْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَّنْ يَنْقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا
وَذَرَيْنَ ذَلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖ
وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُورًا ۝۱۲

13. और जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान नहीं लाया तो ऐसे काफ़िरों के लिए²⁴ हम ने भड़कती आग तैयार कर रखी है।²⁵

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ
سَعِيرًا ۝۱۳

12. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अहज़ाब नोट ९९
13. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अहज़ाब नोट १००
14. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अहज़ाब नोट १०१
15. अर्थात् रसूल का पद अत्यन्त उच्च पद है अतः तुम्हें चाहिए कि उस पर ईमान लाने के बाद उस के हिमायती समर्थक एवं सहयोगी बन कर खड़े हो जाओ और उस का आदर और सम्मान करो।

स्पष्ट रहे कि تَعَزُّوْهُ (उस की हिमायत करो) और تَوَقَّرُوْهُ (उस का आदर करो) के शब्द रसूल ही के लिए उचित हो सकते हैं। लिहाज़ा ज़मीर हु (هُ) का सम्बन्ध रसूल ही से है। सूरह आराफ़ आयत १५७ में भी عَزَّوْهُ (उस की हिमायत की) का शब्द रसूल ही के लिए प्रयुक्त हुआ है।

16. سَبَّحُوْهُ (उस की तस्बीह करो) में “की ज़मीर हु (هُ) अल्लाह ही के बारे में हो सकती है क्योंकि तस्बीह केवल अल्लाह ही की कि जा सकती है। इस लिए अनुवाद “अल्लाह की तस्बीह (पाकी बयान) करो ” किया गया है।

17. इशारा है “बैअते-रिज़्वान” की तरफ़ जो हुदैबिया में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने साथियों से ली थी कि वे भागेंगे नहीं चाहे उन्हें मौत के मुँह में जाना पड़े। (अतिरिक्त तफ़्सील आगे आयत १८ के अन्तर्गत आ रही है।)

यह बैअत (प्रतिज्ञा) जो रसूल के हाथ पर की गई थी वास्तव में अल्लाह से बैअत थी क्योंकि रसूल अल्लाह का भेजा हुआ होता है और वह जो आदेश देता है अल्लाह के हुक्म से देता है। अतः उस से प्रतिज्ञा करना अल्लाह से प्रतिज्ञा करना है। इस हकीकत को इस तरह बयान फ़रमाया है कि “ उन के हाथ पर अल्लाह का हाथ था।”

ध्यान रहे कि कुर्आन में केवल रसूल के हाथ पर बैअत करने का ज़िक्र हुआ और इस का महत्व इस से स्पष्ट है कि रसूल के हाथ पर बैअत करना अल्लाह के हाथ पर बैअत करने के समानार्थ है। इस लिए यह बैअत रसूल के साथ ख़ास है। इस के अलावा एक बैअत वह है जिस का ज़िक्र हदीस में आता है और वह है ख़लीफ़ा के हाथ पर बैअत करना। यह बैअत ख़लीफ़ा के राजनीतिक सत्ता को स्वीकार करने के लिए होती है। उस ज़माने में राज्य के शासक के चुनाव का वह तरीक़ा प्रचलित नहीं हुआ था और न उन परिस्थितियों में वह प्रचलित हो सकता था जो मौजूदा दौर की लोक तांत्रिक हुकूमतों में चल रहा है। इस लिए वरिष्ठ बुद्धि जीवियों तथा सूझ बूझ रखने वालों के परामर्श से ख़लीफ़ा का चुनाव होता था और लोग उस के हाथ पर बैअत अर्थात् “मारूफ़” (सही कामों में) अनुपालन की प्रतिज्ञा करते थे जिस से स्पष्ट होता था कि उन्होंने इस व्यक्ति को ख़लीफ़ा चुन लिया है। अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दुनिया से

कूच कर जाने के बाद ख़ुलफ़ाए-राशिदीन के हाथ पर जो बैअत की गई उस का तरीक़ा यही था। ख़लीफ़ा की राजनीतिक सत्ता को स्वीकार करना ताकि इस्लाम कि सामाजिक व्यवस्था स्थापित हो और इस व्यवस्था के अन्तर्गत अहक़ाम और क़ानून की बशर्ते यह कि वे शरीअत से न टकराए, पाबन्दी की जाए।

रही वह बैअत जो पीर अपने मुरीद बनाने के लिए लेता है तो यह ख़ुली बिदअत है। शरीअत ने न इस का आदेश दिया है और न सहाबा किराम में इस का तरीक़ा प्रचलित था। इस के अलावा उस में तरह तरह की आपत्तियाँ हैं जैसे पीरों की अक़ीदत में हद से आगे बढ़ना, बुजुर्ग परस्ती, इस प्रकार की बैअत को आख़िरत की मुक्ती के लिए काफ़ी समझना, पीरों का अपने बारे में व्यर्थ के भ्रम में लिप्त होना और अपने मुरीदों की ग़लत रहनुमाई करना, उन पर शरीअत की जगह तरीक़त मुसल्लत कर देना और सुन्नत को छोड़ कर उन्हें बिदअतों में उलझाए रखना आदि। इस लिए इस तरह की बैअत का इस्लाम से कोई नाता नहीं।

18. अरबी व्याकरण के अनुसार اَللّٰهُ عَلَيْهِ السَّلَام “अलैहिल्लाह” होना चाहिए था यानी अलैह कि “ ۞ ” को ज़ेर होता परन्तु आयत में “ ۞ ” पर पेश यानी اَللّٰهُ عَلَيْهِ السَّلَام “अलैहुल्ला” पढ़ा जाता है इस तरह का बदलाव अरबी कलाम में प्रवाह उत्पन्न करने के लिए किया जाता है यहाँ भी “अलैहु” को पेश ۞ के साथ पढ़ने से कलाम में प्रवाह पैदा हो गया है। और अल्लाह का कलाम तो दरया के प्रवाह से भी बढ़कर है।

19. मदीना के इर्द गिर्द रहने वाले बटू (देहाती) हैं जो उमरा के इस अभियान में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ शरीक नहीं हुए थे। इन पीछे रह जाने वालों का ज़िक्र اَلْمُخَلَّفُوْنَ (पीछे छोड़ दिए गए थे) के शब्द से किया गया है जिस में यह संकेत निहित है कि इन लोगों ने जब पीछे रहना चाहा तो अल्लाह तआला ने भी उन्हें पीछे छोड़ दिया। और उन्हें निकलने की तौफ़ीक़ नहीं प्रदान की।

20. अर्थात् इन दिहातियों को वास्तव में कोई मज़बूरी नहीं थी। और न इन को रसूल के निमंत्रण पर इस अभियान में शरीक न होने पर शर्मिन्दगी का एहसास है। इन की क्षमा याचना की विनती भी मात्र अपने पाखण्ड पर परदा डालने के लिए है वरना सच्चे दिल से वे क्षमा के इच्छुक नहीं हैं।

इस से मुनाफ़िक़त (पाखण्ड) की हकीकत भी स्पष्ट हो जाती है और वह है दिल से ईमान न रखते हुए अपने को मुसलमान ज़ाहिर करना।

21. ये मुनाफ़िक़ (पाखण्डी लोग) समझ रहे थे कि जब मुसलमान उमरा के लिए मक्का में दाख़िल होंगे तो कुरैश और दूसरे क़बीले के लोग निश्चित रूप से इन के विरुद्ध जंग करेंगे

और मुसलमान चूँकि जंग की तैयारी के साथ नहीं जा रहे हैं इस लिए अपना बचाव नहीं कर सकेंगे। अब रसूल के साथ पूरे झुण्ड का खात्मा सुनिश्चित है। पाखण्डियों का यही गुमान था जिस के कारण से उन्होंने ने इस मुहिम में रसूल का साथ नहीं दिया परन्तु अब वे इस बात को छिपा कर अपनी व्यस्तता का बहाना कर रहे हैं ।

अर्थात् जब वे देख रहे थे कि मुसलमानों का जत्था रसूल के नेतृत्व में एक बहुत ही खतरनाक मुहिम सर करने जा रहा है तो वे चैन से किस तरह अपने घरों में बैठे रहे। उन की यह बुज्जिलाना हरकत उन्हें इस लिए भली मालूम हुई कि उन की मानसिकता ही दूषित थी।

23. अर्थात् तुम ने अल्लाह और उस के रसूल के बारे में बुरे गुमान किये, जैसे यह कि अल्लाह का वादा पूरा होने वाला नहीं और न रसूल का ख्वाब सच्चा होने वाला है।

24. अल्लाह पर ईमान लाने के साथ उस के रसूल पर भी ईमान लाना ज़रूरी है। जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान नहीं लाता वह काफ़िर है और जो व्यक्ति अल्लाह को तो मानता है किन्तु उस के रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ईमान नहीं लाता वह भी काफ़िर है। यह आयत भी इस की पुष्टि करती है और दूसरी आयतें भी इस पर दलील हैं।

25. अर्थात् जहन्नम।



अल्लाह राज़ी हुआ मोमिनों से जब वे वृक्ष के नीचे तुम से बैअत कर रहे थे। उस ने जान लिया उन के दिलों का हाल। इस लिए उन पर सकीनत (परितोष) नाज़िल की और उन को एक करीबी विजय प्रदान की। (अल-कुर्आन)

14. आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है। वह जिसे चाहे माफ़ करे और जिसे चाहे सजा दे।²⁶ वह क्षमा करने वाला और दया करने वाला है।²⁷

وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ
مَن يَشَاءُ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ⑬

15. जब तुम ग़नीमतें (परिहार सामग्री) हासिल करने के लिए जाने लगोगे तो ये लोग जो पीछे छोड़ दिए गए हैं ज़रूर कहेंगे कि हमें भी साथ चलने दो।²⁸ ये चाहते हैं कि अल्लाह के क्रौल (कथन) को बदल दें। (इन से) कहो तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चल सकते। यह बात अल्लाह पहले ही फ़रमा चुका है।²⁹ ये कहेंगे नहीं बल्कि तुम लोग हम से ईर्ष्या करते हो। लेकिन सच्चाई यह है कि ये लोग कम ही समझते हैं।³⁰

سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ إِلَى مَغَانِمَ لَتَأْخُذُواهَا
ذُرُونَا نَتَّبِعْكُمْ يُرِيدُونَ أَن يُبَدِّلُوا كَلِمَ اللَّهِ قُل لَّنْ
تَتَّبِعُونَا كَذَلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِنْ قَبْلُ سَيَقُولُونَ
بَلْ تَحَسُدُ وَنَأْتِلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ⑭

16. इन देहातियों से जो पीछे छोड़ दिए गए हैं कह दो कि शीघ्र ही तुम्हें बहुत ही बलिष्ठ क्रौम से मुकाबले के लिए बुलाया जाएगा। तुम को उन से जंग करना होगी या वे इस्लाम में आ जाएंगे।³¹ अगर तुम ने इस आदेश का अनुपालन किया तो अल्लाह तुम को अच्छा बदला देगा। और अगर तुम ने मुँह मोड़ा जैसा कि तुम पहले मुँह मोड़ चुके हो, तो वह तुम को दुखदायिनी यातना देगा।³²

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سَتُدْعُونَ إِلَى قَوْمٍ أُولِي بَأْسٍ
شَدِيدٍ تُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يُسْلِمُونَ فَإِنْ تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا
حَسَنًا وَإِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ⑮

17. नेत्रहीन (के जिहाद के लिए न निकलने) पर कोई हर्ज नहीं और न लंगड़े और मरीज़ पर कोई हर्ज है।³³ और जो अल्लाह और उस के रसूल का अनुपालन करेगा उसे वह ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी³⁴ और जो मुँह फेरेंगे उसे वह दुखदायिनी यातना देगा।

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْمَرْبُوعِ
حَرْجٌ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ وَمَنْ يَتَوَلَّ يَُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ⑯

18. अल्लाह राज़ी हुआ मोमिनों से जब वे वृक्ष के नीचे तुम से बैअत कर रहे थे।³⁵ उस ने जान लिया उन के दिलों का हाल।³⁶ इस लिए उन पर सकीनत (परितोष) नाज़िल की³⁷ और उन को एक क़रीबी विजय प्रदान की।³⁸

لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ
فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ
فَتْحًا قَرِيبًا ⑰

26. यह अल्लाह के असीमित अधिकार का जिक्र है कि वह उन को जिस तरह चाहे इस्तेमाल करे। साथ ही वह न्याय करने वाला और तत्त्वदर्शी है इस लिए वह अपने अधिकारों को ठीक ठीक न्याय और तत्त्वदर्शिता के साथ इस्तेमाल करता है इस लिए ऐसा नहीं होता कि वह ख्वाह-म-ख्वाह किसी को सजा दे।

27. यह ढारस है बन्दों को कि अगर उन से गुनाह हो चुके हैं तो वे निराश न हो बल्कि अल्लाह की तरफ रूजू करें और उस की क्षमा और दया के इच्छुक बनें।

28. इशारा है निकट भविष्य में मिलने वाली विजयों की तरफ जो आसानी से प्राप्त हो सकेंगी और जिन में भारी मात्रा में परिहार सामग्री (माले-गनीमत) मुसलमानों के हाथ लगेगा। अतः हुदैबिया संधि के कुछ ही दिनों बाद मुहर्रम सन ७ हिजरी में खैबर पर विजय प्राप्त हुई जो मदीना के उत्तर पूर्व की ओर लगभग डेढ़ सौ किमी. की दूरी पर है। यहाँ बहू (देहाती) आबाद थे और यह क्षेत्र मजबूत किलों, उपजाऊ ज़मीनों और जंगलों की दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण था। इस विजय में भारी मात्रा में परिहार सामग्री मुसलमानों के हाथ लगी और उपजाऊ ज़मीनों तथा पेड़ों की पैदावार से मुसलमानों के संसाधनों में काफ़ी वृद्धि हुई।

यह परिहार सामग्री (माले-गनीमत) अल्लाह तआला ने बैअते-रिजवान करने वालों के लिए ख़ास कर दिए थे। इस लिए उस ने इस युद्ध में उन लोगों को शामिल होने की अनुमति नहीं दी जो उमरा के सफ़र में उस के ख़तरनाक होने के कारण शरीक नहीं हुए थे।

29. अर्थात् खैबर की जंग पेश आने से पहले जब कि “सूरह फ़तह” नाज़िल हुई इस आयत में अल्लाह तआला यह हुक्म दे चुका था कि इन पीछे रह जाने वालों को निकट भविष्य में होने वाले युद्ध में सम्मिलित होने की अनुमति न दी जाए जिस में माले-गनीमत की प्राप्ति की पूर्ण आशाएँ हैं। क्यों कि जब उन्होंने ने एक ख़तरों से भरे अभियान में रसूल का साथ नहीं दिया तो इन परिहार सामग्री (माले-गनीमत) से महरूमी इन के लिए सुनिश्चित हो गई।

30. अल्लाह तआला ने प्रत्येक व्यक्ति को बुद्धि दी है चाहे वह शहरी हो या देहाती और चाहे वह साधारण व्यक्तियों में से हो या असाधारण व्यक्तियों में से और यह बुद्धि इस लिए दी है ताकि वह समझदारी का परिचय दे। किन्तु जब मनुष्य बुद्धि से काम नहीं लेता तो ना समझी की बातें करने लगता है।

31. इशारा है क़बीला हवाज़न की तरफ़ जिस के साथ शव्वाल सन ८ हिजरी में युद्ध हुआ और यह युद्ध मक्का ही के सिलसिले की एक कड़ी थी। हवाज़न बड़े ही आक्रमक और

तीरंदाजी में दक्ष थे। इन से मुकाबला आसान न था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब मक्का विजय कर लिया तो हवाज़न की तरफ़ बड़े जिन्हों ने जंग की ज़बरदस्त तैयारी कर ली थी। आप के साथ बारह हजार का लश्कर था फिर भी कड़े विरोध का सामना करना पड़ा। आख़िरकार हवाज़न के पाँव उखड़ गये और इस्लामी लश्कर को सफलता मिली तथा भारी मात्रा में परिहार सामग्री हाथ लगी। इस के बाद हवाज़न के लोग भी इस्लाम में दाख़िल हुए। इस तरह मक्का पर इस्लाम का प्रभुत्व जम गया।

32. इस चेतावनी का असर यह हुआ कि मदीना के इर्द गिर्द मजहीना और जहीना जैसे बहू क़बीले जो हुदैबिया के मौक़े पर पीछे रह गए थे मक्का विजय के अभियान में शरीक हुए और हुनैन में हवाज़न से युद्ध किया जो अत्यंत बलिष्ठ जाति थी।

इस जिहाद में मुँह मोड़ने वालों को दुखदायिनी यातना का डरावा सुनाया गया है जिस से इस पाप की संगीनी स्पष्ट हो जाती है। यह पाप इस लिए संगीन था कि प्रथम तो यह अल्लाह और उस के रसूल के स्पष्ट आदेश (जिहाद के आदेश) का खुला उल्लंघन था, द्वितीय एक ऐसे नाज़ुक मौक़े पर जब कि इस्लाम को भारी ख़तरों का सामना हो और उस के लिए अधिक से अधिक सामूहिक शक्ति की आवश्यकता थी, आराम से एक किनारे बैठे रहना किसी मुसलमान का काम न था। तृतीय अल्लाह का रसूल अपनी जान जोखिम में डाल कर जिहाद के लिए निकल पड़े और उस के अनुयायी चैन से अपने घरों में बैठे रहें। यह खुला पाखण्ड और दोगलापन है। इस लिए यह जिहाद जिस में रहनुमाई और नेतृत्व के लिए स्वयं अल्लाह का रसूल मौजूद था, ईमान की कसौटी क्रार पाया। इस से मुँह मोड़ने वाले वही लोग हो सकते थे जो अपने ईमान में सच्चे न थे।

33. अर्थात् ऐसे लोग जो किसी सच्ची मजबूरी के कारण जिहाद में शरीक न हो सकें इन पर कोई गिरफ़्त नहीं। नेत्रहीन (अन्धा) लंगड़ा और मरीज़ होना सच्ची मजबूरी है जिस का शरीअत ने लिहाज़ किया है।

34. अर्थात् सच्ची मजबूरी के चलते जिहाद में सम्मिलित न होने वालों पर कोई आपत्ति नहीं है बशर्ते कि वे अल्लाह और उस के रसूल का सच्चे मन से अनुपालन करते रहें। उन की वफ़ादारी और अनुपालन ही उन्हें जन्नत का भागीदार बना सकती है।

35. यह बैत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुदैबिया में सहाबा किराम से उस समय ली जब हज़रत उस्मान जिन को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरैश के पास यह संदेश दे कर भेजा था कि हम लड़ने के लिए नहीं बल्कि उमरा के लिए

आए हैं, वापस नहीं आए तो चिन्ताजनक स्थिति पैदा हुई कि उमरा अदा करने के लिए अब मक्का के काफ़िरों की तरफ़ से विरोध का सामना करना होगा और इस हाल में करना होगा कि मुसलमान एहराम की हालत में हैं और उन के पास युद्ध सामग्री भी नहीं है। बचाव के लिए केवल तलवारे हैं जो सफ़र में साथ हुआ करती थीं। इस नाज़ुक मौक़े पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक वृक्ष के नीचे सहाबा किराम से प्रतिज्ञा ली कि वे भागेंगे नहीं और अपने उद्देश्य के लिए अपनी जानें लड़ा देंगे। सहाबा किराम ने जिन की संख्या एक हजार चार सौ थी पूरे जोश और प्रसन्नता के साथ यह प्रतिज्ञा की थी। इस प्रतिज्ञा (बैअत) से कुरैश रोब में आ गए और उन्होंने ने समझौते का प्रस्ताव रखा। इस से पहले हज़रत उस्मान भी सही सलामत वापस आ गए। अल्लाह को यह बैअत जो एक नाज़ुक मौक़े पर रसूल की छत्र छाया में जान की बाज़ी लगाने के लिए की गई थी, बहुत पसंद आई और बैअत करने वालों को इस आयत के द्वारा खुशख़बरी दी कि अल्लाह उन से राज़ी हुआ। इस कारण से इस बैअत को बैअते-रिज़्वान कहते हैं।

हज़रत उस्मान की उस समय तक मक्का से वापसी नहीं हुई थी। इस लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन की तरफ़ से स्वयं बैअत कर ली। इस तरह हज़रत उस्मान को भी इस बैअत में शिर्कत का सौभाग्य प्राप्त हो गया। हज़रत उस्मान की तरफ़ से आप का बैअत करना इस बात का सबूत है कि आप ने इस ख़बर पर विश्वास नहीं किया था कि हज़रत उस्मान मक्का

में क़त्ल कर दिए गए और न इस अफ़वाह के आधार पर आपने सहाबा किराम से बैअत (प्रतिज्ञा) ली थी। बल्कि मक्का के काफ़िरों से युद्ध की आशंका के कारण बैअत ली थी।

यह आयत उन तमाम सहाबा को जो इस बैअत में शरीक थे अल्लाह की प्रसन्नता का प्रामाण्य पत्र प्रदान करती है। इस के बावजूद मुसलमानों का एक वर्ग ऐसा है जो कुछ लोगों को अलग कर के सहाबा के पूरे समूह को ग़लत बताता है और उन को बुरा भला कहता है। इस वर्ग के लोगों का दुस्साहस देखिए कि अल्लाह ने जिन लोगों के बारे में अपनी प्रसन्नता का एलान किया है उन से वे विद्वेष प्रकट करते हैं। काश कि ये लोग ग़िरोही सोच से ऊपर उठकर कुर्आन की रौशनी में अपना रवैया निर्धारित करते।

36. अर्थात् उन के मन की सत्यता और उन की वफ़ादारी जाहिर हो गई।

37. अर्थात् हार्दिक संतुष्टि और सुकून उन्हें प्राप्त हुआ और यह चीज़ उन के ढारस और साहस का कारण बनी अतः ख़तरों से भरी परिस्थितियों में भी उन के हौसले बुलन्द रहे और हर प्रकार के विरोध का सामना करने के लिए तैयार हो गए।

38. तात्पर्य ख़ैबर की विजय है जो हुदैबिया संधि के कुछ ही दिनों बाद ही अर्थात् मुहर्रम सन ७ हिजरी की घटना है। यह विजय अल्लाह की तरफ़ से एक इनाम था जो बैअते-रिज़्वान करने वालों पर हुआ। “करीबी विजय” की भविष्य वाणी एक सुनिश्चित बात थी इस लिए इस तरह बयान किया कि जैसे यह विजय हो चुकी है।



खैबर का स्थान मदीना से लगभग डेढ़ सौ किलोमिटर दूर



19. और ग़नीमत के बहुत से माल जिन को वे प्राप्त करेंगे।³⁹ अल्लाह प्रभुत्वशाली है, तत्त्वदर्शी।⁴⁰

وَمَغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ①

20. अल्लाह ने तुम से बहुत सारे माले-ग़नीमत (परिहार सामग्रियों) का वादा किया है जिन को तुम प्राप्त करोगे⁴¹ और तत्कालिक रूप से तुम को यह (सहायता) प्रदान की और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए⁴² और इस लिए ऐसा किया ताकि ईमान वालों के लिए एक निशानी हो⁴³ और तुम्हें सीधे मार्ग पर चलाए।⁴⁴

وَعَدَكُمْ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً تَأْخُذُوهَا فَعَجَلَ لَكُمْ هَذِهِ
وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ وَلِتَكُونَ آيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ
وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ②

21. और दूसरे माले-ग़नीमत (परिहार सामाग्री) भी जिन पर अभी तुम सामर्थ्य नहीं रखते किन्तु अल्लाह ने उन को घेर रखा है⁴⁵ और अल्लाह को हर चीज़ पर सामर्थ्य प्राप्त है।

وَأُخْرَى لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا وَكَانَ اللَّهُ
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ③

22. अगर ये काफ़िर तुम से जंग करते तो निश्चय ही पीठ फेर जाते फिर न कोई संरक्षक पाते और न सहायक।⁴⁶

وَلَوْ قَاتَلَكُمْ الَّذِينَ كَفَرُوا الْوَلَوْ أَدْبَارْتُمْ لَأِيجِدُونَ
وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ④

23. यह अल्लाह की सुन्नत (नियम) है जो पहले से चली आ रही है⁴⁷ और अल्लाह की सुन्नत में तुम हरगिज़ कोई परिवर्तन न पाओगे।

سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ وَلَكِنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ
اللَّهِ تَبْدِيلًا ⑤

24. वही है, जिस ने मक्का की घाटी में उन के हाथ तुम से और तुम्हारे हाथ उन से रोक दिये, बाद इस के कि उन पर तुम्हें विजय प्रदान कर चुका था⁴⁸ और जो कुछ तुम कर रहे थे उसे अल्लाह देख रहा था।

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ
مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ⑥

25. वही लोग हैं जिन्होंने ने कुफ़्र किया और तुम्हें मस्जिदे-हराम से रोका और कुर्बानी के जानवरों को भी रोके रखा कि वे अपनी जगह (अर्थात् कुर्बान गाह) पहुँचने न पाएँ।⁴⁹ और अगर ऐसे मोमिन मर्द और मोमिन औरतें (मक्का में) मौजूद न होती जिन्हें तुम नहीं जानते, और जिन के बारे में यह अंदेशा न होता कि तुम उन्हें अनजाने में कुचल दोगे और उन के बारे में तुम पर इल्जाम आएगा (तो जंग रोकी न जाती, रोकी इस लिए गई) ताकि अल्लाह अपनी रहमत में जिस को चाहे दाखिल करे।⁵⁰ अगर वे अलग हो गए होते तो हम इन (मक्का वालों) में से जिन्होंने ने कुफ़्र किया दुखदायिनी यातना देते।⁵¹

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيِ
مَعْكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ حِلَّهُ وَلَوْلَا رِجَالُ الْمُؤْمِنِينَ وَنِسَاءُ الْمُؤْمِنَاتِ
لَمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطُوفُوهُمْ فَتُصِيبَكُمْ مِنْهُمْ مَعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ
لِيُدْخِلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ⑦

39. इशारा खैबर आदि में प्राप्त होने वाले माले-गनीमत की तरफ़ है। इस भविष्यवाणी के अनुसार खैबर में जो माले-गनीमत मुसलमानों को प्राप्त हुए उन में सोने और चाँदी का खज़ाना, एक हजार भाले, चार सौ तलवारें, पाँच सौ कमानें और युद्ध सामग्रियों में मिन्जनिक्क और दबावे जैसी उस समय की अधुनिक चीज़ें तथा खेतियाँ और वृक्षों के अंबार शामिल हैं जिन में चालीस हजार खजूर के वृक्ष थे। उन खेतों और वृक्षों को यहूदियों के हाथों में इस शर्त पर रहने दिया गया कि वे पैदावार का आधा हिस्सा मुसलमानों को अदा करेंगे। इस तरह मदीना के मुसलमानों के लिए यह आमदनी का बहुत बड़ा साधन बन गया। (ग़ज़वा-ए-खैबर, मुहम्मद अहमद बाशमील पृष्ठ २७०, २७१) और खैबर विजय होते ही फ़िदक और वादी अल-कुरा भी विजय हो गया जो खैबर के निकट ही उपजाऊ इलाक़ा था। उस इलाक़े के यहूदियों से भी यह मामला तय पाया कि वे पैदावार का आधा मुसलमानों को अदा करेंगे। (उक्त किताब पृष्ठ २९७)

40. अल्लाह प्रभुत्वशाली है इस लिए उस की यह योजना पूरी हो कर रहेगी। और वह तत्त्वदर्शी है इस लिए उस का वह निर्णय भी हिकमत से भरा और तत्त्वपूर्ण होगा।

41. अर्थात् खैबर के अलावा दूसरे बहुत से माले-गनीमत भी तुम्हें प्राप्त होंगे। अतः निकट भविष्य में हुनैन में भारी मात्रा में माले-गनीमत मुसलमानों के हाथ लगा।

42. अर्थात् बैअते-रिज़वान का तत्कालिक फल तुम को यह मिला कि अल्लाह की सहायता तुम को प्राप्त हुई और तुम्हारा रोब दाब मक्का के काफ़िरों पर ऐसा छा गया कि वे तुम पर हाथ उठा न सके और समझौते पर आमादा हो गए।

43. अर्थात् एक ऐसे मौक़े पर जब कि मुसलमान एहराम की हालत में होने के कारण जंग करने की अवस्था में न थे और दुश्मन के इलाक़े में दाख़िल हो चुके थे, मक्का के काफ़िरों का मुसलमानों के विरुद्ध कार्रवाई न करना और सुलह पर आमादा होना मुसलमानों के हक़ में अल्लाह की सहायता की स्पष्ट निशानी थी।

44. अर्थात् अल्लाह क्रमदम क्रमदम पर तुम्हारी रहनुमाई फ़रमाए।

45. इशारा है उन बड़ी बड़ी विजयों की ओर जो भविष्य में मुसलमानों को प्राप्त होने वाली थीं। विशेष रूप से फ़ारस और रूम की विजय जिन में ढेरों खज़ाने और भारी मात्रा में माले-गनीमत मुसलमानों को प्राप्त हुआ।

46. अर्थात् मक्का में दाख़िल होने के लिए जंग की नौबत आ जाती तो उस जंग में मुसलमानों को विजय प्राप्त होती और मक्का के काफ़िरों को निश्चित रूप से पराजय का सामना करना पड़ता। यह इस लिए कि यद्यपि मुसलमानों के साथ जंग का

सामान नहीं था किन्तु जब वे अल्लाह की राह में जान की बाज़ी लगाने के लिए तैयार हो गए तो अल्लाह की मदद भी उन के पक्ष में सुनिश्चित हो गई। और अल्लाह की मदद के मुकाबले में काफ़िरों को पराजय ही का सामना करना पड़ता है जैसा कि बद्र की जंग आदि में हुआ।

47. अल्लाह की सुन्नत अर्थात् उस का नियम यह है कि जब रसूल को स्वयं युद्ध के मैदान में उतरना पड़ता है तो यह युद्ध सत्य और असत्य के बीच एक निर्णायक युद्ध होती है ऐसे मौक़े पर अल्लाह की मदद हमेशा उस के रसूल और उस पर ईमान लाने वालों के साथ होती है। सूरह रूम में इशाद हुआ है :-

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ
بِالْبَيِّنَاتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرَمُوا وَكَانَ حَقًّا
عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ - (الرूम: ४८)

“हम ने तुम से पहले भी (रसूल इन की जातियों की तरफ़ भेजे थे और वे उन के पास निशानियाँ ले कर आए थे। फिर हम ने उन लोगों को सजा दी जिन्होंने ने अपराध किया और हम पर अनिवार्य थी मोमिनों की सहायता।” (रूम - ४७)

48. अर्थात् हुदैबिया में बैअत-रिज़वान के बाद तुम्हारी पोज़ीशन काफ़ी मज़बूत हो गई थी और मक्का के काफ़िरों के हौसले छूट चुके थे फिर भी जंग दोनों के लिए कुछ आवश्यक सी हो गई थी परन्तु अल्लाह तआला की नीति का तकाज़ा यह था कि जंग न हो इस लिए उस ने दोनों पक्षों को युद्ध से रोक दिया और समझौते पर आमादा किया।

युद्ध से रोकने की एक सूत्र यह भी सामने आई कि काफ़िरों का एक गिरोह जिस की संख्या अस्सी थी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़त्ल के इरादे से तनओम की पहाड़ी से सुबह नमाज़ के वक्त उतर आया। सहाबा किराम ने उन को पकड़ा और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में पेश किया आप चूँकि उस मौक़े पर जंग को टालना चाहते थे इस लिए उन को रिहा कर दिया। (देखिए तिर्मिज़ी तफ़सीर सूरह फ़त्ह)

49. यह काफ़िरों की हठधर्मी थी कि कुर्बानी के जानवरों को भी जिन का वे बड़ा आदर करते थे कुर्बानगाह में दाख़िल होने से रोक दिया।

50. यहाँ वह महान नीति और बड़ी मसलहत बयान की गई है जिस के कारण अल्लाह तआला ने जंग न होने दी और हुदैबिया की संधि हो गई। वह यह कि मक्का में मुसलमान मर्द और औरतें मौजूद थीं जिन को सहाबा किराम नहीं जानते थे इस लिए उन के युद्ध की चपेट में आने का अन्देशा था। अल्लाह

तआला ने उन के ईमान की बदौलत उन पर रहम फ़रमाया और जंग की नौबत आने न दी। अगर वे मुसलमानों के हाथों क्षति उठाते तो यह बात स्वयं मुसलमानों को अच्छी न लगती और दुश्मनों को यह कहने का मौक़ा मिलता की जो जंग रसूल के नेतृत्व में लड़ी गई उस में भी मुसलमानों ने अपने ही भाइयों का गला काट दिया।

इस से यह बात निकलती है कि अगर काफ़िरों की आबादी पर हमला करना पड़े तो वहाँ जो मुसलमान मौजूद हों उन को बचाने के हर संभव प्रयास करना चाहिए किन्तु अगर युद्ध अनिवार्य हो जाए और उस आबादी के मुसलमानों को न बचाया जा सकता हो तो उन की वजह से जंग को टाला नहीं जा सकता वरना काफ़िरों को मुसलमानों पर मुसल्लत होने का मौक़ा मिलेगा। हुदैबिया में अल्लाह की तदबीर से जंग टल गई वरना बैअते-रिज्जान इसी लिए की गई थी कि अगर जंग की नौबत आती है तो मुसलमान पीठ नहीं फेरेंगे।

हुदैबिया संधि की यह नीति अल्लाह तआला ने बाद में ज़ाहिर फ़रमाई और सहाबा किराम ने रसूल के आदेश का

अनुपालन तो इस नीति के प्रकट होने से पहले ही किया था, यद्यपि वे इस संधि को उचित नहीं समझ रहे थे। और इस की कटुता को ही दूर करने के लिए उन पर नीति स्पष्ट कर दी गई और उन को कई खुशख़बरियाँ सुनाई गई। स्पष्ट हुआ कि आदेश का अनुपालन नीति समझ लेने पर निर्भर नहीं है। अल्लाह और उस के रसूल का आदेश अनुपालन के लिए पर्याप्त है चाहे उन की नीति समझ में आए या न आए। सहाबा किराम का यही तरीक़ा था जिस के कारण उन को तौफ़ीक़ पर तौफ़ीक़ प्रदान होती रही और अल्लाह की प्रसन्नता उन्हें प्राप्त हुई। मौजूदा दौर का मुसलमान पहले मसलहत जानना चाहता है उस के बाद अनुपालन के लिए आमादा होता है और नहीं भी होता। यह बड़ी दूषित मानसिकता है जो अनुपालन के रवैये के विरुद्ध है।

51. अर्थात् जो मुसलमान मक्का में मौजूद थे वे अगर काफ़िरों की आबादी से अलग हो गए होते तो अल्लाह तआला की नीति यह होती कि मुसलमान मक्का में अपने बल पर दाख़िल हों फिर उन के हाथों काफ़िरों का सिर कुचला जाता।



अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा ख़्वाब दिखाया था, जो सत्य पर आधारित था। इन्शाअल्लाह तुम ज़रूर मस्जिदे-हराम में अमन के साथ दाखिल होगे अपने सर मुंडाते और बाल कतराते हुए। तुम्हें कोई डर न होगा तो उस ने जानी वह बात जो तुम ने नहीं जानी। अतः उस ने इस से पहले तुम को एक करीबी विजय प्रदान की। (अल-कुआन)

26. जब काफ़िरों ने अपने दिलों में स्वभिमान पैदा किया ---- जाहिलिय्यत का स्वभिमान ⁵² ---- तो अल्लाह ने अपने रसूल और मोमिनों पर सकीनत (परितोष) नाज़िल फ़रमाई ⁵³ और उन को तक्रवा की बात का पाबन्द रखा और वे उस के हक़दार और योग्य थे। ⁵⁴ और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।

إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ
الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى
الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَى وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا
وَأَهْلَهَا وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

27. अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा ख़्वाब दिखाया था, जो सत्य पर आधारित था। इन्शाअल्लाह तुम ज़रूर मस्जिदे-हराम में अमन के साथ दाखिल होगे अपने सर मुंडाते और बाल कतराते हुए। तुम्हें कोई डर न होगा ⁵⁵ तो उस ने जानी वह बात जो तुम ने नहीं जानी। ⁵⁶ अतः उस ने इस से पहले तुम को एक क़रीबी विजय प्रदान की। ⁵⁷

لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّؤْيَا بِالْحَقِّ لَتَدْخُلَنَّ الْمَسْجِدَ
الْحَرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ إِمْنِينَ عَلَىٰ لَيْقَيْنِ رُؤُوسَكُمُ وَمَقْصَرَيْنِ
لَا تَخَافُونَ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَلِكَ فَتْحًا
قَرِيبًا ۝

28. वही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सत्य धर्म के साथ भेजा ताकि समस्त धर्मों (सारी जीवन प्रणालियों) पर इस को ग़ालिब कर दे। ⁵⁸ और (इस पर) अल्लाह का गवाह होना काफ़ी है।

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ
عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝

29. मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। ⁵⁹ और जो लोग उन के साथ हैं वे काफ़िरों पर सख्त और आपस में रहमदिल हैं। ⁶⁰ तुम उन्हें रुकू और सज्दे की हालत में पाओगे। ⁶¹ (और देखोगे कि) वे अल्लाह के अनुग्रह और उस की प्रसन्नता की तलब में सक्रिय हैं। ⁶² उन की निशानी उन के चेहरों पर सज्दों का निशान है। ⁶³ उन की यह विशेषता तौरात में बयान हुई है। ⁶⁴ और इन्जील में उन की मिसाल इस तरह बयान हुई है जैसे खेती जिस ने अपनी कोंपल निकाली फिर उस को शक्ति दी फिर वह मोटी हुई फिर अपने तने पर खड़ी हो गई। ⁶⁵ वह किसानों को ख़ुश करती है ताकि काफ़िर इन से जलें। ⁶⁶ अल्लाह ने उन लोगों से जो इन में से ईमान लाए और जिन्होंने ने नेक काम किये, क्षमा और बहुत बड़े बदले का वादा कर रखा है। ⁶⁷

مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رَحِمَاءُ بَيْنَهُمْ
تَرَاهُمْ رُكْعًا سَجِدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا سِيمَاهُمْ فِي
وُجُوهِهِمْ مِنْ أَثَرِ السُّجُودِ ذَلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَمَثَلُهُمْ فِي
الْإِنْجِيلِ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْأَهُ فَآزَرَهُ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَىٰ
عَلَىٰ سَوْقِهِ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝

52. मक्का के काफ़िर जानते थे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने साथियों को ले कर केवल उमरा अदा करने के लिए आए हैं जो शुद्ध रूप से एक धार्मिक कर्म था और जिस का आदर वे स्वयं भी किया करते थे लेकिन जाहिलिय्यत की भावना का उन पर ऐसा प्रभाव हुआ कि प्रतिष्ठा भावना भड़क उठी और उन्होंने ने इस बात में अपनी हार महसूस की कि मुसलमानों का यह समूह उन के शहर में दाखिल हो। इस लिए उन्होंने केवल अपनी नाक ऊँची रखने की खातिर मुसलमानों को रोकना चाहा और जब संधि के लिए विवश हुए तो इस शर्त पर वे हट कर रहे थे कि मुसलमान इस वर्ष नहीं बल्कि अगले वर्ष आ कर उमरा अदा करें। फिर उन्होंने ने संधि पत्र लिखने की शुरूआत **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** से करने पर भी आपत्ति की कि रहमान कौन है हम नहीं जानते **يَا سَيِّدَ اللَّهِ** (अर्थात् तेरे नाम से ऐ अल्लाह) लिखो यही उन की जाहिलिय्यत की भावना थी जिस का वर्णन इस आयत में हुआ है।

53. अर्थात् सुकून और परितोष की ऐसी मनःस्थिति कि वे प्रतिकूल हालात से प्रभावित नहीं हुए।

54. **كَلِمَةُ الْفَوْرِ** (तक्रवा की बात) का पाबन्द बना रखा, का मतलब यह है कि उन नाजुक क्षणों में उन को यह तौफ़ीक़ मिली कि वे कोई बात भी तक्रवा के खिलाफ़ न करें। उन्होंने ने जिस तरह बैअते-रिज्वान की और हुदैबिया संधि को अनुचित समझने के बावजूद रसूल के आदेश का अनुपालन किया वह इस का स्पष्ट सबूत है।

और यह भी कि जब उन्हें उमरा अदा किये बग़ैर हुदैबिया से लौटना पड़ा तो उन्होंने ने न रसूल के ख़्वाब को ग़लत ठहराया और न इस पर कोई आपत्ति भरी टिप्पणी की। यदि कोई प्रश्न किया तो बस स्पष्टीकरण के लिए। इस तरह उन की ज़बान से तक्रवा ही की बातें निकलीं। और यह तौफ़ीक़ उन्हें इस लिए प्रदान हुई कि वे अपने सच्चे ईमान के आधार पर इस के अधिकारी थे और अल्लाह की राह में कुर्बानियाँ दे कर अपने को मुत्तक़ी साबित कर दिया था।

तिर्मिज़ी की हदीस में है कि कालिमतुतक्रवा से तात्पर्य **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** (अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं) है किन्तु तिर्मिज़ी ने स्वयं पुष्टि की है कि यह हदीस ग़रीब है (इस लिए स्वस्थ प्रमाण की श्रेणी को नहीं पहुँचती) फिर भी यह बात इस लिहाज़ से सही है कि तक्रवा की बुनियाद **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** है इस लिए तक्रवा का कालिमा मूल रूप से लाइलाह इल्लल्लाह ही है।

55. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़्वाब देखा था कि आप अपने साथियों (सहाबियों) के साथ मक्का में दाखिल हुए हैं और उमरा अदा किया है। इस ख़्वाब को ही अल्लाह का इशारा समझकर आप अपने सहाबियों के साथ उमरा के लिए

निकल पड़े थे किन्तु हुदैबिया से जब उमरा किये बग़ैर लौटना पड़ा तो सहाबा के मन में यह प्रश्न उठा कि नबी का ख़्वाब तो सच्चा होता है फिर उमरा किये बग़ैर हम किस तरह लौट रहे हैं? इसी का जवाब इस आयत में दिया गया है कि ये ख़्वाब अलालाह की तरफ़ से था जो बिलकुल सच्चा और सत्य पर आधारित था इस लिए यह निश्चित रूप से पूरा हो कर रहेगा। तुम लोग ज़रूर मस्जिदे-हराम (प्रतिष्ठित मस्जिद) में दाखिल होगे और अमन के साथ दाखिल होगे। किसी प्रकार का भय और ख़तरा नहीं होगा। तुम एहराम की हालत में होगे और इत्मीनान से उमरा के सारे भक्तिकर्मों (मनासिक) को पूर्ण करोगे।

हदीस में आता है कि यह प्रश्न नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किया गया तो आपने फ़रमाया मैं ने कब कहा था कि इस साल तुम मक्का में दाखिल होगे, तुम मक्का में दाखिल ज़रूर होगे और तवाफ़ भी करोगे। (बुखारी किताबुशशरूत) यह ख़्वाब दूसरे वर्ष पूरा हुआ। अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ीक्रादा सन ७ हिजरी में सहाबा के साथ मक्का पहुँच कर उमरा अदा किया जिसे “उमरातुल क़ज़ा” कहते हैं। इस मौक़े पर मक्का के काफ़िरों ने तीन दिन के लिए शहर ख़ाली कर दिया था इस लिए मुसलामानों ने अमन और इत्मीनान के साथ उमरा के सारे मनासिक अदा किए इस प्रकार ख़्वाब भी सच्चा सिद्ध हुआ और कुर्आन की सत्यता भी स्पष्ट हुई।

उमरा का एहराम जब उतारा जाता है तो सिर के बाल मुँडाए या तरश्चाए जाते हैं। और आयत में इस का उल्लेख करने से अभिप्रेत यह स्पष्ट करना है कि तुम मस्जिदे-हराम में एहराम की हालत में दाखिल होंगे और इत्मीनान से उमरा के सारे मनासिक अदा कर के एहराम उतारोगे

उमरा और हज्ज का एहराम उतारते समय सर के बाल मुँडाना भी जायज़ है और कतरवाना भी। लेकिन मुँडवाना बेहतर है।

56. अर्थात् तुम को यह मालूम नहीं था कि बग़ैर जंग किये तुम शान्ति के साथ मक्का में दाखिल होगे लेकिन अल्लाह को यह मालूम था इस लिए उस ने तुम को पेशागी इस की ख़बर दी। इसी तरह वह मसलहत भी जिस का ज़िक्र इस से पहले हुआ, तुम नहीं जानते थे मगर अल्लाह जानता था इस लिए उस ने जंग की नौबत आने नहीं दी और उमरा अगले साल के लिए लिख दिया।

57. तात्पर्य हुदैबिया की संधि है जो उमरा की अदायगी से पहले एक तत्कालिक विजय बन गई क्योंकि इस युद्ध न करने के समझौते ने पूरे अरब में इस्लाम के प्रसार का मार्ग खोल दिया तथा यह विजय मक्का की भूमि बन गई।

58. इस की व्याख्या सूरह तौबा नोट ६५ में गुज़र चुकी जो

इस मौक़े पर भी सामने रहे। वहाँ हम यह सविस्तार बता चुके हैं कि **يُظْهِرُهُ** (अर्थात् “ताकि इस को ग़ालिब कर दे) का कर्ता अल्लाह है न कि रसूल। इस के पक्ष में कुछ मुफ़स्सिरिन के कथन यहाँ प्रस्तुत किये जाते हैं। इब्ने ज़रीर तबरी फ़रमाते हैं :-

“अल्लाह तआला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़रमाता है कि ऐ मुहम्मद तुम्हारा रब अपने को गवाह कर के फ़रमाता है कि वह इस दीन को जिस के साथ तुम्हें मबऊस (नियुक्त) किया गया है ग़ालिब करेगा।” फिर इस की ताईद में हज़रत हसन का क़ौल नक़ल किया है। (तफ़सीर तबरी जिल्द २९ पृष्ठ ६९)

अल्लामा ज़मख़शरी लिखते हैं :-

“अल्लाह तआला उन्हें शहरों पर फ़तह अता करेगा और मुल्कों पर ऐसा तसल्लुत अता करेगा कि फ़तहे मक्का को वे कमतर ख़्याल करने लगेंगे।” (अलक़शशाफ़ जिल्द ३ पृष्ठ ५५०)

अल्लामा शोकानी लिखते हैं :-

अर्थात् अल्लाह का गवाह होना काफ़ी है इस इज़हार (ग़लबे) पर जिस का उस ने मुसलमानों से वादा किया है।” (फ़तुलक़दीर जिल्द ५ पृष्ठ ५५)

अल्लामा आलूसी फ़रमाते हैं :-

“और यह क़ौल किसी एक शख्स का नहीं है और ग़ालिबन अपने महल (और मौक़ा) के लिहाज़ से ज्यादा वाजेह है। कि दीन को अदयान (धर्मों) पर ग़ालिब करने की सूरत यह होगी कि वह (अर्थात् अल्लाह) मुसलमानों को तमाम अहले-अदयान (समस्त धर्म के मानने वालों) पर इक्तीदार अता करेगा।” (रुहुल मआनी जिल्द २६ पृष्ठ १२२)

और सब से बड़ी बात यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वयं इज़हारे-दीन अर्थात् दीन के ग़लबे को अल्लाह की तरफ़ मन्सूब फ़रमाया है। अतः सीरत इब्ने हिशाम में है कि आपने फ़रमाया :-

فَوَاللّٰهِ لَا اَزَالُ اُجَاهِدُ عَلَى الدِّينِ بَعَثَنِي اللّٰهُ بِهِ
حَتّٰى يُظْهِرَهُ اللّٰهُ. (سيرت ابن هشام ج ३ ص ३५८)

“अर्थ :- अल्लाह की क़सम जिस (दीन) को दे कर मुझे अल्लाह ने भेजा है उस के लिए मैं जिहाद करूँगा यहाँ तक कि अल्लाह उस को ग़ालिब कर दे।”

59. अर्थात् कोई माने या न माने अल्लाह की गवाही यह है कि मुहम्मद उस के रसूल हैं।

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह इस्लाम के कलिमे का दूसरा हिस्सा है। पूरा कलिमा इस तरह है :-

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ

अर्थ :- अल्लाह के सिवा कोई इलाह (उपास्य) नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।”

60. ईमान और कुफ़र दो परस्पर विपरीत चीज़ें हैं इस लिए दोनों के बीच स्थायी रूप से कशमकश बरपा रहती है और यह कशमकश जंग का रूप भी धार लेती है। इस लिए ईमान वाले काफ़िरों के लिए नर्म चारा नहीं हो सकते। वे उन के मुकाबले में पत्थर की चट्टान बन जाते हैं और जब भिड़ंत होती है तो पूरी शक्ति उन के विरुद्ध लगा देते हैं और उन का सिर कुचलने में कोई कसर उठा नहीं रखते।

ध्यान रहे कि काफ़िरों पर सख़्त होने का यह अर्थ नहीं है कि साधारण हालात में उन से कड़े लहज़े में बात चीत की जाए या सांसारिक मामलों में उन के साथ भलाई न की जाए या उन के साथ ख़राब व्यवहार का रवैया अपनाया जाए। इस्लाम की शिक्षा यह है कि प्रत्येक मनुष्य से, मनुष्य होने के नाते अच्छा व्यवहार किया जाए चाहे वह किसी भी विचारधारा अथवा धर्म का अनुयायी हो।

और मुसलमानों का रहम दिल होना तो उन के ईमान का तक्राज़ा है। वे एक दूसरे के हक़ में सख़्त नहीं बल्कि नर्म, मेहरबान, और दयालु होते हैं। हदीस में उन के परस्पर संबन्ध को इस तरह बयान किया गया है।

مَثَلُ الْمُؤْمِنِينَ فِي تَوَادِّهِمْ وَتَرَاحُمِهِمْ وَتَعَاطُفِهِمْ
مَثَلُ الْجَسَدِ إِذَا اشْتَكَى مِنْهُ عُضْوٌ تَدَاعَى لَهُ
سَائِرُ الْجَسَدِ بِالسَّهْرِ وَالْحُمَى. (مسلم کتاب البر)

“अर्थ :- मोमिन आपस की मुहब्बत और रहमदिली और एक दूसरे पर मेहरबान होने में ऐसे हैं जैसे एक शरीर कि अगर उस के एक अंग को तकलीफ़ पहुँचती है तो पूरा शरीर बुखार में लिप्त हो जाता है और नींद ग़ायब हो जाती है।” (मुस्लिम किताबुल बिर)

61. यह पाबन्दी के साथ नमाज़ अदा करने का प्रतीक है। दिन में पाँच वक्त की नमाज़ का आयोजन, देखने वाले पर यह प्रभाव छोड़ता है कि ये रूकू और सज्दे ही में लगे रहते हैं। उन का नमाज़ में यह लगाव एक ख़ास तरह के गुण की हैसियत रखता है।

62. अर्थात् उन की सारी दौड़ धूप अल्लाह के फ़ज़ल (उस के उदार अनुग्रह) की तलाश में और उस की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए होती है। वे क़दम क़दम पर अल्लाह का फ़ज़ल तलाश करते हैं कि वह उन पर मेहरबान हो और अपने इनाम से उन्हें

अलंकृत करे और उन की आखिरी चाह यह होती है कि अल्लाह की प्रसन्नता उन्हें प्राप्त हो।

63. तात्पर्य वह चिन्ह हैं जो सज्दा करते रहने से माथे पर पड़ता है तथा ईश-भय का वह असर भी जो चेहरे पर ज़ाहिर हो जाता है। उन के चेहरे उन की अन्तरात्मा को प्रतिबिम्बित करते हैं कि ये सच्चे ईश भक्त हैं।

64. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबियों की यह पहचान तौरात में भी बयान हुई है जैसा कि कुर्आन पुष्टि करता है किन्तु मौजूदा तौरात से यह मज़मून गायब है। और यह मज़मून ही उम्मी नबी से संबन्धित अन्य कितनी ही भविष्यवाणियाँ जिस के तौरात में मौजूद होने की कुर्आन पुष्टि करता है, मौजूदा तौरात उन के ज़िक्र से ख़ाली है सिवाये दो तीन भविष्य वाणियों के जिन के अनुवाद में भी परिवर्तन कर दिया गया है। इस से अन्दाज़ा होता है कि तौरात की जो प्रति अब उपलब्ध हैं उन में बड़ी रिक्तियाँ महसूस होती हैं। आखिरत और नमाज़ के ज़िक्र की दृष्टि से भी और उम्मी नबी से सम्बन्धित भविष्यवाणियों की दृष्टि से भी जिस से साफ़ ज़ाहिर होता है कि कितनी ही बातें तौरात से गायब कर दी गई हैं, कितनी ही बातों में परिवर्तन कर दिया गया है और कितने ही शब्दों का ग़लत अर्थ निर्धारण कर दिया है ताकि असल हक़ीक़त पर परदा पड़ा रहे।

65. इन्जील की उपलब्ध प्रतियों में यह मज़मून इस रूप

में मौजूद है :-

“स्वर्ग का राज्य एक राई के दाने के समान है जिसे किसी मनुष्य ने ले कर अपने खेत में बो दिया। वो सब बीजों में छोटा तो है पर जब बढ़ जाता है तो सब साग पात से बड़ा होता है और ऐसा पेड़ हो जाता है कि आकाश के पक्षी आ कर उस की डालियों पर बसेरा करते हैं।”

(मत्ती १३:३१, ३२)

आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबियों की संख्या में, दिन प्रतिदिन वृद्धि उन के समूह के संगठित और सुदृढ़ होने तथा इस्लाम की क्रमबद्ध प्रगति और उस के वर्चस्व का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

66. अर्थात् जिन्होंने ने इस खेती (इस्लाम की खेती) की और उस की सिंचाई करते रहे वे यह देख कर कि खेती बहार पर आ गई है खुशी से झूम उठे। किन्तु काफ़िरों को इस्लाम का फलना फूलना अप्रिय हुआ और मुसलमानों को खुश होता हुआ देख कर उन पर क्रोधित हुए और उन पर ईर्ष्या करने लगे।

67. अर्थात् मुसलमानों के समूह में जो लोग अपने ईमान में सच्चे और चरित्र की दृष्टि से अच्छे हैं उन से अल्लाह का वादा है कि वह उन को क्षमा प्रदान करेगा और उन्हें बहुत बड़े बदले (अर्थात् बड़े इनाम) से अलंकृत करेगा। रहे नाम मात्र के मुसलमान तो उन के लिए ये खुशख़बरी नहीं है।



सूरह अल-हुजुरात

४९. सूरह अल-हुजुरात

नाम :- आयत ४ में हुजुरात (हुज्जों) के बाहर से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पुकारने पर पकड़ की गई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल्-हुजुरात” है।

नाज़िल होने का समय :- यह सूरह मदीना में सन ९ हिजरी में नाज़िल हुई जब कि अरब के विभिन्न स्थानों से प्रतिनिधि मण्डल की आमद का सिलसिला शुरू हो गया था और लोग फ़ौज दर फ़ौज इस्लाम में दाखिल हो रहे थे।

केन्द्रीय विषय :- उन आदाब और अख़लाक़ की शिक्षा जो ईमान का तक्राज़ा हैं और इस्लामी समाज को स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक हैं।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ५ में इस बात की ताकीद की गई है कि ईमान वाले अपनी बात पेश करने में अल्लाह और उस के रसूल से आगे न बढ़ें और रसूल के अदब को पूरी तरह ध्यान में रखें।

आयत ६ से १० में इस्लामी भाईचारे को नुक़सान पहुँचाने वाली बातों से परहेज़ करने का निर्देश दिया गया है और जाँच पड़ताल तथा न्याय और समानता का रवैया अपनाने की ताकीद

की गई है।

आयत ११ और १२ में उन नैतिक बुराइयों से बचने की हिदायत की गई है जो परस्पर शत्रुता एवं बिगाड़ का कारण बनती हैं।

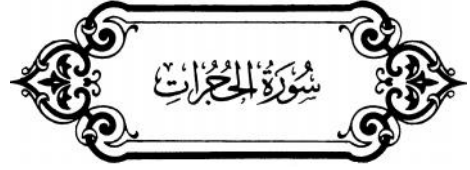
आयत १३ में वंश और जाति की श्रेष्ठता के दंभ पर प्रहार करते हुए स्पष्ट किया गया है कि समस्त जातियों और क़बीलों का रिश्ता एक ही स्त्री और पुरुष (आदम, हव्वा) से जा मिलता है इस लिए वंश एवं जाति की श्रेष्ठता के दंभ के लिए कोई आधार नहीं। मनुष्य और मनुष्य के बीच अन्तर करने वाली असल चीज़ तक्रवा (ईश-भय) है।

आयत १४ से १८ में उन मुसलमानों पर गिरफ़्त है जो दावा तो करते हैं कि उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया है किन्तु ईमान अभी उन के दिलों में उतरा नहीं है। उन पर स्पष्ट किया गया है कि सही ईमान वह है जिस में शक का संदेह नहीं होता और सच्चा मोमिन वह है जो अल्लाह की राह में अपनी जान और अपने माल के साथ जिहाद करता है।

४९.सूरह अल-हुजुरात

आयतें : १८

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह और उस के रसूल से आगे न बढ़ो,¹ और अल्लाह से डरो।² अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है।³

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْدُمُوا عَلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَ اتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَهِيدٌ عَلِيمٌ ①

2. ऐ ईमान लाने वालो ! अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से बुलंद न करो ⁴ और न उस से इस तरह ऊँची आवाज़ से बोलो जिस तरह आपस में एक दूसरे से बोलते हो।⁵ कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म नष्ट (अकारथ) हो जाएँ और तुम्हें ख़बर भी न हो।⁶

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ
وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَن تَحْبَطَ
أَعْمَالُكُمْ وَأَنتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ②

3. जो लोग अल्लाह के रसूल के आगे अपनी आवाज़ नीची रखते हैं वही हैं जिन के दिलों को अल्लाह ने तक्रवा के लिए ख़ालिस कर लिया है।⁷ उन के लिए क्षमा और बहुत बड़ा बदला (इनाम) है।

إِنَّ الَّذِينَ يَعْصُونَ أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَىٰ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ
وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ③

4. ऐ नबी ! जो लोग तुम्हें हुज्रों के बाहर से पुकारते हैं उन में से अधिकतर बे अक्ल हैं।⁸

إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِنَ الْخُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْقِلُونَ ④

5. अगर वे सब करते यहाँ तक कि तुम उन के पास आ जाते तो उन के लिए बेहतर था। और अल्लाह क्षमा करने वाला, रहम फ़रमाने वाला है।⁹

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّىٰ تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑤

6. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो ! अगर कोई फ़ासिक़ (उल्लंघनकारी) तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तहक़ीक़ (जाँच पड़ताल) कर लिया करो ¹⁰ कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी ग़िरोह के विरुद्ध अनजाने में कोई कार्रवाई कर बैठो और फिर अपने किये पर पछताने लगो।¹¹

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَأٍ فَتَبَيَّنُوا أَن
تُصِيبُوا قَوْمًا بِمَجْهَالَةٍ فَتُصْحَبُوا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ ⑥

1. अल्लाह और इस के रसूल से आगे बढ़ने के विभिन्न तरीके हो सकते हैं जैसे यह कि अपने फैसले को उन के फैसले पर और अपनी बात को उन की बात पर सर्वोपरि रखा जाए। जो मामला सामने हो उस में यह देखे बगैर कि शरीअत क्या कहती है, मत व्यक्त किया जाए या कोई क्रदम उठाया जाए, किताब और सुन्नत की बातों पर दूसरों की बातों को जैसे बुजुर्गों, आलिमों, या धर्मशास्त्रियों के कहने को वरीयता दी जाए। ये तमाम सूरतें अल्लाह और उस के रसूल के अनुपालन और रसूल की आज्ञापालन के विरुद्ध हैं।

2. अर्थात् यह ऐसी बात है जो तक्रवा के सरासर खिलाफ है अतः तुम्हें अल्लाह और उस के रसूल से आगे बढ़ने का दुस्साहस नहीं करना चाहिए।

3. अतः खूब समझ लो कि वह तुम्हारी बातें सुनता है और तुम्हारे दिलों का हाल जानता है।

4. नबी का स्थान बहुत बुलन्द है इस लिए उस का अधिक से अधिक अदब और आदर करना चाहिए। नबी की मजलिस के लिए यह अदब सिखाया गया है कि अपनी आवाज़ को नीची रखें। आज यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस मौजूद नहीं है किन्तु आपके इर्शादात मौजूद हैं उन को बुलन्द रखना और उन के मुकाबले में कोई आवाज़ ऊँची न करना इस आयत का ठीक मंशा है।

5. अर्थात् नबी को इस तरह संबोधित न करो जिस तरह आपस में सम्बोधन करते हो। अदब का तक्राज़ा है कि आप को या मुहम्मद कह कर संबोधित न किया जाए बल्कि या रसूलुल्लाह कह कर संबोधित किया जाए तथा बात चीत में आप की प्रिष्ठा का पूरा ध्यान रखा जाए।

6. यह कड़ी चेतावनी है उन लोगों को जो नबी की प्रतिष्ठा का लिहाज़ नहीं करते और बेअदबी की हरकतें कर गुजरते हैं। नबी के साथ अभद्र एवं ग़ैर संजीदा रवैया दिल के बहुत बड़े रोग को स्पष्ट करता है और वह है तक्रवा (ईश-भय) की कमी जिस का यदि सही समय से इलाज़ नहीं किया गया तो दिलों से तक्रवा समाप्त हो सकता है और जब तक्रवा ही बाक़ी न रहा तो उन कर्मों का कोई महत्व नहीं रह जाता जो ऊपर अच्छे प्रतीत होते हों। नेकी का कोई काम उसी सूरत में नेकी है जब कि उस की तह में तक्रवा-अल्लाह की महानता की कल्पना से उस का भय और उस की अवज्ञा से बचने की भावना मौजूद हो। आगे की आयत से खुद यह बात स्पष्ट हो रही है।

इन आयतों के अवतरण के बाद सहाबा किराम ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस में अपनी आवाज़ अत्याधिक धीमी कर ली थी। यहाँ तक कि आप को पूछना

पड़ता था कि कहने वाले ने क्या कहा और जिन की आवाज़ कुदरती तौर से ऊँची थी वे घबरा गए कि कहीं उन के कर्म नष्ट न हो जाएं। बुखारी की रिवायत है कि इस आयत के नाज़िल होने के बाद साबित बिन क्रैस को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नहीं देखा। आप ने उन का हाल जानने के लिए एक व्यक्ति को भेजा वह जब उन के घर पहुँचा तो देखा कि साबित बिन क्रैस अपने घर में सिर झुकाए बैठे हैं। पूछा क्या हाल है? उन्होंने ने जवाब दिया बहुत बुरा हाल है। क्यों कि जो व्यक्ति अपनी आवाज़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आवाज़ से ऊँची कर देता है उस के कर्म नष्ट हो जाते हैं और वह दोज़ख वालों में से हो जाता है। उस व्यक्ति ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस की सूचना दी। आप ने फ़रमाया जाओ और उन से कहो तुम जहन्नमी नहीं बल्कि जन्नती हो। (बुखारी किताबुत्तप्सीर)

7. स्पष्ट हुआ कि रसूल के पास आवाज़ को नीची रखने और उस का अदब और आदर करने का सम्बन्ध दिल के तक्रवा से है। इन बाह्य आदाब का दिल और दिमाग़ पर गहरा असर पड़ता है और इस से तक्रवा की परवरिश होती है। अगर तक्रवा इन बाह्य आदाब के लिए उत्प्रेरक की हैसियत रखता है तो ये आदाब तक्रवा (ईश-भय) को अतिरिक्त बल पहुँचाने का साधन बन जाते हैं।

8. देहाती अरब जिन में सलीके और शालीनता की बड़ी कमी थी, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुलाकात के लिए आते तो आप को मस्जिदे-नबवी में मौजूद न पा कर आप के घर के बाहर से जो हुज्रों (कमरों) पर आधारित था आवाज़ देने लगते। उन का यह तरीका अदब और एहतियार के विरुद्ध था और इस बात की परिचायक था कि अभी इन्होंने रसूल के स्थान और उन की प्रतिष्ठा को नहीं जाना है। रसूल का स्थान साधारण लोगों से बहुत ऊँचा होता है इस लिए उस के साथ वह रवैया नहीं अपनाया जा सकता जो आम तौर से लोगों के साथ अपनाया जाता है। फिर दरवाज़े के बाहर से आवाज़ देना यूँ भी भला तरीका नहीं है, जब यह तरीका रसूल के बारे में अपनाया जाए तो इस की नामाकूलियत बिल्कुल स्पष्ट है। और जब हुज्रों के बाहर से आप को आवाज़ देना नामाकूलियत है तो क्रब्र के बाहर से आपको पुकारना ताकि फ़रियाद सुनने और पूरा करने के लिए आप पहुँच जाएं सरासर मूर्खता है अलबत्ता दरूद और सलाम आप पर हर जगह से भेजा जा सकता है परन्तु इस के लिए भी वही तरीका अपनाया जाना चाहिए जिस की शिक्षा आपने दी है।

9. अतः अपने कुसूर पर अल्लाह से क्षमा माँगो और उस से रहम की प्रार्थना करो।

10. फ़ासिक़ से तात्पर्य ऐसा व्यक्ति है जो अल्लाह का अवज्ञाकारी, उल्लंघनकारी और बड़े गुनाह का अपराधी हो। ऐसे व्यक्ति की किसी ख़बर पर जो अपना महत्व रखती है, बिना जाँचे परखे स्वीकार करना और उस पर विश्वास कर के किसी के विरुद्ध कोई कार्रवाई करने से मना किया गया है क्योंकि फ़ासिक़ की ख़बर झूठी हो सकती है और झूठी ख़बर पर भरोसा करने के प्रभाव और परिणाम बुरे ही हो सकते हैं।

यह हिदायत तथा आगे की हिदायतें ऐसे मौक़े पर दी गई जब कि मुस्लिम सोसाइटी में ऐसे लोग दाख़िल हो रहे थे जिन्होंने ने पूरी जागरूकता और विवेक के साथ इस्लाम स्वीकार नहीं किया था और जो अपने चरित्र की दृष्टि से भी विश्वासपात्र नहीं हो सकते थे। फिर क़बीलों के परस्पर खींच तान एवं रन्जिश के कारण भी उन लोगों से भय था कि वे ग़ैरजिम्मेदाराना बातें कर के आपस में विद्रोह न पैदा करें। मतलब यह कि ये हिदायतें सावधानी तदबीर के तौर पर थीं और इस में उन हालात के लिए रहनुमाई भी थी जो उम्मत को आगे चल कर पेश आने वाले थे। अतः हज़रत उस्मान के ख़िलाफ़त काल में उन के विरुद्ध सबाइयों ने जो झूठी ख़बरें फैलाई और उन पर भरोसा कर के लोग जिस फितने का शिकार हुए वह कुर्आन की इन हिदायतों को जिन में भविष्य के गृह युद्ध की तरफ़ संकेत थे, नज़रंदाज़ करने का नतीजा था।

इन आयतों का ख़ास संदर्भ (Context) यही है। रही वे रिवायतें जो शाने-नुज़ूल के तौर पर बयान हुई हैं तो उन के बारे में बहुत कुछ कहने की गुन्जाइश है। आम तौर से मुफ़स्सिरीन इस आयत के अवतरण से सम्बोधित यह रिवायत उद्धृत करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वलीद बिन अक्रबा को क़बीला बनी अलमुस्तलक़ की तरफ़ उन की ज़कात वसूल करने के लिए भेजा किन्तु वे डर गए और रास्ते ही में से वापस हो गए, और आ कर निवेदन किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़बीले के सरदार हारिस ने ज़कात देने से इन्कार किया और मेरी जान लेने पर आमादा हो गए। इस पर आप क्रोधित हुए और कुछ लोगों को हारिस की तरफ़ भेजा मगर मदीना से करीब ही हारिस उन्हें मिल गए और उन्होंने आ कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि जिस व्यक्ति को आप ने भेजा था उस को न मैं ने देखा और न वह मेरे पास आया। इस पर सूरह हुजूरत की यह आयत नाज़िल हुई और इब्ने ज़रीर की रिवायत में है कि बनी अलमुस्तलक़ के लोग वलीद बिन अक्रबा के स्वागत के लिए बाहर निकल आये थे। मगर उन्होंने ने समझ लिया कि वे उन को जान से

मार देने के इरादे से निकले हैं। (देखिए तप्सीर इब्ने कसीर जिल्द ४, पृष्ठ २०९) पहली बात तो यह कि इस रिवायत की मूल भाषा (Text) में बड़ा इज़्तिराब है, दूसरी बात यह कि इस रिवायत को इमाम अहमद आदि ने मुहम्मद बिन साबिक़ से उद्धृत किया है जिन को कुछ मुहदीसीन (हदीस विशेषज्ञों) ने कमज़ोर कहा है। (तहज़ीबुत्तहज़ीब जिल्द ९ पृष्ठ १७५) तीसरी बात यह कि इब्ने ज़रीर तबरी ने इस के जो प्रमाण प्रस्तुत किये हैं उस में एक रावी (उल्लेखकर्ता) मूसा बिन उबैदा हैं जिस को तिर्मिज़ी, नसाई और अली बिन अल मुदयनी ने कमज़ोर कहा है (तहज़ीब जिल्द १० पृष्ठ ३५६, ३५८) चौथी बात इस रिवायत के अनुसार वलीद बिन अक्रबा फ़ासिक़ क्रार पाते हैं हालाँकि उन के फ़ासिक़ होने का कोई सबूत मौजूद नहीं है। और यह किस तरह संभव है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक फ़ासिक़ व्यक्ति को ज़कात वसूल करने के लिए अपना प्रतिनिधि बना कर भेज दें? पाँचवी यह बात भी स्वीकार नहीं की जा सकती कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक फ़ासिक़ की ख़बर पर भरोसा कर लिया था। प्रमाण और रिवायत की इन त्रुटियों के कारण यह रिवायत कुबूल करने योग्य नहीं है।

इस आयत से रिवायतों के बारे में शरीअत का यह नियम भी निर्धारित होता है कि फ़ासिक़ की रिवायत (उल्लेख) को बिना जाँच पड़ताल के स्वीकार नहीं किया जा सकता। इसी लिए मुहद्दीसीन (हदीस के विद्वानों) ने हदीस के सही होने के लिए उल्लेखकर्ताओं का विश्वासपत्र और न्याय प्रिय होना ज़रूरी बताया है। रही बात अक़ीदे की गुमराही की तो वह व्यवहारिक उल्लंघन (अमली फ़िस्क़) से बढ़कर है। इस लिए जो दीन में दरार डालने वाले और बिदअत की राह अपनाने वाले हों उन की रिवायतें स्वीकार नहीं की जा सकतीं और वे हरगिज़ हुज्जत नहीं हैं। प्रसिद्ध ताबई इब्ने सीरीन ने बिलकुल सही कहा है कि :-

إِنَّ هَذَا الْحَدِيثَ دِينٌ فَانْظُرُوا عَمَّنْ
تَأْخُذُونَ دِينَكُمْ - (الكفاية في علم الرواية १२)

अर्थ :- “ये हदीसे दीन हैं, तो देखो कि तुम किन लोगों से अपना दीन हासिल कर रहे हो।” (अलकिफ़ाया फ़ी इल्मिरिवाया १६२)

और यह दुखद सत्य है कि मुहद्दीसीन के एक वर्ग ने इस मामले में तसाहुल से काम लिया जिस का नतीजा यह निकला की हदीस की किताबों में बहुत सी ऐसी रिवायतें शामिल हो गईं जिन के उल्लेखकर्ता शीइयत और बिदअत में लिप्त थे

और जिन्होंने घटनाओं को ग़लत रूप में प्रस्तुत किया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ ऐसी बातें मंसूब की जिन की निस्बत आप की तरफ़ किसी तरह सही नहीं हो सकती थी। इन रिवायतों ने दीन का हुलिया ही बिगाड़ कर रख दिया। इस लिए इस मामले में नमी नहीं बरती जा सकती।

11. अर्थात् ऐसा न हो कि किसी ग़लत सूचना पर भरोसा कर के मुसलमानों के किसी समूह के विरुद्ध कोई कार्रवाई कर बैठो और बाद में जब असली बात सामने आए तो पछताने लगो। इस लिए पहले ही जाँच पड़ताल कर लिया करो।



7. जान रखो कि अल्लाह का रसूल तुम्हारे बीच मौजूद है। अगर बहुत से मामलों में वह तुम्हारी बात मान लिया करे तो तुम तकलीफ़ में पड़ जाओ।¹² लेकिन अल्लाह ने तुम्हारे लिए ईमान को प्रिय बनाया और इस को तुम्हारे दिलों में ख़ुबा दिया और कुफ़्र और फ़िस्क़ और नाफ़रमानी को तुम्हारे लिए नफ़रत की चीज़ बनाया, यही लोग सीधी राह पर हैं।¹³

وَأَعْلَمُوا أَن فِيمَكُمْ رَسُولٌ اللَّهُ لَوْ طِيعْتُمْ فِي كَثِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ أُولَٰئِكَ هُمُ الرَّاشِدُونَ ﴿٤﴾

8. अल्लाह के फ़ज़ल और एहसान से,¹⁴ और अल्लाह ज्ञान वाला तत्वदर्शी है।

فَضَّلَا مِّنَ اللَّهِ وَفِعْلُهُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥﴾

9. और अगर मोमिनों के दो समूह आपस में लड़ पड़ें तो उन के बीच सुलह कराओ।¹⁵ फिर अगर उन में से एक गिरोह दूसरे पर ज़्यादाती करे तो ज़्यादाती करने वाले समूह से लड़ो, यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ रूजू करे। अगर वह रूजू करे तो उन के बीच न्याय के साथ सुलह करा दो और इन्साफ़ करो। अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसंद करता है।¹⁶

وَإِنْ طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلَحُوا بَيْنَهُمَا فَإِنْ بَغَتْ إِحْدَاهُمَا عَلَى الْأُخْرَىٰ فَقَاتِلُوا الَّتِي تَبْغِي حَتَّىٰ تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ فَإِنْ فَاءَتْ فَأَصْلَحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿٦﴾

10. मोमिन तो आपस में भाई भाई हैं¹⁷ तो अपने भाईयों के बीच सुलह कराओ। और अल्लाह से डरो ताकि तुम पर रहम किया जाए।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلَحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٧﴾

11. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो ! न पुरुष दूसरे पुरुषों का मज़ाक़ उड़ाएँ। हो सकता है वे उन से बेहतर हों। और न औरतें दूसरी औरतों का मज़ाक़ उड़ाएँ। हो सकता है वे उन से बेहतर हों।¹⁸ और न आपस में कटाक्ष करो¹⁹ और न एक दूसरे को बुरे लक़ब से पुकारो।²⁰ ईमान के बाद फ़िस्क़ बहुत बुरा नाम है।²¹ और जो लोग तौबा न करें वही ज़ालिम हैं।²²

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْخَرُوا مِن بَعْضِكُمْ مِّن بَعْضٍ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا تَنكِحُوا مَن نَّكِحَ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا تَلْمِزُوا أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِاللِّقَابِ بِئْسَ الْأَسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٨﴾

12. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो ! बहुत से गुमानों से बचो क्यों कि कुछ गुमान गुनाह होते हैं²³ और टोह में न लगो²⁴ और न तुम में से कोई किसी की गीबत (चुगली) करे।²⁵ क्या तुम में से कोई व्यक्ति इस बात को पसंद करता है कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए। तुम्हें तो इस से घिन ही आएगी।²⁶ अल्लाह से डरो। निस्संदेह अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला, रहम फ़रमाने वाला है।²

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَبَ بَعْضُكُم بَعْضًا يَخِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَذَرْنُوهُ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ﴿٩﴾

12. अर्थात् अल्लाह का रसूल जब तुम्हारे बीच रहनुमाई के लिए मौजूद है तो तुम क्यों अपनी राय और अपने मत पर हट करने लगे। तुम्हारी नज़र उन मसलहतों पर नहीं हो सकती जिन मसलहतों और नीतियों पर रसूल की दूर दृष्टि होती है इस लिए अगर रसूल तुम्हारी बहुत सी बातों को स्वीकार कर ले तो निती के विपरीत होने के कारण तुम्हें नुकसान पहुँचेगा।

13. ये हैं सच्चे मोमिनों की आन्तरिक विशेषताएँ जो उन्हें सत्यमार्गी बना देती हैं अर्थात् ईमान का उन की नज़रों से प्रिय बन जाना, दिलों में उन का रच बस जाना और कुफ़्र एवं फ़िस्क तथा गुनाहों से उन का घृणित होना ये आन्तरिक विशेषताएँ उन मुसलमानों की नहीं हो सकती जो किसी मसलहत से मुसलमानों के समूह में शामिल हो गए हों या इस्लाम से जिन का सम्बन्ध मात्र दिखावे भर का हो।

14. अर्थात् ये ईमानी विशेषताएँ जिन का जिक्र ऊपर की आयत में हुआ जिन लोगों के अन्दर पाई गई उन्हें अल्लाह का शुक्रगुजार (कृतज्ञ) होना चाहिए कि यह अमूल्य वस्तु उन्हें उसी के अनुग्रह से प्राप्त हुई।

15. इस हिदायत का भी यह मतलब नहीं कि मुसलमानों के दो समूहों में उस समय कोई जंग छिड़ गई थी इस लिए सुलह करा देने का आदेश दिया गया था जैसा कि हम ऊपर नोट १० में सपष्ट कर चुके हैं आगे आने वाले हालात में सावधान रहने के लिए भी तथा निकट भविष्य में हालात जो रूप धार लेने वाले थे और मुसलमानों के बीच जो फितने बरपा होने वाले थे उन के बारे में पेशगी आगाही भी थी और उन हालात में रहनुमाई का सामान भी।

16. इस आयत में मुसलमानों के आपसी विवाद और उन के बीच बरपा होने वाली मार काट को रोकने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हिदायतें हैं जिन से कई बातों पर प्रकाश पड़ता है।

एक यह कि किसी बड़ी गलतफ़हमी या किसी षडयंत्र आदि के फलस्वरूप मुसलमानों के दो समूहों के बीच जंग की नौबत आ सकती है लेकिन इस अधार पर किसी को काफ़िर ठहराना सही न होगा क्योंकि कि इस आयत में लड़ने वाले दोनों समूहों का वर्णन मोमिन समूह की हैसियत से हुआ है।

दूसरी यह कि लड़ाई की सूरत में दूसरे मुसलमानों का काम है, कि वे उन के बीच सुलह करा दें और ऐसी कोई नीति न अपनाएँ जिस से जंग की आग और भड़क जाए।

तीसरी यह कि जो समूह समझोते पर आमादा नहीं होता और जुल्म और ज़्यादती करता है तो उस के विरुद्ध बल प्रयोग किया जाए। यहाँ तक कि वे अल्लाह के हुक्म की तरफ़ रूजू कर ले। अल्लाह के हुक्म की तरफ़ रूजू करने से तात्पर्य सुलह समझौते का यह आदेश भी है और न्याय एवं इन्साफ़ का

आदेश भी तथा वे शरअी आदेश भी जो इस जंग से सम्बन्धित हो।

चौथी यह कि अल्लाह के हुक्म की तरफ़ रूजू करने की स्थिति में उस समूह के विरुद्ध बल प्रयोग समाप्त किया जाना चाहिए और दोनों समूहों की बीच समझौता करा देना चाहिए।

पाँचवी वह कि मुसलमानों के दो समूहों की आपसी लड़ाई में कोई ऐसी बात नहीं करनी चाहिए जो न्याय और इन्साफ़ से हठी हुई हो। या जिस से पक्षपात प्रकट होता हो। उन्हें इन्साफ़ की बात बेलाग़ तौर पर करना चाहिए चाहे कोई पक्ष नाराज हो या खुश। क्यों कि अल्लाह को इन्साफ़ करने वाले लोग ही पसंद हैं।

ये आदेश मुसलमानों के लिए पथ रेखाएँ हैं परन्तु मौजूदा दौर के मुसलमानों का हाल ऐसा है कि अल्लाह ही रहम करे। उन के विभिन्न समूह एक दूसरे से लड़ने पर आमादा हैं और मुस्लिम देशों के बीच जंगें बरपा होती हैं जिस में हज़ारों और लाखों मुसलमान मारे जाते हैं। इस प्रकार वे यहूदियों का इतिहास दोहरा रहे हैं जिन के राज्य टुकड़े टुकड़े हो कर रह गए थे। और जिन के बीच सदैव युद्ध छिड़े रहे।

17. दीनी रिश्ते के हिसाब से मुसलमान एक दूसरे के भाई हैं। रंग और वंश, जाति और देश का अन्तर इस विश्वव्यापी भाईचारे में कोई अवरोध उत्पन्न नहीं कर सकता। वे जहाँ कहीं भी होंगे एक दूसरे से जुड़े रहेंगे और एक के दर्द की चोट दूसरा अपने अन्दर महसूस करेगा चाहे उन के बीच हज़ारों मील का फ़ासला हो। इस भाईचारे के रिश्ते को मज़बूत करने की ताक़ीद हदीस में भी की गई है।

आप ने फ़रमाया :-

اَلْمُسْلِمُ اَخُو الْمُسْلِمِ لَا يَظْلِمُهُ وَلَا يُسْلَمُهُ مَنْ كَانَ فِي حَاجَةِ اَخِيهِ كَانَ اللّٰهُ فِي حَاجَتِهِ وَمَنْ فَرَّجَ عَنْ مُسْلِمٍ كُرْبَةً فَرَّجَ اللّٰهُ عَنْهُ بِهَا كُرْبَةً مِنْ كُرْبِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَمَنْ سَتَرَ مُسْلِمًا سَتَرَهُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. (مسلم کتاب البر)

अर्थ :- “मुसलमान मुसलमान का भाई है, न उस पर जुल्म करे, और न उसे ज़ालिम के हवाले करे। जो व्यक्ति अपने भाई की हाज़त पूरी करने में लगा रहता है और जो व्यक्ति किसी मुसलमान की तकलीफ़ दूर करेगा। और जो किसी मुसलमान की पर्दा पोशी करेगा अल्लाह क्रियामत के दिन उस की परदा पोशी करेगा।” (मुस्लिम किताबुल बिर)

तथा उन बातों से मना फ़रमाया जो इस रिश्ते को काट देने वाली हैं। आप का इर्शाद है :-

سَبَابُ الْمُسْلِمِ فُسُوقٌ وَقَتْلُهُ كُفْرٌ (صحیح البخاری کتاب الادب)

अर्थ :- “मुसलमान को गाली देना फ़िस्क है और उसे क़त्ल करना कुफ़्र है।” (सही बुखारी किताबुल अदब)

لَا تَرْجِعَنَّ بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ
رِقَابَ بَعْضٍ - (مشکوٰۃ بروایۃ البخاری و مسلم)

अर्थ :- “मेरे बाद काफ़िर न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दन मारने लगे।” (मिशकात, बुखारी और मुस्लिम के हवाले से)

18. ऊपर की आयत में दीनी भाईचारे के संबन्ध को बनाए रखने और दुरुस्त रखने की ताकीद की गई थी। अब उन नैतिक बुराइयों से बचने की हिदायत की जा रही है जो आपसी सम्बन्ध को बिगाड़ने वाली और ईर्ष्या एवं शत्रुता पैदा करने वाली हैं। उन नैतिक खराबियों में एक बहुत बड़ी खराबी एक दूसरे का मज़ाक उड़ाना है। मज़ाक उड़ाने वाला दूसरे को अपमानित करता है और यह बात तक्रवा के विरुद्ध है हदीस में आता है :-

اَلتَّقْوٰی هٰهٰنَا وَ يُشِيرُ اِلٰی صَدْرَةِ ثَلَاثٍ مِّرَارٍ بِحَسَبِ
اَمْرِیْ مِّنَ الشَّرِّ اَنْ يَّحْقِرَ اَخَاهُ الْمُسْلِمُ، كُلُّ مُسْلِمٍ
عَلٰی الْمُسْلِمِ حَرَامٌ دَمُهُ وَمَالُهُ وَعِرْضُهُ - (مسلم کتاب البر)

अर्थ :- “नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन बार अपने सीने की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया, तक्रवा यहाँ होता है। आदमी के लिए यह बुराई ही काफ़ी है कि वह अपने मुसलमान भाई को तुच्छ जाने। प्रत्येक मुसलमान का खून, माल और इज़्जत दूसरे मुसलमान पर हाराम है।” (मुस्लिम किताबुल बिर)

मज़ाक एक आदमी दूसरे आदमी का भी उड़ाता है और एक गिरोह दूसरे गिरोह का भी। और ये दोनों दशाएँ निंदनीय हैं। औरतों में भी यह दुर्गुण बहुत अधिक होता है कि वे दूसरी औरतों पर हँसती हैं और उन का मज़ाक उड़ाती हैं इस लिए औरतों को भी विशेष रूप से ताकीद की गई है कि वे इस से बचें। मज़ाक उड़ाने वाला जिस का मज़ाक उड़ाता है उस से अपने को बेहतर समझता है मगर हो सकता है कि जिस का मज़ाक उड़ाया जा रहा है वह मज़ाक उड़ाने वाले से बेहतर हो। इस लिए यह समझना ही ग़लत है कि आदमी अपने को बेहतर और ऊँचा समझें और दूसरे को कमतर।

19. लोगों को ताने देना, उन पर कटाक्ष करना, व्यंग

कसना ये सब ऐसी चीज़ें हैं कि इस से दिल ज़ख्मी होते हैं इस लिए जबान को कटाशी आदि से पाक रखना चाहिए। किसी के व्यक्तित्व पर हमला करना उस पर व्यंग कसना और उस को अपनी खिल्ली का निशाना बनाना बहुत ही कष्ट दायक बात है और इस से आपसी सम्बन्ध बिगड़ जाते हैं।

20. दूसरों के लिए बुरे लक़ब (बुरे उपनाम) निर्धारित करना और बुरे नामों से उन्हें पुकारना और याद करना बड़ी ही अनैतिकता की बात है। और जो व्यक्ति किसी मुसलमान का बुरा नाम रखता है वह उस की इज़्जत उतारता है। इस लिए इस को मामूली गुनाह नहीं समझना चाहिए।

इस हिदायत से बेपरवाही बरतने ही का नतीजा है कि आज मुसलमानों का एक गिरोह दूसरे गिरोह को और उन की एक जमाअत दूसरी जमाअत को बदनाम करने की कोशिश करती है। यहाँ तक कि जो लोग ख़ालिस तौहीद के मानने वाले होते हैं तथा वास्ता एवं वसीला, ग़ैरुल्लाह के लिए नज़्र और नियाज़, व्यक्ति पूजा और क़ब्र परस्ती आदि के विरोधी होते हैं, उन को वहाबियत का लक़ब दिया जाता है और उन को २४ नम्बर कह कर पुकारा जाता है जो अबजद के अक्षर क्रमानुसार वहाबी शब्द के अक्षरों की कुलसंख्या है। ये हरकतें वे लोग करते हैं जो बिदअतों में बुरी तरह लिप्त होते हैं और इन्हें इस बात का कोई एहसास नहीं होता कि वे दीन की राह में कितनी बड़ी रुकावटें पैदा कर रहे हैं।

21. अर्थात् जो व्यक्ति दूसरों के लिए बुरे नाम का निर्धारण करता है वह ऐसा कर के स्वयं अपने ऊपर बदतरीन नाम का लेबल लगा लेता है क्यों कि वे हरकतें फ़िस्क (गुनाह और उल्लंघन) हैं और जो व्यक्ति यह हरकत करता है वह फ़िस्क (गुनाह और उल्लंघन) का अपराध करता है और ईमान लाने के बाद फ़िस्क में नाम पैदा करना बहुत बुरी बात है। मतलब यह है कि एक मुसलमान को बुरे नाम से याद करने वाला फ़िस्क का अपराधी होता है जो बहुत बड़ा दुर्गुण है।

इन हिदायतों से अन्दाज़ा होता है कि इस्लाम में नैतिक आचरणों तथा अख़लाक़ी पाकीज़गी का क्या महत्व है और वह कैसी स्वच्छ सोसाइटी पैदा करना चाहता है। मगर मुसलमानों की सोसाइटी में जब तक्रवा की बुनियादें कमज़ोर हो गईं तो हज़ो-गोई (अर्थात् निन्दा काव्य एवं व्यंग्य काव्य) कवियों और शायरों के प्रभुत्व गुण समझे जाने लगे और अदब एवं साहित्य में अशुद्धता की भरमार हो गई। मौजूदा दौर में तो वह पत्रकारिता सफल है जो दूसरों की ख़ूब पगड़ी उछाले, नेक लोगों के आचार व्यवहार पर लाँछन लगाए और उन के चरित्र को दाग़दार करे, जिम्मेदार लोगों के विरुद्ध अविश्वास की भावना फैलाए और स्कैन्डल पेश करे। ये सारी हरकतें मुसलमान दूसरे मुसलमानों

और उन की जमाअतों आदि के विरुद्ध करते हैं। और इस मामले में इतने आगे बढ़ गए हैं कि मुस्लिम पत्रकारिता और ग़ैर मुस्लिम पत्रकारिता में कोई अन्तर बाक़ी नहीं रहा। बहुत कम लोग हैं जो अपने दामन को गन्दा होने से बचा रहे हैं।

यह परिस्थिति भी अत्यंत दयनीय है कि मुसलमानों में ग़ाली देने का प्रचलन बढ़ गया है। और ग़ालियाँ भी ऐसी गन्दी कि एक शरीफ़ आदमी शरम के मारे पानी पानी हो जाए। फिर जिस को ग़ाली दी जाती है उस की माँ और बहन को जिन का कोई दोष नहीं होता, अकारण बुरा भला कहा जाता है, यहाँ तक कि जो मर गए हैं उन की इज़्ज़त पर भी हमला किया जाता है। ऐसी निंदनीय हरकते करते हुए मुसलमानों का यह एहसास मुर्दा हो जाता है कि उन की इन बातों को अल्लाह सुन रहा है और उन का एक एक शब्द रेकार्ड किया जा रहा है। वे ग़ाली दे कर खुले फ़िस्क और बेहयाई के अपराधी हो रहे हैं जिस की सज़ा बड़ी सख़्त है।

22. अर्थात् इन स्पष्ट हिदायतों के बाद भी जो लोग इन गुनाहों से तौबा नहीं करेंगे और इन हरकतों से बाज़ नहीं आएंगे वे ज़ालिम हैं और ज़ालिमों के लिए अल्लाह की पकड़ बड़ी सख़्त है।

आयत के इस अन्तिम टुकड़े में प्रत्येक मुसलमान के लिए तौबा करने का प्रोत्साहन है कि इन हिदायतों के बारे में जानने से पहले जो बुराइयाँ उन से हो चुकी हों उन के बारे में अल्लाह तआला से क्षमा माँगे और अपनी इस्लाह, अपना सुधार कर लें।

23. एक मोमिन को दूसरे मोमिन के बारे में अच्छा गुमान रखना चाहिए। सूरह नूर में इर्शाद हुआ है :-

لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ
بِأَنفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا هَذَا إِفْكٌ مُّبِينٌ - (नूर: १२)

अर्थ :- “जब तुम लोगों ने यह बात सुनी तो मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों ने एक दूसरे के बारे में नेक गुमान क्यों नहीं किया। (सूरह नूर-१२)

किन्तु मुसलमानों में सब अच्छे चरित्र के नहीं होते, बुरे चरित्र के भी होते हैं और उन की उपद्रवी हरकतों से तकलीफ़ और नुक़सान भी पहुँचता है इस लिए अच्छे गुमान रखने का अर्थ यह नहीं कि आदमी खुशफ़हमियों (सुन्दर भुलावे) में रहे। बल्कि उचित कारणों के आधार पर आदमी किसी के बारे में बुरा गुमान रखने में सच्चा हो सकता है। जैसे एक व्यक्ति की वादा ख़िलाफ़ियों को देखते हुए वह यह गुमान करता है कि जो वादा वह मुझ से कर रहा है उस को वह पूरा नहीं करेगा तो उस का यह गुमान रखना निराधार नहीं है और न यह गुनाह के अंतर्गत

आता है। इसी प्रकार एक डाक्टर के बारे में जो लापरवाह हो यह ख़याल करना कि वह मेरा इलाज सही नहीं करेगा और इस कारण से उस से संपर्क न साधना कोई ऐसी बात नहीं है कि जिस पर शरीअत पकड़ करती हो। शरीअत की पकड़ वास्तव में उन बदगुमानियों पर है जिन के लिए कोई औचित्य अथवा कोई उचित कारण न हो और जो पारस्परिक सम्बन्ध में कटुता पैदा करते हों। ऐसी बदगुमानियों को इस आयत में स्पष्ट रूप से गुनाह कहा गया है और हदीस में इस को बदतरीन झूठ बताया गया है।

يَا كُفَّارُ وَالظَّنُّ فَإِنَّ الظَّنَّ أَكْذَبُ
الْحَدِيثِ - (صحیح البخاری کتاب الادب)

अर्थ :- “बदगुमानी से बचो कि बदगुमानी बदतरीन झूठ है।” (सही बुख़ारी किताबुलअदब)

किन्तु सावधानी का तक्राज़ा यह है कि आदमी जहाँ तक हो सके बदगुमानी से बचो। इस लिए आयत में यह हिदायत की गई है कि बहुत सी बदगुमानियों से बचो। इस से यह बात आप से आप स्पष्ट होती है कि हर बदगुमानी गुनाह नहीं है। किन्तु चूँकि कुछ बदगुमानियाँ खुले गुनाह हैं इस लिए किसी के बारे में बुरा गुमान रखने के मामले में आदमी को सचेत रहना चाहिए।

24. अर्थात् किसी के ऐब और बुराई न टटोलो। एक मुत्तकी परहेज़गार आदमी की निगाह अपनी कमज़ोरियों पर होती है और उसे अपने बचाव और मुत्तकी की चिन्ता लगी रहती है। वह दूसरों की बुराइयों से क्यों दिलचस्पी लेने लगे। हदीस में भी इस की मनाही आई है।

وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا تَحَسَّسُوا - (صحیح البخاری کتاب الادب)

अर्थ :- “न टोह में लगे रहो और न भेद खोजो।” (सही बुख़ारी, किताबुल अदब)

इन्जील में भी दोष तथा ऐब ढूँढने पर बड़े प्रभावकारी अन्दाज़ में नसीहत की गई है :-

“दोष मत लगाओ, कि तुम पर भी दोष न लगाया जाय। क्यों कि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा। और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा। तू क्यों अपने भाई की आँख के तिनके को देखता है। और अपनी आँख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता? और जब तेरी ही आँख में लट्ठा है तो, तू अपने भाई से क्यों कर कह सकता है कि ला मैं तेरी आँख से तिनका निकाल दूँ। हे कपटी पहले अपनी आँख से लट्ठा निकाल ले तब तू अपने भाई की आँख का तिनका भली भाँति देख कर निकाल सकेगा।” (मत्ती ७:१ से ५)

रहा यह प्रश्न कि इस हिदायत के रहते इस्लामी राज्य के लिए गुप्त अपराधों का पता लगाना जायज नहीं है? तो इस का उत्तर यह है कि यह हिदायत उन जिम्मेदारियों को अदा करने में कदापि बाधक नहीं हैं जो समाजिक शान्ति को बाक्की रखे। बुराइयों को रोकने और सोसाइटी में उपद्रव फ़ितना एवं बिगाड़ को समाप्त करने से सम्बन्धित इस्लामी राज्य पर लागू होते हैं। इन उद्देश्यों के लिए सुराग लगाने के उचित साधन अपनाना बुराई नहीं बल्कि बुराइयों एवं अपराधों की रोकथाम के लिए आवश्यक है। वरना न विध्वंस एवं तोड़ फोड़ करने वालों का पता चल सकेगा और न षडयंत्रों का, तथा उन गुप्त अड्डों को जो इस्लामी राज्य या मुसलमानों की सोसाइटी के लिए ज़बरदस्त ख़तरे का कारण हो। यह खोजबीन राज्य के कार्य क्षेत्र से सम्बन्धित है जो यहाँ बहस में नहीं है।

25. ग़ीबत (चुगली) का अर्थ पीछे किसी की बुराई करने के हैं, यद्यपि कि वह बुराई वास्तव में उस के अन्दर मौजूद हो। हदीस में इस का स्पष्टीकरण इस तरह हुआ है :-

ذِكْرُكَ أَخَاكَ بِمَا يَكْرَهُ قِيلَ أَفَرَأَيْتَ إِنْ
كَانَ فِي أَخِي مَا أَقُولُ؟ قَالَ إِنْ كَانَ فِيهِ مَا
تَقُولُ فَقَدْ اغْتَبْتَهُ وَإِنْ لَمْ يَكُنْ فِيهِ مَا تَقُولُ
فَقَدْ بَهْتَهُ. (مسلم کتاب البر)

अर्थ :- “ग़ीबत यह है तुम अपने भाई का ज़िक्र इस तरह करो जो उसे अप्रिय हो। किसी ने पूछा अगर वह बात मेरे भाई में मौजूद हो जो मैं कह रहा हूँ तो क्या यह भी ग़ीबत होगी? फ़रमाया अगर वह बात उस में पाई जाती हो जो तुम कहते हो तो तुम ने उस की ग़ीबत की। अगर वह बात उस में मौजूद न हो तो तुम ने उस पर बोहतान लगाया। (मुस्लिम किबुलबिर)

किन्तु यदि किसी की बुराई का उल्लेख वास्तविक या शरअी ज़रूरत के कारण करना पड़े तो इस को न कुआन में ग़ीबत कहा गया है और न हदीस में। इस लिए जिन उलमा ने ग़ीबत की जायज़ सूरतें बयान की हैं उस से सहमति व्यक्त नहीं की जा सकती। वे सूरतें अपने आप में जायज़ हैं और कुछ तो वाजिब की श्रेणी में है लेकिन यह कहना कि यह ग़ीबत और बदगोई (अपशब्द) तो है मगर जायज़ है, और अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना हराम तो है परन्तु ऐसे मौक़े पर यह गोश्त हलाल हो जाता है, अर्थ का अनर्थ है। कुआन के प्रमाणिक और प्रसिद्ध शब्दकोष “मुफ़रदात राग़िब” में ग़ीबत का अर्थ इस तरह बयान हुआ है :-

وَالْغِيْبَةُ أَنْ يَذْكُرَ الْإِنْسَانُ غَيْرَهُ بِمَا فِيهِ مِنْ عَيْبٍ
مِنْ غَيْرِ أَنْ أَحْوَجَ إِلَى ذِكْرِهِ. (مفردات ص ३८३)

अर्थ :- “ग़ीबत यह है कि आदमी दूसरे का ज़िक्र दोष गिनाते हुए करे जब कि उसे गिनाने की ज़रूरत न हो। ” (मुफ़रदात पृष्ठ ३७३)

किसी के द्वारा पहुँचने वाली क्षति अथवा फ़साद से लोगों को बचाने अदालत में गवाही देने, ज़ालिम के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने, उपद्रवी कार्रवाइयों और विध्वंस की गतिविधियों से राज्य को आगाह करने, अपराधी के विरुद्ध रिपोर्ट लिखवाने बुराइयों से रोकने और किसी बुराई के विरुद्ध प्रदर्शन करने, रावियों (उल्लेखकर्ताओं) पर ज़िरह करने, लेखकों एवं पत्रकारों पर आलोचना करने, ख़ुराफ़ात बिदअतों, और गुमराहियों के प्रचार प्रसार को रोकने और घूस खोरी की समाप्ति के लिए सम्बन्धित व्यक्ति की जिन बुराइयों, कमज़ोरियों, और अपराधिक कृत्यों का बयान करना आवश्यक हो उन को बयान करना न केवल जायज़ बल्कि कभी कभी ज़रूरी हो जाता है। इस लिए इस प्रकार की बातों पर ग़ीबत का आदेश नहीं लगाया जा सकता। मुहद्दीसीन जिन्होंने ने अस्माउर्रिजाल की किताबें संकलित की, ग़ीबत का दफ़्तर खोल कर नहीं बैठे थे बल्कि रसूल की हदीस को ग़लत और अविश्वसनीय रिवायतों से अलग करने के लिए यह मूलवान सेवा उन्होंने ने अन्जाम दी।

26. यह अत्यंत अर्थपूर्ण उपमा है जिस से ग़ीबत का घिनावनापन जाहिर होता है और इस से अत्यन्त घृणा पैदा होती है। जो मुसलमान किसी मुसलमान की ग़ीबत (चुगली) करता है तो वह उस का दीनी भाई है जिस की अनुपस्थिति में वह उस की बुराई करता है गोया कि वह अपने मुर्दा भाई की इज़ज़त पर हमला करता है। और यह भी सच्चाई है कि ग़ीबत करने वाला दूसरों के दोष बयान करने में लज़ज़त महसूस करता है इस लिए ग़ीबत को मुर्दा भाई के गोश्त खाने की उपमा दी गई है। जो व्यक्ति ग़ीबत का आदी हो उस को इस घिनावने काम की बहुत बुरी सज़ा भुगतनी होगी। हदीस में इस का वर्णन इस तरह किया गया है :-

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَمَّا عُرِجَ بِي مَرَرْتُ بِقَوْمٍ
لَهُمْ أَظْفَارٌ مِنْ نَحَاسٍ يَحْمِثُونَ وَجُوهَهُمْ وَ
صُدُورَهُمْ فَقُلْتُ مَنْ هَؤُلَاءِ يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ
هَؤُلَاءِ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ لَحْمَ النَّاسِ وَيَقْعُونَ فِي
أَعْرَاضِهِمْ. (رياض الصالحين برواية أبي داود)

अर्थ :- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि (मेराज के मौके पर) जब मुझे ऊपर ले जाया गया तो मेरा गुज़र ऐसे लोगों की तरफ़ हुआ जिन के नाख़ुन ताँबे के थे और वे अपने चेहरों और अपने सीनों को नोच रहे थे। मैं ने पूछा ऐ ज़िब्रील ये कौन लोग हैं ? उन्होंने ने कहा ये वे लोग हैं जो लोगों का गोश्त खाया करते थे और उन की इज़्ज़त पर हमले करते थे।” (रियाजुस्सालिहीन, अबूदाऊद के हवाले से)

आज मुसलमानों की सोसाइटी में ग़ीबत का आम प्रचलन है। घरों में औरतों का रुचिकार विषय दूसरों की चुगली का ही होता है और मर्द अपनी बैठकों में अकारण दूसरों की बुराइयाँ

बयान करते हैं और उन बातों पर ग़ैरज़िम्मेदाराना ढंग से टिप्पणी करते हैं। परन्तु कुर्आन की इन चेतावनी भरी हिदायतों के रहते ज़रूरी है कि मुसलमान अपने घरों और अपनी बैठकों को ग़ीबत से पाक रखें और किसी भी मुसलमान की बुराई करने तथा उन्हें अपमानित करने से सख़्ती के साथ परहेज़ करें।

27. ग़ीबत अथवा चुगली से बचने की सूरत यह है कि आदमी अल्लाह से डरे। जो लोग ग़ीबत के रोग से ग्रस्त हो उन्हें तौबा का प्रोत्साहन दिया गया है कि अगर वे अल्लाह की तरफ़ रूजू करें और अपना सुधार कर लें तो अल्लाह उन की तौबा कुबूल करेगा और उन पर दया करेगा।



13. लोगो ! हम ने तुम को एक ही मर्द और औरत से पैदा किया । फिर तुम्हारी जातियाँ और कबीले बनाए ताकि तुम एक दूसरे को पहचानों ।²⁸ अल्लाह के नज़्दीक तुम में सब से अधिक प्रतिष्ठित (इज़्जत वाला) वह हैं जो तुम में सर्वाधिक मुत्तक़ी (परहेज़गार) है²⁹ । निस्संदेह अल्लाह जानने वाला और बाख़बर है।³⁰

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَىٰكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿١٣﴾

14. बददू कहते हैं कि हम ईमान लाए।³¹ इन से कहो तुम ईमान नहीं लाए, बल्कि कहो कि हम ने इस्लाम (अनुपालन) स्वीकार कर लिया।³² ईमान अभी तुम्हारे दिलों के अन्दर दाख़िल नहीं हुआ है।³³ अगर तुम अल्लाह और उस के रसूल का अनुपालन करोगे तो वह तुम्हारे कर्मों को तनिक भी नहीं घटाएगा ।³⁴ निस्संदेह अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।³⁵

قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا قُلْ لَمْ تُؤْمِنُوا وَلَكِنْ قُولُوا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ وَإِنْ تُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَيَنصِبَنَّكُمْ مِنْ أَعْمَالِكُمْ سُنًى إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٤﴾

15. मोमिन हक़ीक़त में वही हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाए फिर शक में नहीं पड़े और अपने माल और अपनी जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया। यही लोग सच्चे हैं।³⁶

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الصّٰدِقُونَ ﴿١٥﴾

16. कहो क्या तुम अपना दीन अल्लाह को जतलाते हो ? हालाँकि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है।

قُلْ أَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٦﴾

17. ये लोग तुम पर एहसान जताते हैं कि उन्होंने ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। कहो मुझ पर अपने इस्लाम का एहसान न रखो बल्कि यह अल्लाह का तुम पर एहसान है कि उस ने तुम को ईमान की राह दिखाई, अगर तुम सच्चे हो।³⁷

يَمُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا قُلْ لَا تَمُنُّوا عَلَيَّ إِسْلَامَكُمْ بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَاكُمْ لِلْإِيمَانِ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿١٧﴾

18. अल्लाह आसमानों और ज़मीन की समस्त गुप्त बातों को जानता है। और जो कुछ तुम करते हो उस को अल्लाह देख रहा है।³⁸

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بَرِيءٌ تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾

28. इस आयत में समस्त मनुष्यों को संबोधित कर के जातियों और क़बीलों की यह वास्तविकता स्पष्ट की गई है कि इन सब का नाता एक बाप और एक ही माँ से जा मिलता है। सब आदम और हव्वा की औलाद हैं और जब सब की असल एक है तो न जातिय, राष्ट्रीय एवं क़बीलाई श्रेष्ठता के लिए कोई गुनजाइश है और न भेद भाव के लिए जो रंग और नस्ल तथा देश के आधार पर बनाए तथा फैलाये जाते हैं और जिन से परस्पर विद्वेष पैदा होता है।

पृथ्वी पर मानव जाति के फैलाव का यह कुदरती एवं अनिवार्य परिणाम था कि वे विभिन्न भू-भागों में आबाद हों। और लोग जब विभिन्न भू-भागों में आबाद हुए तो उन के रंग अलग अलग हो गए, उन की नस्लें अलग अलग हो गईं और भाषाओं में भी अन्तर हो गया। इन मतभेदों ने जो बाह्य और कुदरती ये मनुष्यों को जाति और क़बीलों की शकल दी। यह मतभेद जो कि कुदरती तौर पर उत्पन्न हुए इस की मसलहत यह थी कि लोग एक दूसरे को पहचाने। निकट के लोगों से अधिक से अधिक चाहत पैदा हो और वे निकटतम होने का दयित्व निभायें। परन्तु लोगों ने इन भिन्नताओं को परस्पर विद्वेष एवं वैमनस्य का साधन बनाया और जातियों एवं क़बीलों के बीच नफ़रत की दीवारें खड़ी कर दीं।

मौजूदा ज़माने में भाषाई वैमनस्य, कालों के साथ गोरों का भेदभावपूर्ण रवैया, उच्चता की भावना, और जाति परस्ती, तथा वतन परस्ती जिन के चलते विभिन्न मानव समूहों के बीच कशमकश और युद्ध की स्थिति बनी हुई है, इस हकीकत को नज़रंदाज़ करने का नतीजा है जो इस मुबारक आयत में बयान हुई है।

भारत की बहुदेववादी जाति, जातिय भेदभाव की समर्थक है और ऊँच नीच की धारणा उन के धार्मिक विचारों में रची बसी है इस लिए ऊँची जाति के लोग नीची जाति के लोगों को शुद्र (तुच्छ) करार देते हैं और इतिहास बताता है कि इन को अछूत करार दे कर इन के साथ बुरा सुलूक किया गया और उन को निम्न श्रेणी में रखा गया।

इस्लाम की सामाजिक व्यवस्था इन समस्त दोषों से پاک है। इस में न ऊँच नीच है और न जात पात की कल्पना और न छूत छात के लिए कोई गुन्जाइश। सामाजिक न्याय अथवा सामाजिक समानता यदि किसी को देखना हो तो पाँच वक्त्र की नमाज़ में देख सकता है जिस में किसी भी तरह की बड़ाई और उच्चता का लिहाज़ नहीं किया जाता और सब एक ही पंक्ति में खड़े हो जाते हैं :-

**एक ही सफ़ में खड़े हो गए महमूद व अयाज़
न कोई बन्दा रहा और न कोई बन्दा नवाज़**

रही बात निकाह में कुफ़ू (खानदानी हैसियत और व्यवसाय आदि में बराबरी) देखने की बात तो इस की हैसियत मात्र मसलहत की है ताकि पति और पत्नी के बीच निर्वाह की सूरत पैदा हो न कि शरअी नियम की कि इस के विरुद्ध करना जायज़ न हो। इस का स्पष्ट उदाहरण हज़रत ज़ैनब का (जो कुरैशी थी) हज़रत ज़ैद से निकाह है, जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज़ाद किये हुए गुलाम थे। मालूम हुआ कि कुफ़ू का लिहाज़ अनिवार्य नहीं है अरब और ग़ैर अरब सब एक दूसरे की औरतों से निकाह कर सकते हैं। कुर्आन ने वास्तविक दीन और नैतिक पवित्रता और पाक दामनी को कुफ़ू (बराबरी) का आधार बताया है।

وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ. (नूर: २६)

अर्थ :- “पाकीज़ा औरतें पाकीज़ा मर्दों के लिए हैं और पकीज़ा मर्द पाकीज़ा औरतों के लिए।” (नूर - २६)

29. अर्थात् अल्लाह के निकट प्रतिष्ठा एवं श्रेष्ठता का आधार तक्रवा (ईश-भय) है। जो व्यक्ति तक्रवा अर्थात् ईश-भय और परहेज़गारी में जितना आगे है उतना ही उस का स्थान ऊँचा है। सच्ची इज़्ज़त और बुलंदी तक्रवा से प्राप्त होती है न कि वंश और जाति तथा इस तरह की अन्य चीज़ों से।

30. अल्लाह जानता है कि तुम में से कौन कितना अल्लाह से डरने वाला है और उस के हालात से अच्छी तरह भिन्न है और इस लिए वह उस का सही दर्जा निर्धारित करेगा। हो सकता है एक व्यक्ति की लोगों की नज़रों में कोई मान दान और कोई क़ीमत न हो किन्तु वह तक्रवा की बुलन्दियों पर हो जिस के कारण अल्लाह तआला उसे ऊँचा दर्जा प्रदान करे।

31. यह सूरह की अन्तिम आयतें हैं जिन में उन लोगों पर गिरफ़्त की गई है जो इस्लाम की धारणा को स्वीकार कर के मुसलमानों में शामिल तो हो गए थे। किन्तु उन के दिलों में अभी ईमान उतरा नहीं था। इसी लिए उन का रवैया अल्लाह और उस के रसूल के साथ ऐसा था जो ईमान से मेल नहीं खाता था बल्कि उस के विपरीत था।

32. यहाँ इस्लाम का शब्द अपने प्राथमिक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है अर्थात् कलिमा पढ़ कर इस्लाम में दाख़िल होना और अनुपालन स्वीकृति को प्रकट करना। ज़हिर है वह इस्लाम अपनी ईमानी रूह से ख़ाली होने के कारण मात्र ऊपरी इस्लाम होता है न कि पूर्ण और वास्तविक इस्लाम। जहाँ तक ईमान का सम्बन्ध है इस की वास्तविकता दिल की गवाही है। इस लिए इस्लाम का ज़बानी दावा निरर्थक है अगर वह दिल की स्वीकृति के साथ न हो।

33. स्पष्ट हुआ कि कलिमा वाले होने और ईमान का

ज़बानी इक़रार कर लेने से आदमी मुसलमानों में शामिल नहीं हो जाता किन्तु जब तक दिल में ईमान न उतर जाए अल्लाह के नज़्दीक वह मोमिन नहीं है।

34. अल्लाह और उस के रसूल का अनुपालन इसी दशा में संभव है जब कि दिल में ईमान मौजूद हो। अब जो लोग आज्ञापालक बनेंगे उन के प्रत्येक अच्छे कर्मों का बदला अल्लाह तआला उन्हें देगा और उस में कोई कमी न करेगा।

35. यह प्रोत्साहन है उन लोगों को कि अपना सुधार कर के अल्लाह की क्षमा और उस की दया के पात्र बन सकें।

36. यह सच्चे मोमिन की पहचान है कि वह अल्लाह और उस के रसूल पर इस तरह ईमान लाता है कि उस के दिल में कोई शक बाक़ी नहीं रहता। बल्कि उसे दृढ़ विश्वास और पूर्ण संतोष होता है तथा यह विश्वास उसे इस बात के लिए आमादा करता है कि वह अल्लाह की राह में कुर्बानियाँ देने से पीछे न हटे। अतः एवं वह दीन की खातिर इस्लाम विरोधी शक्तियों से कशमकश मोल लेता है और अल्लाह का कलिमा बुलंद करने के लिए अपना माल भी लगा देता है और अपनी जान की भी

परवाह नहीं करता।

मौजूदा दौर के मुसलमानों की भारी संख्या दीन का ज्ञान और उस की समझ नहीं रखती। वे कलिमा पढ़ने वाले होने के कारण मुसलमान तो हैं किन्तु उन की बात चीत और उन के रवैये से प्रतीत होता है कि वे वास्तविक ईमान से परिचित नहीं हैं और इस ख़ाम ख़्याली में लिप्त हैं कि आख़िरत में मुक्ति के लिए उन का कलिमा पढ़ने वाला ही होना काफ़ी है। अगर वे इन आयतों का ध्यान पूर्वक अध्ययन करते तो उन की आँखें खुलतीं।

37. अर्थात् यदि तुम अपने ईमान स्वीकार करने के दावे में सचमुच सच्चे हो तो तुम्हें समझना चाहिए कि तुम ने ईमान स्वीकार कर के अल्लाह के रसूल पर कोई एहसान नहीं किया है बल्कि अल्लाह का यह एहसान है कि उस ने तुम्हें ईमान की राह दिखाई।

38. इस में उन लोगों के लिए जो बस ऊपरी इस्लाम को पर्याप्त समझते हैं, चेतावनी है कि अल्लाह से तुम्हारे अन्दर का हाल छिपा नहीं रह सकता। अगर तुम्हारे दिल ईमान से ख़ाली हैं तो तुम्हारे ऊपरी इस्लाम का अल्लाह के यहाँ कोई मूल्य नहीं।



५०. सूरह काफ़

नाम :- सूरह की शुरुआत “काफ़” अक्षर से हुई है। और यही इस सूरह का नाम है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि मक्का के आरम्भिक दौर में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- मरने के बाद मिलने वाला जीवन, हश्र और जन्नत एवं जहन्नम का विश्वास पैदा करना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ५ में कुर्आन की महानता को प्रस्तुत करते हुए मौत के बाद मिलने वाले जीवन के बारे में काफ़ि़रों के संदेहों का निदान किया गया है।

आयत ६ से ११ में आसमान और ज़मीन की उन निशानियों की ओर ध्यानाकर्षित किया गया है जो अल्लाह की कुदरत, उस की पालनहारी, तथा उस की नीति एवं हिकमत पर प्रमाण प्रस्तुत करती हैं और जिन पर चिन्तन करने से मरणोपरांत जीवन का विश्वास पैदा हो जाता है।

आयत १२ से १५ में उन जातियों के अन्जाम से इबरत दिलाई गई है जिन्होंने न रसूलों को इसी लिए झुठलाया था कि वे उन्हें मरने के बाद मिलने वाले जीवन से सावधान कर रहे थे।

आयत १६ से ३५ में कर्मों के रेकार्ड, हश्र, जहन्नम और जन्नत का ऐसा चित्रण प्रस्तुत किया गया है कि मालूम होता है हश्र बरपा हो गया है और ये सब चीज़ें सामने मौजूद हैं।

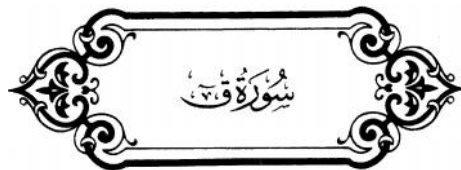
आयत ३६ और ३७ में याददेहानी है।

आयत ३८ से ४५ सूरह समापन की आयतें हैं जिन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने विचार और अपनी बात पर जमे रहने, अल्लाह की तस्बीह करने और कुर्आन के द्वारा याददेहानी करने की हिदायत की गई है।

महत्व :- यह सूरह यद्यपि छोटी छोटी आयतों पर आधारित हैं किन्तु इस में अन्य महत्वपूर्ण और बुनियादी बातों के अलावा प्रलय के बाद बरपा होने वाले हश्र का चित्रण इस तरह प्रस्तुत किया गया है कि जैसे वास्तव में हश्र बरपा हो गया है और जन्नत और दोज़ख सामने मौजूद हैं। इस की इस विशेषता के कारण ईद और जुमा की नमाज़ों में इस का पढ़ना अधिक उचित समझा गया है। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईद की नमाज़ में और जुमे के ख़ुतबे में इसे पढ़ा करते थे। (मुस्लिम किताब सलातुल ईदैन) तथा फ़ज्र की नमाज़ में भी इस का पढ़ना आप से साबित है। (मुस्लिम किताबुस्सलात)

५०. सूरह क़ाफ़

आयतें : ४५



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क़ाफ़,¹ क़सम है कुआन मजीद की।²

قَسَمَ وَالْقُرْآنِ الْمَجِيدِ ①

2. मगर इन लोगों को आश्चर्य हुआ कि इन के पास इनही में से एक ख़बरदार करने वाला आया। अतः काफ़िरो ने कहा यह तो अजीब बात है।³

بَلْ عَجَبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ فَقَالَ الْكَافِرُونَ
هَذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ②

3. क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे तो पुनः पैदा किये जाएंगे ? यह लौटाया जाना तो (बुद्धि से) परे है।⁴

إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ذَلِكَ رَجْعٌ بَعِيدٌ ③

4. हम जानते हैं ज़मीन उन के शरीर में से जो कुछ घटाती है, और हमारे पास एक किताब है जो तमाम बातों को सुरक्षित रखती है।⁵

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ وَعِنْدَنَا كِتَابٌ حَفِيفٌ ④

5. परन्तु इन लोगों ने हक़ को झुठलाया, जब उन के पास आ गया। इस लिए वे उलझन में पड़े हुए हैं।⁶

بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَرِيعٍ ⑤

6. तो क्या इन्होंने ने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा कि किस तरह हम ने उस को बनाया और सजाया, और उस में कोई रखना (छेद) नहीं है।⁷

أَفَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوجٍ ⑥

7. और ज़मीन को हम ने बिछाया और उस में पहाड़ डाल दिए और उस में हर प्रकार की सुदृश्य वनस्पतियाँ उगा दीं।⁸

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَوْبَقْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيمٍ ⑦

8. हर उस बन्दे की आँखें खोल देने और याददेहानी के लिए, जो (अपने रब की तरफ़) रूजू करने वाला हो।⁹

تَبَصَّرَةٌ وَذِكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ⑧

1. विभक्त अक्षरों (हुरुफ़े मुक़तआत) की व्याख्या के लिए देखिए सूरह बकरः नोट १ और सूरह यूनुस नोट १।

इस सूरह में काफ़ का इशारा कुआन की तरफ़ है जिस की महानता का वर्णन पहली आयत में हुआ है और जिस के द्वारा याददेहानी की हिदायत आखिरी आयत में की गई है। इस अक्षर से सूरह की शुरूआत करने में जो ध्वनि की दृष्टि से चमत्कार भी है। यह अक्षर इस सूरह के साथ पूरी तरह समाविष्ट है और इस का उच्चारण चौंका देता है कि अत्यंत महत्वपूर्ण बात इर्शाद हो रही है। इस लिए इस की ओर पूर्ण रूप से ध्यान लगा दो।

2. कुआन की विशेषता “मजीद” बयान हुई जिस का अर्थ है, महानता और बुलंदियों वाला (Glorious)। और क्रसम जैसा कि इस से पहले स्पष्ट किया जा चुका है अरबी में शहादत (साक्ष्य) के अर्थ में आता है। यहाँ कुआन के इस गुण को कि वह एक महान तथा उच्चस्तरीय किताब है, इस बात की स्पष्ट दलील है कि जो व्यक्ति इस को प्रस्तुत कर रहा है यह उस का अपना कलाम नहीं है बल्कि अल्लाह ने उस पर उतारा है और उसे अपना संदेश बना कर भेजा है और इस लिए भेजा है ताकि वह लोगों को इस बात से खबरदार करे कि मौत के बाद उन्हें दोबारा उठाया जाएगा और कर्मफल के लिए अल्लाह के समक्ष उन की पेशी होगी।

3. अर्थात् बजाय इस के कि ये लोग कुआन की महानता को देखते हुए उस के अल्लाह के कलाम होने तथा उस को प्रस्तुत करने वाले के रसूल (संदेश) होने पर ईमान लाते उन्हें इस बात पर आश्चर्य हुआ कि उन ही जैसा एक मनुष्य रसूल कैसे हुआ। रसूल तो वही हो सकता है जो मनुष्य से ऊपर की चीज़ हो।

4. अतिरिक्त आश्चर्य उन्हें इस बात पर हो रहा था कि जिस बात से कुआन और उस का पैग़म्बर उन्हें खबरदार कर रहा है वह मरने के बाद दोबारा उठाया जाना है। परन्तु वे समझते थे कि पुनः जीवित होना किस तरह संभव है जब कि मरने के बाद आदमी सड़ गल कर मिट्टी में मिल जाता है और जब उस का शरीर बाक़ी नहीं रहता तो उसे किस तरह क्रियामत के दिन उठा खड़ा किया जाएगा ? वे कहते थे यह बात बुद्धि में न समाने वाली बात है। अथवा बुद्धि से बहुत दूर की बात है।

5. अर्थात् मनुष्य के मरने के बाद उस के शरीर के जो कण मिट्टी में मिल जाते हैं उन का ज्ञान अल्लाह को अच्छी तरह है और अल्लाह ने कण कण का रिकार्ड सुरक्षित रखने का प्रबन्ध भी कर रखा है इस लिए अल्लाह का आदेश होते ही प्रत्येक व्यक्ति अपने पूर्व शरीर के साथ ज़मीन से निकल पड़ेगा।

6. अर्थात् मरने के बाद क्या कुछ पेश आना है उस के बारे में हकीक़त वह है जो कुआन प्रस्तुत कर रहा है। परन्तु उन लोगों ने जब कुआन की प्रस्तुत की गई हकीक़तों को झुठलाया

तो दूसरे जीवन के बारे में शंका एवं संदेह में पड़ गए और परस्पर विपरीत तथा उलझी हुई बातें करने लगे।

मनुष्य जब सच्ची बात का इन्कार करता है तो उस के पास विश्वास के लिए कोई आधारशिला नहीं रह जाती फिर वह विरोधभासी, परस्पर विपरीत तथा उलझी हुई बातें करने लगता है इस का स्पष्ट उदाहरण भारत के बहुदेववादियों की पुनर्जन्म की धारणा है जो बहुत विरोधाभास का संग्रह है और मनुष्य को बहुत उलझन में डाल देता है इस के विपरीत कुआन मरने के बाद मिलने वाले जीवन के बारे में जिन बातों पर ईमान लाने की दअवत देता है वे स्पष्ट वास्तविकताएँ हैं जो दिल को अपील करती हैं और विश्वास पैदा करती हैं कि निश्चित रूप से ऐसा होगा।

7. अर्थात् अगर ये क्रियामत के इन्कारी इस दृष्टि से आसमान का अध्ययन करते कि उन्हें इस के सृष्टा को जानना और पहचानना है तो उन्हें इस की रचना में एक मात्र सर्वशक्तिमान का हाथ दिखाई देता और उन पर उस का प्रताप भी ज़ाहिर होता तथा सौंदर्य भी। और जब उन्हें सर्वसामर्थ्यवान सृष्टा का ज्ञान प्राप्त होता तो फिर मनुष्य को दोबारा उठाए जाने की बात उन को विचित्र मालूम न होती और वे इस को असंभव न समझते क्योंकि जिस हस्ती के लिए इतने विशाल आसमान को बनाना उस को अशंख्य सितारों से सजाना और उसे बिना खंबों के ऐसा सुदृढ़ बना देना कि एक दीर्घ काल के गुजर जाने के बावजूद उस में कोई छिद्र, कोई रंघ्र (रख्ना) पैदा नहीं हुआ, कुदरत के कमाल की महानतम निशानी है। और आधुनिक विज्ञान ने तो आसमानी जगत के चमत्कारों को बड़े विस्तार से प्रस्तुत कर दिया है। किन्तु मनुष्य इस से केवल अपनी जानकारी में वृद्धि कर लेता है और इस बात की ओर से अपना ध्यान हटा लेता है कि यह किस हस्ती का किया धरा है वह कैसी ज़बरदस्त कुदरत वाला है और कैसा महान है।

8. जिस तरह आसमान में अल्लाह की कुदरत के चमत्कार देखे जा सकते हैं उसी तरह ज़मीन में भी देखे जा सकते हैं। ज़मीन की सतह को इतना विशाल कर देना कि उस पर अरबों इन्सान आबाद हो सकें। उस में बड़े बड़े पहाड़ गाड़ देना जो पृथ्वी के संतुलन को बनाए रखें और जिन से भाँत भाँत के लाभ इन्सानों को प्राप्त हों और ज़मीन से ऐसे पेड़ पौधे उगाना जिन के दृश्य दिलों को मोह लेने वाले हों, संपूर्ण सामर्थ्य रखने वाली, प्रताप एवं सौंदर्य के गुणों से सुसज्जित हस्ती ही की कारीगरी हो सकती है।

9. अर्थात् आसमान और ज़मीन के ये चमत्कार इन्सान की आँखों को खोल देने वाली हैं और उन पर गौर करने से नसीहत का पहलू उभर कर सामने आता है बशर्ते कि मनुष्य दिल से अल्लाह की ओर रूजू करना चाहे।

9. और हम ने आसमान से बरकत वाला पानी उतारा ¹⁰ और उस से बाग उगाए और फ़सल के लिए गल्ले भी, जो काटी जाती है। ¹¹ وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبَارَكًا فَأَنْبَتْنَا بِهِ جَدَّتِ وَحَبَّ الْحَصِيدِ ⑩
10. और खजूर के ऊँचे वृक्ष भी जिन के गुच्छे तह दर तह होते हैं। ¹² وَالنَّخْلُ بُسُقٌ لَهَا طَلْعٌ تَضِيدٌ ⑪
11. बन्दों के रिज़क (रोज़ी) के लिए। और इस (पानी) से हम ने मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर दिया। इसी तरह मरने के बाद ज़मीन से निकलना होगा। ¹³ رَبُّ قَالَ الْعِبَادِ وَأَحْيَيْنَا بِهِ بَلْدَةً مَيِّتًا كَذَلِكَ الْخُرُوجُ ⑫
12. इस से पहले नूह की क्रौम, अस्हाबुरस ¹⁴ और समूद झुठला चुके हैं। كَذَبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَابُ الرَّسِّ وَثَمُودُ ⑬
13. और आद, और फ़िरऔन, और लूत के भाई भी। ¹⁵ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطَ ⑭
14. और ऐका वाले ¹⁶ और तुब्बा की जाति भी। ¹⁷ इन सबने रसूलों को झुठलाया तो मेरी चेतावनी उन पर आ कर रही। ¹⁸ وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدُ ⑮
15. क्या हम पहली बार पैदा कर के थक गए ? (नहीं) बल्कि ये लोग नई पैदाइश के बारे में शक में पड़े हुए हैं। ¹⁹ أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ⑯
16. हम ने मनुष्य को पैदा किया और उस के दिल में गुज़रने वाले वसवसों को हम जानते हैं। ²⁰ और हम उस की गरदन की रग से भी अधिक उस से निकट हैं। ²¹ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسَّوَسُ بِهِ نَفْسُهُ وَهُمْ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ⑰
17. जब दो रिकार्ड करने वाले दाएँ और बाएँ बैठे रिकार्ड कर रहे होते हैं। ²² إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّينَ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ⑱
18. वह कोई शब्द भी ज़बान से नहीं निकालता, मगर उस के पास एक मुस्तइद निगराँ (सतर्क निरीक्षक) मौजूद होता है। ²³ مَا يَلْفُظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ⑲
19. और मौत की बेहोशी सत्य ले कर आ पहुँची। यह है वह चीज़ जिस से तू कतराता था। ²⁴ وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ⑳

10. अर्थात् ऐसी बारिश जिस से सैराब हो कर ज़मीन सोना उगलने लगती है और जो मनुष्य को बहुतेरे लाभ पहुँचाती है।

11. अर्थात् बारिश ही से फ़सलें उगती हैं और फिर उन को काट कर अनाज़ के भण्डार प्राप्त किये जाते हैं।

12. खजूर के गुच्छों की पत्तियाँ गिलाफ़ के अन्दर तह दर तह होती हैं जो कला और कारीगरी का बेहतरीन नमूना प्रस्तुत करती हैं। और फिर वह तो एक नमूना है जिस का वर्णन यहाँ हुआ है वरना भाँत भाँत के पौधों और वृक्षों पर लगने वाले गुच्छों फूलों और फलों की बनावट पर आदमी गौर करे तो बुद्धि चकित रह जाती है कि किस एहतिमाम के साथ ये चीज़ें पैदा की गई हैं और इन की तरक़ीब और तैयारी में किस तरह सूक्ष्मता तथा ज़बरदस्त कारीगरी का सबूत दिया गया है। इस तरह जब आदमी इन चीज़ों को देखता है तो उसे इन चीज़ों में अल्लाह की कुदरत का कमाल भी दिखाई देता है और उस की भव्यता तथा उस का प्रताप भी।

13. आसमान से जो पानी बरसता है वह जहाँ अल्लाह के बन्दों के लिए रोज़ी का माध्यम है वहाँ वह अल्लाह की उस निशानी को भी ज़ाहिर करता है कि जो ज़मीन मुर्दा थी वह अल्लाह की कुदरत से ज़िन्दा हो गई। और उस की कुदरत के क्रिशमे द्वारा जिस तरह निर्जीव धरती जीवित हो सकती है उसी प्रकार मुर्दे भी जीवित हो कर धरती से बाहर आ सकते हैं।

14. व्याख्या के लिए देखिए सूरह फ़ुरक़ान नोट ५१

15. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को सदोम और अमोरा की बस्तियों की तरफ़ जो मृत सागर के किनारे स्थित थी रसूल बना कर भेजा गया था। वे चूँकि उस जाति में पैदा नहीं हुए थे इस लिए उन्हें इख़्वा (लूत के भाई) कहा गया है।

16. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिज़्र नोट ७७

17. व्याख्या के लिए देखिए सूरह दुख़ान नोट ३९

18. इन आयतों में उन जातियों के विनाश का वर्णन किया गया है जिन्होंने रसूलों को झुठलाया था ताकि इस्लाम के पैग़म्बर को झुठलाने वाले सोच लें।

19. अर्थात् अल्लाह मनुष्य को पहली बार पैदा कर के थक नहीं गया कि उस के लिए दूसरी बार पैदा करना दुष्कर हो।

20. वस्वसा का अर्थ है (धीमी आवाज़) और इस से तात्पर्य वे विचार और ख़ियाल हैं जो मनुष्य के मन में पैदा होते हैं। मतलब यह है कि अल्लाह इन्सान के दिल में गुजरने वाले ख़ियाल तक से परिचित हैं।

21. अल्लाह इन्सान से दूर नहीं बल्कि हर लिहाज़ से करीब है और इतना करीब कि उस की शहरा से भी करीब। अल्लाह की कुदरत और उस का ज्ञान पूरी तरह उस को अपने घेरे में लिए हुए है। और जब इन्सान पर उस की ग़िरफ़्त इतनी

अधिक मज़बूत है तो वह उस से डरता क्यों नहीं और यह विचार उस के मन में कहाँ से समा जाता है कि वह उस के समक्ष उत्तरदायी नहीं है।

आयत का इशारा इस बात की तरफ़ भी है कि जब अल्लाह इन्सान के दिल में गुजरने वाले ख़ियालों तक को जानता है तो क्रियामत के दिन हर हर व्यक्ति के कर्मों और उस के दिल के भेदों को सामने लाना तथा उन का हिसाब चुकाना क्या मुश्किल है?

22. तात्पर्य दो फ़रिश्ते हैं जो प्रत्येक व्यक्ति के साथ लगे रहते हैं। एक उस के दाएँ ओर बैठता है और दूसरा बाएँ ओर। ये दोनों फ़रिश्ते उस व्यक्ति की हर बात को रेकार्ड कर लेते हैं अर्थात् उसे सुरक्षित कर लेते हैं।

23. अर्थात् जब आदमी ज़बान से कोई बात निकालता है तो जो फ़रिश्ता उस के निरीक्षण हेतु नियुक्त होता है वह अत्याधिक तत्परता एवं सतर्कता से उस को रेकार्ड कर लेता है। कोई बात भी रेकार्ड होने से रह नहीं जाती। इन दो फ़रिश्तों के बीच काम किस तरह विभाजित है और ये मनुष्य के दाएँ और बाएँ ओर किस तरह बैठे रहते हैं इस का स्पष्टीकरण न कुर्आन में हुआ है और न सही हदीस में। इस लिए कुर्आन के संक्षिप्त बयान को पर्याप्त समझकर संतोष करना चाहिए। रहा फ़रिश्तों का एक एक शब्द नोट कर लेना तो आज के आधुनिक मानव के लिए तो इस में आश्चर्य की कोई बात नहीं रही जब कि टेपरेकार्ड जैसी वस्तुओं का अविष्कार हो चुका है बल्कि ये आविष्कार कुर्आन की सत्यता का ताज़ा प्रमाण हैं।

इस आयत में कथनों को सुरक्षित कर लेने की बात इर्शाद हुई है और सूरह इन्फ़ितार में करनी को।

وَأَنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ - كِرَامًا كَاتِبِينَ -

يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ (انفطار: १०-१२)

अर्थ:- “तुम पर निगराँ (निरिक्षक) नियुक्त हैं, प्रतिष्ठित लिखने वाले जो तुम्हारे हर काम को जानते हैं।” (इन्फ़ितार १० से १२) और सूरह ज़िलज़ाल में इर्शाद हुआ है :-

فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ وَمَنْ

يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ - (ज़ल: ८, ९)

अर्थ :- “ तो जिस ने कण भर भलाई की होगी वह उस को देख लेगा और जिस ने कण भर बुराई की होगी वह उस को भी देख लेगा।” (ज़िलज़ाल ८, ९)

कुर्आन के इन बयानों से यह बात बिलकुल स्पष्ट है कि

प्रत्येक व्यक्ति के समस्त कामों, वचनों और गतिविधियों को सुरक्षित किया जा रहा है इस तौर से कि क्रियामत के दिन वह अपने समस्त कामों को चाहें वह कोई नेकी हो या बदी और चाहे वह कण भर ही क्यों न हो अपनी आँखों से देख लेगा मतलब यह कि दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति का पूरा जीवन फ़िल्माया जा रहा है और क्रियामत के दिन वह अपनी इस बोलती फिल्म को देख लेगा। और यह फिल्म मनुष्य द्वारा निर्मित फ़िल्म की तुलना में ऐसे उच्च स्तर की होगी कि उस का कोई उदाहरण प्रस्तुत नहीं किया जा सकता।

यह वास्तविकता यदि हर समय मनुष्य के सामने रहे तो उस

का जीवन बड़ा सतर्क जीवन हो जाए। वह कोई बात ज़बान से निकालने से पहले सोचेगा कि इस पर पकड़ तो नहीं होगी और किसी काम को करने से पहले उस को यह चिन्ता होगी कि उस की गिनती नेकी में होगी यह बदी में।

24. मौत के समय मनुष्य पर बेहोशी की दशा छा जाती है परन्तु उस की आत्मा पर सत्य खुल जाता है। अगर वह काफ़िर था तो उस से कहा जाता है कि यह वह सत्य है जिस से तू दुनिया में कतराता रहा। गोया मौत क्रियामत की भूमिका है। मौत आते ही आदमी फ़रिश्ते को भी देख लेता है और उस जगत को भी जो उस की निगाहों से ओझल है।



मेरे यहाँ बात बदली नहीं जाती, और मैं बन्दों पर कदापि जुल्म करने वाला नहीं हूँ। वह दिन जब कि हम जहन्नम से पूछेंगे क्या तू भर गई ? और वह कहेगी कुछ और भी है ? और जन्नत मुत्तकियों (परहेज़गारों) के करीब लाई जाएगी। कुछ भी दूर न होगी। (अल-कुआन)

20. और सूर फूँका गया। यह है वह दिन जिस से डराया गया था।²⁵

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ذَلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ۝٢٠

21. और प्रत्येक व्यक्ति इस हाल में उपस्थित हुआ कि उस के साथ एक हाँकने वाला और एक गवाह है।²⁶

وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ۝٢١

22. इस चीज़ की तरफ़ से तू ग़फ़लत में रहा। हम ने वह परदा हटा दिया जो तुझ पर पड़ा था, इस लिए आज तेरी निगाह बहुत तेज़ है।²⁷

لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ۝٢٢

23. उस के साथी ने कहा, यह जो मेरे पास था, हाज़िर है।²⁸

وَقَالَ قَرِينُهُ هَذَا مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ۝٢٣

24. (आदेश हुआ) डाल दो जहन्नम में हर काफ़िर सत्य के दुश्मन को।²⁹

الْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلِّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ۝٢٤

25. ख़ैर (भलाई) से रोकने वाले, सीमा का उल्लंघन करने वाले, शक में डालने वाले को।

مِّنَّا لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٌ ۝٢٥

26. जिस ने अल्लाह के साथ अन्य उपास्य ठहराए थे।³⁰ तो इस को कड़ी यातना में डाल दो।

لَاذَىٰ جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَأَلْقِيَهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ۝٢٦

27. उस के साथी ने कहा ऐ हमारे रब मैं ने इस को उहण्ड नहीं बनाया बल्कि यह स्वयं दूर की गुमराही में पड़ गया था।³¹

قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْعَمْتَهُ وَلَكِنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝٢٧

28. इशार्द हुआ, मेरे पास झगड़ा न करो। मैं ने तुम्हें पहले ही अपने अज़ाब से ख़बरदार कर दिया था।³²

قَالَ لَا تَحْتَصِمُوا لَدَائِي وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُمْ بِالْوَعِيدِ ۝٢٨

29. मेरे यहाँ बात बदली नहीं जाती,³³ और मैं बन्दों पर कदापि ज़ुल्म करने वाला नहीं हूँ।³⁴

يَا بَدِّلُ الْقَوْلِ لَدَائِي وَمَا أَنَا بِظَالِمٍ لِّلْعَالَمِينَ ۝٢٩

30. वह दिन जब कि हम जहन्नम से पूछेंगे क्या तू भर गई ? और वह कहेगी कुछ और भी है ?³⁵

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأَتْ وَنَقُولُ هَلْ مِنْ مَّزِيدٍ ۝٣٠

31. और जन्नत मुत्तक्रियों (परहेज़गारों) के करीब लाई जाएगी। कुछ भी दूर न होगी।³⁶

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ۝٣١

25. यह क्रियामत का चित्रण है कि दूसरा सूर फूँकते ही समस्त मरे हुए इन्सान जीवित हो कर क़ब्रों से निकल पड़ेंगे। उस समय उन से कहा जाएगा कि यह वही दिन है जिस से तुम्हें दुनिया में डराया गया था।

26. अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति के साथ दो फ़रिश्ते होंगे एक उस को हथ्र के मैदान की तरफ़ ले जा रहा होगा और दूसरा वह जो उन के व्यवहारिक जीवन के बारे में गवाही देने वाला होगा।

27. यह बात क्रियामत के दिन हर उस व्यक्ति से कही जाएगी जो आखिरत से गाफ़िल था। इस ग़फ़लत के नतीजे में उस की आँखों पर परदा पड़ गया था जिस को क्रियामत के दिन हटा दिया जाएगा। उस की निगाहें क्रियामत के हालात को देखने के लिए तेज़ होगी।

मालूम हुआ कि जो लोग क्रियामत का एहसास रखते हैं उन की निगाहें दुनिया में भी तेज़ होती हैं और वे क्रियामत के हालात को कुर्आन की रौशनी में अनुभूत कर लेती हैं।

28. साथी से तात्पर्य वह फ़रिश्ता है जो उस व्यक्ति के कर्मों के निरीक्षण हेतु नियुक्त था। वह उस के कर्मों को सुरक्षित करते हुए कहेगा कि यह रेकार्ड बिलकुल तैयार है।

29. यह आदेश उन दो फ़रिश्तों को होगा जो खुदा की अदालत में अपराधियों को हाज़िर करेंगे। अर्थात् हाकने वाला फ़रिश्ता (साइक सائق) और गवाही देने वाला फ़रिश्ता (शहीद)।

30. यहाँ काफ़िर के पाँच दुर्गुण बयान किये गए हैं, एक यह कि वह सत्य का दुश्मन उस का विरोधी होता है। वह दूसरों को भी सत्य स्वीकार करने से तथा नेकी और भलाई के कामों से रोकता है। वह नैतिक तथा अल्लाह की बाँधी हुई सीमाओं का उल्लंघन करता है। इस्लाम के बारे में शक संदेह उत्पन्न करता है। वह ग़ैरुल्लाह की भी इबादत करता है जो शिर्क और अक्षम्य गुनाह है। यह काफ़िरों के कुछ दुर्गुणों का वर्णन है। दूसरी जगहों पर इन के और भी दुर्गुण बयान हुए हैं।

31. इस आयत में “क़रीना” (उस के साथी) से तात्पर्य शैतान है जो दुनिया में उस व्यक्ति का साथी बना रहा।

प्रसंग से पूरी तरह स्पष्ट है कि उस व्यक्ति को जब कड़ी यातना में डालने का आदेश होगा तो वह अपनी उदंडता का ज़िम्मेदार शैतान को ठहराएगा और शैतान उस का खण्डन करते हुए कहेगा कि मैं ने इस पर कोई ज़बरदस्ती नहीं की थी बल्कि यह स्वयं पहले दर्जे की गुमराही में लिप्त हो गया था अतः दोषी एवं अपराधी यह स्वयं है।

32. अर्थात् अब इस बहस से कोई लाभ नहीं। मैं ने तुम्हें

दुनिया में अपने रसूलों के माध्यम से सावधान कर दिया था कि अगर तुम ने कुफ़्र किया तो इस की भयावह सज़ा तुम्हें क्रियामत के दिन भुगतनी होगी।

33. अर्थात् मेरा फैसला अटल है और इस आदेश में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता कि मैं शैतान और उस के अनुयायियों से जहन्नम को भर दूँगा।

34. अर्थात् जहन्नम की हमेशा की सज़ा जो काफ़िरों को दी जाएगी अन्यायपूर्ण नहीं होगी। बल्कि सत्य और न्याय के तक्राज़ों को पूरा करने के लिए होगी। जो लोग खुदा पर एतिराज़ करने का दुस्साहस करते हैं वे कुर्आन में इस भयावह सज़ाओं को सुन कर अल्लाह को (अल्लाह माफ़ करे) ज़ालिम कहने लगते हैं। उन के नज़दीक न्याय की बात यह है कि अल्लाह अपने वफ़ादार बन्दों और अपने विद्रोहियों में कोई अन्तर न करे। बाग़ियों को सज़ा देने के बजाए अपने इनाम से अलंकृत करे या फिर सिर से हिसाब किताब का दिन ही बरपा न करे। परन्तु इन की ये दोनों बातें पूर्णतया ग़लत तथा न्याय के विरुद्ध हैं। दुनिया की हुकूमतें अपने विद्रोहियों और कुख्यात अपराधियों को मृत्यु दण्ड भी देती हैं और उम्र कैद भी और इस को न्याय का तक्राज़ा समझा जाता है। फिर अल्लाह की तरफ़ से उस के उद्दण्य बन्दों को दी जाने वाली सदा सर्वदा की सज़ा को किस तरह अन्यायपूर्ण कहते हैं। रही यह बात की अल्लाह सिर से आखिरत बरपा ही न करे तो इस का मतलब यह हुआ कि यह दुनिया और इस में मनुष्य का अस्तित्व सब व्यर्थ और बेकार हैं। मनुष्य को यदि मर कर फ़ना ही हो जाना है तो दुनिया की छोटी ज़िन्दगी का हासिल कुछ नहीं वह बिलकुल व्यर्थ और निरुद्देश्य हो कर रह जाती है।

इस के अलावा इस वास्तविकता से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि जुल्म किसी के अधिकार को छीन लेने या किसी ग़लत उद्देश्य को पूरा करने के लिए किया जाता है, परन्तु अल्लाह के बारे में इस की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वह बेनियाज़ है। उस को किसी चीज़ की हाज़त नहीं है फिर वह अपने बन्दों पर क्यों जुल्म करने लगा।

35. अर्थात् यह न समझो कि काफ़िरों और अपराधियों की इतनी बड़ी संख्या जो मालूम नहीं कितने बिलियन (Billion) इन्सानों और ज़िन्नो पर आधारित होगी, जहन्नम में किस तरह समा सकेगी। उस की विशालता का हाल यह होगा कि इन्सान और ज़िन्नत की भारी संख्या से भर देने के बावजूद वह कहेगी कि कुछ और भी हो तो उन के लिए गुनज़ाईश हो सकती है।

36. अर्थात् जन्नत में जाने के लिए मुत्तक़ियों (परहेज़गारों)

को कोई फ़ासला तय न करना पड़ेगा। ज्यों ही फैसला होगा वे जन्नत में पहुँच जाएँगे। स्थान और समय का कोई फ़ासला उन के और जन्नत के बीच आड़े न होगा।

कुर्आन की आयतों से यह बात तो स्पष्ट है कि हश्र ज़मीन

पर ही बरपा होगी। रही बात मुत्तकियों के लिए जन्नत के करीब होने की तो इस की दशा अल्लाह ही को मालूम है। आखिरत के स्थान और समय को हम दुनिया के स्थान और समय के अनुसार नहीं समझ सकते ।



यह है वह चीज़ जिस का तुम से वादा किया जाता था, हर उस व्यक्ति के लिए जो रूजू करने वाला और हिफ़ाज़त करने वाला था। जो रहमान से बे देखे डरता था और रूजू वाले दिल के साथ हाज़िर हुआ है। दाख़िल हो जाओ जन्नत में सलामती के साथ। यह हमेशगी का दिन है। वहाँ उन के लिए वह सब कुछ होगा जो वे चाहेंगे और हमारे पास और भी हैं। (अल-कुअर्न)

32. यह है वह चीज़ जिस का तुम से वादा किया जाता था, हर उस व्यक्ति के लिए जो रूजू करने वाला ³⁷ और हिफ़ाज़त करने वाला था।³⁸

هَذَا مَا تَوْعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيفٍ ۝

33. जो रहमान से बे देखे डरता था ³⁹ और रूजू वाले दिल के साथ हाज़िर हुआ है।⁴⁰

مَنْ خَشِيَ الرَّحْمَنَ الْغَيْبَ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُنِيبٍ ۝

34. दाख़िल हो जाओ जन्नत में सलामती के साथ।⁴¹ यह हमेशागी का दिन है।⁴²

لَدْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ذَلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ۝

35. वहाँ उन के लिए वह सब कुछ होगा जो वे चाहेंगे और हमारे पास और भी हैं।⁴³

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ۝

36. इन से पहले हम कितनी ही जातियों को विनष्ट कर चुके हैं जो इन से कहीं अधिक शक्तिशाली थीं।⁴⁴ उन्होंने ने संसार के देशों में संचार किया था तो क्या उन्हें कहीं पनाह की जगह मिली ?⁴⁵

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِنْ مَحِيصٍ ۝

37. निस्संदेह, इस में सबक है हर उस व्यक्ति के लिए जो दिल रखता हो या ध्यान के साथ बात सुने।⁴⁶

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرًا لِمَنْ كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ۝

38. हम ने आसमानों और ज़मीन को, और जो कुछ उन के बीच है सब को ६ दिनों में पैदा किया ⁴⁷ और हमें कोई थकन नहीं हुई।⁴⁸

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِنْ لُغُوبٍ ۝

39. तो सब करो इन की बातों पर, और पाकी बयान करो अपने रब की प्रशंसा के साथ, सूरज के उदय होने और उस के डूबने से पहले।⁴⁹

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۝

40. और रात के कुछ हिस्से में भी उस की पाकी बयान करो ⁵⁰ और सज्दों (नमाज़ों) के बाद भी।⁵¹

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ۝

41. और सुनों जिस दिन पुकारने वाला करीब की जगह ही से पुकारेगा।⁵²

وَأَسْمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادُ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۝

37. अर्थात् बार बार तौबा करने वाला, अल्लाह की तरफ पलटने वाला और हर मामले में और हर मौके पर उसी की तरफ रूजू करने वाला ।

38. तात्पर्य अल्लाह की बाँधी हुई सीमाओं की सुरक्षा करना है अर्थात् वह शरीअत की सीमा का पाबन्द था।

39. अर्थात् रहमान को यद्यपि उस ने नहीं देखा था किन्तु उस की महानता की कल्पना से वह डरता था । स्पष्ट रहे कि रहमान (अर्थात् दयावान) की विशेषता उस की महानता को भी प्रमाणित करती है। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अम्बिया नोट ६८

40. “क़ल्बे मुनीब” से तात्पर्य अल्लाह की ओर आकर्षित होने वाला दिल है। आयत का मतलब यह है कि वह ऐसा दिल ले कर आया जो अल्लाह के मामले में हमेशा सतर्क और सचेत रहा तथा ध्यान उसी की ओर लगाए रखा। उस का सिर ही नहीं बल्कि उस का दिल भी अल्लाह के समक्ष झुका हुआ था और वह दिल के रूजू के साथ अल्लाह की इबादत तथा उस का अनुपालन करता था।

इन आयतों में मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) के गुण बयान हुए हैं जिन से तक्रवा का भावार्थ अच्छी तरह स्पष्ट हो जाता है।

41. अर्थात् हर ख़तरों और हर आफ़त से सुरक्षित।

42. अर्थात् आज की कामयाबी हमेशा के लिए और आज का इनाम हमेशा के लिए।

43. अर्थात् वे जो चाहेंगे वह तो उन्हें जन्नत में मिलेगा ही, उस के अलावा हम उन्हें अपनी तरफ़ से अतिरिक्त इनामों से अलंकृत करेंगे।

44. व्याख्या के लिए देखिए सूरह रोम नोट १६

45. अर्थात् ये गुज़री हुई शक्तिशाली जातियाँ विभिन्न देशों में अपना फैलाव और अपना दबाव रखती थीं किन्तु जब उन पर प्रकोप टूटा तो उन्हें कहीं भी पनाह न मिल सकी। फिर ये लोग किस घमण्ड में पड़े हुए हैं।

46. अर्थात् जिस का दिल ज़िन्दा और सचेत हो ऐसा व्यक्ति आप ही इन जातियों के इबरतनाक अन्जाम से सबक लेगा। लेकिन जिस का दिल सचेत न हो तो कम से कम वह ध्यानपूर्वक इन घटनाओं को सुने। इस स्थिति में भी वह नसीहत हासिल करेगा। किन्तु जो व्यक्ति इतिहास के इन इबरतनाक वृत्तांत पर न तो स्वयं सोच विचार करता हो और न नसीहत करने वाले की नसीहत पर कान धरता हो वह बुरे अन्जाम से किस तरह बच सकता है?

47. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट ८२

48. यह खण्डन है यहूदियों के उस ख़ियाल का कि अल्लाह ने सातवें दिन जो उन की समझ से सब्त का दिन है

आराम किया । बाइबिल में है :-

“क्यों कि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उन में है सब को बनाया और सातवें दिन विश्राम किया। इस कारण यहोवा ने विश्राम दिन को आशीष दी और उस को पवित्र ठहराया । ” (निर्गमन २०: ११)

अल्लाह के बारे में यह कल्पना ही ग़लत है। उस को न थकान लगती है और न उस को आराम की आवश्यकता होती है। वह महाशक्तिमान है। अगर उस को मनुष्य अपने पर समझे तो यह उस का अंधापन ही नहीं मूर्खता भी है।

49. अर्थात् ये लोग जो बातें तुम को झुठलाने के लिए कह रहे हैं उन से अपने मन को छोटा न करो बल्कि समय और धैर्य से काम लो अपने ख़ब की प्रशंसा और उस के गुणगान में लगे रहो क्यों कि यह हृदय को परितोष पहुँचाने वाली सामग्री है।

50. प्रशंसा के साथ गुणगान तथा पाकी बयान करने का मतलब यह है कि अल्लाह की पाकी इस तरह बयान की जाए कि उस के हर पहलू से उस के गुणवान और कमालात से भरी हस्ती तथा उस के प्रशंसनीय होने की चर्चा भी हो।

सूरज के उदय होने से पहले तस्बीह (पाकी बयान) करने का जो आदेश दिया गया है तो इस से तात्पर्य फ़ज़्र की नमाज़ है और डूबने से पहले की तस्बीह से मुराद अस्त्र की नमाज़ है।

50. तात्पर्य इशा की नमाज़ है।

फ़ज़्र, अस्त्र और इशा की नमाज़ अदा करने का आदेश शुरू में दिया गया था। इस के बाद पाँच वक्त की नमाज़ों का आदेश दिया गया। देखिए सूरह बनी इस्राईल नोट १०८

51. यहाँ सज्दे से तात्पर्य जैसा कि प्रसंग से स्पष्ट है नमाज़ें हैं । यह इस बात का प्रोत्साहन है कि नमाज़ों के बाद भी अल्लाह की तस्बीह की जाए क्योंकि तस्बीह ज़िक्र (गुणगान) भी है, इबादत भी है और आत्मा का आहार भी तथा बहुत बड़े इनाम का कारण भी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस का महत्व और इस की फ़ज़ीलत इस तरह बयान फ़रमाई है :-

لَا أَقُولُ سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ . (مسلم کتاب الذکر)

अर्थ :- “सुब्हानल्लाहि वलहमदुलिल्लाही वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर कहना मुझे इस दुनिया से अधिक प्रिय है जिस पर सूरज उदय होता है। ” (मुस्लिम किताबुज्ज़िक्र)

तथा फ़रमाया :-

أَلَا أُخْبِرُكَ بِأَحَبِّ الْكَلَامِ إِلَى اللَّهِ إِنَّ أَحَبَّ الْكَلَامِ إِلَى اللَّهِ سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ .

अर्थ :- “क्या मैं तुम्हें न बताऊँ कि अल्लाह के नजदीक सब से अधिक पसंदीदा कलाम क्या है? अल्लाह के नजदीक सब से पसन्दीदा कलाम “सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही” है (मुस्लिम किताबुज्जिक्र)

और हदीस में आता है कि आपने हर नमाज़ के बाद हम्द और तस्बीह के कलिमे कहने को उत्प्रेरित करते हुए फ़रमाया :-

تُسَبِّحُونَ وَتُكَبِّرُونَ وَتُحَمِّدُونَ فِي دُبُرِكُلِّ

صَلَاةٍ ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ مَرَّةً. (مسلم کتاب المساجد)

अर्थ :- “हर नमाज़ के बाद तैंतीस बार सुब्हानल्लाह, तैंतीस बार अल्लाहु अकबर और तैंतीस बार अल्हम्दुलिल्लाह कहा करो।” (मुस्लिम किताबुल मसाजिद)

ऊपर आयत १८ में गुज़र चुका कि इन्सान की ज़बान से

जो शब्द भी निकलता है नोट कर लिया जाता है। फिर एक मोमिन अपनी ज़बान से अधिक से अधिक हम्द और तस्बीह अर्थात् उस की प्रशंसा और गुणगान के शब्द क्यों न कहे। और अपने क्रमों को इन जवाहरात से सजाए।

52. अर्थात् उस पुकार को जो क्रियामत के दिन क़ब्रों से निकलने के लिए होगी सुनने के लिए तैयार हो जाओ। यह पुकार हर व्यक्ति जो मर गया था सुन लेगा और उसे ऐसा महसूस होगा कि क़रीब की जगह से ही कहीं से पुकारने वाला पुकार रहा है।

पहले का इन्सान सोच सकता था कि हश्र की आवाज़ पूरी पृथ्वी पर जिस में मुर्दे दफ़न हैं किस तरह फैलेगी? परन्तु मौजूदा दौर में रेडियो के आविष्कार ने इस प्रश्न का भी उत्तर दे दिया इस तरह कुर्आन की सत्यता की निशानियाँ बाह्य जगत में ज़ाहिर होती जा रही हैं।



हम अच्छी तरह जानते हैं जो कुछ ये लोग कहते हैं और तुम (ऐ नबी !) इन पर ज़बरदस्ती करने वाले नहीं हो। तो इस कुआन के माध्यम से नसीहत करो उन लोगों को जो मेरी चेतावनी (अज़ाब की आगाही) से डरें। (अल-कुआन)

42. जिस दिन ये उस हौलनाक आवाज़ को सत्य के साथ सुनेंगे।⁵³ वह निकल खड़े होने का दिन होगा।⁵⁴

يَوْمَ يَسْعَوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذَلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ﴿٣٢﴾

43. निस्संदेह हम ही ज़िन्दा करते हैं और हम ही मौत देते हैं, और हमारी ही तरफ़ लौटना है।

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ﴿٣٣﴾

44. जिस दिन ज़मीन इन के ऊपर से फट जाएगी और वे तेज़ी से निकल रहे होंगे।⁵⁵ यह हथ्र हमारे लिए बहुत ही आसान है।

يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ذَلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ﴿٣٤﴾

45. हम अच्छी तरह जानते हैं जो कुछ ये लोग कहते हैं और तुम (ऐ नबी!) इन पर ज़बरदस्ती करने वाले नहीं हो।⁵⁶ तो इस कुर्आन के माध्यम से नसीहत करो उन लोगों को जो मेरी चेतावनी (अज़ाब की आगाही) से डरें।⁵⁷

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَنْ يَخَافُ وَعِيدِ ﴿٣٥﴾

53. अर्थात् हश्र की यह आवाज़ सत्य की आवाज़ होगी और सुनने वाले पर सत्य को खोल देगी।

54. अर्थात् इस आवाज़ को सुनते ही समस्त मरे हुए इन्सान ज़मीन से निकल पड़ेंगे चाहे उन की कब्र बनी थी या नहीं बनी थी।

55. यह क्रियामत के दिन ज़मीन से निकलने का चित्रण है। जब दूसरा सूर फूँका जाएगा तो ज़मीन जगह जगह से फट जाएगी और सारी सृष्टि जो ज़मीन में घुल मिल गई थी ज़िन्दा हो कर बाहर निकल आएगी और हाल यह होगा कि लोग ज़मीन से तेज़ी के साथ निकल कर दौड़ रहे होंगे।

56. अर्थात् तुम्हारा काम समझाना है ज़बरदस्ती कर के बलपूर्वक अपनी बात मनवाना नहीं है। और जब एक पैगम्बर किसी को दीन स्वीकार करने पर विवश नहीं कर सकता तो मुसलमान ग़ैर मुस्लिमों को इस्लाम स्वीकार करने पर किस प्रकार विवश कर सकते हैं? रहा जिहाद तो उस का सम्बन्ध जंगी उद्देश्यों से है न कि लोगों का दीन (जीवन प्रणाली) ज़बरदस्ती बदलने से।

57. यह स्पष्ट हिदायत है इस बात की कि कुर्आन को नसीहत और याददेहानी का साधन बनाया जाए क्यों कि सत्य को स्पष्ट करने, अल्लाह की हुज्जत (तर्क) उस के बन्दों पर

क्रायम करने और नसीहत करने का इस से अधिक प्रभावकारी माध्यम कोई नहीं हो सकता।

इस हिदायत के चलते दअवत और तब्लीग तथा सुधार का काम करने वालों को चाहिए कि वे कुर्आन को उस के अर्थ तथा उस की व्याख्या के साथ लोगों के सामने प्रस्तुत करें चाहे वे मुस्लिम हों या ग़ैर मुस्लिम। और हालात तथा मौक़े की मुनासिबत से कुर्आन की रहनुमाई को उजागर करें। आज कल दीनी किताबों की भरमार हो गई है और मुसलमानों में हर कोई अपनी किताबों और अपने साहित्य पर फूला नहीं समा रहा है बल्कि गर्व कर रहा है। और कुर्आन को उस के भावार्थ के साथ प्रस्तुत करने की उतनी तैयारी नहीं कर रहा है जितना कि अपनी किताबों और अपने लिटरेचर को प्रस्तुत करने का इहतिमाम करता है। बहुत कम लोग हैं जो अपवाद हैं। इस कारण दीन समझने समझाने के मामले में लोगों का सम्बन्ध कुर्आन से सीधे नहीं जुड़ पाता और उस की सोच ख़ालिस कुर्आनी सोच नहीं बन्ती। वह उसी सोच को स्वीकार कर लेता है जो उस के समूह की किताबों या साहित्य में प्रस्तुत की गई हो। हर प्रकार के गिरोहबन्दी से ऊपर उठ कर दअवत और तब्लीग का काम करने के लिए आवश्यक है कि कुर्आन समझने पर ज़ोर दिया जाए और इसी को समझाने बुझाने तथा याददेहानी का मूल साधन बनाया जाए।



सूरह अज़्-ज़ारियात

५१. सूरह अज़्-ज़ारियात

नाम :- शुरू में “अज़्ज़ारियात” अर्थात् गर्द उड़ाने वाली हवाओं का वर्णन हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अज़्ज़ारियात” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि मक्का के मध्यकाल में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- कर्मफल है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ६ में तूफ़ानी और बारिश वाली हवाओं में गाफ़िल इन्सानों को चौंका देने, उन्हें अल्लाह की ओर आकर्षित करने और कर्मफल का विश्वास पैदा करने की जो सामग्री है उस की ओर ध्यानाकर्षित कर के इनाम और दण्ड को निश्चित रूप से घटित होने वाली वास्तविक घटना के तौर पर प्रस्तुत किया गया है।

आयत ७ से १४ में कर्मफल का इन्कार करने और उस का मज़ाक उड़ाने वालों को उस के अन्जाम से ख़बरदार किया गया है।

आयत १५ से १९ में अल्लाह से डरते रहने और नेकी की ज़िन्दगी गुज़ारने का प्रोत्साहन है अतः एवं उन का बेहतरीन सिला बयान किया गया है।

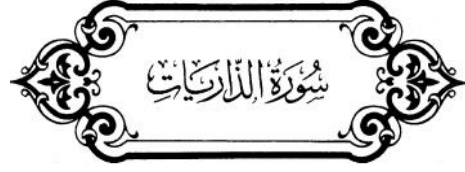
आयत २० से २३ में उन निशानियों की ओर ध्यानकर्षित किया गया है जो ज़मीन और आसमान में फ़ैली हुई हैं तथा मनुष्य के अपने अन्दर विद्यमान हैं और जिन पर चिन्तन करने से कर्मफल में इनाम और दण्ड के सत्य होने का विश्वास पैदा होता है।

आयत २४ से ४६ में नबियों के इतिहास की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं से इबरत दिलाई गई है और जो इस बात का सबूत है कि अल्लाह का दण्ड विधान इस दुनिया में भी काफ़िर क़ौमों पर लागू होता रहता है।

आयत ४७ से ६० सूरह समाप्ति की आयतें हैं जिन में अल्लाह की कुदरत और महानता को बयान करते हुए उस की तरफ़ लपकने और उसी की इबादत करने की दअवत दी गई है।

५१. सूरह अज़-ज़ारियात

आयतें : ६०



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क़सम ¹ है उन हवाओं की जो गर्द उड़ाती हैं।²
2. फिर (पानी से लदे बादलों का) बोझ उठाती हैं।³
3. फिर प्रवाह के साथ चलती हैं।⁴
4. फिर एक अग्र (बारिश) की तकसीम करती हैं।⁵
5. निस्संदेह जिस चीज़ की चेतावनी तुम को सुनाई जा रही है वह सच है।⁶
6. और ईनाम और दण्ड (का दिन) निश्चित रूप से आ कर रहेगा।⁷
7. क़सम है तह दर तह बादलों वाले आसमान की।⁸
8. तुम भिन्न भिन्न बातें करते हो।⁹
9. सत्य से वही फेरे जाते हैं जिन की अक़ल मारी गई हो।¹⁰
10. विनष्ट हों अटकल से बातें करने वाले।¹¹
11. जो ग़फ़लत में पड़े हुए बेहिस हैं।¹²
12. पूछते हैं ईनाम और दण्ड का दिन कब आएगा ?¹³
13. जिस दिन ये आग पर तपाये जाएंगे।

وَالَّذِي تَدُورُوا ۝۱

فَالْحِجَلُ وَفُرَا ۝۲

فَالْجَرِيَّتِ يُسْرًا ۝۳

فَالْمُقَسِّمَاتِ أَمْرًا ۝۴

إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَصَادِقٌ ۝۵

وَإِنَّ الدِّينَ لَوَاقِعٌ ۝۶

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۝۷

إِنكُمْ لَفِي قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۝۸

يُؤْفِكُ عَنْهُ مَنْ أُوْك ۝۹

فَقِيلَ الْخَوْصُونَ ۝۱०

الَّذِينَ هُمْ فِي غَمْرَةٍ سَاهُونَ ۝۱१

يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمُ الدِّينِ ۝۱२

يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارٍ يُفْتَنُونَ ۝۱३

1. यहाँ हवाओं की क्रसम साक्ष्य के तौर पर है अर्थात् हवाएँ कर्मफल का विश्वास पैदा करती हैं। साक्ष्य के अर्थ में क्रसम अरबी भाषा में तत्त्वपूर्ण शैली है।

2. गर्द उड़ाने वाली हवाएँ अपने पीछे बारिश ले कर चलती हैं और कभी आँधी का रूप धार लेती हैं। यह ग़ाफ़िल इन्सानों को चौंका कर अल्लाह की महानता, उस की कुदरत तथा उस की प्रतापी महिमा का विश्वास पैदा करती हैं।

3. हवाएँ अत्यंत सूक्ष्म होती हैं लेकिन करोड़ों लीटर पानी से लदे हुए बादलों का बोझ उठाती हैं। वर्षा ऋतु में हवाई जहाज से सफ़र करने वालों को नीचे की ओर ऐसा दृश्य दिखाई देता है कि जैसे वातावरण में बादलों का एक समुद्र है जो क्षितिज तक फैल गया है। हवाओं का अपने ऊपर पानी से लदे हुए बादलों को लिए फिरना एक महानतम तथा सर्वशक्तिमान एवं सामर्थ्यवान हस्ती की कारिगरी की स्पष्ट निशानी है।

4. हवाएँ जब पानी से लदे हुए बादलों का बोझ उठा लेती हैं तो इस बोझ के असर से उन की रफ़्तार कम नहीं होती बल्कि वे बहुत ही सरलतापूर्वक प्रवाहित रहती हैं। यह इस बात का प्रतीक है कि उन की बागडोर सर्वशक्तिमान, सामर्थ्यवान और तत्त्वदर्शी संचालक के हाथ में है।

5. बारिश को “अम्र” कहा गया है क्यों कि वह बहुत ही महत्वपूर्ण चीज़ है और हवाएँ अल्लाह के आदेश से पानी की तक्रसीम का काम अन्जाम देती हैं। वे किसी भूभाग में हल्की सी बारिश बरसाती हैं तो किसी भू-भाग में मूसलाधार, कहीं सैलाब लाती हैं तो कहीं तूफ़ान और कहीं रहमत की बारिश बन कर बरसती हैं तो कहीं विनाश और प्रकोप बन कर। गोया हवाएँ एक योजनाबद्ध तरीके से पानी की तक्रसीम अमल में लाती हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि इस के पीछे एक ज़बरदस्त कुदरत रखने वाली अत्यंत नीतिज्ञ और सूझ बूझ रखने वाली हस्ती का हाथ है।

अम्र की तक्रसीम को हवाओं से सम्बन्ध बताना मात्र ऊपरी तौर से है। इस तरह से काल्पनिक संबोधन के उदाहरण कुर्आन में अन्य जगहों पर भी हैं। जैसे दीवार की तरफ़ इरादे की निस्वत

جَدْرًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقُضَ (سورة كهف: ८८)

अर्थ :- “दीवार जो गिरा चाहती थी” (सूरह कहफ़ - ७७) एक रिवायत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर यह कथन मन्सूब है कि “مُفَسِّمَاتِ أَمْرٍ” “मुकस्सिमाति अमरन” से मुग़द फ़रिश्ते हैं लेकिन यह रिवायत जैसा कि अल्लामा इब्ने कसीर ने स्पष्ट किया है, कमज़ोर हैं इस लिए प्रमाण के लायक नहीं (तप्सीर इब्ने-कसीर जिल्द ४ पृष्ठ २३२)

6. तात्पर्य क्रियामत का दिन है तथा वह दिन भी जो रसूल

को झुठलाने वाली जाति के लिए दुनिया में प्रकोप का दिन होगा।

7. ग़ौर किज़िए तो हवाओं के इस तरह चलने में अल्लाह की मारिफ़त अर्थात् उस की पहचान हासिल करने का सामान भी है और कर्मफल स्वरूप इनाम और दण्ड पर विश्वास पैदा करने का सामान भी। ये हवाएँ जब चलती हैं तो दिलों में अल्लाह का डर पैदा करती हैं कि खुदा से उदण्डता बरतने वालों के लिए अज़ाब का कोड़ा है और उस के नेक और वफ़ादार बन्दों के लिए रहमत है। इस से यह बात उभर कर सामने आती है कि कर्म फल के दिन इनाम और दण्ड का लागू होना बिलकुल सत्य और सुनिश्चित है।

8. मूल अरबी (Text حَبِک) में हुबुक शब्द प्रयुक्त हुआ है जो हबाक का बहुवचन है। हवाएँ पानी में जो लहरें पैदा करती हैं उन को हुबुक कहा जाता है। और इसी मुनासिबत से यह तह दर तह और विभिन्न रूपों में जाहिर होने वाले बादलों के लिए भी बोला जाता है। अरबी शायर इमरा-उल-कैस कहता है।

لها حَبِکَ کَانِهًا مِنْ وَصَائِلِ

अर्थ :- “उन पर तह दर तह बादल छाए हुए हैं जैसे कि धारीदार चादरें हैं।”

हवाएँ आसमान में बादलों को इस तरह बिखेरती हैं कि वे तह दर तह नज़र आने लगते हैं और उन की विभिन्न तरह की शक्लें बन जाती हैं। आसमान का यह दृश्य बड़ा चौंका देने वाला होता है और देखने वालों में ईश्वर का भय पैदा करता है और उन्हें सोचने तथा विचार करने का न्योता देता है। यह ईश भय इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य खुदा के समक्ष उत्तरदयी है और उस से उदण्डता बरत कर उस की पकड़ से बच नहीं सकता। अतः कुर्आन कर्म फल (अर्थात् इनाम और दण्ड) के दिन की जो ख़बर दे रहा है उस की पुष्टि भय उत्पन्न करने वाले बादलों से भी होती है।

9. अर्थात् कर्मफल के दिन का आना एक सच्ची वास्तविकता है किन्तु तुम उस का इन्कार कर के उलझन में पड़ गए हो। अतः अलग अलग लोग अलग अलग बातें कहते हैं। कोई कहता है कि कर्मफल में ईनाम और दण्ड की कोई हक्कीक़त नहीं। कोई कहता है कि ईनाम और दण्ड जो कुछ भी है इस दुनिया ही में है। कोई कहता है अगर मरने के बाद ईनाम और दण्ड का मामला सामने आ ही गया तो हमारे पूज्य हमारी सिफ़ारिश करेंगे और कोई पुनर्जन्म का दर्शन प्रस्तुत करने लगता है। विचारों एवं धारणाओं की यह भिन्नता इनाम और दण्ड की मूल वास्तविकता से इन्कार एवं विमुखता ही का परिणाम है। अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह काफ़ नोट ६।

10. अर्थात् ईनाम और दण्ड की वास्तविकता को मानने से वही लोग इन्कार करते हैं जिन की बुद्धि मारी गई है वरना

जो व्यक्ति भी अल्लाह की प्रदान की हुई बुद्धि से काम लेगा वह इस खुली हकीकत का इन्कार कर ही नहीं सकता। अल्लाह का गुमराही में भटका देने का नियम यह है कि जिस व्यक्ति के सामने सत्य प्रस्तुत किया जाता है और वह बुद्धि से काम लेने के बजाए इच्छाओं का दास बन कर इन्कार करता है उस का ध्यान सत्य की ओर से फेर दिया जाता है। फिर वह उस से विमुखता बरतता है।

11. मनुष्य अपने किये का फल पायेगा या नहीं? यह एक ऐसा मौलिक प्रश्न है जो मनुष्य के रवैये को निर्धारण करता है और इस पर उस की सफलता एवं असफलता का दारोमदार है। इस लिए इस का उत्तर ज्ञान के आधार पर प्रमाण, परीक्षण एवं अनुभव की रौशनी में मिलना आवश्यक है। अल्लाह तआला ने वह्य और रिसालत का सिलसिला जारी कर के इस का ज्ञान अर्थात् सही उत्तर प्रदान किया है और वह यह है कि मनुष्य एक ज़िम्मेदार तथा अल्लाह के समक्ष जवाबदेह सृष्टि है और कर्म फल स्वरूप इनाम अथवा दण्ड का मामला निश्चित रूप से पेश आएगा। और सफलता का दारोमदार इस बात पर है कि मनुष्य अल्लाह पर ईमान ला कर नेकी का रवैया अपनाए। इस सच्चे ज्ञान के समर्थन में अल्लाह तआला ने स्वयं मनुष्य के अपने अन्दर ऐसी निशानियाँ रखी हैं जो प्रमाण और परीक्षण की

हैसियत रखती हैं तथा उस की सही रहनुमाई करती हैं। इस टोस ज्ञान को छोड़ कर जीवन के इस महत्वपूर्ण मामले में अटकल के तीर चलाना और अन्दाज़ा झाड़ना इस के सिवा क्या है कि आदमी प्रकाश को छोड़ कर अंधकार में चलना पसंद करे। जो लोग ऐसा करते हैं वे अपने ही को विनाश के रास्ते पर डालते हैं। मनुष्यों कि बहुत बड़ी संख्या, धार्मिक वैमनस्य, अंधविश्वास, अंधी इच्छाओं और भौतिकता में ग्रस्त हो कर अंधकार में भटक रही हैं। पुनर्जन्म की धारणा हो या यह दावा हो कि “मृत्यु के बाद कोई जीवन नहीं”

या कर्म के बजाय सिफ़ारिश पर आश्रित रहने की धारणा हो। यह सब अटकल और अन्दाज़े की बातें हैं जो बुरे अन्जाम को पहुँचाने वाली हैं। ज्ञान की रौशनी वही है जो कुर्आन प्रदान करता है और वह सफलता की ज़मानत है।

12. अर्थात् वे भारी ग़फ़लत में पड़े हैं इस लिए उन्हें इस बात का कोई एहसास नहीं कि आगे क्या कुछ पेश आने वाला है।

13. उन का यह प्रश्न कि वह दिन कब आएगा जब आदमी अपने किये का फल पायेगा, क्रियामत का मज़ाक उड़ाने के लिए था। इस लिए इस का जवाब भी आगे तंबीही अन्दाज़ में दिया गया है।



चखो मज़ा अपने फिले का। यह वही चीज़ है जिस के लिए तुम जल्दी मचा रहे थे। निस्संदेह अल्लाह से डरने वाले बागों और खेतों में होंगे। उन के रब ने उन को जो कुछ प्रदान किया होगा उसे वे ले रहे होंगे। वे इस से पहले सुक़र्मी थे। वे रातों में कम ही सोते थे। और सहर (अरुणोदय) के समय में क्षमा याचना करते थे। और उन के धन में हक़ था सवाल करने वालों और महरूम के लिए। और ज़मीन में निशानियाँ है विश्वास करने वालों के लिए। (अल-कुअनि)

14. चखो मज़ा अपने फिले का ।¹⁴ यह वही चीज़ है जिस के लिए तुम जल्दी मचा रहे थे।

ذُوقُوا فِتْنَتَكُمْ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ﴿١٣﴾

15. निस्संदेह अल्लाह से डरने वाले¹⁵ बागों और खेतों में होंगे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٥﴾

16. उन के रब ने उन को जो कुछ प्रदान किया होगा उसे वे ले रहे होंगे।¹⁶ वे इस से पहले सुकर्मों थे।¹⁷

أَخْذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُحْسِنِينَ ﴿١٦﴾

17. वे रातों में कम ही सोते थे।¹⁸

كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ ﴿١٧﴾

18. और सहर (अरुणोदय) के समय में क्षमा याचना करते थे।¹⁹

وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿١٨﴾

19. और उन के धन में हक़ था सवाल करने वालों और महरूम के लिए ।²⁰

وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ﴿١٩﴾

20. और ज़मीन में बड़ी निशानियाँ हैं विश्वास करने वालों के लिए।²¹

وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُوقِنِينَ ﴿٢٠﴾

21. और खुद तुम्हारे अन्दर भी, क्या तुम देखते नहीं ?²²

وَفِي أَنْفُسِكُمْ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٢١﴾

22. और आसमान में तुम्हारा रिज़क़ भी है²³ और वह चीज़ भी जिस की वईद (चेतावनी) तुम को सुनाई जा रही है।²⁴

وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ﴿٢٢﴾

23. तो आसमान और ज़मीन के रब की क़सम, यह बात हक़ है²⁵ ऐसी ही सच्ची जैसे तुम बोल रहे हो।²⁶

قُورَبِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَا أَنَّكُمْ تَنْطُقُونَ ﴿٢٣﴾

24. क्या तुम्हें इब्राहीम के प्रतिष्ठित मेहमानों की बात पहुँची है ?²⁷

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ صَيْفِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ الْمُرَمِّمِ ﴿٢٤﴾

25. जब वे उस के पास आए तो उन्होंने ने कहा सलाम। उस ने कहा आप लोगों पर भी सलाम हो----अजनबी लोग हैं।

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ سَلَامٌ قَوْمٌ مُّنْكَرُونَ ﴿٢٥﴾

14. फ़ितने से मुराद बुराई है जिस में वे दुनिया में मुब्तिला थे। यह बुराई अज़ाब बन कर उन को अपनी जकड़बन्दी में लेगा।

15. “मुत्तकीन” (अल्लाह से डरने वालों) से तात्पर्य जैसा कि संदर्भ से स्पष्ट है वे लोग हैं जो बदले के दिन पर विश्वास रखते थे और अल्लाह की अवज्ञा से बचते हुए जीवन गुजारते थे।

16. अर्थात् अल्लाह की प्रदान की हुई सदा सर्वदा की नेमतों को वे हँसी खुशी स्वीकार कर रहे होंगे।

17. अर्थात् दुनिया में उन्होंने ने सुकर्म करते हुए जीवन बिताया। मोहसिन (सुकर्मी) वह है जो अल्लाह के आदेशों का न केवल अनुपालन करे बल्कि अच्छे ढंग से करे और उत्तम चरित्र का प्रमाण दे।

18. अर्थात् वे रात का अधिकांश भाग अल्लाह की इबादत में गुजारते थे। उन को अपने आराम से अधिक अल्लाह की इबादत प्रिय थी और क्रियामत का खटका उन्हें चैन की नींद सोने नहीं देता था। कुआन ने इस रतजगे को अभीष्ट आदर्श की हैसियत से प्रस्तुत कर दिया है ताकि जो व्यक्ति जितना उठना चाहे उठे लेकिन इस को अनिवार्य (वाजिब) नहीं किया अतः सूरह मुजम्मिल में इस की पुष्टि कर दी गई है।

अहनफ़ बिन कैस सहाबा में से थे वे स्वीकार करते थे कि ”لَسْتُ مِنْ أَهْلِ هَذِهِ الْآيَةِ“ (तफ़सीर तबरी जिल्द २६ पृष्ठ १२२)

19. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आले-इमरान नोट २३ और २४, सहर (अर्थात् अरूणोदय) का समय अल्लाह का सामीप्य प्राप्त करने के लिए उचित्तम समय है। हदीसे-कुदसी है।

أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَنْزِلُ رَبَّنَا تَبَارَكَ وَتَعَالَى كُلَّ لَيْلَةٍ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا حِينَ يَبْقَى ثُلُثُ اللَّيْلِ الْآخِرِ يَقُولُ: مَنْ يَدْعُونِي فَأَسْتَجِيبَ لَهُ مَنْ يَسْأَلُنِي فَأُعْطِيَهُ مَنْ يَسْتَغْفِرُنِي فَأَغْفِرَ لَهُ. (صحیح البخاری ابواب التَّجَدُّدِ)

अर्थ :- “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हमारा रब तबारक व तआला हर रात जब कि रात का तिहाई हिस्सा बाक़ी रह जाता है दुनिया के आसमान की तरफ़ उतरता है और फ़रमाता है : कोई है जो मुझे पुकारे तो मैं उस की पुकार का जवाब दूँ, कोई है मुझ से माँगे तो मैं उसे दूँ कोई है जो मुझ से क्षमा चाहे तो मैं उसे क्षमा कर दूँ।” (सही बुखारी अबवाबुतहज्जुद)

20. साइल अर्थात् सवाल करने वाला वह है जो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन की सहायता चाहे अगर

माँगने वाला हाजतमंद हो तो उस का हक़ समझ कर उस की मदद करना चाहिए। अगर वास्तव में वह हाजतमंद नहीं हो तो उस की कोई ज़िम्मेदारी सदका देने वाले पर नहीं आती। रहे वे भिखारी जो स्वस्थ होने के बावजूद भीख माँगने को पेशा बना लेते हैं और अतिरिक्त यह कि ग़ैरुल्लाह के नाम पर भीख माँग कर शिर्क का प्रचार करते हैं वो हरगिज़ सदका और ख़ैरात के पात्र नहीं हैं। हदीस में आता है :-

مَا يَزَالُ الرَّجُلُ يَسْأَلُ النَّاسَ حَتَّى يَأْتِيَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَيْسَ فِي وَجْهِهِ مِرْعَةٌ لَحْمٍ. (صحیح بخاری کتاب الزَّكَاةِ)

अर्थ :- “आदमी लोगों से माँगता रहता है यहाँ तक कि जब वह क्रियामत के दिन हाज़िर होगा तो उस के चेहरे पर गोश्त का टुकड़ा न होगा।” (सही बुखारी किताबुज्जकात)

और महरूम वे लोग हैं जो अपनी किसी विवशता या हालात की प्रतिकूलता या किसी मुसीबत में फँस जाने के कारण अपनी गुज़र बसर का सामान न पाते हों और अपनी खुददारी के चलते किसी से कुछ माँगते भी न हों। ऐसे लोग वास्तव में सहायता के योग्य पात्र हैं। कुआन ने विशेष रूप से इन का ज़िक्र कर के इस बात की ओर ध्यानाकर्षित किया है जिन को अल्लाह तआला ने धन से सम्पन्न किया है उन की यह ज़िम्मेदारी है कि ऐसे परेशान हाल लोगों को चिन्ह कर के उन की सहायता करे जब कि उन्होंने ने माँगना गवारा न किया हो।

आयत से यह भी स्पष्ट है कि सोसाइटी के हाजतमंद लोगों की सहायता धनवानों की ओर से कोई एहसान नहीं बल्कि यह उन लोगों का उन के माल में हक़ है जिस की अदायगी उन पर वाजिब है।

यह सूरह मक्की है और ज़कात के विस्तृत आदेश मदनी दौर में दिये गए। इस से यह बात स्पष्ट होती है कि यह हक़ तफ़सीलात के बग़ैर भी एक सामान्य अधिकार था और इस का अदा करना ईमान वालों की विशेषता है।

21. ज़मीन में अल्लाह की कुदरत, उस की ईश्वरत्व, उस की पालनहारी, और उस के ज्ञान और हिक़मत की निशानियाँ बिलकुल स्पष्ट हैं और अल्लाह के इन गुणों पर ग़ौर करने से उस के बारे में जो धारणा बनती है वह यह है कि वह भलाई और बुराई में अन्तर करने वाला तथा न्याय करने वाला है। उस ने अपनी सृष्टि को एक उद्देश्य के साथ पैदा किया है। इस से इस बात का विश्वास पैदा हो जाता है कि मनुष्य अल्लाह के समक्ष उत्तरदायी है और अपने कर्मानुसार उसे इनाम या दण्ड पाना है।

मौजूदा दौर में भूगोल अथवा भू-विज्ञान (Geology) ने

ज़मीन की बनावट, उस की तहों, उस की परत, उस के अन्दर के लावे, उस में पायी जाने वाली धातुएँ, उस का आकर्षण और उस के घूमने आदि के बारे में बुद्धि को अचम्भे में डालने वाले रहस्योद्घाटन किये हैं। यह सारा आयोजन इस लिए है कि मनुष्य ज़मीन (पृथ्वी) पर आबाद हो। तो क्या जिस को ज़मीन पर आबाद करने के लिए इतनी तैयारी की गई है उस का जीवन निरुद्देश्य हो सकता है ? और क्या वह हस्ती जिस ने मानव को पृथ्वी पर बसाने के लिए यह सारा आयोजन किया है और विवेक एवं बुद्धि रखने वाली सृष्टि बनाया है उसे वह यूँ ही छोड़ देगा और उस के अच्छे और बुरे क्रम में कोई अन्तर न करेगा ? इन बातों पर जो व्यक्ति भी कुर्आन की रौशनी में गौर करेगा उसे अल्लाह की ईश्वरत्व उस की पालनहारी और फिर उस की तरफ से मिलने वाले इनाम और दण्ड का विश्वास ज़रूर पैदा होगा।

ज़मीन पर भूकम्प के झटके सोने वालों को जगा देते हैं और उन में भय और आतंक पैदा कर के इस बात की चेतवनी देते हैं कि इस कायनात का रब अज़ाब का कोड़ा बरसा सकता है। उस की तरफ से बेपरवाह न हो जाओ बल्कि उस से डरते रहो। ऐसी खुली निशानियों के देखने के बाद यह कहना कि खुदा को कर्मफल स्वरूप इनाम और दण्ड से कोई सरोकार नहीं और मनुष्य उस से विमुख हो कर अपनी मनमानी करने के लिए आज़ाद है कितनी ग़लत, अन्यायपूर्ण अनुचित सत्य के विरुद्ध बात है।

22. मानव स्वभाव भलाई और बुराई में अन्तर करता है। उस की आत्मा बुराई पर भर्त्सना करती है और भलाई पर संतोष करती है। गोया एक तरह की अदालत उस की अपनी आत्मा में ही मौजूद है। इस तरह उस की अन्तरात्मा पुकार कर कहती है कि अपने रब से डरो। क्या यह इस बात की स्पष्ट निशानी नहीं है कि नाफ़रमानों पर अल्लाह के प्रकोप का कोड़ा बरस सकता है और क्या यह इस बात का सबूत नहीं है कि अल्लाह अपने बन्दों के साथ उन के रवैये के अनुरूप फ़ैसला करेगा ?

23. अर्थात् बारिश जिस से पीने के लिए पानी भी मुहैया हो जाता है और खाने के लिए ग़ल्ले फल और वनस्पति भी प्राप्त हो जाती हैं।

24. अर्थात् अज़ाब (प्रकोप) जो बिजली, कड़क, तूफ़ान आदि के रूप में तुम पर अवतरित हो सकता है। आसमान में रहमत की बारिश भी है और अज़ाब का कोड़ा भी, जिस से अल्लाह के दोनों गुण प्रकट होते हैं अर्थात् वह दयावान भी है

और कड़ा दण्ड देने वाला भी। इस बात का तक्राज़ा यह है कि वह एक ऐसा दिन लाए जब वह अपने नेक बन्दों पर अपनी दया न्योछावर करे और उद्दण्डों को कड़ा दण्ड दे।

25. यहाँ बात को पूरी दृढ़ता और ताक़ीद के साथ प्रस्तुत करने के लिए क्रसम खाई गई है। मतलब यह है कि आसमान और ज़मीन की ये निशानियाँ जो ऊपर पेश की गई वास्तविक प्रभु (रब) का विश्वास पैदा करती हैं और साथ ही इस बात का विश्वास भी कि इनाम और दण्ड का मामला बिलकुल सत्य है।

26. मनुष्य जब बोलता है तो उसे पूरा पूरा विश्वास होता है कि यह मेरी आत्मा ही बोल रही है और उसे इस में कोई शक नहीं रह जाता, ठीक इसी तरह कर्म फल (इनाम और दण्ड) का मामला भी शक और संदेह से परे बिलकुल सत्य है।

27. यह घटना सूरह हूद और सूरह हिज़्र में विस्तार से बयान हुई है। वहाँ उन बातों की व्याख्या भी की जा चुकी है जिन की व्याख्या करना आवश्यक था। देखिए सूरह हूद नोट ९६ से १०४ और सूरह हिज़्र नोट ४९ से ५५

ये प्रतिष्ठित मेहमान फ़रिश्ते थे जो मानव रूप में आए थे और जिन के व्यक्तित्व से गरिमा और गंभीरता झलक रही थी। अल्लाह तआला ने उन को इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास इस लिए भेजा था कि वे उन्हें बुढ़ापे में एक ऐसे बेटे की खुशखबरी दे दें जो ज्ञानवान होगा और जिसे नुबुव्वत प्रदान की जाएगी और जिस से एक ऐसी नस्ल अस्तित्व में आएगी जिस को दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) हासिल होगी। और जिस के महत्वपूर्ण कारनामे इतिहास रचेंगे। यह अल्लाह तआला का बहुत बड़ा इनाम था जो उस ने दुनिया में हज़रत इब्राहीम को प्रदान किया। यह इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह अपने बन्दों को उन की नेकी की बदौलत नवाज़ता है। इसी तरह आगे हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की जाति पर अज़ाब के नाज़िल होने की जो घटना बयान की गई है वह इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह कुफ़्र और सरकशी करने वालों को इस दुनिया में भी कड़े दण्ड देता है। और जब दुनिया में रहमत और अज़ाब, दया और प्रकोप दोनों का अवतरण होता रहता है तो फिर कर्म को निष्फल कैसे कहा जा सकता है और क्रियामत के दिन के इनाम और दण्ड से इन्कार कैसे किया जा सकता है ? सारांश यह कि इनाम और दण्ड का विश्वास पैदा करने के लिए यहाँ दोनों तरह की वास्तविकताएँ सामने रखी गई हैं।

फिर वह चुपके से घर वालों के पास गया और एक स्वस्थ बछड़ा (का भुना हुआ गोश्त) लाया। और उस को उन के सामने पेश किया। और कहा खाते नहीं ? (और यह देख कर कि वे खाते नहीं) उस ने अन्देशा महसूस किया। उन्होंने ने कहा डरये नहीं । और उसे एक ज्ञानवान बटे की खुशखबरी दी । यह सुन कर उस की पत्नी चीखती हुई आगे बढ़ी। उस ने अपना मुँह पीट लिया और कहा बुढ़िया बाँझ। उन्होंने ने कहा ऐसा ही फ़रमाया है तेरे रब ने। वह हिकमत वाला और ज्ञान वाला है। इब्राहीम ने पूछा ऐ दूतों ! तुम्हारे सामने क्या मुहिम है । (अल-कुर्आन)

26. फिर वह चुपके से घर वालों के पास गया और एक स्वस्थ बछड़ा (का भुना हुआ गोश्त) लाया।²⁸

فَوَاعَرَ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ﴿٢٦﴾

27. और उस को उन के सामने पेश किया। और कहा खाते नहीं !

فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٢٧﴾

28. (और यह देख कर कि वे खाते नहीं) उस ने अन्देशा महसूस किया।²⁹ उन्होंने ने कहा डरये नहीं। और उसे एक ज्ञानवान बटे की खुशखबरी दी।³⁰

فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً قَالُوا لَا تَحْزَنْ وَبَشِّرْهُ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ﴿٢٨﴾

29. यह सुन कर उस की पत्नी³¹ चीखती हुई आगे बढ़ी। उस ने अपना मुँह पीट लिया³² और कहा बुढ़िया बाँझ।

فَأَقْبَلَتْ امْرَأَتُهُ فِي صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ ﴿٢٩﴾

30. उन्होंने ने कहा ऐसा ही फ़रमाया है तेरे रब ने।³³ वह हिकमत वाला और ज्ञान वाला है।

قَالُوا كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٣٠﴾

31. इब्राहीम ने पूछा ऐ दूतों ! तुम्हारे सामने क्या मुहिम है।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣١﴾

32. उन्होंने ने कहा हम एक अपराधी जाति की तरफ़ भेजे गए हैं।³⁴

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾

33. ताकि उन के ऊपर पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसाएँ।³⁵

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ جَارَءًا مِنْ طِينٍ ﴿٣٣﴾

34. जो आप के रब के पास, हद से गुज़र जाने वालों के लिए निशानजद हैं।³⁶

مَسْؤَمَةٌ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿٣٤﴾

35. फिर हम ने मोमिनों को वहाँ से निकाल दिया।³⁷

فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٥﴾

36. और वहाँ हम ने एक घर के सिवा मुसलमानों का कोई घर न पाया।³⁸

فَمَا وَجَدْنَا فِيهِ غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٦﴾

37. और हम ने वहाँ एक निशानी छोड़ दी उन लोगों के लिए जो दुखदायिनी यातना से डरते हैं।³⁹

وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٣٧﴾

28. इस आयत के अन्तर्गत अतिथि सत्कार (मेहमान नवाजी) के आदाब भी स्पष्ट हुए। सत्कार का सामान इस तरह किया जाए कि मेहमान को इस की खबर न होने पाए और खातिर करने में कोई कमी न बरती जाए बल्कि विशाल हृदय और अच्छे आचरण का सबूत दिया जाए। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का स्वस्थ बछड़े को भून कर लाना और मेहमानों के सामने प्रचुर मात्रा में सत्कार सामग्री पेश करना उन के करुणा हृदय होने तथा उन की दानशीलता पर प्रमाण प्रस्तुत करता है।

29. इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने समझ लिया के ये इन्सान नहीं बल्कि फ़रिश्ते हैं। और फ़रिश्तों का मानव रूप में आना किसी खास उद्देश्य के लिए ही हो सकता है इस लिए वे डरे कि मालूम नहीं मामला क्या है।

30. यह हज़रत इस्हाक़ की पैदाइश की खुशख़बरी थी।

31. अर्थात् हज़रत सारा।

32. अर्थात् आश्चर्य से। यह हज़रत सारा की नारीत्वता थी।

33. अर्थात् बुढ़िया बाँझ होने के बावजूद लड़का पैदा होगा।

34. अर्थात् लूत की जाति की तरफ़। व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट १०५ से १२१ और सूरह हिज़्र नोट ५६ से ७४

35. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट ११९

36. अर्थात् यह बात भी अल्लाह तआला की तरफ़ से तय है कि कौन सा पत्थर किस को लगेगा और उस के विनाश का कारण बनेगा।

37. अर्थात् अज़ाब आने से पहले ही अल्लाह ने ईमान वालों को उस बस्ती से सही सलामत निकाल लिया।

38. अर्थात् उस बस्ती में मुसलमानों का केवल एक घर था और वह था हज़रत लूत का। उन के परिवार के लोगों के सिवा किसी ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया था।

हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की दअवती और इस्लाही कोशिशों का यह नतीजा कि केवल उन का अपना घर ही मुसलमानों का घर बन सका, दअवत और इस्लाह अर्थात् इस्लाम के प्रचार तथा सुधार का काम करने वालों को सोचने तथा विचार करने का न्योता देता है, बावजूद इस के कि दअवत और इस्लाह का काम कितने ही उत्तम ढंग से अन्जाम दिया गया हो और इस काम को अन्जाम देने वाली उच्च आचरण से सुसज्जित नबी की हस्ती ही क्यों न हो, ज़रूरी नहीं कि लोग दअवत स्वीकार कर के अपना सुधार कर लें। बहुत कम लोगों को सत्य स्वीकारने की तौफ़ीक़ नसीब हो सकती है। अतः फल को अल्लाह पर छोड़ कर अपना कर्तव्य पूरा करने की पूरी कोशिश करना चाहिए।

39. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट १२१



38. और मूसा के वृत्तांत में भी निशानी है।⁴⁰ जब हम ने उसे फ़िरऔन के पास खुले स्पष्ट प्रमाण के साथ भेजा।

وَفِي مُوسَى إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝٣٨

39. तो उस ने अपनी ताक़त के घमण्ड में मुँह मोड़ा और कहा यह जादूगर है या दीवाना।

فَتَوَلَّىٰ بُرْكَانَهُ وَقَالَ سِحْرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ۝٣٩

40. आख़िरकार हम ने उस को और उस के लश्करों को पकड़ा और उन को समुद्र में फेंक दिया इस हाल में कि वह अपने को (निन्दा हेतु) बुरा कह रहा था।⁴¹

فَأَخَذْنَاهُ وَجُودًا فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُمْ مِلْمٌ ۝٤٠

41. और आद के वृत्तांत में भी निशानी है⁴² जब की हम ने उन पर शुष्क हवा भेज दी।

وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ۝٤١

42. वह जिस चीज़ पर से भी गुज़री उसे बोसीदा कर के रख दिया।⁴³

مَا تَذُرُ مِن شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلْنَاهُ كَالرَّمِيمِ ۝٤٢

43. और समूद के वृत्तांत में भी निशानी है⁴⁴ जब उन से कहा गया है कि एक समय तक लाभ उठा लो।⁴⁵

وَفِي ثُودٍ إِذْ قِيلَ لَهُمُ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ۝٤٣

44. परन्तु उन्होंने अपने रब के आदेश की अवज्ञा की, तो उन को कड़क ने आ लिया और वे देखते ही रह गए।⁴⁶

فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الصُّعْقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۝٤٤

45. फिर न वे उठ सके और न अपना बचाव कर सके।

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُنْتَصِرِينَ ۝٤٥

46. और नूह की जाति⁴⁷ को भी हम ने उन से पहले पकड़ा। वे भी अवज्ञाकारी लोग थे।

وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَسِيقِينَ ۝٤٦

47. और आसमान को हम ने कुदरत से बनाया और हम बड़ी विशालता रखने वाले हैं।⁴⁸

وَالسَّمَاءَ بَيْنَهُمَا يَبْدِ وَ إِنَّا الْمُبْسِعُونَ ۝٤٧

48. और ज़मीन को हम ने बिछाया तो क्या ख़ूब बिछाने वाले हैं।⁴⁹

وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمُهْدُونَ ۝٤٨

49. और हर चीज़ के हम ने जोड़े पैदा किये ताकि तुम याददेहानी (नसीहत) हासिल करो।⁵⁰

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝٤٩

40. अब संक्षेप में फिरऔन, आद, समूद और नूह की उद्दण्ड जातियों के इबरतनाक अन्जाम की ओर ध्यानकर्षित किया जा रहा है। ये वृत्तांत इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि अल्लाह तआला अपने बन्दों के हाल से बेखबर नहीं है। उद्दण्ड जातियों पर उस के प्रकोप का कोड़ा निरंतर बरस्ता रहा है।

41. अर्थात् उस ने जो अन्यायपूर्ण विद्रोही रवैया अपनाया था उस का एहसास उसे मौत के समय हुआ। इस कारण वह स्वयं अपनी भर्त्सना तथा अपनी निन्दा में अपने ही को बुरा कहने लगा।

फिरऔन के डूब जाने की तफ़सील सूरह यूनुस और सूरह ताहा में विस्तार के साथ बयान हुई है।

42. आद के विनष्ट होने का वृत्तांत सूरह अहक्राफ़ में अधिक स्पष्ट रूप से बयान हुआ है।

43. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अहक्राफ़ नोट ४१ और ४२।

44. समूद की तबाही का वृत्तांत सूरह हूद और अन्य कई सूरतों में बयान हुआ है।

45. अर्थात् सांसारिक लाभ थोड़े दिनों के लिए है अतः इसे लक्ष्य न बनाओ और आखिरत (परलोक) पर इसे वरीयता मत दो। आखिरत को लक्ष्य बनाकर दुनिया का जितना लाभ प्राप्त किया जा सकता है उतना ही प्राप्त करो।

46. अर्थात् उन की नज़रों के सामने उन को कड़क ने आ लिया और वे स्तब्ध रह गए। व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १२३

47. नूह अलैहिस्सलाम की जाति के विनाश का वृत्तांत सूरह हूद में विस्तार से बयान हुआ है।

48. ये सूरह की अन्तिम आयतें हैं जिस में याददेहानी के अन्दाज़ में तौहीद, आखिरत और रिसालत को एक पिरोई हुई लड़ी के रूप में प्रस्तुत कर दिया गया है क्योंकि अल्लाह के सही परिचय से इनाम और दण्ड का तक्राज़ा उभरता है और इस के तक्राज़े को पूरा करने के लिए रिसलात (ईशदूतत्व) ज़रूरी है।

आसमान को देखने से अल्लाह की विशाल कुदरत का

अन्दाज़ा होता है और इस की अनुभूति खुलि आँखों से की जा सकती है। लेकिन मौजूदा दौर में विज्ञान ने शक्तिशाली दूरबीनों की सहायता से जो रहस्योद्घाटन किये हैं वह आसमानी जगत की विशालता का आश्चर्यजनक चित्रण प्रस्तुत करती हैं। अरबों सितारों का होना, आकाशगंगाओं (Galaxies) की व्यवस्था और बड़ी बड़ी असंख्या आकाशगंगाएँ इतनी बुलन्दी पर सितारे जिन की रौशनी कई प्रकाश वर्ष (Light Year) में ज़मीन पर पहुँचती है और इन सब मालूमात के बाद खगोलशास्त्रियों का यह मान लेना कि इस कायनात के अन्तिम छोर का हमें ज्ञान नहीं और यह बराबर फैलती (Expand) जा रही है इस आयत की सत्यता का स्पष्ट प्रमाण है। और इस से अल्लाह की बेपनाह कुदरत का अन्दाज़ा होता है।

फिर जो खुदा इतनी अथाह कुदरत रखता हो वह एक ऐसा जगत क्यों नहीं बरपा कर सकता जिस में सारे इन्सानों को ज़िन्दा कर के उन के कर्मों का बदला उन्हें दिया जाए।

49. ज़मीन को अल्लाह तआला ने इस तरह बिछा दिया है कि इस पर अरबों इन्सान सुकून से रह सकते हैं। इस की सतह को इस खूबी से फैला दिया है कि इस पर चलना फिरना बहुत आसान हो गया। भूगोल की दृष्टि से देखें तो पृथ्वी की अक्षरेखा लगभग तीस हजार मील और इस की सतह लगभग पचास करोड़ किलोमीटर है। इस से इस की विशालता का अन्दाज़ा अच्छी तरह हो जाता है मगर इन्सान की तंग नज़री का हाल यह है कि वह खुदा की कुदरत को सीमित समझकर आखिरत का इन्कारी बनता है।

50. व्याख्या के लिए देखिए सूरह यासीन नोट ३९, ४०, ४१, ४२

दुनिया में जब हर चीज़ के जोड़े हैं और वह अपनी पूर्ति अपने जोड़े से मिल कर करती है तो दुनिया का भी जोड़ होना चाहिए और कुर्आन बतलाता है कि इस का जोड़ आखिरत है (अर्थात् लोक का जोड़ परलोक) और आखिरत से मिल कर ही दुनिया की पूर्ति होती है वरना दुनिया का आस्तित्व अधूरा, निरुद्देश्य और निरर्थक हो कर रह जाता है।

50. तो अल्लाह की तरफ़ दौड़ो।⁵¹ मैं उस की तरफ़ से तुम्हारे लिए खुला ख़बरदार करने वाला हूँ।⁵²

فَفِرُّوْا اِلَى اللّٰهِ اِنِّىْ لَكُمْ مِنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝۵۰

51. और अल्लाह के साथ कोई दूसरा उपास्य न ठहराओ। मैं उस की तरफ़ से तुम्हारे लिए खुला ख़बरदार करने वाला हूँ।⁵³

وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ اِنِّىْ لَكُمْ مِنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝۵۱

52. इसी प्रकार इन से पहले गुज़री हुई जातियों के पास जो रसूल भी आया उस को उन्होंने ने जादूगर या दिवाना ही कहा।⁵⁴

كَذٰلِكَ مَا اَتٰى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رّٰسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سٰحِرٌ اَوْ مُّجْنُوْنٌ ۝۵۲

53. क्या वे एक दूसरे को इस की वसीयत कर गए हैं ? वास्तव में ये उद्दण्ड लोग हैं।⁵⁵

اَتَوٰصَوٰىهِ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طٰغُوْنَ ۝۵۳

54. अतः तुम इन से रुख़ फेर लो। तुम पर कोई आरोप नहीं।⁵⁶

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَا اَنْتَ بِسٰوِمٍ ۝۵۴

55. और नसीहत करते रहो क्योंकि नसीहत ईमान लाने वालों को लाभ पहुँचाती है।⁵⁷

وَذَكِّرْ فَاِنَّ الدّٰكِرَ لَيُفْعَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝۵۵

56. मैं ने जिन्नों और इन्सानों को केवल इस लिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें।⁵⁸

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓنِ ۝۵۶

57. मैं न उन से रोज़ी चाहता हूँ और न यह चाहता हूँ कि वे मुझे खिलाएँ।⁵⁹

مَا اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِنْ رِّزْقٍ وَمَا اُرِيْدُ اَنْ يُطْعِمُوْٓنِ ۝۵۷

58. निस्संदेह अल्लाह ही रोज़ी देने वाला, शक्तिमान, बलिष्ठ है।⁶⁰

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزّٰقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ۝۵۸

59. अतः इन ज़ालिमों के लिए वैसा ही पैमाना है जैसा उन ही जैसे लोगों के लिए था।⁶¹ तो ये जल्दी न मचाएँ।

فَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا ذُنُوْبًا مِّثْلَ ذُنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ۝۵۹

60. इन काफ़िरों के लिए उस दिन तबाही है जिस का इन से वादा किया जा रहा है।⁶²

قَوْلٍ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ۝۶۰

51. यह और इस के बाद की दो आयतें अल्लाह ही का कलाम हैं मगर इन को इस शैली में रखा गया है कि उत्तम पुरुष (वाचक) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। ताकि ये कलिमे रसूल की ज़बान से अदा हों और स्पष्ट हो जाए कि रसूल का मिशन क्या है।

यहाँ संक्षेप में अल्लाह की तरफ़ दौड़ने और लपकने की दअवत दी गई है जिस का मतलब यह है कि अल्लाह की तरफ़ न केवल बढ़ो बल्कि तेज़ी के साथ बढ़ो कि उस को पा लेना अपने सच्चे मालिक को पा लेना और अपनी अभीष्ट मन्ज़िल को पहुँच जाना है। अल्लाह की तरफ़ लपकने में उस के साथ भावनात्मक लगाव भी व्यक्त हो रहा है और इस में आशाओं का एक संसार बसा हुआ है।

52. अर्थात् मुझे अल्लाह तआला ने इस लिए भेजा है ताकि मैं तुम्हें क्रियामत के दिन से ख़बरदार करूँ कि उस दिन क्या कुछ पेश आने वाला है। ताकि तुम चौंक जाओ और अपना रवैया अल्लाह के साथ दुरुस्त कर लो।

53. अर्थात् मैं तुम्हें शिर्क के बुरे अन्जाम से खुले तौर पर ख़बरदार करता हूँ। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस तंबीह के बावजूद जो लोग बुत परस्ती और शिर्क में लिप्त रहेंगे वे क्रियामत के दिन अज़ाब को देखकर यह न कह सकेंगे कि हमें इस के बुरे अन्जाम से ख़बरदार नहीं किया गया था।

54. अर्थात् जिस तरह इस रसूल को दीवाना या जादूगर कहा जा रहा है उसी प्रकार इस से पहले भी रसूलों को यही कुछ कहा जाता रहा है।

पैग़म्बर की बातें चूँकि वह्य (अल्लाह की प्रकाशना) के आधार पर होती हैं जिस की व्याख्या इन्कारी लोग इस तरह करते हैं कि यह जादू मंत्र है जिस से वह लोगों को प्रभावित कर रहा है। परन्तु वे नहीं सोचते कि जादूगर के बस में कहाँ कि वह दिल में उतर जाने वाली वास्तविकताएँ बयान करे और लोगों की जिन्दगियों को संवारे।

इसी प्रकार इन्कारी लोग पैग़म्बर के इस दावे की कि उस पर आसमान से वह्य नाज़िल होती है यह अर्थ बताते हैं कि यह दीवानापन है। परन्तु वे यह सोचने का कष्ट नहीं करते कि क्या कोई दीवाना तत्वपूर्ण बातें भी कर सकता है और मानव जीवन के लिए एक चिन्तन और कर्म की व्यवस्था भी दे सकता है?

55. अर्थात् जातियों की तरफ़ से रसूलों को जादूगर या दीवाना कह कर ठुकराने का यह क्रम ऐसा है कि गोया प्रत्येक जाति अपने बाद आने वाली जाति को यह वसीयत कर गई कि जब तुम्हारे पास कोई रसूल आए तो उसे जादूगर या दीवाना कह कर ठुकरा दो और सच्ची बात यह है कि ये सब उद्दण्ड जातियाँ रही हैं और इस रसूल के विरोधी भी उद्दण्ड हैं। इन की यह

उद्दण्डता ही है जो रसूल को रसूल स्वीकारने पर इन्हें आमादा नहीं करती और असत्य अथवा सत्य के विरुद्ध बातें कहने पर इन्हें उकसाती हैं।

56. अर्थात् ऐ पैग़म्बर ! तुम ने हुज्जत क़ायम कर दी अर्थात् तर्क पूर्ण रूप से स्पष्ट कर दिया। अब अगर ये लोग अपनी उद्दण्डता से बाज़ नहीं आना चाहते तो इन को इन के हाल पर छोड़ दो। तुम अपना फ़र्ज़ अदा कर चुके। अब तुम पर कोई आलोचना नहीं।

57. उद्दण्ड लोगों से उन पर हुज्जत क़ायम हो जाने के बाद उन्हें छोड़ देने का मतलब यह नहीं है कि याददेहानी और नसीहत का काम समेट दिया जाए। नहीं, बल्कि याददेहानी और नसीहत का काम जारी रखना चाहिए कि यह ईमान लाने वालों के हित में लाभदायक होता है और वे नसीहत ग्रहण करते हैं। मतलब यह है कि अब इन उद्दण्डों को समझाने की कोशिश तो बेफ़ायदा है अलबत्ता सार्वजनिक रूप से याददेहानी और नसीहत का काम जारी रखना चाहिए और इस से हाथ नहीं खींचना चाहिए चाहे हालात कैसे ही विपरीत अथवा प्रतिकूल हों। क्यों कि ऐसे लोग भी हो सकते हैं जो इस के सदगुणों से प्रभावित हों। दअवत और नसीहत का काम करने वालों के लिए यह हिदायत बड़ी महत्वपूर्ण है।

58. इबादत की व्याख्या सूरह कहफ़ नोट १२५ में की जा चुकी है। इस अवसर पर उस नोट को तथा सूरह हूद नोट ५ को भी सामने रखा जाए।

कुर्आन ने इबादत का शब्द परस्तिश (उपासना) के अर्थ में इतनी अधिकता के साथ इस्तेमाल किया है कि इस का उभरा हुआ भावार्थ परस्तिश (उपासना) ही क्रार पाता है। अतः बुत परस्ती के लिए कुर्आन में इबादत का शब्द ही प्रयुक्त किया गया है जो ज़ाहिर है परस्तिश ही के अर्थ में है। और जहाँ तक शब्द कोष का सम्बन्ध है अरबी की प्रसिद्ध और प्रमाणिक शब्द कोष में इस के अर्थ इस तरह बयान किए गए हैं।

واصل العبودية الخضوع والتذلل و
عَبَدَ اللَّهُ يَعْبُدُهُ عِبَادَةٌ..... تَأَلَّهُ لَهُ.

अर्थ :- “इबादत का मूल भाव विनम्र, निम्न एवं तुच्छता का भाव है।” “उस ने अल्लाह की इबादत की, अर्थात् उस को इलाह (पूज्य) बनाया।”

والتَّعَبُّدُ التَّنَسُّكُ. قَالَ (الفراء) وَمَعْنَى الْعِبَادَةِ فِي
اللُّغَةِ الطَّاعَةِ مَعَ التَّخَضُّوعِ (لسان العرب ج ३ ص २८२-२८३)

अर्थ :- “तअब्बुद अर्थात् उपासना कर्मों की अदायगी” फरा कहते हैं कि शब्दकोष में इबादत का अर्थ खुजू (अर्थात्

विनम्रभाव अर्थात् झुकने का भाव) के साथ आज्ञापालन करने के हैं (लिसानुल अरब जिल्द ३ पृष्ठ २७२, २७३)

इस से यह बात स्पष्ट होती है कि शब्दकोष वालों ने अगर इबादत का अर्थ आज्ञापालन बयान किया है तो उस के साथ झुकने तथा विनीत होने (अर्थात् खुजू) की कैद भी लगाई है। मतलब ऐसा अनुपालन जिस में दिल पूज्य के प्रति पूरी तरह विनीत भाव से ग्रस्त तथा झुका हुआ हो। स्पष्ट है ऐसा अनुपालन अल्लाह के लिए ही खास हो सकता है और यह परस्तिश के मूल भावार्थ में शामिल है। परन्तु परस्तिश इबादत का पहला भावार्थ है और अल्लाह से सम्बन्ध जोड़ने का यह आरम्भिक बिन्दु है। और यदि आरम्भ ही सही न हो तो कोई बात भी सही नहीं हो सकती। इस लिए दीन में परस्तिश को प्राथमिकता दी गई और नबियों के आह्वान का केन्द्र बिन्दु यही रहा है।

أَعْبُدُ اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ (سورة ५०)

अर्थ :- “अल्लाह की परस्तिश करो उस के सिवा तुम्हारा कोई उपास्य नहीं।” (हूद - ५०)

यह आयत जिस की तफ्सीर चल रही है, इस में जिन्नों और इन्सानों की पैदाइश का मक़सद यह बयान किया गया है कि वे अल्लाह की इबादत करें, इस से निम्न लिखित बातों पर प्रकाश पड़ता है।

एक यह कि जब इन्सानों और जिन्नों की पैदाइश अल्लाह की इबादत के लिए हुई है तो न जिन्नों को माबूद (पूज्य) बनाना सही है और न इन्सानों को। वे कदापि इबादत के लायक और अधिकारी नहीं हैं इस लिए उन की पूजा ग़लत है।

दूसरे यह कि अगर कोई अपने असली सृष्टा अल्लाह की पूजा नहीं करता या उस के साथ ग़ैरुल्लाह को परस्तिश में शरीक करता है चाहे वह बुत हो या फ़रिशता या मन गढ़त खुदा (अर्थात् देवी देवता) या बुजुर्ग इन्सान, वह अपने पैदाइशी मक़सद से विमुखता बरतता है इस लिए उस का पूरा अस्तित्व निरर्थक एवं निरुद्देश्य हो कर रह जाता है। और जब लकड़ी बेकार हो जाती है जो जलाने के काम आती है। इसी प्रकार जो लोग अपने पैदाइशी मक़सद को नज़रंदाज़ कर के अपने अस्तित्व को निरर्थक एवं निरुद्देश्य बना लेते हैं वे अपने को जहन्नम का पात्र बना लेते हैं।

तीसरे यह कि अल्लाह की इबादत करना बन्दों पर अल्लाह का आयद किया हुआ अनिवार्य कर्तव्य है अतः इसे अपनी ड्युटी समझ कर अन्जाम देना चाहिए। अगर कोई व्यक्ति यह कहता है कि मेरे पास अल्लाह की इबादत के लिए समय नहीं है या नमाज़ के लिए फुर्सत नहीं है तो वह महा मुर्खता का

परिचय देता है। उसे न अपने कर्तव्यों का एहसास है और न इबादत से लगावा। वह समझता है कि मैं खाने और कमाने के लिए ही पैदा हुआ हूँ इस लिए वह इन्सान नहीं बल्कि कमाई करने का पशु बन कर रह जाता है। और जब मनुष्य में यह गिरावट आ जाती है तो कामयाबी और मुक्ति के दरवाज़े उस पर बन्द हो जाते हैं।

चौथे यह कि जब अल्लाह की इबादत आदमी का पैदाइशी मक़सद है तो उस के साथ गहरा हार्दिक लगाव आवश्यक है। नमाज़ अल्लाह की याद, तस्बीह, गुणगान, उस की प्रशंसा, कुर्आन की तिलावत और उस में चिन्तन और अन्य इबादत के कामों का आयोजन तथा उन में रुचि पैदाइश के मक़सद को पूरा करना है।

पाँचवे यह कि अल्लाह का उपासक तथा उस का भक्त उस के अनुपालन का इन्कारी हो ही नहीं सकता क्योंकि अल्लाह के अनुपालन से इन्कार उद्दण्डता है। एक तरफ़ अल्लाह के आगे झुकना और दूसरी तरफ़ झुकने से इन्कार दो विपरीत बातें हैं जो परस्तिश को निरर्थक बनाती हैं। ऊपर की आयतों में उद्दण्डों का जिस तरह वर्णन हुआ है उस पर एक निगाह डाल लीजिए। और यह बात भी सामने रहे कि इब्लीस ने अल्लाह की परस्तिश से इन्कार नहीं किया था बल्कि उस की आज्ञा मानने से इन्कार किया था। जिस के चलते वह धिक्कारा गया।

59. अल्लाह बेनियाज़ है। उस को किसी भी चीज़ की हाज़त नहीं है। और न उस का मुतालबा अपने बन्दों से यह है कि उस के लिए रोज़ी की सामग्री का प्रबन्ध करें। वह केवल यह चाहता है कि बन्दे उस की इबादत करें कि यह उस का अधिकार भी है और न्याय का तक्राज़ा भी। फिर उस की इबादत का लाभ भी खुदा को पहुँचने वाला नहीं बल्कि इबादत करने वाले ही को पहुँचेगा।

60. यहाँ अल्लाह के तीन गुणों का वर्णन हुआ है। एक यह कि वह राज़िक़ अर्थात् रोज़ी देने वाला है मतलब यह कि रोज़ी चाहता नहीं बल्कि रोज़ी देता है और रोज़ी देने वाला भी ऐसा कि असंख्या इन्सानों और जानवरों को लम्बे समय से निरंतर रोज़ी दिये चला जा रहा है। और इस से उस के ख़ज़ानों में कोई कमी नहीं होती। फिर उस को छोड़ कर मनुष्य किसी और को रोज़ी देने वाला अथवा अन्नदाता कैसे समझने लगता है।

दूसरा गुण यह कि वह शक्ति वाला है इस लिए उस को किसी सहारे की आवश्यकता नहीं वह बिना किसी के साझे के और बिना किसी की सहायता के केवल अपनी कुदरत से कायनात की व्यवस्था चला रहा है।

तीसरा गुण यह कि वह बलिष्ठ (मतीन) है इस लिए कोई नहीं जो उस पर अपना ज़ोर चला सके। जिन हस्तियों को बहुदेववादियों

ने पूज्य बना लिया है वे कदापि अल्लाह पर अपना ज़ोर नहीं चला सकते। उस के आगे सब बेबस हैं।

अल्लाह का यह परिचय इस बात का तक्राज़ा करती है कि उसी को पूज्य मानकर उस की सच्चे मन से इबादत की जाए।

61. यहाँ ज़ालिम से मुराद वे लोग हैं जिन्होंने अपने पैदाइशी मक़सद को भुला दिया और अपने गढ़े हुए पूज्यों की

उपासना करने लगे। ऊपर से यह भी दृष्टता दिखाई कि रसूल के आगाह करने का भी कोई असर उन्होंने ने कुबूल नहीं किया। ऐसे ज़ालिमों का वही हश्र (अन्जाम) होना है जो इन से पहले गुज़री हुई ज़ालिम क्रौमों का हुआ।

62. तात्पर्य क्रियामत का दिन है जब कुफ़्र करने वाले अपने स्वभाविक अन्जाम को पहुँच जाएंगे।

